दास्तान अमीरहमज़ा भाषाकी भूमिका ॥

उस सच्चिदानन्दघन परमेश्वर का धन्यवाद है कि जिसने इस संसार में उ
कारके लिये हज़ारों प्रकारकी उत्तम २ चीज़ें पैदा की हैं और उसीप्रकार अपूर्व
बातें क़िस्सेजातकी किताबों में जिनको देखनेसे मनुष्य का मन प्रसन्न और अने
प्रकार की चातुर्यता प्राप्त होती है रचनाकी हैं अगले समय में ऐसे बुद्धिमान् औ
विद्वान् मनुष्य हुए हैं जिन्हों ने अपने चित्तके उद्गार से नवीन २ उत्तम २ पुस्त
निर्माण कीं जिनसे इन दिनों के लोगों को प्रतिसमय लौकिक कार्य की प्रवीण
कुशलता विद्याकी वृद्धि प्राप्त होती है उसीतरह यह अमीरहमज़ा की दास्तान
यह ऐसा मनोहर उत्तम और मनोरम क़िस्सह है कि जिसके अवलोकन से बहु
मनुष्य प्रसन्न होते हैं और इसके वृत्तान्त ऐसे उत्तम हैं कि ज्यों २ पढ़ते जा
त्यों २ और पढ़ने को मन चाहता है इसमें अमीरहमज़ा नामी बड़े साहसी औ
शूरवीरका वर्णन है जिसने सम्पूर्ण संसार के लोगों और मुख्यकर बादशाह नौ
वां और काफ़के देवों और जिन्नों को पराजय किया इसमें ऐसी शूरता का वर्ण
है जैसे पिछले राजाओं पृथ्वीराज, आल्हा ऊदल आदि ने बड़े २ विजय के का
किये और भी बहुतसी पुस्तकें क़िस्सों की जैसे अलिफ़लैला अर्थात् सहस्त्ररज
चरित्र, गुलबकावली, बाग़बहार आदि उल्था होकर छपीं जिससे हिन्दुस्तान भर
सम्पूर्ण मनुष्यों ने अलभ्य लाभ उठाया ॥

इस अमीरहमज़ाके क़िस्से को पढ़कर लोगों को अधिकतर इस बात की इच
हुई यदि यह पुस्तक देवनागरी भाषा में उल्था कीजावे तो बड़े उपकार की हो त
श्रीमन्महामहोपाध्याय गुणिगणमण्डलीमण्डन पाण्डित्याद्यनेकगुणमण्डित
सुखदायक श्रीयुत मुन्शीनवलकि रजी सी. आई. ई., बीरेश
क जिनका यश सकल संसार में सिद्ध है उन महाशय ने
सम्मति से नागरीरसिकों के उपकार के लिये सकलगुणालंकृत
त कालीचरण जी महाराज से बोलचाल की सरल हिन्दीभा
ा कराकर निजयन्त्रालय में छपवाई ईश्वर ऐसे मुन्शीसाहब
पूर्ण सुख से परिपूर्ण करे मित्र प्रसन्न रहैं इसके पढ़नेवालों
ुस्तक का फल हो और इससे लौकिककार्य में लाभ उठावें
छपवाने का अवसर मिले ॥

न अमीरहमज़ा भाषा की सूचीपत्र।

वृत्तान्त

दूसरा भाग ॥

तीसरा भाग ॥

वृत्तान्त	पृष्ठसे	पृष्ठतक

चौथाभाग॥

इति ॥

दास्तान अमीरहमज़ा भाषा ॥

दोहा ॥

गौरी शेश गणेश को, विनय करौं कर जोरि। गुरुचरणन शिरनाय कै, उल्था करौं वहोरि॥
मुंशी नवलकिशोर की, आज्ञा पाय, पवित्र। हमज़ाके इतिहास को, उल्थाकियो बिचित्र॥

इस इतिहास को लेखकलोग बिचित्रचरित्र मधुर बृत्तान्त शुभ कल्पान्त प्राचीन आचारी अतिबिचारी संसार के निमित्त सुचित्त हो यों बर्णन करते हैं कि ईरान बैकुण्ठसमान भूमि में मदायन देश का बादशाह सुख में प्रबाह जिसका नाम क़वादकामराँ दीनदयाल सदा प्रजा के पालन में आरूढ़ और न्याय करने में अतिगूढ़ सुख आनन्द उस देश में जागता दुःख कष्ट और उपद्रव मृत्युस्थान में सोता था और उसके देश में दीन अरु यती उनक़ा के समान बेनिशान थे धनवान् पुण्य के कारण भिखारी व दीन मनुष्य को खोजने में अतितङ्ग बेरङ्ग थे परन्तु कोई उचित पद का पुण्य लेनेवाला न पाते थे और बलवान् दीन को नहीं सताते थे सिंह गाय एक घाट में पानी पीते थे तीतर अरु बाज़ एक साथ रहते थे छोटे बड़े एक दूसरे से प्रीति करते थे एक दूसरे पर कोई बोझ न धरता था निशिदिन केवाड़ द्वारपालों के नेत्र समान बेरक्षक खुले रहते थे चोर का कभी कोई नाम न लेता था और जो मनुष्य मार्ग में पड़ी हुई बस्तु पावे उसके मालिक को ढूंढ़कर देदेता था इससे भी अधिक न्याय उस देश में था और वह बलवान् बादशाह जिसका चित्त सिंह के समान और ऐसा पराक्रमी कि जिसके बलको देखकर रुस्तम बृद्ध स्त्रीके समान काँपता था और इस बादशाह तेजस्वी के चालीस मन्त्री ज्ञानवान् बुद्धिमान् और अतितन्त्री थे और सातसौ बैद्य अफ़लातून जिनके आगे अरस्तू पाठशाला के लड़के समान थे सब ज्ञानी और समझदारी में अपने सामने दूसरे को नहीं रखते थे और सब बिद्या पढ़ेहुए थे पदार्थ सारी और गणिताबिचारी और रमल और ज्योतिष में अमलज़ाली तथा रेखागणित और सातसौ पण्डित ज्ञानी सुशील उसकी न्यायशाला में बर्तमान थे और चार सहस्र पहलवान अतिबलवान् जो सामनरीमा और रुस्तम को अपना चेला गिनते थे और तीनसौ बादशाह उसके दरवाज़े पर दुन्दुभी

बजाते थे और सब हाथ जोड़कर कर देते थे और दशलाख सवार बड़े अकी और चालीसहस्त्र सेवकों के सोनहले, रुपहले के जड़ाऊ भूषण, वस्त्र, हीरा, मोती से सजे हुए थे उस बादशाह की सभा नन्दन को डाहदेनेवाली फ़िरदोस को सुशोभित करनेवाली में रहते थे सेवाकरने में अतिचालाक जी निछावर करने में पाक सांस भरते थे और उसी नगर में एक वैद्य ख्वाजेवख़्तनामी पैग़म्बरअली नवियाअलेहउस्सलाम के द्वारपर टिका था वैद्यता और पदार्थ विद्या और रमल वा पाण्डित्य में बड़ा चतुर आगे के बुद्धिमानों से अत्यन्त ज्ञानवान् था अलकश बादशाह के मन्त्री ने बहुधा उसकी चतुरता की परीक्षा ली थी और अपनी इच्छा पूर्ण उस से प्राप्त की थी और उसकी ओर से अपने हृदयमें इस भांति से प्रमाण किया था कि जो वह कहता था उसे सत्य मानलेता था और एकपल भी उससे अलग न रहता था थोड़े दिनके पीछे अलकश ने रमल की विद्यामें ऐसी चतुरता प्राप्त की कि ख्वाज़े का विद्यार्थी प्रसिद्ध हुआ और प्रकाश उसका दूर २ तक हुआ एकदिन उसने ख्वाजे से कहा कि निशि के समय मेरा जो चित्त घबराया तो मैंने तुम्हारे निमित्त पाँसा फेंका उससे जानागया कि आपका ग्रह मन्द स्थानमें है कुछ दिन कष्टपाना तुम्हारे कर्म में है और चालीस दिनतक वह ग्रह उसीस्थान में रहेगा इसकारण इतने दिन आप घरसे बाहर कहीं न जाइयेगा और किसी का एतबार न कीजियेगा और मैं भी धीरज का पत्थर इतने दिनतक अपनी छातीपर धरेरहूंगा आपसे मिलाप न करूंगा ख्वाजे ने अलकश के कहने के अनुसार अपने हृदय में विचार घर के केवाँर सँवारकर एक किनारे बैठरहा और अपने मित्र और स्नेहियों से मिलाप छोड़दिया और उसीकोने में बैठे २ जब उन्तालीस दिवस व्यतीत होगये उसके मन्ददिन दरिद्रता के शिरसे उतरगये चालीसवें दिन ख्वाजे से बैठेहुए न रहागया बैठे २ उसमें घबराया और हाथ में अपना अस्त्र लेकर घरसे बाहर को चला और मन में विचारा कि चलकर अलकश राजमन्त्री से मिलाप करिये और उसके चित्त का सन्देह हरिये अपने शुभ समाचार उसे जनाइये और इससे उसे आनन्द प्राप्त कराइये और कोई हमारा मित्र दूसरा नगर में नहीं है मित्र और मिलापी सच्चेमन से वहीहै दैवयोग से सुमार्ग छूटकर कुमार्ग में फँसगया और एक उजड़ स्थान के निकट हो नदीपर जा निकला उस समय सूर्य के किरणों से घबराकर एक पेड़के तले छायामें बैठरहा एकाएकी एकबेड़ी दीवार उसकी दृष्टि में आई पर चहारदीवारी उसकी गिरगई थी जो उमङ्ग उसके मन में आई टहलते २ आगेकी राहली चलकर देखा कि बहुधा घर उसमें गिरगये हैं दालान टूटेहुए पड़े हैं परन्तु गिरने से टूटे नहीं हैं सब उसी के भीतर गड़े हैं और उस दालान में एक का दरवाज़ा जो ईंटोंसे ढालागया था वह बचा हुआ है ख्वाजेने ज्योंहीं ईंटें हटाया तो उसमें एक छोटा दरवाज़ा देखने में आया वह तालेसे वन्द था ख्वाजे चाहा कि इसको किसी भांति से खोलें और इसमें कुछ बल भी करें इस मनोरथ

से उसमें हाथ लगाया ताला छूते ही गिरपड़ा ख्वाजे ने उसके भीतर पांव रक्खा जाकर देखा तो मालूम हुआ कि एक तहखाना उसमें है जिसमें अत्यन्त द्रव्य और हीरा मोती बड़े २ मोल के भरेहुए हैं और शहद्र के इकट्ठा करायेहुए हैं ख्वाजा डर के कारण उसमें से कुछ ले न सका और उलटे पैरों वहां से फिरा और मन में विचारा यह समाचार आनन्दकारक अलकश मन्त्री को सुनाने के हेतु गया अलकश ने जो ख्वाजे को देखा अतिप्रसन्न हुआ उसे देखकर और मसनद पर बैठाकर हृदय का स्नेह खोलने के पीछे बोला कि आज चालीसवां दिन था आपने क्यों कष्ट सहा कल मैं आपके निकट उपस्थित होता ख्वाजेने दो चार बातें करके उस द्रव्य की बाहुल्यता का वृत्तान्त कहा और सम्पत्ति अनपावनी का समाचार वर्णन किया और कहा कि अब मेरा गृह आनन्दमय प्रकाश हुआ जिससे इतनी द्रव्य दृष्टिपड़ी परन्तु यह सम्पत्ति बादशाह के देश में है मुझ दीन को कब पच सकती है इसके लेने को मेरा देह कांपता है इसकारण मैंने अपने चित्त में यह बिचार कियाहै कि आप मन्त्री हैं और मुझदीन के अत्यन्त मित्र हैं इस बहुत धन का पता आपको दूं और जो मुझे हाथ उठाकर आप देवें उसे मैंभी लूं अलकश ने सातढेर द्रव्य के उसके मुँह से सुनकर कृतकृत्य होकर रोमावलि फूलकर अपने शरीर में न समाया और शीघ्र दो बाजी साज के एकपर ख्वाजे दूसरे पर आप गाजके चढ़ा और ख्वाजे केसाथ होकर उसी मार्ग में बढ़ा चलते २ उसीस्थान में उपस्थितहुआ और ऐसी सम्पत्ति देखकर घबरागया इस प्रकार का आनन्द प्राप्तहुआ कि जिसमें जी गवांवे कि मेरे ईश्वर ने मुझे यह द्रव्य अलभ्य कृपा की है उसकी उदारता से मुझे मिली है परन्तु इस भेद को ख्वाजे बख्तजमाल जानताहै ऐसा न हो कि यह वृत्तान्त अपनी प्रतिष्ठा के निमित्त बादशाह से कहदे तो उससमय और का और होजावे सहजही सङ्कट में जान फँसे यह द्रव्य ईश्वरकी दीसी हाथ से जाय और बादशाह मुझे अत्यन्त कपटी जान बहुत कष्ट देके मन्त्री पदवी से दूर करदेवे और कुछ आश्चर्यभी नहीं है कि मेरा घरभी छीनलेवे और मुझे बन्दीस्थान में डालकर लड़के बालों समेत सब घरबार को धूर में मिलादे और मेरा नाशकरदे इससे अच्छा है कि ख्वाजेको मारकर इसीस्थान में डालदूं और इस धन को अपनेबश करलूं जिससे इसका भेद न प्रसिद्ध हो यह जानकर अतिशीघ्र उसे पछाड़कर छातीपर चढ़बैठा और छूरी उसकी गर्दनपर मारी ख्वाजे इस चरित्र को देखकर अतिआश्चर्य में होकर कहनेलगा कि ऐ अलकश! तुझे क्या होगया मैंने तेरे साथ मित्रता की है न कि शत्रुता इस यशका बदला यही है मैंने तेरे साथ क्या अपराध किया है! जिसके कारण मुझे ऐसा फल देताहै यह कह अत्यन्त रोया पीटा चिल्लाया और उससे अधीनता और दीनता की पर कुछभी दया उसके चित्त में न आई उस वृद्ध मनुष्य ने इसदुष्ट के हाथसे छूटना कठिन जानकर अपनी मृत्यु का होना अवश्यजाना और जीने से निराश होकर यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। बधिकमृतकमोहिंकरतहै, प्रकटअवशकरुलाश। प्रीति न अस पुनि कोउकरै, जेहि तन होय विनाश॥

अलकश सुन मुझे तू अब मारता है और मुझको मारकर तू अपने ऊपर अपराध लेताहै परन्तु मैं दो बातें तुझे समझाता हूं इसको जो माने तो मैं तुझ से वर्णन करूं क्योंकि मेरा जीना केवल इस संसार में इतनाही था तेरे मरते स-मय यह खून अपने ऊपरलूं वह बोला कि तेरी मृत्यु निकट है उसे भी कहदे अब कटारी तेरा लोहू पीना चाहती है उसने कहा और मीरहसन की भांति से इस चौ-पाई को पढ़ा॥

चौपाई। मित्ररहा पर वैरी भयऊ। मग पूछेउ सोई ठग रहेऊ॥

परन्तु मेरे घर केवल आजही भर का अन्न खानेको था अब ठिकाना नहीं है इससे आपको उचित है कि कुछ खर्च मेरे घरमें कृपाकरके भेजदीजिये और दुखियों का निर्वाह करना दूसरी बात यह है कि मेरी स्त्री गर्भवती है उससे इतना कहदेना कि जो पुत्र हो उसका नाम बुजुरुचमेहर धरना और जो दुहिता हो तो जो तुझे स-मझपरै सो नाम धरलेना यह कहकर आंखें बन्दकरलीं और परमेश्वर का स्मरण लगा इतने ही बेरमें उसने उसको और उसके घोड़े को मारकर उसी कोठरी गाड़ दिया॥

अलकश के हाथ से ख्वाजेका माराजाना॥

और उसके केवाड़ उसीप्रकार से मूँदकर नदीपर गया कटारी और अपने हाथ लोहू धोया और उस चल सम्पत्ति के हेतु अपना धर्म खोया फिर तुरङ्ग पर चढ़ अपने धाम को पधारा चित्त अतिप्रसन्न हुआ दूसरे दिन सवार होकर सामान फिर उसी स्थानपर गया और उसे देखभालकर अपने प्रधान दारोग़ा को कि हमारे निमित्त एक फुलवारी यहां पर लगाई जावे और सामान भारी मोल के उस धाम रचना के निमित्त भेजेजावें उसकी आज्ञा पाकर दारोग़ा ने थवई और मज़दूर और सङ्गतराश बोलाकर धाम बनानेमें आरूढ़ करदिया और थोड़ेकाल में चारदीवारी बाग़समेत बनगई अलकश उसे देखकर अतिप्रसन्न हुआ उस फुल-वारी का नाम अन्यायीबाग़ रक्खा और ख्वाजे वख्तजमाल के घर में जाकर सँदेशा ख्वाजे का वर्णन किया और अत्यन्त धीरजदिया और बहुतसा रुपया देकर कहा कि अपने खाने पहिरने में उठावो और जब आवश्यकता होगी तब तुम्हारी सहा-यता औरभी करूंगा तुमको कष्ट न होनेपावेगा ख्वाजे को मैंने व्यापार के निमित्त चीन की ओर भेजा है अतिशीघ्र वहांसे धन उत्पन्न करके आवेगा यह समझा कर अपने घर को गया और सत्य समाचार निज चित्त में रचा॥

कवित्त। जीनेके समय सब बीतिगये जनु वायु विपिन के मध्य चली।
कडुआंब अनन्द अकारथ ले बीती सबभांति बुरी व भली॥
कहिनाकछु वाको कियोही नहीं मैंने अन्याय कि लीनी गली।
उसकी ग्रीवा पर फेरि रही बीती मोपै सब अङ्ग शली॥

कहनेवाले आनन्दमय होकर इसभांति से प्रकाश करते हैं कि ईश्वर अपनी उदारता से वह सुदिन समीपलाया कि गर्भ के दिवस बीतने के पीछे शुक्रवार के दिन सुसायति में ख़्वाजे बख़्तजमाल का भाग्यवान् पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

सोरठा। रविसम प्रकट्यो आय, निज गृह तमहित दीपज्यों।
सभी परस्पर आय, जुरे पतङ्ग के सरिस ॥

प्रथम तो उसकी माता ख़्वाजे का स्मरण करके नाना विलाप से अपनी विकलाई पर शोकग्रसित हुई और नयननीर बरसाया उसके पीछे अपने पुत्र का मुख निरखके उसके प्रताप के प्रकाश से आप पतङ्ग के समान निछावर हुई और ईश्वर का धन्यवाद करके कहेहुए सन्देशा के अनुसार बुज़ुरुचमेहर नाम धरा वह अपनी माता के गोद में सेवा पानेलगा और परमेश्वरने सबप्रकारके कष्टों से उसकी रक्षा की मानो अपने निज हाथ से उसके शरीर की रचना की थी सुन्दरता संसार की उसको देखकर अतिलजाय घबराय छिपरही और उसके मस्तक के प्रकाश से प्रताप का चिह्न विदित होता था और चेहरे की चमक से उसके सुलक्षण प्रकट थे जब पांचवर्ष का हुआ उससमय उसकी माता गुरु के सपीप विद्या पढ़ने के निमित्त लेगई और वह पण्डित ख़्वाजे का चेला था और उसके समीपी लड़के उसी के समीप पढ़ने को जाते थे उससे कहनेलगी कि तुमपर ख़्वाजे का अतिउपकार है इससे तुमभी इस लड़के को पढ़ादो क्योंकि यह उसका पुत्रहै तुम्हारा नाम होगा उसने शिर नेत्र से यह स्वीकार किया और उसके पढ़ाने में अतिचित्त लगाया ॥

चौपाई। जो जो वर्ष बीति जगजाई। अधिक भली उपजै अरुणाई ॥

उसका यह स्वभाव था कि दिनभर वह अपने गुरु के समीप पढ़ने लिखने में ध्यान लगाता और जब चारघड़ी दिन रहता उससमय अपने घरको जाता उस की माता जो श्रम करके पाती उसे बनारखती सो खालेता था दैवयोग से एकदिवस कुछ खानेको नहीं मिला बुज़ुरुचमेहर ने अपनी माता से कहा कि अब तो क्षुधा के कारण आंतें व्याकुल हैं जो कोई वस्तु दीजिये उसे बेंचलाऊं खानेका उपाय करूं उसकी माता ने कहा कि अय बेटा ! तुम्हारे पिता घरमें कुछ नहीं लाये और न छोड़ गये हैं जो तुमको बेंचने के निमित्तदूं और खाने पीने की आवश्यकता मिटाऊं किन्तु एक किताब तुम्हारे नाना की धरी है बहुत पुराचीन लिखी है बारम्बार तुम्हारे पिताने चाहाथा कि उसे बेंचकर अपने ख़र्च में लावें पर जब वह किताब लेने के निमित्त ताक़ के निकट जाते तो उसमें से एक भुजंग फुनकारें मारताहुआ निकलता था वह डरके कारण से हटआते थे देखो जो तुमको वह मिले तो लेजावो और उसे बेंचकर खावो केवल उसके सिवाय और तो कोई वस्तु घर में नहीं है जो तुम को दूं और उसे बेंचकर लाऊं माता के मुख से यह सुनकर किताब उठालाया और

वह सांप जो सदैव देखपड़ता था दृष्टि न आया और उसके चारपत्र पढ़कर प्रथम तो अतिरोया पीछे उसके एक स्थान देखकर अत्यन्त आनन्दमें हो हँसा और प्रसन्नता से मुख प्रसन्न होगया देखनेवालों ने जो उस समय वहां पर उपस्थित हुएथे यह समाचार देख अतिआश्चर्य किया ईश्वर यह किसकारण से प्रथम तो रोया तदनन्तर अतिहँसा इसका चरित्र नहीं जानाजाता है उसकी माताको सिड़ी होजाने को संदेहहुआ और सबसे कहनेलगी कि ईश्वर के निमित्त कृपा करके गुणी को बुलादो तो इसकी नस कटाकर रक्तनिकलवाडालूं और किसीसे बोली कि यन्त्र लिखा दो कि इसके गले में बांधदूं क्योंकि मुझ दुखियाको केवल इसीका आसरा है कदापि यह विक्षिप्तहुआ तो मुझ अनाथ का कहीं ठिकाना न लगेगा बुजुरुचमेहर अपनी माता को संकट में देखकर कहने लगा कि आप न घबरायें ईश्वर चाहेगा तो यह कष्ट व विपत्ति के दिवस शीघ्र दूर होजावेंगे और इसके बदले में अतिआनन्द पावोगी अब भाग्य उदय होनेवाला है और सब मन्द व कष्टता का समय दूर होताहै ॥

दोहा। भोरे दिवस है ईद का, बेगि बीरुणी देंइ। प्याला पी आनन्द हो, रवि जनि उदय करेइ॥

चौपाई। देत उसे नहिं लागत देरी। जनि निराश हो होय निवेरी॥
अतिउदार हैं कृपानिधाना। समभि देखु निजउर विधि नाना॥

मैं विक्षिप्त नहीं हुआ रोने और हँसने का यह मनोरथ है कि इसकिताब के पढ़ने से सब वृत्तान्त अगला पिछला जाना जाता है इसकारण से मैंने जाना कि मेरे पिता को अलकश मन्त्री ने बे अपराध मारा है और उसकी लाश अबतक वहांपर पड़ीहुई है ऊपर पृथ्वी के धरीहुई और हँसा इस बातपर है कि मैंभी अपने बाप का बदला उससे लूंगा और यहां के बादशाह का मन्त्री हूंगा अब खाने पीने का क्लेश न होगा अपने चित्त में शोक न करो खाना बहुत है और दशको दीजिये यह कहकर एकदासी को अपने साथ लेकर एक बनिये की दूकान पर गया और उससे कहा कि इस लौंडी को इतनी जिन्स मैदा और कन्द और घृतआदि जो मांगाकरे दिन प्रति दियाकर और उसका मोल न मांगाकर उसने कहा कि अच्छा उसका मोल कबतक मिलेगा बेहिसाब किये कैसे बनेगा। बुजुरुचमेहर बोला कि मोल मुझसे मांगता है अपना कहा क्या भूलगया चांदनासी गँवारसे कई सहस्रमन गेहूं लेकर उसको विष देकर पुत्र समेत गल्लाके कारण बेअपराध मारडाला है यह भेद राजसभा में विदित करूं तो तेरा क्या हाल हो और किस भांति तुम्हारा माल हो बनियां यह पता सुनकर चुपहोगया और पगड़ी उतारकर उसके चरणों पर रखदी घबराकर कहनेलगा कि मियांजी। यह दूकान आपकी है जिससमय जो इच्छा हुआकरे मँगवालियाकरो परन्तु यह चरित्र दूसरेसे न जनावो अपने मन में रखिये बुजुरुचमेहर वहां से लौंडीको साथलेकर चिकवाकी दूकानपर गया उससे कहा कि एकमन मांस उत्तम इस स्त्री को दिनप्रति दियाकर उसने कहा कि मोल का लेखा कब समझावोगे रुपया किससमय दोगे बुजुरुचमेहर ने कहा कि जो

तूने कोश गिलवानसे कई सहस्र मेढ़ेलेकर मोल मांगने के समय उसको मारकर अपनी दूकान की कोठरीमें गाड़ दियाहै उस विचारे का सहस्रों रुपये का धन सहजही मारलियाहै तू जानता नहीं है कि जो उसकी सन्तान को राजसभा में भेजदूं तुझे उस अपराध का रङ्ग दिखलादूं मांस की द्रव्य तुझे दिलादूं मोल मुझसे मांगता है ऐसा अयान बैठाहै यह समाचार सुनकर गाय की भांति कांपनेलगा और अति शीघ्र दौड़ के चरणोंपर गिरा और अतिनम्रता से गिड़गिड़ाकर कहनेलगा कि मांस तो क्या मेरी जान भी आपपर निछावरहै जितना सरकार की दासी आज्ञा करेगी उतना मांस करेली का दिनप्रति दूंगा और धोखे से उसके मोल का अक्षर जीभपर न लाऊंगा परन्तु मेरी जान व प्रतिष्ठा पर कृपादृष्टि किये रहियेगा फिर किसी से ऐसी बात न कहियेगा इसीभांति से सराफ़ को भी कुछ कुसमाचार सुनाकर घबरा दिया था और उससे पांच मोहर दिनवारी खर्च के निमित्त ठीककर लिया था आनन्दमय हो अपने घर में बैठकर समय का खोज करनेलगा मित्र स्नेही नये२ इकट्ठा होनेलगे सुख व आनन्द करने लगा॥

सोरठा। अशुभसगुनहैजीत, जब उदारता प्रभु करै। काहमूढ़पछितात, भजनकरै अतिमगन है॥

अलकश के स्वर्ग समान अन्यायी नाम बागमें बादशाह के जानेका इतिहास॥

वृक्ष बांधनेवाले बाग वृत्तान्त के और फुलवारी सुशोभित करनेवाले बाग विदित करना स्वच्छ कागज में इसप्रकार पेंड़ शब्दों के उत्तिल खचित करते अर्थात् वर्णन करते हैं कि जब बाग अन्यायी बनकर तैयार होगया जैसे बैकुण्ठ की भांति सुशोभित व प्रफुल्लितहुआ उससमय अलिकश अतिप्रसन्नता से फूलगया सन्देह दोनों स्थान का भूलगया अत्यन्त आनन्द से फूलाङ्ग समाता तनसे बाहरहुआ जाता बादशाह के समीप जाकर अतिदीनता से प्रार्थना की कि इस सेवक ने आपके प्रताप से एक बाग बनाया है उसमें भांति २ के वृक्ष फलदार और फूल बूटे के लगाया है और दूर २ से भारी मोल के सुन्दर वृक्ष मँगाये हैं और अतितीव्र माली पेड़बांधने के हेतु नियत हैं सहस्रों रुपया खर्च करके इसकाम के कारीगर मँगाये हैं प्रत्येक मनुष्य अपने २ काम में अतिचालाक हैं और बेल बूटे इसप्रकार से लगाये हैं कि जिनको देखकर विश्वकर्मा अपनी रचना से लज्जित होजावे परन्तु इस अनुचर की दृष्टि में समाता नहीं है पतिमार का रङ्ग दीख पड़ताहै जबतक आप सवार हो उसमें अपना चरण सुलक्षण नहीं धरते हैं॥

दोहा। चरणरावरकेपरे, सकलबाग खिलिजाय। जिहां तनिकसा ठहरिये, सूख वृक्ष हरियाय॥

इस अधीन की विनय यह है कि कभी आप जगत्प्रताप उस ओर सैर के बहाने चरण लेजायँ तो इस अधीनको अत्यन्त बड़ाई प्राप्त हो आपके चरणों की कृपा से उस बाग में बसन्तऋतु आजाय हर फूल व कली में नयारङ्ग प्रकाशित होजाय और अपनीकृपा से जो दो एकफल खा लीजिये तो अनुचर को अत्यन्त आनन्द मिले और

आशारूप बृक्ष का फल पाये बादशाह ने उसकी बिनती स्वीकार किया और उसके मनोरथ पूर्णकरनेको कहा अलकश ने प्रणामकरके नजरदी और वहांसे आज्ञा लेकर बागमें आया सामग्री जिवनारकी करनेलगा अतिशीघ्र सब इकट्ठाकिया और भांति २ के खाने बननेलगे और विविधप्रकार की मेवा नावों में धरीगईं बजानेवालों को बजाने की आज्ञादीगई खेलौनेवाले खेलौना छोड़नेका समय देखनेलगे, प्रकाश और चमत्कारी की सामग्री होनेलगी सहस्रों गिलास चढ़गये झाड़ फ़ानूस दीवारों पर सजनेलगे थोड़ेकाल के पीछे बादशाह तेजस्वी महाप्रतापी नीतिप्रकाशी न्यायबिलासी सेवकों समेत अन्यायीबाग़ में आया अलकश का मनोरथ पूरा हुआ और बादशाह के बैठनेके निमित्त अतिरुचिर गद्दी सजी उसपर फूल बूटे हीरा मोती के बनाये हुए थे और चारों कोनों पर चार मोर पन्ने के बनेहुए लगाये गये थे और सब प्रकार से सजेहुए थे हीरे के पत्ते और पन्नोंके फूल बनेहुए थे अतिरचना करके वह चौकी सुशोभित थी जब बादशाह की सवारी बाग़ के निकट पहुँची अलकश ने दो धावन और सवार बृत्तान्त जानने के निमित्त नियत कररक्खे थे उन्होंने बादशाह के आने का समाचार सुनाया सब जगह आनन्द छागया॥

दोहा। बादशाह जब बाग़में, आये प्रेम समेत। फूलप्रफुल्लित अतिभये, आनन्दित करहेत॥

अलकश अपने लड़कों समेत और मित्रों को साथले अगवानी की राह पै उपस्थितहुआ वह चौकी और चालीस हाथी जिनपर सुनहरी झूलें पड़ीहुईं और अम्बारी सोने रूपे हीरा मोती के गङ्गायमुनी काम पीठोंपर खिंचीहुईं और ज़ंजीरें सुनहली रुपहली गर्दन में पड़ी और दांतों पर चांदी मढ़ी फ़ीलवानों ने लहसुनियां की डंडियां हाथमें लिये बनारसी पगड़ियां चूड़ीदार शिरपर कबायें सोनहली पहनेहुए रुपहली कमरबन्द कमर में और कमख़ावकी मिर्ज़ाइयां सजेहुए बनारसी पट्टी कमर में क़सेहुए सोनहले फेंटे शिरपर लपेटेहुए बरछे और दण्डे जड़ेहुए हाथों में लियेहुए आसपास सम्पूर्ण सामान बायु समान चाल तुरंगों पर चढ़ेहुए घोड़ों को जमाते उड़ाते अपना गुण दिखाते पंक्तिबांधे चलेजाते थे दोसै घोड़े ताजी, इराक़ी, अरबी, बिलायती, काठीवार, खच्ची, जोकोसिया, भावराथली, तुरकी, तातारीआदि टेढ़ी कसके टाप बायुसमान बजाते चलेजाते थे परीके आकार देवस्वभाव आय लटकेहुए जीन सोनहले चढ़ेहुए अतरकी सुगन्धसे भरेहुए सोनहले चारजामा पड़ेहुए कलँगी, पट्टा, दुम्ची, आगे अगबन्द, हैकल, जड़ाऊ गजगाये सड़कें मुरछल लगेहुए लाल कलाबत्तूनके पीठोंपर उसपर पाखरें जवाहिरों से बनीहुई पंचन सोनहले हाथों में ज़ेरबन्द पश्मीने के बनेहुए बालातङ्ग ज़ेरतङ्ग से खिंचेहुए कलाबत्तून की लगामें सहीसों के हाथमें प्रतिबाजी दो, २ सहीस सोनहलेकड़े उनके हाथों में पड़े लाल बत्तियां तूलकी शिरपर बांधे गुजराती सुसुरू के घुटन्ने पांवमें पहने मिर्ज़ाइयां सजे भारी २ चौरियां गङ्गायमुनी डंडियों कीजिन में मोतीगुहेहुए थे आगे पीछे दायें बायें

जीवों के वृत्तान्तको देखते रहते थे कई सहस्र ऊंट अरबी, बुगदादी आदि जिनपै जड़ाऊ भूलैं पड़ीहुईं कलंगियां सोनहली रुपहली मुखोंपर चढ़ीहुईं नाक में नकेलें रेशमी प्रति ऊंटके सजीहुईं सांड़िनीसवार अतिचालाकी से चलते थे सांड़िनी भी भागी गर्वमें पगी तनीजाती थी कभी अतिलाड़ व सनेहसे उसके सवार गोदी में शिर रखते थे अतिचालाक व गर्वनाक से पृथ्वीकी ओर ग्रीवा न झुकाती थी और कई सहस्र नाव रूपे व सोने व हीरा, लाल, पन्ना, नीलम, माणिक, लहसुनियां, पुखराज, गोमेद आदिसे भरीहुई और गहना जड़ाऊ के अत्यन्त भरे और कई सहस्र नाव में भांति २ के अस्त्र तलवार, छुरी, कटारी, बांक व भुजयल, सिरोही, तमंचा, बन्दूक आदिसे चुनेहुए थे इसी प्रकार कपड़ों के थान सहस्र भांति कमखाब, मुसुरू, गुलबदन, रूमाल, डुपट्टे, पटुके बनारसी, गुजराती, जामदानी, कामदानी, महमूदी, चन्देली, सबनम, चिकन, तारासिमार, तारादाम, मलमल, नैनू, नैनसुख, तंजेब आदिके नावों में ढबसे लगेहुए वस्त्र विविध प्रकार के लुरमई दुशाला, रूमाल, पटके, गुलूबन्द, जामा, सदरी, लबादा, अचकन इत्यादि अतिचतुरता के साथ चांदी के पात्र और नावों में धरेहुए साथ लेके बाहर के आनन्द धाम में नज़र देके चौकी का पाया पकड़े साथ हुआ जब बादशाह बाग़ में आये देखा तो सत्यबाग़ उचित सैर आनन्ददाता है अच्छी भांति सजाहुआ है दरवाज़ा बाग़ का बहुत ऊंचा है बड़ी भारी चौखट बाजू चन्दन की बनी है उसपर चांदी पोलाद की खूंटी गड़ी हैं और मजबूत हैं ॥

अन्यायी बाग़ में बादशाह का जाना और बारादरी के तख्त पर बैठकर अलकश को पारितोपिक देना और नाच होना ॥

अत्युत्तम दीवार संगमरमर की बनीहुई थी और उसके दरजों में जवाहिर से काम बनाहुआ था और स्थान २ प्रति दीवार में जवाहिर के वृक्ष बनेहुए थे डाली और पत्ते पन्ना से सजे थे और फूल व कली लहसुनियां आदिक पत्थरों से काम बना था और उन डालियों पर बुलबुल, तोता, मैना आदि पक्षी बनेहुए थे और उस के नीचे टट्टियां रचनाकृत रचीहुई थीं और मोतियों के गुच्छे के बदले अंगूर के गुच्छे लगेहुए थे और जो वृक्षों में फल लगेहुए थे उनपर रङ्ग बिरङ्गी थैली चढ़ी हुई थीं और रेशम व कलाबत्तून की डोरी से कसीहुई थीं और मोलमें एकसे एक बढ़ी हुई थी और फुलवारी के बांधने में और स्वच्छ करने में इस प्रकार की शोभा थी कि जिनपर दृष्टि का पांव फिसलता था और तमाशा देखनेवाले अतिआश्चर्य में होरहे थे कियारियों में सब भांति के फूल लगेहुए थे लाला, गुलाब, दाउदी, नाफ़रमानी, पिस्तई, मूगरा, गुलशब्बो, दुपहरिया, कुन्दी आदि सबप्रकार के फूल खिले हुए थे और किसी स्थान में मूलसरी के वृक्ष मनुष्य के बराबर छटेछटाये लगे थे और किसी फुलवारी के कोनोंपर सरसनोबर के वृक्ष शृङ्गारमय आकाशतक चले गये थे सुगन्धित बायु उनसे चल रही थी और फूलों की डाली अतिसनेह से एक दूसरे

कली का मुख चूमरही थीं औ मेवा लगेहुए वृक्ष अतिसुन्दरताई से झूमरहे थे बुल-बुल आदि पक्षी चहकिरहे थे और प्रत्येक कियारियों पर दरवाजे महरावदार लगे हुए थे और उनके किनारों पर खम्भा रचित खचित थे और उनपर चांदी के पत्र चढ़ेमढ़े अतिशोभा देरहे थे और कहीं २ मुरैले नाचरहे थे और नवयौबना मालिनें सोनहले आभूषण सहित वस्त्र जड़ाऊ लहँगे पहिने उस पर चुनरी सुवर्ण के तारों की ओढ़े मांग निकाले हुए अंगुलियों में छल्ला छाप पहिने अनवट बिछुये चांदी के पहिने टीका बेंदी मस्तक में दियेहुए सब प्रकार का गहना पहनेहुए हाथों और अंगुलियों में मेहँदी की अरुणाई सजी सजाई हाथों में सोने के बेलचे लिये हुए रविश पर की घास काटरही थीं और सूखी लकड़ी टूटी फूटी को निकाल रही थीं कियारियों को अतिसुन्दरता से सुधाररही थीं देखनेवालों के चित्त आनन्दित करके हरलेती थीं और उनकी नर्म २ कलाइयां चन्दन की डली को लज्जित करती थीं नान्हीं २ अंगुलियों में मेहँदी शोभा देरही थी और जिनकी छातियां अतिस्वच्छ औ कोमल थीं नींबू के समान कुच और गोरागोरा मुख अतिशोभा देता था और अंगुलियों में सोनहली मुँदरी पहनेहुए थीं प्रतिस्थान चमनों में पानी बहाती थीं और आपस में हँसी ठठोली दिल्लगी करती थीं और कोकिला समान मृदुबैन बोलरही थीं किसी रौशकी घास सूखी उखारकर दूसरे स्थान में लगातीं और कहींसे हरी कोमल दूब उखारके बेलचे से जमातीं और किसी कियारी में थाले लगातीं और टट्टियों पर अंगूर की बेल दौड़ानेलगीं और नलियां पानी बहनेके निमित्त चमनों में लगीं विविध भांति के वग हंस आदि चिड़ियां आनन्द कररहीथीं और जो बड़े २ वृक्ष थे उनपर रेशम की डोरियों से डालियां बँधी थीं और कहीं २ चबूतरे बिल्लौर व संगमरमर के बने थे और प्रतिचबूतरे के आगे हौज़ उनमें अतर व गुलाब व कस्तूरी आदि भरी हुई थी और मध्य में फ़ौवारे हीरेसे बनेहुए थे और चांदी सोने का ढेर उन फ़ौवारों के हौज़ों में लगेहुए थे और जब उन फ़ौवारों से हज़ारा छूटता तो सहस्रों भांति की क्रीड़ा देखाती थीं देखनेवालों की दृष्टि में आश्चर्य आता था चित्त प्रफुल्लित होजाताथा और बाग़ के मध्य में एक ऐसा घर बनाथा कि जिसके समान संसार में कोई भी न बना होगा और उसके आस पास साइबान गङ्गायमुनी सोनहरा काम कियाहुआ था और दरवाज़ों में सोने रूपे से थैलियों की कलाबत्तून से गुँधी हुई पड़ी थीं और सोनहले परदा अर्थात् झारी और हीरालाल की खिरकियों में डोरी लगीहुई थीं और चौखटपर सातलाख मोहरों का चबूतराथा और भीतर उस बँगले के एक चौकी जवाहिर से बनी थी बादशाह उस चबूतरेसे बँगले को सुशोभित करके वहां गये नज़रें होगईं अलकश को प्रतिष्ठा का प्रातःकाल प्राप्त हुआ बाग़ अन्यायी की शोभा देखकर अपने बाग़ न्याय का पतिभार देखा और अतिशीघ्र मुख से वचन कहा कि सत्य है यह बाग़ अतिरमणीय है और सुस्वाद फल लगे हैं उसकी शोभा और प्रशंसा जो कानों से सुनते थे उसे आंखों से देखलिया कि अत्यन्त मनोहर और सुशोभित यह बाग़ है॥

चौपाई। जो प्रसिद्ध है सुर अमराई। ताते अति है सुन्दरताई॥
रूपरमाली देखेउ जब आई। भौचक रोउ हृदय अधिकाई॥
सुरपुर की सुधि नहिं पुनि करई। नहिं बैकुण्ठ चित्त कछु धरई॥
रविश रविश पर चमन सोहाई। खिले फूल तामें अधिकाई॥
सेवति जूही कीन प्रकासा। कौनिउँ दिशि पेलकी सुवासा॥
नरगिस फूल आंख सम करई। सुमननिरखिबुलबुलचितहरई॥
पक्षी कतहुँ गानहित चहई। हँसतचकोरखुपस अतिवरई॥
शाहद संमग लगी फुलवारी। घेरा कीन सनोवर भारी॥
ताल सरोवर पेडुकी सोहैं। कूकू शब्द करत मन मोहैं॥
वृक्षफलितफल विविधप्रकारा। नासपाति औ सेव अनारा॥
मेवा लगे मधुर तेहि माहीं। सो सब कवि वर्णन कै जाहीं॥
यहिबिच मध्य नाचत हैं मोरा। करत मधुरगरिजन अतिशोरा॥

अलकश बादशाह की प्रशंसा सुनकर अतिकृतकृत्य होकर फूले न समाता था अतिआनन्द के कारण तनसे बाहर हुआ जाता था विनय करनेलगा कि यह सब आपही के प्रतापसे रचना बनी है और सेवक का क्या मक़दूर था? जो ऐसा स्थान बनाता आपके आनेसे और अत्यन्त बड़प्पन इसे प्राप्त हुआ और ताबेदार की प्रतिष्ठा आकाशतक पहुँची और नसानों में अतिप्रतिष्ठा मिली इसके पीछे बादशाह ने भोजनको अतिरुचि से खाया अलकश ने साज नाच व राग का मँगाया और नाचनेवाली वेश्या परी समान और बारमुखी अतिमनोहर नाचने गानेलगीं आनन्दरूपी वारुणी का प्याला भरनेलगीं मापक का घूमन देखकर प्याला आसमान का चक्कर में आया उस समय में कुछ औरही रङ्ग देखाया आतशबाजी के खिलौने छूटनेलगे देखनेवालों की दृष्टि सुखमें आनन्द पानेलगी संक्षिप्तहै कि २१ दिनतक निशिदिन बादशाह ने प्रसन्नता की बाईसवें दिन अलकशको पारितोषिक बखशैदीं कृपा हुआ तत्पश्चात् बाहनशाही उपस्थित किये गये बादशाह उस पर आनन्दित सवार हुए राजस्थान में आये और न्याय नीति करनेलगे॥

अलकश करके निरपराध बुजुरुचमेहर का पकड़ना और उसका छूटना और स्वप्न परीक्षार्थ बादशाह करके गुणी एकत्र करना॥

दोहा। एकदिवस गो सैरको, फुलवारी की ओर। आयदीख यक फूलको, भरादालकर शोर॥
कहा किया क्या तैंने है, अलता कौनेहेत। कहा कि मैं इस बाग में, ऐसा था चैनसमेत॥

मायाकृत माली रचना से संसाररूप फुलवारी में प्रतिसमय नया फल फुलाता है चतुरता की दृष्टि उसकी रचना देखकर संसार में अपना मनोरथ भूलजाती है जो हँसा यही कांटा शोक का उसके कलेजे में चुभा जिस डालीने दीनतासे गर्दन झुकाई शीघ्र मनोरथ का फल हाथ में लाई जिस टिहुनी ने अपनी सीवां से शिर उठाया उसे वृक्ष बांधनेवाले ने काटडाला॥

सोरठा। करै विचार विवेक, गिनागणित ह्यां यलियना। समझिधरै उर टेक, जो सर बुल्लातक गहै ॥

देखिये उस बाग़में नयाफूल फूला और औरही रङ्गका गुच्छा चिटका बुज़ुरुच्च-मेहर का बृत्तान्त लेखकलोग अब यों वर्णन करते हैं कि बुज़ुरुच्चमेहर अतिधर्म में आरूढ़ चतुर और अतिगुणज्ञ था एक कोने में परमेश्वर का स्मरण करनेलगा एक दिन उसकी माता ने कहा कि अब मेरा चित्त साग खाने को चाहता है बेटा जो कष्ट सहकर माको साग लेआदेते तो मेरी नियति भरती बुज़ुरुच्चमेहर ने माका कहना स्वीकार किया और अन्यायीबाग़की ओर चला जब बाग़के दरवाज़ेपर पहुँचा तो बाग़का दरवाज़ा बन्द पाकर मालीको हांक दी आवाज़ सुनकर माली चलाआया ताला खोलने का मनोरथ किया ख़्वाजेने कहा कि ताले में हाथ न लगाना तूने जो कल सांप मारा था उसकी स्त्री ताले की भड़में तेरे डसने के निमित्त आई है अपने जोड़े का बदला लेने को बैठी है बाग़बान ने जो देखा तो सत्य एक नागिन ताले के भरमें बैठी है माली ने उसे मारकर दरवाज़ा खोला और चरणों पर गिर पड़ा और कहनेलगा कि आपने मेरी जान बचाई मुझे पहिलेही जतादिया नहीं तो मेरे मरने में क्या शेष रहाथा बृथा अनुचर का प्राण गया था यह कहकर बोला कि आपकी क्या आज्ञा होतीहै उसने उत्तर दिया कि मुझे थोड़ा साग चाहिये जो दाम होंगे दूंगा अपने घरका मार्ग लूंगा बाग़बानने कहा कि साग आपके निमित्त लाता हूं मोल उसका आप ऐसे परोपकारी से क्या लूंगा योंहीं दूंगा माली ज्यों साग लाने गया तो क्या देखताहै कि बकरी केसर में खाती है माली ने झुंझलाकर एक बेलचा उसके मारा वह तड़पकर मरगई बुज़ुरुच्चमेहरने कहा कि तुमने नाहक़ में यह तीन अपराध लिया उसने मुस्कराकर कहा कि साहबज़ादे ! अच्छी भांति से एक जीव के तीन बतलाते हो यह क्या बात कहते हो बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि सुन बेसमझ ! इस बकरी के पेटमें अमुक २ रङ्गके दो बच्चे हैं वहभी इसीके साथ मरगये इन दोनों में यह बातें होती थीं कि अलकश भी बैठा सुनरहा था उस ओर ध्यान लगाये था मालीको बुलाकर सब बृत्तान्त पूछा कि क्या बातें करते थे उसने सब समा-चार सच्चा बिचारके कहदिया अलकश ने बकरीका पेट फारकर देखा तो उसी रङ्गके दो बच्चे बकरीके पेट में देखे यह बृत्तान्त देखकर अतिआश्चर्य माना और बुज़ुरुच्च-मेहर को बुलाकर अपने समीप बैठालिया और पूछा कि तू कौन है और तेरे पिताका क्या नामहै और कहांहै बुज़ुरुच्चमेहरने कहा कि ख़्वाजेबख़्तजमालका पुत्र और हकीम का नवासा हूं तङ्गीके अन्याय का सताया हूं मेरे बाप को किसी क्रूरने मारडाला है उससे बदला लेनेको फिरताहूं कोने में बैठना स्वीकार किया कुछ दिन और धीरज धरे बैठा ईश्वर का स्मरण करता हूं सदा अपने पिता के शोकमें हूं अलकशने कहा कि तूने अपने पिताके मारनेवाले का खोज पाया है बुज़ुरुच्चमेहर ने उत्तर दिया कि ईश्वर बड़ा अन्तर्यामी है उसके निकट सब सहज है कभी न कभी पता मिलही जायगा उस दुखिया बेअपराधी मारेहुए का सकल समाचार रङ्ग देखायेगा अलकशने कहा

कि भला तू बता रात को मेरा क्या मनोरथ था बोला कि तूने गड़ाहुआ माल पाया है सहज ही हांथ आया है चाहता था कि अपनी स्त्री से कहै परन्तु नहीं कहा कुछ समझकर चुप होरहा यह बात सुनतेही अलकश के होश उड़गये और चित्त घबरा गया सन्देहमय होगया कुछ और का औरही ढङ्ग बनगया बेद के समान कांपने लगा चित्त में विचार किया कदापि यह भेद विदित होजाय माल जाय और सङ्कट ऊपर आवे यह लड़का अन्तर्गति जाननेवाला है ऐसे मनुष्य का चित्त और कलेज खाने से वह भी अन्तर्यामी होजाता है इसको मारना चाहिये और इसका कलेज खाया चाहिये सब उपद्रव भी जातारहै और मुखसे कोई अक्षर भी न निकाल सकेगा शीघ्रही बख़्तियार हब्शी को बुलाकर कहा कि तू मेरा सेवक है इस समय चुपके से तू इस लड़के को मारकर इसके कलेजेका क़बाब बनाकर मुझको खिलादे इसके बदले में तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा उस सेवक ने बुज़ुरुच्चमेहर को एक अन्धी कोठरी में लेजाकर पछाड़ा चाहता था कि छुरी गलेपर फेरे तो अत्यन्त खिलखिला कर मेहर हँसा और कहा कि जिस आशापर यह पातक लेता है वह तेरी ईश्वर से झूठ होगी बल्कि यह प्रतिष्ठा भी तेरी भङ्ग होवेगी जो तू इस कार्य से बचारहेगा तो ईश्वर चाहेगा तू मुझसे अपनी मनोकामना पूर्ण करेगा उसने कहा कि भला मेरा क्या मनोरथ है ? जो तुम बतादोगे तो हम तुमको अभी छोड़देवेंगे बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि तूने अलकश की बेटी से प्रीति की है और उसे अलकश तुझे कभी नहीं देगा परन्तु मैं तेरा उससे निश्चय करके विवाह करादूंगा बल्कि तेरे विवाह की सामग्री भी मैं करदूंगा इस समय तू मुझे छोड़दे आजके दशवें दिन बादशाह एक स्वप्न देखकर भूल जायगा और अपने मन्त्रियों को वह स्वप्न सुनावेगा सब से उसका अभिप्राय पूछेगा सबकी परीक्षा लेगा जब कोई बता न सकेगा तो बादशाह क्रोधवान् होगा तिस समय यही तुझसे मुझे बुलावेगा ख़बरदार जबतक तीन तमाचे तुझको न मारे तबतक मुझे न बताना यह अक्षर अपनी जीभपर न लाना हब्शी ने कहा कि उसने तेरे कलेजे के क़बाब मांगे हैं जो मैं किसी जीव का कलेजा निकालकर क़बाब बना लेजाऊं तो वह हकीम है निश्चय करके जान लेवेगा और मुझे दण्ड करेगा बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि नगरके दरवाज़े पर एक बकरी का बच्चा पड़ा है उसको आदमी का दूध पिलाकर पाला है एक बुढ़िया बेंचती है मुझसे मोल लेकर उस बुढ़िया को देकर ला और उसे मारकर क़बाब उसके कलेजे को भूनकर उसे खिला शेष मांस अपने खाने के निमित्त रखले उससमय उसको भी ईश्वर का डर और अपने अभिप्राय की लालच लग आई बुज़ुरुच्चमेहर के कहने के अनुसार काम किया उसके मारने से हाथ उठाया अलकश क़बाब खाकर समझा कि मैं भी अन्तर्यामी होगया बाग़ में बैठे २ आनन्द में मग्न हुआ बुज़ुरुच्चमेहर जीता जागता अपने घर आया॥

चौपाई। परा बिपति में मैं बहुभाँती। बीतिगई आयों कुशलाती ॥

अपनी मातासे सब समाचार वर्णन किया वह बिचारी आफ़त की मारी यह समाचार सुनकर अपनी दीनता गुनकर और पुत्रके मुख से यह वृत्तान्त जानकर अति रोई और फिर उसके वचन पर ईश्वर की प्रशंसा करने लगी और कहा कि बेटा! घरसे बाहर न निकला करो ईश्वर न करै कोई बला तुम पर पड़े तुम को वैरियों से हानि पहुँचे उसने उत्तर दिया कि आप यह बात अपने चित्त में न लावें और रंज न करें देखिये ईश्वर क्या करता है? वह अपनी रचना कैसी देखाता है? उसके दशवें दिन बादशाह एक स्वप्न देखकर भूलगया प्रात समय हकीमों और मन्त्रियों को बुलाकर कहा कि मैंने रात्रि को एक स्वप्न देखा था सो भूल गया हूं किसी भाँति से याद नहीं आता है तुमको उचित है कि उस स्वप्न का वृत्तान्त वर्णन करो उसका बदला हमसे लो सबने बिनती की कि जो स्वप्न जान पड़ता तो उसका अभिप्राय सुनाते अपनी बुद्धि के अनुसार कहते बादशाह ने कहा कि सिकन्दरके समय में जो हकीम थे बहुधा वह स्वप्न देखकर भूलजाता था परन्तु उस स्वप्न को वे लोग बतादेते थे जो मेरा स्वप्न बताकर उसका फल न कहोगे तो एक २ को मार डालूंगा क्योंकि मैंने इसी मनोरथ के कारण से सहस्रों प्रकारके काम तुम्हारे निकाले हैं और इसी निमित्त तुमलोगों को हमने नौकर रक्खा है जो न कहोगे तो तुमलोगों को मारकर तुम्हारे बालबच्चों को भी मारूंगा और घर तुम्हारा सब नष्ट करदूंगा चालीस दिन की अवधि देता हूं जो मेरा स्वप्न सच्ची भाँति न कहा तो देखना किस भाँति से मैं करूंगा अलकश पर सबसे विशेष आज्ञा कीगई क्योंकि वह सबसे अधिक अधिकार पर था जितने हकीम और बुद्धिमान् थे इस बात से अत्यन्त घबराकर और संदेहमय होकर परस्पर कहनेलगे कि बिना सुनेहुए स्वप्न का बिचार किस भाँति से करें जिससे इस बला से छूटजावें जब चालीस दिवस हुए अर्थात् बादशाह की कही अवधि व्यतीत होगई तब सबको बुलाकर पूछा कि स्वप्न का बिचार किया कुछ पता लगाया और तो कोई न बोला परन्तु अलकश ने प्रार्थना की कि सेवक को रमल के द्वारा निश्चय हुआ है कि आपने स्वप्न में यह देखा था कि आकाशसे एक पक्षी ने आकर आपको आगके गड्ढे में डालदिया है यह देखकर आप डरसे अति चौंक पड़े और स्वप्न भूल गये बादशाहने क्रोधवान् होकर अतिआतुर कहा कि ऐ नीच! तू मुझे झूठ इस प्रकार के शब्द सुनाता है तूने मुझे भली प्रकार की वार्त्ता कही उसपर दावा हकीमी और रम्माली का करता है और अपनी बुद्धिमानी जताता है यह स्वप्न भला मैंने कब देखा था कि जो तूने वर्णन किया अच्छा मैंने दो दिवस की आज्ञा और दी है जो तैंने तीसरे रोज़ मुझे स्वप्न न बताया तो सौगन्द खाकर कहताहूं कि तुझे नमरूद की भट्ठी में डालकर जला दूंगा औरों को अतिदुसह दुःख दूंगा किन्तु किसी को भी जीता न छोड़ूंगा अलकश यह सुन शोक में मग्न होगया और इसी प्रकार से घर को गया वहां पहुंचकर

शीघ्र बख़्तियार हब्शी को बुलाकर पूछनेलगा कि सच बता तैंने वह लड़का क्या किया जीता छोड़दिया था कि ज़मीनके तले छिपाकर गाड़ दिया? उसने कहा कि उसको मैंने तभी मारडाला था और उसके कलेजे का क़बाब बनाकर आपको खिला दिया अब मुझसे पूछा जाता है कि वह लड़का कहां है? अलकश ने कहा कि वह बड़ा बुद्धिमान् और अन्तर्यामी है वह तेरे हाथ से बचरहा होगा आज्ञाभङ्ग से मत डर मुझे बता मैं क़सम खाता हूं तुझसे कोई बात न कहूंगा बल्कि तुझे जागीर और अधिकार दूंगा तू उसे बतलादे कि जिसमें मेरी जान बचै और मेरे साथ बहुत लोगों की जान और प्रतिष्ठा बचजावे उसने जो पहले कहा वही बात फिरभी कही तब तो उसने बलसहित तीन तमाचे उसके मारे जिससे नाक फटकर लोहू निकलआया बख़्तियार मुरझाकर ज़मीनपर गिरगया थोड़ी देरके पीछे चेतमें आया और कहने लगा सेवक को मत मारिये मैं उसको लिये आता हूं आपका कहा किये लाता हूं अलकश ने कहा कि हे नादान! पहले मैंने किस २ भांति से पूछा तूने न मानने के सिवाय स्वीकार न किया अब जब मार खाई यह बात जीभपर आई बख़्तियार ने कहा कि उसने मुझसे मनाकरदिया था कि जबतक तीन तमाचे न खालेना तबतक मेरा पता किसी भांति से न देना अलकश ने उसको छाती से लगाया और कहा कि शीघ्र उसको बुला ला मैं तुझे अतिप्रसन्न करूंगा और अगणित रत्न दूंगा और बख़्तियार ने बुज़ुरुच्चमेहर के दरवाज़े पर जाकर हांक दी बुज़ुरुच्चमेहर अतिशीघ्र घर से बाहर आया और समाचार पूछके उसके साथ अलकश के समीप गया अलकश बुज़ुरुच्चमेहर से शिष्टाचार सहित आगे आया और अगली बातों का उज़र करनेलगा और कहा कि बादशाह एक स्वप्न देखकर भूलगया है और हम को नाहक सशोक कररक्खाहै कहताहै कि मेरा जो स्वप्न न बताओगे तो एक २ को मारूंगा सो आपके सिवाय ऐसा किस में बल है कि अन्तःकरण की बात बताये हमारी स्त्री और बच्चों के संकट से छुड़ाये जो इस समय कृपा करके आप उस स्वप्न को बतावें तो मानों हमारे सबकी जान छुड़ावें बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि मैं यहां तो न बताऊंगा किन्तु आप प्रातसमय बादशाह से प्रार्थना करें कि मैं सरकार के हकीमों और बुद्धिमानों व मन्त्रियों की परीक्षा करता था कि यह भी कदाचित् अन्तःकरण की बात जानने का ज्ञान रखते हों सो जैसा यह लोग जानते हैं मुझपर क्या दीनदयालु परभी प्रकाशित होगया इनकी चतुरता बिदित होगई और अनुचर का एक बिद्यार्थी है जो उसे सरकार बुलाकर पूछें तो वह भी आपका स्वप्न बतला देगा सब ब्यौरा समेत सुना देगा जब बादशाह मुझे बोलावेगा मैं स्वप्नको वर्णन करके उस का अभिप्राय बिचारके कहदूंगा आपको प्रसन्न करादूंगा सैकड़ों मनुष्यों की जान बचालूंगा आपको बहुतसा अधिकार और भी मिलेगा॥

राजसभा से बुजुरुच्चमेहर करके बादशाह के स्वप्न का वर्णन और उसके पिता के बदले अलकशमन्त्री का वध वृत्तान्त वर्णन॥

कुं०। गेहूं पै गेहूं जमै, यवसे यव हैजाय। बदला अपना छोड़ जनि, नहिं पाछे पछिताय॥
नहिं पाछे पछिताय, समयसम एक न जैहैं। पहिलेही पतभार, फेरि कछो लगिये हैं॥
ग्रन्थकार कहैं सत्य, मानले मेरे बैना। दुःख परने के बाद, चैन पैहैं भरि नैना॥

इस संसार में बदला सबका मिलता है क्योंकि बहुधा लोग कहावत को कहते हैं कि कलियुग नहीं करयुग है इस हाथ से दे उस हाथ ले और बदला तो इसी संसार में मिलजाता है कदाचित् दैवयोग से रहजावे तो उसे अन्त में अवश्य मिलता है इसलिये मनुष्य को उचित है कि ईश्वर का ध्यान करे और क्षणभंगुर संसार की सम्पत्ति के लिये दुनिया में बदनामी न ले और परलोक को न बिगाड़े जैसे कि इस दुष्ट अलकश ने बुरे काम करके दुनिया और परलोक को बिगाड़ा है उसका वृत्तान्त लिखनेवाले ठीक २ यों लिखते हैं कि दूसरे दिन जो अलकश मन्त्री बादशाह की सेवा में प्राप्त हुआ और बुजुरुच्चमेहर का हाल प्रारम्भ किया तो बादशाह ने आज्ञा की कि उसको राजसभा में शीघ्र लाओ यह सुनकर एक चोपदारने बुजुरुच्चमेहर से जाकर कहा कि चलिये बादशाह ने आपको स्मरण किया है और बहुत शीघ्र बुलाया है उसने कहा कि मेरे वास्ते सरकारसे क्या सवारी लाये हो? तो मैं उसपर सवार हो बादशाह की चौखट चूमकर सभामें उपस्थित होऊँ उसने कहा कि सवारी तो नहीं लाया उसी भांति से आया था क्योंकि सवारी के निमित्त सरकार से कुछ आज्ञा नहीं पाई थी मैं अब जाता हूं और सरकार के मन्त्रियों से विनय करके सवारी लाताहूं चोपदार ने जाकर बिनती की कि वेसवारी वह नहीं आसक्ता है वह मनुष्य बड़े मनुष्य का लड़का है आज्ञा हुई कि घोड़ा लेजावो उसे शीघ्र लाओ जब घोड़ा लेजाकर चोपदार आया तो बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि घोड़ेकी उत्पत्ति वायुसे है और मैं मिट्टी से बनाहूं विदित है कि मिट्टी और वायु से परस्पर विरोध अर्थात् एक दूसरे में मिल नहीं सक्ते हैं इस कारण से मैं तो घोड़े पर सवार होकर कभी न जाऊंगा मेरे लायक़ सवारी लाओ तो मैं उसपर सवार होकर चलूंगा बादशाह की सभा में चोपदार ने पहुँचकर उसके कहेके अनुसार समाचार वर्णन किये बादशाह ने उत्तर दिया कि सब सवारियां लेजाओ जिसपर उसका चित्त चाहै सवार हो आवे बादशाह की आज्ञानुसार सब प्रकार की सवारियां तय्यार कीगईं और शीघ्र बुजुरुच्चमेहर के घर पहुंचीं बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि हाथीपर तो मैं न चढूंगा क्योंकि यह केवल सवारी बादशाह की है इस पर सवार होना बेअदबी है मियानेपर बीमार चढ़ते हैं मैं बीमार भी नहीं हूं और न मृतक जो चार के कांधे जाऊं जीतेजी अपने को मराहुआ बनाऊं प्रशंसा है उस ईश्वर की मैं अच्छीभांति नीरोग हूं न मांदा न सुस्त हूं और ऊंट फिरिस्ता स्वभाव है और मैं मनुष्य हूं इसपर सवार होनेकी ताक़त नहीं और मुझमें ऐसी कुछ लियाक़त नहीं खच्चर हरामज़ादा है और मैं हलालज़ादा हूं मेरी सवारी के योग्य नहीं बैल पर

बनिये और धोबी चढ़ते हैं मैं भले मनुष्य का लड़का हूं और मैं अपने बुरे भले से बचारहता हूं बिचारके द्वारा काम करता हूं गधेपर वह चढ़े जो भारी अपराध करै मैं तो बेअपराध हूं वादशाह का छोटा प्रजा हूं इन सवारियों को फेर लेजाओ और मेरा कहा वादशाह को सुनाओ लाचार होकर जो सवारियां लोग लाये थे फेर लेगये और बुज़ुरुच्चमेहर की कहीहुई वात वादशाह से कही वादशाह ने कहा कि भला उससे पूछो तो क्या सवारी मांगता है ? जो कहै वह भेजदीजावे उसका उपाय किया जावे नौकरों ने जाकर वादशाह की आज्ञा बुजुरुच्चमेहर को सुनाई उसने कहा कि जो वादशाह स्वीकार करें और स्वप्न सुनना अवश्य हो तो अलकश मन्त्री की पीठ पर ज़ीन कसवाकर भेजदें तो मैं अपने मन की सवारी पाकर उसपर सवार होकर सरकार में आऊं और स्वप्न को भलीभांति से वर्णन करूं दूसरे यह कि वह हकीमों का गधा है और उसपर सवार होना दोष नहीं मुझे उचित है सभा के लोगों को यह बृत्तान्त सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और कहनेलगे यह मनुष्य किस प्रकार का चित्त व मस्तक रखता है और किस प्रकार से साफ़ उत्तर देता है वादशाह की आज्ञा मानने में लोग अपने को बड़ा जानते हैं तो कोई मन्त्री के द्वारा आता तोभी उसका अहसान मानते हैं यहां तो वादशाह उसे आप बोलाते हैं वह किस २ भांति का उत्तर देता है या तो इस मनुष्य के मस्तक में कुछ उपद्रव है या कोई बड़ा मनुष्य है बादशाह यह सुनकर बहुत खिलखिलाकर हँसा और कहा कि अलकश की पीठ पर चारजामा खींचकर लेजाओ बुज़ुरुच्चमेहर को लेआओ आज्ञा की देरी थी अति शीघ्र अलकश की पीठपर ज़ीन बांधकर मुंहमें लगाम दीगई और बुज़ुरुच्चमेहर के समीप ले जाकर उसके मनोरथ को पूर्णकिया बुज़ुरुच्चमेहर अलकश की पीठ के ऊपर सवार होकर एड़ें मारमार कर कहा कि उस ईश्वर की प्रशंसा है कि आज मेरे पिता के बधिक को मेरे वश में किया ॥

बुज़ुरुच्चमेहर का अलकश की पीठपर सवार होना और देखनेवालों का उनके साथ जाना ॥

मार्ग के मध्य में जिसने देखा लड़का युवा बृद्ध हर एक उसके साथ हो लिया जब बादशाह के समीप आया वादशाह ने उसकी अतिप्रतिष्ठा की और अच्छा आसन दिया फिर पूछा कि अलकश ने तेरे साथ क्या अपराध किया है ? जिस कारण से तूने उसके साथ इस प्रकार किया बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि प्रथम तो इसने बड़ा कपट किया है और आपसा दयालु मालिक पाकर छल का मार्ग लिया है और चोरी भी इसने भारी की है इसको किंचित्मात्र डर न आया कि जो मेरी चोरी बिदित होजायगी तो इसका अन्त क्या होगा ? और कौन भांति से वादशाह मुझ पर क्रोध करेगा जीताहुआ पृथ्वी में गाड़ा जाऊंगा और कौन गति मेरी होगी यह चोरी कैसी ख़राबी देखावगी दूसरी यह वात है कि यद्यपि इसने मेरे पिता से रमल की बिद्या पढ़ी और उसका बिद्यार्थी था और उसने इसके साथ अति स्नेह किया और सब प्रकार से

ज्ञान व गुण व विद्या का दिखाया जो इसका बाधक होता तो इस प्रकार से कभी इसको न सिखाता और मेरा पिता इसकी ओर से अपना चित्त प्रसन्न और स्वच्छ और गुरु के समान सिखाने में रखता था और अपनी सन्तान से इस दुष्ट के साथ अधिक स्नेह रखता था और कोई समाचार भला बुरा इससे छिपा न रखता था और कोई वस्तु इससे बाहर नहीं रखता था सात ढेर द्रव्य के गाड़ेहुए सद्दाद के थे उसे मिले थे आपने नहीं लिया और मित्रता के कारण इसको बतादिया एक कौड़ी भी उसमें से न ली सकल द्रव्य इसे सौंप दिया इसने इस डरसे कि कदाचित् यह बात किसी से कहदे और होते २ आप पर भी विदित होजावे तो ये सातों ढेर मेरे हाथ से जाते रहें और सहजही दूसरे को मिलजावें उस बे अपराध को मारकर उसी कोठरी में गाड़दिया कुछ भी ईश्वर और बड़े बूढ़ों का डर मन में न लाया और बे अपराध अपनी गर्दनपर अपराध लिया और अभी उसी स्थान में उसकी मिट्टी पड़ी है कङ्कड़ पत्थर के तले कुछ तुपी है यह नहीं जाना कि बे अपराध का अपराध पुकारता फ़िरेगा नये २ भांति के रङ्ग देखाकर संसार में जहाँ पानी न मिलेगा वहां मारेगा सो इस कारण से मैं दीनदयालु सर्बकृपालु से आशा रखताहूं कि मैं अपने न्याय को पहुँचूं जो आप मेरा न्याय अपने न्यायशाला में न करेंगे तो ईश्वर सर्बब्यापी है वह न्याय आपसे मांगेगा जिस समय मैं उससे मांगूंगा उस समय आप भी पूछे जायँगे इस काम के निमित्त बदले के हेतु आप बुलाये जावेंगे तब उसके सामने क्या उत्तर दीजियेगा ? जब आपसे पूछेगा तब किस भांति से तरियेगा जब बादशाह ने यह समाचार पाया अत्यन्त क्रोधवश होकर अलकश मन्त्री की ओर देखा और कहा यह क्या कहता है ? इसके पिता ने तेरे साथ क्या अपराध किया था ? जिस पर तैंने उसे मारडाला और उसके लड़के को सुरहा और स्त्री को रांड़ कर डाला मेरा क्या तैंने ईश्वर का भी कुछ डर न किया यह न सोचा कि मैं इस समय नाहक़ अपराध करता हूं अन्त को यह पाप रङ्ग प्रकट करेगा मुझे अतिदण्ड दिलावेगा सच है उसने तेरे साथ ऐसीही बदी की थी कि जिसके बदले तूने उसको इस भांति का कष्ट दिया जो वह रमल की विद्या न पढ़ाता तो ॥

दोहा। बाणावरी सिखाय दी, विविधभांति गुण जाहि। अन्त निशाना कीन मोहि, निज मनमें हर्षाहि॥

निशाना मृत्यु के तीर का क्यों बनता जो वह सात ढेर द्रव्य के जो कि ईश्वर ने दी थी तुझे न दिखाता तो उसका भोग क्यों चढ़ता सच है ॥

सोरठा। बदकी बदी न जाय, नेकी जो बातें करै। तासों बदी समाय, यह चरित्र है खलन को॥

किन्तु देख तू इसका बदला कैसा पाता सीधा अभय रसातल को जाता है और इस समाचार को तैंने राजसभा में प्रकट न किया यहभी बड़ा अपराध किया और न्याय का पाप तूने अपने शिरपर लिया अलकश ने कहा कि सरकार यह झूंठ मुझे अपराध लगाता है और सहजही मुझे लिये मरता है बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि यही गेंद

मैदान है हाथ कंगन को आरसी क्या है? कुछ मनुष्य मेरे साथ चलें मैं अपने दावाको ठीक करदूंगा इस झूंठे को दरवाज़ेतक पहुंचाऊंगा बादशाह आप नौकरों समेत उस स्थान की ओर जहां ख्वाजेजमाल मराहुआ पड़ा था चला बुज़ुरुच्चमेहर के साथ हो लिया और आज्ञा की कि अलकश को भी बेड़ियां पहिनाकर पैदल के समान शीघ्र दौड़ालाओ इस चरित्र को देखकर सब नगरमें हलचल पड़गया सब मनुष्य इस समाचार के देखने के निमित्त दौड़े कोई ईश्वर का क्रोध जानकर बचने का शब्द जीभपर लाया कोई मनुष्य यह कहता था कि ऐसे शीलवाले मनुष्य को इसने अपराध विना मारा है सैकड़ों गालियां देनेलगे और भला बुरा कहनेलगे कोई कहता था बदी का फल बदी होता है बुरे काम का बदला कभी न कभी मिलता है कोई उस की बुरीदशा देखकर उसपर शोक करनेलगा था खुलासा यह है कि सकल नौकर व देखनेवालों सहित बलसमेत उसको बाग़ के दरवाज़े तक लाये जिस समय अन्याय बाग़ में पहुँचे बुज़ुरुच्चमेहर बादशाह को उस तहख़ानेमें लेगया और उसी स्थान का पता दिया देखा तो सत्य सात ढेर द्रव्य के उस तहख़ाने में भलीभाँति रक्खे हैं और एकओर मिट्टी ख्वाजेजमाल की पड़ीहुई है परन्तु सूख गई है और मारा जाना वे दोष उसके शरीरपर विदित है और घोड़ाभी मृतक पड़ा है और खाल व हड्डी सब सूखगई हैं कांटेके समान होगया है बादशाह वह अधिक द्रव्य देखकर कृतकृत्य हुआ और आज्ञा की कि इसी समय इस द्रव्य को हमारे ख़ज़ाने में पहुंचावो सुशीलता से हमारे कोठों में भरदो उनकी आज्ञानुसार काम कियागया॥

चौपाई। सम्पति जहँ आनि तहँ चलिजाही। यह वृत्तान्त विदित जगमाहीं॥

और बुज़ुरुच्चमेहर का कहा सत्य जाना और ख्वाजेकी लाश निकालकर बहुत धूमधाम से साजकर क़बर में रखवादी और उस स्थान में एक मुक़बरा बनादिया इसके पीछे अलकश से बदला लेने और अपने पिता की क्रिया करने को चाहता था अर्थात् फ़ातिहाआदि अपने दीन के अनुसार करने के निमित्त चाहा इस कारण बादशाह ने समझ और जानकर उसे चालीस दिवसकी छुट्टी कृपा की और अपने कोप से सहस्रों रुपया देकर बिदाकिया बुज़ुरुच्चमेहर उन रुपयों को हाथियों पर लदवाकर घरमें लाया और कृपाशालिनी माता के सामने रखवादिये और तमाम वृत्तान्त वर्णन किया और चेहलुम करनेके सोचमें रहा सब प्रकार के लोग जो बादशाह की न्यायशाला में काम करते थे नई सरकार को देखकर जमाहुए और मित्र तथा स्नेही व कुटुम्ब परिवार के लोग अधिक प्रताप होना सुनकर प्रीतिपूर्वक सब इकट्ठे हुए और खाने की सामग्री होनेलगी और प्रतिदिन खाना बँटनेलगा और अनेक मार्गों में भी बांटने के निमित्त खाना भेजागया जब मित्रों और कुटुम्बवालों से अच्छे प्रकार से शिष्टाचार करचुके उस समय भिक्षुक आदि प्रजा की बारी आई इसी प्रकार से चालीस दिवस तक बराबर पुण्य करतारहा चालसीं व

व्यौहार करचुका और सबभांतिके रसम निबाह दिये तिस पीछे बुजुरुचमेहर बादशाह के समीप गया मातमपुरसी की अर्थात् शोक करनेकी खिलअत पाई और अपनी न्यायशाला में रहनेके निमित्त बादशाह की आज्ञा हुई एक दिवस अवसर पाकर बिनय की कि जो प्रभु की आज्ञा हो तो उस स्वप्न को कहूँ आपके समीप सत्य ठहरूं कहा कि सबसे उत्तम जो मेरा स्वप्न सच बतावोगे तो बहुत कुछ पावोगे मेरा सन्देह दूर होजावेगा चित्त दुबिधारहित होगा बुजुरुचमेहर ने बिनय की कि आपने यह स्वप्न देखा था कि दस्तरख्वान बिछा है उसपर भांति २ के इकतालीस व्यञ्जन के पात्र खानेके रक्खे हैं आपने एक हलुआ के पात्रमें से कौर तोड़कर चाहा कि भोजन करें इससे एक कुत्ता काले रंग का आया और वह कौर आपके करसे छीन लिया और वहां से भागगया आप डरकर चौंकपड़े और इस स्वप्न को भूलगये बादशाह ने कहा कि मैं सौगन्द खाताहूं कि यही स्वप्न मैंने देखा था और सत्य है मेरा स्वप्न यही था हां अब इसको बिचारकर मेरे सामने वर्णन करो बुजुरुचमेहर ने कहा कि सेवक को अपने धाम में लेचलिये और सब स्त्रियों को जमा कीजिये उस समय इस स्वप्न का बिचार कहूँगा और सब २ समाचार सुनाऊँगा बादशाह बुजुरुचमेहर को साथ लेकर महल में गया और स्त्रियों को बोलाया सब बादशाह की आज्ञानुसार एक स्थान में आईं तदनन्तर एक युवती अतिनागर परम उजागर स्वरूप की आगर साज पहिने परीसमान प्रकाशमान मृगनयनी मृदुबयनी गजगामिनी सिंहकटिभामिनी लौंड़ियां साथ मेहँदी हाथ में आस पास टहलुई बीच में हुई नई चालढाल से उपस्थित हुई लौंड़ियों के साथ एक हब्शिन भी दृष्टि पड़ी बुजुरुचमेहरने उसका हाथ पकड़के बिनय की कि यह वही कुत्ता काला है जिसने आपके हाथ से कौर छीनलिया था और वह कौर वह शाहज़ादी है जो आपसा बादशाह स्वरूपवान् पाकर फिर छोड़कर इस दुष्ट के साथ बिलास कररही है बादशाह आश्चर्य मानकर उसे देखा तो बिदित हुआ कि सत्य वह स्त्री नहीं मर्द है स्त्री के बाना में शाहज़ादी के साथ रहा करता था रात दिन आनन्दसहित निडर बिहार किया करता था बादशाह को इस बृत्तान्त के मालूम होने से अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ और सब द्वारपाल पकड़गये और खासकर इस द्वारपाल को अतिकष्ट दिया गया और बादशाह की आज्ञा से उसी समय हब्शी कुत्तों करके कटायागया और उस शाहज़ादी को प्रथम तो गधेपर चढ़ाकर सकल नगर में घुमाया तदनन्तर मीनार में रखकर चुनवादिया और बुजुरुचमेहर को बड़ाई की खिलअत कृपा की अलकश को उसी समय बाहर भेजवाकर और सबको देखाकर एक स्थान में गड़वादिया परन्तु ऊपरका धड़ खुलारक्खा और तीरन्दाज़ों से निशाना लगवाया और अलकश की धन सम्पत्ति स्त्री पुत्रों समेत बुजुरुचमेहरको देदी लाखों रुपये का धन कहां से कहां आया बुजुरुचमेहर नज़र देकर वहांसे छुट्टी लेकर और बख़्तियार सेवक को साथ ले अलकश मन्त्री के घरमें गया उसकी स्त्री से कहा कि मुझे इस धन सम्पत्ति से कुछ काम नहीं

है ऐसा धन लेकर कोई क्या करै? तुझीको मुबारक रहै परन्तु मैंने बख़्तियार से वचन किया था कि अपने बापका बदला लेनेके पीछे तेरा बिवाह अलकश की लड़की के साथ करादूंगा और तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा सो तू अब मेरी ख़ातिर से इसके साथ अपनी दुहिता ब्याहदे और इसकी मनोकामना पूर्ण करदे और तुझे भी बचन देता हूं कि जो तेरी बेटी के पेटसे बख़्तियारका जो पुत्र उत्पन्न होगा तो उसे मैं पढ़ाऊंगा और जब वह चैतन्य होगा उस समय अलकश के अधिकार बादशाह से दिलादूंगा अलकश की स्त्रीने विनय की कि मुझे आपके मनोरथ में कुछ उज़र नहीं है मैं आपकी दासी तुल्य हूं आप जिसपर प्रसन्न हों मैं उसपर राज़ी हूं वह आपकी दासी है जिस को इच्छा हो देदीजिये मैं अतिआनन्द पाऊंगी खुलासा यह है कि अलकश की स्त्री ने बुज़ुरुचमेहर की आज्ञानुसार अपनी बेटी का बिवाह बख़्तियार हब्शी से कर दिया बुज़ुरुचमेहर का कहना स्वीकार किया जिस समय बादशाह ने यह सुना तो बुज़ुरुचमेहर की बुद्धिमानी और शीलता और निर्लोभता देखकर आश्चर्य माना और फिर कई दिन पीछे जिस समय मन्त्री और बुद्धिमान् और हकीम व पहलवान आदि न्यायशाला में आये कहा कि बुज़ुरुचमेहर अपने घराने में बड़ा अच्छा मनुष्य है और भले अच्छे मनुष्य का पुत्र है और उसके समान हिम्मत में दूसरा नहीं है ख़्वाजे बख़्तजमाल का बेटा हकीम जामासका पौत्र है और विद्या में अपनासा दूसरा नहीं रखता है और धर्म कर्म में अतिचतुर है ऐसा मनुष्य कम देखने में आयाहै देखो अलकश कुकर्मी अधर्मी ने कैसी दुष्टता की जो मैंने सम्पत्ति उसको कृपा की थी उसने उसकी स्त्री और बेटी को देदी एक कौड़ीतक उसमें से उसने न ली व्याकरण व ज्योतिष रमल गणित इत्यादि सब प्रकार की बिद्याओं में अतिनिपुण है इसको छोड़ उदार वो राजप्रबन्धमें चतुर पहलवानी सुशीलता और शुभस्वरूप में भी अति शोभित है और सत्य और मृदु बोलताहै इस भांति का मनुष्य देखने में नहीं आया है बल्कि ढूंढ़ने से ऐसा सर्वगुणी नहीं मिलसक्ता है और अन्तर्यामी भी है इसके पहले हमारे राज्य में जितने मन्त्री थे अबुध और राज्यप्रबन्ध में आलसी थे इस कारण से इसको मैं अपना मन्त्री बनाकर प्रधानता की ख़िलअत इसे दूंगा सभाके रहनेवालों ने बादशाह की बुद्धि की प्रशंसा की और कहा कि सत्य है इस गुण का क्या कोई दावा करसके आपकी बुद्धिमानी वर्णन करने से बयान नहीं होसक्ती है इस काम को जो आपने कहा है उसे कृपादृष्टि से शीघ्र करडालिये हम सबको भी यही आशा है कि बुज़ुरुचमेहर को अधिक अधिकार दियाजावे बादशाह ने उसी समय बुज़ुरुचमेहर को मन्त्री की ख़िलअत दी और दाहिनी ओर कुरसी पर बैठने को तख़्त के समीप आज्ञा दी फिर थोड़ी देरके पीछे कचहरी बरख़ास्त हुई बुज़ुरुचमेहर अति हर्ष से अपने घर में आया और पारितोषिक आदि बँटनेलगा उसकी माता देखकर ईश्वर को नमस्कार करके प्रशंसा करनेलगी बुज़ुरुचमेहर राज्यप्रबन्ध को बिचारके द्वारा करने लगा ॥

बादशाह करके स्वरूपवती दिलाराम नाम स्त्री का निकालना और फिर उसके स्वीकार का वर्णन॥

आकाश बाज़ीगर मनुष्यों को किस २ भांति से फिराता है और माया जादूगरनी कैसे रूप दिखाती है कभी फ़क़ीर को बादशाह और कभी बादशाह को यती कर देती है और जिन्हें सूखी रोटीतक नहीं मिलती वह सहस्रों मनुष्यों को भोजन देते हैं जो एक २ कौड़ी के कंगाल थे उनको धन सम्पत्ति अत्यन्त बढ़ाते हैं इस वृत्तान्त के अनुसार यह इतिहास एक यती का वर्णन करते हैं कि बादशाह को उस स्त्री चञ्चल चपल की चाल से सब स्त्रियों का बिश्वास जातारहा दिलाराम के सिवा कि वह अतिस्वरूपवान् और गाने व बजाने आदि में अतिचतुर थी बादशाह के निकट कोई स्त्री आने न पाती थी और कदाचित् किसी स्त्री का सामना दैवयोग से हो गया तो बादशाह क्रोधवान् हो उसे अधिक दण्ड देता था एक दिन बादशाह आखेट को गया बाज, जुर्रे, बहरी, लगाड़झगड़, बेसरापहाड़ी, पाहबहरी, बच्चासिकरा; वाशातिर्सुनी आदि व शिकारी कुत्ते, चीते, स्याहगोश, करौल इत्यादि का समूह का समूह साथ बादशाह के चले राज्य के समीप एक पहाड़ आसमान के समान ऊंचा अतिरमणीक स्थान कहीं २ फूल लगेहुए और मनोहर भूमि देखने में आई किसी ओर अतिलम्बे सीधे बृक्ष शोभायमान थे किसी ओर बेली अधीन से शिर पृथ्वीपर रक्खेहुए और उसके खोह में एक आखेट की जगह अतिआनन्ददायक थी और भांति २ के फूलों की सुगन्ध छारही थी और बृक्ष अतिहरे लहलहा रहे थे और शिकार इस भांति से थे कि गिनने में न आसके काजकुंग; सुरख़ाब, मुर्ग़ाबी, सारस आदि अगणित इसको छोड़ एक ओर मैदान में मृग, चीतल, पाढ़े वा बारासिंगे, पसीन, घोड़ारोज, चिकारी भांति २ के पशु पक्षियों की अधिकता थी और कोसों तक घास लहसुनिया की भांति जमी थी और पानी की नहरें चारों ओर से बहती थीं कहीं नदी कहीं सोते कहीं सरोवर बहते थे एक ओर महानद लहरें आनन्दमयी ले रहा था जिसका फाट व जल निर्मल और बहुत पवित्र था और उसीके किनारेपर हरे हरे धानों के खेत लहलहा रहे थे और कहीं २ फूल फूलरहे थे बादशाह यह समाचार देखकर नद के समीप उतरपड़ा दैवयोग से एक मनुष्य बृद्ध लकड़ियों का गट्ठा शिर पर धरेहुए बनकी ओरसे आताहुआ दृष्टि पड़ा अत्यन्त बृद्ध होगया था पैर धरने से कांप रहा था मार्ग में अच्छी भांति से चला न जाता था बादशाह उसके ऊपर दयालु होकर कहनेलगा कि पूछो इस लकड़िहारे का क्या नाम है इसका घर कहां है पूछा गया तो जाना कि नाम इस दीन का क़बाद है कुसमय के हाथों से अतिदुःखित होरहा है बादशाह अपने नाम के मनुष्यको देखकर अतिआश्चर्य मानकर बुज़ुरुच्चमेहर से पूछा कि देखो तो हमारे और इसके भाग्य में क्या भेद है? यद्यपि एकराशि होनेसे मैं तो सातों देशों का बादशाह हूं और यह भिखारी है बुज़ुरुच्चमेहरने रीतिके अनुसार देखकर विनय की कि आपकी और इसकी राशि तो एकही है और अद्द

भी एक हैं परन्तु आपके उत्पन्न होने के समय चन्द्र सूर्य और स्थान पर थे और इसके पैदा होने के अवसर वे दोनों मीन ग्रह में थे यह सुनकर दिलाराम स्त्री ने इस भांति से कहा कि मैं इसका प्रमाण नहीं मानती इन नक्षत्रों को कुछ नहीं जानती मुझे ज्ञान पड़ताहै कि इसकी स्त्री कुबुद्धि है और यह मनुष्य भोला है नहीं तो इस गति को न प्राप्त होता और इसका यह समाचार न होता तो इस कष्टमें अपनी अवस्था न खोता बादशाह तो स्त्रियों की ओर से शोकमय व अप्रसन्न रहताही था दिलाराम की यह बात अतिबुरी जानपड़ी इसके कहने से जानाजाता है कि हमारी सम्पत्ति इसी के हेतु करके है और सब धन व सामग्री इसीसे है क्रोधित हो बादशाह ने कहा कि इसका भूषण यहीं उतारके इसे लकड़िहारे को दो तुरन्त हमारी दृष्टि से इस निर्लज्ज को दूर करो आज्ञा होतेही वह लकड़िहारे को सौंपदीगई सहस्रों मनुष्यों के मध्य में अतिशोक में ग्रसित हुई दिलाराम ने ईश्वरकी कर्तव्य जानकर लकड़िहारेसे कहा कि मुझे अपने घरको लेचल भगवान् ने तुझपर दया की कि मुझसी स्त्री को तुझे दिलाया ईश्वर का धन्यवाद कर कि कष्टके दिन दूर हुए इसका शोच न करना कि मुझे रोटी देनी होगी कि इस अवस्था में और विपत्ति शिरपर लेनीपड़ेगी मैं और हज़ारों को भोजन दूंगी तेरा नाम प्रसिद्ध करूंगी इन वचनों को सुनकर वह वृद्ध मनुष्य अत्यन्त प्रसन्न हुआ अपने साथ उसको घर लेचला जब घरके निकट गया तो उसकी स्त्री ने देखा कि बुड्ढा आज नया चरित्र लाया और यह एक नया फूल वन में फूला एक स्त्री अतिकोमल युवती स्वरूपवती लिये आता है क्या बुढ़ापा लगा है कि मुझपर इस अवस्था में दूसरी सौत लाया है यह वचन कहकर बड़े बलसे दो थप्पर मारे जिससे बूढ़ा भूमिपर गिरपड़ा लोटन कबूतर की भांति लोटने लगा दिलाराम ने उस स्त्री से यह कहा ॥

चौपाई। आप क्रोध किमि उसमें लीन्हा। तव पति पितासरिस मैं चीन्हा ॥
कछु अपने उर जनि घबराहू। नहिं पुनि शोच पोच पछिताहू ॥

ऐ बीबी! सुलक्षणी परी विलक्षणी इस नाते से आप मेरी दयाशालिनी माता के समान हुईं अपने लड़कों में मुझे भी जानो मुझे अपने हाथ से रोटी उठाकर कर दीजिये मैं खाने पीने का दुःख न होने दूंगी बल्कि और आपकी सेवा करूंगी उस बुढ़िया को दिलाराम की बातों पर दया आई और अपने कहने पर लज्जित होकर कहा कि बीबी मैं राज़ी हूं सहित घरबार आपका है मुझे भी जो हाथ उठाकर देदोगी तुम्हारी सेवा किया करूंगी और यह उसका मामूल था कि दिनभर लकड़ियां सदा बीनकर संध्या समय बेंचकर बाज़ार से रोटियां मोल लेकर घर में आता और बारह तेरह लड़के लूले लँगड़े अपाहिज उसे लिपट जाते और रोटियां लेकर परस्पर बांटकर खाजाते थे परन्तु पेट सन्तुष्ट कभी न होता था भूखे रहते थे यह दीनता और कष्ट सहते थे एक दिन तो दिलाराम यह समाचार देखकर चुप होरही दूसरे दिन न रहागया उस लकड़िहारे से कहा कि बाबा जान आज

तुम लकड़ियां बेंचकर गेहूं मोल लाना बाज़ार की रोटियां किसी भांति से न लाना उसने कहा कि अच्छा बेटा आज ऐसाही करूंगा तुम्हें गेहूं लादूंगा उस दिन लकड़ियां बेंचकर वह गेहूं लाया दिलाराम के सामने वैसेही पहुँचाया दिलाराम ले जाकर पीस लाई और रोटी उसकी बनाकर सब को क्षुधाभर खिलाई वह सब उसका धन्यवाद करने लगे और उसके प्रताप से सब चैन करनेलगे जो दो दिवस के पैसे बचेहुए थे उसकी ऊन मँगाकर उसकी डोरियां बटकर उस बूढ़े को सौंपदीं कि इसे बाज़ार में लेजाओ उचित मोलपर बेंचलाना फिर इसी रीति का बर्ताव करतीरही कि कई दिवस के गेहूं इकट्ठा करके एक दिन उसकी ऊन बंदलाई और उसकी डोरियां बटकर बाज़ार से बिकवा मँगवाई होते २ थोड़े दिवस में कुछ रुपया जमा करके खच्चर मोल लेकर उस बृद्ध को दिया कि इसपर लकड़ियां लादलाया करो इस बुढ़ापे में कष्ट न सहो लकड़ियां भी अधिक आवेंगी और तुम भी सुख पाओगे और जो बचेंगी वह घर में जलजायँगी निदान इसी भांतिसे दो वर्ष के समय में धीरे धीरे चार खच्चर और कई टहलुवे दिलाराम ने मोल लिये और उसके किराये से कुछ असबाब और मकानात भी मोल लिये उस बृद्ध के घर की सूरत बदलगई दरिद्र दूर हुआ भाग्य उदय हुई लड़के बाले अतिप्रसन्न और मियां की भी सूरत रङ्ग बदली देखकर अतिप्रसन्नता से आनन्दमय हुए और जब वर्षा की ऋतु आई दिलाराम ने कहा कि इस ऋतुभर टहलुओं को खच्चर समेत अपने साथ लेजाकर लकड़ियां बनसे बाज़ार में बेंचने को न लायाकरो वहीं पहाड़ की गुफ़ामें इकट्ठा कर आयाकरो जाड़े और बर्षा में अधिक मोल से बिकेंगी कुछ न कुछ लाभ प्राप्त होरहेगा उस बृद्ध मनुष्य ने वैसाही किया जिस भांति दिलाराम ने कहा जब वर्षा ब्यतीत होनेलगी और जाड़े की ऋतु आई और लकड़ियों का ख़र्च स्नान आदिक में होने लगा ऋतुका रङ्ग बदल गया शरदी ने अपना आगमन जनाया बादशाह उसी पर्बत पर फिर आखेट खेलने को आया दैवयोग से दूसरे दिन रात्रि को ऐसी बर्फ़ पड़ी कि जिससे कोई बोल नहीं सक्ता था हाथ पांव बाहर नहीं होते थे आग व रुई के बिना किसी को चैन न था दांतपर दांत बाजरहे थे सब सेना बादशाही शीत के कारण ठिठुरकर मृतक के समान होगई बन में ऐसा दुःख पड़ा कि मनुष्य लकड़ी तापने को खोजने लगे अचानक लकड़ियों का ढेर जो पहाड़ में देखा तब जी में धैर्य आया कि जीने का सहारा हुआ फिर आग लगा कर तापने लगे जब इन्द्रियां चैतन्य हुईं तब प्रातःकाल बादशाह सेनासमेत आखेट खेलकर अपनी राजधानी को लौट आया, क़बाद लकड़िहारा भी लकड़ी लेने को चला और अपनी रीति के अनुसार उसी स्थानपर पहुंचा लकड़ियां तो न पाईं परन्तु कोयलों का ढेर देखा तो कमर थांभकर बैठगया और धाड़ें मार २ कर रोने लगा आंसूसे मुख धोने लगा अब ईश्वर के चरित्र को देखिये क़बाद के दिन फिरे भाग्य उदय हुई मिट्टी छूने से सोना होता है उन लकड़ियों का समा-

चार यों हुआ कि उस खाड़ी में एक सोने की खान थी जिस समय आग की गर्मी पड़ी वह पिघलकर एक स्थानपर इकट्ठी होगई क़वाद ने कोयला खोदना आरम्भ किया पत्थर भी जल गया था उस को भी कोयला जानकर खोदा तो उसके तले कई सिलें निकलीं बुड्ढे ने दिलाराम के निमित्त कई खच्चर कोयलों के लादे और दो एक सिलें भी साथ रखलीं जब घर में आया तो दिलाराम के निकट कोयले डालकर फूट २ कर रोया और सब कहानी कह सुनाई और कहा कोयलों को छोड़ कर पत्थरों की भी हजारों सिलें बन गई हैं ढेरकी ढेर पड़ी हैं दो एक सिलें भी इसी निमित्त उठा लाया हूं कि कदाचित् तुम्हें विश्वास न हो तो अपनी दृष्टि से देखलो मुझे झूठा न जानो मसाला पीसने के काम में आवेंगी और एक आध बेंच भी डालेंगे दिलाराम उस सिल को छुरीकी नोक से परीक्षा के निमित्त जो खुरचकर देखा तो सिल सुवर्ण की है उसी समय भगवान् का धन्यवाद किया और बोली॥

चौ० ॥ गरुअ सुमेरु रेणुसम ताही। राम कृपाकरि चितवैं जाही॥

क़वाद से कहा कि शीघ्र जाओ और जितनी सिलें हैं खच्चरों पर लादलाओ बुड्ढा अतिशीघ्रता से सब सिलें लाद लाया फिर दिलाराम ने एक पत्र फ़ैसल सोनार के नाम लिखकर क़वाद के हाथ में दिया और एक खच्चरपर जितनी सिलें लदसकीं लदवा कर उसके साथ करके कहा कि बसरे में जाकर यह पत्र और यह सिलें जो खच्चरपर लादी हैं फ़ैसल सोनार को देना और मेरीतरफ़ से दण्डवत् करना जिस भांति से तुम मेरे पिता हो उसी भांति से वह मेरा भ्राता है उसने मुझपर बड़ी दया की थी उस से कहना कि मैं दिलाराम का वकील हूं तुम्हारे समीप भेजा है और प्रयोजन इस पत्र में लिखा है वह इन सिलों के सिक्के कराके तुम्हें देदेगा तुम लेआना खबरदार राह में कहीं किसी चोर बटपार डाकू के जाल में न आ जाना क़वाद तो पत्र और सिलें लेकर बसरे की ओर चला इधर दिलाराम ने बाकी सिलों को एक गड्ढा गहरा आँगन में खोदवाकर गड़वादीं और एक टहलुये को सुहेल सराफ़ के समीप जो मदायननगर में रहता था भेजा और यह सँदेशा कहा कि कई वर्ष से मैं बादशाह के क्रोधमें आई हूं दुःख में समय व्यतीत करलेती हूं आकाश के चक्कर में फँसी हूं जो ईश्वर चाहेंगे तो अतिशीघ्र फिर उसी भांति हो जाऊंगी और बादशाह की चौखट पर शीघ्र पहुंच जाऊंगी उचित है कि तुम जल्दी मेरे निकट कारीगर, थवई, मजदूर, बढ़ई आदि साथ लेकर पहुंचो और कुछ ढील इधर के आने में न करना कि मुझे एक स्थान बादशाहों के समान तुम्हारे द्वारा बनवाना है जो तुम्हारे प्रबन्ध से बनजाय और मेरे प्रसन्न हो जाय तो तुम्हारा अधिक उपकार है और इस समय जो कुछ कि रुपया उसके बनने में लगेगा तुम अपने पास से खर्चकरना मजदूरों आदि की मजदूरी देदेना ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र तुम्हारा रुपया पटजायगा दाम २ मुझसे लेलना जोकि सुहेलको

दिलाराम का बड़ा विश्वास था इस संदेशा सुनने के साथ थवई, संगतराश आदि कारीगर चतुर प्रबीण व बुद्धिमान् लेकर दिलाराम के निकट आया और विनय की कि मैं आपका अनुचर हूं जो कुछ आज्ञा हो उसे करूं देने लेने की चर्चा क्या है जब ईश्वर आपको बड़े दर्जेपर पहुँचावे मुझे प्रसन्न कीजियेगा भूल न जाइयेगा यह प्रार्थना करके शुभ घड़ी में महल की नींव डाली सहस्रों कारीगर काम बनानेलगे इस बन में बस्ती की सूरत निकली थोड़े दिन में वह स्थान बनगया उस स्थान में ईश्वर की माया प्रकाश हुई जब वह मकान बनगया दिलाराम ने अपने और बादशाह के चित्र सब भीतों में खिंचवाये और भी अनेक चित्र मनोहर थवइयों से बनवाये और सामान राजों का सा उस मकान के निमित्त मँगाकर सजाया थोड़े समय में अतिबिचित्र सुडौल के साथ उस घर को अरजङ्ग बादशाह के धाम के समान बनवा दिया और दूत बरक़ंदाज़ और तिलंगे फ़राश सेवक खासबरदार व चोबदार व कहार आदि नौकर रक्खे और सब गुणों के गुणागार और पहलवान, फकैत, पटयत, बकयत, तबनयत, चाबुकसवार, नेज़ाबाज़, तीरन्दाज़ दूर २ से बुलवाये इस समयमें क़वाद भी अशर्फ़ियां बसरे से लेकर पहुंचा दिलाराम क़वाद को स्नान के निमित्त हौज़ में भेजा क़वाद की सत्तर पीढ़ी में भी किसी ने कभी नहीं ऐसा हम्माम देखा था सेवक स्नान के निमित्त कपड़े उतारने लगे क़वाद भयभीत होकर उसके चरणों पर गिरपड़ा कि मुझ से जो कुछ अपराध हुआ हो उसे क्षमा कीजिये मुझे नंगा करके इस खौलतेहुए पानी में न जलाइये सेवक उसको ऐसा देख बहुत हँसे और उसे धैर्य दिया और कहा कि जो तुम समझे हो वैसा न होने पावेगा तुम न डरो तुम्हें कष्ट न होगा नहाने के पीछे देह स्वच्छ और हलकी हो जाती है लुंगी जो बांधने को दी तो शिरसे बांधने लगा बड़ी कठिनता से क़वाद को स्नान करवाया और बस्त्र पहिनाये गये कि वैसे बादशाहों को छोड़ किसी को प्राप्त न हों और दिलाराम ने उससे कहा कि आज के दिन से क़वाद को सौदागर के सिवाय कोई लकड़िहारा कहेगा तो उसकी जीभ निकाली जायगी और बहुत कष्ट व दुःख उठावेगा और चार पांच दिन के पीछे उत्तम असबाब और नवीन वस्तु उसके साथ करके बुज़ुरुचमेहर की भेंट के निमित्त भेजा और ढंग सब भांति का जो मन्त्री और अमीरों का होता है लिखा पढ़ा दिया क़वाद मन्त्री के गृह में पहुँचा बुज़ुरुचमेहर को समाचार बिदित हुआ और न्यायशाला में बोलवाकर सौदागर से मिलकर बूढ़े मनुष्य को देखकर अधिक शिष्टाचार किया और अतिप्रतिष्ठा करके भेंट और मनोरथ प्रकट करने के पीछे क़वाद ने दिलाराम की आज्ञानुसार बादशाह की भेंट का मनोरथ किया और उस के मिलाप की युक्ति चाही ख़्वाजे ने कहा कि अतिउत्तम आज मैं बादशाह से आप की चर्चा कर रक्खूंगा आप की प्रतिष्ठा के अनुसार बादशाह से बर्णन करूंगा कल शुभ दिन भी है और सावकाश भी मिलेगा प्रथम पहर में चले आइये बादशाह

से भेंट होजायगी क़बाद विदा होकर अपने घरमें आया और जो कुछ बुज़ुरुचमेहर ने कहा था उसे कह सुनाया दिलाराम ने दूसरे दिन सुहेल से पूछा कि आज बादशाह किस भांति के वस्त्र धारण किये हैं और कैसे भूषण सजे हैं उसने जिस प्रकार से वर्णन किया दिलाराम ने उसी रीति से वस्त्र क़बाद सौदागर को पहिनाकर बादशाह की भेंट के निमित्त भेजा क़बाद प्रथम तो ख़्वाजे के समीप गया ख़्वाजा अपने बचन के अनुसार साथ लाया और महल की ओर चला और कचेहरी में ले जाकर साज के घर में ठहराया और आप बादशाह से बातें करने को चला और राजद्वार में जाकर जो कुछ प्रार्थना करनी थी सब भांति से सब समाचार वर्णन किया बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर का कहा स्वीकार किया जोकि यह आधीन लकड़ी काटने और बेंचने के सिवाय बादशाह सिव मन्त्री की संगति की प्रतिष्ठा क्या जानता था दिलाराम ने चलते समय कह दिया था कि जब बादशाह के समीप जाना पहले दाहिना पैर धरना और सात सलामें झुककर करना इसको तो वह भूल गया किन्तु बादशाह की सूरत देखकर दिलाराम की सीख याद आई आपने दोनों पांव मिलाकर एक वार कूदकर देखा तो वहां संगमरमर का बिछौना था पांव जो फिसला तो चूतड़ों के बल गिरपड़ा इस चाल से बादशाह मुसकराया सभा के लोग भी बादशाह का मुसकराना देखकर मन में हँसकर रह गये बादशाह ने उसकी भेंट स्वीकार की और ऐसी उसपर कृपा की कि एक डली मिश्री जो हाथ में थी उसे दी उसने लेकर सलाम किया और सलाम के साथ ही मुख में डाल लिया जितने लोग वहां थे सब पर साबित हुआ कि यह अविवेकी और मूर्ख है और बुज़ुरुचमेहर को इन दोनों चालों से उस पर सन्देह आया मन में उसकी ओर से ग्लानि हुई जिस समय दरबार उठगया क़बाद घर में आया और बादशाह की कृपा से मिश्री मिलना और सलाम करके खाजाना दिलाराम से वर्णन किया दिलाराम अपने चित्त में क़बाद के उस काम से अत्यन्त लज्जित हुई कहा कि तुम ने बिना विचारे काम किया बादशाह की बस्तु दी हुई बादशाह के सामने नहीं खाते हैं बल्कि भेंट देकर सलाम करके शिरपर रखते हैं और अपने घर सौगात लाते हैं क़बाद ने पूछा कि फिर अब क्याकरें कि जिससे राजद्वार में मूर्ख न बनें दिलाराम ने कहा कि अब जो कुछ बादशाह कृपाकर देवें उसका शिरपर रख लेना और सलाम करना और कदाचित् अवसर भेंट का होवे तो भेंट देना, वह इस बात की सुध मन में किये रहा दूसरे दिन न्यायशाला में गया उस समय बादशाह खासे पर था परन्तु क़बाद की हाज़िरी को उसकी चाल देखकर कह रक्खा था दरबानियों ने विनय की और शीघ्र बोलाया क़बादको देखकर बादशाह कृपाकरके एक प्याला कोरमेका दिया क़बाद उसे लेकर सलाम किया और दिलाराम की शिक्षा याद करके उस पात्र को अपने शिरपर उलटलिया उसके शोरुवे से कपड़े समेत दाढ़ी मूछ भी भरगई सब शरीर में लपटगया बादशाह ने अपने चित्त में कहा कि इसे कुछ

बुद्धि नहीं है जो चाल चलता है वह सब मूर्खता की विदित होती है फिर इस पर सौदागरी करता है ईश्वर की माया है उसदिन दिलाराम ने चलते समय कह दिया था कि ख्वाजे से सम्मत करके बादशाह के न्योता के निमित्त प्रार्थना करना जो स्वीकार करें तो अधिक प्रतिष्ठा तुम्हारी होजावेगी सो क़वादने वैसाही किया दिलाराम के कहने के अनुसार उसने न्योता का नाम बादशाह के सामने लिया और यह दोहा दिलाराम का सिखाया हुआ पढ़ा॥

दोहा। प्रभुता और प्रताप जग, नहीं राज्यते कोय। मुसगँवार की ओर प्रभु, कृपादृष्टि अब होय॥

बुज़ुरुचमेहर को भी उसके ऊपर कृपा बहुत थी सिफ़ारश की बादशाह भी उस का सीधा और भोलापन देखकर दया की दृष्टि की और उसका न्योता स्वीकार किया क़वाद कृतकृत्य होकर हँसता हुआ बिदा हुआ और दिलाराम से आकर बादशाह का न्योता मान लेना वर्णन किया दिलाराम बादशाह के न्योता की सामग्री इकट्ठा करनेलगी॥

जाना बादशाह का क़वाद लकड़िहारे के घरमें और दिलारामपर कृपादृष्टि करना और भोजन करना और वारुणी मद्य का पीना॥

जब प्रातसमय सूर्य आसमान पर उदय हुआ तब बादशाह बुज़ुरुचमेहर और सब बड़े बड़े अधिकार वालों को साथ लेकर क़वाद के घरमें न्योता खाने को गये क़वाद ने अगवानी लेकर भेंट दी और कहा॥

चौपाई। चरण रावरे कर जो आये। बस्या विपिन हर्षित लयलाये॥

जब बादशाह उसके घर में गये बैठकों और मकान की दीवारों पर अपने और दिलाराम के चित्र परस्पर देखे तो दिलाराम को यादकर बहुत शोच किया और जिस स्थान को देखा बादशाही महल के समान पाया फ़िर बुज़ुरुचमेहर से कहा कि यह घर मानो मेरा है और उसी भांति सुशोभित है यह कहकर बारहदरी में मसनद जड़ाऊपर बैठगया तबले पर थाप पड़ने लगी नाचराग होनेलगा थोड़े काल के पीछे बावरची ने बिछौना बिछाके उसपर दस्तरख्वान भोजन के निमित्त बिछाया और फिर भांति २ के षट्रस के व्यञ्जन अलग २ पात्रों में चुनकर रक्खे क़वाद ने दिलाराम की आज्ञानुसार दिलाराम के हाथ धोने के निमित्त बर्तन मँगाकर हाथ धुलाये और नाज २ व्यञ्जन अपने हाथ से चुनदिये बादशाह जिस समय भोजन करचुका दिलाराम ने वस्त्र आभूषण भांति २ के पहिनकर परदे की ओटसे अपनी मनोहर शोभा बादशाह को देखाने लगी और परदे से बादशाह का मन हरने लगी बादशाह ने ज्योंहीं उसकी झलक देखी क़वाद से पूछा कि यह स्त्री जो परदे के भीतर है तुम्हारी कौन है और इसका क्या नाम है यह युवती अति सुलक्षण और प्रवीण है सब भांति का प्रबन्ध इसी ने किया है क़वाद ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि सेवक की पुत्री है यह जो कुछ सम्पदा है इसी के लक्षण करके है और आपसे क्या परदा है? महल में जाइये इस सेवक की प्रतिष्ठा बढ़ाइये लौंडी

की भी इच्छा दर्शन करने को है तब बादशाह क़बाद की प्रार्थना के अनुसार महल में जो गया तो पहले दूरसे देखकर दिलाराम पर संदेह किया जब निकट पहुँचा तब उसने मोजरा किया कहा कौन है दिलाराम यहां कहां आई दिलाराम चरणों पर गिरपड़ी और जी खोलकर रोई बादशाह ने उसके शिर को उठाकर छाती से लगाया और कृपासहित बोले उसने प्रार्थना की कि यह वही क़बाद लकड़िहारा है कि जिसको मुझे दिया था आपके प्रताप से यहांतक धनी हो गया कि जिससे सकल देश का सौदागर हुआ कि आपने भी कृपासहित उसको प्रतिष्ठा दी बादशाह यह समाचार सुनकर अतिलज्जित हुआ और दिलाराम का हाथ पकड़ कर उस बारादरी में लाया जहां मसनद पड़ीहुई थी जाबैठा और दिलाराम के लक्षणों की प्रशंसा करने लगा और मसनद के निकट बैठा लिया और क़बाद को खिलअत कृपा करके खिताब मुल्कुल तिजारत अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी के सौदागरों के अधिपति की पदवी दी और अधिक उदारता से दिलाराम को चङ्ग बजाने की आज्ञा दी वह आज्ञानुसार चङ्ग बजानेलगी और इस भांति चङ्ग बजाया कि आकाश को भी चक्कर में लाई और फिर उसी प्रकार से समा बँधगया कि राजसमीपी सब विकल होगये जब दिलाराम चङ्ग बजाचुकी और बादशाह कृपासागर को अपना गुण दिखाचुकी तब भांड़, भगतिये, कथिक, कश्मीरी, कौवाल, ढाढ़ी, कलावत और वेश्याओं ने अपना तमाशा देखाया कुछकाल के पीछे क़बाद को खिलअत कृपाकर बादशाह ने सभा बरखास्त होने की आज्ञादी और दिलाराम समेत बादशाह मन्दिर में आया और जो स्त्रियों से घृणा होगई थी सो अब अति चाहने लगा थोड़े दिवस के पीछे मोहतरिमबानी जो बादशाह के चचा की कन्या थी उस के साथ अपना विवाह करलिया एक वर्ष के पीछे शाहज़ादी को पुत्र की आशा हुई जब ईश्वर की कृपा से समय गर्भ का व्यतीत होगया राजपुत्री को पुत्र होने की पीड़ा हुई बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर को बुलाया और कहा कि राजपुत्री को अति कष्ट है जिस समय पुत्र उत्पन्न होवे उसके भाग्य का वृत्तान्त लिखना चाहिये और जन्मपत्र बनाना उचित है फिर ख़्वाजे ने बालक उत्पन्न होने का समय जानने के निमित्त हिन्दी फ़िरङ्गी रूमी आदि घड़ियां और ग्रहों के चक्र मालूम करनेके हेतु रमल का तख़्ता अपने निकट रखके पांसा लेकर चैतन्य हो बैठा और पुत्र होने का मार्ग देखने लगा इतने में ईश्वर की कृपासे सूर्य के सरिस पुत्र शुभघड़ी शुभमुहूर्त में उत्पन्न हुआ और दाई के गोद में सुशोभित हुआ उस समय शुभसायत लिखकर पांसा तख़्तेपर फेंका और जन्मपत्र खींचकर सब प्रकार जो विधि मिलाई गई तो उस समय सूर्य और चांद को एक स्थान में पाया और शुक्र व बृहस्पति को परस्पर देखा ख़्वाजे की आंखें आनन्द से खुलगईं बादशाह को शुभ समाचार देकर बिनय की और यह सोरठा पढ़ा॥

सोरठा। पुत्र रहै कल्यान, सुखनिधान संसार में। मित्रन हित गुणखान, बैरी क्षय याते सबै॥

सप्तदेश नृपहोय, अस प्रताप याको सुनो। नहिं समान जग कोय, पुत्र छत्र राजलविदित॥

यह लड़का सुभाग्य बहुधा देशों का नृपति होगा और बहुत न्याय करनेवाला होगा सत्तर बर्षतक प्रताप समेत राज्य करेगा परन्तु एक बुद्धिमान् की मूर्खता में बहुधा शोक ग्रसित रहेगा यह कह नाम धरनेका मनोरथ किया कि दो चालाकों ने बादशाह से बिनय की कि जो सर पानी का सूखगया था आज आपही आप वह चला बुज़ुरुच्चमेहर सगुन अच्छा जानकर शाहज़ादे का नाम नौशेरवां रक्खा और बाजे इतिहासवालों ने लिखा है कि जिस समय वह उत्पन्न हुआ था उस समय बादशाह के हाथ में अरुण प्याला मदिरा का था बुज़ुरुच्चमेहर ने फ़ारसी बोली में वर्णन किया अर्थात् कहा कि आप प्याला शराब का पीजाइये बादशाह प्रसन्न होकर ख़्वाजे को पारितोषिक दिया और राजपुत्र का नाम नौशेरवां धरा बाजा बजानेवालों को बजाने की आज्ञा हुई और तोपख़ाना में सलामी छूटने के निमित्त कहागया तोपख़ाने में तोपोंपर बत्तियां पड़नेलगीं और तमाम घरमें नौबत झड़नेलगी तुरन्त मङ्गलाचरण का शब्द आसमान तक पहुँचा और सकल नगर में छोटे से बड़े तक सबके यहां आनन्द बधाये होनेलगे आनन्द की सामग्री परस्पर करनेलगे नाचरङ्ग घर २ में होने लगे और आसमान ने उसके मङ्गल के हेतु सूर्य चांद को दफ़ बनाया शुक्र व बृहस्पति अतिप्रसन्नता से नाचका बहुरङ्ग जमाया कि सब आकाशमें घूमनेलगे और ख़ज़ाने लूटने लगे उसी क्षण दुःखीको धनवान् करदिया कङ्गालों को सब भांति से सम्पत्ति दी और सब प्रजा को एक बर्ष का कर छोड़दिया सकल मनुष्य सुख में भोग करने लगे ग्यारहवें दिन उसी समय बादशाह को धावन ने ख़बर दी कि अलकश की बेटी के पुत्र हुआ शाहज़ादे का सेवक भी उत्पन्न हुआ बादशाह ने ख़्वाजे से कहा कि अलकश के नाती को अभी मारडालना उचित है जो यह लड़का जीतारहा तो मुझे संदेह है कि अवसर पाकर तुमसे बैरियादांव करेगा अवश्य तुमसे अपने नाना का बदला लेगा सांप को मारना और उसके बच्चे को पालना काम ज्ञानवानों का नहीं है इसपर ध्यान धरना उचित है आगे तुमको अख़्तियार है इन कामों में तुम्हारी बुद्धि तीव्र है ख़्वाजे ने कहा कि अपराध बिना किसी को मारना धर्मशास्त्रके अनुसार उचित नहीं है ऐसे लड़के अबुधका मारना ठीक नहीं बादशाह ने कहा कि मेरे निकट यह क़िस्सा यहां सच है शत्रुको कष्टसे प्रथम बध करना लायक़ है नहीं तो इसका तन बना रहेगा तो तुमको कष्ट अवश्य करेगा बुज़ुरुच्चमेहर उसके बचाने के निमित्त बादशाह की मति इस बाक्य की ओरसे फेरी और बादशाह से बिदा होकर अलकश के घरमें गया और बख़्तियारके लड़के का नाम बख़्तक रक्खा जब नौशेरवां चारबर्ष चार मासका हुआ बादशाह ने शिक्षा के हेतु बुज़ुरुच्चमेहर को सौंपा बुज़ुरुच्चमेहर ने सप्ताह के पीछे बख़्तकसे बादशाह को भेंट दिलवाई और प्रार्थना करके जागीर अलकश की उस के नामपर लिखाई नौशेरवांके पास उसे भी पढ़ानेलगा और अत्यन्त प्रसन्नता से उस की शिक्षा में श्रमकरनेलगा जोकि नौशेरवां बड़ा तीव्रबुद्धि था कई साल के समयमें सब

बिद्या, व्याकरण, बैद्यक, ज्योतिष, गणित, रमल, नम्रता, पण्डिताव आदि में अतीवप्रवीण हुआ और सिपाहियाना में भी अतिचतुर हुआ सकल प्रकार का अभ्यास प्राप्त करके बड़ा गुणी हुआ दैवयोग से एक दिन चीन के बनिये उस नगर में आये बादशाह की सेवा में नवीन वस्तु सौग़ात लाकर दी तिस पीछे राजपुत्र को भी भेंटदेने के हेतु आज्ञा चाही बादशाह ने उनकी प्रार्थना के अनुसार आज्ञा की जिस समय सौदागरों ने राजपुत्र के सम्मुख भांति २ की सौग़ात आगे धरी और कुछ वस्तु शोभायमान भेंट की रीति में दी तब नौशेरवां चीन के महाराज का बृत्तान्त पूछनेलगा बनियों ने उसका समाचार ब्योरा समेत बिनय किया और कहा कि चीनके बादशाह के एक कन्या है मेहरंगेज़नाम सूर्य चन्द्रमा के समान रूपवान् शोभासागर परम उजागर परी सदृश कामिनी है जिसकी सुन्दरताई सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध है एकसमूह उसकी शोभापर मोहित है हज़ारों राजपुत्र उस के स्नेह में पानी भरते हैं सैकड़ों बादशाह उस चन्द्रबदनी पर मरते हैं॥

दोहा। देखे की गति को कहै, मृगनयनी के नैन। सुननेसे वहु मरत हैं, सत्य मानिये बैन॥

मेहरंगेज़ की चर्चा सुनकर राजपुत्र का चित्त अतिमोहित हुआ और प्रीति की आग नौशेरवां की छाती में प्रकाशित हुई कलेजे में प्रीतिरूपी बाण पार होगया स्नेह में बँधगया होते २ बल व पराक्रम ने भी जवाब दिया और धैर्य ने भी अपना मार्ग लिया खाना पीना छूटगया केवल चुप साधे रहता हँसना बोलना ध्यान से उतर गया निशिदिन उसके निमित्त क्षीण होताजाता था और उसीकी बातें किया करता था सदा ध्यान लगाये रहता था और इन कवित्तों को पढ़ा करता था॥

सवैया। याती वे दिन रात थे बावरे जामें बसन्त समाय रह्यो।
बाग़ अनूप की सैरसजी चित में लहराई तो धाय गयो॥
प्रेमहि के वश के आन पड़्यो फुलवारी उतै लै जात भयो।
वायु सुगन्धित फूलन को मम भेंटहि ते कर मांझ लयो॥ १॥
मित्र सनेही लिये सब सङ्ग महाछवि रङ्ग में अङ्ग मग्यो।
कबहूं हँसना था परस्पर बीच कबहीं फूलोंकर खेल जग्यो॥
कली के भांतिन चित्त थो तङ्ग सभी जग मध्य में शोक भग्यो।
मेरे चित्त को देखिके फूल सदा हैरांथा बड़ाई के ओर लग्यो॥ २॥
निशि वासर सुक्ख में अङ्ग रह्यो जनु फूल प्रफुल्लित रङ्गलिये।
सब औसर चित्त में चित्त यही उरमांझ अनन्द उमङ्ग दिये॥
कामिनि ते नहिं काम कछू नहिं शोच शरीर में छेऊ किये।
वायु न ताति लगी तन बीच में बीचकी रीति न बोल्यो हिये॥ ३॥
मद्यपान सिवाय न आन कियो दिन रात सदा यह बानिलिये।
निशि वासर शोक नहीं तनको निज मित्र समेत सुचैन किये॥
अरु केवल एक अनन्द रम्यो सब रञ्ज कलेश बिसारि दिये।
बसता था बसन्त समय सब भांति अनन्द अनन्त सम्हारे हिये॥ ४॥
निज मित्र के हाथ में हाथ दिये अरु सुक्ख समेत रह्यो जग में।

यातो समय अस दृष्टि पत्यो जहँ भूलतई सगरी मग में ॥
झकझ प्रीति में आन फँस्यो जो व्याप्यो है चित्तकी रगरग में।
अतिशीघ्र भयो पतिझार मनो ज़रदी कियो रूप सभी लग में ॥ ५ ॥

कवित्त। विदाभयो सुख और दुख घेरिआयो मोहिं कोयनउबारे मेरी गोद खाली देखके।
विधि वश शोक तन कोक सभी सूखिगयो, कांटे केरे रूखभयो फूल डाली देखके॥
नरगिसके समानहूं हैरान इस जहान में, सोसन के भांति कांति जीभ निज पेखके।
आपतन क्षीन अरु दीनवो मलीन मुख, सैरकौन सुधि बुधि भावत न रेखके॥ ६॥

कुण्डलिया। डाली सूरति मोर की, पर बन्धन निज ग्रीव। गुलूबन्द घेरा कियो, दुःख पड़े की सींव॥ दुःख पड़े की सींव, कठिनता अधिक समाई। रक्त असुवनकी नदी, बीचबहितहु मोई॥ चित जानत है मोर, शोक दुख जाहि डरायो। बल कछु रह्यो न मोहिं, ईश यह काह समायो॥ नदी अगम के मध्य में, खड़ाहौं शोक समेत। दृष्टि कनारा पड़त नहिं, कहूं न दूर सचेत॥ कहूं न दूर सचेत, लहर दुख अधिक सतावे। देखें अब यह चरित, कभी कहकाह देखावे॥ मित्र सनेही कोइ, काम नहिं मेरे आवे। बिना ईश के दुःख, कौन अब मोर मिटावे॥ कहौं कहा कासों कहौं, कठिन विपति अति मोहि। प्रीति रूप पावक विषय, निशिदिन जरना होहि॥ निशिदिन जरना होहि, श्वास सँग ज्वाला निकलें। धीरज कितना धरों, अधिक उर में वे सिकलें॥ ठीक यही है बात, विदित कीजै यह किस्से। अन्तरगति का हाल, सुक्ख पहुँचै पुनि जिस्से॥

यद्यपि उसने बहुत छिपाया परन्तु जरदरङ्गत और मुँहके सूखने आहसरद के भरने और चित्त पर क्लेश के तीर चुभने से प्रतिदिन दुर्बलता हुई जब यह समाचार शाहज़ादे का होनेलगा दूतों ने बादशाह के समीप यह चरित्र पहुँचाया कि जाना नहीं जाता है कि हमारे लोगों के नष्ट कर्म से कौन उपाधि शाहज़ादे को व्यापी है खाना पीना सब छूटगया है न किसीसे कुछ कहते हैं और न किसी की सुनते हैं दर्पण के समान आश्चर्यवान् हैं यह समाचार सुनकर बादशाह ने पारे के सदृश दुःखित होकर बुज़ुरुचमेहर को बोलाया और यह वृत्तान्त कहा ख़्वाजे ने बादशाह को धीरज देकर शान्तकिया और आप नौशेरवां के पास गया और एकान्त में जाकरके कहा कि शुभ तो है आपका चित्त किस प्रकार का है ऐसा क्यों है? सत्य बतादीजिये तो उसकी मैं औषध करूं आपके निमित्त दवा बनाऊं नौशेरवां ने कहा कि ख़्वाजह साहब आप मेरे पिता के मन्त्री दूसरे मेरे गुरू हैं आपको मैं बड़ा जानता हूं यद्यपि स्थान लाज का है इस छिपे भेद को विदित करना अच्छा नहीं है कि जो अपना समाचार प्रकट करूं और दुःख कहूं परन्तु आपकी आज्ञानुसार कहता हूं कि मैं मलिका मेहरंगेज़ जो चीनके राजा की बेटी है उसका स्वरूप बिना देखे उसपर मोहित हूं और अच्छी भांति से जानलीजिये कि जबतक मेरा उससे विवाह न होगा तबतक मैं इसी शोक में रहूंगा और जीव भी जातारहै तो आश्चर्य नहीं॥

दोहा। यह कहकर इक आहकी, मन में बँधी सनेह। विरह अग्नि तनमें लगी, जरन लगी सब देह॥
विरहवश्यमूर्च्छित भयो, सुधिबुधिकछु न ताहि। तिनके भीतर प्रीति है, मनबूड़े तेहि माँहि॥

बुज़ुरुचमेहरने कहा कि शाहज़ादे इस भांति का ख़याल तुमको करना उचित

नहीं तनमन को आनन्द से रक्खो यह कौन बड़ी बात है जिसके हेतु ऐसा ढङ्ग बनाया है इतना दुःख बैठे बैठाये उठाया है ईश्वर के हेतु यह शोक चित्त से दूर करो खानपान आनन्द समेत करो अभी आपकी क्या अवस्था है ? जो इस ओर मन लगाये हो आप स्वरूपवान् हैं आपके ऊपर वह सहित जी के निछावर होगी बादशाह के पास विवाह के कारण पैग़ाम आवेंगे कुछकाल और धैर्य धरिये अपनी बुद्धि से काम न कीजिये यह बात क्या कठिन है ? जिसमें जो आपके जीवका भी सन्देह है आप चित्त स्थिर रखिये इस कार्य को मैं आप करूंगा और आपका मनोरथ पूर्णकरूंगा नौशेरवां को उसकी बातों से धैर्य आया और मेहरंगेज़ को राजपुत्री के मिलने की आशा हुई जल्दी वहां से उठकर स्नान किया और मित्रों समेत आकर वस्त्र बदल के भोजन किये बुज़ुरुचमेहर वहां से बादशाह के समीप गया और राजपुत्र के शोकमिटानेका समाचार सुनाया बादशाह ने कहा कि ख़्वाजह यह कार्य तुम्हारे विना होना कठिन है तुम्हारे उपाय से हमको विश्वास है कि होजायगा वह बादशाह भी बड़ा प्रतापी है और उसका देश भी बहुत है विवाह का कार्य बहुत सूक्ष्म है कोई मनुष्य सुशील उसके निमित्त जावे ऐसे बड़े प्रबन्ध के हेतु मनुष्य बहुत तीव्र और उपायी चाहिये अन्तको यह बात ठीक ठहरी कि ख़्वाजह आप चीन की ओर जावें और विवाह के निमित्त पहले अपने से ठहरावें इसपर मार्ग की सामग्री सब की गई बुज़ुरुचमेहर पचाससहस्र सवार पियादे अपने साथ लेकर चीन की ओर चला अब बख़्तक का वृत्तान्त सुनिये कि जब से सुध सम्हाली थी अपने नाना का चरित्र सुनकर प्रति दिन अपनी मातासे कहता था कि मैं जब बुज़ुरुचमेहर का मुख देखताहूँ तब मेरी आंखों में खून उतर आता है नाना का समाचार याद करके चित्त भरआता है जबतक अपने नाना का बदला न लूंगा तबतक मैं बेचैन रहूंगा अवसर पाना मुख्य है कहां जायगा कभी न कभी जाल में आवेगा और सदैव बुज़ुरुचमेहर की बदी करके नौशेरवां के कान अपनी जान में भरा करता था और जो २ चित्त में आता था झूठ सच अच्छा बुरा कहा करता था किन्तु नौशेरवां उसे लानत मलामत करके कहता था कि ख़्वाजह की भलाई को अपने साथ देख वह तेरे साथ क्या २ उपकार करता है और तू उसके ओर ऐसे २ काम करता है और उसको मिथ्या अपराध लगाता है अरे वह सब भांति से तेरा उपकारक है इस बात की चर्चा कभी न कर नहीं तो ईश्वर के निकट अपराधी होगा और इस संसार में भी लज्जित होगा ॥

जाना बुज़ुरुचमेहर का चीन की ओर सहित दबाव और प्रताप के और लाना मलका मेहरंगेज़ का और गठिबन्धन उन दोनों का ॥

बुद्धिमान् लोग इस इतिहास को आनन्दरूपी लेखनी से यों बर्णन करते हैं कि जब ख़्वाजह बुज़ुरुचमेहर बादशाह से आज्ञा लेकर बहुत ऋद्धि सिद्धि सहित मार्ग में चलता हुआ चीन की सीमा में पहुंचा फिर चीननगर में गया दूतों ने चीनके राजा को समाचार पहुंचाया कि ससदेश के बादशाह का मन्त्री उपायी ख़्वाजह बुज़ुरुचमेहर

आपके पास आया है बादशाह क़वाद कामराँ का कोई संदेशा लाया है यह सुन चीन के महाराज ने मन्त्रियों को ख़्वाजह की अगवानी को भेजा और जब अति समीप आया तब अपने बेटों को शाहख़ताब खुतने समेत आज्ञा की कि आगे बढ़कर अगवानी लेवें जब बुज़ुरुचमेहर दीवान ख़ास में आया तब अदबसमेत बादशाह को झुककर प्रणाम किया और अपने बाहशाह की ओरसे राजमन्त्रियों के अनुसार शिष्टाचार निबाह के भाँति भाँति की वस्तु और सौग़ात जो अपने साथ लेगया था अपने बादशाह की ओर से चीन के बादशाह के समीप रक्खी और हीरा मोती आदि बहुत मोल के और घोड़ा हाथी और अस्त्र आदि सब प्रकार के पदार्थ बादशाह के निकट रखदिये ख़ाक़ान चीन के बादशाह ने ख़्वाजह का स्वभाव और नम्रता पसन्द की और उसकी मधुर बातों से अतिप्रसन्न हुआ और ख़्वाजह को प्रतिष्ठा का पारितोषिक दिया और धनसम्पत्ति अधिक दी लेखकों ने लिखा है कि प्रथम मिलाप में ख़्वाजह को ग्यारहबार ख़िलअत कृपा किये और उसकी अति प्रतिष्ठा और बड़ाई हद्दसे अधिक बढ़ाई अर्थात् जो बात चीन का बादशाह मुख में लाता था उसका उत्तर अच्छी भाँति से पाता था और ख़िलअत अनुग्रह करता था जिस समय आने का कारण पूछा उसको बुज़ुरुचमेहर ने इसरीति से वर्णन किया और अभिप्राय यह बिदित किया कि जिससे चीन के बादशाह ने मनसे राजपुत्री मेहरंगेज़ का विवाह नौशेरवाँ के साथ स्वीकार किया सिवाय मानलेने के कोई बात न बनपड़ी यह बड़ी बात न्यायशाला में अपने २ मुख से कही कि क्या शुभ समय और भाग्य उदय इस काम में हुई है जो मुझे नौशेरवाँ सदृश दामाद मिला है फिर उसीदिन आज्ञा की कि शीघ्र सामग्री मार्ग की कीजाय जिससे राजपुत्री समेत मदायन नगर को जावे आज्ञा पातेही थोड़े ही दिवस में मार्ग का सामान कियागया चीन के बादशाह ने कबाबाचीनी और कलावाचीनी जो दोनों बादशाह के सुशील पुत्र थे राजपुत्री मेहरंगेज़ के साथ चालीस सहस्र सेना से बिदाकिये और कई पीढ़ी की जोड़ी हुई सम्पत्ति कई सौ लौंड़ियां व सेवक तुर्की व हब्शी ख़ताई खुतनी जहेज़ अर्थात् दायज में दिये कई महीने में बुज़ुरुचमेहर मेहरंगेज़ राजपुत्री समेत आनन्दित होताहुआ ईरान के निकट पहुंचा और उस स्थान में रात की रात बास किया प्रातःकाल में सेनापतियों ने अपनी २ सब सेना सवाँरी और चीन के राजपुत्र ने सब सामग्री दायज और विवाह की सब भाँति से की जब बादशाह और नगरबासियों को यह समाचार आनन्द का बिदित हुआ तो सब ओर से प्रजा का मेला हुआ बादशाह नौशेरवां ने अगवानी की और बहुत सम्पत्ति राजपुत्री की डोलीपर निछावर करके फ़क़ीरों को धनवान् करदिया और ख़्वाजह बुज़ुरुचमेहर पर बड़ी कृपाकरके गले से लगाया और बहुतसे पारितोषिक अनुग्रहसमेत कृपा किये और शुभमुहूर्त में नौशेरवां का विवाह मेहरंगेज़ राजपुत्री के साथ हुआ बरात के पीछे एक बर्षतक आनन्द रहा॥

दोहा। परमानन्द मगन सब, धूम धामकर ब्याह। पुरबासी अति सुखित भे, तन मन अधिक उछाह॥

जब दूलह बमठनचला, शोभा बरणि न जाय। राज प्रफुल्लित भई अति, जनु दिन प्रकटउ आय ॥
अस शोभा परगट भई, कवि को अगम देखाय। ताते यह चुप होरहा, मन सुखकर अधिकाय ॥

इसके पीछे बादशाह ने ख़्वाजह की सम्मति से नौशेरवां को गद्दी दी और एकान्त बैठ आप ईश्वर का स्मरण करनेलगा और बिविध प्रकार की शिक्षा बादशाह ने बार २ नौशेरवां को दी कि बुजुरुचमेहर के सम्मत बिना कोई काम न करना और बख़्तक को प्रधान मन्त्री न करना नहीं तो बादशाहत नष्ट होजावेगी कहते हैं कि जब बादशाह ने नौशेरवां को गद्दी पर बैठाने के निमित्त ख़्वाजह से सलाह की थी तब ख़्वाजह ने कहा था कि चालीस दिनके पीछे शाहज़ादे को गद्दीपर बैठाइयेगा बादशाह ने स्वीकार किया और ख़्वाजे ने यह भी कहलिया था कि तबतक मुझ से कहदीजिये कि अपने अधीन रक्खूं या जो चाहूं सो करूं बादशाह ने इस निमित्त भी ख़्वाजह को अधिकार दिया उसीसमय बुजुरुचमेहर ने नौशेरवां को बेड़ी पहनाकर जेहलख़ाने में भेजदिया और इकतालीसवें दिन बँधुआई से छोड़ाकर अपनी सवारी के साथ दौड़ाता हुआ बादशाही महलतक लाया और तीन कोड़े इसज़ोर से मारे जिसमें नौशेरवां तिलमिला गया और ग्रीष्म का रेत उसमें नङ्गे पैर दौड़ाया उससे अति दुःखित होगया तदनन्तर खड्ग खींचकर नौशेरवां के हाथमें दी और शिर झुका के कहा कि इस बेअपराध का यही दण्ड है कि मेरा बध कीजिये और इसका बदला लीजिये नौशेरवां ख़्वाजह के गले से लपटगया और कहने लगा कि ख़्वाजह इसमें भी कुछ उपाय होगा नहीं तो आप मुझे इतना क्लेश न देते और मेरे कष्ट का आप शोच अपने ऊपर न लेते इसके पीछे जिस समय बादशाह ने शरीर त्यागन किया उस समय में दो वर्ष तक बख़्तकको मन्त्री का अधिकार मिला उस क्षुद्र मनुष्य ने नौशेरवां से किस २ भांति का अन्याय कराया जिससे नाना भांति के कष्ट प्रजा को पहुंचे जिससे उस समय में नौशेरवां बड़ा अन्यायी बिदित हुआ और उसके इस अन्याय का प्रकाश दूर २ तक हुआ दैवयोग से एक ठग मार्ग लूटने के दोष से पकड़ आया जो महा अपराधी और दुष्ट और ठगों का राजा था जिसने बेअपराध हज़ारों मनुष्यों को फांसी दी और बहुतों के शीश राह चलतेहुए काटडाले थे और बहुतलोगों को जहर देकर मारडाला था नौशेरवां ने उसके मारने के हेतु बधिक को आज्ञा दी बधिक उसे बधस्थान को लेचला उस ने उस समय बिनय की कि बध तो मेरा होहीगा और सबका बदला पाऊंगा जो चालीस दिन का मुझे सावकाश मिले तो मेरा मनोरथ पूर्ण हो और मांस और एक स्त्री कृपा हो तो मैं एक ऐसी विद्या जानता हूं और नयागुण से सीखा है कि बादशाही सभा में कोई नहीं जानता होगा वलिक कभी किसीने न सुना होगा चालीस दिनके पीछे जिस बात की आज्ञा होगी उसे स्वीकार करलूंगा नौशेरवां ने पूछा कि वह विद्या कौनसी है उससे कुछ लाभ भी होता है उस ने कहा कि मैं जितने जीव हैं सबकी बोली जानता हूं और इस विद्या को अहा

भांति जानता हूं पर चिड़ियों की बोली को बहुत उत्तम जानता हूं नौशेरवां ने उसकी विनय स्वीकार की और बुजुरुच्चमेहर को सौंप दिया बुजुरुच्चमेहर ने उसके रहने को एक स्थान दिया उसकी इच्छा के अनुसार सामग्री भी भेज दी और पहिनाव और खाने पीने में अधिक प्रबन्ध किया उसने चालीस दिवस तक अच्छी भांति से चैन किया इकतालीसवें दिन बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि अब तो चालीस दिन गुज़र गये बोली जानने की विधि मुझे पढ़ाइये और अपनी अवधि के अनुसार कहीहुई बात को पूरा कीजिये उसने कहा कि मैं सब विद्याओं में मूर्ख हूं मुझ से और विद्या से क्या काम है ? मैं तो कुबुद्धि हूं लेकिन ईश्वर अपने गधों को उत्तम भोजन खिलाता और अपनी रचना देखाता है यह उसका प्रताप है कि जिसने वध होने से मुझे बचाया और भांति २ के भोजन कराये जो आनन्द करना था सो इस उपाय से किया अब खड़ा हूं चाहे फांसी दीजिये या गर्दन मारिये जिस भांति चाहिये जीव लीजिये ख़्वाजह ने यह सुनकर हँस दिया और उसको ठगी और चोरी से सौगन्द लेकर छोड़ दिया एक दिन बादशाह शिकार करता हुआ किसी ओर चलागया और वक़्तक और बुजुरुच्चमेहर को छोड़ कर और कोई साथ न था एक स्थान पर देखा दो उल्लू एक वृक्षपर बैठे अपनी अपनी बोली बोल रहे थे नौशेरवां ने बुजुरुच्चमेहर से पूछा कि इनकी क्या बातें हैं केस निमित्त सलाह करते हैं बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि आपस में बातें अपने लड़कों के विवाह के हेतु कररहे हैं घर बसने का उपाय करते हैं बेटेवाला बेटीवाले से कहता है कि जो तीनखण्ड पृथ्वी के सब उजाड़ अपनी बेटी के दायज में देना स्वीकार करे तो मैं अपने लड़के से तेरी लड़की का विवाह करूं नहीं तो मुझे स्वीकार नहीं और मैं दूसरे स्थान पर अपने लड़के की ससुराल करता हूं उसने कहा कि जो नौशेरवां की ज़िन्दगी है और ऐसा अन्याय प्रजापर करता रहेगा तो तीन खण्ड क्या उजड़े जितना देश नौशेरवां का है मैं सब दायज में दूंगा तेरे मनोरथ को पूर्ण करूंगा नौशेरवां ने कहा कि अब हमारे अन्याय का चर्चा जानवरों में होनेलगा इसका हुल्लड़ दूर २ तक हुआ यह सुनकर बहुत लज्जित हुआ और फूट २ कर रोया आतेही दीवान ख़ास में सांकर बँधवादी और नगर में डुग्गी पिटवादी कि जो कोई न्याय के वास्ते आवे ज़ंजीर को हलादेवे किसी के द्वारा कहना कुछ काम नहीं है चोबदारों की कुछ आवश्यकता नहीं है फिर ऐसेही रीति ठीक होगई जो न्याय के हेतु आया उसी के द्वारा अपना अभिप्राय विदित किया जिससे आजतक नौशेरवां का न्याय विदित है जो छोटे और बड़े हैं सब उसके नाम को जानते हैं उसका वर्णन कुछ अवश्य नहीं है कई वर्ष के पीछे बादशाह के मेहरंगेज़ राजपुत्री के उदर से दो पुत्र और एक लड़की उत्पन्न हुई उस में से एक का नाम हुरमुज़ और दूसरे का नाम फ़रामुरज़ और बेटी का नाम मेहरनिगार रक्खा और उनकी सेवा होने लगी और उनको ख़्वाजह के निकट भेजा ख़्वाजह ने एक

का नाम सियारूश और दूसरे का नाम दरियादिल रक्खा और दोनों की सेवा में परिश्रम करनेलगा वख़्तक को भी ईश्वर ने एक पुत्र दिया उसने उस का नाम बख़्तियार रक्खा लिखनेवाला लिखता है कि एकरात को नौशेरवां ने स्वप्न में देखा कि पूर्व से काला काग आया और मेरे शिरसे छत्र उतारकर लेभागा फिर पश्चिम की ओर से एक बाज़ आया उसने उस काग को मारकर छत्र मेरे शिरपर रक्खा यह स्वप्न देखकर बादशाह जाग पड़ा और बुज़ुरुचमेहर से बर्णन करके विचार पूछनेलगा बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि पूर्वकी ओर एक नगर खबीर है उस नगर में हुस्मामनाम एक बादशाहज़ादा है उसका पुत्र अलकमाख़ैबरी नाम उत्पन्न होगा आपसे और उससे लड़ाई होगी वह आनकर आप का छत्र छीन लेगा और आपको पराजित करेगा फिर पश्चिम की ओर एक नगर मक्का है वहांसे एक लड़का हमज़ानाम आवेगा वह उस निर्लज्ज को मारकर फिर छत्र और गद्दी आप को देवेगा और आपका बदला उससे लेगा वह यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और ख़्वाजह को पारितोषिक देकर मक्के की ओर भेजा कि इस काम की दवा करो कि जो वह लड़का उत्पन्न हुआ हो तो हमारा लड़का प्रसिद्ध करके सब भांति से उस की सेवाकरो ख़्वाजह बुज़ुरुचमेहर बहुतसी सम्पत्ति और सामग्री लेकर मक्के की ओर चला और उस सुशील पुत्र को ढूँढ़नेलगा और प्रतिघर पता पूछनेलगा ॥

बुज़ुरुचमेहर को मक्के की ओर जाना और अमीरहमज़ा का पता पूछना ॥

बुद्धिमानों ने ज्ञान के प्रकाश से भांति २ के वृत्तान्त लिखकर इस मधुर इतिहास को यों बर्णन किया है कि जब ख़्वाजह मार्ग में चलते २ मक्का के निकट पहुंचा तब एक पत्र उस स्थान से अब्दुल्मतलब को जो वहां के मालिक थे इस समाचार का लिखा कि यह अधीन मक्के के दर्शन के निमित्त आया है और आप से मिलने की भी इच्छा रखता है आशा करता हूं कि आप अपने दर्शन से कृतकृत्य कीजिये और मेरी दीनता देखके दया की दृष्टि से देखिये ख़्वाजह अब्दुल्मतलब पत्र को पढ़कर बहुत प्रसन्न हुए और मक्के के अच्छे २ मनुष्यों को साथ लेकर बुज़ुरुचमेहर की अगवानी के निमित्त आये और बड़ी प्रतिष्ठा से शिष्टाचार किया और अच्छे २ स्थान उनके रहने के लिये ख़ाली करवादिये पहले तो बुज़ुरुचमेहर ख़्वाजे अब्दुल्मतलब के साथ २ काबे के दर्शन किये तदनन्तर नगर के मुखियों से जो बड़े २ अच्छे मनुष्य थे उनसे मिलाप किया और हरएक को रुपये और मोहरें देकर कहा कि ईरान के बादशाह ने कहा है कि मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं और तुमलोगों का उपकारक जानताहूं और सदा भलाई चाहता हूं यह कहकर डुग्गी पिटवा दी कि आजके दिनसे जिस के घरमें लड़का उत्पन्न होगा वह ईरान के बादशाह का नौकर होगा सो पैदा होने के साथही लड़के के मालिक हमारे पास लेआवें और उस लड़के को हमें देखावें हम बादशाह की ओर से उसकी सेवा के निमित्त मासिक नियत करदेवेंगे और उसका नाम भी हमीं रक्खेंगे और जो कि सेना बुज़ुरुचमेहर के साथ अधिक

थी इसलिये नगर के बाहर डेरा किया परन्तु सदा बुज़ुरुच्चमेहर ख़्वाजह अब्दुल्मतलब के दर्शन के निमित्त आता और कभी २ ख़्वाजह अब्दुल्मतलब भी बुज़ुरुच्चमेहर के समीप जाता एकदिन पन्द्रह बीसदिवस के पीछे ख़्वाजह बुज़ुरुच्चमेहर ख़्वाजह अब्दुल्मतलब के भेंटके निमित्त नियतसमय पर आया तो ख़्वाजह अब्दुल्मतलब ने सलाम के अनन्तर कहा कि कल इस अधीन के पुत्र उत्पन्न हुआ है ईश्वर ने भाग्यवान् और प्रतापी पुत्र कृपाकिया है बुज़ुरुच्चमेहर ने उसी समय मँगाकर उस का मुँह देखा और पांसा फेंककर उसकी रीति बिचारी जाना गया कि यह वही लड़का है जो सप्तद्वीप के बादशाहों से कर लेगा सम्पूर्ण संसार में अपना प्रताप फैलावेगा और जितने देश सब संसार में हैं पहाड़ समेत इसके बश्य रहेंगे और बड़े २ प्रतापी मनुष्य इसके आगे तुच्छ रहेंगे और दम्भियों की घटती और सदाचारियों की बढ़ती होगी न्याय की वृद्धि और अन्याय का नाश होगा बुज़ुरुच्चमेहर ने उसके मस्तक को चूमलिया और हमज़ा उसका नाम रक्खा और कृतकृत्य होकर ख़्वाजह अब्दुल्मतलब को मङ्गलाचार दिया और परस्पर में आनन्द बधाये होनेलगे जितने मनुष्य वर्त्तमान थे सबने ख़्वाजह बुज़ुरुच्चमेहर सहित काबा की ओर हाथ उठाकर धन्यबाद किया और हमज़ा के आनन्द रहनेका बर मांगा ईश्वर की प्रशंसा बारंबार की कईसौ सन्दूक़ मोहरों के हमज़ाके पालने के हेतु बुज़ुरुच्चमेहर ने ख़्वाजह अब्दुल्मतलब को देकर और हीरा मोती और वस्त्र पहिनने के हेतु सौग़ात की रीति से दिये ख़्वाजह अब्दुल्मतलब ने अरब की रीति के अनुसार शरबत बनवाकर चाहा कि सबको पिलावें और स्नेहियों और कुटुम्बवालों और पड़ोसियों को बटवावें बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि अभी धैर्य करो और दो मनुष्यों को आलेनेदो कि उनके भी लड़के आपके लड़के के मित्र प्रेमी होंगे और उपकारी और सहायक होंगे बुज़ुरुच्चमेहर यह कहताही था कि बशीरनामी सेवक ख़्वाजह अब्दुल्मतलब का अपने पुत्र को भी लाया और कहा कि सेवक के घरमें आपका सेवक उत्पन्न हुआ है बुज़ुरुच्चमेहर ने नाम उस लड़के का मुक़बिलवफ़ादार रक्खा और बशीर को एक तोड़ा मोहरों का मुक़बिल के पालने के हेतु दिया और कहा कि यह लड़का बाणविद्या में बड़ा पराक्रमी होगा फिर बशीर आज्ञा लेकर अपने घरकी ओर चला मार्ग के मध्य अमीजमीरी सारबान से भेंट हुई उसने बशीर से पूछा कि कहां से आता है और यह तोड़ा मोहरों का किसने दिया है उसने सब समाचार ब्योरा समेत बर्णन किया वो प्रसन्न होकर घरमें जाकर सब वृत्तान्त सुनाकर अपनी स्त्री से कहने लगा कि तू सदा कहा करती है कि मैं गर्भ से हूं सो जल्द पुत्र उत्पन्नकर कि जिससे रुपया और मोहरें हाथ लगें और आनन्दित होकर समय ब्यतीतकरें उसने कहा कि तुझे कुछ चेतहै मुझे अभी केवल सातवां महीना आरम्भहै इतने दिनों में मुझे क्यों क्लेश हो मेरे शत्रुओं को पीड़ा होवे उसने कहा कि तू कोखना अङ्गीकारकर कदाचित् पुत्र उत्पन्नहो जो आज भोर में लड़का हुआ तो मेरी इच्छा

पूर्ण होगी जो दोमहीना पीछे उत्पन्न होगा तो मुझे क्या लाभ होगा? वह क्रोधित होकर बोली कि तेरी बुद्धि जातीरही है पीरसे लड़का उत्पन्न कराता है बुद्धिहीन अन्यायी तू मुझे आंखें दिखाता है उसको जो क्रोध आया तो एकलात इस बलसे उसको मारी कि गर्भस्थान में लगी कि जिससे वह विचारी पीड़ा से लोटनेलगी बच्चा तो उसके पेट से निकलपड़ा और वह मरगई अमीर ने झटपट पुत्रको अंगरखा की आस्तीन में लपेटलिया बुज़ुरुचमेहर के निकट लेजाकर कहने लगा कि कृपानिधान इस दास के घरमें भी पुत्र उत्पन्न हुआहै और सुभाग्य ने यह दिन दिखाया है मालिक को दिखाने लाया हूं इसका नाम भी आपके रोज़नामचापर लिखवाने आया हूं ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने उसे देखकर हँसदिया और ख़्वाजे अब्दुल्मतलब की ओर देखकर कहा कि यह पुत्र बादशाह अच्छा होगा और बड़ा चालाक चतुर फ़रेबी होगा बड़े२ बादशाह और मल्लवलिष्ठ इसका नाम और इसका चर्चा सुनकर कांपेंगे और सैकड़ों बल्कि सहस्रों को आप अकेले जीतलेगा और बड़ी सेना को केवल अकेले अपने बल से भगादेगा और बड़ा चालाक प्रवीण होगा यह दयाहीन और अन्यायी ईश्वर को भी न डरेगा अमीरहमज़ा का सहायक और मित्र होगा मित्रता में बड़ा उपकारी होगा यह कहकर जो बुज़ुरुचमेहर ने उसको गोदी में लेलिया तो वह चीखें मार २ कर रोनेलगा ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहरने अपनी अंगुली उसके मुंहमें दे दी उसने अंगूठी ख़्वाजे की अंगुली से उतार ली और फिर चुपरहा जिस समय ख़्वाजे ने अंगूठी अपनी अंगुली में न देखी तो इबाकी जेबों में ढूंढ़ी जब न मिली तो चुप होरहा जिस समय सबने शरबत पिया ख़्वाजेने एक बूँद शरबत का उसके मुंह में डालदिया मुंह जो खुला तो अंगूठी मुंहसे गिरपड़ी बुज़ुरुचमेहर अंगूठी को उठाकर और हँसकर ख़्वाजे अब्दुलमतलब से कहा कि यह पहली इसकी चोरी है मुझी से प्रारम्भ किया है यह कहकर कहा कि मैंने इसका नाम अमररक्खा और दो सन्दूक़ मोहरों के अमीरको देकर कहा कि अच्छी भांति इसकी सेवा चित्त से करना और इसकी शिक्षा अच्छे प्रकार से करना उसने भी अशरफ़ियों के तोड़ेलिये और कहनेलगा कि इस की माता इसके उत्पन्न होतेही मरगई मैं इसको किस भांति से पालूंगा किस भांति इसकी सेवा करसकूंगा बुज़ुरुचमेहर ने ख़्वाजे अब्दुलमतलब से कहा कि हमज़ा की भी मा मरगई है और इन दोनों लड़कों की भी महतारी नहीं है अब उचित है कि आप इन दोनों नेत्रों को अपने घर में रक्खें और आदियेबानों मादीकर्ब की माता जो इबराहीम ने हमज़ा के दूध पिलाने के निमित्त मुसल्मान करके भेजा है सो वह चली आती है आप अगवानी लेकर लेआवें और दहिनी ओर का स्तन हमज़ा को और बायां मुक़बिल वफ़ादार और उमर अय्यारको पिलावें ख़्वाजे अब्दुल्मतलब बुज़ुरु-चमेहर की आज्ञानुसार आदियेबानों को लेआये और पहुनई की भांति शिष्टाचार करके शरबत पिलाया और हाथ पांव धुलवाये और तीनों लड़कों को उसके हाथ में दूध पिलाने के निमित्त उसको सौंपदिया जब छः दिवस अमीर के उत्पन्न होने के

व्यतीतहुए छठी की दिवस होचुका बुज़ुरुचमेहर ने ख़्वाजे अब्दुलमतलब से कहा कि प्रातःकाल अमीर का हिंडोला ड्योढ़ीपर रखवादीजियेगा और जो वह पलना उठा जावे तो उसके निमित्त कुछ शोच न कीजियेगा कि ईश्वर ने नाना प्रकार के पदार्थ अपनी रचना से उत्पन्न किये हैं और प्रत्येक वस्तु के रङ्गरूप भांति २ के दिखाये हैं एक स्थान है जिसमें परीजन अप्सरा आदिक रहते हैं उसका नाम क़ाफ़ पर्वत है उसके आसपास बहुत घर बने हैं उन सब में जिन्न देव परी के समूह और ऊंट और हाथी घोड़मुहे आदिक रहते हैं और वहां का बादशाह शाहरुख़ का पुत्र शाहपाल नाम है जिसका बहुत सुन्दर चन्द्रमा समान मुख है उसका मन्त्री जो इस समय में न्याय करने में अद्वितीय है और बुद्धि व ज्ञान में उसके बराबर दूसरा नहीं मिलता है वह ईश्वर के स्मरण में ध्यानारूढ़ बैठा है सो हमज़ा का पलना अपने बादशाह के समीप मंगवावेगा और सातदिन के पीछे फिर आपके समीप भेजवादेगा इसमें अधिक लाभ होगा और विविधप्रकार के काम और मनोरथ उससे प्राप्तहोंगे यह कहकर ख़्वाजे अब्दुलमतलब से आज्ञा लेकर अपनी सेना में गया ख़्वाजे अब्दुलमतलब समय को दीखता रहता था और उस घड़ी कहे हुए को ध्यान लगायेहुए बैठा था॥

अमीर हमज़ा को क़ाफ़पर्वत की ओर उड़ालेजाना॥

गुणों की प्रकाश करनेवाली लेखनी क़ाफ़पर्वत की ओर उठालेजाना यों वर्णन करती है और प्रबीणों को मधुर चरित्र यों सुनाती है कि एकदिन शाहरुख़का पुत्र शाहपाल क़ाफ़पर्वत के बादशाह की गद्दीपर सुशोभित था और पर्वत के आसपास के अठारह बादशाह उसके अधीन और कर देनेवाले न्यायशाला में उपस्थित रहते थे और इस भांति से बड़े २ लोग प्रतापवाले उसके निकट सदैव आतेथे इसीकाल में द्वारपाल ने आकर आनन्द समाचार विनयपूर्वक कहा कि आपकी पुत्री सुभाग्य पवित्र चन्द्र के समान मानों आसमान से आई है उत्पन्न हुई है बादशाह ने ख़्वाजे अब्दुलरहिमान से कि जो उसका मन्त्री बुद्धिमान् और सुलेमान बादशाह और सकल ज्ञानवानों का संगी था कहा कि इस लड़की का नाम रक्खो और उसके ग्रह विचारो कैसे हैं और भाग्य किसभांतिकी है ख़्वाजे अब्दुलरहिमान बादशाहकी आज्ञानुसार शाहज़ादी का नाम आसमानपरी रक्खा और रमल के द्वारा विचारकर बादशाह से यह शुभसमाचार वर्णन किया कि कृपासागर का कल्याण हो यह लड़की क़ाफ़ के अठारह परदे पर राज्य करेगी और बड़ी प्रतापिनी सुलक्षणी होगी प्ररन्तु आज के अठारहें दिन जो २ देव बलवान् हैं वह आपकी अधीनता न अङ्गीकार करके फिर बैठेंगे और आप का डर कुछ भी न मानेंगे और गुलिस्तान इरम ज़री व सीमी व कांकुम इत्यादि छोड़ जितने नगर हैं सब आपसे छूटजायँगे किन्तु उस समयमें एक मनुष्य चतुर्थ भागवासी आयेगा वह इन सब को जीतकर पराजित करेगा नयेसिर से आपको सब देश देगा बादशाह यह बात सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि

देखो तो यह लड़का उत्पन्न हुआ है या नहीं वह किस देश का बासी है फिर दूसरे बार जो विचार किया और जानकर कहा कि अरबदेश में एक नगर मक्का है वहां के सरदार का वह लड़का है और आज छठा दिन है कि वह उत्पन्न हुआ है उसका नाम हमज़ा रक्खागया है और आज पलना उसका उसके पिता ने डेवढ़ी पर रक्खा है बादशाह ने कहा कि चार जिन्न जाकर उसका पलना उठालावें और उस सुख देने वाले को हमारे समीप लावें और आप आनन्द में मग्न हुआ और कोष का पाट खुला दिया और पुण्य करनेलगा बादशाह आनन्द ही में था कि इतनेही काल में परीपुत्रों ने हमज़ा का पलना लाकर रखदिया बादशाह ने इस सेवाके हेतु प्रति जिन्न को पारितोपिक दिया जितने न्यायशाला में थे उसका रूप देखकर चित्रलिखे से आश्चर्य में डूबगये उसको देखकर परीपुत्र लज्जित होगये बादशाह ने अमीर को उठाकर गोद में लिया और सुलेमानी अञ्जन मँगवाकर उसकी आंखों में लगाया और दूध पिलाने के हेतु बादशाह दाई उसकी सेवा को ढूंढ़नेलगा उसकी आज्ञानुसार शीघ्र सब उपस्थित हुई और देवपरी के समूह बाघ सिंह का दूध सातदिनतक पिलाया ख़्वाजे अब्दुलरहिमान ने कहा कि रमल के द्वारा मालूम होता है कि इसी लड़के से आपकी लड़की का ब्याह होगा और परस्पर मनुष्य और जिन्नात से नातेदारी इसीके भाग्य से होगी बादशाह प्रसन्न होकर एक और पलना कि जिसके पाये मूंगे के और पट्टी लाल हीरा की सुवर्ण से जड़ी बनी थी और रेशम से बिनवाकर उसपर अमीर को लेटादिया और भांति भांति के रत्न उसमें रखवादिये और फिर उसीमें अमीर को सोलाकर जो जिन्न लाये थे उनसे कहा कि जहां से लाये थे वहीं रख आओ परन्तु विचारसमेत रखआना उसके घर का सब समाचार आकर मुझे बताना आज्ञा पातेही अमीर का हिंडोला जहां से लाये थे वहीं पहुँचाया और आनन्दित होकर सकल समाचार बादशाह को सुनाये ॥

बुज़ुरुच्चमेहर का मदायन की ओर जाना और वहां पहुँचकर आनन्द करना ॥

इतिहासलेखक इस समाचार को यों बर्णन करते हैं कि एक सप्ताह के पीछे ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर न अब्दुल्मतलब से कहला भेजा कि सुधि तो लीजिये कि हिंडोला छतपर आया है कि नहीं वह खोया हुआ अपना पुत्र आपने पाया कि नहीं यह सुनकर ख़्वाजे अब्दुलमतलब ने आदमी जो कोठे पर देखने के हेतु भेजा तो वह हिंडोला देखकर भौचकगया और उसीकी ओर आश्चर्यवान् होकर टकटकी बांधकर देखनेलगा ख़्वाजे को फिर समाचार जनाया कि अमीर एक दूसरे पलना को कि आसमान ने भी ऐसा कभी दृष्टि से न देखाहोगा लेकर आये हैं कि जिससे सब छत प्रकाशित होरही है सब कोठों में लाल लाली देरहे हैं ॥

दोहा । यूसुफ़ जो खो गयाथा, गुण न लीन जेहि देह । कुनआं में पुनि आपगे, पिता हेतु करि नेह ॥

ख़्वाजे अब्दुलमतलब ने यह बृत्तान्त सुनतेही सब समाचार प्रतीत मान आनन्द सहित बुज़ुरुच्चमेहर से कहलाभेजा वह सुनतेही अपनी सेना से आया और अमीर

को देखकर आंखें प्रकाशित कीं और ख्वाजे अब्दुल्मतलब से कहा कि मुझे बादशाह से आज्ञा लेकर आये बहुतकाल व्यतीत हुआ और मेरे लड़कोंवालों का ईश्वर जाने क्या समाचार हुआ होगा? अब बादशाह के देखनेको चित्त अकुलाता है अब मैं तो आपसे विदा होता हूं आपके कल्याण को सदा चाहता हूं परन्तु आप अमीर और मुक़बिल और असर की सेवा से न चूकें और अपने उपाय पढ़ने लिखने में भी श्रम करियेगा जब कभी मेरा पत्र आयाकरे उसका उत्तर शीघ्र कृपा हुआकरे अभिप्राय यत्न समेत लिखाकीजियेगा और अमीर को सप्तद्वीप का चतुर बादशाह विदित कीजियेगा अपने साथियों से इस बात की चर्चा कीजियेगा ख्वाजे अब्दुल्मतलब ने सब स्वीकार किया और एक विनयपत्र लिखकर ख्वाजे बुज़ुरुचमेहर को प्रशंसा के हेतु दिया बुज़ुरुचमेहर उस विनयपत्र को लेकर मदायन देश की ओर चला कुछ काल के पीछे अपने स्थान में पहुँचा और बादशाह के दर्शन से कृतकृत्य होकर वह विनयपत्र दिया और अब्दुल्मतलब की उत्तमता और साहस की बड़ी प्रशंसा की बादशाह उसे पढ़कर अति प्रसन्न हुआ और बुज़ुरुचमेहर को बड़ा पारितोषिक दिया उसके कई महीने के पीछे एक दिवस नौशेरवां कैकाऊस की गद्दीपर बैठा था सब सभा के लोग मन्त्री आदि सभा में बैठे थे और गानेवाले देशों के और बनिये सौदागर सब ओरों के आये थे सब नगरों के वृत्तान्त सभा में पढ़ेजाते थे कि चीन का वृत्तान्त बांचागया तो उसमें यह लिखा था कि चीन के महाराज के गुरु बहराम का पुत्र खाक़ानुल्ला गद्दी पर बैठा है और यह बड़ा प्रतापी बादशाह हुआ है और अपने समान दूसरे को पराक्रमी व साहसी नहीं जानता है रुस्तम बनरीमा उसके आगे बुड्ढी स्त्री तुल्य है आखेट में जिस हाथी को थप्पड़ मारता है वह चिघड़के बैठजाता है और शेर बबर को कुत्ते के समान जानता है और सबलोग उसके बल को मानते हैं उसने देश भी बहुत से विजय करलिये हैं और बारसाल का कर जो उसके ऊपर है उसके देने की इच्छा नहीं है अपने बल पर यह घमण्ड किया है और यह सबसे कहता है कि हमको सप्तद्वीप का बादशाह करदेवे या तो अपने रुपये का नाम न लेवे नहीं तो मदायन को लूटकर उजाड़ दूंगा यह सुनकर बादशाह सन्देहमय होकर बुज़ुरुचमेहर से सलाह पूछी कि इसका कोई उपाय करना उचित है ख्वाजे ने कहा कि इसका उपाय यही है कि अभी उसको ज़ोर अच्छीभांति नहीं प्राप्तहुआ है किसी नौकर को आज्ञा दीजिये कि उस दुष्टको बांध करके आपके समीप लावे या उस अविवेकी का शिर काटकर सरकार में लाकर धरे नहीं तो बलवान् होनेपर उसकी जड़ उखड़ना कठिन होगी चीन के देश में उसके शरीर से उपद्रव अधिक होंगे बादशाह ने कहा कि तुमको शक्ति है जिसे इस कार्य के योग्य जानो उस दुष्ट के पराजय के हेतु भेजदो बुज़ुरुचमेहर ने अस्फ़न्दरी के पुत्र गुस्तहमको जो बड़ा शूरवीर और बुद्धिमान् और शत्रुओं के समूह का मालिक था बादशाह से पारितोषिक दिलाकर बारह हजार सवार लशकर से चीनके बहराम पहलवान के पराजय के हेतु भेजा और भी बड़े २

मुखिया सेनापति युद्धप्रवीणों को साथ किया और कठिन आज्ञा दी कि कर लेने के सिवाय चारसाल की भेंट जुर्माना की भांति लेना और उसे पराजित करके अति कष्ट दे बांधलेना और बेड़ी पहिनाकर न्यायशाला में भेजना ख़बरदार इसमें सुस्ती कुछ भी न करना यह सुनकर गुस्तहम सलाम करके चीन की ओर चला॥

अमर के लाल चुराने और पाठशालामें जाने का वृत्तान्त॥

अब यहां अमीर और अमर के पाठशाला में पढ़ने जाने का वृत्तान्त यों वर्णन करते हैं कि आदियावानों को यह मालूम था कि एक स्तन का दूध अकेले अमीर-हमज़ा को और दूसरी छाती का मुक़बिल व अमर को पिलाती थी और उन दोनों से अमीरहमज़ा पर कृपादृष्टि अधिक रखती थी परन्तु अमीर प्रतिदिन दुबला होता जाता था और अमर मोटा होता जाता था यद्यपि दो साझी मिलकर एक स्तन का दूध पीते थे सब आश्चर्यवान् थे कि इसका क्या कारण है ? कि यह और लड़कों से मोटा है और स्वरूपवान् है एक दिवस आदिया रात को सोती २ जो चौंक पड़ी देखती क्या है कि अमर ने अमीर और मुक़बिल को तो पलँग से नीचे ढकेल दिया है और आप दोनों स्तनों का दूध पीरहा है प्रातःसमय आदिया ने यह समाचार सब से वर्णन किया और कहा कि यह लड़का जब बड़ा होगा बड़ा नामी चोर होगा कि अभी से ऐसी चालें करता है बड़ा ढीठपन कररहा है उसके कुछ कालके पीछे जब पैरों चलनेलगा अमर ने अब यह बात अङ्गीकार की कि जब घर के सब लोग सोजाते तब आप घुटुओं चलकर जिस दालान में जाता स्त्रियों का छल्ला अँगूठी और जो कुछ गहना पाता उठाकर आदिया के पानदान या उसकी तकिया के तले रखदेता और आप सोजाता प्रातःकाल जब लोग अपना माल ढूँढ़ते तो आदि-यावानों की तकिया के नीचे या उसके पानदान में पाते तब अपना २ सबलोग उठा लेजाते आदिया बड़ा आश्चर्य करती और लज्जित होती किन्तु मुख से कोई शब्द न कहती एक दिवस अमीर के हिंडोले का लाल चुराकर अपने मुख में रखलिया और कुछ किसी को मालूम न हुआ और यह वृत्तान्त ख़्वाजे अब्दुलमतलब को पहुँचा कि हिंडोला का एक लाल खोगया वह जवाहिर बहुमौल्य मकानही से बह-गया दैवयोग से उस दिन ख़्वाजे की दृष्टि अमर के मुखपर पड़गई देखा कि एक ओर का गाल कुछ सूजाहै ख़्वाजे ने और भी आदिया और लौंड़ियों पर क्रोध किया और अमर को निकट बुलाकर देखने लगा कि यह फूला कैसा है गाल को जो दबाया उसके मुख से लाल निकल पड़ा ख़्वाजे ने कहा कि ईश्वर ख़ैर करे कि इस बाल्यावस्था का तो यह चरित्र है युवावस्था में देखिये यह क्या करेगा क्या २ यह ढहावेगा ग़रज़ कि अमर के हाथ से सब रोते थे और कभी लड़कपन के कामसे हँसते थे जब अमीरहमज़ा और मुक़बिल और अमर पांच साल के हुए ख़्वाजे अब्दुलमतलब ने एक गुरु के निकट जो हाशम और नबीअम्मियाके लड़कों को पढ़ाता था उन तीनों को भी पढ़ने के हेतु पाठशाला की रीतिके अनुसार भेजा

पहले दिन श्रीगणेश करायागया उस समय के अनुसार आनन्दाचार कियागया जब दूसरे दिवस मौलवी अर्थात् गुरु सबक़ देनेलगा अमीर मुक़ाबिल ने उसके पढ़ाने की भांति पढ़ा परन्तु अमर से जब उसने कहा कि कहो अलिफ़ तब बोला सच बबरहक़ है अर्थात् व्यापक है पद के योग्य है कहा कि मैं कहता हूं अलिफ़ कह तब कहता है सच बबरहक़ है यह क्या बात है कैसा मूर्ख है अमर ने कहा कि जो आप कहते हैं उसका उत्तर मैं देता हूँ जो मैं समझा हूँ वह आपके चरणों के नि. कट विनय करता हूं अर्थात् आप कहते हैं कि अलिफ़ मैं कहता हूँ सच बबरहक़ है अर्थात् अलिफ़ सीधा है और इसका अङ्क एक है और ईश्वर भी केवल एक है जिसे फ़ारसी में वाहिदहूलाशरीक़ बोलते हैं वह भी अकेलाही है जो मैं इसे अशुद्ध और झूठ बोलता हूं तो मुझे शासन दीजिये और मुझे क़ायल कीजिये और कई भांति समझाइये आप इसमें क्या कहते हैं? कि ईश्वर एक नहीं है कोई दूसरा भी उसका साथी है ग़रज़ कि सहस्रों उपाय से अलिफ़ बे पढ़ाई गई ज्यों त्यों दूसरी पाटी की बारी पहुँची जब अलिफ़ ख़ाली बे के तले एक नुक़्ता ते के ऊपर दो नुक़्ता से के ऊपर तीन शून्य अर्थात् बिन्दी गिनाकर पढ़ाने लगे तो और भी अमर का चित्त घबराया और ढिठाई करने पर उतारू हुआ पढ़ने की ओर चित्त कुछ न लगाता व्यङ्ग बचन बोलने लगता था गुरु ने क्रोध की दृष्टि से देखा परन्तु अपनाही कहना करता था लाचार होकर हमज़ा से कहनेलगा कि तुमको शक्तिहै इस गुरुसे पढ़ो और अपना अमोल समय गवांओ मैं तो नहीं पढ़ूंगा ऐसी विद्या पढ़ने से बाज़ रहा इस विद्या का पढ़ना छोड़ता हूं मैं क़ायदा अर्थात् रीति पढ़ने आयाहूं या हिसाब अर्थात् गणित समझने को किताब लाया हूं जो अलिफ़ ख़ाली है तो मुझे क्या या किसी के पास दो एक नुक़्ते अर्थात् शून्य हैं तो मुझे क्या पड़ी है? उनसे क्या प्रयोजन है? संक्षेप यह है कि अमर इसी प्रकार की बातें कहा करता था मुल्ला एक दिन ख़्वाजे अब्दुल्मतलब के निकट गया और अमर के ढीठपने का समाचार सब वर्णन किया और सब वृत्तान्त कहा कि नतो आप पढ़ता है और न हमज़ा को पढ़ने देता है जो हमज़ा को पढ़वाया चाहो तो उसे और किसीको सौंप दीजिये नहीं तो मैं ऐसा कष्ट अपने ऊपर न लूंगा उन दोनों लड़कोंको भी बोलवा लीजिये ख़्वाजे ने कहा कि अमीर को दूसरे स्थानपर पढ़ने के हेतु भेजें परन्तु अमीर ने स्वीकार न किया उसपर यह सुनकर रोदिया और कहनेलगा कि जहां अमर जायगा वहां मैं भी जाऊंगा नहींतो मैं एक अक्षरभी न पढ़ूंगा ख़्वाजा लाचार होकर चुपहोरहा और फिर मुखसे कोई शब्दभी न कहा रीतिथी कि सब लड़कों के निमित्त उनके पालक अपनी शक्ति के अनुसार भोजन बनवाकर पाठशाला में भेजते थे एक दिवस का समाचार सुनिये कि रीति के अनुसार प्रतिगृहसे पाठशाला में भोजन आया था और उचित स्थानों में रक्खाहुआ था मध्याह्न के समय गुरुसमेत सब नींदवश होकर सोगये परन्तु अमर जागता था जो कुछ खाना उनमें से

लेकर खालिया और शेष पाठक की तकियाके तले छिपाकर रखदिया जब सब जागे खाना ढूंढ़ा परन्तु न पाया प्रत्येक बालक क्षुधा के कारण घबराये पाठक ने कहा कि अमर के सिवाय यह काम और किसी का नहीं है उसके आगे और किससे इस भांति का काम होगा अमर ने कहा कि वाह २ स्वामी यह वही कहावत है कि नगर में ऊंट बदनाम आप प्रथम अच्छी भांति से ढुंढ़वालीजिये जिसपर अपराध ठीक हो वह दण्ड के योग्य होगा और वही अपराधी है पाठक ने कहा कि तूही ढूंढ़ अमर ने पहले नीति के अनुसार सब लड़कों का झाड़ालिया और आस पास देखनेलगा तिस पीछे पाठक के वस्त्र तकिया झाड़ी सब कपड़े उलटडाले सबने देखा कि पाठक की तकिया के तले से भोजन निकला चिल्लाकर कहनेलगा कि देखो तो साहबो ॥

चौपाई। जो पाथे ने अधरम होई। मुसलमान पुनि रहै न कोई॥
जो गुरुकरै काज यहि भांती। चेला किमि न होय खल घाती॥

पाठक की जो ऐसी नियत है तो मूर्खों के ऐसे वृत्तान्तपर क्या पश्चात्ताप है हमज़ा चलो उठो अपने पिता से कहो कि चोर पाठक के पास न पढ़ेंगे ऐसी विद्या पढ़ने से अपढ़ रहना उचित है हमको किसी प्रवीण सुकर्मी नीतिमान् गुरु के पास पढ़ाओ और किसी तीव्रबुद्धि के निकट बैठाओ पाठक ने यह बात सुन लज्जित हो कर दो तीन तमाचे अमर के मारे जब शासना न मानी तब कोड़े फटकारे अमीर ने अमर का अपराध क्षमाकरवाया और अधिक दण्ड न होने दिया दूसरे दिन मध्याह्न के समय जब पाठक और शिक्षक सोगये तब अमर ने पाठक का शमला किरमानी हलवाई के निकट गिरों धरके पांच रुपये की मिठाई लाकर पाठशाला में रखदी और आप सोरहा पाठक ने उठकर जब मिठाई अधिक देखी तब जी में प्रसन्न हुआ किन्तु साथही अमर की चालाकी के ओर ध्यान किया प्रत्येक से पूछा कि यह कैसी मिठाई है और कहां से आई है सबों ने कहा कि हम नहीं जानते हैं तब अमर को जगाकर पूछा तो आपने उत्तर दिया कि बाबाजी ने प्रसाद माना था सो यह मिठाई लेकर आये थे दो एक स्नेही साथ लाये थे आपको सोते से जगाना बेअदबी समझ चलते समय मुझसे कहगये थे कि जब पाठक सोकर उठें इसपर फ़ातिहा अर्थात् देवता का नाम लेकर बटवादेना और मेरा भाग तुम लेलेना गुरुने कहा कि किसके नामपर अर्पणकरूं अमर ने कहा कि बाबा शमला के नामपर पढ़ो पाठक ने कहा कि यह कैसा नाम है यह सुन अमर बोला कि फ़क़ीरों के ऐसेही नाम होते हैं ऐसे नामों से उनके गुरु उनको पुकारा करते हैं गुरु ने उसको शमला-र्पण करके ऊपर से अच्छी २ मिठाई निकालकर पहले आपही खाई शेष अमर ने सब लड़कों को बांटदी और आपभी खाई उन पेड़ों को जिन्हें पाठक ने खाये थे अमर ने कुछ जमालगोटा मिलादिया था थोड़ी देर के पीछे पाठक साहब के पेट में गड़गड़ाकर दर्द होना आरम्भ हुआ पाठक को दस्तपर दस्त होनेलगे पाखाना तक जाना कठिन हुआ हाथ पाँव थरथराने लगे पाठक ने अमर से पूछा कि अरे इस

मिठाई में क्या मिलाहुआ था कि जिसके खाने से मेरा हाल इस भांति का हुआ है अमर ने कहा कि जिस प्रकार से आपको सकल वर्णों में शै ऐसी याद हैं कि प्रत्येक शब्द लाते हैं मैंभी लाम काफ मुँह से निकालूंगा कि मुझको भी यही अक्षर अच्छे याद होगये हैं मिठाई तो हम सब ने खाई है कि डकार तक भी नहीं आती है जो मिठाई के खाने से आप का समाचार ऐसा पतला हुआ तो हमलोगों को क्या हुआ है? किन्तु ऐसा जो हो तो कदाचित्‌ही जैसा कहावत में है कि किसीको बैंगन विजियाले और किसीको पाचक आपने मेरे जानेके आगे ऊपर २ किसी लड़के से मिठाई उड़वाई होगी या बेसम्हार मिठाई खाई होगी बावा शमला ऐसे न थे कि कोई उनसे खराब काम होवे और उससे पेट में किसी भांति की बुराई न उत्पन्न हो सिवाय इसके आपने काहेको भूख के मारे वहुतसी खाली कि जिससे पचने में भी कठिनता अधिक जनाई अमर की ढिठाई अमीर ने जानकरके मट्ठा मँगवाया पाठक मोल्ला को पिलवाया और कहा कि मिठाई की उष्णता ने गर्मी विशेष की है आप दही को पान कीजिये और चित्त में किसी भांति की सन्देह न करिये ईश्वर २ करके पाठक का जी बचा उस बलाय से सावकाश मिला जब चार घड़ी दिन रहगया पाठक ने सब बालकों को छुट्टी दी सबने अपने २ घर की राह ली पाठक ने भी अपनी पगड़ी और फेंट सँवार देखें तो शमला नहीं मिलता खोगया लाचार होकरके फेंटा का डुपट्टा छोरकर मूड़ में बांधा और घर की राह ली जब हलवाई की दूकान के निकट पहुँचे तब हलवाई शमला लेकर दौड़ा और कहा कि आपको शमला अर्थात् पाटम्बर भेजकर मिठाई मँगाना क्या अवश्य था क्या मुझे लज्जित करना आपको था क्या पांच रुपया मेरे ऐसे थे कि जिससे आपका विश्वास न मानता दश पांच दिवस का धैर्य न होता दामों की कुछ ऐसी मुझे आवश्यकता न थी जब मासिक आपका आयाकरे भेजवादिया कीजिये यह दूकान आपकी है जब जिस प्रकार की मिठाई चाहिये मँगवालिया कीजियेगा पाठक ने यह बातें सुनकर कुछ बनावट की बातें कही और शमला लेकर अङ्गा की जेबमें से पांच रुपया निकालकर लाचार हो हलवाई के हाथ में धरे और चित्त में विचार किया कि यह वही मिठाई है कि जिसको अमर ने आज अर्पण करवाई थी रात अच्छी भांति व्यतीत हो प्रातःकाल मैं हूं या अमर है कोड़ा है या उसकी पीठ है अब प्रातःसमय होतेही सब से प्रथम अमर शाला में आया और बिछौना झाड़के बिछाया और पाठक की मसनद तकिया लगाकर किताब खोलकर पढ़ने लगा पाठक ने आकर जो उसको शाला में पढ़ते हुए देखा चित्तमें बिचारा कि इसपर मेरा डर छागया है जिससे आज सब से प्रथम शाला में आया है आज इसको कुछ न कहना चाहिये भुलावा देना चाहिये पाठक ने सबको पढ़ाकर कहा कि मैं हम्माम में स्नान के हेतु जाता हूं बहुत शीघ्र वहां से आता हूं तुम सब बैठे २ पढ़ो अपना २ पढ़ाहुआ यादकरो और खिज़ाब बालों में लगाने को अमर के हाथ पहलेहीसे भेजदिया था पीछे आप जाने का मनोरथ किया अमर ने

मार्ग में समय पाकर तोलाभर हरताल मिला दिया और अच्छी भांति ख़िज़ाब में घोरदिया गुरुजी हम्माम में पहुँचकर ख़िज़ाब को दाढ़ी मूछों में अच्छी भांति लगाकर एक घड़ी के पीछे जब उष्ण पानी से धोया तो सब दाढ़ी मूछों के बाल गिरपड़े तब अत्यन्त लज्जित हुए और सबसे मुँह छिपाया रात्रि के समय एक कपड़ा मुँहपर डालकर ख़्वाजे अब्दुल्मतलब के निकट जाकर विनय की और अपनी सूरत दिखाई और अच्छी भांति से मुँह पीटा और रोरो कर अति विलाप कर कहा कि अमर ने इस बुढ़ापे में मेरी यह गति की और इस वृद्ध अवस्था में मुझे किस प्रकार का कष्ट दिया है कि लाज के कारण किसी को मुँह नहीं दिखासक्ता किसी मित्र स्नेही के निकट नहीं जासक्ता और सब वृत्तान्त शमला और मिठाई आदि का वर्णन किया और जमालगोटा डाल देनेका सब समाचार कहा ख़्वाजे ने उनको तो विनय करके विदा किया और अमर को कष्ट देकर घरसे निकालदिया और अमीरसे कहा कि जो तुमने कभी अमर का नाम लिया तो हम तुमपर बहुत क्रोध करेंगे ऐसे अयोग्य कुमार्गी को अपने समीप न बैठने दियाकरो मूर्खको अपने निकट कोई नहीं बैठाता है और अपने घर में बुलाता है ऐसेकी संगति में बदनामी प्राप्तहोती है बुरे के संग बुरा ही मिलती है अमीर अमर का बिछुरना कब चाहता था निशि दिन अमीर रोयाकरता और भूखा बैठा रहता यह समाचार जब ख़्वाजे अब्दुल्मतलब पर विदित हुआ लाचार होकर अमर को बुलवाकर उसका अपराध क्षमा किया और अमीर को सौंप दिया और एक चिट्ठी गुरु के नाम अपराध के क्षमा करने के हेतु दी पाठक ने उसका अपराध क्षमा किया और उसी प्रकार फिर भी अमर पाठशाला में पहुँचा एक दिवस किसी विद्यार्थी के घर से कुछ भोजन आया गुरुजी ने अमर को देकर कहा कि इसको मेरे घर में देआइये और मार्ग में कुछ चालाकी न दिखाइयेगा जो मार्ग में खोलोगे तो इसमें मुर्ग का बच्चा है उड़जायगा फिर कठिनता से भी न मिलेगा अमर ने कहा कि मुझे खोलने से क्या काम है ? आपकी आज्ञानुसार घर में दिये आता हूं और उनसे उत्तर लाता हूं फिर उस भोजन को लेकर वहां से चला जब पाठक के घर के निकट गया तो एक स्थान स्वच्छ में उस भोजन को शिर से उतारकर खोला तो उस में मीठे चावल दृष्टि पड़े चित्त चलायमान हुआ भूखा तो थाही उसी स्थान पर बैठकर अच्छी भांति भोजन किया शेष कुत्तों को डाल दिया और ख़ाली पात्र रख कर कसनी और भोजन का ढकना फाड़कर आगे बढ़ा पाठक के द्वार पर पहुँच कर गुरुस्त्री को हांक दी वह जब किवाड़ के निकट आई तब उनको देकर कहा कि पाठक ने इसके खोलने के निमित्त मना किया है कि खाना कुछ न बनाना और पड़ोसी भी जो दो एक मित्र स्नेही तुम्हारे हों उनको भी खाना बनाना मना करना और उनके यहां खाना भेजवाना वह बिचारी अमर का छल न जानती थी उसने खाना भी कुछ न बनाया और पड़ोसियों को भी जो दो स्त्रियां उसकी अति मित्र थीं भोजन बनाने को मना करवा भेजा दैवयोग से उस दिन जो गुरुजी पाठशाला

से उठे तो एक मित्र की मुलाक़ात को गये कि घड़ीभर मन बहलाकर कुछ कहते सुनते चलें उसने दोपहर रातगये तक पाठक को जाने न दिया यद्यपि खाना खाने का शिष्टाचार उसके मित्र ने किया परन्तु पाठक को मीठे चावलों का स्वाद मुँह में था कुछ न खाया जब बिदा होकर घर गये और स्त्री से पूछा कि आज क्या बनाया है तुमको आज बड़ा कष्ट हुआ मेरे आनेका ध्यान कियेरही उसने कहा कि आपने भोजन बनाने के हेतु मना कराभेजा था और तुम्हारी आज्ञानुसार पड़ोस की स्त्रियों को भी भोजन बनाने से मना करदिया था सो आज नाहक आधीराततक बाहर रहे पाहुनों से ऐसे बेसुधि रहे कि वह बिचारी भी अपने पुरुषोंसमेत भूखी बैठी हैं खाने का मार्ग देखरही हैं अब जो आपने भोजन भेजा था वह रक्खा है पहले तो उन बिचारियों को जिनको मैंने तुम्हारे कहनेके अनुसार न्योतारक्खा है भेजो फिर आप खान पान करें पाठक यह वाक्य सुनकर चित्तमें कहनेलगा कि ईश्वर अच्छा करे यह चाल अमर की है और यह बात भी ढिठाई से बाहर नहीं है उस पात्र को जो खोला तो उसमें भोजन न देखा और चित्त में कहा कि जांचेहुए को जांचना मूर्खता है तेरी बुद्धिपर क्या परदा पड़ाहै कि इस दुष्ट के हाथसे कई बेर फल पाचुका है फिर उसपर विश्वास करता है फिर पाठक ने उस रात्रि को स्त्रीसमेत उपवास किया और यह हाल सुन कर जो और स्त्रियां थीं वेभी भूखी पड़ी रहीं भोर होतेही गुरु ने कुछ बनवाकर खा-लिया और शाला में जाकर अमर से पूछा कि कल जो भोजन भेजा था वह क्या हुआ अमर ने कहा कि खाने से तो कुछ भेद जाना नहीं लेकिन वह मुर्ग़ जो आपने भेजा था मध्यमार्ग में कसनी फाड़कर उड़गया और मैंने बहुत ढूंढ़ा परन्तु उसका पता न लगा पाठक ने कहा कि तैंने हमारे घर में भोजन बनाने को क्यों मना किया और क्यों निष्प्रयोजन घरवालों को दुःख दिया और हमने कब कहा था कि पड़ो-सियों को भी न्योता देना उनको भी मेरे साथ दुःख दिया अमर बोला कि यह मुझसे अपराध हुआ पाठक ने अमर को बांधकर अच्छी भांति दण्ड दिया अमीर ने उस का दोष क्षमा कराया और उस कष्ट से छोड़ाया और कहा कि इस दास से अब ऐसा अपराध न होगा परन्तु अमर पाठक का मनसे जीवघातक होगया और सदैव किसी न किसी बात में दुःख देता और अबूजेहल और अबीसुफ़ियां भी इसी शाला में पढ़ते थे दोपहर के समय जब सब लड़के सोरहे नींद में आसक्त हुए अमर ने अंगूठी अबूजेहल की अंगुली से उतार कर पाठक के घर में जाकर पाठक की ल-ड़की के पानदान में रख आया और लड़की के कान की बाली उतार कर अबूजे-हल के हाथ में डालदी और चुपका होकर लेटरहा चुपकी साध ली जब सब लड़के जागे मुँह धो २ कर पढ़नेलगे गुरु ने अबूजेहल के हाथ की अंगुली में अपनी के कान की बाली जो देखी तो कुछ कान खड़ेहुए परन्तु कुछ कह न सके अबू जेहल से पूछा कि यह बाली तूने क्योंकर पाई है अबूजेहल अपनी अंगुली देखकर अति आश्चर्य माना और घबराकर कहने लगा कि मैं यह नहीं

कि किसने यह बाली मेरे हाथ में पहिनाई है अमर बोला कि स्वामीजी मुझ से पूछिये मैं इस वृत्तान्त को अच्छी भांति जानता हूं यह भेद मुझे अच्छीतरह विदित है यद्यपि आपके सामने कहना उचित नहीं है पाठक ने कहा कि कहो अमर बोला कि दोपहर के समय जब आप और सब लड़के सोजाते हैं यह उठकर आपके घर जाया करता है और फिर उसी पाँव झटपट फिर आता है आज जब यह उठकर चला दैवयोग से उसी समय मेरी भी आंख खुलगई मैं भी उसके पीछे पाँव दबा कर चला जब वह आपके दरवाजे पर पहुँचा इसने जंजीर हिलाई आपकी पुत्री सुनकर दौड़ी आई प्रथम तो परस्पर वार्त्तालाप करते रहे और फिर कुछ आने जाने की बात ठहरी चलते समय इसने अपनी अंगूठी उसे दी और उसके कान की बाली आपने ली इसके पीछे यहां छिपाहुआ आकर सोगया मैं भी पीछे से आकर सोरहा यह सुनकर पाठक क्रोधित हुआ और अबूजेहलसे बाली लेकर इसभांति से उसे पीटा कि बेदम होगया और उसी समय अपने घर जाकर पुत्री को निकट बुलाया और उसका पानदान मँगाया देखा तो सचमुच उसमें अंगूठी रक्खी है और अच्छी भांति यत्नसमेत धरी है यह देखतेही उस बिचारी के बाल पकड़कर ऐसे थप्पड़ उसके फूल से गालों पर मारे कि जिससे वह घबड़ाकर अचेत होगई और मुँह उस का तांबासा लाल होगया माता उसकी गालियां देती हुई दौड़ी कि क्या तू बिक्षिप्त होगया है तेरे मूंड़पर प्रेत बैठा है उस बिचारी को मारे डालता है उसका क्या दोष है ? यह कहकर एक दो हाथ अपने पति की पीठपर मारे वह अपनी पुत्री को छोड़ कर उसके लिपट गया और उसकी डाढ़ी उसके हाथ में और उसकी चोटी उसके हाथ में टोलाके मनुष्य यह गुल शोर झगड़ा सुनकर दौड़े और पाठक से कहने लगे कि तुमको स्त्री पर हाथ डालना यह पाठ किसने पढ़ाया था और किस गुरु ने विद्या की शिक्षा की थी जिस किताब में यह लिखा हो कि स्त्री को पुरुष मारे लिखा हुआ दिखादीजिये यह बात हमको भी समझादीजिये निदान लोगों ने बीच बराव करदिया और प्रत्येक को समझाकर यह कहनेलगे कि मनुष्य को उचित है कि स्त्रीपर हाथ न चलावे दैवयोग से उसके भोर शुक्र का दिन था लड़कों को छुट्टी दी गई थी प्रत्येक बालक खेल कूद में प्रवृत्त थे और सब बालक कमसिन अर्थात् थोड़ी ही अवस्था के थे अमर को नई सूझती थी एक बिसाती से जाकर कहा कि तुम्हारी स्त्री का समाचार बुरा है मुझे हाथ जोड़ २ कर लोगों ने भेजा है बिसाती यह बात सुनकर रोता पीटता घर को चला अमर थोड़ी दूर उसके साथ होकर अलग हो बैठा और उलटे पांवों और राह से दूकान पर आया और उसके चेले से कहा कि वह बड़ाबक्स जो सुइयों का है तुम्हारे गुरुने मांगा है कि उसको एक मनुष्य मोललेगा और दाम मुँह के मांगे देगा वह आप तो न आसके इस निमित्त मुझे भेजा है आगे तुमको अख्तियार है वह यह समझकर कि यह लड़का अच्छा दीखपड़ता है छल यह नहीं जानता होगा बक्स सुइयों का देदिया अमर उसे

पाठशाला में पहुँचा और सूना पाकर पाठक के बिछौना में अच्छीभांति तकिया समेत में वह सुइयां चुभोईं और आप अपने घर चलाआया और जोकि उस दिवस पाठक से और उनकी स्त्री से मार पीट हुई थी इस कारण से भोजन कुछ न बनाथा और झगड़ा मचा था पाठक रिसाकर शाला में आया और बिछौना बिछाया कि आज यहीं सोरहूंगा फिरकर घर न जाऊंगा जैसेही बिछौना पर पांव रक्खा वह सुइयां तलुओं में गड़गई तो आसक्त होकर उसपर लेटकर जब करौंटे लेने लगा तो देहभर में सुइयां गड़गईं और चलनी की भांति सम्पूर्ण शरीर में छेद होगये और उस दिवस विद्यार्थी भी न थे छुट्टी के कारण कोई लड़का न आया था अब उनके शरीर से सुइयां निकालनेवाला कोई नहीं है जिस भांति शरीर में चुभी थीं उस रीति से छेदीरहीं शिर से पैरतक सब सूज गया और जहां २ सुइयां छिदगई थीं वहां २ से रुधिर की धारें छूटनेलगीं दूसरे दिवस शनैश्चर को जब लड़के आये तो देखा कि पाठक साहब मछली के समान तलफ़ते हैं और क़राहते हैं बिछौने पर अचेत मुरझायेहुए पड़े हैं लड़के सुइयां निकालनेलगे और पाठक शूल के कारण चीखें मारनेलगे और कभी मन को पोढ़ा करके रुक जाते थे इतने में अमर भी सबसे पीछे उस दिन गया था पाठक को देखकर रो रो कर कहने लगा कि जिसने स्वामीजी के साथ यह किया है जो मैं उसे जानपाता तो इनसे उसकी बुरी गति करता और अपने गुरु का बदला लेता यह कहकर झटपट एक मियाना लाकर गुरुजी को सवार कराके जर्राह के घर लेचला जब उस बिसाती के घर के निकट मियाना पहुँचा वह अमर को पहिंचानकर दौड़ा और कहनेलगा कि ऐ लड़के तू बड़ा छली है और झूठ मूठ की बातें बनाकर अच्छी भांति तमाशा करना जानता है मुझे झूठ मठ वाक्य सुनाकर कि तेरी स्त्री मरने के निकट है घर को भेजा और मेरे चेले से मेरा नाम लेकर कई सहस्र सुइयों का पूड़ा लेकर चलागया अब तू कहां जाता है अभी तेरी गति करता हूं और सुइयां अभी मैं तुझसे लेता हूं और इस छल का स्वाद तुझे दिखलाये देता हूं यह बात जब पाठक के कान में पड़ी उस समय कान खड़ेहुए और बिसाती की ओर मुँह करके पूछनेलगे कि यह क़ब सुइयां तेरी दूकान से लेगया था अमर ने कहा भेद खुल गया झट पट आंख बचाकर वहांसे चल दिया पाठशाला में आया अमीर और मुक़बिल से कहा कि लो ईश्वर मालिक है मेरा बास अब इस नगर में नहीं होसक्ता अमीर को भी अमर के बिना कब चैन था यह बात सुनकर पूछा भला तो है सब बता क्या समाचार है अमर ने कहा कि मेरी तो इन्द्रियां इस समय स्थिर नहीं हैं कि जो वृत्तान्त वर्णन करूं मार्ग में सब चरित सुनादूंगा तब अमीर ने कहा कि चल कहां चलता है तेरे बिना मेरा चित्त भी घबड़ाता है हम तेरे साथ हैं यद्यपि आपकी बातों को खूब जानते हैं अमीर व मुक़बिल और जिन २ बालकों को अमीर के साथ प्रीति होगई थी सब के सब अमर के साथ हुए और छिपे २ डरते कांपते

आगे पीछे दीखते हुए उसके साथ चले और अबुलकेश पर्वत की गुफा में लुक रहे और साथियों समेत उस स्थान में एकादिन और एक रात्रि बास किया जब कुछ काल बे अन्न जल व्यतीतहुआ अमीर ने कहा कि अबतो भूख के कारण चित्त घवड़ा रहा है और सब साथी दुःखित होरहे हैं अब पेट भरना किसी भांति चाहिये अमर ने कहा कि आप साथियों समेत यहां रहें सेवक भोजन लाता है देखिये तो किस भांति के व्यञ्जन आपको भोजन कराताहूं यह कहकर नगर की ओर चला और एक बधिक से दो हाथ आंत लेकर जेवदा नामी वुढ़िया के घरके पिछवाड़े पहुँचा उसकी मुर्गियां घूरे पर चरती थीं उन्हें पकड़नेलगा और ऐसा उपाय किया कि उस आंत के सिरे पर एक गांठि देकर फेंका जो मुर्गी उसे निगलगई दूसरे सिरे पर फूकने लगता था जब आंत फूल गई गले में गिरह पड़ी तो उसे पकड़कर छुरी से मारकर और पर नोचकर रुमाल से बांधी इसी उपाय से पन्द्रह सोलह मुर्गियां मारकर बांधलीं फिर विचारा अब कुछ और उपाय किया चाहिये तो चार पांच पत्थर उस वृद्धा के घरमें फेंके और आप घात लगाकर आड़ में खड़ारहा वह वृद्धा हल्ला करती हुई घर से वाहर निकली और ऐसी वैसी दीखने लगी अमर तो घात लगायेही था दूसरी ओर से उसके घर में पहुँचकर कोठरी दीखने लगा वहां एक हांड़ी में मुर्गियों के अण्डे जो जमा थे लेकर अपनी राहली आगे बढ़कर एक क़वाबी के पास क़वाब भुनवाये और अण्डे पकवाये और पांच रुपये की शीरमालें और निहारी लेकर उस पर क़वाब और अण्डे रखकर चादरा को उतार कर उस पात्र को अच्छी भांति बांधकर अपने मूँड़ पर रक्खा और क़वाबी से कहा कि अपना आदमी मेरे साथ करदे मेरे वह साथ चले कुछ देर न होगी इसी समय तुम्हारे आदमी के हाथ दाम भेजताहूं ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने मँगाये हैं उनके घर में भाइयों का न्योता है उसने जब ख़्वाजे का नाम सुना शीघ्र अपना आदमी उस के साथ किया कुछ भी भय सौदा देने में न की फिर थोड़ी दूर जाकर उस आदमी से अमर ने कहा कि तुम आगे वढ़ो ख़्वाजे के दीवानखाने में चलो मुझे दही आदि लेना है उसे लेआताहूं तुम्हें अभी मेहनत दिलाता हूं वह तो उस ओर गया और आप अबुलकेश पर्वतकी ओर चला जब अमीर के समीप पहुँचा भोजन देखकर सबों का चित्त प्रसन्न हुआ और भोजन को जो खोला तो उसमें भांति २ के खाने दृष्टि पड़े अमीर उसे देखकर अतिप्रसन्न हुआ अमर की चालाकियां तो अच्छी भांति जानताही था कहा कि प्रथम यह बताइये कि खाना किस उपाय से लाये अमर ने कहा कि प्रथम भोजन फिर वर्णन यह भोजन खालीजिये फिर बातें कीजिये अमीर ने साथियों समेत उसको भोजन किया अब उस आदमी का वृत्तान्त सुनिये कि जिसको क़वाबी ने अमर के साथ रुपया लेनेको भेजा था ख़्वाजा अब्दुल्मतलब के समीप गया और कहा कि मेरे गुरु ने सलाम कहा है और जो पांचरुपये की शीरमालें सरकार ने अमर की मारफ़त मँगाई हैं उनका मोल लेनेके

हेतु सेवक को भेजा है वहां पाठक तो पहलेही से बैठेहुए अमर का दुःख रोरहे थे यह सुनकर और चित्त घबराया इसी में एक बुढ़िया रोती पीटती हुई नालशी आई कि अमर मुझ दुखिया रांड़ को किसभांति छल देकर मुर्गियां और अण्डे ले गया है ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने क़बाबी के आदमी से पूछा कि अन्त को अमर किधर को गया है उसने कहा कि अबुलकेश पर्वत की ओर जाता था और चारों ओर को देखता भवचका सा था ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने उसको पांच रुपये मँगा दिये और बुढ़िया को भी मुर्गियों के दाम मँगादिये और पाठक से कहा कि आप अबुलकेश पर्वततक कष्ट सहिये अपने विद्यार्थियों से अमर को पकड़वालाइये पाठक पर जो बेध चढ़ाथा विद्यार्थियों को साथ लेकर पर्वत का मार्ग लिया और अमर के बांधने का मनोरथ किया जब पर्वत के निकटपहुँचे अमर दूर से देखकर अच्छी भांति से ठट्ठामारकर हँसा और अमीरसे कहा कि गुरुजी हमें पकड़ने आते हैं विद्यार्थी भी कुछ साथ लाते हैं देखिये तो मैं कैसी उनकी गति बनाता हूं किस सूरत से घर भेजवाताहूं यह सुनकर गुरुजी ठिठुके और अपने स्थानपर खड़ेरहे किन्तु अबूजेहल और अबूसुफ़ियां आदि को अमर के पकड़ने को आज्ञा दी और आप कुछ दूर चलकर बताना आरम्भ किया जब अबूजेहल आदि निकट पहुँचे तो अमर ने पुकारकर कहा कि तुम लोगों की मृत्यु चढ़ी है जो बैठे बैठाये खोपड़ी कुचलाते हो गुरुजी तो बिक्षिप्त होगये हैं तुम्हें क्या कुत्ते ने काटा है भला चाहो तो फिरजाओ अच्छीभांति अपने बाप मा को मुँह दिखाओ अबूजेहल कब मानता था बल सम्हारकर आगे बढ़ा अमर ने कङ्कड़ उठाकर इस बलसे अबूजेहल के मुँहपर मारे कि सब मुँह उसका घायल होगया और मुँहभर में चलनी के समान छेद हो गये सब कङ्कड़ मुँह में घुसगये तब तो अबूजेहल रोताहुआ पीछे को हटा और लड़कों ने अबूजेहल का जब यह हाल देखा एक भी आगे न बढ़े पाठक ने यह बिचार किया कि कदापि मेरा डर माने इस मनोरथ से उसके पकड़ने को आप चला जब निकट पहुँचा तो अमर ने एक पत्थर उठाकर ऐसा मारा कि पाठक का शिर फट गया और आगे चल न सके और रुधिर की धारें शिर से छूटने लगीं तब तो गुरुजी भी गणित बिचार के पीछे हटे और घर का मार्ग लिया शोणित से सब बदन डूब गया चलते २ अब्दुल्मतलब के निकट पहुँचे और अपना शिर और अबूजेहल का मुँह ख़्वाजे को दिखाकर सब बृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि मैं अमर को नहीं पढ़ाऊंगा आपने अच्छी मित्रता मेरे साथ की ख़्वाजा सब इतिहास सुनकर आप सवार होकर पहाड़ की ओर गया और जो पता पाठक ने बताया था उसी मार्ग पर चला अमर ने दूरसे देखकर कहा कि अमीर ख़्वाजे आते हैं इनसे मेरा बस नहीं चलेगा मुझे पावेंगे तो नहीं जानता कि कैसा दण्ड देवेंगे मैं अपना मार्ग लेताहूं सेवकपन का पद निबाहे देताहूं अब आप जानें आपका काम जाने ख़्वाजे जब गुफ़ा में पहुँचे उसमें अमर को तो न पाया परन्तु अमीर को दिलासा देकर ऊंट

पर अपने साथ बैठाया और मनोरथ समेत धाम को पधारे और मुक़बिल को बालकों के समेत अपने सेवक के साथ किया जब घर में आये यद्यपि अमीर को धीरज और ढाढ़स देकर कहा कि भैया अब अमर का नाम मुँहपर न लाना और इसको अब कभी अपने घर न बुलवाना भले मनुष्य ऐसी संगति से बिचार करते हैं ऐसे दुष्ट के साथ बैठने उठने से भागतेहैं वह तुम्हें कुमार्गी और बदनाम करेगा तुम्हारे बाप दादे का नाम मिटादेगा अमीर को बे अमर के कब चैन और सन्तोष था आसक्त होकर रोनेलगा ख़्वाजे ने बहुत कुछ समझाया परन्तु उसका उत्तर न दिया चुप होरहा और सात दिवसतक खानपान कुछ भी न किया तब ख़्वाजे अब्दुलमतलब घबड़ाये कि हमज़ा का जी इसीपर जायगा लाचार होकर अमर के ढूंढ़ने को आदमी भेजवाये परन्तु अमीर से कहा कि अब तुम अमर का कहना न मानना उस अयोग्य की बातों को चित्तमें न लाना और जो चित्त ब्याकुल होवे तो अपने बाग़ में सैर करना अपना मन बहलाना किन्तु दूसरे किसीके बाग़में न जाना हमारे कहे को ध्यानमें रखना ॥

दोहा। सैरहेतु चल बाग़ में, सुमन सुविंतहै देख। हैं पुकारती बुलबुलें, चलु आनँद उर लेख ॥

एक दिन अमर ने अमीर को शिक्षादी कि आज चल के बाग़ की सैर कीजिये फुलवाड़ी का मार्ग लीजिये उसके कहने के अनुसार अमीर मुक़बिल और अमर को अपने साथ लेकर बाग़ में गये और अति आनन्दित हो बाग़ की सैर करनेलगे अमर उस बाग़ से निकलकर किसी दूसरे के बाग़ में गया और वहांसे अच्छे फल चख चखाकर आया और कहा कि कृपानिधान यहां से निकट एक बाग़ बहुत सुशोभित और रमणीयहै आपके बाग़ की बसन्तऋतु उसके आगे पतिझारहै अमीर ने पूछा कि कितनी दूरपर और किधरहै बोला कि इसी आपके बाग़ से अति समीप है अमीर मुक़बिल समेत अमर के साथ उसओर चले और चलते २ उस बाग़ में पहुँचे देखा तो वैसाही पाया भांति २ के फूल कियारियों में खिलेहैं और कुछ वृक्षों में फल खुरमें के लगेहुए हैं नहरें स्वरूपवान् बनी हैं और कियारियां प्रति वृक्ष के सामने प्यारी २ बनी हैं उस बाग़ की मेवा देखकर देखनेवाले के मुखमें लार भरि आई एक खुरमा जो उसमें का खाय तो स्वाद और मेवों का भूलिजाय और बाग़के मध्य में एक चबूतरा संगमरमर का ऐसा स्वच्छ बनाहै कि जिसपर आंखभी नहीं ठहरती है अमीर उस चबूतरे पर बैठके सैर करनेलगा अमर इधर उधर फिर फिर के मेवे तोड़ २ कर अपना पेट भरनेलगा कुछ देरके पीछे थोड़े खुरमे तोड़कर खाता हुआ अमीर के सामने आया अमीर ने कहा कि हमभी इन खुरमों का स्वाद चक्खें मुख को अच्छा करें बोला कि बैठो साहब किस २ परिश्रम से बृक्षपर चढ़के यह खुरमे लायाहूं अपने जीपर खेल आयाहूं सो आप न खाऊं इनको खिलादूं जो खाने का मन है तो हाथ और मुँह अपना है आप भी उस बृक्ष के तले जावें अपने हाथ से तोड़कर खावें अमीर ने जो बृक्ष के निकट जाकर चढ़ने को चाहा तब अमर

बोला कि स्वामी ऐसे कार्य के करने को सेवकहै नाकि ऐसे मोटे मनुष्य का बृक्ष पर चढ़नेका काम है तुम्हारे समान मेरा शरीर होता तो बृक्ष को जड़ से उखाड़लेता अमीर को अमर के कहनेपर कुछ लज्जा आई और क्रोधित होके बृक्ष में एक धक्का मारा बृक्ष पृथ्वीपर गिरपड़ा अमर ने कहा कि इस बृक्ष का उखेड़ना कुछ कठिन नहीं है मैं भी चाहता तो इस छोटे बृक्ष को गिरा देता अभी और आप को अपना पराक्रम दिखा देता यह बृक्ष कीड़ोंने खालिया था यह सुनकर अमीर को बड़ाभारी क्रोध हुआ तो एक और बृक्ष को जड़से उखाड़कर फेंक दिया अमर बोला कि यह भी बृक्ष घुनाथा हां किन्तु वह जो बृक्ष आपकी दृष्टि के सामने है वह पुष्ट है उसका उखाड़ना कठिन है अमीर को जो क्रोध आया तो उसको भी उखाड़डाला तब तो कहने लगा कि वाह साहब क्यों पराया बाग़ उजाड़े डालते हो अपने बल के समान किसी को नहीं समझते हो कुछ ईश्वर का भी डर है यह कहकर बाग़ के मालिक को समाचार पहुँचाया और माली को भी जना दिया कि इस समय ऐसे ज़ोर से आंधी आई थी कि तेरे बाग़के तीन बृक्ष जड़से उखड़गये पहले तो कुछ डालें टूटीं फिर एकही साथ एकझोंके में बृक्ष पृथ्वीपर गिरपड़े उसने कहा कि यहां तो इतनी भी बायु नहीं आई कि पत्तातक हिलता या एक फूलही या फल बृक्ष के नीचे हम को मिलता बाग़में ऐसी हवा कहां से आई कि बृक्षों को गिरागई अमरने कहा कि बाग़ में जाकर देखो सत्य असत्य अभी विदित हुआजाता है माली जब बाग़ में गया तो देखा कि सत्य है तीन बृक्ष उखड़े पड़े हैं जो सम्पूर्ण बाग़ में उत्तम थे देखकर रोने लगा कि मासिक उसका उसीपर था और उसीके फलोंसे अपना खाने पीने का सामान करता था अमीर को उसे देखकर दया आई धैर्य और ढाढ़सदिया और बृक्षोंके बदले तीन ऊंट दिये और शीघ्र अपने आदमी को भेजकर मँगवादिये माली अतिआनन्दित होगया मन से हज़ारों प्रकार के आशीर्वाद देनेलगा उसके मनोरथ के बृक्ष फिर से हरे हुए अमर ने उस मालीसे कहा कि तू लड़कों को फुसलाये लेता है भला तू जबतक मुझे न साझी करेगा तबतक मैं क्यों तुझको यह ऊंट लेनेदूंगा और बेचने दूंगा तेरे नाक में दम करूंगा उसने मारेडर के एक ऊंट अमर को दिया और दो ऊंट आप लेकर अपना मार्ग लिया॥

अमीर व अमर व मुक़बिल के बर पाने का इतिहास॥

अब बुद्धिमान् लोग इस वृत्तान्तका वर्णन यों करतेहैं कि एक दिन अमीर मुक़बिल व अमर समेत अपने बरोठे में बैठेहुए थे और जो मित्र स्नेही उनके थे सोभी वहां पर बैठे थे तो बहुत लोगों को एक ओर से जाते हुए देखा तो अमर से पूछा कि इनका समाचार तो लाओ कि ये कहां जाते हैं मुझको जल्दी आनकर पता दो अमरने उसकी आज्ञानुसार पूछकर वर्णनकिया कि कुछ सौदागर घोड़े लाये हैं उन के देखने को यह सब मनुष्य चलेजाते हैं और अच्छीतरह से बेधड़क देखआते हैं जो आपका भी चित्त हो तो चलके देखआइये अमीरने घोड़ों का नाम सुनकर उस

ओर जानेका मनोरथ किया और मित्रों समेत आनन्दसे मग्न हो टहलते हुए चले वहां जाकर देखा तो सचमुच बहुत अच्छे २ घोड़े हैं भांति २ के तुरकी, ताज़ी, अरबी, बुग़दादी, हिन्दी केप आदि घोड़े प्रतिस्थान में बँधे हैं और वहां पर एक घोड़ा सांकरों से जकड़ाहुआ मुँह में छेकादिया हुआ आंखों पर अँधेरियां पड़ीहुई पांवों में सांकरोंकी अगाड़ी पछाड़ी बँधीहुई एकशामियानेके तले बँधा है शेर की सदृश खड़ा है अमर ने उसके मालिक से जाकर मेल किया और पूछा कि इस घोड़े को सांकरों से क्यों बांधा है ? इसने क्या अपराध किया है ? वह बोला यह घोड़ा बड़ादुष्ट है पांच दोष रखता है चढ़ना तो कैसा ? कोई इसके निकट भी नहीं जासक्ता है छींकों में रखकर इसको दाना पानी दियाजाता है बड़ी कठिनता से दाना पानी खाता पीता है अमर बोला कि यह तो कहनेही की बात है कि कोई इसपर चढ़ नहीं सक्ता हौवा बना रक्खा है भला जो कोई इसपर चढ़े तो क्या हो और उसको क्या दोगे ? उसने कहा कि ऐसा तो मैं यहां किसी को नहीं देखता हूं इनलोगों में अच्छीतरह देख चुकाहूं जो कोई सवार हो और इसको दशपांच पैग फेरे तो यही घोड़ा बेदाम भेंट करूंगा अमर ने यह सुनकर अच्छी भांति से बचन ठीक करके हाथ मारलिया और कुछ सौदागरों को जो वहां उतरे थे इस बाज़ी लगाने का गवाहकिया और अमीर से आकर सब समाचार वर्णन किया और उस घोड़ेपर चढ़ने की रुचि दिलाई अमीर उस घोड़े के निकट गया और उसपर ज़ीन बँधवाई सांकर और अँधियारियां उसकी खुलवादीं और चौक में मँगाया जब चढ़ने का मनोरथ किया और अयालपर हाथ रक्खा घोड़ा छूतेही अपनी तीब्रता को दिखाने लगा तालियां बजानेलगा अमीर उसके निकट जाके एक फ़लांग मारके उसकी पीठपर जाबैठा वह टापैं मारने और कूदनेलगा अमीर ने एक घूंसा उसके शिरपर मारा घोड़ा बेचैन हो पसीने में डूबगया, और बकरी की भांति कान करलिये मन समेत सब इन्द्रियां उसकी व्याकुल होगईं तब अमीर ने उसे प्रथम क़दम चलाया फिर पोई और सरपट दौड़ाया जब घोड़े को दौड़ते समय हवा लगी तो अतिबल करके दौड़ताहुआ चला अमीर ने यद्यपि बाग खींची परन्तु न थँभा पचास कोस तक बराबर दौड़ता चलागया अन्त को अमीर ने अपना लंगर देकर उसकी कमर तोड़ डाली और उसकी ढिठाई का स्वाद चखादिया घोड़ा तो गिरगया अमीर पैदल घरको फिरा कभी पैदल चलने का स्वभाव न था पांव में छाले पड़गये पैर उठाते हैं तो उठ नहीं सक्के निदान थक कर एक बृक्ष के तले बैठगये थोड़ी देर के पीछे क्या देखते हैं कि एक सवार झालर पहिनेहुए आताहै और एक घोड़ा चितकबला जड़ाऊ ज़ीनसे सजा कोतल साथ लाता है ॥

चौपाई। बाजि बड़ाई होइ केहिभांती। जिसके साथ पवन नहिं जाती ॥
पुनि आकाश न धावत ऐसे। चलत वेग है वह हय जैसे ॥

जब वह सवार अमीर के निकट आया और रीत्यनुसार प्रणाम किया और

कहा कि हे हमज़ा! यह घोड़ा इसहाक़नबी अलेहुस्सलाम की सवारी का है और इसका नाम सियाह क़ैतास है इसमें अनेक गुण हैं ईश्वर की आज्ञा ले तेरे चढ़ने के निमित्त लायाहूं और ईश्वर की आज्ञानुसार तुझको मैं भेंट करताहूं कोई बलवान् तुझको बश न करसकेगा तेरा प्रताप सदैव प्रकाशित रहेगा और सब तेरे आधीन रहेंगे और सबके सब तेरी सेवा करेंगे यह जो पत्थर सामने ढेरसा लगा है इसको हटाकर पृथ्वी को खोद इसमें से एक सन्दूक़ नबियों के अस्त्रों का निकलेगा उसमें नाना प्रकार के अच्छे २ शस्त्र देखपड़ेंगे उसको अपने शरीर में बांधना समयपर उसके गुण देखना अमीर ने शीघ्र उस पत्थर को हटाया और बल इतना पाया कि जिसका भरोसा न था पृथ्वी के खोदने में बड़ाबल किया उसमें हज़रतहीदका बख़्तर दाऊदका दस्ताना यूसुफ़का मोज़ा सालेह के कमरबन्द और कटार रुस्तम की तलवार आदि उसमें से सबके शस्त्र निकालकर देखाभाला और उन हथियारों और बस्त्रों को पहिनकर ईश्वर का नाम लेके सियाह क़ैतास घोड़ेपर चढ़ा॥

दोहा। आया तुरग पुनीत जब, तले जांघ सुकुमार। विदित भई अंगुश्तरी, नख शोभा सुखसार॥

और झालर पहिनेहुए वह पुरुष दृष्टिसे जातारहा और लवमात्र की देरी में वह छिपगया लिखते हैं कि वह झालरवाले घूँघुट काढ़े हज़रत जब्रील थे जो उस समय में अमीर के सहायक थे फिर ईश्वर जाने अमीर तो मक्के की ओर चले अपने घर की ओर से पैर न हटाया अब अमर का समाचार सुनिये कि दश कोसतक अमीर के पीछे २ गिरता पड़ता चला आया और साथ न छोड़ा दौड़ने से पांव न फेरा जब तलुये पांवों के बबूरों के कांटे से ममाखी के छाते होगये तो चल न सका और एक बृक्ष के तले असाध्य होकर गिरपड़ा तब ईश्वर की रचना से जब्रील उसके निकट पहुँचे और उसको भरोसा दिया और पृथ्वी से उठाकर अपनी दया करके कहा कि ऐ अमर! उठ मैं परमेश्वर की आज्ञा से तुझको बर देताहूं कि तुम से चलने में कोई आगे न जासकेगा यह कहकर अन्तर्धान होगये अमर ने उनके कहने की परीक्षा ली देखा तो सचमुच पवन से अधिक गवन करता है तब ईश्वर का धन्यबाद करके अमीर के ढूंढ़नेको चला और उसी ओर जिधर अमीर को छोड़ा था बढ़ा थोड़ी दूर गया था कि सामने से अमीर देख पड़े दोनों ओर से प्रेम समेत कुशलप्रश्न हुई और मार्ग की कठिनता को बखानके पीछे अमर हथियार और घोड़ा देखकर आश्चर्य करके अमीर से कहनेलगा कि वह घोड़ा सौदागर का क्या किया? और सच बताओ कि किसको मारकर यह घोड़ा और शस्त्र आदि छीन लिया अमीर ने कहा कि पराई जान मारना तेरा काम है यह क्या ख़राब बात कहता है मैंने ईश्वर की आज्ञा से हज़रत जब्रील का बर दियाहुआ पाया है और यह शस्त्र और बस्त्र नबियोंके पहिनेहूं और यह घोड़ा स्याहक़ैतास नाम असहाक़ की सवारी का हैं और नबियों के सम्पूर्ण शस्त्र ईश्वर ने मुझको कृपा कियेहैं अमर बोला यह तो मैं जब जानों कि जब आपका घोड़ा मुझ से आगे निकलजावे और

मेरा पांव घोड़े से पछरजावे अमीर ने अपने चित्त में विचारा कि यह क्या बकता इसको क्या होगया है मनुष्य कहीं घोड़े के साथ दौड़सक्ता है और घोड़े से आगे निकलजाय क्या ठीक है ? कहा कि अच्छा आइये अमर ने कहा कि कुछ बाज़ी लगालीजिये और मेरा मन सन्तुष्ट करदीजिये अमीर ने कहा कि जो तेरी इच्छा हो वह हमसे बाज़ी लगाले अमर ने कहा कि जो मैं इस अश्व के आगे निकल जाऊं तो दश ऊँट आपसे लूं और जो घोड़ा मुझसे आगे निकलजावे तो मेरा पिता एक वर्षतक बेदाम तेरे बाप के ऊँटों का चरवाहा हो अमीर ने उसे अङ्गीकार किया और घोड़े की लगाम पकड़ी अमर भी साथ हुआ दश कोसतक गये अमर और घोड़े के पैर बराबर उठते थे दोनों बायु से शीघ्र चलेजाते थे अमीर अमर की दौड़ देखकर अतिआश्चर्य करनेलगा और उसकी तीव्र चाल से सन्देह किया अमर ने विनय की कि ऐ अमीर ! मैं भी हज़रत खिज़र से वर पायेहुएहूं अब कुछ ख़्वाजे अब्दुलमतलब का वृत्तान्त सुनिये कि जब सौदागर का घोड़ा अमीर को लेकर भागा और अमर उसके पीछे व्याकुल होकर चला यह सब समाचार ख़्वाजे को पहुँचा वह सुनतेही अचेत होगया और अच्छे २ मक्के के मनुष्यों को साथ लेकर नगर से बाहर निकला कि सामने से अमीर अस्त्र पहिने सजे सजाये स्याह क़ैतास घोड़े पर चढ़ा प्रताप के समूह सहित और अमर उसका शिकारबन्द पकड़े चले आते हैं यह देखकर ख़्वाजे का शोक और सन्देह दूर हुआ और शरीर प्रफुल्लित होगया और ईश्वर का धन्यवाद करनेलगा अमीर ख़्वाजे को देखकर घोड़े से उतर पड़ा और दण्डवत् करके चरणों पर मस्तक रक्खा ख़्वाजे ने अमीर को छाती से लगाया आंखों में आंसू भरलाया और प्रसन्न होकर अमीर को साथ लेकर घर आया और बहुत कुछ अमीर पर उतारके पुण्य दान किया और घोड़ा और शस्त्रों का समाचार पूछा अमीरने सब ब्योरा वर्णन किया ख़्वाजे सुनकर अतिआनन्दित हुए और ईश्वर का भजन करनेलगे अब मुक़बिल वफ़ादार का वृत्तान्त सुनिये कि उस सुकृती मनुष्य का क्या हाल हुआ कि यह दोनों वरदानी होगये उस समय यह अपने मन में सोचा कि मेरा समय इन दोनों वरदानियों में न कटेगा क्योंकि इन दोनों का चित्त बढ़ा हुआ है मेरा इनमें कब पार होगा इससे चलकर नौशेरवां की सेवा अङ्गीकार करूं शायद ईश्वरकी कृपा से वहां किसी अधिकार पर नियत कियाजाऊं मेरी भी भाग्य उदय हो और वहां प्रत्येक की प्रतिष्ठा बराबर होती है यह चित्त में विचारकर मक्के से चला चार पांचही कोस गयाहोगा कि मार्ग में थककर एक वृक्ष के तले बैठरहा और चित्तमें सोचा कि इस जीने से मरना भला है न तो कुछ खर्च है न सवारी यह सोचकर उस वृक्ष पर चढ़गया और कमरबन्द का एक सिरा वृक्ष की डाली में बांधा और एक सिरा अपनी गर्दन में फांसी लगाकर डाला और लटककर हाथ पांव मारने लगा शरीर से जीव निकलने पर था कि इतने में शाह खैबर शिकन दूसरे पंजतनने पहुँचकर हांक दी

तब मुक़बिल पृथ्वीपर गिरपड़ा हज़रत ने उसको उठा लिया और पांच तीर और एक कसठा देकर कहा कि हमने तुझे बाणावरी की विद्या दी और इसमें तेरे समान दूसरा कोई न होगा तब मुक़बिल ने विनती की कि भला महाराज! मुझसे जो कोई पूछेगा कि तू किसका बरदानी है तब उससे मैं क्या कहूंगा हज़रत ने कहा कि कहियो अब्दुल्लाउल्यालिब से वर पाया है मुक़बिल पांचों तीर और धनुष् लेकर अतिप्रसन्नता से मक्के की ओर चला अब यहां का हाल सुनिये कि जब अमीर व अमर ने मुक़बिल को न देखा तो घबराकर अमर मुक़बिल की तलाश को चला जैसेही नगर के बाहर गया तैसेही मुक़बिल देखपड़ा तो अति प्रसन्न होकर लिपट गया और हाथ में हाथ मिलाके अमीर के पास लेगया मुक़बिल ने अमीर के समीप जाकर तीर और धनुष् आदि दिखलाये और बरदान होने का समाचार सुनाया यह सुनकर अमीर बहुत प्रसन्न हुआ और सब मिलकर आनन्द समेत रहने लगे॥

कर लेना अमीर का और मुसल्मान करना यमन के बादशाह का॥

अब लिखनेवाला यों वर्णन करता है कि जब सातवां बर्ष अमीर को लगा तो अमीर मुक़बिल और अमर समेत बाज़ार की ओर सैर करने के लिये गये तो देखा कि यमन महाराजा के सेनापति तहसील करने के लिये आगये हैं दूकान-दारों से कर लेते हैं जिसके पास कुछ देने को न था वह वादा करता है परन्तु वे लोग नहीं मानते मारपीट करते हैं अमीर ने अमर से कहा कि देखो यह गुल कहां होता है अमर ने कहा कि यमन के नौकर कर लेते हैं और मारपीट करते हैं अमीर को दया आई तो अमर से कहा कि इनको मना करदो कि तङ्ग न करें अमर वहां गया पर इसकी वहां कौन सुनता है फिर अमीर आप वहां गये और अमर से कहा कि दूकानदारों को मना करदो कि कोई किसी को कुछ न देवें और जो कुछ सिपाहियों ने तहसील किया है सो भी छीनलेवें यह आज्ञा पातेही मुक़-बिल और अमर उनको रोकने लगे उन्होंने लड़के समझकर कुछ न माना तब अमीर ने चार पांच सिपाहियों पर आप क्रोध करके किसीका हाथ तोड़ा और किसी का पांव और किसीका शिर फोड़ा तब वे लोग भागकर सुहेलयमनी के डेरे में गये और सब समाचार वर्णन किया कि एक लड़का हमज़ानामी ने पहले तो खज़ाना तहसीलने से रोका जब न माना तब दो लड़कों समेत हमको मार-कर भगा दिया और जो कुछ खज़ाना तहसील किया था वह सब हमारा छीन लिया यह कहरहे थे कि अमीर सियाहक़ैतास पर चढ़े दूर से दृष्टि पड़े और मुक़-बिल व अमर दायें बायें शिकारबन्द पकड़े हुए बराबर चले आते हैं जब निकट आये तब सुहेलयमनी डेरे में से निकल आया और अमीर की ओर देखकर कहने लगा कि ऐ लड़के! तेरा घोड़ा और हथियार मुझे अच्छे मालूम हुए लाके शीघ्र आगे धर मैं तेरा अपराध क्षमा करूंगा नहीं तो अपने किये का फल पावेगा यह सुनकर अमीर बहुत खिलखिलाकर हँसा और कहने लगा कि जो तेरा जी

प्यारा हो तो पहले मुझे झुककर सलाम कर फिर पीछे बातें करना और मेरी सेवा अङ्गीकार कर नहीं तो पछितावेगा सुहेल ने कहा कि इस लड़के को क्या होगया है कि छोटे मुँह से बड़ी बात कहता है इसको घोड़े पर से उतारलो और सब हथियार छीनलो साथियों ने उसकी आज्ञानुसार अमीर को चारों ओर से घेर लिया और अमीर के मारने का मनोरथ किया अमीर ने किसीको तीरों से किसीको तलवार से किसीको घोड़े की टापों से रौंदवाकर मारडाला और मुक़बिल भी तीर मारनेलगा और जो दो तीन मनुष्य आगे पीछे हुए एकही तीर से पृथ्वी में सोरहे सुहेलने देखा कि कई हज़ार सेना मारीगई तब आप अमीरहमज़ा के सामने आया अमीर ने उसका कमरबन्द पकड़करके शिर से ऊंचा किया और घोड़ेपर से उठालिया इच्छा की कि मारे कि उसने रक्षा मांगी दीनता से जीव बचाया अमीर ने धीरे से पृथ्वी पर छोड़दिया सुहेलयमनी उसी समय सहस्र वीरों समेत मुसलमान हुआ अमीर ने उसे छाती से लगाया और अपने बराबर बैठालिया और उसके ऊपर कृपा की सब योद्धा और सुहेलयमनी और अमर व मुक़बिल सब अमीर के अधीन हुए और सेवकाई अङ्गीकार की और अमीर को सबों ने भेंट दी और सबों ने उसके सम्मुख नम्रता की अमीर ने मुसकराकर उन को अधिकार के अनुसार ख़िलअतें दीं और नगर में पहुँचकर पहले कावे के दर्शन किये फिर अब्दुलमतलब के निकट आकर सुहेलयमनी का हाल वर्णन किया ख़्वाजे ने कहा यद्यपि मुझे इस बात के सुनने से अतिआनन्द हुआ कि ईश्वर ने मुझे ऐसा दिन तो दिखलाया पर नगर के लोग इस बात से डाह करेंगे और शाहयमन के इस समय चालीस हज़ार सवार और लाखों पियादे हैं और कई बादशाह उसके अधीन हैं ऐसा न हो कि तुम पर सेना साजके चढ़ आवे जिससे सब मक्के के लोग घबराजावें अमीर ने कहा कि आपका आशीर्वाद और ईश्वर की कृपा चाहिये वह इधर न आने पावेगा मैं ख़ुद वहां जाकर उसे पराजित करूंगा अन्तको दो दिवस के पीछे अमीर मुक़बिल और अमर हज़ार सवारों समेत यमन की ओर चला जब सबलोग भेजने के हेतु नगर के बाहर तक आये बिदा के समय किसी ने आशीर्वाद पढ़ा और किसीने यन्त्र बांधा ख़्वाजे ने भी गले लगाकर ईश्वर को सौंपदिया और कुछ उपदेश की बातें कहीं निदान अमीर अपने मनोरथ के मार्ग में पांव रक्खा दूसरी मंज़िल के मार्ग के बीच में सेना से अलग होकर अमीर अमर से बातें करते हुए चले जाते थे इतने काल में एक मनुष्य दश बारह वर्ष की अवस्था का यती कासा भेष बनाये हुए शोकग्रस्त बैठा है अमीर को उसके ऊपर दया आई और उसकी ओर घोड़ा बढ़ाया कि ऐसा जवान फ़क़ीर होजावे अमीर सलाम करके हाल पूछनेलगा उसने कुछ उत्तर न दिया तब अधिक सताया अमीर के आगे उसका कुछही न चला चित्त में विचारा कि बिना भेद कहे यह कभी न मानेगा और दिल का हाल इससे अवश्य कहना होगा ॥

दोहा। देखा शाबी क्यों करै, उस सवार की ओर। जाती रही शरीर ते, धीरजहू की डोर ॥

अमीर के पूछने के आगे कुछ न चला तो एक हाय मारकर यह कहने लगा के ऐ भाई। मुझे वह दुःख है जिसकी संसार में दवा नहीं है ॥

सोरठा। जौन शूल है मोहिं, सुखविहीन देखत जगत। नहिं अराम से होहिं, ईशा जो औषध करै ॥

चौपाई। नेह मध्य कोइ होय न ईशा। श्वास जाय जावे तन खीशा ॥
चिनग मोहनी रूप न व्यापै। खोट दाम यूसुफहि न लापै ॥
नयन ज्योति नहिं रहै शरीरा। कर्म धर्म सब चलै अधीरा ॥
नेह बताशा जग कर लयऊ। नष्ट होय पुनि पुनि मिटिगयऊ ॥
सरवर मध्य बुन्द यक जाई। वेगवन्त तेहि खेह उड़ाई ॥
नभ फटि परै होय अस सङ्गा। गिरि पर परै चूर है अङ्गा ॥
सदा शोक वश याते रहई। मीठा प्रथम करू पुनि सहई ॥
तनकर भस्म विरह कर छारा। जिमि पारा पावक बिच डारा ॥
सुधा खींच पै जिये मरै ना। वारि जरै पुनि तेज हरै ना ॥
ईश हाय जनि नेह विकारा। दारुणदुखित बहुरि जग जारा ॥
रहै शोक वश सदा शरीरा। जो जग लीन्ह नेह कर बीरा ॥
बहुधा खोज मध्य मिटि गयऊ। बहुतन खीश शीश जग लयऊ ॥
अस कठोर जग और न दूजा। करै नाश तब लेवै पूजा ॥
परे फरहाद कठिन यहिमाहीं। भयो नष्ट कछु वरणि न जाहीं ॥
लुटे समूह लाख संसारा। भये बहुत जरिकै पुनि छारा ॥
नेह मेह जापर बरषाहीं। नयनन नदी बहै जगमाहीं ॥
लाजहीन अतिदीन मलीना। शोक मध्य बूड़त है दीना ॥
तनमन सुमन सरिस हो खारा। व्यापै अङ्ग मध्य अस धारा ॥
बूड़ेउ ताहि खोज नहिं मिलेऊ। मोती सीप मध्य जनु पिलेऊ ॥
सरिस पतङ्ग अङ्ग तपि गयऊ। क्षमा शरीर सकल गलि गयऊ ॥
चालढाल जनि दीख करै जग। नष्ट त्यागि पुनि गहै सुमतिमग ॥
नागररूप चोप जनि करई। जेहि बस ज्ञान मान सब टरई ॥
स्वप्न बीच अस चहै न कोई। वाकी चाल ढाल चहुँ होई ॥
विपति परे जो चित अस चहई। लाजहीन सुख नहिं जग लहई ॥
भौंह देखि पुनि जग दुख होई। करै अमान होय अस कोई ॥
नेह न करै मान मम बाता। डूबि जाय वरु नाशै गाता ॥

अमीर ने कहा कि मृत्यु को छोड़ और तो ऐसा नहीं है कि जिसकी औषध हो उसने अमीर की कृपा देखकर बर्णन किया ॥

दोहा। मनमलीन तनक्षीन है, दुख कछु कहा न जाय। समन लालसमदाग है श्रम क्रम भ्रम अकुलाय ॥

पश्चिमदेश में अति सुशोभित मेरे पितामह का स्थान है मैं इस जङ्गल के बीच सङ्कट में पड़ाहूं और सुल्तानबख़्त मेरा नाम है पश्चिम के महाराज का पुत्र यमन के महाराज की पुत्री से स्नेह लगाया है उसके स्नेह ने मुझे इस भेष में पहुँचाया है और मान प्रतिष्ठा का बिचार छुड़ाया है कुटुम्ब और मित्रों से अलग कराया है ॥

दोहा। प्रीतिवाण जाके लगे, थिर न रहै यक ठौर। भ्रमत रहत संसार में, क्षण प्रति औरहि और ॥

और उसकी बाज़ी पूरी मुझसे नहीं होसक्ती है इससे मैं वनमें निकल आया

और फ़क़ीरी अङ्गीकार की है अमीर ने कहा कि यह बात कुछ कठिन नहीं है वह कौनसी बात है कि जो उपाय करने से न होसके परन्तु मनुष्य को उचित है कि कभी किसी वस्तु या काम के करनेमें अधैर्य न हो और सदा चित्त को प्रसन्न रक्खे॥

दोहा। मानुष को यह चाहिये, धीरज नहिं होय। कठिन नहीं कोइ वस्तु है, सहज न होवे सोय॥

ईश्वर की कृपा से धैर्यको ग्रहण कर और शोक सन्देह अधैर्य को परित्यागकर आप यहां से चलें मुझपर दया करें इस भेष को त्याग करके मेरे पास रहिये ईश्वर चाहेगा तो मैं शीघ्र इस कार्य को करूंगा आशारूपी मोती से शीघ्र दामन भरूंगा अमीर ने उस दिन उसी स्थान में डेरा किया और सुलतानवख़्त मग़रबी को मुसलमान किया और सेवकों को आज्ञा दी कि राजपुत्र के फ़क़ीरी वस्त्र उतारकर स्नान करने के पीछे अच्छी भांति से उत्तम २ वस्त्र पहिनाओ और तम्बू व अस्तबल अर्थात् घोड़सार आदि जो उचित जाना उसके निमित्त एकान्त बतलाया और सदैव उसके आदर के हेतु कृपादृष्टि रक्खी शाहज़ादा अमीर की दया से उन्हींके निकट आनन्द से रहनेलगा फिर कई मंज़िल के पीछे मार्ग के बीच में एक युवा अवस्था के मनुष्य को देखा कि शेर की खाल की टोपी और अङ्गा धारण किये बैठा है और एक बाघ उसके निकट बँधा है उसके निकट जाकर उससे पूछा कि ऐ जवान ! तू कौन है ? और नाम व निशान तेरा क्या है ? और इस बाघको तूने क्यों बांधा है ? वह बोला कि मैं ठग लुटेरा हूं इस कार्य में बड़ा प्रवीण हूं मेरा नाम तौक़बिनहैरा है यही मैदान मेरा घर है जो कोई इधर से निकलता है इस सिंहको उस पर छोड़ देता हूं जब यह उसे मारडालता है तब उसके पास की वस्तु सब लेलेता हूं और उसका मांस इसे खिलाता हूं और कपड़ा आदि बेंचकर मैं खाता हूं अमीर ने कहा बे अपराधियों के मारने से हाथ उठा नहीं तो अन्त में अतिकष्ट पाकर नरक में बास करेगा और एक दिन इसका फल पावेगा उसने कहा कि ऐ मनुष्य ! मुझको तेरे रूपपर दया आती है ऐसी बातें क्यों कररहा है अपनी जान नहीं बचाता है और जो तुझे जान प्यारी होवे तो इसी में भलाई है कि अपना घोड़ा और हथियार मुझे दे नहीं तो अच्छा न होगा इसे देकर सीधा अपना मार्ग ले अमीर ने कहा कि यह क्या निर्बुद्धिता की बात कही क्या तेरी मृत्यु तो नहीं आई है ? अपने सिंह को छोड़कर ईश्वर की रचना देखले उसने सुनतेही बाघ की डोरी पट्टी से खोलदी और अमीर की ओर सैन दी बाघ अमीर के सम्मुख हुआ और एक झपट अमीर के ऊपर की अमीर ने भाला से उठाकर उसी मनुष्य पर फेंकदिया उसने अमीर का बल देख अतिआश्चर्य किया और तलवार लेकर अमीर पर धावा किया अमीर ने भाला की डांड़ी से उसे गिरा दिया और घोड़े पर से उतरके उसकी गर्दन पकड़के उठालिया चाहते थे कि उसे गर्दन मिरोड़के देमारें इतने में उसने जीवदान मांगा अमीर ने उसे छोड़दिया उसने ठगी से शपथ किया अमीर ने उसे मुसल्मान किया और अपनी सेना का झण्डाबरदार किया और अपनी कृपादृष्टि से

उसपर अतिदया की चलते २ जब यमन की राजधानी पांच कोस रहगई अमीर ने एक सुन्दर मनोहर स्थान देखकर आज्ञा की कि आज यहां वास करो कुछ दिन आराम करके सेना का प्रबन्ध हो उसकी आज्ञानुसार ऊँटों परसे तम्बू उतरने और प्रतिस्थान पर गड़नेलगे अब यमन के बादशाह का समाचार सुनिये कि जो सुहेल नाम यमनी के सेना के लोग भागकर यमन को गये थे उन्हों ने अमीर की लड़ाई और सुहेलयमनी के मुसल्मान होनेका समाचार बादशाह को सुनाया उसी समय शाहयमन ने नैमायनामी अपने पुत्र और दश सहस्र सवार क़िले में छोड़कर आप तीस सहस्र सवार से मक्के की ओर चला परन्तु वह और मार्ग से गया और अमीर की सेना दूसरे मार्ग होकर आई अमीर ने प्रथम एक पत्र नैमाय के नाम लिखकर भेजा और यह भी सन्देशा उसीके हाथ कहला भेजा कि मैं हुमायताजदार के साथ ब्याह किया चाहता हूं उसकी बाज़ी को मुझे बता मैं वह सब पूरी करूंगा और हुमायताज़दार को अपने साथ लेजाऊंगा नैमाय ने यह समाचार अपनी वहिन को सुनाया उसने कहा कि अच्छा यह कहकर मैदान के बनाने की आज्ञा की और कहा कि प्रातःसमय चौगानबाज़ी में तले करके उसका शिर क़िले के कँगूरे पर चढ़ाऊंगी उसके बल और सिपाहगरी का समाचार बतादूंगी सब मर्दानगी भुलादूंगी इस फिरजाने का स्वाद चखादूंगी यह सुनकर नैमाय ने उत्तर में लिखा कि बहुत अच्छा हमको आपका कहना सब भांति से स्वीकार है कल चौगानबाज़ी होगी प्रत्येक मनुष्य की बाणावरी देखी जायगी जो आप मैदान के चौकसे जीत जावेंगे तो हुमायताजदार को पावेंगे नहीं तो आपका शिर काटकर क़िले के कँगूरे पर चढ़ाया जावेगा दोनों ओर समर होगा अमीर चौगानबाज़ी सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और बड़े २ योधाओं का चित्त बढ़ानेलगा और राग नाच का सामान करानेलगा और आज्ञा दी कि सब सेना में तबला नगारा व राग रङ्ग होकर रात को जागरण करके व्यतीतकरें और ईश्वर के चरणों में ध्यानधरें जब सूर्य पूर्व स्थान में प्रकाशित हुआ और तम नष्ट होकर सूर्यका तेज झलका उस समय नैमाय सेना लेकर चौगान में निकला और इधरभी बलवान् अस्त्र साज कमर बांध सावधान हुए अमीर भी अस्त्र, खड्ग, भाला, धनुष, बाण और वस्त्र आदि धारण करके सियाहक़ैतास पर सवार हुआ और हैरां के बेटे सम्हारतौक़ने भी झण्डा अमीरहमज़ा पर लगाया सुल्तानबख़्त मग़रबी भी दहिनी ओर अमीर के सजधज बनाके आया और बायें ओर सुहेलयमनी भी हथियार बांधके आया और अमर व मुक़बिल घोड़े के आगे धनुषबाण धारणकर तलवार आदि बांध के घोड़े पर चढ़के नचाते कुँदाते चलेजाते सेना के लोगों का चित्त बढ़ाते आगे लहलहाते आनन्द में समाते सुख पाते बल खाते हुए बढ़े जातेथे और मुक़बिल वफ़ादार को उस दिन अमीर ने सेना के आगे किया और वही हजार सवारों का रिसाला जो सुहेलयमनी के साथ मुसल्मान हुआ था मुक़बिल के साथ करादिया अमर ने इस उपायसे सेना का प्रबन्ध किया कि बराबर पंक्ति २

खड़ाकिया जिसे दूसरी ओर के लोग देखकर आश्चर्य करते पांच छः सहस्र सिपाही का अमीर की सेनापर औरों का गुमान हुआ दोनों ओर से जब पंक्ति बनचुकीं लड़ाई करने की जब बारी आई अमीर हुमायताजदार की इच्छा में नैमाय मंज़र शाहके पुत्र के आगे खड़े थे और शेरबबर की भांति पुकारते हुए ईश्वर से वर मांगरहे थे कि एक जवान घूंघुट हरे वस्त्र को धारण कियेहुए शिर से पांव तक घोड़े समेत जड़ाऊ सजेहुए ढाल, तलवार, कटार, बाण, शरासन, भाला आदि अस्त्र कांधे पै सँभाले गेंद हाथ में लिये घोड़े को चलाते हुए चलते २ मैदान में आया और अमीर की ओर देखकर हांक दी कि हुमायताजदार के चाहने वाला कौन है मेरे सामने आवे यही गेंद है यही मैदान है अपनी सीखी हुई विद्या दिखलावे अमीर हांक सुनतेही घोड़े को विजली की भांति चमकाकर मैदान में आये कावा ईड़पर लगाये कभी उड़ाते कभी जमाते उस अच्छे चालाक घोड़े को लड़ाई में लाये और कहा कि बलवान् सावधान हो यही स्थान यही चौगान यही गेंद है उसकी चालाकी देखिये कि गेंद को मैदान में लाकर डालदिया और उस प्रवीण स्त्री ने घोड़े को जांघ से गुदगुदाकर गेंद को चौगान से लिया चाहती थी कि गेंद को लेजावे और अपनी चालाकी और तीव्रता दिखावे कि अमीर ने अमर के हाथ से चौगान लेकर घोड़े को आगे ठहराया और उसे बिल्ली के समान आसन से दबाया और चौगान को सँभालकर गेंदपर मारा और ईश्वरकृत बल की शोभा दिखलाई उस स्त्रीने देखा कि हाथ से बाज़ी जाती है और सब भाँति का गुण मिट्टी में मिलाजाता है तो झट पट घूँघुट उलटकर मुख का प्रकाश विदित किया उसका मुँह हमज़ाने आंखों से देखा और सब चौगान में प्रकाश छागया ॥

चौपाई । घूंघुट उलटदीन जेहिकाला । सूर्योदय जंनु परम विशाला ॥
हमज़ा दृष्टि कीन जब वाही । अति आश्चर्य कीन्ह मनमाहीं ॥

अमीर उसे देख चित्रलिखे से होगये और ईश्वर की रचना देखकर अतिआश्चर्यवान् हुए कि हुमायताज़दार ने फ़ुरसत पाकर घोड़े को भिभकारा बल्कि अपनी जान में गेंद लेजाने में कमी न की थी परन्तु अमीर ने चित्त को सँभालकर ईश्वर का ध्यान धर अपना मन सावधान किया और घोड़े को दौड़ाकर कहा कि हम तेरा छल समझगये यों हीं तू गेंदों को मैदान से लेजाती है और लोगों को जीतकर उनके शिर कँगूरों पर लटकाती है किसी से काम न पड़ा होगा देख मैं मैदान से गेंद को लेचला ईश्वर की कृपासे मैदान मेरे हाथ रहा यह कहकर गेंद को मैदान से लेगये यद्यपि हुमायताजदार ने अपनी चतुरता प्रकट की तब भी अमीर से कब बाज़ी पासक्की थी अमीर गेंद को लेजाकर उसकी ओर देखकर कहनेलगा कि ऐ हुमायताजदार ! अब क्या कहती है कुछ और भी हौसिला बाक़ी है उसने कहा कि एकबार और इसकी परीक्षा किया चाहिये फिर लड़ाई का सामान करके अपना २ गुण दिखाया चाहिये अमीर उसके कहने के अनुसार गेंद को चौगान में फेंकदिया

और तेज़ी करके फिर भी बाज़ी जीतली हुमायताजदार ने कहा कि बाज़ी हाथ से गई सहस्रों में प्रतिष्ठा भङ्ग होगई चाहा कि घोड़े को एँड़ी लगाकर अपने भाई नै-मायतक पहुँचें और मैदान छोड़कर अपनी सेना में जामिलें अमीर ने घोड़े को चलाकर हुमायताजदार का कमरबन्द पकड़के घोड़े से अलग किया और अमर की ओर गेंदसा फेंकदिया अमर ने कमर से हाथ बांधकर अपनी सेना की ओर मुँह किया हुमाय ने अपनी सेना से कहा कि यारो! इसने ग़ज़ब किया अतिशीघ्र मै-दान मारलियो किसीभाँति यह जाने न पावे जिसमें इज़्ज़त रहजावे हुमायताजदार को लिये सबको बेइज़्ज़त किये जाता है उस समय दशसहस्र सवार अस्त्र पहिनेहुए खड़े थे सब के सब एकचित्त होकर अपना २ वार करना शुरू किया अमीर की सेना भी जिधर बढ़ी पंक्ति की पंक्ति साफ़ करदिया नैमाय की सेना काई की भाँति सब फटगई समर का स्थान लाशों से पटगया॥

दोहा। आये थे खल गर्व करि, बोल बोलि अधिकाय। डालदिये हथियार सब, खोलि २ अकुलाय॥

ग़ाज़ी ने सब के हृदय में सँभारके बाण लगाये अच्छी भाँति जिस सरदार के शिर पर तौल के तलवार लगाई वह ज़ीन तक उतर आई जिसके हुमायल का हाथ मारा शिर और गर्दन आधी छाती से अलग हुआ जिसकी कमर पर हाथ पड़ा साफ़ दो टुकड़े होगये उस समय यमन के महाराज के पुत्र नैमाय ने आनकर चाहा कि एक तलवार अमीर के शिरपर लगावें और दुष्टता का बल दिखावें कि अमीर ने उसके वार को ढालपर रोककर और उसके कमरबन्द में हाथ डालके ज़ीन से साफ़ उठालिया और बुद्धा चिड़िया की भाँति अमीरहमज़ा ने शाहज़ादे नैमायको दाब कर अमर के हवाले किया बाक़ी लोग जितने थे बहुधा अचेत होकर भागे और बहुत से तलवार के कौर होकर यमपुर में पहुँचे अमीर फ़ौज की लूट माफ़ कर, बिजय प्राप्त करके अपनी सेना में पहुँचा जीतके बाजे बजाने लगे खुशी और आनन्द होने लगा जब रातको खुशी की सभा सजी गई अमीर ने नैमाय को बुलाया कहा कि कह अब क्या कहताहै चित्त में क्या इच्छा है उसने बिनय की कि अगर कोई मेरे कुटुम्ब में होता तो उसकी क्या मजाल थी कि मेरी सेना का सामना करता और जान न खोता परन्तु ईश्वर जाने कि आप कैसे पराक्रमी मनुष्य हैं सब प्रकार से ईश्वरके वरदानिक हो क्या करूं? मुसल्मान होताहूं अमीर ने समझाकर अपनी छाती से लगाया और अपनी बराबर उसके निमित्त बिछौना बिछवाय और अतिशिष्टाचार किया फिर अमर मङ्गल गाने लगा जब सभा उठगई अमीर ने नैमाय और मलिका हुमायताजदार को कि उसने भी मुसल्मानी दीन अङ्गीकार किया था खिलअत उचित कृपा करके उनको रवाना किया और आप सोने के हेतु तम्बू में गया प्रातः-काल नैमाय ने अपनी सेना को बुलाके मुसल्मान होनेका न्योता किया सबोंने दीनता से शिर झुकादिया और सब मुसल्मान होतेगये जितने सेना में मुखिया थे सबके सब मुसल्मानी मत में आये और उनको लेकर अमीर की मुलाक़ात

करवाई और भेंट दिलाई अमीर ने प्रत्येक को पारितोषिक कृपा किया जब यह समाचार यमन के बादशाह मंज़रशाहको पहुँचे कि चौगानबाज़ीमें हमज़ा गेंदबाज़ी हुमायताजदार से लेगया और उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार बड़ाई की और नैमाय को लड़ाई में पकड़के सेना समेत मुसल्मान किया सुनतेही हृदय में अतिक्रोध आया और मक्केका मनोरथ छोड़के उलटा अपने देश को फिरा औ गढ़ी में पहुँचतेही समर के हेतु दुन्दुभी बजवाई अमीर ने यह समाचार पाकर अपनी सेना में भी नगारा बजाने का हुक्म किया और सेना का प्रबन्ध करने लगे सूर्य की किरण फूटतेही दोनों ओर की सेना समरभूमि में युद्ध करनेलगी बलवान् शेर समान आसपास में घिर आये और बड़े २ भट योद्धा जान देने और लड़ने भिड़ने पर फेंट बांधी मंज़रशाह ने अपना घोड़ा मैदान में निकालकर हांक दी कि अमीर-हमज़ा सेनापति किसका नाम है और कहां है देखूं तो उसकी सूरत कैसी है ? किसभांति का मनुष्य है मेरे सम्मुख आकर अपना बल प्रताप देखावे ॥

दोहा। जो कोई फ़ौलाद में, निज पञ्जा करदेइ। सो दुखिया यहि ग्राह सों, अति कलेश करिलेइ ॥

कभी किसी के साथ नहीं पड़ा किसी युद्ध करनेवाले से सामना नहीं हुआ अब अपनी जान देना चाहता है यह सुनतेही उसके सामने आया अमीर ने कहा कि यह क्या बक २ कररहाहै क्यों काल शिरपर चढ़ाहै ईश्वर चाहेगा तो एक वार में तेरा काम हुआ जाता है पलमात्र में तुझे मुसल्मान करताहूं प्रथम तू अपना गुण दिखा और चित्तकी हौस चित्तमें मत रख उसने भाला उठाया अमीरने घोड़े को दबाया औ उसके समीप गया और तेज़ी करके भाला उसका छीनलिया और डंडी तोड़कर पीछे फेंकदिया उसने खड्ग ईंची अमीर उसका वार बचागया और कमर में हाथ डालकर घोड़े पर से गिराकर तलवार छीनली और चाहते थे कि पृथ्वी पर पटकें कि उसने रक्षा मांगी अमीर ने धीरे से उसे ज़मीन पर छोड़दिया वहभी उसी समय मुसल्मान हुआ फिर उसको अपने तम्बू में लाकर अतिशिष्टाचार किया मंज़रशाह को और उसके स्नेहियों को जो सेनापति थे बड़े २ पारितोषिक दिये और उनके दर्जा बढ़ाये मंज़रशाह ने एकमासतक अमीर के शिष्टाचार से न्योता किया और सब प्रकार से ताबेदारी और अधीनता की और उसी दिन सामान ब्याह का अपने अधिकार के अनुसार करनेलगा और अमीर की आज्ञानुसार सुल्तानबख़्त मग़रबी के साथ हुमायताजदार का ब्याह करने को उद्यत हुआ सुल्तानबख़्त ने बिनय की कि हुमायताजदार मेरी स्त्री होचुकी किन्तु ईश्वर चाहेगा तो गांठिबन्धन उस दिन करूंगा जिस दिन आपका ब्याह होगा तबतक हुमायताजदार घर में रहे बाप के यहां कुछ दिन सैर करे अमीर ने रीति के अनुसार उसका मनोरथ पूर्ण किया और मङ्गलाचार के पीछे अमीर ने मंज़रशाह से कहा कि अब मैं यहां से कूच करूंगा और अपने घर की ओर जाऊंगा कि मेरी माता सशोक व सन्देहमय होगी मंज़रशाह ने बिनय की कि मैं भी आपके साथ चलताहूं काबे के दर्श

करूंगा और वहां ख्वाजे साहब के भी दर्श पर्श चाहताहूं यह कह देश का प्रबन्ध अपने मन्त्री पर छोड़ा तीस सहस्र सवार नैमायसमेत लेकर अमीर के साथ चला॥

हुश्शाम अलकशख़ैबरी के पुत्र का बड़ा होना और मदायन देश में कर लेना॥

जब हुश्शाम बारहबर्ष का हुआ और होश सम्हाला और अतितेज व प्रताप से घर से बाहर पैर निकाला बाज़ार में हल्लागुल सुनकर पूछा कि यह हल्ला कैसा होता है? लोगों ने कहा कि तहसीलदार नौशेरवां की ओर से कर तहसील करते हैं जो मनुष्य शीघ्र कर देने में ढील करताहै उसको अतिकष्ट देते हैं हुश्शाम को बुरा मालूम हुआ तो कुछ लोगों को पकड़ाके नाक व कान काटकर शहर से बाहर किया और हुक्म दिया कि कोई एक कौड़ी किसीको न देवे जो कर नियत हुआ है वह हमारी सर्कार में भेजाजावे और सेना के इकट्ठा करने में अतिपरिश्रम करने लगा यहांतक कि थोड़ेही काल में एक बड़ीभारी सेना जमाकरली और मदायन की ओर कूच किया जब इतिहासलेखकों ने यह समाचार लिखा और बादशाह के कान तक पहुँचा कि हुश्शाम अति बल व प्रताप के साथ गर्व करके और बड़ी सेना साथ लेकर मदायन का मार्ग लियाहै हुश्शाम अलकश का पुत्र ख़ैबरी बलवान् हुआ बादशाह ने बुज़ुरुच्चमेहर से सलाह चाही बुज़ुरुच्चमेहर ने सलाह दी जो हुज़ूर आप ही उसके साथ सामना करेंगे तो मेरे निकट यह बात अनुचित है क्योंकि जो इसपर बिजयभी हुई तो कुछ नाम न होगा और जो कदापि औरही सूरत हुई तो अच्छा न होगा बैरियों को बात करने का स्थान होजायगा कि सप्तद्वीप के बादशाह को एक छोटे मनुष्यने जीतलिया फिर प्रत्येक को आपसे सामना करनेका हौसिला होजायगा इससे मेरे निकट यही शुभ है कि उसके आनेके पहलेही हुज़ूर शिकार खेलनेको जावें और मदायन में किसी सेनापति को मुक़र्रर करदें जिस समय वह दुष्ट आवे उसको पराजय करे जिससे छोटे बड़े का हौसिला टूट जावे और अधीनता के सिवाय शिर न उठावे बादशाह को बुज़ुरुच्चमेहर की यह सलाह पसन्द हुई और उसके शुभ बिचार पर अतिप्रशंसा की आप आखेट की ओर गया और शिकार खेलना अङ्गीकार किया और अन्तरफ़ीलगोश जो मल्ल प्रसिद्ध था पचास हज़ार सवार से मदायन की रक्षा और हुश्शाम को दण्ड देने के हेतु मुक़र्रर किया आठ दश दिवस व्यतीत हुए थे कि हुश्शामख़ैबरी ने चालीस सहस्र सवार से आकर गढ़ी को घेरलिया और प्रजा को सतानेलगा अन्तरफ़ीलगोश ने भी गोली तीर तोप आदि से किसीको खांवातक न आने दिया एक दिवस अन्तरफ़ीलगोश ने यह चित्त में बिचारा कि हुश्शाम बहुत दिवस से नगर घेरे पड़ा है और मैं गढ़ी में बन्दहूं हुश्शाम ऐसा कहां का बीर है कि जिससे मैं दबूं नगर के बाहर निकल कर सामना करूं और पलमात्र में मारके पराजित करूं और संसार में नेक नाम और बीर कहलाऊंगा और बादशाह से जागीर और उहदा पाऊंगा॥

दोहा। रुस्तम नहिं संसार में, रहा न पुनि बहराम। एक रहेउ आकाशतर, बीरनको जग नाम॥

यह समझके पांच सहस्र मनुष्य सवार लेकर नगर से बाहर निकला हुश्शाम उसे देखकर ठट्ठा मारकर हँसा और बोला कि इसके शिरपर मृत्यु सवार है कि जो यह मेरे सम्मुख आया है गैंड़े को उसके सामने लाकर कहनेलगा कि क्या मनोरथ है क्यों अपनी और अपनी सेना का जी खोने के हेतु आया है वह बोला कि अरे खल! सदैव का पीढ़ी दरपीढ़ी का तू सेवक होकर तिसपर चढ़ आया है इस संसार असार में थोड़ीसी उमर पर दुष्टता अङ्गीकार की है तू यह नहीं जानता है कि सप्तद्वीप के बादशाह का एक छोटा टहलुआ तुझको दण्ड देसक्ता है और यह सब सामान क्षणमात्र में धूर में मिला देसक्ता है हुश्शाम ने कहा क्या बिक्षिप्त हुआ है? इतना नहीं जानता है कि बादशाही के कामों में कौन किसका मालिक है? और कौन किसके अधीन होता है और प्रजा कहलाता है? जो मनुष्य तलवार मारे उसीके नाम से सिक्का चलता है मैं तलवार के बल से तेरे बादशाह से कर लूंगा और सब देश और कोषको बहुत शीघ्र अपने बशमें करलूंगा हुश्शाम का यह कहना था कि अन्तर ने तौलकर एक भाला उसकी छातीपर मारा भाले ने अपनी नोक पीठ से बाहर की हुश्शाम ने यद्यपि ऐसा घाव खाया परन्तु अन्तर को तलवार से दो टुकड़े किये और उसकी सेनापर जागिरा सेना विना सेनापति की थी नगर की ओर भागी हुश्शाम सेनासमेत मदायन नगर में पहुँचा और सब नगर को नष्ट और बरबाद करदिया और सत्तर सहस्र मनुष्य मारे और नगर के नाकों पर अपने सिपाही नियत किये और बादशाहत का साज ताज और तख़्त समेत लेकर अपने डेरेपर लौट आया और रात आनन्द समेत ब्यतीत की और सुबह को सरदार समेत ख़ैबर की ओर चला और कई दिन के पीछे एक दो राहें मिलीं कि जिसमें एक मार्ग काबे को जाता था और दूसरी ख़ैबर जाने की थी साथियों ने कहा यह लड़ाई दुनिया के नाम के लिये आप लड़ें और बिजय प्राप्त की एक लड़ाई पुण्य के हेतु भी चल कर ईश्वर के घर में कीजिये और मुसलमानों के धर्मस्थान को मिटाइये हुश्शाम पर जो दुष्टता सवार हुई यह सलाह उनकी पसन्द आई और काबे की ओर चला यह बृत्तान्त मक्का में बिदित हुआ कि हुश्शाम ख़ैबरी मदायन को जीत करके काबे के ख़राब करने के हेतु आता है और बहुतसी सेना साथ लिये है जिसने सुना वह बेत के समान कांपगया और डरके मारे अचेत होगया उसीदिन हमज़ा भी विजय प्राप्त करके सेना समेत मक्के में पहुँचा और काबे का दर्शन करके अपने बाप को दण्डवत् की और चरणों पर गिरपड़ा ख़्वाजे अब्दुलमतलब ने अमीर का शिर अपने चरणों परसे उठाया और अतिस्नेह से गले लगाया और साथियों का भी प्रतिष्ठा के अनुसार आदर किया शरबत के घड़े मँगवाये और ईश्वर का धन्यबाद किया और धाड़ मारकर रोनेलगा अमीर ने विनय की कि आज का दिन ख़ुशी का है ऐसे समयमें दुःख व शोक का क्या कारणहै? मैं अच्छी भांति से युद्ध जीत करके आयाहूं लोगों को जिसका भरोसा भी न था ईश्वर ने मुझपर

कृपा की ओर आप इस आनन्द को त्याग करके रंज करते हैं ख्वाजे ने कहा कि ऐ पुत्र ! मेरे रोने का यह कारण है कि थोड़े कालमें बिपत्ति का सामना होनेवालाहै कि अलकश का पुत्र हुश्शाम खैबरी मदायन को नष्ट करके काबे के गिराने को बड़ी भारी सेना लिये आता है नगर के अच्छे प्रतिष्ठित मनुष्य उसके कारण अति घबराते हैं कारण उसका यह है कि वह बड़ा दुष्ट है इस निमित्त मैं चाहताहूं कि तुम को किसी बहाने से हब्श की ओर भेजदूं अमीरने कहा कि ऐ कृपानिधान ! मरनेसे पुकार क्याहै ? अवश्य है कि ईश्वर बड़ा बलवान् है उसकी कृपा और आपके आशीर्वाद से जो मेरी जीति होजावे क्या बुद्धि से दूर है मैं उसे यहांतक कब आने देताहूं आगे चलकर उसकी जान लेता हूं यह कहकर उसी समय बाप से विदा होकर काबे के दर्शन को गया और विजय की इच्छा से मन्त्र पढ़े और ईश्वर से सहायता चाही और सेना जोड़के हुश्शाम का मार्ग रोकने के हेतु चला और दुगुनी मंज़िलें चले जाते थे एक मंज़िल पर यह ठीक समाचार पाया हरकारे ने आकर वृत्तान्त बतलाया कि यहां से दो मंज़िल की दूरी पर उस दुष्ट की सेना पड़ी है कोसों तक भीड़ भाड़ लिये पड़ा है यह सुनते ही हमज़ा उस स्थान पर उतरा और सेना का प्रबन्ध करने लगा चारघड़ी रात व्यतीत हुई होगी कि कई हज़ार सवार अपनी सेना से चुने और उस समय दौड़ मारने का मनोरथ करके उस ओर को कूच करदिया और अतिशीघ्र हुश्शाम की सेना पर अमीरहमज़ा की सेना बज्र की भांति जा गिरी हुश्शाम की सेना में हलचल पड़ी अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर हांक दी कि ऐ सोते हुए भाग्यवान् लोगो ! जागो कि ईश्वर के प्रलय ने तुम्हें घेर लिया बड़े २ दुष्टों का जी छुड़ादिया यमदूत तुम सब को लेने आये हुए हैं और प्रात होते २ दशसहस्र मनुष्य हुश्शाम की सेना के हुश्शाम अपने तम्बू में पड़ा सोता था मार २ यह शब्द उसके कान में पड़ा तो शीघ्र जाग उठा और अपने लोगों से पूछने लगा कि यह हल्ला कैसा है ? लोगों ने कहा कि कोई हमज़ानामी अरब का है उसने रात को दौड़ मारकर आलमगीर के समान मार पीटकर सेना को नष्ट करदिया है जो ऐसेही दो चार घड़ी तक रहेगा तो सेना में मनुष्य का चिह्न भी न रहेगा हुश्शाम झटपट गैंड़े पर चढ़कर सेना में आया वहां सब को अचेत और दुःखित और बहुतेरों को मारे हुए बहुतेरों को घायल पाया कि इतने में सूर्य उदय हुआ उस समय तीस सहस्र सवार हुश्शाम के साथ और दश सहस्र सवार अमीर के साथ थे और बनियें आदि अधिक थे हुश्शाम मैदान में गैंड़े को लाकर हमज़ा से बोला कि ऐ अरबी जवान ! यह घोड़ा और हथियार किससे तू मांग लाया है ? इतनी बिसातपर मुझसे सामना करने को आया है तुझे अपने जी का डर न आया नाहक़ मेरी सेना को सताया तेरी जवानी पर मुझे दया आती है इससे तेरे मारेजाने की आज्ञा नहीं दीजाती है यह हथियार और घोड़ा तू मुझे भेंट की भांति दे और हाथ जोड़कर अपना अपराध क्षमा

करावे तो अलबत्ता तेरा जी न मारूंगा तूने जो मेरी सेना पर रातको डाका उसके बदलेसे तुझे छोड़दूंगा और जो मेरा कहा न मानेगा तो तुझे अपनी तलवार से बेमौत मारूंगा अमीर यह मूर्खता की बातें सुनकर क्रोध को न थाम सका और अत्यन्त क्रोधवान् होकर कहनेलगा कि अरे नीच! तू नहीं जानता कि मैं कौनहूं? और किस घरानेका हूं? ख्वाजे अब्दुल्मतलब का पुत्र और हाशम का पोताहूं और हमारी तलवार का समाचार क्या तेरे कानतक नहीं पहुँचा? और मेरे बाहोंका बल तेरे कान में नहीं आया? और अपने मुँहको नहीं रोकता अब अरे मूर्ख! नरकवासी सावधान हो क्या तेरी मृत्यु आई है किसलिये जीनेसे तेरा चित्त घबराया है हुश्शाम इस बात को सुनकर गर्वित हुआ और भाला जो उसके हाथ में था अमीर की छाती पर मारा अमीर ने उसका भाला अपने भालेपर रोका और दोनों ओर से भाले चलनेलगे जब सौ २ वार भाले चले और दोनों ओरसे किसीके घाव न लगा तब हुश्शाम लज्जित होकर भाला को हाथसे फेंकदिया और तलवार मियान से खींचली चाहता था कि अमीर के बराबर आकर तलवार मारे कि अमीर ने चालाकी करके तलवार उसके हाथसे छीनली और अपने साथियों के आगे फेंकदी और कहा कि तू अपना वार करचुका अब मेरी वारी आई अपने को सम्हाल और अपने घोड़े और हथियारों को देख भाल पीछे यह न कहना कि सावधान करके न मारा मेरी हौस न पूरी होनेपाई यद्यपि उसने ढाल को मुँहपर रक्खा परन्तु अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर जो तलवार उसके शिर में मारी तो ढाल के दो टुकड़े करके फ़ौलाद का झलरिया टोप काटकर शिरके दो टुकड़े करतेहुए छाती के बीचोबीच होकर चूतड़ों के नीचे उतरके आधा २ काटगई बैरी के मित्रों के हवास ऐसी तलवार देखकर जातेरहे कि जो कभी न देखी थीं॥

चौपाई। काट बखान करै केहि भांती। शिर पर धरै जाय आराती॥
आंख बैठका पर नहिं रहई। ढाल काटि नीचे तक बहई॥
यह वह देखि करै द्वै फारा। शिरते पांव लेइ महि धारा॥
असि तलवार और नहिं देखी। कीन्ह विचार हृदय निज लेखी॥

छन्द। है खड्ग दामिनि सरिस सुन्दर शोभ वर्णत नहिं बनै।
मानुष्य करते अस चले जस ईश निज करते हनै॥
हुश्शाम को करि नर्कवासी मीर मृग नृप सोहई।
सेनमधि महँ अस धस्यो जस अजय चक्र २ जोहई॥

अमर ने एक पल में सबको मारकर लाशों से समरस्थान भरदिया बहुत भाग खड़ेहुए और बहुत मुसलमान होगये अमीर ने नौशेरवां का तख़्त और छत्र सब लूट क्षमा की ओर इशारा को बन्दि से छोड़दिया और प्रत्येक को सवारी और खिलअत और मार्ग का ख़र्च देकर कहा कि तुमलोग घरको जाओ उसके पीछे विनयपत्र नौशेरवां को लिखा कि मैंने ईश्वर की कृपा से इस नीचको मारा हज़ारों मनुष्य जो उसकी बन्दिमें आपके थे उनको छोड़ादिया और उस दुष्ट का

मुक़बिल के हाथ कृपानिधान के निकट भेजताहूं और कैखुसरो का ताज और तख्त जो आज्ञा हो तो मैं लाकर हाज़िरहूं यह अर्ज़ी और हुश्शाम की ख़बर देकर रवाना किया और आप विजय प्राप्त करके मक्केकी ओर प्रसन्न होकर कूच किया कहते हैं अमीर इस डाका मारने के सिवाय और कभी रात को डाका नहीं मारा॥

नौशेरवां की सभा में मुक़बिल वफ़ादार के जाने का इतिहास॥

बुलबुलरूपी क़लम नया इतिहास सुनाता है स्वच्छ काग़ज़ के तख्ता पर सुन्दर बाग़ बनाता है कि चालीस दिन के पीछे नौशेरवां आखेट स्थान से मदायन में आया और नगर को शोक और उजाड़ और तख्त ताज का चिह्न न पाया बुज़ुरुच्चमेहर से नेत्रों में जल भरके कहनेलगा कि गर्दिश ने यह बुरा दिवस दिखाया यहांतक स्वप्न की विचार ठीक दिखलाई दी जो तुमने बताई थी किन्तु शेष यह दुःख हमारा कब दूर होवेगा और कब आनन्द मिलेगा बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि ईश्वर चाहता है तो आज से कल तक यह भी विदित हुआ जाता है आपको अति-आनन्द प्राप्त होगा सासानियों ने जो मारनेसे बचे थे बख़्तक से कहा कि यह जो कुछ किया बुज़ुरुच्चमेहर ने किया जो बादशाह को मदायन से आखेट को न लेजाता तो हुश्शाम ऐसा बुरा दिन न दिखाता मुफ़्त में नातेदार और कुटुम्ब के लोग हमारे वे मौत मारे गये और बाक़ी रहे ते बन्दी में होगये सच है कि बुज़ुरु-च्चमेहर ने अपने मत के डाहके कारण बरबाद किया बादशाह की सेवा में जाकर और विनय करके हमारा न्याय कराओ और हमारी ओरसे इतना करवाइये यह हल्ला होरहा था कि सवार नमदा पहिनेहुए चालाक गर्द गुबार में भराहुआ बाद-शाहके निकट हाज़िर हुआ और समाचार आनन्दमय बादशाह को सुनाया कि हुश्शाम खैबरी ने जो मदायन को नष्ट करके सत्तरसहस्र स्त्री पुरुषों को बँधुआ करके लेगया था यहांसे खैबर की ओर जाता था और अपने आगे गर्व के कारण किसी को न गांठता था हमज़ा ने आपके प्रताप से उसको मारडालाहै और उसका शिर अपने एक मित्र के हाथ कि जिसका नाम मुक़बिल वफ़ादार है हुज़ूरमें भेजा है और उसकी सेना को मारके वहां की प्रजा को उसकी बन्दि से छोड़ाकर सबको खिलअतें दी हैं यह शुभ वृत्तान्त सुनकर बादशाह उछल पड़ा और बुज़ुरुच्चमेहर को दौड़कर छाती से लगा लिया और कहा कि सब अधिकारी शीघ्र मुक़बिल वफ़ा-दार की अगवानी को जावें और प्रतिष्ठा समेत उस को लेआवें वैसेही बादशाह की आज्ञानुसार कियागया जो लोग बड़े २ अधिकार पर थे अपनी २ सामग्री दुरुस्त करके मुक़बिल की अगवानी के हेतु नगर से बाहर आये और प्रतिष्ठा समेत उसको अपने साथ लाये जिस समय मुक़बिल आया बादशाह के तख्त को चूम लिया और अर्ज़ी अमीर की दी बादशाह इसभांति अमीर की प्रतिष्ठा की कि उनके विनयपत्र को मुक़बिल के हाथसे लेलिया पहले तो आपने पढ़ा फिर बुज़ुरुच्च-मेहर को देकर कहा कि इसको बड़ी आवाज से पढ़ो और इसके मतलब से सब

को विदित करो और हमारी बादशाहत में इसका विदितपत्र लिख कर सब जगह भेजवादो जितने लोग थे उसको सुनकर अतिप्रसन्न हुए और बादशाह को इस बिजय का मङ्गलाचार देनेलगे बादशाह ने उस समय मुक़बिल को पारितोषिक देकर प्रसन्न किया और रुपये, मोहरें, जवाहिर आदि से उसको अतिप्रसन्न किया और आज्ञा की कि जबतक मुक़बिल वफ़ादार मदायन में रहे प्रतिदिन दरबार में बेधड़क आयाकरे लिखनेवाला लिखताहै कि जिसदिन मुक़बिल वफ़ादार ने बादशाह से भेंट की थी दैवयोग से उस दिन एक पेढुकी बादशाह के बाग़ में सरोकी डाली पर बैठी देखपड़ी और उसकी गर्दन में एक सांप परिधि समान गले में लपटाहुआ दृष्टि पड़ा धावन ने आकर समाचार बादशाह के सामने विदित किया बादशाह ने कहा कि जानपड़ा कि अपना न्याय कराने के हेतु आई है कोई धनुर्धारी ऐसा है कि जो इस पेढुकी को बचाकर सांप के फनमें बाणमारे किन्तु इसको किंचिन्मात्रतक कष्ट न मिले यह बात सुनकर सब चुपके होरहे परन्तु मुक़बिल अपने स्थान से उठ खड़ाहुआ और बादशाह के तख़्तका पाया चूमकर आज्ञा मांगनेलगा आज्ञा पाने के पीछे उधर को मुँह किया और भाला की नोक पर एक दर्पण खड़ाकरके एक मनुष्य के हाथ में दिया कि उसके मुँहके सामने रक्खे कुछ भी डर न करे और हाथ हलने न पावे सांप को जो अपनी सूरत दृष्टि पड़ी फनको उठाकर उस ओर देखनेलगा और जीभ निकालकर अपने प्रतिबिम्ब की ओर निगाह करनेलगा मुक़बिल ने फन देखकर तीर को फोंकमें लगाया और गोशा कमान का ऐंचकर उस सांप के फन पर मारा कि उस सांप के फन में लगा लगतेही उसने अपना प्राण त्यागदिया पेढुकी के परतक में भी कुछ दुःख न पहुँचा और तीर सांप के घुसगया वह सांप तो पृथ्वी पर गिरपड़ा मुक़बिल ने अपना तीर निकाल लिया और पेढुकी पर बजाती हुई अपने घोसले की ओर उड़गई आसक्त होकर दीखनेवाले वाह २ का शब्द सराहने के हेतु कहनेलगे बादशाह ने मुक़बिल के हाथ चूमलिये और पारितोषिक देकर अच्छीभांति से प्रसन्न किया और हमज़ा के विनयपत्र का उत्तर लिखा और पारितोषिक समेत बख़्तक को दिया कि लिफ़ाफ़ा पर हमारी मोहर करके बहमनसगां और बहमनख़रां को सौंपदो कि शीघ्र अमीर के निकट जावें और यह उत्तर और पारितोषिक अमीर के निकट यत्न समेत से पहुँचावें कहते हैं कि बादशाह ने अमीर-हमज़ा को अपने परवाने में लिखा था कि ऐ सुभट, समयके बैरियों के नष्ट करने वाले! संसार से तूने अपनी सुशीलता से अपना धर्म अच्छा निर्वाह किया और मेरे बैरियोंसे जो अति गर्बित थे उनको पराजित करके नाम व निशान मिटा दिया जो आज रुस्तम जीता होता तो अधीनता का घेरा तेरे ओर से अपने गर्दन और कान में लटकाता और सोहराब इस फन्द पर तेरे बलके आगे शिर न उठाता बहमन-सगां बहमनख़रां को पारितोषिक समेत भेजा है तख़्त और छत्र और और असबाब बादशाही जो तूने उस नीच से फेर लिया है अतिशीघ्र रवाना करके यहीं

हाज़िर हो जिससे मेरी आंखें तुमको देखकर चैतन्य हों वरन्तक दुष्ट ने उस परवाने को तो नहीं भेजा दूसरा परवाना इस मज़मून का लिखा कि हे अरबज़ादे ! इससे पहले मेरा मनोरथ था कि सब अरबवासियों को मारके हाशम के पुत्रों में से किसी को न रक्खूं परन्तु तुमसे यह काम हमारी इच्छाके अनुसार हुआ इस कारण हमने तेरा अपराध क्षमा किया और पारितोषिक बहमनसर्गा व बहमनखर्रा के हाथ भेजते हैं और वह परवाना बादशाह का नहीं भेजा लिखा है कि एक मल्ल आदी नामी सदैव से उसी गढ़ी में रहा करता था हाशम अलक़श के पुत्र खैबरी का समाचार सुनकर घर को अपने खाली किया और अठारह सहस्र सवार से पहाड़ में छिप कर बैठा कि जिस समय हुरशाम इधर आनिकले मैं उसको पराजित करूं कि एक धावन ने उसको समाचार दिया कि हुरशाम खैबरी को हमज़ा ने मारा और उसका माल व असबाब लिये हुए मक्के का मनोरथ किया है कि जो उसके रहने का स्थान है आता है यह सुनकर वह बोला कि अच्छा हम भी अपना हिस्सा उससे लेंगे जिस समय गढ़ी रवाज़िल के निकट हमज़ा आन पहुँचा आदी ने अपनी सेना में से एक सरदार को दूत के हेतु चुनके यह सँदेशा देकर हमज़ा के निकट भेजा कि हुरशाम मेरा शिकार था मैं बहुत दिन से उसकी घात में था उसको आपने शिकार किया मेरी इच्छा मनही में रही अब आप से यह विनय करता हूं जो कुछ उसके माल व असबाब में से आपके हाथ आया है आधा मुझ को देदीजिये और आधा आप लेकर शुभ से अपने घर की राह लीजिये नहीं तो आपका भी माल उसके साथ जायगा सिवाय डाह और अफ़सोस के और कुछ न हाथ आवेगा अमीर यह सँदेशा सुनकर बहुत हँसा और उसके ऊपर बहुत कृपा करके कहनेलगा कि हमारी ओर से दुआ देकर कहना कि जो सलाह उसे पसन्द हो तो शराबका प्याला हाज़िर है और जो युद्ध का सामान चाहता है तो यही गेंद यही मैदान है सब प्रकार से मुझे स्वीकार है जो उसकी इच्छा में हो उसको मैं भी करूं वह दूत हमज़ा के चालचलनपर सब प्रकार से प्रसन्न हुआ और आदी से जाकर प्रश्न का उत्तर कहा और निवेदन किया कि हमने अपनी सारी अवस्था भरमें ऐसा विवेकी और बुद्धिमान् और सुशील सरदार कोई मनुष्य नहीं देखा मालूम हुआ कि यह बड़ा प्रतापी है आश्चर्य नहीं है कि सप्तद्वीपमें अपनी दुन्दुभी बजावे और कुछ दिवस के पीछे सकल देशों की बादशाहत इसके अधीन होजावे यह उत्तर सुनकर आदी लड़ने पर उद्यत हुआ आदी दूसरे दिवस अठारह सहस्र सवार का समूह लेकर दुन्दुभी बजाता हुआ मैदान में आया अमीर भी अपनी सेना लेकर सामने आये और युद्ध करने पर उद्यत हुए आदी इस सजधज से आया कि सेनावालों का चित्त घबराया देखा तो इकीस फुटका लम्बा चौड़ा दोनों ओर बराबर है और अति विकटरूप बनाये हुए है और शिर पर भलरिया टोप और सात पगड़ियां बांधकर तिसपर शमला बांधे है और उसमें मूंड़ के बाल भी कुछ २

दीख पड़ते हैं और इक्कीस गज़ की उसके पेट की दौर है मनुष्य क्या देव है उस पर कमरबन्द फ़ौलादी बांधे जिरा बख़्तर और दस्तानेराकी मोजे टिकौरी पहिने ढाल पीठपर तलवार कटार छूरी तरकश नीचे कमर के कमान पांच टांक की कांधे पर डाले लम्बा भाला हाथ में लिये हुए हैं अमर देखकर अमीर से कहने लगा आपको अपने बल का बहुत घमण्ड था आज मालूम होजावेगा ईश्वर भला करें दांतों पसीना आवेगा अमीर ने कहा कि मुझे बल देनेवाला उससे अधिक बली है वैरी जो बली है तो हमारा सहायक ईश्वर दयानिधान है देख तो क्या होता है? अमीर ने परमेश्वर का स्मरण करके उसके शरीर से और देह से कुछ भी अन्देशा न किया और घोड़े को उसकी ओर चलाकर कनोटी से कनोटी को मिला दिया बराबर होता था कि एक औझड़ ढाल की ऐसी उसके घोड़े के मस्तक पर मारी कि कई क़दम उसका घोड़ा पीछे हटगया और अचेत होकर शिर झाड़ने लगा आदी ने जब यह बल हमज़ा का देखा कि बैरी अधिक बलवान् है और जवानी से मस्त है बोला कि ऐ जवान! तुझमें भी जानपड़ा कि इस भांति का बल है और बड़ा साहसी है अब अपना नाम बता कि तुझसा बीर मेरे हाथ से न माराजावे अमीर ने कहा कि पहलवानों का नाम खड्ग और धनुषादि से बिदित होता है उसी पर खुदा रहताहै तू सुनले कि मेरा नाम अबुलूअला है तेरे सामने तेरा बल देखने के हेतु आया हूं ला क्या अस्त्र रखता है देखूं तेरा वार कैसा होता है? आदी गदा लेकर अमीर के शिर पर आया और बोला कि ऐ अबुलूअला! इसकी चोट से तू न मरेगा यह कह कर अमीर के ऊपर अपनी इच्छा के अनुसार वह गदा मारी और अपना बल हौसिला दिखाया अमीर ने उसको बचा करके कहा कि हां अब दूसरा भी वार करले जिसमें तेरी हौस न रहे अब की चोट से बचूंगा तौ मैं भी एक वार करूंगा जो जीता रहा तो उसका स्वाद कभी न भूलेगा सदैव उस वार को याद करेगा आदी यह सुनकर क्रोधवान् हुआ और गदा को शिकारबन्द में लटकाया तलवार मियान से लेकर चाहा कि अमीर के शिर पर वार करके मारे अमीर ने उसका क़ब्ज़ा पकड़के दूसरा हाथ उसके कमरबन्द पर डालदिया वह भी अमीर से बल करनेलगा अमर ने निकट आकर कहा कि ऐ मल्लो! तुम तो आपस में बैलों की सी लड़ाई कररहे हो घोड़ा बिचारे बेजीभ के हैं इनकी कमर क्यों तोड़ते हो जो बल देखना मंजूर है तो पृथ्वी पर उतरके लड़ो तब हमज़ा और आदी दोनों ने अमर की राय पसन्द की और घोड़ों पर की लड़ाई बन्द की घोड़ों से उतरे सामने मुक़ाबिला करने को खड़े हुए आदी ने कहा कि हथियार में तो हम तुम दोनों समान रहे हैं भाला व गदायुद्ध में भी हम तुम समान रहे अब पिछली लड़ाई में दोनों अपना २ बल देखावें जो हारे वह उसकी अधीनता अङ्गीकार करे अमीर ने कहा कि मैं सब प्रकार से हाजिर हूं तेरी परीक्षा लेना चाहता हूं फिर आसन मारकर बैठगये आदी ने इतना बल किया कि रोम २ में पसीना

वह निकला किन्तु हमज़ा हल न सका और पृथ्वी न छोड़ी आदी बोला कि हमज़ा मुझे जितना बल था करचुका अपने बल की सीमा से गुज़र चुका अब तुमभी अपना बल दिखाओ उसका आसन मारके बैठना था कि हमज़ा ने पहलेही बल में उसका लङ्गर उठा लिया और कई बार चक्कर देकर पूछा कि अब तेरा क्या मनोरथ है ? आदी ने कहा अधीनता और सेवकाई और मन से आपके ईश्वरकृत बल पर न्योछावर हूं अमीर ने धीरे से उसको पृथ्वी पर रखदिया आदी नम्र हो ईश्वर का स्मरण करके उसके दीन में आया अमीर का सेना समेत गढ़ी तङ्ग ख्वाजिल में लेजाकर अति आनन्द से शिष्टाचार बादशाहों के समान किया और अपने भाइयों को भी इनसे मिलाया अमीर ने प्रत्येक को गले से लगाया और वीरता का पारितोषिक कृपा किया जब अमीर ने उस आनन्द सभा से छुट्टी पाई तो कहा कि वह ईश्वर निगहबान है अब मैं अपने घर को जाता हूं अपने पिता के चरण के दर्शन करूंगा आदी ने कहा कि ऐ हमज़ा ! ऐसा तो नहीं कि जो मुझे खाना न देसकेगा मुझे किसहेतु साथ नहीं लेते हो जो हज़ार मन अनाज मेरे निमित्त दोगे तो मैं उसमें अपना जी रखलूंगा दोपहर नहीं तो उसे एकही पहर भोजन करूंगा अमर बोला कि क्या खूब मनुष्य सबसे कम आदी खाता है भला ऐसी कम भूख में कौन खाना देने में मुँह मोड़ेगा इस बिचारे कम खुराक का कौन चित्त तोड़ेगा ? अमीर ने हँसकर आदी से कहा कि यह क्या बातहै ? परमेश्वर रक्षक है मुझको और तुम को दोनों को वही खानेको देता है और सब चराचर की वही सुधि लेताहै जो तुम चलो तो मेरे शिर आंखों पर रहो फिर आदी अठारह हज़ार सवार लेकर अमीर के साथ २ आया और अमीर प्रसन्न होकर मक्केकी ओर चले ॥

अमीर को मक्का की ओर जाना और नौशेरवां का परवाना पहुंचना ॥

लिखनेवाले इस मधुर बृत्तान्त को यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर मक्के में पहुँचा प्रथम काबे के दर्शन करके नमाज़ दोगाना पढ़ी और आदी से ठगी की क़सम करवाई फिर अपने पिता के चरण चूमने को चला ख्वाजे अब्दुल्मतलब ने जब अमीर के आनेका समाचार सुना तो नगरबासियों से अमीर के लौटने का मङ्गलाचार करवाया और नगर के भले २ मनुष्य लेकर अमीर की अगवानी को चला और कुटुम्ब समेत सबलोग अमीर के लेनेको गये मार्ग के मध्य में पिता पुत्र का मिलाप हुआ अमीर ने चरण चूमे ख्वाजे ने उठाकर अमीर को अपनी छाती से लगाया और रुपया व मोहरें फ़क़ीरों को लुटाईं वे लोग आशीर्वाद देने लगे कि ईश्वर बिजयी सदैव तुमको बिजय प्राप्त करे ख्वाजे जब अमीर को घर में लाये और दीवानखाने में बैठे और नगरबासी भी सब आकर उपस्थित हुए अमीर से मंज़रशाह यमनी और नैमाय मंज़रशाह यमनी के पुत्र और सुहेल यमनी और सुल्तानबख़्त मग़रबीन् आशीर्वाद देकर तौक़बिनहैरां की नौकरी करवाई और प्रत्येक की प्रशंसा की ख्वाजे अतिकृतकृत्य हुआ और सब पर कृपा की दृष्टि की और इसीभाँति से सब

का अधिकार बढ़ाकर पहुनई की एक दिन बातोंबात अमीर को मालूम हुआ कि आदी आदियाबानों का पुत्र है तब अमीर अतिप्रसन्न हुए कि दूध के कारण मेरा भाई है उसी दिन आदी को अपनी सेना का सेनापति और दीवानख़ाने और नक़ारख़ाने और फ़र्राशख़ाने का दारोग़ा किया और अठारह प्रकार का पारितोषिक देकर अच्छी पदवीपर नियत किया अमर ने अमीर की आज्ञानुसार आदी से पूछा कि आपके खाने के हेतु जितनी सामग्री चाहना हो कहदीजिये कि बावरचीख़ाने का दारोग़ा प्रतिदिन आपके निकट भेजदिया करे या खाना बनवाकर आपके डेरे में भेजवादिया करे आदी ने कहा कि यह तो घर है मुझे खाना इतना चाहिये जिसमें जीव रहे अङ्गीकार यह है कि अमीर के दरवाज़े पर अच्छीभाँति सेवकाई निबाहूं अमर ने कहा कि प्रतिवस्तु का नाम और तादाद कहदीजिये तो दारोग़ा आपके बावरचीख़ाने में पहुँचा दिया करेगा गोल गोल कहना क्या ज़रूर है लाज न करना चाहिये आदी ने कहा कि अच्छा भाई दारोग़ा से कहदो कि प्रातसमय इक्कीस ऊंटका मांस खाता हूं और दोपहर को इक्कीस हिरन और इक्कीस दुम्बे के क़बाब अंगूरी मदिरा के इक्कीस शीशों के साथ चखताहूं और जितना मैंने प्रातःकाल से दोपहरतक बताया उतनाही सांझसमय बल्कि इक्कीस भैंसा अधिक बियारी करता हूं और इक्कीस मन आटे की रोटियों का दोनों पहर खाने के निमित्त ढेर होता है और इसपर मेरा पेट अच्छी भाँति से नहीं भरता है किन्तु इतने में मेरा जी रहसक्ता है अमीर ने कहा कि इस दूकान के दारोग़ा से कहदो भेजदिया करे कुछ भी इसमें कमी न कियाकरे उनके कहने के अनुसार उतना रातिब उसका ठीक हुआ और प्रतिदिन खाना जाया किया कई दिवस के पीछे अमीर ने सुना कि नौशेरवां के एलची आते हैं मेरे नाम परवाना व ख़िलअत लाते हैं फिर ख़्वाजे अब्दुल्मतलब और अमीरहमज़ा नगर के बासियों समेत उनको अगवानी लेनेके हेतु नगर के बाहर आये और अपने घरपर पहले उनको लाये जो शीशे के घर उनके हेतु सजरहे थे उसमें उनको उतारा और थोड़ी देर के पीछे अच्छे २ व्यञ्जन बनवाकर उनके निमित्त भेजे उन्होंने अमीरहमज़ा को परवाना और ख़िलअत दी अमीर उस परवाने को पढ़कर भौंह सिकोड़ी और आतिरञ किया ख़्वाजे ने अमीर के रिस करने का कारण पूछकर कहा कि बाबा यह बादशाहहै कभी सलाम से त्योरीभौं चढ़ातेहैं और कभी गाली से प्रसन्न होकर ख़िलअत देते हैं अप्रसन्न होने का स्थान नहीं है दूसरे दिन जब रात बीती सूर्य ने अपना प्रकाश किया तब ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने नौशेरवां के लोगों की दावत की और सब नगरबासियों को भी उस न्योते में बुलाया खाने पीने के पीछे एलचियों ने ख़्वाजे के नाम का परवाना ख़्वाजे को दिया उसके पढ़ने से अमीर को अपनी ख़ैरख़्वाही और परिश्रमपर अतिडाह हुआ देखनेवालों को अति आश्चर्य हुआ कि इन लोगों का कैसा नाम है अर्थात् बहमनख़रां के नामपर ज़ेपर चौंकता था उसको ख़ेकी बिन्दी जानकर ख़रां पढ़ा

और तशदीद काफ़ सुकान अशुद्धता से उसको काफ़ फ़ारसी अर्थात् गा पढ़ी और वे दोनों इसी नाम से मक्के में प्रसिद्ध हुए अमर उस परवाने का समाचार सुनकर अमीर से भी अधिक अप्रसन्न हुआ जब खाने के हेतु दस्तरख़ान बिछा और सब जमाहुए दो ख़्वान कसनों से कसके उन दोनों के सामने लाया और बुरा भला कहने को तैयार हुआ किन्तु अमीर ने उनको मनाकिया और कहा कि न्योता यह आपका मेरी ओर से है और अच्छीभाँति से उसे रखवाया इसमें खुराक आपके योग्य है यह कहकर खानपोश उतारकर कसनों को खोलकर जिस काब में घास थी वह तो बहमनख़रां के सामने धरवाई और जिसमें आदमियों की हड्डियाँ थीं वह बहमनसगां के आगे लगाये और जितने लोग उस स्थान पर थे सन्देह में आकर अमर से कहनेलगे कि यह क्या चाल है यह कैसी बुरी बात करता है अमर बोला कि ख़र व सग अर्थात् गधा व कुत्तोंके निमित्त इसके सिवाय अच्छा भोजन क्या है यही पशुओं को मिला करता है जोकि इनकी पहुनई मुझपर भी उचित थी इसकारण से मैंने भी मुँह न छिपाया वे दोनों अमरपर दांत पीसकर रहगये और अनुचित बात जानकर कुछ कह न सके जब खाने से छुट्टी पाई सब का चित्त भरगया अमर ने दो नावें मँगवाईं उसमें उनकी ख़िलअतें थीं वह उनके सामने धरवाईं एकपर से ढकना उठाकर एक कपड़ा कुत्तों के डौलका निकाला और बहमनसगां के हाथ में दिया और दूसरे में से एक झूल निकालकर वहभी बहमनसगां को दी और फिर एक पाखर निकालकर बहमनख़रां को ओढ़ाया तबतो उन से न रहागया कटार निकालकर दोनों अमरपर दौड़े और उसके मारने पर मुस्तैद हुए तौक़बिनहैरां ने कटार दोनों के हाथों से छीनली और घूंसों से उनको मारा उसीदिन दोनों एलची शिरपर हाथ रखकर भागे किसीके होश ठिकाने न रहे अमीर ने एक अर्ज़ी बादशाह के दरबार में अपने सेवक के हाथ लिखी उसमें अभिप्राय यह था कि जो सेवा मुझसे आपके निमित्त बनपड़ी उसके बदले में हुज़ूरने अच्छी भाँति से प्रतिष्ठा इस अधीनकी की मैं ऐसेही परवाने और ख़िलअत के योग्य था आपसे मुझे आशा थी कि इस अनुचर के नाम कृपापत्र आवेगा उसपर नाराज़ी का पत्र आपने भेजा और अर्ज़ी और परवाना ख़िलअत समेत एक सेवक के हाथ रवाना किया और कुछ विनय करना था सो उसकी ज़बानी कहला भेजा एलचियों ने बादशाहके पास आकर रो पीटके सब बुराई का समाचार वर्णन किया और झूठ सच बहुत कुछ कहा नौशेरवां ने सुनकर बहुत क्रोध किया और बुज़ुरुचमेहरकी ओर देखकर कहा कि यह अर्बी अधिक गर्वी है उसके बड़े२ मनोरथ हैं एलचियों की बातों से जानाजाता है कि फ़िरार हुआ चाहता है बुज़ुरुचमेहर ने विनय की कि कृपानिधान! हमज़ा ऐसा शीलवान् गुणनिधान हौसिलामन्द हिम्मतवान् मनुष्य संसार में उत्पन्न नहीं हुआ है जो एलचियों की बातें सच हैं और उस में सन्देह और कोई बुराई नहीं हुई है सब प्रकार से मालूम होजायगा यह बातें

होहीरही थीं कि मुक़ाबिल अजीबपरवाना व ख़िलअत जो बादशाह की ओर से गया था लेकर हाज़िर हुआ बादशाह अर्ज़ी का मज़मून और अपने परवाने का लिखा हुआ बृत्तान्त और वह ख़िलअत जो बादशाह अपने भंगी को न देता देखकर बख़्तक पर क्रोध करनेलगा कि हे मूर्ख, दुष्ट! यह क्या बात है? जो तूने की ऐसी मूर्खता और ढिठाईपर कमर बांधी और उसीसमय हज़ार तोड़ा मोहरें उसपर जुर्माना किया और कई दिनतक दरबार में आने न दिया और अमीर को उज़रनामा अपने हाथ से लिखा कि वह परवाना और ख़िलअत जो तुमको पहुँचा था वह बख़्तक ने दुष्टता से बदलकर भेजा था तुमको उचित यह है कि हमारी ओर से अपने दर्पणरूपी चित्त में मैल न बैठनेदेना और अपने चित्त का खेद दूर करदेना और इसी निमित्त परवाना ख़िलअत बुज़ुर्गउम्मेद बुज़ुरुच्चमेहर के पुत्र के हाथ भेजाजाता है कि जिससे बख़्तक को किसी भांति दुष्टता करने का समय न मिले कि तुमभी बुज़ुर्गउम्मेद के साथ मेल मिलाप करके शीघ्र दरबार में आओ और अपने हाथों तख़्त व छत्र लेकर गुज़रानो यह लिखकर परवाना व शाही ख़िलअत बुज़ुरुच्चमेहर को देकर कहा कि बुज़ुर्गउम्मेद के हाथ देना दूसरा कोई इस परवाने और ख़िलअत को न देखे ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर बादशाह से बिदा होकर जब घर में आया तो सुघड़ी देखके एक सर्प जादू का बनाया कि जब हवा उसके पेट में जाती तो तीन बार आवाज़ें साहबक़िरां की निकलती और बैरी व मित्र के कान में पहुँचती और उसकी सुगन्ध से सबका दिमाग़ सुगन्धमय होजाता उसकी महक के आगे और सुगन्धित बस्तु लज्जित होती और जब बैरियों के आगे देखपड़ता तो अमीर की सेना का डर उसके हृदय में छाजाता और इस बस्तु के साथ एक चौखट दानियाल पैग़म्बर की हमज़ा के हेतु भेजी और चारसौ चवालीस बोझ कपड़ा घोड़ोंपर रखकर अमर के निमित्त भेजा और बुज़ुर्गउम्मेद से कहा कि हमारी ओर से यह अमर को पहुँचा देना और वस्त्र पहिनने का उपाय बुज़ुर्गउम्मेद को सिखाकर कहा कि इसीभांति अपने से अमर को पहिना देना यह बातें समझाकर एक दस्ता सवारों का साथ करके रवाना किया और मार्ग का हाल सब समझादिया जब चारकोस मक्का रहगया ख़्वाजे बुज़ुर्ग उम्मेद ने डेरा किया दैवयोग से उस दिन अमर उस ओर गया था बुज़ुर्गउम्मेद ने पहिंचाना हो न हो यही अमर है तो अपने निकट बुलाकर गलेसे लगाया और कहा कि हम तुम दोनों भाई हैं यहां उतरो पिता ने कुछ बस्तु तुम्हारे हेतु कृपा की है और वस्त्र व भूषण अच्छे २ भेजे हैं यह कपड़े उतारो जिसमें वे कपड़े पहिनाऊं और उसका उपाय तुम्हें बतावें अमर ने अपने वस्त्र उतारे बुज़ुर्गउम्मेद ने वे अपने आदमियों को देदिये और एक घड़ीतक अमर को वैसाही रक्खा और कहा कि लालच से नङ्गे मत होना अब यही सजाव पहिनेरहो और ईश्वर पर राज़ी होकर निहङ्ग लाड़ले रहो तब तो अमर बहुत घबराया और धाड़ें मारकर रोने और हाथ जोड़ने लगा कि मेरे वस्त्र मुझको कृपा करो मुझे इतने मनुष्यों में नङ्गा मत रक्खो

मैं सदा तुमको आशीर्वाद देतारहूंगा मैंने आपकी ख़िलअतसे हाथ उठाया अब अपने घर की राह लूंगा बुज़ुर्गउम्मेद ने हँसकर कहा कि ऐ बाबा! ऐसेही इस सृष्टि में बहुत लोगोंको तूभी नङ्गा व हैरान करेगा और बहुतों के कपड़े उतारलेगा इस निमित्त मैंने तुझे नङ्गा किया है कि जिससे आगे यह समय याद रहे अमर ने कहा कि मैं आपका चेला हुआ बुज़ुर्गउम्मेद ने गठरी तोशेख़ाने से मँगवाई पहले एक अम्मामा अमर को पहिनाया ज्योंहीं उसको पकड़कर ऊपर को ईंचा तो एक थैली सी अमर के लटकने लगी अमर ने कहा बाबाजान भी बड़े उदार हैं कि बालिश्तभरकी मियानी तम्बामें न दी बुज़ुर्गउम्मेद ने आफ़तबन्द निकाला अमर देखने लगा तो उसमें एक थैली मख़मल की थी उसपर सातरङ्ग के गुलबूटे निकालकर भेजी है और उसकी डोरी में एक घुण्डी लाल की लगी है कि वह अमोल था बुज़ुर्गउम्मेद ने लिङ्गेन्द्रिय उसमें रखके लङ्गोट की भांति ईचकर कहा कि इसको आफ़तबन्द कहते हैं आपके पुरुषों ने भी ऐसे कपड़े कभी सुने व देखे हैं और उसके लाभ बताते हैं कि इससे एक तो दौड़ने कूदने में अण्डापर चोट किसी प्रकार की नहीं आती है और दूसरे पानीमें तैरने के समय इसके खोलने की कुछ आवश्यकता न होगी अमर बोला कि पिता कृपानिधान की मुझ पर बड़ी दया है कि जो मेरे निमित्त भी ख़िलअत भेजी और मेरी लिङ्गेन्द्रिय के हेतु भी भेजी बुज़ुर्गउम्मेद ने दो भांति के वस्त्र अमर को पहनाये एक शरीरका था और दूसरा कर्त्ताका और उनके सबके लाभ बताये और कहा कि जो एक नर्म है वह शरीर की स्वच्छता और आराम के हेतु है और दूसरा मध्यम वायु के लिये है और हरा अङ्गा सुनहला पहनाया और एक आधा छत्र जड़ाऊ कि जिसपर सुगन्धित करनेवाला एक तोता ज़मुर्रदका बनाथा कलँगी के तौर से शिर पर रख दिया और हिरन की खाल की सूर्यामुकुट सूर्य की उष्णता के हेतु माथे पर लगाया और एक फलाख़न कि जिसपर सात रङ्ग का रेशम लगा हुआ था और भांति २ का जड़ाऊ काम उस पर बना था और एक कमन्द जिसकी लच्छों से गांठें बँधीहुई थीं चमक में सूर्य से अधिक शोभित थीं और पांच कटार जिनके दस्ते जड़ाऊ और चालिस घुंघुरू अमर के कमर में बांधे बारह स्थान अट्ठाईस कोनेपर शब्द चौबीस नावें और छः पाताबे दिये और डाढ़ीकी पट्टी बांधने की सब बातें बताईं थैली और ज़रूरा लफ़ज़ कमर में रक्खा और मज़बूत कसा और कुछ बस्तु मदिरा में भिगोकर सुखाई हुई कि जब उसको पानी में भिगोदीजिये तो पानी मदिरा होजावे और एक ...का और एक अतरदान अच्छी भांति का बनाहुआ और ज़हरमोहरा की डबिया ...रकी सी पूंछ बनीहुई और बिजली की तरह अच्छी सजी हुई तलवार और धनुष और लम्बी चौड़ी शिर से पांव तक चादर और जोड़ा जूते का अधिक नरम मोती जिसपर जड़ेहुए इसी भांति से चारसौ चवालिस टुकड़े बस्तु के सजेहुए बुज़ुर्ग उम्मेद ने अमर को पहनाये और भांति २ के अस्त्र उसके शरीर पर सजे अमर ... से बिदा होकर उसी भांति से अमीर के पास गया और ब्यौरा समेत

सब समाचार कहा और विनय की कि नौशेरवां ने आप के विनयपत्रके उत्तरमें भारी उज़ुरनामा पारितोषिक सहित बुज़ुरुचमेहर के बेटे के हाथ उनका ख़्वाजे बुज़ुर्ग-उम्मेद नाम है और वह नगर से दो कोस की दूरपर टिकेहुए हैं भेजा है और ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने भी एक जादू का सर्प और दानियाल का तम्बू आपके हेतु भेजा है और चारसौ चवालीस टुकड़े भांति २ के जो इस समय में मैं पहिने और लगायेहूं मुझको कृपा किये हैं और उनके साहबज़ादेने यह सब वस्त्र और अस्त्र पहिनाकर सबका स्वभाव बतलाया है अमीर यह समाचार सुनकर अति प्रसन्न हुआ और स्नेहियों समेत साज बनाकर सवार होकर ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद की अग-वानी के हेतु नगर के बाहर पहुँचा बुज़ुर्गउम्मेद अच्छी भांति से अमीर के आगे आया और नौशेरवां का उज़ुरनामा अमीर को दिया और ख़िलअत जो नौशेरवां ने दी थी वह अमीर के आगे धरी अमीर शाही परवाना पढ़कर अतिआनन्दित हुआ और ख़िलअत में से कोई २ कपड़े निकालकर उसी समय पहिन लिये उसके पीछे अमीर को सर्प और दानियाल का तम्बू बुज़ुर्गउम्मेद ने निकालकर दिया और कहा कि पिताने आपको आशीर्वाद कहा है और यह वस्तु आपके नि-मित्त भेजी है और सच तो यह कि ये वस्तु आपही के योग्य है अमीर उससे अति प्रसन्न हुए और वह सर्प तौक़ाबिनहैरां को और तम्बू आदी को सौंपदिया और बुज़ुर्गउम्मेद को साथ ले सेना समेत नगर की ओर चला वहां पहुँचकर ख़्वाजे अब्दुलमतलब और भले २ मनुष्यों से मिलाप करवाया और बहुत दिनोंतक एक मङ्गलाचार के हेतु सभा शोभित रक्खी एकदिन बुज़ुर्गउम्मेद ने अमीर से कहा कि बादशाह आपका मार्ग देखते होंगे और आपका चर्चा बारम्बार करते होंगे उचित यह है कि अब आप मदायन की ओर पधारिये अमीर उसी समय काबे का दर्शन करके ख़्वाजे अब्दुलमतलब से विदा होकर मंज़रशाह यमनी व नैमाय और सुहेल-यमनी व सुल्तानबख़्त पश्चिमी और आदीकरब व तौक़बिनहैरां समेत तीससहस्र महाभट व योधाओं से मदायन की ओर चले प्रतिदिन मार्ग में चलते सैर करते चलेजाते थे कि इतने में एक स्थानपर दो मार्ग मिले अमीर ने ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद से पूछा कि आप इसी ओर से आये थे आपको मालूम होगा कि यह राहें किधर को गई हैं और कौन २ देशकी सीमा में मिली हैं बुज़ुर्गउम्मेद ने कहा कि दोनों मार्ग मदायन के हैं एक मार्ग निडर है परन्तु दूर बहुत है छः महीने में इस मार्ग से पहुँचते हैं और दूसरी राह में बहुत जल्द मदायन में पहुँचते हैं परन्तु पांच वर्ष से यह मार्ग बन्द है कि इस मार्ग में भारी जङ्गल मिलता है और उसमें एक सिंह आकर रहा है और आदमी की सुगन्ध पाकर विपिन से निकलकर एकही थप्पड़ में चाहे जैसा मनुष्य बलिष्ठ हो प्राण हरलेता है इस कारण इस मार्ग होकर कोई नहीं जानेपाता है अमीर ने कहा कि वह दुष्ट ईश्वर की सृष्टि को दुःख देता है मुझको उसे मारना उचित है यह कहकर अकेले आप तलवार लेकर अर्थात् ख़्वाजे

अमर अय्यारसमेत उस मार्ग भयभीत से मदायन की ओर पधारे और सेना को स्नेहियों समेत दूसरी मार्ग जो अभय थी उससे ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद के साथ भेजा और कहा कि घोड़ों की चाल चलेजाना यद्यपि मंज़रशाह आदि ने साथ चलने को कहा परन्तु अमीर ने न माना दूसरे दिन उस बियाबान में एक झाड़ के निकट पहुँचे वहां अच्छी ठण्ढी बायु देखकर घोड़े से उतरपड़े और एक तालाब देखा कि उसके किनारों पर हरी २ दूब लगीहुई थी और कुछ बृक्ष इधर उधर छायादार लगे हुए थे उसपर पक्षी बिबिध प्रकार की अच्छी २ बोलियां बोलते थे उसके किनारे पर ज़ीनपोश बिछाकर बैठगये और अमर घोड़े को चराने लगा और उस बिपिन में फल आदि खानेलगे इतने में एक भारी खड़खड़ाहट पैदा हुई और जानवर के आने की आहट मालूम हुई और एक सिंह उसमें से निकला अमर ने अपनी उमर में कभी मिट्टी का भी सिंह न देखा था ज्योंहीं उसे देखा भयभीत होकर घोड़े को छोड़कर एक बड़े बृक्षपर चढ़गया और अमीर को पुकारनेलगा कि ऐ हमज़ा! एक सिंह बड़ाही लम्बा चौड़ा झाड़ से निकला है और आपकी ओर चला आता है इससे आप उस तालाबपर से भागकर मेरे पास चले आइये या भागकर शीघ्र किसी बृक्षपर चढ़जाइये अमीर अमर की यह बात सुनकर बहुत हँसे और कहने लगे कि तू क्यों अचेत हुआ जाता है कुछ दीवाना हुआ है मैं आप उसके मारने के हेतु इस मार्ग से आयाहूं इसीकारण इतना मार्ग चलकर सेना से अलग हुआ हूं और तू मुझे उससे डराकर भगाया चाहता है इस स्थानपर तू मुझे नामर्द बनाया चाहता है यह कह कर सिंह की ओर देखनेलगा और उसकी ओर चला देखा कि सिंह बहुत भारी है अतिडरावनी सूरत है पूंछ तक चालीस हाथ लम्बा होगा और गात से अधिक ऊंचा है अमीर ने सिंह को ललकारा कि ऐ गीदड़! किधर जाता है मैं तेरा बैरी आन पहुँचा हूं सिंह यह हांक सुनतेही अमीर के ऊपर गिरा कि अमीरने चोट बचाकर उसकी वार बचाई और ऐसा शब्द किया कि सब बन गूंज उठा और सिंह के पिछले पैर पकड़कर ऐसा झिटका मारा कि कमर की हड्डी टूटगई और दो पहर में वह सिंह चिल्लाकर मरगया अमर ने अमीर के हाथों को चूमलिया और प्रातःकाल उस सिंह की खाल को खींचके साफ़ किया और भीतर से भी अच्छी भांति साफ़ किया और उसमें भुस भराकर उस बनसे लकड़ियां तोड़लाया और नया तमाशा करने को जी चाहा तो एक बैठका बनाया उसपर उस सिंह को इस भांति से बैठाया कि जो कोई देखे उसको जीता देखपड़े और एक मनुष्य को पकड़के उसके शिरपर रखवालिया और अमीर के साथ हुआ अमीर इस कारण से कि सेना बहुत दिनों में मदायन पहुँचेगी जहां कहीं स्वच्छ स्थान पाते डेरा करते और आखेट खेलने जाते इस कारण से अमीर और बुज़ुर्गउम्मेद साथही पहुँचे अमीर तो अपनी सेना में गये और अमर ने एक टीकड़े के नुकड़ पर जो गढ़ी के तले की दीवार के तले बना था उस भुस भरेहुए सिंह को बैठाया कि कुछ भी सजीव सिंह

से और उससे भेद नहीं था इसीभांति दूसरे दिवस जब दरवाज़ा नगर का खुला घसियारे उस टीकड़े की ओर घास छीलने के निमित्त जातेथे तो एकाएकी उनमें से एककी दृष्टि उस सिंहपर जापड़ी तो चिल्लाकर अचेत होगया और बोल बन्द हो गया उसके साथी इधर उधर देखनेलगे कि इसने क्या ऐसी वस्तु डर की देखी कि चिल्लाकर अचेत हो पृथ्वी पर गिरपड़ा देखते २ सिंहपर दृष्टि पड़गई तो सबके सब नगर की ओर सिंह २ कहकर भागे किसी का चित्त ठिकाने न रहा घसियारों की ज़बानी जो यह समाचार विदित हुआ नगर में हलचल पड़गई कि एक बड़ाभारी लम्बा चौड़ा सिंह टीले पर बैठा है थोड़ी देर में नगर की ओर आया चाहता है हमारे साथ का एक मनुष्य वहां अचेत होकर गिरपड़ा है देखें वह घरतक आताहै या उस सिंह का कौर होजाताहै सब नगरभर घबराया कोई अपना दरवाज़ा बन्द करने लगा कोई बन्दूक़ बांधकर अपने कोठेपर जाबैठा और बाहर निकलना पैठना क़ठिन हुआ नाकों पर प्रबन्ध होनेकी आज्ञा हुई नगर में यह चर्चा हुई कि देखा चाहिये जो कदापि नगर की ओर फिरा तो सैकड़ों को मारडालेगा यह वृत्तान्त जब बाद-शाह ने सुना तो नगर की गढ़ी की ओर जाकर मल्लोंसमेत और सेनापति साथ ले-कर देखा तो सचमुच एक सिंह टीकड़े पर बैठा है जो कोई उसे देखताहै वह कांप उठता है दैवयोग से मुक़बिल अपने तम्बू से कि जो नगर के बाहर पड़ा था बाद-शाह की मुलाक़ात को जाता था जब टीले के निकट पहुँचा तब वह सिंह दिखाई दिया तो तरकस से तीर निकालकर कमानकी नोक पर चढ़ा उसकी ओर चला और सामने पहुँचकर ध्यान लगाके जो देखा तो सिंह में हलचल न पाई धोखे से सूरत दृष्टि पड़ी तब सोचा कि ऐसी बाज़ीगरी अमरके सिवाय दूसरे को समझना कठिन है यह उन्हीं का काम है मालूम होताहै कि अमीर सिंह को लगाड़ सुनकर बनकी ओर से आये और सिंह दुष्ट से उस बन को साफ़कर आये हैं और सिंह को मारा है लोगों को डरनेके लिये अमरने उसकी खालमें भुस भरकर एक तमाशा बनाया है फिर बादशाह से जाकर अपनी बड़ाई वर्णन की बादशाह कोभी ज्ञान हुआ और प्रसन्न होकर मुहरों के संदूक़चे मुक़बिल को कृपा किये और ख़िलअत और भारी मोलके जवाहिर दिये और कहा देखो तो अमीर नगरसे किधर उतरे हैं शीघ्र जाओ और हरकारे रवाना करो और पूछके हमको अतिशीघ्र समाचारदो मुक़बिल बादशाह से बिदा होकर नगर के बाहर निकला दैवयोग से अमर अमीर की सेना में पहुँच नगर की ओर आता था और बादशाह के पास अमीर के आनेका समा-चार सुनाने जाताथा तो दूरसे देखा कि एक मनुष्योंका झुण्ड गढ़ीसे बाहर निकला और उस बन की ओर जाता है अमर ने उसका पीछा किया और निकट जाकर देखा कि मुक़बिल वफ़ादार हमारा पुराना मित्रहै मुक़बिल अमरको देखकर पूछने लगा कि अमीर का तम्बू कहां पर खड़ाहै यह सुन अमर को बुरा मालूम हुआ कि न तो मुझे सलाम की और न क्षेम कुशल पूछी और न घोड़े से उत[illegible]

असर मुक़बिल की ओर देखकर कहनेलगा कि हे दुष्ट ! तुझको अमर ने वादशाहकी सेवा में भेजा है या सैर करनेको मुक़बिल ने कहा कि मैंने सुनाहै कि थोड़ी देरहुई कि यहां अमीर आये हैं उनके मिलने को जाताहूं सैर कैसी वादशाह की सेवा से आता हूं अमर ने कहा तूने बहुत बुरा किया कि उनके मिलनेको चला मुक़बिल ने कहा कि क्या तू दीवाना होगया है कि मुझ से बराबरी करताहै अमर यह सुन झुँझुला कर बोला कि ऐ भाई ! तुझको भी यह हौसिला हुआ जो मुझसे भी ऐसी बातें करने लगा नौशेरवांने तीन सन्दूक़ मोहरोंके क्या दिये कि तू ख़्वाजा वनगया जिससे तेरा मन ठिकाने न रहा यह कहकर गोफन निकाला और आतिदमक चमक का एक पत्थर अपनी थैली से निकालकर गोफनपर रक्खा और घुमाकर मारा तो मुक़बिल के माथेपर लगने से रुधिर की धारैं छुटने लगीं मुक़बिल उसी सूरत से अमीर के निकट चलाआया और रोने पीटने लगा अमीर यह समझकर कि क्या मदायन के लोगों ने इसे रक्तसे स्नान करायाहै इससे भौंहैं सिकोड़ी फिर मुक़विल ने अमर का गिल्ला किया अमीर ने अमर को बुलाकर कहा कि यह कैसी चाल है आपस में ऐसी शत्रुता रखते हो अमर ने बिनती की कि यह वही कहावत है कि यह अपनेही मुंह मियांमिट्ठू बनता है मुझसे भी सुन लीजिये अमीरने कहा कह क्या कहता है ? अमर ने कहा कि मनुष्य परदेश में दूसरे साथी का भरोसा रखता है और यह मुझको मिला तो न सलाम किया न मिला जो अच्छे मनुष्यों को चाहिये अब हम दोनों आपके सम्मुख समान हैं जैसी आज्ञा हो वह करें मैं तो उस के मिलने को खड़ाहुआ और यह गर्व समेत मुझ से घोड़े की बाग थामकर आप को पूछने लगा मैंने उससे कहा कि ऐ दुष्ट ! तुझको अमीर ने बादशाह के समीप सेवा करने के निमित्त भेजा है कि सैर करने को यह बहुत बुरा करता है कि सैर करता फिरता है तो यह मुझ से क्या कहता है कि तू मेरी बराबरी करता है आप इसका न्याय करें और इसको छोड़ आपके प्रतापही से यह दिन इसे ईश्वरने दिखलाया है कि बादशाह की दी हुई जड़ाऊ ख़िलअत पहिने है और तीन संदूक़ मोहरों के पाये हैं और कौनसी बात में यह मुझ से अधिक है यह क्या करे ? इसको अपनी धन सम्पत्ति का अभिमान है यह कहावत सच है किसीने कहाहै कि ईश्वर छोटे मनुष्य को धन प्रताप न देवे और किसी कमीने को बड़ा अधिकार न देवे अमीर ने अमर की बातें सुनकर मुक़बिल से कहा कि इस समाचार में तेरा अपराध है कि तुम दोनों को आपस में बिरोध करना अनुचित है जाओ आपस में मिलाप करलो मुक़विल तो मिलने पर राज़ी होगया परन्तु अमर ने इन्कार किया और कहा कि यह धन सम्पत्तिमान् और सेठ है और बड़े अधिकार पर है मैं बिचारा बे सामान और अधीन और दीन हूं मुझसे और इनसे समानकी कोई बात नहीं है और इनके आगे क्या हक़ीक़त है ? मुक़विल ने देखा कि अमर तो मिलाप नहीं करता है तो एक संदूक़ मोहरों का अमरको दिया और कहाकि ले भाई ! अब तो मेरा अपराध

क्षमा करके अपना चित्त मेरी ओर से साफ़ कर अमर तो लोभ का सेवकही था मोहरें ले प्रसन्न होकर मिलगया दूसरे दिन ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद बादशाह के पासगया और अपने जाने और अमीर के आनेका समाचार बर्णन किया बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और बिचार के अनुसार बुज़ुरुचमेहर सब अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेने का बिचार किया बख़्तक ने सासानियों को बहँकाकर मना करने पर आरूढ़ किया कि सप्तद्वीपका बादशाह एक अर्बज़ादेकी अगवानी लेके और छोटे नौकर की इतनी प्रतिष्ठाकरे ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि हमज़ा बादशाह का पुत्र है उसने भी तुम्हारे साथ २ उपकार किया है कि तुमलोगों को लड़के बालों समेत एक भारी शत्रु से छोड़ालिया और उसपर ख़िलअतें आदि देकर बन्दि से छोड़दिया है मालूम हुआ कि तुमलोग अतिनिर्लज्ज हो और कुछ भी बुद्धि नहीं रखते हो बुज़ुरुचमेहर के समझाने से वह झगड़ा दूर हुआ और प्रत्येक मनुष्य अपने २ स्थानपर चुप होरहा फिर बादशाह चार हाथी के तख़्तपर सवार होकर अधिकारियों समेत सजधज बनाके अमीर उमराओं सहित अमीर की अगवानी को चले दो कोस सवारी गई होगी कि सामने से काली रेख प्रकट हुई जब बायु ने उस मैदान की रज उड़ाकर साफ़ किया तो बीस झण्डे तीस सहस्र सवारों के बिदित हुए और उन सवारों के बीच में अमीर स्याह क़ैतासपर सवार देखपड़ा दायें बांह की ओर बादशाह बायें मल्ल दिखाई दिये और अस्त्र धारण किये हुए बस्त्र सजे शब्द करते बारह स्थान चौबीस लबक अट्ठाईस कोने का मुँह करते हुए विद्यार्थियों को साथ लिये ख़्वाजे अमर अय्यार भी चलेआते थे बादशाह ने दायें बायें आगे पीछे पियादह सवारों की सेना का तमाशा देखते हुए अमर को देखा कि पन्द्रह सोलह बर्ष का है और उसकी सुन्दरताई के आगे कोई संसार में नहीं है और सकलगुणनिधान अतिशीलवान् स्याह क़ैतासपर सवार है इस सजधज का मनुष्य आसमान ने भी संसार में न देखा होगा नौशेरवां की आंखें सब साथियों समेत अमीर पर पड़ीं अमीर बादशाह को देखकर घोड़े से कूद पड़ा और भेंट करने को आगे बढ़ा और झुकके सलाम किया और क़ैख़ुसरो का तख़्त जिसे हुरशाम लेगया था अपने शिरपर रख छत्र समेत बादशाह को भेंट दिया अमीर का तख़्त शिरपर लेजाने का कारण यह था कि जब क़ैख़ुसरोने तूरान बिजय करके ईरानपर क़ब्ज़ा किया था तो रुस्तम ज़ाल के पुत्र ने उस तख़्त को अपने शिरपर उठाकर तीस पग बादशाह के दर्शन को गयाथा इस कारणसे अमीर ने भी नौशेरवां की बड़ाई के कि तख़्त को शिर पर उठाकर चालीस पग गया और उसको फूलसा उठाकर इस वास्ते लेगया कि मैं रुस्तम से दशगुना अधिक बलिष्ठ हूं नौशेरवां इस चाल देखकर अमीर से अतिप्रसन्न हुआ और अपने नौकरों में से एक को आज्ञा दी शीघ्र तख़्त अमीर के शिरपर से उतारले और आप तख़्त से उतरकर अमीर की ओर चला और अमीर को अतिकृपादृष्टि से देखने लगा अमीर भी दीनता से आ

शीघ्र आगे बढ़ा और बड़े प्रेम से चरणों पर गिरपड़ा नौशेरवां ने अमीर के दोनों हाथ पकड़कर गले से लगा लिया और उसी समय अपने दोनों पुत्रों हरमुर्ज़ और फ़रामुर्ज़ को अमीर के मिलने को आज्ञा दी और सब सरदारों से मिलवाया और हरएक का अधिकार और नाम बताया॥

अमीर का मदायन नगर में जाना और रुस्तम की जगह पर बैठना और उससे अधिक बल और प्रताप दिखाना॥

लिखनेवाला इस बृत्तान्त को यों बर्णन करता है कि दूसरे दिन ख़्वाजे बुज़ुरुच-मेहर ने दरबार के भीतर अमर की बादशाह से नौकरी करवाई और उसके गुण और लक्षण की प्रशंसा बादशाह से की बादशाह ने अतिकृपा से अमर की ओर पांव फैलादिया कि चूम लेवे और हाथ को जंघापर रक्खा अमर ने बादशाह के पांव चूम कर हाथों को आंखों से लगाया और चालाकी से अंगुली से अँगूठी इस प्रकार से उतारली कि बादशाह को ख़बर भी न हुई और फिर और २ सरदारों से मिलने लगा जब ख़्वाजा गिराज़उद्दीनबख़्त से मिलनेलगा तो चुपके से वह अँगूठी उस की जेब में डालदी उसी समय बादशाह घोड़ेपर सवार होकर लगाम पकड़कर मदायन की ओर चले अमर अपने साथियों समेत बादशाह के साथ रहा फलांग मारता हुआ चला अमर को इस चालसे मेहतरआतश जो नौशेरवांकी सभा में बड़ा चतुर और सरदारों में बड़ा था अमर की इस चाल से जलभुनकर क़बाब होगया पुकार कर अमर से कहनेलगा कि ऐ लड़के! गुरु गुड़ही रहा चेला शक्कर होगया यह स्थान तेरे चलने का नहीं है मेरे आगे तुझे चलना न चाहिये अपने क़ायदे से चल बादशाह के साथ तुझे चलना क्या काम है? अमर बोला कि प्रथम तो तुम बूढ़ेहो और मैं जवान और पराक्रमी दूसरे आगे तुम अकेले थे अब मैंभी आगया हूं आगे तुम को जाना अनुचित है अब छुट्टी लेकर एक किनारा पकड़के बैठिजाइये मेहतरआतश अमरकी ये बातें सुनकर आग होगया नर्म गर्म कहनेलगा बादशाह और अमीर ने दोनोंकी सुनी दोनोंकी ओर देखकर बादशाह ने आतश से पूछा क्या है आपस में क्या झगड़ा है? उसने बर्णनकिया सेवक पुराना चतुरों का सरदार है और सदा से आपने पालन किया है और यह लड़का मुझ को आपके साथ चलने नहीं देता नौशेरवां ने कहा कि अमर तू क्या कहता है? क्या तुझ को अपनी चतुरता का अभिमान है अमर ने प्रार्थना की कि कृपानिधान! चतुरता केवल बातों से मेल नहीं रखती वह गुण से समझी जाती है इस में बड़ा दौड़धूप का काम होता है जो आतश को इसकी परीक्षा करनी हो तो देर न करे मैदान पकड़े बादशाह ने कहा कि अमर यह बात तो तू ने बहुत अच्छी कही मैं प्रसन्न हुआ यहां से नगर का दरवाज़ा दो कोस है तुम दोनों एक २ तीर लेकर दौड़ो तुम में से जो प्रथम तीर दरवान को देआवे तो वह दूसरे पर बड़ाई लेजावे दोनों ने अङ्गीकार किया बादशाह की आज्ञानुसार एक २ तीर मिला दोनों हाथ पर हाथ मारकर

आगे थोड़ीदूर सवारी से बढ़कर अमर पीछे रहा आतश आध कोस आगे बढ़ गया देखनेवालों ने कहा अमर ने नाहक अपनी प्रतिष्ठा खोई अन्त में मेहतर-आतश आगे निकलगया कि आतश नगर के निकट पहुँचा अमर ने यह समझकर कि देखनेवाले मुझपर हँसतेहोंगे उस वर को याद करके आतश के निकट फलांग मारके पहरे के सिपाही को तीर देके आतश के पीछे से दुलत्ती लगाई और गर्दन को ऐसा गांठा कि आतश चित्त गिरपड़ा और सब शीघ्रता की चाल भूलगया शिर में जो पत्थर की ठोकर लगी एक किर्च खोपड़ी की उड़गई रुधिर बहचला अचेत होकर घबरा गया और पगड़ी उसकी उतारकर तीर द्वारपाल को देकर कहा कि मुझ को पहिंचान रख कि मेरा नाम अमर है मेरी चतुरता सब कहीं प्रसिद्ध है और असत्य को अच्छीभांति समझलेता हूं ऐसा न हो कि कुछ ले देकर कहा कि प्रथम तीर आतश ने दिया है और अमर ने उसके पीछे दिया है बचा जो झूठ बोलोगे तो अपना किया पाओगे इससे सावधान होजाना लालच का काम न करना सच २ बादशाह से कहना द्वारपालक घबराया कि यह क्या हाल है ? अमर पीछे पांवों चलकर बादशाह के समीप जापहुंचा और सलाम कर मेहतरआतश की पगड़ी दिखलाई बादशाह उसकी चालाकीपर बहुत हँसे और आतश लाज के कारण बादशाह के पास न गया जब बादशाह की सवारी नगर के फाटकपर पहुँची कहा कि सेना साहबकिरां क़ातिल शादकाम स्थानपर उतरे और उसी स्थान पर सबके स्थान सवार और पियादे के स्थान बनें सबने पांति २ से डेरा किया और वह स्थान नदी के किनारे था किन्तु साहबकिरां बादशाह के साथ नगर में पहुँचा और वहां से क़िले में गया और साहबकिरां के देखने को सब नगरभर उमड़ा था छोटे बड़े स्थानों में खुशी थी कि साहबकिरां ने उन लोगों को बन्दि से छुड़ाकर सलूक किया था जो देखता था वह अमीर को आशीर्वाद देता था कि ईश्वर सदा इसको बनाये रक्खे और इसका तेज और प्रताप खुदा हराभरा रक्खे इसी भांति से साहबकिरां बादशाह के साथ दरबार की ड्योढ़ीपर आये बादशाह ने आज्ञा दी कि मुसल्मानी अमीर तक की दाहिनी ओर बैठें और लोग अपने २ स्थानपर बैठें सबसे पहले अमर एक चौकी पर तकिया लगाकर बैठगया और मूछों पर ताव देनेलगा साहब-किरां से बादशाह ने कहा कि तुमको अख़्तियार है जहां चाहो वहां बैठो तुम्हारा घर है अमीर ने अपने चित्त में कहा कि ऐसी जगह पर बैठो कि कोई बराबरी का दावा न करसके कहावत है कि बिल्ली को पहले दिन मारे जिससे तोता बचे बादशाह के तख़्त के निकट एक चन्दन की चौकी जड़ाऊ बिछी थी और वह बैठका रुस्तम का था सलाम करके उसी पर बैठगये जिस समय साहबकिरां ने ज़ीनपोश उठाकर पांव रक्खा सासानियों के कलेजे में गांसीसी लगगई चित्त में बिचार किया कि आज का दिन तकरार का नहीं कल्ह समझलेंगे इस बैठने का प्रश्नोत्तर करेंगे बादशाह ने कई ढेर मोहरों के साहबकिरां के ऊपर नेवछावर किये अमीर ने भी

जा अच्छा २ वस्तु लाय ये बादशाह पर नवछावर की बादशाह की आज्ञा से कन्द का शर्बत अमीर को दियागया पहले साहबकिरां ने पिया फिर और २ सरदारों को दिलाया फिर बावरची भांति २ के खाने चुनकर लाया बादशाह ने साहबकिरां समेत उसे खाया जब खाना खाचुके तब मदिरा चलनेलगी और मङ्गलाचार की सभा सजी मदिरा देनेवाले एक हाथ में मदिरा की बोतल लिये हुए और दूसरे हाथ में प्याला थांभे हुए उपस्थित हुए बादशाह ने अतिआनन्द में ख़्वाजे अमर से गाने के निमित्त आज्ञा दी अमर दाऊदीदुतारे को मिलाकर सबप्रकार के राग गानेलगा प्रत्येक छोटा बड़ा कान लगाके सुननेलगा वह राग गाये कि सियांसूरी फ़ीके होगये ताता भी कान लगाकर सुननेलगा और सबओर से प्रशंसा का शब्द निकलता था मियां तानसेन मानों जी उठे उस समय नौशेरवां ने चाहा कि अँगूठी उतारकर देवें गाने का बदला लेवें देखा तो अंगूठी से अंगुली खाली है क्रोध करके कहा कि हमारी अंगूठी किसने ली है अभी हाथ से उड़ीजाती है कहीं गिर तो नहीं पड़ी है अमर ने कहा कि सिवाय इन लोगों के और तो कोई नहीं आया है जो वह इस अपराध में फँसे और इतने आदमियों से सुल्तान आलम की अंगूठी लेगया जो आज्ञा हो तो सेवक एक २ की तलाशी ले और आपके प्रताप से उसे निकाले और पुकार २ कर कहनेलगा कि यारो ! जिसने अँगूठी पाईहो हुज़ूर में गुज़रानदेवे इनआम पावेगा नहीं तो उसको कष्ट मिलेगा इधर उधर ढूंढ़नेलगा और प्रत्येक कहता कि भलाहुआ कि हम दरबार से बाहर भी नहीं गये बादशाह ने अमर से कहा तो अमर ने शाह की आज्ञानुसार सब का झारा लिया नाम करने के हेतु सबकी जेब टटोली और कहा कि मुसल्मानों पर हमें कुछ संदेह नहीं है तुम हमारे लोगों का झारा लो इन्हीं लोगों में ढूंढ़ो जब अमर सब पहलवानों और सेनापतियों का झारा लेचुका बादशाह ने बुज़ुरुच्चमेहर को आज्ञा दी कि अब तुम अपनी ओर के लोगों को देखो सब का झारा लो और अच्छी भांति से सब की कमर और कपड़े देखो और सब का झारा लिया जब बख़्तक की बारी आई उस की जेब में अंगूठी पाई और वह सब अमीर आश्चर्यवान् हुए और बख़्तक अति लज्जित हुआ अमर ने बादशाह से हाथ जोड़कर कहा कि चालाकों को चोरी करते सुना था और मन्त्रियों को न सुना था न देखा था सो आज बख़्तक को देखा कि मन्त्री भी चोरी करते हैं जो दश बीस लाख की कोई वस्तु होती तो संदेह न था इस थोड़े पर नियत करना इन्हीं का काम है आपकी कृपा से इसके घर में बड़े २ मोल के रत्न होंगे उस पर भी यह नियत है किस प्रकार हो क्या सृष्टि में यह आतश का नाती है जो उसके भांति चाल पकड़ी है उस नमकहराम पापी ने सात ढेर शदाह के आपके पिता से चुराये थे इसने सप्तद्वीप के राजाकी अंगूठी चुराई तो क्या हुआ ? यह तो अपने नाना से भी अधिक हुआ नौशेरवां ने बख़्तक को बुरा भला कहा और अमीर ने कहा कि चोर के हाथ काटना उचित है ऐसे मनुष्य के हाथ

काटना और दण्ड देना योग्य है बख़्तक ने अपने जी में कहा कि इस चालाक ने मेरे हाथ कटवाने की तदबीर की वहां की कसर मुझसे निकाली और बुज़ुरचमेहर की सिफ़ारश से हाथ तो न काटेगये लज्जित होने से बचा परन्तु दरबार से निकाला गया और आज्ञा हुई कि बख़्तक को गर्दन पकड़कर दरबार से निकालदो और फिर कभी दरबार में न आनेपावे आज्ञा की देर थी कि उसी समय बख़्तक निकालागया अमीर ने थोड़ी देर के पीछे बादशाह से बिनय की कि बख़्तक का अपराध कुछ नहीं यह चालाकी अमर की है बादशाह ने अमर की चालाकी देखकर आश्चर्य किया और बख़्तक को अमीर के कहने से दरबार में आनेदिया और वह अँगूठी अमर को कृपा की और उसकी चालाकी से प्रसन्न हुआ अमीर ने कहा कि तम्बू में जाकर आराम करो परन्तु प्रतिदिन स्नेहियों समेत दरबार में आयाकरो अमीर दरबार से बिदा होकर तिलशादकाम में पहुँचा और बादशाह महल में गये॥

बहराम गिरदख़ाक़ान चीन के साथ बड़ी धूमधाम से मदायन नगर में गुस्तहम का आना॥

अब इस इतिहास को यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर तिलशाद में गये और दरबार के वस्त्र उतारे और शस्त्र खोलकर लेटने का मनोरथ किया कि बख़्तक का कामस्थानपत्र अमरके नाम इस मज़मून का पहुँचा कि पांच सौ रुपये नक़द और पांचसौ का काग़ज़ तमस्सुक की भांति भेजा है कि यह रुपया आपकी भेंटका है अतिशीघ्र रुपया भेजके तमस्सुक फेर लियाजावेगा और कभी २ और भी कुछ आपकी भेंट में कियाजायगा आपसे यह प्रार्थना करताहूं कि अब ऐसा कभी दरबार में लज्जित न कीजियेगा जिससें आपकी कृपासे मैं भी सासानियों में प्रतिष्ठितहूं अमर रुपया और तमस्सुक लेकर कृतकृत्य होगया और चित्त में कुछ बिचार ईश्वर का धन्यबाद किया और कहा कि पहले पहल रुपये की सूरत तो देखी कि इतनी द्रव्य हाथ लगी ईश्वर ने घर बैठे इतनी द्रव्य कृपा करके भेजदी और उस पत्र के उत्तर में बहुतसा उज़रकिया और रुपयों की रसीद लिखभेजी दूसरेदिन अमीर साथियों समेत बादशाही दरबार में आये और फिर भी उसी चौकीपर बैठ गये और सासानी अमीर क्रोधितहो इस उपाय में हुए कि किसी भांति से अमीरहमज़ा को बादशाह की दृष्टि में हलका करदेवें यह जो बढ़ २ कर बैठते हैं उसका फल इनको चखादेवें एक दिन अमीर ने विचारकर रीति के अनुसार उसी चौकी पर बैठना चाहा कि एक मनुष्य वस्त्र और अस्त्र सजेहुए दरबार में आया बादशाह से सलाम किया जब बैठ चुका तब अमीर की ओर तिरछी चितवन से देखकर बादशाह से प्रार्थना की कि मेरे पिता को आपने काबुलपर युद्धकरने के हेतु भेजा और उनके आसन पर एक अर्बज़ादे को बैठाया यह क्या प्रतिष्ठा और न्याय है और इसी जगह हमलोगों की प्रतिष्ठा और आबरू है वह थोड़ेही काल में विजय प्राप्त करके आताहोगा उस समय देखा चाहिये कि यह अर्ब किसमति से इस चौकी पर बैठता है अमीर से यह बात सुनकर रहा न गया बादशाह से यह पूछा कि यह

कौन मनुष्य है और कहां का रहनेवाला है नौशेरवांने कहा यह गुस्तहम का पुत्र पोलाद है बहिराम मल्लखाकान चीनने शिर उठाया था मैंने इसके बाप को उसके पराजय करने के हेतु भेजा है सो वह उसको पकड़ेहुए लिये आता है और जल्द पहुँचेगा यह चन्दन की चौकी जिसपर तुम बैठेहो उसीके बैठनेकी है यह स्थान उसीके बैठनेको कृपा हुआ है इससे तुम्हारा बैठना अच्छा नहीं मालूम होता है कहता है कि यह चन्दन की चौकी मेरे बापके बैठने की है इनके बैठने को क्यों दी है ? अमीर ने कहा कि मैं भी यही चाहताहूं कि इसका बाप मुझसे बल करे जो जीते वह बैठे दूसरा उसकी अधीनताकरे पोलाद यह बात सुनकर क्रोधित हुआ और तिउरी चढ़ाकर बोला कि रे अर्ब ! मेरे बाप से पीछे बल करना पहले मुझसे बल करके पंजा मिलाले और अच्छी भांति बल करले अमीर ने कहा बहुत अच्छा पोलाद अमीर के समीप बैठा और अमीर से पंजा लड़ानेलगा अमीर उसका पंजा जीतगये और वह कुरसी से नीचे गिरपड़ा और लज्जित होगया अमीर पर ख़ंजर खींच के दौड़ा अमीर ने उसका ख़ंजर छीनलिया हुरमुज ने पोलाद से कहा कि ऐ पोलाद ! तेरा क्या मनोरथ है इधर आकर चुपका बैठ बहुत झगड़ा न कर नाहक़ में और दुःख पावेगा दरबार के मध्यमें बेइज़्ज़त करके निकाला जायगा वह नीचा शिर करके हुरमुज के समीप जा बैठा बादशाह ने अमीर से उजरकरके दरबार बरख़ास्त किया संक्षेप यह है कि प्रतिदिन अमीर दरबार में साथियों समेत आता था और जब दरबार उठजाता था अमीर तिलशाद कामस्थान पर जाकर बैठते थे दश बारह दिन के पीछे बादशाह को समाचार मिला कि गुस्तहम बहिराम मल्लखाकान चीन को चारसहस्र पहलवानों समेत बांधलाया है यहां से चारकोस के दूरपर ठहराहै आपकी आज्ञा की राह देखता है जिस समय आज्ञा हो आकर उपस्थित हो आपके चरणों के दर्शन करे जो कि बख़्तक के उरमें अमीर की ओर से मैल भराही था सब प्रकार से उपाय बांधताथा कि अमीर की प्रतिष्ठा भंगकरे बादशाह उसकी अगवानी लेने को गया था और देशों २ इसका चर्चा था बख़्तक ने इसलागपर चाहा कि बादशाह को गुस्तहम की अगवानी को ले जावे और यह बात लोगों के चित्त में जमाई कि बादशाह जो अमीर की अगवानी को गये तो यह कुछ इनकी बड़ाई नहीं जो कोई शाही नौकर विजय प्राप्त करके आताहै उसकी अगवानी करते हैं ग़रज़ कि प्रार्थना करके बादशाह को गुस्तहम की अगवानी के हेतु लेगया और आपभी रकाबके साथ चला मार्ग के मध्य में बुजुरुचमेहरने बादशाह से प्रार्थना की कि अमीरहमज़ा का भी साथ चलना अवश्य है उसके चलने से आपकी सेना सुशोभित होती है बादशाहने उसीसमय अमीर को कहला भेजा कि हम गुस्तहम की अगवानी को जाते हैं तुम भी आओ और अपनी सेना और साथी साथ लाओ बादशाह एक कोसभर नगर से आगेगये होंगे कि देखा गुस्तहम अख्शजरीं का पुत्र गैंड़ेपर सवार मोछोंपर ताव देता झंडों की छाया के नीचे चलाआता है और चितवन

से ऐसा जानपड़ता है कि खाकान मल्लचीन को बँधुआ करके लाने को छोड़ अपने समान दूसरा पराक्रमी नहीं जानता है उसको देखकर सासानीलोग चित्त में प्रसन्न हुए कि अब यह आगया है कि अमीर को नीचे करेगा चित्त के मंसूबे सब निकल जायँगे गुस्तहम ने घोड़े पर से उतरकर बादशाह के तख़्त का पाया चूमलिया और अपनी बहादुरी और बहराम के पकड़ने और लड़ने भिड़ने का समाचार बर्णन किया बादशाह ने ईश्वर का धन्यवाद किया और गद्दी की ओर फिरा गुस्तहम व- ख़्तक की सेना से पीछे रहगया और बादशाह के संग न गया फिरते समय मार्ग में अमीर मिले बादशाह ने अमीर से कहा कि आप भी गुस्तहम से मिलते आइये उस की बातें सुनकर थोड़ी देर जी बहलाइये अमीर ने कहा कि बहुत अच्छा मुझे आप की आज्ञा मानने में क्या इनकार है आपकी आज्ञा मेरे लिये अतिउत्तम है बख़्तक का बृत्तान्त सुनिये कि गुस्तहम से अमीर की चुग़ली करके कहा कि और तो और इस अर्बज़ादे को अपने बल का ऐसा अभिमान है कि वह आपकी बैठक पर बैठ- गया और पोलाद का पंजा भरीहुई सभा में लचाकर अतिलज्जित किया धन्य है कि आप आनपहुँचे शीघ्र चले आइये बग़लगीर होने के समय ऐसा दबाइयेगा कि थोड़ी सी हड्डियां उसकी नर्म होजावें कि जिसमें आपको समझेरहे और फिर आगे कभी आपके सामने अभिमान न करे ऐसी बातें जिसमें आगे न करे गुस्तहम ने कहा कि ऐसाही होगा इतने में अमीर की सवारी आन पहुँची गुस्तहम के डेरे में पहुँचे गुस्तहम अमीर को देखकर पैदल होकर अगवानी के हेतु आगे बढ़ा अमीर भी अपने घोड़े से उतरे दोनों बराबर सामने २ चले भेंट होनेके समय पहले गुस्तहम ने अमीर को अपने बलभर दबाया और स्नेहमय बातें कहनेलगा फिर अमीर ने भी प्रीति विदित करके उसको ऐसा दबाया कि गुस्तहम के नीचे से कई बार वायु निकलपड़ी लज्जित होकर अमीर के कान में कहा कि ऐ अमीर! तुम बड़े पराक्रमी हो इस बात को किसीके सामने न कहना मुझे कभी लज्जित न करना मेरी और आपकी यही प्रतिज्ञा रहेगी अमीर ने कहा कि ऐसाही होगा गुस्तहम और उसकी सेना भी उसके साथ चली और अमीर उसी स्थान में सैर करनेलगे और साथी भी साथही रहे कि एक ओर जो दृष्टि पड़ी देखा कि एक संदूक़ जंजीरों से जकड़ाहुआ पीछे उसके चार सहस्र सवार साथ चले आते हैं पहरेवालों से पूछा कि इस संदूक़ में क्या है? वह बोले कि बहराम मल्लख़ाकान बन्द है जो बड़ा पराक्रमी संसार में प्रसिद्ध है अमीर ने कहा कि बादशाहों और पहलवानों को कोई इस भांति से बन्द करता है? जो इन लोगों को इसभाँति से पकड़कर सताता है सन्दूक़ को पृथ्वीपर रखवाया और शीघ्र अपने नौकरों से खुलवाया देखा तो उसमें एक सुन्दर मनुष्य बन्द है और सांकरों से जकड़ा हुआ पड़ा है अमीर ने उसको संदूक़ से निकालकर बन्दि से छोड़ाया और अतर गुलाब उसके मुखपर छिड़का और शरबत सेब अनार के जो बहिंगीपर साथ थे उसके मुखपर छिड़काया जब उसको चेत हुआ अमीरने

पूछा कि ऐ बहादुर! तू कौन है? उसने कहा कि आपके घरपर पहुँचकर अपना ब्योरा कहूँगा अभी मुझमें इतना बल नहीं है कि आपसे बातें करूं मेरे मुख से बातें नहीं निकलती हैं अमीर ने एक घोड़ा मँगवाकर उसे सवारकिया और जितने बँधुये थे सबको छोड़दिया और अतिप्रतिष्ठा से अपने साथ लेचला और शीघ्र अपने डेरे में पहुँचे और बहरामखाकान चीन को अपने पलँगपर लेटाके सुगन्ध सुँघाने की आज्ञा दी और हरीरह बनवाके पिलाया और उसके साथियों के वास्ते अच्छा खाना बनवाके भलीभाँति से खिलाया जब खाकान मञ्चीन के चित्त और हवास ठीक हुए तो अमीरसे कहा यद्यपि आपका समाचार आपसे पूछना अनुचित है परन्तु तुम्हारे चेहरा से रियासत और बड़प्पन और प्रताप साफ़ २ विदित है परन्तु यहाँ कोई दूसरा इसके योग्य नहीं कि आपका वृत्तान्त उससे पूछूं इस कारण आपही से प्रार्थना है कि आप अपना वृत्तान्त और नाम निशान बतलाइये कि मुझे जीवदान दिया नहीं तो कोई क्षण में मरजाता बहुतदिनों से मैं इस संदूक़ में बन्द था ईश्वर ने मुझे आपतक पहुँचाया वह दिन दिखाया मालूम होताहै कि कुछ दिन अभी मेरा जीना है अमीर ने कहा कि ऐ बहराम! तुझपर गुस्तहम क्योंकर ग़ालिब आया और तू उसके बश में किसभाँति से हुआ? उसने बर्णन किया कि संग्राम में मैंने उसे गिरादिया और अपने अधीन करलिया था और सेना को मारके उसको पकड़ा था चार वर्षतक यह मेरी अधीनता में रहा एकादिन मैं शिकार खेलता हुआ दूर निकल गया और सेना मेरी मुझसे दूर थी प्यासा जो हुआ तो इससे पानी मांगा इसने अवसर पाके बेहोशी मदिरा मिलाकर पानी मुझे पिलादिया जब मैं अचेत होगया अपने मित्र स्नेहियों को जो मेरीसेना में मिलेहुएथे बोलाया और मुझको पकड़के संदूक़ में बन्दकिया और बिविधप्रकार का कष्ट दिया यह सुन अमीर ने उसको धैर्य और ढाढ़स बँधवाया बहराम ने प्रसन्नहोकर कहा कि ईश्वर धन्य है कि जिसका सप्तद्वीप में कोई बराबरी करनेवाला नहींहै उसकी रक्षा में प्राप्त हुआ और जब वह समाचार गुस्तहम को पहुँचा कि अमीर बहराम मञ्चखाकान चीन को बँधुओंसमेत अपनी सेना में लेगये उसको सेनासमेत बन्दि से छुड़ादिया और उसको पहुनई और शिष्टाचार से अति प्रसन्न किया यह सुन आग होगया और उसी समय बादशाह से जाकर ब्योरासमेत सब समाचार कहा बादशाह को भी अमीर की यह बात बहुत बुरी मालूम हुई अमीर को बुलाकर कहा कि ऐ अबुअला! तुम जानते हो बहराम कासा कोई बैरी सप्तद्वीप में न होगा मेरा कुछ बिचार न किया तुमने क्या समझके उसे छोड़ दिया? अमीर ने कहा कि कृपानिधान! आप सप्तद्वीप के बादशाह हो जो पहलवानों और बहादुरों को इसी प्रकार से छल करके नीचे किया करेंगे तो लोग निडर होकर गाली देंगे इतिहासों में लिखा जायगा अब्दुल आबिद आदि बादशाहों की सभामें चर्चारहेगी कि नौशेरवां ऐसा नामर्द था कि उसके समय में पहलवान छल से बँधुआ होकर क़ैद रहते थे उसके नौकर और

अधिकारी पहलवान आदि छल करनेके हेतु आरूढ़ रहते थे और बहराम कैसा कौनसा पराक्रमी है कि मैदान के बीच में विजय नहीं होसकती बादशाह ने कहा बहराम कहां है? उसे बुलवाओ दरबार में हाज़िर करो कि मैं उससे उसके पकड़े जाने का हाल पूछूं उसका वृत्तान्त मैं अपने कानों से सुनूं अमीर बहराम को अपने डेरे पर छोड़गये थे उसी क्षण उसे बुलाया बादशाह ने उसकी ओर देखकर कहा कि गुस्तहम तुझे बहादुरी से पकड़ लाया या नामर्दी से अधीन और बन्द किया था बहराम ने प्रार्थना की कि आप यही देखलेवें कि मैंने चार महीने से लङ्घन किया है अन्न और पानी की सूरत नहीं देखी है उसपर सन्दूक़ में बन्द और सांकरों से जकड़ाहुआ बँधुआ आता था बाहर की हवा को तरसता था जो अमीर मुझे थोड़ी देर कटेहरे से न निकालते तो मैं मर चुका था इससे विदित है कि अत्यन्त निर्बल हूं परन्तु इस अवसर में भी गुस्तहम मेरे सामने आवे तो उसके हाथ से तलवार न छीनलूं तो दण्ड के योग्य समझाजाऊं गुस्तहम सासानियों समेत उस समय दरबार में हाज़िर था बादशाह ने कहा कि यह क्या कहता है? गुस्तहम ने लज्जित होकर नीचे शिर कर लिया और कुछ भी उत्तर न दिया बादशाह ने फिर बहराम से पूछा कि अमीरहमज़ा से अपना बल करेगा वह बोला कि हाज़िर हूं पहलवानी का नाम करके मुख क्यों मोड़ूं अमीर ने कहा कि कृपानिधान! यह अभी अत्यन्त निर्बल है इसमें बल का चिह्न भी नहीं है जो चालीस दिनतक अच्छी भांति से खाना पावे तो फिर भी उसीभांति का होजावेगा उस समय इसका बल देखने के योग्य होगा और यह भी जानकर अपना बल मुझसे करेगा बादशाह को अमीर की यह बात बहुत पसन्द हुई अमीर और बहराम दोनों को पारितोषिक देकर बहुत कृपा की और आज्ञा दी कि ऐ हमज़ा! बहराम तुम्हारेही पास रहे उसकी सेवा और खाना तुम्हारेही अधीन हो चालीस दिन के पीछे तुम दोनों को कुश्ती लड़ाके दोनों का बल देखेंगे जब चालीस दिन व्यतीत होगये तब इकतालीसवें दिन अमीर बहराम समेत बादशाह के पास गया और प्रार्थना की कि बहराम से लड़ाइये भली भांति खापीकर तैयार हुआ है कुश्ती देख लीजिये बादशाह ने बहराम से पूछा कि तेरी क्या इच्छा है? वह बोला कि मैं हाज़िर हूं आपकी आज्ञा क्योंकर भङ्गकरूं बादशाह ने कहा कि अच्छी बात है हम भी तुमलोगों की लड़ाई देखेंगे अखाड़ा बनने के लिये आज्ञा दी वह शीघ्र बनायागया अमीर और बहराम बाघ के खाल की जांघिया और टोप पहिन लँगोट कस ताल ठोंक परस्पर बल करनेलगे दोनों ने गर्दनों में हाथ डाल कर एक टक्कड़ ऐसी मारी कि जो पोलादपर टक्कड़ पड़ती तो चूना होजाता किसीके मस्तक में कुछ न जानपड़ा फिर परस्पर में दोनों के दावँ पेंच चले परन्तु किसीका लङ्गड़ किसीसे न उखड़ा और चित्त होने की तो क्या चर्चा थी? अन्त में अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर बहराम को उठाकर शिर से ऊंचा किया बहराम ने कहा कि हे अमीर! मालूम हुआ कि तुझमें ईश्वरकृत बल है

संसार में तुझसा बली नहीं है आपके अधीन और सबप्रकार से मैं सेवकहूं मुझे पृथ्वी पर गिराके इतने मल्लों में लज्जित न कीजिये अमीर ने हलके से उसे पृथ्वीपर रखदिया चारों ओर से अमीर की प्रशंसा होने लगी बादशाह ने भी बड़ाई की अमीर ने कहा कि ऐ बहराम ! अब बादशाह की सेवा करना अपना मूलधर्म जानो और सदा अपना मालिक समझो उसने कहा कि मैं आपको छोड़ और किसीके पास नहीं रहूंगा बादशाह ने कहा कि तुम्हारे पास रहा तो मेरेही पास है और दो खिलअत मँगाकर अमीर और बहराम को दिये और अमीर बहराम को अपने डेरे में लाये और उनको अच्छी भांति आदर और व्यवहार से प्रसन्न किया और विविध प्रकार से शिष्टाचार करनेलगा और उसके रहने के लिये अलग स्थान बनवादिया अपनी सवारी में से चालीस घोड़े और बहुत से ऊंट आदि बहराम को दिये और चौथाई हिस्सा हुश्शाम की लूट का दिया और एक विनयपत्र में सब समाचार लिखकर अमर के साथ ख्वाजे अब्दुलमतलब के पास भेजा अब सासानियों का हाल सुनिये कि बख़्तक समेत सब गुस्तहम के निकट जाकर कहने लगे कि हमलोग हमज़ा के सामने प्रतिष्ठाहीन होगये हैं जो हमज़ा के निकालने के लिये कोई उपाय न करोगे तबतक हमलोगों को चैन न मिलेगा किसी भांतिसे ज़िन्दगी न होगी दिन २ बादशाह की कृपा उसपर होती है और हमलोगों की प्रतिष्ठा घटती जाती है गुस्तहम ने कहा कि बल में तो हमज़ा से कोई न जीत पावेगा परन्तु मैं दो चार दिवस में छल करके उसे मारूंगा उसका चिह्न भी मिटा दूंगा रात को तो यह सलाह हुई प्रातसमय गुस्तहम घोड़े पर सवार होकर अमीर के निकट गया और खुशामद करके आगे आया और अतिदीनता से अधीनी करनेलगा अमीर ने उसकी बहुत खातिर की और दोनों सवार होकर बादशाह के दरबार में आये और मार्ग में बहुधा बातें मित्रता की करतेगये जब अमीर दरबार से उठकर आप तम्बूकी ओर आये गुस्तहम भी अमीर केसाथ जाकर तम्बूतक पहुँचा आया प्रतिदिन दोनों पहर गुस्तहम अमीर के पास जाता और विविध प्रकार की खुशामदियां करता होते २ अमीर को भी गुस्तहम की ओर से कोई खटका चित्तमें न रहा एक दिन गुस्तहम ने अमीर से कहा कि आपकी जितनी कृपा मेरे ऊपर है सकल नगर में विदित है इस सूरत में मेरी सेवा करने और आपकी कृपा होनेका समाचार प्रकट करना अवश्य है इस हेतु से मेरी यह इच्छा है कि मेरे बाग़ में चलकर दो चार दिन आनन्दमङ्गल कीजिये और मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाइये अमीर जो निष्कपट और निश्छल थे उसका न्योता अङ्गीकार करलिया वहां पर यह रीति थी कि बादशाह सातदिन दरबार करते थे और सात दिन मकान में स्त्रियों के साथ विहार करते थे जब बादशाह का समय आन पहुँचा तब गुस्तहम ने अमीर से कहा कि इस सप्ताह में छुट्टी है आप मेरे बाग़ को चलें यह सप्ताह आप ख़ुशी आनन्द समेत व्यतीत करें तो और लोगों में मेरी प्रतिष्ठा अधिक होगी अमीर

बहराम मलिकखाकान चीन को साथ लेकर मुक़बिलआदि साथियों समेत गुस्तहम के बाग़ की ओर बड़े प्रताप से चला और आनन्दित होकर बाग़ के निकट पहुँचा गुस्तहम ने बाग़के भीतर अच्छे २ वस्त्रआदि अतलस व कमख़ाब के बिछाये थे और बारादरी में बिछौना बादशाहों कासा बिछवा रक्खा था अमीर उसके हौसिले को देख कर अतिप्रसन्न हुआ और अपने मित्रों से उसकी प्रशंसा करनेलगा. गुस्तहम ने विविध प्रकार की मेवा अमीर के आगे धरी और मदिरावालों को बुलाया और मदिरा के प्याले चलनेलगे और प्रत्येक मनुष्य इस तमाशे को देखनेलगा और अमीर के आनेके पहले चारसौ पहलवान छिपाकर बैठा रक्खे थे और उनसे कहदिया था कि जब मैं तरऊपर तीन हांकें दूं तब तुम शीघ्र पहुँचकर अमीर और उसके साथियों को तलवार से मारडालना और बुजुरुचमेहर और बादशाह का कुछ डर न करना संक्षेप यह है कि जब गुस्तहम ने देखा कि आधीरात का समय आया और अमीर साथियों समेत ऐसे मद के बश हुआ कि काला और उजला नहीं पहिचान सका उसने अपनी सलाह के अनुसार तीन हांकें दीं और तीन तालियां बजाईं लोग माड़े से निकले और गुस्तहम के साथ होकर अमीर के शीशपर आये गुस्तहम ने अमीर से आंखें भिड़ाकर कहा कि ओ अबज़ादे! तूने बहुत शिर उठाया था और अमीरों और अधिकारियों को अतितुच्छ समझता था देख अब तेरी मृत्यु निकट आन पहुँची यह कहकर अमीर के शिरपर जापहुँचा और एक तलवार से मारा बहराम यद्यपि नशे में चूर था परंतु अमीर पर जापड़ा और आपको ढाल बनगया वह तलवार गुस्तहम की अमीर पर तो न पड़ी बहराम की पीठ में लगी इस ओर से उस ओरतक खुलगया सब आंतें पेटसे बाहर निकलपड़ीं मुक़बिल ने चतुराई से मदिरा बहुत कम पान की थी थोड़ा २ पीता था और सभा का रङ्ग देखरहा था शीघ्र धनुष धारण करके बाण वर्षाने लगा और इतनेही कालमें सौ जवान पृथ्वी पर गिरादिये बाग़में लाशों के ढेर लगादिये गुस्तहम ने चित्तमें विचारकिया कि हमज़ा का काम तो मैंने तमाम करदिया यहां रहना मुक़बिल के हाथसे मौत मांगना है अपने मित्रों समेत जो मुक़बिल के हाथसे बचे थे जीव लेकर भागकर किसीओर चलदिया जिस समय अमीर का मद दूर हुआ देखा तो सभाका ऐसा ढंग होगया है कि सब बारादरी रुधिरसे लालहोरही है बहराम एक ओर पेटफटा सिसकताहै और सौ जवान से अधिक मरेहुए पड़ेहैं मुक़बिल ने वह समाचार बर्णन किया कि उसने आपके साथ अच्छी भांति मित्रता निबाही जिससे आपको मारना चाहा और उसके छल का चर्चा सब कहीं छागया कि गुस्तहम ने बाग़में बुलाकर न्योता के बहाने से अमीर को मारडाला बादशाह सुनकर अति सशोक हुआ और शीघ्र हुरमुज़ ताजदार और बुजुरुचमेहर और बख़्तक को भेजा कि हमज़ा की ख़बर लो और उनकी शीघ्र दवा करो अलकमय सातूरदक को तीनसहस्र मनुष्यों से गुस्तहम के पकड़ने के हेतु भेजा और बहुतसा पारितोषिक देनेको कहा गुस्तहम यह सुनकर नगर से भागा और।

शाहज़ादा हुरमुज़ और बुज़ुरुचमेहर वख़्तक समेत गुस्तहम के बाग़ की ओर गये और बाग़ में पहुँचे अमीर को अच्छीभांति देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया और बहराम को घायल देखकर अत्यन्त शोच किया अमीर ने ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर से कहा कि आप बैद्य हैं इसकी शीघ्र दवा कीजिये जो बहराम की जान न बचेगी तो मैं मक्केकी सौगन्द खाकर कहताहूं कि सासानी को जीता न छोड़ूंगा बुज़ुरुचमेहर बहराम का कठिन घाव देखकर बहुत घबराया दवा इलाज तो क्या यह सुनकर अचेत होगया इतने में अति प्रवीण ख़्वाजे अमर भी आये और आनन्दित होकर ख़्वाजे अब्दुलमतलब का समाचार अमीर को तो सुनाया परन्तु बहराम का हाल देखकर रोनेलगा और अमीर से कहनेलगा कि क्यों साहबकिरां! इसीभांति का सलूक होताहै जिसपर उपकार करते हैं उसे इसी भांति का दण्ड देते हैं अमीर ने कहा कि ऐ अमर! यह समय सिखाने का नहीं है बहराम के अच्छा करने का उपाय किया चाहिये अमर ने ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर से कहा कि आप ईश्वर की कृपा से बड़े हकीम हैं आपने क्या औषध बिचार की है और मैंभी सोच रहाहूं ख़्वाजे ने कहा कि इसके भारी घाव लगा है इसकी आंतें पेट में जावें और अपना स्थान पावें तो टांके लगें और आंतों का पेटमें जाना कठिनहै और सब प्रकार से इसमें कठिनता जान पड़ती है और दिलपर हाथ लगाने से शीघ्र मरजावेगा फिर कुछ न बन आवेगा और यह हो नहींसक्ता है कि आंतों में हाथ न लगाया जावे और घाव सीनेका कोई उपाय होजावे अमर बोला कि ऐ ख़्वाजे! यद्यपि आप मेरे गुरु हैं तदपि बैद्य होना अति कठिन है और आजकल कोई मनुष्य इस गुणमें निपुणता नहीं रखता है यह कहकर एक छुरा जेब से निकाल बहराम को दोनों पांवों से दबाकर हाथ पेटकी ओर बढ़ाया ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने अमर से पूछा कि क्या मनोरथ है? अमर ने कहा कि जितनी आंतें बाहर निकली हैं इनको हाथकी सफ़ाई से साफ़ करदूंगा जिसमें घाव सियाजावे फिर मलहम लगाकर अच्छा करदूंगा ख़्वाजे ने यह सुनकर आश्चर्य किया कि यह क्या कहताहै? इस बिचारे की जान लेने का मनोरथ किया है बहराम ने अमरकी जो ये बातें सुनीं सन्नाटे में आया ज़िन्दगी से निराश हुआ और अत्यन्त घबराया ठंढी सांस ज्यों उसने भरी कि सब आंतें पेट में अपने २ स्थान पर जापहुँचीं अमरने ख़्वाजे से कहा कि लीजिये अबतो आपका अभिप्राय प्राप्त हुआ आप देखिये कुछ भी कठिनता न पड़ी टांके दीजिये घाव सीलीजिये बुज़ुरुचमेहर ने अमर की बुद्धि की प्रशंसा की और देखनेवाले हँसते २ बेचैन होगये ख़्वाजे ने बहराम का घाव सिया और शर्बत पिलाने की आज्ञा दी कि बेकार रुधिर नष्ट होजावे और अमीर से कहा कि बहराम के हाथ पांव बँधवाइये कि हिल न सके नहीं तो टांके टूटजावेंगे उस समय यह न बचेगा और मैं प्रति दिन दोनों काल देखने को आयाकरूंगा और मन लगाकर इसकी दवा करूंगा यह कहकर बुज़ुरुचमेहर और बख़्तक व हुरमुज़ताजदार अमीर से बिदा हुए और अपने घर

को चले अमीर बहराम को प्यार करता था अपने मित्रों समेत वहीं रहा बुज़ुरुच-मेहरने यह सब समाचार बादशाह से कहा बादशाह ने कहा कि ऐ ख़्वाजे! यहां बुग़दाद से अच्छा कोई स्थान नहीं है और उस मकान से उत्तम नगर में और कोई मकान नहीं है मैं चाहताहूं कि हमज़ा को वहां कुछ दिन रक्खूं और अपनी सामर्थ्यभर उसका आदर और शिष्टाचार भी करूं और कुछ वस्तु उसे देवें कि उसके चित्त का शोच दूर हो ऐसा न हो कि हमज़ा समझे कि मेरी सलाह से यह काम हुआ है और मुझे इतना दुःख दिया है और मैं ईश्वर की सौगन्द खाकर कहता हूं गुस्तहम के इस मनोरथ का हाल मुझे कुछ नहीं मालूम था और मैंने इस वृत्तान्त को सुनतेही प्रतिस्थान उसके पकड़ने के हेतु मनुष्य भेजदिये हैं और सब ओर परवाने और हरकारे भेजे हैं यह कहकर उसी समय अमीरपर पुण्य करने को सामान भेजा अपने आने का मनोरथ भी किया दूसरे पहर बुज़ुरुचमेहर जो बहराम के देखने के लिये गये अमीर से कहा कि बादशाह ने आज्ञा दी है कि मैंने छः अधिकारी गुस्तहम के पकड़ने के लिये भेजे हैं और छिपेहुए परवाने और हरकारे भी रवाना किये हैं जिस समय वह दुष्ट आवेगा उसी सायत उसका पेट फाड़ कर भुस भराजावेगा और मैं ईश्वर का अत्यन्त धन्यवाद करताहूं कि तुमको उस खल के हाथ से किसी प्रकार का दुःख नहीं पहुँचा ईश्वर ने बड़ी कृपा की और यह वस्तु आपको दी है और कहा है कि हमारी ओर से बहराम का भी समाचार पूछना और मुझसे दवा करने को बहुत ताकीद की है ऐसा उपाय करो जिसमें बहराम का घाव जल्दी अच्छा होजावे और कहा है कि अब मेरी यह इच्छा है कि इस सप्ताहभर हमज़ा को लेकर बुग़दाद की सैर करूं और वहीं मित्र और उमराओं समेत रहूं किन्तु बख़्तक और अमर न हों क्योंकि ये दोनों उपद्रवी हैं अमीर ने मान लिया दूसरे दिन अमीर को बादशाह ने बुग़दाद में जाकर बुलवाया और अपने मसनद के निकट अमीर के लिये बैठका बनवाया साहबकिरां आदी और मुक़बिल को साथ लेगये बादशाह के पास पहुँचे बाग़ को देखा कि चार कोस का लम्बा चौड़ा व बहुत सुशोभित है और इस बाग़ की प्रशंसा इतिहास के बड़े होनेके कारण संक्षेप वर्णन कीगई क्योंकि पहले इस बाग़ की तारीफ़ होचुकी है अमीर बादशाह के दायें ओर हुरमुज़ताजदार के गोद में बैठे और मुक़बिल बुज़ुरुचमेहर की बाईं ओर बैठे और नाचनेवाले सजधज से आये और सभा सब प्रकार से शोभित हुई मङ्गलाचार होनेलगा पहले दिन बादशाह ने एक बारादरी में आनन्द किया जब दिन व्यतीत हुआ और सूर्य अस्त हुआ और चन्द्रमा उदय हुआ उस समय मदिरा के प्याले चलने लगे बादशाह ने एक प्याला मदिरा का लेकर अपने हाथ से अमीर को कृपा किया अमीर सलाम करके उसको पीगये फिर तो और लोग घूम २ कर और भर २ कर मदिरा देनेलगे यहांतक कि सबके सब नशे में मग्न होगये और वेश्यादिक नृत्य करनेलगीं और इस प्रकार से गाया बजाया कि सबके सब चित्र

कैसे लिखे होगये अब आगे का समाचार सुनिये कि जब अमर अय्यार ने एक रात दिन तक अमीर को न देखा घबड़ाकर मकान से बाहर निकला, ढूंढ़ते और खोज करतेहुए बाग़ के निकट पहुँचा वहां देखा कि आदी सजे सजाये कुरसी पर बैठा मदिरा पीरहा है और लोग सकल प्रकार की गज़कें उसके पास ले आते हैं वह प्रसन्न होकर खाता है और ऐसा प्रबन्ध है कि पक्षी भी बाग़ के दरवाज़े तक उड़कर जा नहीं सक्ता है लोगों से पूछा कि यह बात क्या है? अमीर तो बाग़ के भीतर हैं आदी क्यों बाहर बैठा है किसीनें कहदिया कि बादशाह की आज्ञा है कि अमर और वक़्तक बाग़ में न आनेपावें इस निमित्त अमीर ने आदी को दरवाज़े पर बैठाया है अमर आदी से सलाम करके कुरसी पर बैठगया आदी ने पूछा कि ख़्वाजे किस हेतु से आप आये हैं बोला कि दो दिनसे आपको न देखा था आंखों में अँधियारा छागया गिड़ता पड़ता तुम्हारे देखने को आयाहूं यद्यपि आप मुझको भूल गये परन्तु मैं नहीं भूला आदी ने मदिरा और कबाब अमर के आगे खाने के निमित्त रखदिया अमर ने एक प्याला पिया और आदी से कहा कि आज मैंने एक लाल मोल लिया है देखो तो मैं ठग तो नहीं गया आदी अपने मनमें प्रसन्न हुआ कि अमर मुझे जौहरी जानता है तब तो लाल परखवाने आया है ऐसा रत्न मेरे देखने के हेतु लाया है आदी बोला कि ख़्वाजे! तुमसे जौहरी कौन होगा तुमको कौन ठग सक्ता है? अमर ने जेब में हाथ डालकर मुट्ठी में रेत निकाली और आदी की आंखों में झोंकदी आदी तो आंखें मलने लगा और लोग घबराकर आदी की ओर देखने लगे और उसके मुँह और कपड़ों की राख झाड़ने लगे अमर कूदकर बाग़ में गया आदी ने झट आंखें धोकर पोंछीं और गर्द गुबार से साफ़ किया और सब लोगों से पूछा कि अमर कहां गया? कोई न बता सका कि किधर को गया आदी समझा कि मेरे डरसे भागगया बाग़ को अमर देखकर प्रफुल्लित होगया कि उमर भर ऐसा बाग़ देखा सुना न था सैर करता हुआ उस महल की ओर गया जहां बादशाह और अमीर बैठेहुए थे और उस महल के निकट एक सुन्दर नहर थी उसी स्थान में एक बृक्ष लगाहुआ था उसके तले बैठकर दुतारा मिलाकर गानेलगा अमर का गाना मृतक को जिलाता था अमीर के कान में जो उसकी तान का शब्द गया तो कहा कि हमने आदी को मनाकिया था कि अमर को बाग़ में न आने देना फिर यह यहां क्योंकर आया जाओ आदी को तो बुलालाओ बादशाह ने अमीर को क्रोधवान् देखकर कहा कि आदी को बुलाना कुछ काम नहीं है हमने अमर का अपराध क्षमा किया अमर को बुलालाओ उसके बुलाने के हेतु चोबदार भेजो जो अमर को बुलावे चोबदार अमीर के कहने से अमर के निकट गया और कहा कि तुमको बादशाह बुलाते हैं उसने उत्तर दिया कि जिस सभा में बादशाह और अमीर से लोग बैठे हैं वहां मुझ दुखिया का क्या काम है? जो चालाकहूं और ऐसी सभा जहां बिबिध प्रकार के राग और रङ्ग और मङ्गलाचार होरहा है वहां दीन दुखिया

का क्या काम है ? मैंने बुग़दादकी प्रशंसा सुनी थी इस निमित्त मैं भी आयाहूं और एक कोने में बैठाहूं और फूल का खिलना और बुलबुलों का बोलना सुनरहाहूं मैं जो जाऊं तो कदाचित् किसी का चित्त मुझ से अप्रसन्न होजावे तो मैं उसके हाथ से कष्ट सहूं इससे अच्छाई और भलाई केवल अलगही बैठने से होती है ॥

दोहा। यहि संसारमें स्वर्ग है, एकान्तहि के माहिं। संगति बुरी है नर्क ते, ताते कोहि विधि जाहिं ॥

चोबदार लाचार होकर फिरआये और उसकी बातें बादशाह के सामने वर्णन कीं बादशाह सुनकर अत्यन्त हँसे और वहांके सबलोग हँसते २ लोटगये बादशाह अमीर का हाथ पकड़ेहुए महल से बाहर आये और फुलवारी की सैर करतेहुए उस ओर को चले कि जहां अमर बैठा गारहाथा अमर ने देखा कि बादशाह और अमीर सभासमेत इधर को आते हैं एक फ़लांग मारकर बादशाह के चरण छुये और आशीर्वाद देकर कहनेलगा कि मुझको आपसे यह आश न थी कि मुझे सभा में आने के हेतु मना करेंगे और हमज़ा को तो क्या कहूं ? यह तो बड़े मित्रपालक व सुशील हैं कि अकेले मज़े उड़ाते हैं और थोड़े से समाचार पर जीवारों को भूलजाते हैं बादशाह हँसपड़े और अमर का हाथ पकड़कर महल में लेगये जब तख़्त पर बैठे अमर को मदिरा बांटने के हेतु आज्ञा दी अमर प्याला भर २ कर पिलानेलगा रात भर तो मदिरा पान में व्यतीत किया जब सबेरा हुआ उस समय अमर नये २ सप्तबन्द को जोड़कर ऐसा बजाया और अतिमृदु बैन से गाया कि बादशाह और अमीर सभासमेत फूट २ कर रोनेलगे और रूमाल पर रूमाल अमर पर बर्षने लगे और बादशाह ने मोतियों से अमर का दामन भरादिया और बहुत कुछ पारितोषिक दिया और वह महल बहुत सुन्दर सुशोभित सजाहुआ था वहां अमीर को लेकर जाबैठे अब दो बातें बख़्तक की मैं वर्णन करके सुननेवालों को हँसाता हूं वह बुग़दाद में अमर के जाने की ख़बर सुनके अचेत होगया पेट पकड़के फिरने लगा कि यह क्या अन्धेर है कि अमर बुग़दाद में पहुँचा और मैं न जासका ईश्वर जाने अमर जब मुझे वहां देखेगा तब मेरे निमित्त क्या करेगा ? यह सोचकर कुछ कमख़ाब आदि के थान नाव में रखकर घरसे बाहर निकला दरवाज़े पर पहुँचा आदी से मिलाप करके मित्रता विदित करनेलगा आदी ने पूछा कि आप किस हेतु आये हैं कहा कि आपके निमित्त कुछ पदार्थ भेंट लायाहूं इसे अङ्गीकार कीजिये और मुझे कृपा करके बाग़ के भीतर जाने दीजिये आपकी मुझ पर बड़ी दया होगी आदी ने यह सुनकर अत्यन्त क्रोध किया और जल भुनकर कहनेलगा कि बख़्तक क्यों अभाग्य दशा आई है मुझे तूने लालची बनाया कि लालच देखाकर बाग़ में जाऊं जो तुझे प्रतिष्ठासमेत घरजाना हो तो अच्छी बात नहीं तो अभी तुझे सिपाहियों से निकलवादूंगा बख़्तक मानहीन होकर घर फिर गया दिनभर तो रो धो काटा जब रात्रि हुई एक नमदा ओढ़कर और बग़ल में बकुचा अपने कपड़ों का चोरों की भांति छिपा बुग़दाद की ओर गया और दीवारके नीचे पहुँचा और गठरी तो बाग़ के

भीतर फेंकदी और आप नाबदान के मार्ग से घुसा अब ख़्वाजे अमर का हाल सुनिये कि उसे सजेहुए महल में बादशाह की आज्ञा से मदिरा देरहाथा कि पसुली फड़की और ढिठाई की आग हृदय में भड़की अर्थात् चित्त में यह बिचार किया कि इस भांति से गुस्तहम ने भी अमीर का न्योता कियाथा ऐसा न हो कि वही सामान यहां भीहो और जगह चलकर हाल लेना चाहिये इधर उधर देखा तो कोई बहाना करके महल से निकला और रविशों पर फिरनेलगा और फुलवारी की सैर करता इधर उधर देखता हुआ दरवाज़े के निकट जापहुँचा आदी उसी समय किसी से कह रहाथा कि आज बख़्तक मुझे घूस देने को आयाथा मुझे भी अपने बाप के समान नमकहराम समझकर लालच से बाग़ में जाया चाहता था यह बात जब अमर ने सुनी चौंक उठा जिस समय बख़्तक इस मनोरथ से यहांतक आया था तो अवश्य किसी न किसी भांतिसे वह बाग़में आवेगा अब अच्छी भांति से झाड़ी आदि सब देखनेलगा और बाग़ में ढूंढ़ना आरम्भ किया एक दृष्टि उसकी गठरी पर जापड़ी दूरसे देखा कि गठरी दीवार के तले पड़ी है उसे जो खोला तो उसमें बख़्तक के कपड़े दीख पड़े उसका मनोरथ पूर्णहुआ अति कृतकृत्य होगया फूला न समाता था गठरी तो एक कोने में बृक्षों के पत्तों से छिपादी और आप ढूंढ़नेलगा कि इस बाग़ में किधर से आनेका रास्ता है यहां कब किसी का निबाह है जो ध्यान लगाकर नाबदान में देखा तो कोई मनुष्य शीश निकालकर इधर उधर देखरहा है और फिर शिर को खींच लेता है समझा कि यही बख़्तक है समझा कि यह वही निर्बुद्धि है ख़्वाजे अलफ़पोश जो बाग़वानों का मालिक था उसके पास जाकर कहा कि तू सुख नींदें लेरहा है वहां बाग़ में एक चोर नाबदान के मार्ग से घुसा चाहता है मैंने आहट पाकर तुझे ख़बर दी है अब तू जान और तेरा काम जाने वा और जो किसी प्रकार की ढील हुई तो तू है और बन्दीख़ाना है वह घबराकर कुछ माली साथ लेकर बेलचे समेत उठा और बाग़ की दीवार के नीचे लुकरहा ज्योंहीं बख़्तक नाबदान से बाहरनिकला मालियों ने लिपटकर पकड़लिया यद्यपि उसने बहुतसा कहा कि मैं बख़्तक हूं किसी ने न माना और एक बृक्ष की डाल में लटकाकर मार पीट करनेलगे अच्छी भांति से उसकी ख़बरली जब अच्छी भांति से हड्डियां बख़्तक की नर्म होचुकीं और पीठ और पसुलियां फूलचुकीं अमर ख़्वाजे अलफ़पोश से पुकार कर कहनेलगा कि ख़्वाजे अलफ़पोश क्या है? यह हल्ला गुल्ला कैसा होता है? उस ने कहा एक चोर पकड़ा है और उसे बृक्ष में बांधा है बख़्तक ने जो अमीर की आवाज सुनी अमर को पुकारा और दूसरी ज़बान में कहनेलगा कि ख़्वाजे अमर इन दुष्टों के हाथ से छुड़ा मैं उमरभर तुम्हारा उपकार मानूंगा किसी काम में तुम से मुहँ न फेरूंगा अमर ने ख़्वाजे अलफ़पोश के निकट आकर कहा और बख़्तक के छुड़ाने के लिये सिफ़ारश करनेलगा कि सच यह बख़्तक बादशाह का मन्त्री है ईश्वर ने इसे किस दुःख में फँसाया शीघ्र छुड़ादो जितने बाग़वान थे सब कहने

लगे कि ख्वाजे साहब यह आप क्या कहते हैं ? बख़्तक की क्या कमबख़्ती है कि इस प्रकार से नङ्गा होकर नाबदान के बीच में होकर आवेगा वह बादशाह के निकट रहताहै आपको क्यों चोर बनावेगा यह ठीक जानो कि यह चोर है और यह बड़ा पराक्रम करके आया है बाग़ में आनेका मज़ा तो चक्खे और जो तुमने कहा उसेभी हमने माना कि यह बख़्तक है तौ भी इस समय नहीं छोड़ेंगे प्रातःकाल बाग़ से बाहर न जानेदेंगे बादशाह के सामने जैसा होगा वैसा होगा बख़्तक ने अमर से कहा कि मेरे वस्त्र देते तो मैं पहिनलेता अमरने कहा कि मैं तेरे वस्त्र नहीं जानता कि कहां हैं और जो इन लोगों ने लिये भी होंगे तो इनसे मेल भी नहीं है जो उन से दिलवादूं और तुझे पहिनादूं यह कहकर अमर बादशाह के समीप गया तमाम रात मदिरा बांटतारहा जब प्रातःकाल हुआ तब बादशाह से विनय की ॥

सोरठा । ऋतुवसन्त नीआहि, बाग़ महक सबही रह्यो । तुमन लिये क्या क्याहि, बुलबुल मृदु बोलत वचन ॥

ठण्ढी वायु चलरही है और प्रातःकाल फूल फूलरहे हैं बादशाह के जी में आया कि अमीर का हाथ पकड़कर सभा समेत बाग़ की सैर करने के लिये चलें और अमर भी साथ होकर बादशाह को उसी ओर लाया जहां बख़्तक नङ्गा वृक्ष में बँधा हुआ था बख़्तक बादशाह को देखकर गुलमचानेलगा कि कृपानिधान ! मालियों ने मेरा यह हाल किया और उधर से ख़्वाजे अलफ़पोश ने आकर बिनय की कि रात को एक चोर नाबदान के मार्ग होकर बाग़ में आया था नौकरों ने उसे वृक्ष में बांधरक्खा था जब चार चोट की मार पड़ी तब कहताहै कि मैं बख़्तक बादशाह का मन्त्री हूं कुसमय के कारण यहां आनफँसाहूं बादशाह और अमीर ने जो ध्यान करके देखा तो सचमुच बख़्तक वृक्ष में बँधा हुआ देखपड़ा अमर ने बढ़कर कहा कि आज बाग़ में नया फूलफूला बख़्तक तो बड़ा समझदार और बुद्धिमान् है उस की कम्बख़्ती थी कि यहां आता और आपको आफ़त में फँसाता शायद कोई भूत उसके भेष में आपको दिल्लगी और तमाशा दिखारहा है और सन्देह नहीं है कि कुछ देर के पीछे उड़जावे फिर इस स्थान में किसी को देख न पड़े अमर यह कह रहा था और बादशाह सैर करतेहुए आगे बढ़े तो अमीर ने अपने मन में विचार किया कि देखने से जानाजाता है कि इसमें अमर का भी मेल है आपकी यहां भी बुद्धि विशेष प्रकट है बख़्तक को देखकर बादशाह खिलखिलाकर हँसा और जितने हाज़िर थे सब हँसी में ऐसे बेचैनहुए कि हँसते २ गिरपड़े अमीर ने उसको खुलवाकर आफ़त से छुड़ादिया और उसकी देह देखी तो तमाम शरीर में घाव के सिवाय कुछ नज़र न आया शरीर से रुधिर बहरहा है चांद ऊंची होगई है बादशाह ने क्रोधवान् होकर कहा कि इसीतरह से इसे यहां से निकालदो अमीर ने उसका अपराध क्षमा करवाया और उसके वस्त्र अमर से तीनसौ रुपये को मोल लेकर पहिनाये और दिलासा दिया बादशाह ने बाग़ हस्तमुर्ग़ जो बुग़दाद के बीच में नग के समान बनाहुआ था उसे देखनेकी इच्छा की और उस बाग़ में अमीर और

बुजुरुचमेहर और हुरमुजताजदार और मुक़बिलबख़्तक और सब सरदारों समेत गये और कहने और देखने में वह नाम के समान था उसकी बनावट स्वर्ग के समान थी और अमर ने अपनी किताब में बख़्तक का नाम सब से पहले लिखा था बादशाह के सामने मसखरापन करनेलगा कि कृपानिधान! बख़्तक बिचारे की हड्डियों को मालियों ने बेलचों से मारकर अत्यन्त चूरकिया है और शिर में बाल नहीं रक्खे अच्छा साफ़ करदिया है और जहां २ फूला है वहां २ चमकरहा है जो उसको मोमियाई कृपा होती तो उस पर बड़ी दया कीजाती अब तो अपराध हुआ कि आप की आज्ञा भङ्ग की कि बाग़ में आया सो उसका फल मिला अब इससे ऐसा अपराध न होगा कभी आज्ञाभङ्ग यह न करेगा यह कहकर फिर बख़्तक की ओर शिर उठाया और उससे कहनेलगा कि हाथ जोड़कर प्रणाकर कि फिर ऐसा अपराध न होगा अमर बख़्तक को मसखरा सबजगह बनाता था बादशाह ने कहा कि आदी को तो बुलावो जब आदी आया बादशाह ने कहा क्यों आदी हमने तुमको धैर्यवान् जानके दरवाज़े का रक्षक किया तिस पर भी बख़्तक बाग़ के भीतर आगया यह सुन आदी ने यह प्रार्थना की कि कृपानिधान बख़्तक का क्या अपराध है? जो आपकी आज्ञा बिना बाग़ में पाँव धरे मेरे निकट आया था कि मुझसे भेंट लो और मुझे बाग़ में जानेदो मैंने उसको झिड़कदिया वह लज्जित होकर अपने घर चलागया बादशाह ने कहा कि देखो तो वह कौन है बख़्तक है या कोई और है आदी बख़्तक को देखकर क्रोधयुक्त हुआ और गर्दन पकड़कर बोला कि बाग़ से निकलकर देखियेगा कैसीगति बनाताहूं और किसभांति से आपके साथ सलूक करताहूं अमीर ने आदी को मनाकिया कि अब बख़्तक से मत बोलना बादशाह ने उसका अपराध क्षमा किया है अब तुम अपने स्थान पर जहां बैठे थे वहीं बैठो आदी तो बाग़ के दरवाज़े पर गया और सभामें प्याले चलने लगे मदिरा को लियेहुए लोग घूमने लगे इतने में सूर्य अस्त हुआ और चन्द्रमा ने अपना प्रकाश बिदित किया सेवक दीपक और फानूस ले २ कर प्रकाश करनेलगे और मङ्गलाचारी लोग आये गीतराग होनेलगे और बिबिध प्रकार से अमीर को प्रसन्न करते थे जो कि बादशाह सोये न थे उस दम बादशाह की आंख लगगई अमीर भी वस्त्र बदलने के हेतु उस महल से बाहर आये मित्रस्नेही भी उनके साथ सैर करतेहुए बाग़ के एक कोने में आये एक नहर वहां पर देखी जिसकी स्वच्छता के आगे दर्पण लज्जित होता था उसका पानी झँझरियों की राह से बाहर जाता था मुक़बिल से कहा कि हम स्नान करके वस्त्र बदलेंगे मुक़बिल ने अमीर की पोशाक उतारी और नई पोशाक बदलने के हेतु मँगवाई अमीर उस हम्माम में नहानेलगे एकाएकी मलका मेहरंगेज़ नौशेरवां की पुत्री जो महल के ऊपर झरोखों में बैठीहुई इधर उधर देख रही थी उसका रूप देखकर अचेत होगई ॥

दोहा। रज सम को शुभरूप ने, तारा कीन्ह प्रकाश। पुनि खद्योत जो देखही, रविसम होय हुलास ॥

सकलबाग सो जरउठा, रूप विद्युवत जानि। फुलवृक्ष से जो गहै, सम चिनगारि निशानि॥

अमीर पर जो उसकी दृष्टि पड़ी स्नेहरूपी बाण उसके कलेजे के पार होगया स्नेहरूपी बाण खाकर चित्त में बिचार किया कि मुझको तो इसके रूप ने घायल किया बैठे बैठाये बिरहा का घाव और दाग़ स्नेह का दिया इसका सावधानी से जाना भलाई नहीं है गजरा गले से निकालकर अमीर की ओर फेंका वह अमीर के कांधे पर गिरा अमीर ने जो उधर देखा तो ईश्वर की रचना की शोभा दृष्टि पड़ी ढाढ़स न बांधसका॥

चौपाई। चन्द्रवदनि देखी त्यहि काला। परी ते अधिक सजी नवबाला॥
रूप स्वरूप कहैं केहि भांती। कोइ उपमा नहिं हृदय समाती॥

उसको देखकर पानी में गिरे मुक़बिल ने कूदकर अमीर को सम्हाला और गोद में लेकर पानी से बाहर निकाला अमीर ने ऐसी बिरह की आह खींची कि आनन्दरूपी खलिहान में आग लगगई बिरह की चिनगारियां चित्त में भड़कने लगीं और डाह के आंसू नेत्रों से टपकनेलगे॥

दोहा। विरहआग अति है कठिन, उदधि होत भसमन्त। पाहन में जो लागई, पुनि त्यहि मिलै न अन्त॥

चौपाई। आवत याद दिवस जेहिकाला। थे जो रहित शोक जञ्जाला॥
रहा न आह लाह तन माहीं। श्वास कठिन व्याप्यो जग नाहीं॥
आंसू नदी सरिस नहिं बहई। मुख नहिं पियर कतहुँ रँगलहई॥
तन विभूति ऊपर नहिं लायो। खाकी सरिस न रूप बनायो॥
काम न लीन कतहुं जगमाहीं। जो अपनेहि हेतु लेलाहीं॥
निशि दिन रहे अनन्द समेतू। कतहुं न देख्यो शोक निकेतू॥
जलबिन मीन चित्त नहिं भयऊ। सदा प्रफुल्लित बहुविध रहाऊ॥
रोना सेकन जाग्रत जानेउ। भूतवश्य कतहुं न उर आनेउ॥
फुलहारी शरीर जग रहाऊ। सदा प्रफुल्लित औ सुखभयऊ॥
डाह आंसु अरु शोक कलेशू। रहै कौन ताको उपदेशू॥
बाग़ जगत की वायु न व्यापी। चित में चिन्ता कतहुं न कापी॥
गुच्छा मनकर सदा हुलासू। भयो न फूल कतहुं कुम्हिलासू॥
रोवत देखि कहीं कसरोना। शोक आँसु ते कस मुख धोना॥
चन्द्रवदन कर विरह वियोगू। कस उर धरैं जगत के लोगू॥
मन चित धर्म बुद्धि अरु ज्ञानू। कस परिहरैं विरहवश जानू॥
मृगनयनी के बश होय लोगू। सहैं अन्याय कठिन जगयोगू॥
विरह बसत जग में कह अहई। विरह कहत काको जग रहई॥
अब जो देखि यहै जिय जाना। कठिन विरह नाना विध माना॥
अतिहै अधम अगम बिरहागति। हो जो वश्य हरै ताकी मति॥
विरहा अति अकाम नरहेतू। टूटै ज्ञान धर्म जेहि सेतू॥
पावक सम अहै विरहनिकेतू। धर्म कर्म जरि ज्ञान समेतू॥
मारग जेहि बताय जग कोई। होय बटपराधीन धन सोई॥
मित्रकरैं वैरी होय जाई। अस चरित्र जग अहै गुसांई॥

दोहा। नेहरूप पावक विषय, लखो न कौनउ भाव। सो पावक उर आइकै, मम तन कीनो घाव॥

चौपाई। रोदन वारि वहै मुख धारा। सूझै नहिं जग पार अपारा॥
जरोजात तन संशय नाहीं। कठिन सो पावक या जग माहीं॥
अलगो इसी आग के माहीं। सत्यकहौं नहिं यहै वृथाहीं॥

अस प्रचण्ड जग में है नारी। लाखों गृह फूंके चिनगारी॥
विपिनमध्य फरहाद बसायो। शीरी काज कठिन दुख पायो॥
वामिक पुनि उजरावश भयऊ। सकलप्रकार दुसह दुख सह्यऊ॥
सो पुनि कौन मोर अस हाला। डारेउ कठिन हृदय जञ्जाला॥
नेह मांझ आनँद न हुलासू। नहिं सुख पुनि नहिं कछुक सुपासू॥
तरस रहा चित मोर सनेहू। जापर अहै न सुख कछु लेहू॥
है जिहिं वश बिन वहि सुखनाहीं। विरहवन्त के हृदय समाहीं॥
जिवघातक ते परा है पाला। की जिवजाय कि मिलि है वाला॥
जान बूझ के भयो वियोगी। विरह कठिन ताकर भय रोगी॥
सुमन सुचित है फूल को रूपा। देखो सदा सनेह अनूपा॥
नहिं कछु चाह युवति मन माहीं। कुआं मध्य अब परो अथाहीं॥
कुबरी केर फेर वश भयऊ। अन्त पयोधि विरह विचगयऊ॥
कृष्ण रात ते अधिकै असूझा। भयो अस हाल जाय नहिं बूझा॥
धाम बंदिखाना सम लागे। काम सकल देखत चित भागे॥
कारण यह सुखनाशक केतू। और कछुक दूजो नहिं हेतू॥
जुलफ के बदले वास कस्तूरी। थी किमि हीन भीन जो पूरी॥
मृगनयनी चन्द्रवत प्रकाशी। ताहि देखि नीथार गुणाशी॥
था केवल मोहिं विपति बेसाहू। लीन्ह मोल कीन्हेउ उर दाहू॥
खड्ग विचित्र धार ते मोहीं। भरन बदा सोई पुनि होहीं॥
भौंह कटार फार उर दीन्हा। अगणित कष्टवास तन लीन्हा॥
दुसह वियोग बिछोह कलेशू। रहै सहन सब भांति भदेशू॥

दोहा। रहै वरावा उचित मोहिं, दृष्टि कटीली जान। नहिं कीन्हों फल पायऊं, रुधिर करत औपान॥
मानुष के हित दृष्टि अस, वेगि कटा करिदेय। मनो कटारी वाढ़िया, शान धरेव अब टेय॥
उचित रहै वातें मुझे, भागों तीर समान। दुख कछु मोहिं न व्यापतो, जो करतेउँ परमान॥
चन्द्रवदनिके नयन शुभ, और कपोल प्रकाश। कतां सरिस चित झाड़ई, मानत अधिक हुलाश॥
मिसी जमी इनदशनपर, जो मरतै हम नाहिं। तमनिशिभैलवनखतको, किमिदिखतेअकुलाहिं॥

सोरठा। चक्षुहीन की भांत, चाहरूप मुखपर गिरा। कूपमांझ धसिजात, अच्छा था जो बूड़तो॥
तनपर थाकोवार, सकल सुःख अपनो दियो। बर्णौं कौन प्रकार, जस दुख व्याप्यो हृदय में॥
हौं अमानजेहि भांति, अस जग कोउ दूबर नहीं। अहैं कठिन सब भांति, अस बलाय में हौं फँसा॥
जेहिमें मरे बीमार, ईश कोय जनि फाँसिये। दूसर रोग हजार, पै यामें नहिं होइ कोइ॥
दिन व्यतीत जोहोय, निशि आवत धड़काहिया। नेह को नाम जगोय, जूड़ी आवत ताहि सुनि॥

चौपाई। यहि विधि नेह कीन्ह उर घायल। पावक सरिस बाण मोहिं थायल॥
सुगँध फूल ब्रह्माण्ड नशावै। यहि विधि नेह मांझ दुख पावै॥
कतहुं रोदन कतहुँ मशाना। कतहुँ विलाप सरौलगि ठाना॥

सवैया। भावे न धाम न काम हमैं नहिं बाग कि सैर को चित्त चलै।
नहिं नींद न भूख न प्यास कछू निशिवासर शोक हृदय में हलै॥
असनेहके मेहमें भीजो शरीर करेर नहीं केहि भांति टलै।
कवि कोविद लोग विचार कहैं यह दृष्टि कटारी सदैव शलै॥
कोइ मित्र सनेही नहीं जगमें चित व्याकुलताको जो शान्त करै।
क्षणधाम औ जंगल मांझ क्षणै क्षण जाउँ नदी तट धाइ फिरै॥
केहि भांति करों चित धीरज सों पुनि शोक कलेशहि कैसे हरै।
कवि लोग कहैं कोउ न्यायकरै फिरयाद कहौ केहि भांति सरै॥

दोहा। कुसमयका गिलाकरौं, प्राप्त कछू नहिं होय। बैरी को बैरी कहै, यह भी उचित न सोय॥
मान अमान माशूक को, आशिक ऊपर लेइ। वह गाली जो देइ त्यहि, त्यहि अशीष तू देइ॥
रूप देश माशूक के, जबतक रहै बसेर। करु सलूक इहि भांति से, रहै यादि जेहिढेर॥

मुक़बिल ने अमीर को समझाया कि यह स्थान बियोग का नहीं है नये वस्त्र पहिनिये और सभामें चलिये उस समय अमीरने मुक़बिल की शिक्षा मानली और वस्त्र पहिनके उस महल में गये परन्तु चित्त में औरही विचार था और उधर मलका मेहरनिगार का हाल औरही था ॥

दोहा। गिरी छारखट बीचमें, है अचेत बहुभांति। जनु काहू के घएरई, बिकल परी अकुलाति ॥

दाइयां और लौड़ियों ने घेरलिया कोई कटोरा फ़क़ीरों को पिलाती कोई फूंक डालती कोई दुआ मांगती खाना, पीना, सोना सब बन्दहोगया कोई हाथ पाँव सोहलाती मलका को जब ब्योराहुआ अपने चित्त में बिचार किया कि कहीं यह भेद प्रकट न होजाय यह नेह कोई दूसरा समाचार न उत्पन्नकरे लौड़ियों से कहा कि चिन्ता करने का कुछ प्रयोजन नहीं है मुझे आपही आप मूर्च्छा आगई अब मैं अच्छी हूं हल्ला गुल्ला मतकरो चित्तमें न घबराओ फिर इधर उधर अमीर देखते थे कि दिन कहीं ब्यतीत होवे तो शान्ति होनेका उपाय कियाजावे फिर ज्यों त्यों कर के दिन काटा और पहर राततक धैर्य बांधे बैठारहा अन्त में ब्याकुल हुआ धैर्य न होसका बादशाह से प्रार्थना की आज छठी रात है पलक से पलक इस अधीन की नहीं लगी है जो आज्ञादीजिये तो आराम करलूं किसी किनारे बाग़ में जाकर सो रहूं बादशाह ने कहा कि जाइये अमीर मुक़बिलसमेत सभा से आये फिर झरोखे के तले पहुँचे कोई लगाव ऊपर जानेका न पाया परन्तु एक बृक्ष महल के निकट दृष्टि आया उसकी डाली कोठे की मुड़ेर से लगीहुई थी मुक़बिल को उस बृक्ष के तले खड़ाकरके आप बृक्षपर चढ़गये और सतमहला पर पहुँचे ॥

मलिका मेहरनिगार से प्रथम मिलाप ॥

चौपाई। नेह नयाकर नया सुभाऊ। औसर प्रति करै बिविध बनाऊ ॥
कतहुं रुदन अरु कतहुं विलापू। कतहुं रुधिरकर पान प्रतापू ॥
कतहुं घाव कर लोन करेरा। कतहुं पतङ्ग दीप गसेरा ॥
कतहुं गहत कतहुं गहिजाई। दोनों भांति है अधिक भलाई ॥

अब इस बृत्तान्त को इस भांति से वर्णन करते हैं सब प्रकार से सन्देह को हरते हैं बिलाप का बृत्तान्त काग़ज़ पर इस प्रकार से जमाते हैं कि अमीर ने डेवढ़ीके ऊपर जाकर देखा कि मलका मेहरनिगार युवतियों के मध्य में बैठीहै और बोतल मदिरा की भरीहुई सामने धरी है शीशे का प्याला हाथ में चमक रहाहै ॥

दोहा। मदिरा यत समेतते, धरी है प्याला माहिं। शोभा बर्णत नहिंबनै, बांटत मद सुखपाहिं ॥

परन्तु मोतीरूपी आंसुओं की लड़ी गूंधरहीहै नेह की धार हृदय में लहर लेरही है और बिरह की पावक उर मांझ छारही है भारी श्वास मुँह से लेती है दिनको अमीर ने दूरसे देखा जब निकट से दृष्टि भिड़ाई तब और ही सूरत दृष्टि आई जिस के रूप का प्रकाश दृष्टान्त नहीं रखता है और पूर्णेन्दु उसके रूप को देखकर बलाय लेरहा है और उसकी ठोढ़ी को जो हारूत मारूत देखते तो मरजाते और

स्तनों को जो नींबू देखता तो दांत खट्टे होजाते और उसके शरीर को जो सरो देखता तो अपने को देखकर लज्जित होजाता कपोलों ने लाल को दाग़ दिया आंखों ने मृगों को बिपिन में बास कराया और चोटी ने सम्बुल को लपेट दिया भौंहों ने कटार को मियान में करवाया सुआके भांति जिसकी नासिका इसी प्रकारसे सकल अङ्ग सजाहुआ था॥

दोहा। करै सूर्य जो दृष्टि वहि, सोंह होय जब चार। चकाचौंध है जाय पुनि, अस है रूप अगार॥

चौपाई। पूरनचन्द्र देख जो पावै। दाग़ खाय लज्जित है जावै॥
यूसुफ़ जो विलोकतो रूपा। तो नहिं जात छोड़ पुनि कूपा॥
देखत रूप ज़ुलेखा जोई। यूसुफ़ को न देखतो सोई॥
यहि बिधि अहै नासिका शोभा। सीधि लकीर देखि जग लोभा॥
लज्जित हो शुक निजउर देखी। रूप प्रकाश नासिका लेखी॥
करण जवाहिर खान लजाई। दर्पण रूप कपोल सोहाई॥
अधर अरुण बिम्बाफल रूपा। दाड़िमदशन सुहात अनूपा॥
मुख बरणौं केहिभांति प्रकाशू। देखत मन आनन्द हुलासू॥
अस विवेक जेहि मांझ निकेतू। उपमा कोउ न मिले तेहिं हेतू॥
अतिसुन्दर ठोढ़ीकर रूपा। मनो सरूप रुचिर है कूपा॥
चित घबराय देखि जो पावै। आपहि आप छूबि पुनि जावै॥
जो गिरिपड़ै निकरि नहिं पावै। यूसुफ़ जाय देखि रहजावै॥
ग्रीव सीव केहि भांति बताऊं। देखेहि बनहि याहि समझाऊं॥
करमें अरुण लगी है मेंहदी। सोहत विविध भांति की वेदी॥
देखिरूप ब्याकुल तन भयऊ। रहाते अधिक अधिक ह्वैगयऊ॥
मन नहिंरहा हाथमें मेरा। नेह कीन्ह जब आय बसेरा॥
शोक बिछोहधरों कस धीरा। तन अतिविकल अधिक उर पीरा॥
विधना निजकर हाथ सँवारे। अङ्ग अङ्ग प्रतिगुण अधिकारे॥
अँगुली चमकदमक छबिभारी। देखत अचरज अति-हितकारी॥
अस्तन छवि बरणी नहिं जाई। मनो अनार युगसुखित सुहाई॥
या वन अति रुचिकरत शिकारा। मारत लोगन बिविध प्रकारा॥
बस्त्र हटे छाती से जबहीं। लाजवन्त सिमिटते हैं तबहीं॥
तनी ठनी यहि भांति बनाई। जनु नेहक बांधे सुख पाई॥
बस्त्र स्वरूप रूप असथानू। बरणौं कैस उदय हैं भानू॥
आगे लिखौं कवन मुख लाई। छवि बरणत बरणी नहिं जाई॥
परदे कर परदे में हालू। लाजहेतु नहिं करत बियालू॥
कनक खम्भ सम जंघ सोहाई। देखै नर जो सो बलि जाई॥
मखमल सरिस नरमगति जासू। छुवै जो होय शीघ्र वश तासू॥
फीली रुचिर बनी अति गोरी। उपमा मलिन करै जेहि जोरी॥
यहि प्रकार नखसहित सरूपा। रचना रची अनूप अनूपा॥
नख तारा सम करत प्रकाशू। मेहँदी तापर करत हुलासू॥
अञ्जन आँजे नयन युग सोहैं। देखत तासु सृष्टि इक मोहैं॥
छल बल किय शृङ्गार समेतू। चाल विशाल मदन कर हेतू॥
कटि केहरि सम सोहत नारी। अति बलखात जात सुकुमारी॥
अस सुकुमारि बस्त्र जेहि भारू। चल न सकत शुभकिये शृँगारू॥

दोहा। नहिं सहिसकत भारकछु, अस सुकुमारि दुलारि। मेहँदी जेहि गरुई लगै, आगेहि कहा बिचारि॥

अमीर उसके मनोहर स्वरूप को देखकर आपमें न रहे और भी चिनगारी चित्त में भड़की मलका मेहरनिगार को सब सहेलियां समझारहीं थीं अपनी २ बुद्धि से धैर्य देरही थीं कि इस शोक और रोनेसे नहीं मालूम कि कोई दूसरा बखेड़ा न उठे इससे ऐसी विवश मत होजाओ और थोड़ा आपको सँभालो जिसके निमित्त तुम ऐसा विरह धारण कियेहो उसने भी तुमको देखा है उसको भी चैन कहाँ होगा वह तुम्हारे बिछोह में फिरता होगा कोई न कोई उपाय मिलनेका करेगा इस कारण से मलका का रोना पीटना दूर हुआ और फ़ितनाबानो ने जो मलका की दाई की बेटी थी मदिरा का प्याला मलका के हाथ में दिया कि इसको पियो ॥

दोहा। करु मदिराको पान तू, शोक त्यागु सुकुमारि। वे दिन पहले नहिं रहे, ये कल रहैं दुलारि ॥

मलका ने कहा कि हम थोड़ी देर पीछे पान करेंगी पहले तुम तो अपने २ मित्रों का नाम लेकर पियो थोड़ीसी मेरे हेतु भी रहनेदो सबसे पहले फ़ितनाबानों ने प्यालाभर उठाकर अमरअय्यार का नाम लेकर पिया यह सुनकर अमीर का चित्त घबराया कि अमर यहां क्योंकर आया यह शोचता था कि दूसरी प्रिया मुक़बिल वफ़ादार का नाम लेकर प्याला शराब का पीगई इसी भांति से सब सहेलियां अपने २ स्नेहीका नाम ले २ कर प्याला पीगई अमीर ने मनमें कहा कि इस भेद को हम नहीं जानते थे इतने में मलका ने भी प्याला मुँह से यह कहकर लगाया कि जिसने हुरशाम अल्कम के पुत्र खैबरी को मारा है और कठिन विपत्ति और क्लेश से तुमलोगों को छोड़ाया है उसकी यादकर पीती हूं अमीर सुनकर मनमें कृतकृत्य होगया पहरभरतक इन सब की सभा जारी रही और मदिरा पान करतीरहीं मलका जब प्याला उठावे तब पहले साहबकिरां का नाम लेवे तब उसे पीवे जब दोपहर से रात अधिक व्यतीत हुई वह सभा उठगई मलका भी छपरखट में जाकर लेटरही यद्यपि करोंटें लेती थी परन्तु चित्त उसका अमीर के पासथा नींद क्योंकर आती धाड़ें मारकर रोतीजाती अन्त में रोते २ थकगई साहबकिरां ने देखा कि मलका भी सोगई और सखियां अपने २ स्थानपर जाकर सोरहीं तो सीढ़ियों के मार्ग से महल के कोठेपरसे तले उतरा और दबेपांवों मलका के छपरखट के निकट गया देखा कि मलका सोरही है ॥

चौपाई। नयन खुले सोवत सुकुमारी। ताहिं बिलोकि भयो सुख भारी ॥
विरहा लोचत ताकर पाई। उबरे सकल भाँतिकर ठाई ॥

देरतक उसके चन्द्रवत् मुखारविन्द का प्रकाश बिलोका किया और चित्तमें विचार किया कि बड़े परिश्रम से तू यहांतक पहुँचा है अत्यन्त कष्ट सहा है तब तुझे यहांतक आने का अवसर मिला है मन की हौस तो अब किसी भांति से निकाल किसी हीला से साहबकिरां ने अपने दोनों हाथ सुमन तकियों पर धरे और चाहा कि उसके ओठों का चुम्मा लेवें और कपोलों को भी चूमें तो हाथ तकियों से फिसलगये और मलका की छाती से लगगये मलका चौंकपड़ी अमीर का तो ध्यान

न रहा आसक्त होकर चिल्लानी चोर २ कहने लगी चारोंओर से लौंडियां जागपड़ीं और हांक सुनकर दौड़ी आईं अमीर ने कहा कि मैं अल्कम के पुत्रका मारनेवाला तुम्हारे रूप का माराहुआहूं मलका अमीर को पहिंचानकर अपने गुल करनेपर अति लज्जित हुई और चेरियां बिनती करनेलगीं और साहवकिरां को झटपट छपरखट के तले छिपादिया लौंडियों को यह कहकर बहलादिया कि मैंने एक ऐसा नष्ट स्वप्न देखा था कि उससे मैं डरागई इससे चीख़ मारउठी अच्छा तुमलोग जाकर सोरहो अपने २ स्थानपर जाओ वे तो नींद की मातीही थीं अपने २ स्थानपर जाकर सोरहीं साहबकिरां उनके जातेही छपरखट के तले से ऊपर आये और मलका मेहरनिगार के बराबर बैठे मलका ने दिनको तो दूरसे देखा था अब जो पाससे देखा और भी अचेत होगई साहबकिरां ने मुखसे मुख मिलाकर अपनी सुगन्ध जो सुँघाई तो थोड़ी देर के पीछे होशमें आई इतने में प्रातःकाल होगया साहबकिरां ने ओसके समान नेत्रों में जलभर के कहा कि ईश्वर जो निगहबान है अब मैं ठहर नहीं सक्ताहूं॥

चौपाई। देख्यो रूप प्रात जब भयऊ। घाव हृदय महँ अति करि गयऊ॥
तन मन सकल मोर हरिलीना। कठिन वियोग शोक तब कीना॥

भेद विदित होजाने का डर है, बादशाह से सोने का बहाना करके आया था जो जीतारहूंगा तो फिर रात को आऊँगा तुम्हारे बिछोह में नाना प्रकार के क्लेश पाता हूं चित्त लगायेहूं॥

दोहा। वे धीरज कतहूं नहीं, कीन्ह मिलाप अनेक। सो अब भयौ सनेहवश, रहा न कछू विवेक॥

किन्तु इस घायल की सुधि न भुलाना मेरे ऊपर कृपा कियेरहना चित्त में ध्यान रखना भूल न जाना मलका ने एक आह सर्द खींची और नेत्रों में जल भरकर बोली कि देखिये इतना दिन कैसे व्यतीत होगा? चित्तको धैर्य किस भाँति से होता है॥

चौपाई। ज्यों त्यों निशि बिछुरन कटिआई। दिन कस कटै ईश दुखदाई॥
विरह वियोग कठिन जञ्जालू। विकल अधिक तन मन दुखसालू॥

यह कहकर कहा अच्छा ईश्वर को सौंपा॥

चौपाई। रावँर निजस्वरूप लै जाऊ। कठिन अधिक तन मन पछिताऊ॥
बितिहै सो मोपर बितिजैहै। शोक बिछोह कठिन दुख पैहै॥

इसके पीछे अमीर बिदा हुए उसी भांति से कोठे पर से तले आये और मुक्रबिल को साथ लेकर सभा में पहुँचे बादशाहभी सेजसे उठकर बाहर निकलकर सभा के मध्य में सुशोभित हुए और सबलोगों ने दर्शन पाये जिस समय प्रातःकाल हुआ और सूर्यमुखी का फूल प्रफुल्लित हुआ बादशाह अमीर का हाथ पकड़े हुए चमनमें आये और सभा के लोग भी उसी स्थान में आये अमीर का मन विरह से स्थिर न था॥

चौपाई। अस मन भयो नेहवश मेरा। भावत उजड़ न मोहिं बसेरा॥
उजड़े जाउँ चित्त नहिं लागै। देखि बसेर विरह उर जागै॥

घड़ी २ उठ २ कर अमीर इधर उधर देखते थे अपना चित्त मलका मेहर-निगार पर लगाये थे और बारम्बार उसके मकान की ओर दृष्टि करते थे ॥

चौपाई। आदर अधिक नेहकर भारी। मित्र सकल भूले इकचारी ॥
तनकी दशा कहों केहिभांती। अदब बिसारि दीन दुखथाती ॥
धीरज धरत रहत मनमाहीं। अब कहँ चैन शोक मनमाहीं ॥
रहत रहत बाढ़त उर शोचू। सब विधि रहत हृदय संकोचू ॥

बुज़ुरुचमेहर ने अमीर का हाल देखकर ताड़ा कि अमीर का चित्त किसीप लगगया तो अमर की ओर इशारा किया उसने कहा कि मैं आपसे प्रथम जा गया हूं इसका चित्त किसी न किसीसे लगगया चित्त की अधैर्यता देख बख़्तक ने भी अमीर का शोच देखकर विचार लिया कि अमीर किसीको अपना मन दे आ हैं इस कारण वे धैर्य नहीं हैं बख़्तक ने बादशाह से प्रार्थना की कि लोग हर घड़ सभा से उठ २ जाते हैं और फिर लौटआते हैं इससे सभा की शोभा जातीरहत है आज्ञा दीजिये कि जो कोई बिना आवश्यकता सभा से बाहर जायगा उसवे ऊपर सौ रुपये जुरमाना कियेजावेंगे बादशाह ने इस बातको पसन्द करके अमी से कहा कि जो कोई उठेगा उसपर सौ रुपये जुरमाना कियेजावेंगे अमीर ने कह कि यह तो बहुत अच्छी बात है उसपर आप दोबार अकुला २ कर उठे और दोसै रुपये जुरमाना दिये ॥

दोहा। गाहक तेरी हाट में, टूटत अधिक बिहाल। जो रहै मारग तासु का, अतिशय कठिन कराल ॥
तेरी मूरत देखिकै, निलपद उठत न नेक। भीतसरिस ह्वैगयो मैं, है तिहारहित टेक ॥

बुज़ुरुचमेहर ने अमर से कहा कि कुछ ऐसा उपाय कियाचाहिये कि जिससे बख़्तक सभा से उठजाय और इस समय में फिर न आनेपावे अमर ने कहा कि यह कितनी बड़ी बात है अभी तो यह एकही बात के कहने में जाताहै यह कहकर बाद शाह से प्रार्थना की कि इस समय में अद्भुत लीला है जो आपकी आज्ञा हो तो मैं अपने हाथ से दो चार प्याला मदिरा के भरकर पिलाऊं बादशाह ने कहा कि इससे अच्छी क्या बात है? हमें भी यही मंजूर है अमर ने प्याला और बोतल को हाथ में लेकर देना शुरूअ किया जब तीन चार प्याले बारम्बार बादशाह को पिलाचुके तब हुरमुज़ ताजदार को एक प्याला पिलाकर अमीर को दिया तिसके पीछे ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर को एक प्याला पिलाया इसी भांति से घूमताहुआ बख़्तक के मुँह में प्याला लगाया कि उसका मस्तक ठनकउठा कि इस समय अवश्य कुछ कारण है अमर से कहनेलगा कि मैंने कल से मदिरा पीने की सौगन्द की है यह सुन अमर ने पुकारकर कहा कि यह अद्भुत बात है कि सब सभा के लोग और बादशाह ने मेरे हाथ से मदिरा पीना स्वीकार किया परन्तु बख़्तक मेरे हाथ से मदिरा पीना मंज़ूर नहीं करता यह नहीं जानता कि जो अवलास मेरे हाथसे पीजाता तो अनेक ... से हज़रतआदम के चरण छूता अभिमान से शिर न उठाता अमर की इस बात बादशाह समेत सबलोग हँसपड़े और बख़्तक से कहनेलगे कि सब सृष्टि में अ...

के समान कोई मदिरा बांटनेवाला न होगा क्या तुमपर यह बात विदित नहीं है ? आश्चर्य है कि तुम इन्कार करतेहो और पीने में तक़रार करते हो लाचार होकर ब-ख़्तकने अमर से प्याला लेकर पान किया और जो कि अमर ने उस प्याले में कच्चा जमालगोटा बहुत अच्छा ढूंढ़के मँगाकर मिलाया था एक घड़ी भी न बीती कि बख़्तक के पेट में मिड़ोड़ा होनेलगा बादशाह से प्रार्थना करके उठा कि सेवक आव-श्यकता मिटाने को जाताहै अभी फिरा हुआ आताहै जब उससे निपटकर आया एक पल भी न गुज़रा था कि फिर पेटमें शूल होनेलगी लाचार होकर फिर उठचला अमर बोला कि अब कहां जाते हो अभी तो बाहर से चलेआते हो भलाई तो है अभी आप आये हैं फिरभी जाया चाहते हैं बख़्तकनेभी सौ रुपये जुरमाना देकर अपनी हाजत रफ़ा की दमभर न बैठेहुआ था कि फिरभी दिशा की आवश्यकता मालूम हुई परन्तु जुरमाने के डरसे साधेहुए बैठारहा जब बहुत आसक्त हुआ तब तो साध न सका पा-ख़ाने के मार्ग होकर बहकर पायजामे के तले पांयचों से निकलपड़ा अमर तो इसी ताक में था प्याले को हाथसे रखकर बादशाह से प्रार्थना की कि इससमय हुजूर को नशा है जो बाग़ की सैर कीजिये तो दूनी ख़ुशी प्राप्त हो बादशाह ने कहा कि अमर मेरीभी यही इच्छा है बादशाह अमीर का हाथ पकड़कर चमनकी ओर चला सभा के लोगभी सब उठखड़े हुए और बादशाह के साथ चले बख़्तक भी पाख़ाने की आवश्यकता से उठा लोगों ने देखा कि बख़्तक की कुरसी सब पाख़ानेसे भरीहुई है और उसके पायजामों की मोहरियों के मार्ग होकर मैला बहरहा है किरमानी क़ालीन भी तमाम भरगई है अमर ने बादशाह से इस बात की ख़बर की बादशाह का दि-माग़ पहलेही से बदबू में छागयाथा यह सुनकर और भी क्रोध किया और आदी को बुलवाकर आज्ञा दी कि इस मूर्ख अबिबेकी को जो हमारी संगति के योग्य नहीं है बाग़से बाहर निकालो आदी तो पहलेसे उसपर बिषखायेहुए था आज्ञापातेही बख़्तक की दाढ़ी पकड़के घसीटताहुआ बाहर लेगया ख़्वाजे बुजुरुचमेहर ने कहा यद्यपि तूने बख़्तक को उपाय के सहित निकाला लेकिन अमीर को दमपर दम बेक़रारी अधिक होतीजाती है ईश्वर जाने कि इसका क्या कारण है ? ऐसा न हो कि बादशाह कुछ मनमें जाने तो बद गुमान होवे फिर औरही सामान होवे हाथ बाँधकर बादशाह से प्रार्थनाकी कि हमज़ा हुजूर की क़दरदानी से बहुत यहसानमन्द हुआ तमाम उमर आपका यहसानमन्द रहेगा अब आप चलके बादशाहत की गद्दीपर बिराजिये ईश्वर की सृष्टि न्याय करने को आई है वह आशा देखरही है सब आपकी प्रजा आपका दर्शन चाहती है बादशाह को बुजुरुचमेहर का कहना बहुत पसन्द आया अमीर को शाही ख़िलअत देकर बिदा किया और आप न्यायशाला में आया ॥

मेहरनिगार का अमीर के ऊपर अधीर होना और जाना अमीर के डेरेको अमीर की चाह में ॥

लिखनेवाला इस स्नेह के वृत्तान्त को इस प्रकार लिखता है कि साहबकिरां नाशादकाम स्थानपर जाकर घड़ियां पल २ गिनाकिया और बिछोहका दिन रातके

मिलाप की आश से व्यतीत किया जिस समय सूर्य ने पश्चिमदिशा में बसेरा किया और चन्द्रमा आसमान पर प्रकाशित हुआ अमीर ने अपने रात के पहिरने के वस्त्र मँगाये अतलस का जामा गले में पहनकर कमरबन्द सुनहला काले रङ्ग का कमर में बांधा शमला काला शिर पर लपेटकर तलवार और कटार कमर में बांधी सूफ़का पाताबा पांवोंमें चढ़ाया उसपर नमदी जूता पहिनकर कमन्द का घेरा शाने से लगाया और काले रेशम का नक़ाब अपने मुँह पर डाला इस सजधज से मुक़बिल को साथ लेकर अपने खीमे से निकले और मलका मेहरनिगार की ओर चले मार्ग में अमर छिपा हुआ खड़ा था फलांग मारकर बोला कि ख़बरदार हो चोरोंकी तरह कहां जाते हो क्यों मुझसे छिपातेहो तुम नहीं जानते हो कि मैं पहरा देताहूं अमीर ने कहा कि क्यों मेरा हर्ज करता है उसने कहा ऐ अमीर! जानपड़ा कि मैं नहीं जानताहूं और आपसे कुछ कपट रखताहूं तब तो मुझसे अपना भेद छिपाया मुझे अपने से फिरा और बदख़्वाह ठहराया अमीर ने कहा कि जो तू कोई गैर होगा तो मेरा सगा मित्र और स्नेही कौन होगा किन्तु इस निमित्त मैंने तुझसे नहीं कहा कि तू मुझे शिक्षा देगा और मैं अपने वश में नहीं हूं मेरा मन क़ाबू नहीं है क्या करूं ले आ तूभी मेरे साथ चल अपने स्नेही के मार्ग में जाताहूं मन की घबराहट उसके मिलाप से मिटाताहूं अमर ने पूछा कि हुज़ूर वह कौन है और कैसी है आदमीज़ाद है या अप्सरा है जिसके हेतु तुमसा धीर और शान्त मनुष्य बेधीरज और बेक़रार हो अमीर ने कहा कि सुनना भला कि दीखना चलकर अपनी आंखों से देखो और बिधिकृतरूप दृष्टि करलो अमीर अमर से ये बातें करते बग़दाद की ओर चलेजाते थे और अति स्नेह से पांव बेखटका बढ़ाते थे मलका मेहरनिगार का हाल सुनिये कि अमीर की चाहमें किस कष्ट से दिन काटा दिनभर शोक में गुज़रा छपरखट में मुँह लपेटे पड़ी रही न उठी न बैठी यह चौपाइयां पढ़ती रही॥

चौपाई। मांगत वह घर मित्र सनेहू। चरणाहट जगाय मोहिं देहू॥
नरगिस सरिस विकल मनमारे। देखत हित चित नयन उघारे॥

न मुँहधोया न खानाखाया न पानी पिया न तकिया परसे शिर उठाया न कंघी चोटी की न पोशाक बदली तमाम दिन आंशुओं से मुँह धोया की और अमीर की चाह में रोया की खाने के बदले अपना कलेजा खाया की और पानी के बदले आंशुओं की नदी बहाया की जो किसीको आते देखा तो आंशू पीगई कंघी के बदले नर्म पंजे से बाल बिखड़ा दिये पोशाक के बदले चादरसे मुँह लपेटलिया जो अपने पास किसीको न देखा तो वहशियों की भांति से इधर उधर देखकर अशक्त हो आह सर्द खींचकर यह चौपाइयां पढ़नेलगी॥

चौपाई। रोदन हेत मस्त चित अहई। ममघट धार नयनजल बहई॥
अधर अरुण कोमल मन जासू। विकल अधिक तापर बिश्वासू॥
दाड़िम दशन सोहात अनूपा। दीपक सरिस तपत तनकूपा॥
मैं तव छविपर सर्वस दीन्हा। खान पान त्यागन कर दीन्हा॥

मद मदिरा बिसारि सब दयऊ। केवल सभा एक उर रहेऊ॥
मोह कठिन मन्त्री दृढ़ कीना। ज्ञान तमाम मोर हरिलीना॥
तन हमार यह देश भुवारा। नृपति काम तन भो रखवारा॥
विरह विपति दुख कष्ट अनेका। कुमति कुकर्म शोक जेहि टेका॥
सो यह कटक लीन निजसाथा। केवल मोहिं विचारि अनाथा॥
दया क्षमा सन्तोष विवेका। सब हरिलीन हँकारि अनेका॥
लाजहीन अति दीन मलीना। विरहवश्य तेहि मोहिं करदीना॥
कहु केहिभांति धरौं उरधीरीं। व्याकुल अति पिय मोर शरीरा॥
बेगि छुड़ाव तासुकर फन्दू। सुनो वचन पिय आनँद कन्दू॥

दोहा। विरह आगि तबसे लगी, जरोजात सबगात। बेगि छुड़ाओ कृपानिधि, तन मन अतिअकुलात॥
जबसे मन हरगयो है, तबसे नहीं क़रार। शमा सरिस मुख जासुको, भयो पतिंगावार॥
नेह वारुणी के लिये, नयनपात्र करदीन्ह। मापक सो वाको भयो, जेहि तन मन हरिलीन्ह॥
नेह बीच ऐसी फँसी, सर्वस दीन्ह गँवाय। रहै बसेरा उजड़ भा, व्याकुल अहै सिवाय॥
देखूं जी कैसे बचै, जो घातक के साथ। यारी सो मैंने करी, अगम अधिक है गाथ॥
कहत सबै यारी विषय, चरणधरे जो कोय। स्वप्नेहुँमांझ न सुख मिलै, अधिक कठिन दुखहोय॥

लौंडियों ने मलका का हाल देखकर फ़ितनावानों से कहा कि मालूम होता है कि मलका ने अपना मन कहीं गँवाया कि जिससे खान पान छोड़दिया न दिनको चैन है न रातको आराम है इस भेद को विदित करो और उनसे जाकर समाचार कहो कि वह कुछ उपाय और कोई तदबीर दुःखके दूर होने की निकालें नहीं तो यह नेह और उसका बिरह दूसरा फूल खिलाने चाहता है इसमें किसीकी लाज ढकी नहीं रहने पाती है यह गली २ के तिनके चुनवाता है लड़कों से पत्थर खिलवाता है होठों को सुखाता है आई मति भुलाता है दमपर दम क्लेश और रोदन करवाताहै ठण्ढी सांसें भरवाता है शिर से पांव तक पत्थरों से शिर फोड़वाता है कानों में ग़फ़लत की रुई भरवाता है शिक्षा सुनने नहीं देताहै संसार में यह रोग बड़ा कराल है इसके हेतु यह दोहे कहतीहूं इसको सुनो॥

दोहा। नेह केर पावक विषय, फूंका जात शरीर। आंसू से यह कहति हूं, ह्वै सहाय करु धीर॥
अति कराखगति नेहकी, क्षणप्रति बदलत रङ्ग। अस पावक यह कठिन है, फिर न रहत जेहि अङ्ग॥
यह जो सब संसार में, सम्पति अङ्ग बनाय। तौ पपील इक दीन हूं, नृपति होय हरषाय॥
सुंदर रूप औ नेह जो, नहिं होतें संसार। भेद छिपा खुलता नहीं, यह दृढ़ कीन्ह बिचार॥
यहि जीके आराम का, मिलता नहीं निशान। स्वाद कछू नहिं पावते, तरुण वृद्ध सब जान॥
नेह आपनी रीति जो, दिखलावत नहिं सोइ। तौ पुनि यहि संसार में, रहता बस सब कोइ॥
है यामें अति कठिनता, ताते कहौं विचार। नानाविध दुख जाहि में, तन से जात करार॥
कशिशअधिकयहिमांझहै, खींचतविविधप्रकार। तन पाहनसम हो कठिन, मोम होत क्षण सार॥
अस संकट में प्राण हैं, धीरज मिलत न नेक। रूप नेह ये युगल पुनि, जाल लेन की टेक॥
बुद्धिमान जानत यहै, जो सर्वज्ञ निधान। नेहबास आशिक हृदय, जानो भाव न आन॥
नयन देखने के लिये, रूप सरूप निहार। कर्ण बोल के सुनन को, निज नेही के द्वार॥
हाथ वाल सुरभान हित, पांव चलन के काज। दिलबर के दरबार तक, और कछू नहिं साज॥
नेह जानते हम न थे, अति अन्याय निकेत। युवा वैस के मध्य में, जीव हमारो लेत॥
कब थी अस वृत्तान्त सों, मुझको खबर सुजान। कठिन हृदय के बीच में, भई फफोला खान॥
बड़ा जोड़ बांधत अहै, असविचारिगतिमोरि। काह करों कासे कहौं, अपनाचरितनिहोरि॥
लाख जगह तन मन सबै, उलझावै करि हूक। नये पेच के बीच में, देत नईसी लूक॥

नेह केर अस हाल है, सब के हिय में बास। अधिक रसायन सों अहै, याकी बास सुवास॥
अस सर है संसार में, ज़ान बचा केहि क़ेरि। शक्ति सभी मिटजात है, शूल दहै उर घेरि॥
मौतघाट के सरित में, याने दीन्ह उतार। जीते जी निज घाव सों, मार अधिक अपार॥
चौपाई। अस है नेह जंक्क बरियारा॥ फूंक कीन्ह बहुतनको छारा॥
ताते मानो कहा हमारा। समझो कठिन सकल संसारा॥
तन गुण ज्ञान धर्म हरिलेई। शोक सदा तन मन कहदेई॥
भूले पैग कतहुं जनि दीजै। इतना कहा मोर सब कीजै॥
दोहा। यह सब कारण जानके, अहि मग कतहुँ न जाय। लाज ज्ञान गुण धर्म सब, वेगि नाश होजाय॥

फ़ितनाबानो ने कहा कि मैं तो नहीं कहूंगी तुम अम्माजान से यह हाल बयान करो मेरे कहने से तुम्हारा कहना अधिक है देखो तो उसका क्या मनोरथ है? अन्त को थोड़ी लौंड़ियों ने मेल करके दाया से कहा इस समाचार को सुन दाया घबरा कर मलका के निकट दौड़ी आई देखा तो सच मुच मलका का अद्भुत हाल है न खाने पीने का कुछ ख़्याल है मुँह लपेटेहुए छपरखट में पड़ी है चेहरे से वहशत टपकरही है दायाने चादर को मुँहसे उठाकर कहा कि बेटी! भलाई तो है आपका मिज़ाज कैसा है? छपरखट में पड़ेरहने का कारण क्या है? मुझसे न छिपाओ अपने चित्त का क्लेश निडर होकर सुनाओ छोटेपनसे मैं तुम्हारी छिपे भेद की कुञ्जी जानतीरही हूं मलका ने कहा कि यद्यपि लाज आती है परन्तु बे तुमसे कहे भी काम नहीं चलता है कि मेरे कलेजे में आग लगने से तुम्हारा भी चित्त जलता है ऐसा अमीर का नेह रूपी तीर मेरे कलेजे से पार होगया है मिलापरूपी मलहम लाकर किसीभांति से यह घाव अच्छा करती तो इसमें भलाई है दाया बोली कि मलका यह स्थान ध्यान करनेका है कि कैसे २ शाहज़ादों का संदेशा आया और तुमने अङ्गीकार न किया और यह मनुष्य मुसल्मान दूसरी ज़ात और दूसरे दीन का है मेरे समीप तो उचित नहीं है कि तुम उसकी गोद में बैठो मलका ने कहा कि नेह के धर्म और ग़ैर के धर्म से क्या लगाव है? उससे क्या सरोकार है? यह तुम अच्छीभांति से समझलो कि साहबक़िराँ के मिलाप बिना जान मेरी नहीं बचेगी हमारे मनने धैर्यको परित्याग करदिया है यह कहकर एक अम्बरीचा गले से उतारकर दाया को दिया जो तीन सहस्ररुपये को मोल मँगायागया था और उससे कहा कि दाया! बहुत कुछ साहबक़िराँ से और अपने पास से बहुत कुछ तुझे दिलादूंगी दाया लालच में ख़्वाजे अमरसे कुछ कम न थी अम्बरीचा देखतेही लार मुँह में भरआई जो २ मलकाने कहा सब मानलिया और यह भी शोची कि मलका को नसीहत क़बूल नहीं होगी तो अपना फ़ायदा क्यों छोड़ूं मलका से बोली कि जो यही मरज़ी है तो उठो हम्माम करके पोशाक बदल गहना पहिन अपनेको बनाओ जब यह रात गुज़रेगी तब रात के बस्त्र पहिनाकर तुमको साहबक़िराँ के पास लेजाऊंगी तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करूंगी किन्तु धैर्यको त्याग न करो नहीं तो भेद खुलजायगा इसके ज़ाहिर में घाटा के सिवाय नफ़ा न पाओगी मलका को धैर्य हुआ उस समय उठकर हम्माम में स्नान किया और बस्त्र आभूषण धारण किया जब घड़ियाली

ने पहररात का गजर बजाया दाया ने मलका को काले वस्त्र पहिनाये और आपभी मर्दानाभेष बनाया और कोठेपर जो बुर्ज था उससे कमन्द को लटका कर मलका को ले उतरी और तिलशादकाम का मार्ग लिया थोड़ी दूर अमीर का डेरा रहा था कि तीन मनुष्य काले वस्त्र धारण कियेहुए देखपड़े और उसी ओर जिधर से मलका आती थी आते दृष्टि पड़े मलका और दाया उनको देखकर आड़ में होगई दोनों की दोनों आपको छिपाने लगीं अमीर कीभी निगाह इन दोनों स्याहपोशों पर जापड़ी और उनकी चाल देखके मुक़बिल से भारी आवाज़ से कहा कि मुक़बिल! देखना ये दोनों स्याहपोश कौन हैं? कि जो इससमय में बाहर निकले हैं अपने घरवालों से छिपेहुए किस ओर जाते हैं मलका ने अमीर की आवाज़ पहिंचानकर यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। जाके हित यों जान यह, निकलत है घबराय। या मारगसे कौन विधि, अनजाने निकलाय॥
जाके कारण बनगई, सिड़ी बावरी हाय। पूछत है अनजान को, यह दुखिया को आय॥

मुक़बिलने जो निकट आकर देखा कि चन्द्रवदनी मृगनयनी मलका मेहरनिगार है अमीर को वहींसे पुकारा और आसक्त होकर अलभ्य लाभ पाकर चिल्ला उठा कि आप यहां आकर पहिंचानें कि कौन है? और कहां का मनोरथ किया है किसके ढूंढ़ने के लिये घरसे पाँव निकाला है किस २ को यह इच्छा नहीं है कि तेरी खबर मिले हम नङ्गे पाँव तुम्हारे कारण फिरते हैं अमीरने जो आकर देखा तो मारे खुशीके उछलपड़ा और ऐसे कृतकृत्य हुए कि सातों द्वीप की बादशाहत भूलगये और मलका का हाथ पकड़कर अपने खीमें की ओर चले फिर अमर ने आकर सलाम किया और शिर झुकाकर यह बात की कि हक़ीक़तमें यह तो आपने बड़ा एहसान किया हमलोगोंको इससमय मुखपर स्याही से बचाया हज़रत की कशिश और स्नेह आपको ईंचलाई इनके बदौलत हमको भी दर्शन होगये और मनोकामना पूर्णहुई लिखाभी है कि॥

चौपाई। जापर जाकर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू॥

मलका ने मुक़बिल से पूछा कि यह कौन है और क्या नाम है कहां रहता है मुक़बिल ने कहा कि ख़्वाजे अमर अय्यार यही हैं इस समय में आपही की मक्कारी का चर्चा होरहा है मलका ने उसको देखकर आश्चर्य किया और बारम्बार उसकी सूरत देखती थी और यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। पूरब में रवि है उदय, क्यों नहिं होत प्रकाश। कौन अहै यहि धाम में, औचक बिना हुलाश॥

अमीर जब अपने स्थानपर मलका मेहरनिगार को लेकर पहुँचे मलका को अपने गोद में बैठाया और मदिरा के प्याले को भर २ कर अपने हाथ से पिलाया और मलका एक प्याला और बोतल लेकर अमीर को पिलाने लगी और अमर बैठाहुआ गाया किया फिर अमीरने दाया को बहुतसा धन सम्पत्ति देकर प्रसन्न कर दिया और एक किश्ती जवाहिरात की कृपा की और बहुतसा पारितोषिक देने को कहा॥

चौपाई। निशिभरि रचो विविध विधि कीला। वरणि न जाय तासु की लीला॥
कीन्हेउं बहुविधि भोग विलासा। पूजी हौस कीन्ह पुनि आसा॥

प्रातःकाल होनेलगा अमीर अमर और मुक़बिल को साथ लेकर मलका को उस के महलतक पहुँचाआया और दूरसे मिलाप का वादा किया॥

दोहा। सुख मिलाप का है भला, जो फिराक नहिं होय। नशा अधिक सुन्दर लगै, जाय खुमार जो धोय॥

जिस समय मलका दायासमेत महल में पहुँची कोई २ ख़्वाजे सराय जो मकान के पहरुआ जागते थे दोनों स्याहपोशों को देखकर चोर २ कहकर गुल मचाने लगे जब दिन हुआ कहीं चोर का नाम निशान भी न देखपड़ा नव्वाब नाज़िर ने मलका मेहरअङ्गेज़ से प्रार्थना की कि कौन किसके मन में बैठा है अच्छे के उरमें बुरा और बुरेके भीतर अच्छा सभी क़ौम में होताहै हाल यह है कोई सर्दार शाहज़ादी के आसपास पहरा देनेको नियत हो कि वह होशियारी से पहरा दियाकरे मलका ने यह बात पसन्द की और बादशाह को इस समाचार की इत्तिला दी बादशाह ने अन्तर-तेग़ज़ननामी पहलवानको चारहज़ार सवारों से पहरा देनेको नियत किया अब अमीर की सुनिये कि आधीरात तक मलका मेहरनिगार की आशा देखी जब मलका न पहुँची और अन्तरतेग़ज़न का नियत होना पहरेके हेतु सुना तो अतिकष्ट पाया॥

दोहा। नरगिस केरे फूलसम, पलकैं मिलतीं नाहिं। ईश ढूंढ़तो कौन को, कष्ट सहित मनमाहिं॥

फिर अमीरने काले वस्त्र मांगे अमर अमीर का हाल देखकर रोनेलगा और हाथ बांधके पांवोंपर गिरपड़ा और कहा कि ईश्वर के हेतु आज से बाहर न निकलना चाहिये दिल को सम्हालना चाहिये सुनते हैं कि अन्तरतेग़ज़न को बादशाह ने पहरा देने के लिये नियत किया है और उसको निगहबानी की आज्ञा दी है कहीं अन्तरतेग़ज़न देख पाये और तुमको कुछ क्लेश पहुँचाये तो प्रतिष्ठा भङ्ग होजायगी जो कुछ आपने नाम व निशान पैदा किया है सब बरबाद जायगा और बैरियोंकी बन आवेगी बनीबात बिगड़जायगी यह सुन याती अमीर रोते थे या बेअख़्तियार हँसपड़े और कहनेलगे कि अमर क्या दीवाना होगया है? जो मुझे मरने से डराताहै तू नहीं जानता कि मैं हुश्शाम अल्क़म के पुत्र का बधिक हूं उस दिन को ईश्वर की कृपा से कब डरताहूं इन बकरियों से कब डरताहूं हां तुझको अपना जी प्यारा है तो तू मेरे साथ न चल घर से बाहर न निकल यह कहकर मुक़बिल को अपने साथ लिया और मलका मेहरनिगार के महल की ओर मनोरथ किया अमर से कब रहा जाता था पीछे २ अमीर के साथ लगाहुआ चलागया जब बुग़दाद के निकट पहुँचे तो देखा कि अन्तर का पहरा है और जागते रहो होशियार रहो कहता हुआ चला आता है और उसके साथ हरकारे भी बहुत चले आते हैं एक स्थानपर कुछ घने बृक्ष थे अमीर साथियों समेत उनमें छिपगये जब पहरा निकल गया तो महल के नीचे मुक़बिल को खड़ाकरके आप बृक्षपर चढ़गये और फिर भी कोठेपर अमर समेत पहुँचे तो देखा कि मलका वस्त्रों से सजीहुई बैठी है और अमीर की

राह देखरही है मदिरा की बोतलें और प्याले आगे धरे हुए हैं और काफ़ूर के शमा जलते हैं सब प्रकार से सभा लैस किये हुए हैं एक तरफ़ में तरारखूबां मुक़बिल की माशूक़ा और दूसरे में फ़ितनाबानों दाया की पुत्री अमर अय्यार की आशना सजी बैठी है सिवाय इन दोनोंके और जो लौंड़ियां मलका की सहेली और भेद जानने वाली थीं गानेका साज लिये हुए आज्ञा की राह देखरही हैं और मलका उसी मार्ग की ओर आंखें कियेहुए देखरही है और अति आनन्द से बैठी है॥

दोहा। तीर यार के खोज का, उरमें गड़ा कराल। यहि कारण वह देखती, नयनन किये बिशाल॥

दाया ने कहा कि वला लूं आज साहबकिरांका आना कठिनहै चार सौ सवारों सहित अन्तर पहरा देरहाहै और सब ओर पुकारता है कि जागते रहो होशियार रहो यह सुनके मलका बोली कि ऐ दाया! जो साहबकिरां सच मुच मेरा मित्रहै तो यह क्या पहरा जो बादशाह की सब सेना पहरा देवे तोभी वह क्षणमात्र में आता है मेरा मन गवाही देरहाहै कि साहबकिरां थोड़ी देर में पहुँचताहै साहबकिरां मलका की बातें सुनकर मनमें अति प्रसन्न हुए और ऊपर से तले उतरे मलका ने दाया से कहा कि क्यों मैं न कहती थी देखो वह साहबकिरां आये वे यहां के आये कब उनको कल थी अन्त में अमीर वहांपर पहुँचे॥

दोहा। मन निज आकर्षण समुझ, अस प्रचएड गति जान। आपहि आय सनेहवश, प्रीतम आय मकान॥

चौपाई। आये धाम प्रेम लखि मोरा। रचना ईश देखु कस जोरा॥
कतहुं नहीं कतहुं निरधामा। अहे बिलोकत जाकर नामा॥

मलका ने उठकर साहबकिरां का हाथ पकड़कर तख़्तपर बिठला लिया और दोनों ओर से प्रेमकी बातें होनेलगीं मदिरा के प्याले चलनेलगे मलका ने अपने हाथ से प्याले शराब के भर २ कर अमीर को पिलाना आरम्भ किया साहबकिरां मलका के गलेमें हाथ डालकर मदिरा पीनेलगे होंठसे होंठ और छाती से छाती मस्ती के जोश में मले फिर अमर गानेलगा तानें उड़ानेलगा उसके कामों से मलका का चित्त अतिप्रसन्न हुआ तो अमर की ओर देखकर कहा कि इन युवतियों में से कोई पसन्द है किसीकी तू भी इच्छा करताहै अमर बोला कि क्योंकर प्रार्थना करूं? वह आपकी बड़ी मुसाहब हैं सब महलवालियों पर ग़ालिब हैं मुझे काहेको अङ्गीकार करेंगी मेरे नामपर गालियां देंगी मलका ने सौगन्द देकर कहा कि इनमें से जो मंज़ूर हो उसके गोद में तू भी जाकर बैठ अमर कूदकर तरारखूबांकी बग़ल में जाबैठा और उसे स्नेहदृष्टि से देखनेलगा वह अमर को गालियां देनेलगी और तिरछी भौंहें चढ़ाकर उठखड़ीहुई मलका ने कहा अमर! वह क्या कहती है क्या कुछ बुराभला कहती है अमर बोला कि सर्कार! क्या कहेगी लाड़ करती है और अपने चोंचले दिखाती है इनका मनही जानताहोगा कैसा अच्छा जानपड़ा होगा मलका हँसते २ लोट २ गई और कहनेलगी कि अमर! सच कहो उसकी कौनसी बात तुझे पसन्द आई कि इसके साथ स्नेह और मित्रता जमाई अमर बोला कि इसके

पास गहना बहुत सा है इसका मुझे लालच आया है इस बात पर फिर भी हँसपड़ी सब सभा लोटगई तरारखूबां अप्रसन्न होनेलगी मलका ने कहा कि वो तरारखूबां! तू भी कितनी बेमज़ा और नकचढ़ी है कितनी आख़िलखोरी और रूखी है अरे! अमर दूसरा अमीर है चालाकों का गुरू है इसकी माशूक़ा मुझसे दर्जे और अंशों में कम नहीं इससे अच्छा मनुष्य चातुरी में और नहीं है इसके पश्चात् अमीर ने मलका से क़ौल करार अपने दीन का ठीक किया और कुछ बातें सिखाईं मलका ने मुसल्मानी धर्म अङ्गीकार किया और अमीर से कहा कि जबतक मैं जीती रहूंगी तबतक सेवकाई करूंगी आपकी आज्ञा से बाहर न हूंगी अमीरने कहा कि जबतक मैं भी तुमसे व्याह न करूंगा तबतक दूसरी स्त्रीको आंख उठाकर न देखूंगा दोनों से यह ठीक ठहरा और इसी क़ौल करार में प्रातःकाल का रङ्ग देखपड़ा अमीर मलका से विदा हुए और अमरसमेत उसी मार्ग से नीचे उतरे और तीनों आदमी अपने डेरे की ओर चले॥

दोहा। भोर भयो बीती रयन, चन्द्रगयो तजि धाम। यहि सक्रारको मुख फलित, सजतगये जेहि नाम॥

राह के बीच में अन्तर का पहरा मिला उनलोगों ने चोर २ कहकर अमीर का पीछा किया अमीर ने तलवार खींचकर दश बारह मनुष्य मारडाले और आप अच्छीभांति से अपने डेरेपर पहुँचे जब सूर्य निकले अन्तरने देखा कि सिवाय अपने ही आदमियों के और किसीकी लाश दृष्टि न पड़ी तो जाकर यह समाचार बादशाहसे कहा और तमाम इतिहास रात का सुनाया जो उस दिन साहबकिरां दरबार में गये बादशाह ने कहा तुमने कुछ और भी सुना है कि बड़ा अद्भुत समाचार है मैंने अन्तर को महल की निगहबानीके लिये नियत कियाथा कारण यह उसकाहै कि मैंने चोरों का गुल सुनकर यह प्रबन्ध किया था सो आज पिछली रात को दश बारह आदमी उसके साथ मारेगये और चोरों का पता न मिला यद्यपि आपको कष्ट तो होगा परन्तु महल की निगहबानी करते बहुत अच्छा था जिसमें चोर तो पकड़ मिलें तुम्हारे लोग अच्छा पहरा देते हैं अमीर ने कहा कि मैं आधीन हूं जो आज्ञा होगी उसे करूंगा लोगोंने सुनकर कहा कि बादशाह ने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया जो साहबकिरां को महल के पहरा देने को नियत किया जो कोई सासानी है तो अमीर का नाम सुनकर अभीसे उधर को पांव न धरेगा और जो अरबी अथवा तुर्कों में से है तो भी मनोरथ न करेगा किन्तु बख़्तक ने अपने मनमें कहा कि यह वही कहावत हुई कि (सैयां भये कोतवाल अब डर काहेका) बादशाह ने बकरी की रखवारी भेड़िया के आधीन की क्या अच्छी बादशाह की बुद्धि है दरबार उठने के पीछे बादशाह से बिदा होकर अमीर प्रसन्न होकर अपने डेरे में आये और अच्छे २ सिपाही और ख़ासबरदार अपने सामने बुलवाये और मुक़ाबिल के साथ दो आदमी करके पहरा देनेको आज्ञा की और आप उसी रीतिसे पहरातगये अमर छली को भी साथ लेकर मलका के पास पहुँचे सारीरात मदिरा पीते और गाना अमरका

सुनते रहे जब भोर हुआ लूका पड़नेलगा अमीर मलका से विदा होकर तिलशाद-कामपर गये अब तो किसीका डर न रहा तमाम रात खूब क्रीड़ा की और दरबार के समय दरबार में गये बादशाह से प्रार्थना की कि सेवकने आपकी आज्ञानुसार तमाम रात पहरा दिया परन्तु कोई चोर न देखा बादशाह ने कहा कि तुम्हारे डरसे कोई नहीं आया कि जो वहां का मनोरथ करेगा तो माराजायगा यह कहकर बादशाह ने अमीर को खिलअत दी और शाबाशी देकर बहुत प्रसन्न किया बख्तक ने बादशाहसे प्रार्थना की कि आज कारनदेवबन्द को कि सासानियोंमें प्रतिष्ठित अधिक है पहरा देने को आज्ञा कीजिये उसकी भी कारगुज़ारी और परिश्रम देख लीजिये बादशाहने उसका कहना अङ्गीकार किया और कारन को पहरा देनेके हेतु नियत किया फिर बख्तक ने कारन से कहा कि ऐ पहलवान! तू तहिमूर्स देवबन्दके कुटुम्ब में से है बहुत सुशीलता और सावधानी से पहरा देना जो सामने आजाय पकड़-लेना खबरदार जो देवभी हो तो उससे मत डरना उसने कहा कि तू खातिरजमा रख तेरी मर्ज़ी के अनुसार काम करूंगा और बादशाह के सामने भी प्रतिष्ठा प्राप्त करूंगा जब दरबार उठा अमीर तिलशादकामपर आये और मित्र स्नेही भी साथ थे कारनदेवबन्द तीन सौ पहलवान अपने दस्ते से चुनकर सायंकाल ही से पहरा देनेलगा मलका ने जो कारन के पहरा देने का समाचार पाया तो अति व्याकुल हुई दाया से कहा कि आज कारनदेवबन्द पहरा देनेपर नियत हुआ है अमीर अवश्य आने का मनोरथ करेंगे कोई ऐसा होता कि जो उनको मना करआता कि आज तुम आनेका मनोरथ न करना इस मार्ग में भूले से भी न आना दाया बोली कि अमीर ऐसे अयान नहीं हैं आज वह आप न आवेंगे उनको भी तो अपनी प्रतिष्ठा का ख़यालहै अब अमीर का हाल सुनिये कि जब दोपहर रात बीती काले वस्त्र मांगे अमर ने अपना शिर पीटा कि हमज़ा! जान नहीं पड़ता है कि तुम्हें क्या होगयाहै? एक रात भी धैर्य नहीं करसके अमीर ने कहा कि ऐ अमर! स्नेह और धैर्यसे क्या लाभ है? यहां तो नेह की आग भड़कती है मेरे जानेका रोकनेवाला कौन होता है? किसका कलेजा इतनाहै अमर बोला कि कारनदेवबन्द ऐसा पहलवान नहीं है कि समयपर बचाय जायगा और आपपर धावा न करेगा अमीर ने कहा कि जब मैं कारन से डरा तो किसीसे स्नेह और मित्रता करचुका यह कहकर काले वस्त्र धारण किये और मलका के कोठेका मार्ग लिया तम्बूके बाहर निकले मुक़बिल और अमर भी साथ हुए देखा कि थोड़े २ लोग मशालें जलाये हुए अलग २ पहरा देरहे हैं जब अमीर बाग़ में पहुँचे तो देखा कि कारन एक कुरसी पर बैठाहुआ है और अपने साथियों से खबरदार होशियार की ताकीद कररहाहै मुक़बिल ने अमीर से कहा कि आज्ञा दीजिये तो कमान कांधे से उतारके एक तीर ऐसा मारूं कि कारन कुरसी में मिलजाय जगह से न उठने पावे अमीर ने कहा कि मुझे किसी के मारने से क्या काम है? उसे बैठा रहने दो वह प्रबन्ध करता है जब मेरा मार्ग रोकेगा

तब उसे समझलूंगा उसी भांति आगे आऊंगा यह कहकर छपते छपाते उसकी दृष्टि से अपनेको बचातेहुए कोठे की दीवार के तले पहुँचे मुक़बिल को उसीभांति तले खड़ा करके कमन्द लगाकर अमर सहित कोठेपर चढ़गये और मलका को देख कर अति आनन्दित होगये और दौड़कर गले में लपटगये तमाम रात भोग विलास करके आनन्द में व्यतीत की जब प्रातःकाल हुआ मलका से विदा होकर अपने स्थान का मनोरथ किया और वहां से चले पहले अमर उतरा जब बारी साहबक़िरां के उतरने की आई कारन ने दौड़कर अमीरपर तलवार लगाई अमीर तो बचे परन्तु वह तलवार कमन्द पर पड़ी कमन्द के दो टुकड़े होगये यद्यपि साहबक़िरां को मुक़-बिल ने रोंका परन्तु अमीर का बोझा मुक़बिल से कब सँभल सक्ता था साहबक़िरां का शिर दीवार में टक्कर खाकर फूटगया और थोड़ासा रुधिर भी निकला उस समय मुक़बिल और अमर ने कई आदमी तीर और गोफन से मारे कारनने जो देखा कि हमज़ा है पीछा न किया परन्तु उस कमन्द को बादशाह के सामने लेगया उसमें हमज़ा का नाम खुदा हुआ था बादशाह देखकर अत्यन्त अप्रसन्न हुआ और उसी समय बुज़ुरुच्चमेहर को बुलवाया और कहा कि ख़्वाजे हमज़ा ने यह क्या चाल हमारे साथ की यही भलेमानसी का काम विदित किया मेरी प्रतिष्ठा और शिष्टा-चार का बदला दिया बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि यह कमन्द जाली है किसीने जाल-साज़ी की है हमज़ा ऐसा नहीं है कि जिससे ऐसी ख़राब चाल देखने में आवे और शीघ्र महल की ओर उसका मन किसी भांति से जावे कारन बोला कि हमज़ा का शिर भी दीवार में लगकर फूटगया है और कुछ रुधिर भी निकला है बुलाकर देख लीजिये बादशाह ने अमीर को बुलाया अब अमीर का हाल सुनिये कि जब तम्बू में पहुँचा और अपने भेददारों में ठहरे चित्त में विचार किया कि अवश्य कारन मेरे घाव का समाचार बादशाह से कहेगा तो अत्यन्त हलकापन और अधिक बुराई होगी ईश्वर से बर मांगनेलगा कि मेरे भेद को अयानों से छपा मेरी प्रतिष्ठा को बैरियों से बचा इतना पराक्रम तुझी में है और यह बल मुझे तुझीने कृपा कियाहै मेरी नियत बुरी नहीं है कुछ हराम मैंने नहीं किया एक काफ़िर को मुसल्मान किया है मेरे शिरके घाव का चिह्न न रहे किसीपर मेरा भेद न खुले अमीर यह आशीर्वाद मांगरहे थे कि एकाएकी एक झपकी सी आगई तो देखा कि हज़रत इब्राहीम शिर पर हाथ फेरकर कहते हैं कि हमज़ा! उठ तेरे शिर का घाव अच्छा होगया किसीप्र-कार का चिह्न भी नहीं रहा अमीर की आंख खुलगई शिर को टटोलकर देखें तो घाव का चिह्न भी नहीं है ख़बर हुई कि बादशाह ने याद किया है जल्दी हाज़िर होने की आज्ञा दी है अमीर बादशाह के पास गया साथी मित्र स्नेही पहुँचे बादशाह ने साधारण जो अमीर का शिर देखा तो घाव क्या गुमड़ा भी शिरपर न मिला बाद-शाह ने बुज़ुरुच्चमेहर की बात सचमानी और कारन पर क्रोध किया कि हमज़ा पर तूने झूठ क्यों लगाया एक भले मनुष्य की आबरू की फ़िक्र क्यों की यह कह उसे

दरबार से निकलवादिया और अमीर को खिलअत कृपा की कुछ दिन के पीछे बहि-रास ने भी आराम होनेका स्नान किया और बादशाह के पास फिर हाज़िर रहने लगा एक दिन सरे दरबार बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि जब से खुसरो हिन्दुस्तान देश का बासी लन्धौरसादानशाह का पुत्र गद्दीपर बैठाहै तबसे हिन्दुस्तान का कर बादशाही खज़ाने में नहीं पहुँचताहै अत्यन्त बलिष्ठ है और बहुत हृष्ट पुष्ट बनाहै और एकसहस्र सातसौ मन की तबरेज़ की उसकी गदाहै और हज़ारों पहलवानों में एक पहलवान है और हाथी पर सवार होताहै अपना और गदा का चित्र बनवाकर खड़ा किया है किसीका घोड़ा उसके डरसे पास नहीं जाता और किसी भांति का घोड़ा अरबी हो या तातारी या तुर्की या ईराकी उसके आगे पांव नहीं बढ़ाता है बादशाह ने कहा कि इसका कुछ उपाय किया चाहिये जोकि बुज़ुरुचमेहर बुद्धिमान् और संसारी गति देखेहुए था शीत और उष्ण समय सब जानेहुए था अमीर के मस्तक से ताड़गया कि इनका चित्त महल में किसी पर लगगयाहै और वहां मलका मेहरनिगार के सिवाय ऐसा कौन है? जो ऐसा काम करे और चोरका पता न लगे तो उससे भी मालूम हुआ कि इस चालका आदमी सिवाय अमीर के और कहां है मन में शोचा कि इनको तरुणअवस्था का रङ्ग दीखपड़ा है और भला बुरा कुछ समझता नहीं जो कोई बात देखने में आई और किसी दुष्ट ने खबर लगाई तो मुफ़्त की बदनामी होगी और जोकि मैं सहायक हूं मेरे लिये भी बुराई होगी इस कारण यह बिचारके ऐसी सूरत निकाली कि इस लड़ाईपर सिवाय अमीर के कोई मनोरथ न करेगा और कोई बीरा न लेगा कुछ दिन अमीर उधर जायें कि इस नेहसे छूटजायें बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि अमीर से अच्छा और कोई नहीं है जब सब अमीर दरबार में आये बादशाह सब के आगे कहनेलगा कि खुसरो हिंदुस्तान देश का बासी लन्धौर सादानशाह के पुत्रको जो उसके अभिमान ने मेरी आधीनतासे फेररक्खा है अपने मनमें समझता है कि संसारमें मेरे समान कोई बलिष्ठ और पराक्रमी नहीं है इस जगके बीचमें मेरी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है देखिये कि कौन उसके साथ लड़ने का बीरा लेता है? कौन उस दुष्टको पराजय करता है ॥

लन्धौर की शिकायत में माई सादानशाह को बिनयपत्र भेजना और उसके पराजय के हेतु अमीर का मनोरथ करना ॥

अब लेखनी इस इतिहास को इस भांतिसे बर्णन करती है कि अभी बादशाह लन्धौरकी सरकशीका बयान दरबार में तमाम न हुआ था कि हरकारेने रक्षा करो २ यह शब्द बादशाह नौशेरवां के कानतक पहुँचाया बादशाह की आज्ञानुसार बख़्तक दरबार से बाहर आया और सरंद्वीपके बादशाह के धावन के हाथसे बिनयपत्र ले हुज़ूरके पास लाया और लिफ़ाफ़ा बन्द था सो खोलकर बिनयपत्र निकाला और दरबार के बीच में भारी आवाज़ से पढ़नेलगा कि आतशक दहनमरूद की सेवा पहुँचकर सरुद्वीप के बादशाह की प्रकाशित बुद्धिपर प्रकाश हो कि मुझसे पहले

सादानशाह मेरा भाई गद्दीपर शोभित था एक दिन आखेट खेलने गया तो एक मृग के पीछे घोड़ा डाला सेनासे अलग होगया तीन दिनतक फिरतारहा और अत्यन्त प्यासा हुआ तो पानी को ढूंढ़ता हुआ एक तालाब पर पहुँचा देखा कि एक स्त्री बड़े क़द की तीन मशकें पानी की भरीहुई उठाया चाहती है और किसी ओर को ले जाया चाहती है सादानशाह ने उससे कहा कि मैं तीन दिन का प्यासा हूं थोड़ा पानी मुझे पिला मेरे कलेजे की गर्मी मिटा उसने उन मशकों का पानी नाडाला और ताज़ा पानी भरना आरम्भ किया सादानशाह ने इस बात से उसपर अत्यन्त क्रोध किया और अप्रसन्न होकर अपने मन में कहा कि पानी पीलूं तो जैसा इसने मेरे मांगने से पानी मशकों का बहादिया है वैसा मैंभी इसका रुधिर बहाऊंगा फिर उस स्त्रीने एक पात्र में भरकर पानी सादानशाह के आगे रक्खा जब वह पानी पीनेलगा तो एक दो चार घूंट पीने के पीछे हाथ पकड़ लिया और पूछने लगी कि तू कौन है और तेरा क्या नाम है तू किस देश में रहताहै और तेरा कहां स्थान है ? सादानशाह नें कहा कि अरी बदबख़्त ! पानी तो मुझे प्यासभर पीलेनेदे फिर तू पूछना परन्तु उसने न माना अपने पूछनें से न फिरी न उसकी बात सुनी बादशाह सादानशाहने दो चार घूंट पिये जब प्यास बुझी तो तलवार निकालकर उसके मारने का मनोरथ किया वह स्त्री बोली ऐ मनुष्य ! मैंने तेरा क्या अपराध किया है ? कि तू मुझे मारता है सादानशाह ने कहा कि पहले मैं तुझसे कहचुका था कि तीन दिन का प्यासाहूं तूने तीन मशकें पानी की भरीहुई नादीं और मुझे खाली करके देखाया और दुबारा पानी भरने में और देर करनेलगी इतनी देर मुझे और प्यासा रक्खा जब पानी दिया और जब मैं पीने लगा तो तूने सांस भरके पीने न दिया दो चार घूंटके पीछे मुझे छेड़ना आरम्भ किया कि तू कौन है और कहां से आया है कि ऐसा प्यास का सतायाहै यह सुन उस स्त्री ने हँसकर कहा कि नेकी बरबाद गुनह लाज़िम पहले तू अपना नाम व निशान बतला पीछे से इसका उत्तर दूंगी और तुझे ढाढ़स दूंगी सादानशाह ने कहा कि इस देश का मैं बादशाह हूं सादानशाह मेरा नाम है आखेट खेलने आया था मार्गको भूलगया हूं उसने कहा कि आपकी बुद्धिपर धिक्कार है जो बारहसहस्र द्वीपों का बादशाह होकर बुद्धिसे खाली है समझ से तू कोसों दूर है सादानशाहने कहा कि इसपर कोई वृत्तांत भी है या केवल योंही मूढ़ बनारही है उसने कहा कि सुन जिस समय तूने मुझसे कहा कि मैं तीन दिनका प्यासा हूं दूरसे पानी ढूंढ़ता आया हूं मैंने उसी समय सुनतेही मशकों का पानी फेंका और दुबारा पानीभरकर दिया भी तो सांस भरकर पीने न दिया इस निमित्त से कि तू कई दिन का प्यासा था लोभ के मारे पानी बहुत पीजाता मैं शोची कि जो एकाएकी इसने पानी पिया और इसके कलेजे में पानी लगा तो सहजही में मरजायगा जो कोई देखलेगा तो इसके अज़ाब में मुझे पकड़ेगा ज़ान छोड़ाना कठिन होजायगा आबरू पानी होजायगी सादानशाह यह बात सुनकर उसकी बुद्धिमानी पर दीवाना

होगया और उसके क़ायदे और होशियारी पर अचेत होगया और पूछा कि तू कहां रहती है तेरा कोई मालिक है या अकेली है उसने कहा कि सिवाय ईश्वर के मेरा कोई पालक नहीं है अपने हाथ पांव के श्रमसे खाती हूं ज़ाहिर में मेरा कोई खबरगीर नहीं है सादानशाह ने उसको नगर में लाकर उससे ब्याह किया कुछ दिनके पीछे वह स्त्री गर्भवती हुई और सादानशाह मरगया गद्दीपर मैं बैठा गर्भ के दिन बीतने के पीछे उस स्त्री के लड़का उत्पन्न हुआ उस लड़के का शरीर पांच गज़ का था कुछ दिनके पीछे वह स्त्रीभी मरगई मैंने नाम उसका लन्धौर रक्खा और उसके पालने में प्रवृत्त रहा और ऊंटिनि उसके दूध पिलाने के हेतु नियत की और दूध पिलानेवाली दाइयां व खिलानेवाली स्त्रियां उसके खिलाने को नौकर रक्खीं और जिस दिन लन्धौर उत्पन्न हुआ था उसी दिन मेरे यहां भी लड़का उत्पन्न हुआ उसका नाम मैंने जयपूर रक्खा और दोनों को पालने लगा जब दोनों पांच २ वर्ष के हुए तब एक दिन खेलानेवाली ने अदब सिखाने के हेतु एक तमाचा लन्धौर के मारा कि गला उसका सूजगया लन्धौर ने उस खेलानेवाली को उठाकर धरतीपर पटक दिया कि वह मरगई और जो लोग उसके देखनेवाले और निगहवान थे डरकर भागे और मेरे निकट आन पहुँचे मुझसे सब समाचार बर्णन किया मैंने आज्ञा दी कि लन्धौर को मस्त हाथी के नीचे डालदो और अभी घर से बाहर निकालदो मेरी आज्ञानुसार हाथी आया लन्धौर को उसके आगे डालदिया हाथी जो सूंड़से उठानेलगा कि लन्धौर ने एक झिटका ऐसा मारा कि सूंड़ उसकी जड़ से उखड़गई वह चीख़ मारकर भागा और फ़ीलख़ाने में जाकर एक खम्भा उखेड़कर सब हाथी मारडाले और तमाम नगर में हलचल पड़गया फिर मैंने आज्ञा दी कि लन्धौर को पकड़लाओ बंदीख़ानेमें बन्दकरो किसी औरने तो पराक्रम न किया किन्तु एक मन्त्री ने कहा कि यह मेरा काम है मैं लन्धौर को पकड़के आपके पास पहुँचाताहूं यह कहकर एक प्याला हलुवे का लन्धौर के आगे रखदिया जब वह हलुवा खाचुका तो उसको मार्ग पर लगाया और मेरे पास लाया लन्धौरने मुझको देखकर मन्त्री से पूछा कि यह कौन है और क्या नाम है उसने कहा कि ये आपके चचा साहब यहां के बादशाह हैं यह मुल्क इन्हीं का है लन्धौर बोला कि इससे प्रथम कौन बादशाह था मन्त्री ने प्रार्थना की कि आपका बाप था लन्धौर ने कहा कि तू गद्दीका कौन है? मैं तो मालिक हूं और यह मनुष्य राज्य करे और मैं बेकार बैठारहूं मन्त्री ने प्रार्थना की कि यह बात सत्य है आप मालिक बादशाह हैं यह देश आपहीका है यह सुन कहनेलगा कि इसे गद्दीपर से उतारदो मैं गद्दीपर बैठूंगा आजही से राज्य करूंगा मन्त्री ने मुझसे कहा कि भलाई इसीमें है कि आप गद्दीपर से अलग हों और इसे बैठने दीजिये मैं गद्दीपर से उतरा और उसपर लन्धौर बैठा एक घड़ी के पीछे लन्धौर ने मन्त्री से खाना मांगा मन्त्री बेहोशी की दवा उसमें मिलाकर उसके सामने खाना लाया वह बोला कि शहपाल व जैपूर

को भी बुलालो कि वह भी हमारे साथ खावें खाने में मेरा साथ दें कदाचित् इसमें तुमने कुछ मिलादिया हो मेरी जान लेने का मनोरथ किया हो लाचार होकर मैंने जैपूर को बुलवाया उसने उसके साथ खाना खाया फिर तीनों थोड़ी देरके पीछे अचेत होगये एक घड़ी के पीछे मन्त्री ने मुझे और जैपूर को एक तेल सुँघाया और दोनों को फिर चेत में लाया मैंने आज्ञा दी कि लन्धौर को शिरसे पांवतक लोहे में जकड़दो और औरङ्ग व गोरङ्ग जो दोनों लखनौटी के शाहज़ादे हैं उनको सौंपदो मन्त्री ने मेरी आज्ञा पातेही वैसाही किया और उन दोनों शाहज़ादों को बुलवाया और बादशाह के हुक्म से ख़बर दी उन्होंने शीघ्रही उसे लेजाकर लखनौटी कुवाँ में डालदिया और उसका मुँह बन्द करदिया पच्चीस वर्षतक वह उसी कुयें में बन्द रहा और उमर व्यतीत किया जोकि लन्धौर की माता सीस पैग़म्बर के कुटुम्ब में से थी एकदिन औरङ्ग और गोरङ्ग की बहन ने स्वप्न में देखा कि आकाश से एक तख़्त पृथ्वीपर उतरा और उसपर हज़रत सीस पैग़म्बर बैठे हैं लन्धौर का तमाम वृत्तान्त और पराक्रम बताके कहते हैं कि मैंने तेरा लन्धौर का जोड़ा किया उससे तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा वह बड़ा प्रतापी होगा वह जो स्वप्न से चौंकी तो एक प्याला में खाना रखकर उस कुयेंपर पहुँची निगहबानों ने पूछा कि तू कौन है और क्या लाई है और इस समय कहां से आई है? उसने कहा कि लन्धौर के निमित्त खाना लाईहूं और एक प्रतिष्ठित प्रतापी का शुभ समाचार सुनाने आई हूं वह चुप रहे और कुछ न बोले वह कुयें में उतरगई और लन्धौर को खाना खिलाया और लोहे की बन्दि सोहन से काटकर अपना स्वप्न सुनाया और घर को चलीआई लन्धौरने जो बहुत दिनके पीछे सुख पाया सांकरों को अपने सिरहाने रखकर निर्भय पड़के सोरहा निगहबानों ने कहा कि लन्धौर की जीभ तालू में तो किसी दम न लगती थी आज क्या है? जो उसके चिल्लाने का शब्द कानतक नहीं पहुँचता है यह क्या माजरा है? एकने जाकर देखा कि लन्धौर चैन से पांव फैलाये अचेत सोरहा है और जिन सांकरों में जकड़ा हुआ था वह टूटीहुई सिरहाने पड़ी हैं वह आराम कररहाहै उसी समय निगहबानों में खलबल पड़ी शीघ्र औरङ्ग गोरङ्गको ख़बर दी दोनों शाहज़ादे दौड़े आये और बहुतसे पहलवान अपने साथ लाये देखा तो सचमुच लन्धौर छूटाहुआ पड़ा सोरहाहै इच्छा की कि इसे सोतेही फिर सांकरोंसे जकड़ देवें परन्तु लन्धौर ने जागकर दोनों शाहज़ादों को उठाकर देमारा और सब समाचार वर्णन किया कि तुम्हारी बहन आई थी मुझे खाना खिलागई है और मुझसे विवाह का क़ौल क़रार करगई है और सोहन से सांकरों को काटकर मुझे छुड़ागई है इस कारण मैंने तुम्हें जीदान दिया नहीं तो तुम दोनों की जान जाती फिर उसके स्वप्न का समाचार सब वर्णन किया दोनों शाहज़ादे इस समाचार को जानकर मन में प्रसन्न हुए और लन्धौर को उस अँधेरे कुयें से निकालकर तख़्तपर बैठाया और गद्दी पर बैठने की सब सामग्री इकट्ठा की लन्धौर ने अपने निमित्त एक गदा सातसौ

मन का बनवाया और उस गदा को हाथ में लेकर एक मस्त हाथी पर सवार हुआ और सरंद्वीप का मार्ग पूछनेलगा औरङ्ग गोरङ्ग ने हाथ बांधकर कहा कि कृपा-सागर कुछ दिन रहजाइये सेना जोड़के सरंद्वीप की राह लीजिये उसको यह बात अच्छी जानपड़ी और सेना बटोरने पर कमर बांधी जब एक फ़ौज अच्छी चुनीहुई बनगई तो बड़ी धूमधाम से सरंद्वीप की ओर कूच किया कुछ दिन के पीछे समुद्र के किनारे पर पहुँचा वहां से जहाज़ोंपर सवार होकर सरंद्वीप के फाटकपर पहुँचा हरकारों ने यह समाचार मुझे पहुँचाया मैंने जैपूर को दोलाख सवार की भीड़से उसके मुक़ा-बिले को भेजा और कई सौ पहलवान उसके साथ किये दोनों ओर की सेना रीति समेत जमाई गई और जैपूर और लन्धौर का सामना हुआ जैपूरने देखा कि लन्धौर जब गदा मारता है तब दश २ बीस २ पहलवान पिसकर मरजाते हैं शरीर के फीहे २ अलग होजाते हैं तो भागकर गढ़ीमें पहुँचा और फ़ाटक बन्द करलिया और क़िला पर से गोला लन्धौर की सेनापर बर्षाने लगा लन्धौर ने क़िला के दरवाज़ेपर पहुँचकर एक गदा फाटक में ऐसी मारी कि वह दरवाज़ा टुकड़े २ होगया और क़िलादार जो फाटक पर थे उन सबको मारडाला और दरवाज़े के टूटतेही मौत की हाट गरम की और क़िले में रुधिर की नदी बहाई मुझसे कुछ उपाय बन न आया फिर मैंने उस के सामने आकर जीदान मांगा लन्धौर ने कहा कि किस बातपर तू जीदान मांगता है किस मनोरथ पर मुझसे प्रार्थना करताहै मैंने कहा कि यह बादशाहत नौशेरवां जो सप्तद्वीपका बादशाह है उसके आधीन है जिसको वह आज्ञा देगा वह इस गद्दी पर बैठेगा आप कुछ दिन धैर्य धरें उत्तर मेरे बिनयपत्र का आलेनेदें उसने उत्तर दिया कि जब तेरी फ़िरयादनामे का उत्तर आवे और वह कुछ तुझे लिखवा भेजवावे तबतक तू एक द्वीप में बैठ मैं तुझे और नौशेरवां को क्या समझता हूं क्या मैं तेरी तरह निर्बल हूं कि तेरी या उसकी आधीनता करूं अब मैं किसीसे नहीं डरता मैं लाचार होकर जान बचा नगर से बाहर निकला लन्धौर गद्दीपर बैठा जोकि मुझे आपको ख़बर करना उचित थी इस निमित्त हुज़ूर से प्रार्थना की आगे आप मा-लिकहैं जो लन्धौरको आप पराजय न करेंगे तो वह मुझे बहुत सतावेगा और अभी तो मेरे बाल बच्चे मरने से बचचुकेहैं मैं आपसे क्या २ बेअदबी और अनुचित बातें न कहूंगा बादशाह ने इस हालको सुनकर बुज़ुरुचमेहर को अलग लेजाकर सलाह पूछी कि उपाधि के दूर करने का क्या उपाय है ? जो कोई उसकी बराबर न हुआ तो अत्यन्त छोटाई की बात होगी बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि पहले गुस्तहम को सरंद्वीप की ओर जानेकी आज्ञा दीजिये उसके पीछे दरबार के बीचमें यह क-हिये कि जो कोई लन्धौर को पकड़लावेगा मेहरनिगारके साथ उसका ब्याह करूंगा और वह बहुतसा देश व माल पावेगा सासानियोंमें से तो ऐसा पराक्रमी दृष्टि नहीं आता है कि लन्धौर का शिर लाने की हामी भरे परन्तु हमज़ा नाम व निशान पर मरता है यक़ीन है कि वह अङ्गीकार करेगा और यह मंसूबा बहुत अच्छा है कि जो

हमज़ा मारागया तो आप बदनामी से बचेंगे और जो लन्धौर को जीतलिया तो हिन्दुस्तान का सब देश उसीके आधीन होजायगा बादशाह अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ और बुज़ुरुचमेहर की बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की और उसी समय गुस्तहम को जो बहराम को घायल करके काबुल में भागकर बादशाह के डर से रहा था सांड़िनीसवार के हाथ उसको परवाना भेजा कि चालीस सहस्र सवार जो तेरे साथ हैं उन समेत सरंद्वीप पर जा लन्धौर का शिर काटकर हुजूर में हाज़िर ला तेरा अपराध क्षमा कियाजायगा और आगे तेरी खातिरदारी कीजायगी और भारी इनाम भी पावेगा दूसरे दिन जब कि सब अमीर उमराव दरबार में आये और अमीर भी आकर रुस्तम के स्थानपर बैठा बादशाह ने कहा कि ऐ पहलवानो! नामदार समय के बादशाह हिन्दुस्तान ने मेरे साथ बैर करनेपर कमर बांधी है और सर्कशी करने पर उतारू हुआ है जो कोई उसका शिर काटलावेगा मैं उसको अपना लड़का बनाऊंगा और मलका मेहरनिगार के साथ उसका ब्याह करूंगा यह सुन जितने पहलवान सासानी आदि थे किसीने दम न मारा अपने २ मन में बिचारनेलगे कि प्रथम तो समुद्र से जीतेजाना कठिन काम है दूसरे ऐसे बलिष्ठ से सामना करके किसकी मजाल है कि बर आये जानबूझकर कौन अपनेको मृत्युवश करे यह बात बुद्धि से दूर है परन्तु साहबकिरां ने दङ्गल से उठकर बादशाह को सलाम किया॥

दोहा। उमर तुम्हारी अधिक हो, जबलग सूरज चन्द। हम तुमसों फल पावहीं, तुम दुखहतसुखकन्द॥

और प्रार्थना की कि इस आधीन को जो आज्ञा दीजिये तो खुसरो हिन्दुस्तान के बादशाह को जीता हुआ पकड़लावे मुझे केवल वहां पहुँचने की देर है आपके पासतक बेड़ी पहिनाकर लाऊं और जो मारागया तो आप परसे न्यवछावर हुआ के यह सुन बादशाह ने तख़्तसे उठकर उसको गले लगाया और कहा कि ऐ अब्दुल्अला इससे अधिक तुमसे मुझे आशा है॥

चौपाई। राज सछत्र सदा बहुभांती। रहै कृपाल तोर सुख थाती॥
प्रजा सुखी है विविध प्रकारा। अस प्रताप है नाथ तुम्हारा॥

बुरी दृष्टि दूर रहे बादशाह ने कहा कि जो साल अच्छा होता है वह बसन्त ही से दीख पड़ता है जो यह हिम्मत तुममें न होती तो इस अधिकारपर क्योंकर पहुँचते और क्यों जवांमर्दी का गुर्दा भरते फिर उसी दम अमीर को खिलअत कृपा की और तीस जहाज़ जिनपर हज़ार २ मनुष्य सवार हों बननेकी आज्ञा दी अमीर बिदा होकर अपने डेरे में आया और कूचका सामान करनेलगा और मन को धैर्य देनेलगा और सेना को आज्ञा दी कि तुमलोग आजही कूच करजाओ बसरे में जाकर हमारी राह देखो और अमर को बुलाकर कहा कि ऐ अमर! जो चलते २ एक बेर दृष्टि से मलका को देखलेते तो डाह न रहता अमर ने कहा कि एक पत्र बुज़ुरुचमेहर को लिखिये यह बात उनके उपाय से होसक्ती है वह तुम्हारी भलाई के चाहनेवाले हैं और सहाय करते हैं अमीर ने अपने हाथ से एक रुक़ा बुज़ुरुचमेहर को

लिखा अमर ने ख़्वाजे के पास लेजाकर वह पत्र ख़्वाजे को दिया ख़्वाजे ने उस रुक्के को पढ़कर अमर को अपने साथ लिया और बादशाह से जाकर बयान किया कि यहां से हिंदुस्तानतक हमज़ा आपका दामाद ज़ाहिर होगा परन्तु यह कैसी दामादी कि शर्बत भी न पिलाया गया और हमज़ा आपकी आज्ञानुसार जी न्यवछावर करने को चला नौशेरवां ने हँसकर कहा कि क्या है हमज़ा को बुलवाओ पानीवाले से कहकर शर्बत बनवाओ ख़्वाजेने बादशाह की आज्ञानुसार शीघ्र हमज़ा को बुलवाया और कन्द व गुलाब का शर्बत बनवाया अमीर शीघ्रही बादशाह के पास आये बादशाह ने अमीर को प्यार समेत अपने पास बैठाला और शर्बत मांगा ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर ने प्रार्थना की कि दामादी का शर्बत महल में पिलवाना उचित है और गिलौरियां पानकी भी वहीं खाना उचित है मर्दाने में इस बात का होना उचित नहीं है जनाब बेगमसाहबा के पीछे यह बात करना उचित नहीं नौशेरवां ने अङ्गीकार किया और ख़्वाजेबुज़ुरुच्चमेहर से कहा कि तुम हमज़ाको महल में ले जाओ और शर्बत आदि पिलवाओ मेहरनिगार की माता अपने हाथसे हमज़ा को शर्बत पिलावेंगी और समझादेना कि जितनी रस्में ब्याह की हैं सब कीजावें कि शर्बत पिलाने के पीछे हमज़ा का शिष्टाचार आदर ब्यवहार करें और कहें कि मेहरनिगार तुम्हारी धरोहर है और हमारी इज़्ज़त तुम्हारी ही इज़्ज़त है चाहिये कि जल्दी बादशाह केबैरी को मारकर आओ या उस दुष्ट को जीता पकड़ लाओ और मेहरनिगार सेब्याह करो हमारे मनको आराम व चैन दो ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर अमीर से पहले घर में गये और बादशाह ने जो कुछ कहा था मलका मेहरअंगेज़से कहा बख़्तकने यह ख़बर सुनकर अपने मनमें शोचा कि जिस समय हमज़ा महल में गया उस समय अवश्य मेहरनिगार को यह देखेगा इससे सूभी चज कि उसकी इच्छा मनहीं में रहे मलका का देखना जिसमें नसीब न हो झटपट ख़च्चरपर सवार होकर चला और दरवाज़ेपर पहुँचा अमीर बख़्तक को देखकर अमर से कहा कि इस समय यह उपाधि टाला चाहिये दोसौ रुपया तुझे दूंगा और बहुत राज़ी करूंगा अमर ने मक्कारी भाषा में अमीर से कहा कि आप मकान को जावें वहां आनन्द करें मैं इस खल को वहां तक न जाने दूंगा खड़े २ अभी समझलूंगा ज्योंही अमीर आगे बढ़े अमर बख़्तकके घोड़े की बाग पकड़ली और कहा कि ख़्वाजे बख़्तक हम हिंदुस्तान को जाते हैं देखिये वहीं की मिट्टी है या अच्छीभांति से लौटआवें इससे जो आपने तमस्सुक पांचसौ रुपये का लिखदिया है सो अब कृपा करके रुपया दे दीजिये तो राहका ख़र्चही होजावे और आपके ऊपर से क़र्ज़ भी उतरजावे बख़्तक बोला कि तू भी बड़ा मूर्ख है तक़ाज़ा करने का यह कौन मौक़ा है मैं हमज़ा के साथ काम को जाताहूं तेरे मालिक का साथी हुआ हूं और तू मेरा मार्ग रोकता है कि मेरे रुपये देदो तू जा मेरे नाम से अदालत शाही में नालिश कर जो मुझपर रुपये निकलेंगे तो मैं दूंगा तू मुझे मार्ग में क्यों रोकता है अमर ने कहा कि साहब! यह तो उस

से कहिये जो आपसे कमज़ोर हो जब मैं न लेसकूं तब तो अदालत में नालिश करूं खबरदार आगे पांव न धरियेगा पहले मेरे रुपये मँगवादीजिये फिर जहां मन में आवे जाइयेगा बख़्तक ने अप्रसन्न होकर अपने सेवकों से कहा कि अमर को हटा दो यह बात सुनकर अमर को बड़ा क्रोध हुआ और कूदकर खच्चरपर बख़्तक के पीछे जाबैठा और कटार निकालकर बख़्तककी पीठपर धरा और कहा कि दुष्ट! क्या मृत्यु आई है? तुझे अब बेमीच मारडालूं आंतें यहीं ढेर करदूं बख़्तक यह सुनकर कांपगया और हाथ जोड़ने लगा और विनती करने लगा परन्तु अमर ने एक दस्ता उसके ऐसा मारा कि बख़्तक का शिर फूट गया रुधिर बहनेलगा बख़्तक उसी भांति से लोहू में डूबाहुआ बादशाह के सामने गया और पगड़ी देमारी कि सब सेवक का यह दर्जा हुआ कि छोटा मक्कार बाज़ार के बीच में मेरी प्रतिष्ठा भङ्ग करे नौशे-रवां को भी बुरा मालूम हुआ और अमर को बुलवाया जब अमर आया पूछा कि बख़्तक ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तूने उसके साथ ऐसा किया अमर ने प्रार्थना की कि कृपानिधान! आप न्यायी हैं न्याय करें जिसका अपराध हो उसे दण्ड दें या क्षमा करें इसका पांचसौ रुपये का तमस्सुक मोहरी सेवक के पास है यह मेरे रु-पयों के देने को इन्कार करता है गुलाम ने इससे कहा कि अब मैं हिन्दुस्तान को जाता हूं जीता रहने के पीछे कब आना हो अपना तमस्सुक लीजिये मेरा रुपया दी-जिये यह सुनकर यह क्रोधवन्त हुआ और अपने सेवकों से कहा कि इसको मार कर निकालदो हमारे सामने से दूर करो वे मुझे मारने को दौड़े और सैकड़ों बातें अनुचित कहीं हुज़ूर! इसका न्याय कीजिये कि मैं बाज़ार के बीच मार खाऊं और पियादों की दौर दबक उठाऊं इसका न्याय कीजिये कि किसका अपराध है? और किसने झगड़ा की जड़ डाली यह कहकर तमस्सुक भी जेब से निकालकर डाल दिया और न्याय मांगने लगा बादशाह ने बख़्तकसे कहा इस मुक़द्दमे में तेरा अ-पराध है सरासर तेरी जबरदस्तीही जान पड़ती है और न्याय के निमित्त हमारे पास दौड़ता है जा इस तमस्सुक के रुपये अमर को दे नहीं तो अदालत तुझे अ-पराधी ठहरावेगी जो रुपये न देगा तो बहुत से कष्ट पावेगा बख़्तक ने उसी दम ख़ज़ाञ्ची से सब रुपया लिया और अमर के हवाले किया और आप रोता अपने घर गया अमर मकान की ओर चला अमर तो इस बखेड़े में था अमीर और मुक़बिल महल में पहुँचे मलका मेहरअंगेज़ ने अमीर को बड़े आदर व्यवहार से बादशाह के बैठका पर बैठाया और मङ्गलाचार की सामग्री तुरन्तही मँगाई गई और आप मेहरनिगार को एक कोठरी में लेजाकर बैठी मङ्गलाचार करने की सभा जमी शर्बत पीने के शब्द बन्दीजन गानेलगे गुल शोर मचने लगा शर्बत लाने के हेतु मलका ने आज्ञा की अमर जो डेउढ़ी पर पहुँचा चाहा कि भीतर को जावे दरबानी तो पहिंचानता न था उसने लकड़ी उठाकर रोका कि तू कौन है? जो महल में चला जाता है बे पूछे हुए मकान में घुसता हुआ चलाजाता है अमर दोनों आंखोंपर हाथ

रखकर लेटगया और गुल मचाकर कहने लगा कि दरबानी तेरा बुरा हो तूने मेरी आंखें फोड़डालीं यह हाल देखकर सिपाही जो दरवाज़े पर था घबरागया और उलटी खुशामद करने लगा मलका मेहरअंगेज़ ने गुल शोर सुनकर कहा कि देखो यह हल्ला कैसा होता है ? कौन दरवाज़े पर चिल्ला रहा है अमीर अमर का बोल सुनकर दौड़े अमीर के दौड़ने के साथही ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर भी दौड़े देखें तो अमर आंखें पकड़े हुए लोटरहाहै अमीर ने कहा कि अमर आंखें खोल मुँह से कुछ बोल जो तेरी आंखों में चोट आई हो तो ख़्वाजे तेरी दवा करें पर अमर आंखों को खोलता न था और हाय २ गई आंख २ के सिवाय कुछ बोलता न था अन्त को अमीर ने ज़बरदस्ती से उसकी आंख को उघारकर देखा तो आंखें साफ़ तारा सी चमकती हैं कुछ धक्का तो लगाही न था अमीर ने कहा कि अमर ! यह क्याथा कि जो हमको और ख़्वाजे को बेकाम बैठे बिठाये उठाया और मलका साहबा को भी घबराया अमर कहने लगा कि आपके शिर की क़सम है इस दरबानी ने लकड़ी मेरे मारनेके हेतु उठाई थी जो लकड़ी मारता तो मेरी आंखों में लगती तो मेरी आंख फोड़ही डाली थी वह सुन अमीर और ख़्वाजे हँसपड़े और अमर को लेकर महल में गये मलका मेहरअंगेज़ने जो यह हाल सुना वह भी बे अख़्तियार हँसने लगी जब अमीर मसनदपर बैठे और बादशाहों की भांति शर्बत पिलाया गया और मङ्गलाचार की धूम मची और मलका मेहरनिगार की सहेलियों में दिल्लगी होनेलगी और मलका मेहरअंगेज़ की आज्ञानुसार प्रजा लोगों को इनआम दियागया मलका मेहरअंगेज़ ने कहा कि साहबकिरां मेहरनिगार आपकी धरोहर है और जिस समय तुम विजय प्राप्त करके हिन्दुस्तान से फिरोगे उस समय तुम्हारे साथ ब्याह करूंगी आपका मनोरथ पूर्ण होजायगा अमर ने बुज़ुरुचमेहर की ओर देखकर कहा कि वाह २ साहब यह तो बहुत अच्छा न्याय आपने किया और बहुत अच्छी रीतिहै विदित है कि हम तो बादशाह की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान में शिर बेचनेके निमित्त जावें और आप मेहरनिगार को एकदृष्टि भी न दिखायें जो ईश्वरने हमको जीता फेरा और मनोरथ समेत यहां तक पहुँचाया तो हम नहीं जानते हैं कि आप किस के साथ हमज़ा का ब्याह करदेंगे किसको इसके गले मढ़देंगे हमें क्या मालूम कि बादशाह की बेटी गोरी है या काली है दुबली है या मोटी है हम इस समय देख तो रक्खें जिसमें पीछे को ख़राबी में न पड़ें और हमें बादशाह के चरण की क़सम है कि जबतक हम मेहरनिगार को देख न लेंगे कभी पांव इस मकान से बाहर न धरेंगे यह सुन मेहरअङ्गेज़ने हँसकर अमर की बातोंपर कहा कि कहीं मर्दों का देखना उचित है यह रीति कहीं नहीं है कि लड़की को देखें हां स्त्रियां मँगनी ब्याह के हेतु आती हैं वही देख जाती हैं अमर ने प्रार्थना की कि हुज़ूर सत्य कहती हैं परन्तु मेरी यहां कौन माई मौसी बैठी है कि महल में आये और मलका साहबा को देख जावे आपही हमलोगों की बड़ी बूढ़ी हैं जो उचित होगा उसे करेंगी मलका ने कहा

भला यह तो अब तुम्हारी हमारी प्रतिष्ठा और आबरू एक हुई जब चाहो देखलो फिर कहा बहुत अच्छा ख़्वाजे तुम अमीर को पर्दे के भीतर लेजाओ और मेहरनिगार को दिखलाओ बुज़ुरुच्चमेहर उनको पर्दे के भीतर लेगया अमीर मलका मेहरअङ्गेज़ को देखकर सलाम किया और भेंट दी मलका अशीश देनेलगी मलका मेहरनिगार तले मूड़ कियेहुए अपनी माता की गोदमें बैठी थी लाजके कारण शिर ऊपर न उठाती थी अमीर उसे देखकर अत्यन्त कृतकृत्य होगये मारे खुशी के फूले न समाते थे मलका मेहरअङ्गेज़ ने जो अमीर को पास से देखा तो बड़े आनन्द से अङ्गीकार किया बुज़ुरुच्चमेहर ने मलका मेहरनिगार से कहा कि अमीर को जाना बहुत दूर है कुछ चिह्न अपना दीजिये कि सदा उसको अपने पास रक्खें आपकी याद में ध्यान लगाये रक्खें मेहरनिगार ने एक ज़मुर्रद की अँगूठी हाथसे निकालकर अमीर को दी अमीर नें भी अपने हाथ की अँगूठी उतारकर मेहरनिगार को देकर कहा कि हमारा भी चिह्न आपके पास रहे कि जिससे हमको आप न बिसारें कभी २ याद करती रहें फिर अमर ने भी हाथ बांधकर मेहरअङ्गेज़ से प्रार्थना की कि जो अपराध क्षमा हो तो मैं भी कुछ प्रार्थना करूं उन्होंने कहा कि कह क्या कहता है ? तेरी क्या इच्छा है अमरने कहा जिस समय अमीर का ब्याह मलका मेहरनिगार से होगा तो सेवक का भी ब्याह मलका की दायाकी पुत्री से हो सो मुझे भी चिह्न दिलवा दीजिये शर्बत दाया साहबासे पिलवादीजिये यह सुन मेहरअङ्गेज़ ने कहा क्या अच्छा ? दाया ! कुछ सुनती है कि अमर क्या कहता है ? औरही मनोरथ इस का है दाया ने कहा कि ईश्वर मलका को सदा प्रफुल्लित रक्खे जिनकी बदौलत यह बातें सुनने में आईं मलका को छोड़कर यह कहां जायगी मलका की जो मर्जी होगी वही यह भी करेगी यह सुन मेहरनिगार ने इशारे से कहा उसने अङ्गीकार करलिया फिर मलका मेहरअङ्गेज़ने फ़ितनाबानोंसे कहा कि कुछ तूभी अपना चिह्न अमर को दे उसने कई सौ रुपये का अतरदान दिया फिर मेहरअङ्गेज़ ने कहा कि फ़ितनाबानों ! तू भी कुछ अमर से ले वह बोला देता हूं यह कहकर जेबमें से एक खुरमा और दो अखरोट निकालकर फ़ितनाबानों के हाथमें रखदिये और कहा कि इसको बहुत अच्छी भांति से रखना देखनेवाले अमर के इस कामपर हँसते २ लोटगये फिर अमीर बिदा हुए और बादशाह की ओर चले ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर ने अमर से कहा कि बाबा, तू मुसल्मानों की सेना में जाकर ख़बर दे कि अमीर आते हैं तो कोई सन्देह और फ़िक्र न करे मैं अमीर को बिदा करवाने के हेतु बादशाह को बुलवाताहूं और इच्छा के अनुसार पारितोषिक दिलवाता हूं अमर तो उधर गया ख़्वाजे अमीर और मुक़बिल को अपने मकानपर बहलाकर बादशाहके पास पहुँचा और बिनय की कि मलका मेहरअङ्गेज़ ने भी अतिप्रसन्नता से अमीर को दामादी से अङ्गीकार किया बादशाह ने अमीर को निकट बुलवाया और ख़िलअत दामादी की कृपा की इसके पीछे ख़्वाजे अमीर को मकान में लाकर बाज़ २ बातोंकी

शिक्षा दी और शर्बत पिलाया शर्बत पीतेही अमीर अचेत होगये तो ख़्वाजे ने अमीर की जांघ अस्तुरासे चीरकर शाहमोहरा उसमें रक्खा और टांके देकर मरहम दाऊदी उसमें मलदिया मुक़बिल ने पूछा कि हज़रत! यह कौन दवा है? कहा कि हिन्दुस्तानी एक मनुष्य अमीर को विष देगा आपके मारने का उपाय करेगा और उसकी दवा इसके सिवाय और संसार में उत्पन्न नहीं हुई है ख़बरदार जबतक तू अमीर के हाथसे मार न खालेना तबतक उसको न बताना यह कहकर किसी वस्तु का पानी अमीर के मुँह में टपकाया अमीर शीघ्र होशमें आये परन्तु इतनी देरमें घाव ऐसा भरगया था कि अमीर पर इस भेदका हाल न खुला इतने में अमर भी डेरेसे आन पहुँचा ख़्वाजेने अमीर को बिदा किया और रीति भांति करके समुद्र की ओर चले और बहुत से अमीर जो अमीरके स्नेही थे भेजने के हेतु चले और नगर के बाहर पहुँचाकर रुख़्सत मांगने लगे अमीर ने सबको ईश्वर को सौंपकर आप वहां से बेग कूच किया कुछ दिन बीते सेना समेत वहां बसरानगर में दाख़िल हुए और समुद्र के किनारे सेना समेत गये देखा कि तीस जहाज़ बादशाह की आज्ञानुसार बने खड़े हैं मेरे आनेका मार्ग वे लोग देखरहे हैं अमीर अपने तीस सहस्र सवारों से उन जहाज़ों पर सवार हुए और हिन्दुस्तान की ओर चलने को तैयार हुए अमर जहाज़ से उतरकर अमीर से कहने लगा कि मैं जिन्न और जादू और पानी से बहुत डरता हूं इसहेतु से हिन्दुस्तान की ओर नहीं जानेका मक्के में जाकर आपकी बिजय के हेतु ईश्वरसे वर मांगूंगा अमीर ने देखा कि यह किसी भांति से मेरे साथ न जायगा उड़ानघातियां बतावेगा फिर अमीर ने कहा कि अच्छा अमर मैंभी नहीं चाहता कि तू कष्ट पावे परन्तु थोड़ी देर थमजा तो एक विजयपत्र अपने पिता को लिखदूं अमर ने जाना कि सचमुच पत्र लिखदेंगे और मुझे यहींसे बिदा करेंगे तो जहाज़ पर सवार होकर अमीर के पास गया अमीर ने एक पत्र लिखकर अमर के हाथ में सौंपा और कहा कि ऐ भाई! आओ तो मिललें ईश्वर जाने अब कब मिलाप होगा? अमर की आंखों में जल भर आया और बहुत से आंसू टपके अमीर ने अमर को बग़ल में लेकर कहा कि यार! तुमने हमारी बड़ी २ मुसीबतों में साथ नहीं छोड़ा इस समय तुम्हारा बिछोह कब मन को भाता है॥

दोहा। जो कुछ लिखा लिलारमें, होना वही ज़रूर। अब तो नाव चलायदी, ईश करे भरपूर॥

केवट से कहा कि जहाज़ का लङ्गर उठा आज्ञा देने की देरी थी लङ्गर जहाज़ का उसी घड़ी उठगया जब किनारे से दूर निकल गया तो अमीर ने अमर को छोड़ दिया अमर हाथ पांव पटक २ कर जहाज़पर दौड़नेलगा और बड़बड़ाने लगा कि मैंने तो इस अरबवाले के साथ प्रीति की रीति से मिलाप किया और यह मेरा बैरी जीवघातक होगया थोड़ी देर चलके एक टापू तीस गज़ का चौड़ा दृष्टि आया अमर उस टापू को देखकर मन में बिचारने लगा कि इसपर कूदकर घरतक पहुँच जाऊंगा परन्तु जिसको अमर ने टापू समझा था वह मछली थी धूप के खाने को

पानी पर उतरा आई थी अमर जो उसपर कूदा मछली अमर के कूदने की धमक से पानी में चलीगई तो अमर बूड़नेलगा और बहुत घबरागया यह वृत्तान्त देखकर साहबकिरां ने केवटों को ताकीद अर्थात् धमकी दी कि खबरदार अमर बूड़ने न पावे दूसरा गोता न खावे जो इसे निकाल लावेगा वह भारी पारितोषिक पावेगा केवटों ने सांकरें फेंककर अमर को जहाज़पर उठा लिया अमीरके सामने लाकर बैठादिया सच है कि जो मनुष्य दुःख में फँसता है वही आराम का हाल जानता है अब जो अमर समुद्र से निकाला गया तो भीगी मुर्गी की भांति जहाज़ के एक किनारे चुपका बैठा रहा कई दिनके पीछे एक टापू के किनारे पहुँचे जहाज़ों का लङ्गर पड़ा सब से पहले अमर कूदकर पृथ्वी पर आया और खिलखिलाकर फिरनेलगा दैवयोग से एक वृक्ष के तले एक आदमी कमर में चमड़े की पेटी बांधे बैठाहुआ अमर को देखकर मन में प्रसन्न हुआ कि मनोकामना पूर्ण हुई अमर से कहनेलगा कि ऐ मेरे भानजे ! तेरा मिलना भी दैवगति से हुआ इस स्थान में तेरा पहुँचना बड़ा आश्चर्य है मैंने तो जाना कि मैं मरा और द्रव्य भी गई परन्तु ईश्वर ने हक़दार को भेज दिया बड़ी दया मेरे ऊपर की अमर ने जो मालका नाम सुना तो चुप होरहा नहीं तो कहा चाहता था कि मैं तेरा भानजा काहेको हूं ? क्यों अजनबी आदमी से प्रीति विदेश में करूं अमर ने उसका हाल पूछा उसने कहा कि तूने मुझे नहीं पहिंचाना होगा कि मैं तुझे छोटा सा छोड़कर सरन्द्वीप को निकल गया था जिस समय मैं वहां बहुत सी सम्पत्ति पैदा करचुका तब चाहा कि अब घर को चलिये तो एका-एकी वायु बहुत ज़ोर से चली समुद्र में तूफ़ान आया और बड़ी २ लहरें उठनेलगीं जहाज़ यहां पर आनकर बूड़गया मैं एक सन्दूक़ हीरा मोती आदि जवाहिरात का लेकर कूदा और सूखे में आपड़ा परन्तु पैरों में ऐसी चोट आई कि पैर भर तक चलना कठिन होगया इस द्वीप में एक जर्राह रहता है लोग उसे बहुत अच्छा बताते हैं लोग दयाकर मुझे लेगये और कुछ खाना पीना भी मुझे देगये उसने अपने घरके निकट एक मकान किराये का भी लेदिया और केचुओं का तेल अपने घरसे लगाने को दिया पर आज मन ऊबने से यहां तक आया हूं परन्तु बड़ी देर से मकान पर जाने का मनोरथ है जा नहीं सक्ताहूं पीरके कारण हिचकिचाता हूं चलना कैसा ? खड़े होनेसे भी जी चुराता हूं जो तू मुझे पीठपर लादकर लेचले तो मुझपर दोहरा उपकार करे कि मैं घरतक बेपीर पहुँच जाऊं और तुझे तेरी धरोहर भी सौंप दूं और मैं भी एक किनारे जहाज़ पर बैठलूं अमर ने जो सन्दूकचों का नाम सुन कर समझा कि मेरी भाग्य उदय हुई बेगानों के आगे अपना जानपड़ताहूं सेंत की लक्ष्मी हाथ आती है आवताव कुछ भी न देखा झटपट उस लूले लँगड़े को अपनी पीठपर बैठा लिया उसका पीठ पर पहुँचना था कि उसने अमर की कमर में दोनों पांव लगाकर तस्मा अच्छी भांति करके लपेटा और घुटुओं से एँड़ियां लगा २ कर कहने लगा हां मेरे घोड़े अपना क़दम अच्छी भांति से बढ़ाकर दौड़ तो अपनी

दिखा अमर का सब शरीर जकड़ गया यद्यपि चाहा कि हाथ से उसके पांव को छुड़ावें जिसमें उपाधि से छूटें परन्तु उसने हाथ भी बांधलिये और अपने हाथ से अमर को धौलें मारने लगा और मुँहपर थप्पड़ पीठपर घूँसे लगाने लगा कि दौड़ता नहीं है सहलही में माल लिया चाहता है अमर सब चालाकी और मक्कारी भूल गया अत्यन्त अचेत होगया और लाचार होकर अमीर की ओर दौड़ा जहाज़ की ओर का मार्ग लिया कि अमीर मुझे इससे छुड़ावेंगे वहां जाकर देखा कि वहां भी अद्भुतलीला होरही है कि मित्र स्नेही समेत अमीर भी इसीमें फँसे हैं अमीर ने अमर को देखकर अय्यारी भाषा में कहा कि हम समझते थे तुम इस उपाधि में न फँसे होगे हमलोगों को इनसे छुड़ाओगे सो तुम भी इसीमें फँसे अमर यह हाल देखकर लाचार होकर अमीर के पास से निराश होकर फिरा परन्तु इसके उपाय में था कि वह तसमियां पांव कभी तो कहता था कि क़दम चल कभी हुक्म देता था कि कूद फिर उछल उसने सब अपने साथियों को देखा कि सब सवार हैं यह सब के सब कहने लगे कि तुम भी अपना २ घोड़ा दौड़ाओ और सर्पट पोइया दिखाओ और हम भी अपना घोड़ा दौड़ावें देखें किसका घोड़ा आगे निकल जाता है और कौन पीछे रहकर मार खाता है? इसके पीछे इन्हें मारकर क़बाब लगाकर भून २ कर खाजावेंगे यह सुनकर सबके होश उड़गये ठण्ढी श्वासें भरनेलगे फिर वे अपने २ घोड़ों को एँड़ी मारना शुरू कीं और अपने २ घोड़ों की वागें लीं आदी का सबसे अधिक नाक में दम हुआ था कि मुटापे से क़दम २ पर ठोकरें खाता था यह दशा देख अमर ने यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। मानुषपर बीतत कबहुं, अतिदुख दण्ड उरोत। कबहुँक सुखमें रहत तन, मन अति हर्षित होत॥

और ऐसा दौड़ा कि कोई उसके आसपास तक न पहुँचा सबसे दो कोस आगे निकलगया यह देख वह दुष्ट अति प्रसन्न हुआ बोला कि मेरा घोड़ा सबसे अच्छा है बायु के समान जाता है अमर ने एक स्थानपर देखा कि कोसोंतक अंगूरके बृक्ष लगे हैं फल बहुत से लटकरहे हैं और दानों से रस टपकरहा है रस की नदी बहती है उसके समीप कद्दूकी बेल फैली है उसमें सैकड़ों कद्दू लटकते हैं दूरतक इसकी बेलें चलीगई हैं अपने मनमें अति प्रसन्न हुआ और कद्दू की बेल के पास जाकर अपने सवार से कहा कि बड़ासा कद्दू तोड़दे इसको पीकर और भी क़दम निकालूं और अपनी चुस्ती व चालाकी तुझे दिखादूं उस बुद्धिहीनने अमरके कहनेपर काम किया और तोड़कर अंगूर का पानी उसमें भरा और थोड़े बूंद अमर के मुँहमें चुआये और दोचार फल भी तोड़कर खिलाये अमर छलांगें फलांगें मारकर गानेलगा और उसको लेकर अति बल से दौड़नेलगा वह दुष्ट अति प्रसन्न होकर अमर से कहने लगा कि ऐ मेरे घोड़े! जबतक मैं जीऊंगा कभी तुझे रानसे अलग न करूंगा कि तू हँसता और जी बहलाता है और क़दम भी खूब जाताहै अमर ने कहा कि देखो यह पानी तुम न पीलेना मेरे निमित्त रहनेदेना वह अपने मनमें समझा कि मालूम

हुआ यह पानी बहुत अच्छी चीज़ है तब तो यह पीनेको मना करता है और इस रसके नामसे इसके मुँहमें पानी भरताहै दो घूंट जो उसने पिये और उसको स्वाद मालूम हुआ तो कद्दू को मुँह में लगाकर सब पीगया अमर के दौड़नेसे जो जंगल की हवा उसको लगी सारी दुष्टता भूलगया और अचेत होकर अमर की पीठपर से गिरपड़ा अमर ने कटार निकालकर उसका पेट फाड़डाला और अमीरके पास जाकर कहनेलगा कि ऐ अमीर! तूने एक काफ़र की बेटी के हेतु इतने मुसल्मानोंका अपराध अपने ऊपर लिया और मुझको भी दण्ड दिया देखा चाहिये अन्तमें तेरा क्या हाल होता है? और इस मार्ग में क्या २ फल मिलता है? अमीर ने कहा कि यह तो विदितहै कि मैं अपराधी और अज्ञानहूं परन्तु तुम तो इतनी पुण्य कमाओ कि मुसल्मानों की जान बचाओ अमरने कहा कि मुझे क्या ग़र्ज़है? कि बेमतलब इतने पंगुलोंको मारूं अपाहिजों का अपराध अपने ऊपर लूं अमीर ने कहा कि इन का पाप हमारी गर्दन पर है और एक आदमी प्रति दोसौ अशर्फ़ी दूंगा और आप का उपकार मानूंगा अमर ने अङ्गीकार किया और प्रत्येकको गोफन से मारकर ढेर करदिया जब सबोंने उन लँगड़ों के हाथ से छुट्टी पाई तो सबों के शरीर में जान आई अमीर ने शीघ्र जहाज़ पर सवार होकर लङ्गर उठवाया जहाज़ को आगे बढ़ाया कि यह हिन्दुस्तान का द्वीप है ईश्वर जाने इसमें और कोई उपाधि का सामान होवे कि सब सेना दुःख में फँस जाय चल दिये दो महीने के पीछे एक द्वीप और मिला मल्लाहों ने अमीर से कहा कि जो आज्ञा दीजिये तो जहाज़ों पर पानी भरलेवें और कुछ अन्न भी खानेके हेतु जमा करलेवें अमीर ने कहा अच्छा तो है लोगोंके कपड़े भी मैले होगये हैं खड़ेघाट कपड़े धुलवा लेंगे फिर आगेका मनोरथ किया जायगा केवटों ने जहाज़ का लङ्गर किया और सब सूखे में उतरे अमर भी ठण्ढी हवा देखकर सैर करने को गया तो एक तालाब बहुत अच्छा दृष्टि पड़ा उसमें स्वच्छ मोती सा पानी लहराते देखा उसका भी जी लहराया कि स्नान कीजिये तो कपड़े उतारकर किनारे पर रखदिये और तालाब में ग़ोता लगाया फिर जो शिर निकालकर देखा तो कपड़ों को घाटपर न पाया समझा कि अमीर ने चकमा देने के हेतु कपड़ा उठवा मँगाये होंगे किसीके हाथ चुरवाकर रखवाये होंगे हमज़ा! हमज़ा! कहकर अच्छी भांति से चिल्लानेलगा अमीर ने अमर की जो बोली पहिंचानी जाना कि किसी दुःखमें तो नहीं फँसा आसक्त होकर दौड़े और अमरसे कहनेलगे क्या हुआ भाई अमर! भलाई तो है? क्या फिर किसी उपाधिमें फँसा? अमर ने कहा कि यह दिल्लगी आपकी मुझे नहीं अच्छी लगती है नंगा मुझे तालाब में खड़ा कररक्खा है कपड़े मेरे दिलवादीजिये अमीर ने क़सम खाई कि मैं तेरे कपड़ों को नहीं जानता तब तो अमर घबड़ागया अपने मनमें कहने लगा कि जो अमीरने कपड़े नहीं उठवाये तो कहां गये और कोई दूसरा मुझसे दिल्लगी नहीं करेगा एकाएक जो अमर की दृष्टि ऊपर गई और वृक्षोंपर नज़र पड़ी तो देखा कि

वृक्षोंपर बन्दर बैठेहुए हैं कपड़ों को नोंच खसोट रहे हैं किसीके हाथ में नीमताज है कोई अङ्गा खोलकर दीखता है कोई पायजामा लियेहुए है कोई कमरबन्द अपने हाथ में लपेट रहा है अमर ने और वस्त्र मँगवाकर पहने और पहले नीमताज़ को अपने हाथ से उछाला बन्दर का क़ायदा है कि जो देखता है वही आप भी करता है उसने भी अमर के नीमताज़ को उछाला परन्तु रोक न सका धरती पर गिर पड़ा अमर ने उठालिया इसी भांति से अमर ने अपना सब असबाब मांगलिया और वृक्षों में तेल मलकर आग लगादी जितने बन्दर थे सब जलकर मरगये अमीर ने शीघ्र सवार होकर जहाज़ों के लङ्गर उठवादिये जहाज़ आगे को बढ़े कई दिन के पीछे एक बादल का टुकड़ा आसमान पर देखपड़ा फिर घरीभर में तमाम आकाश पर छागया वायुने ज़ोर किया तूफ़ान की सूरत उत्पन्न हुई दिनकी रात होगई हाथ पसारे न देख पड़ने लगा केवट सब घबरागये और बड़ी भारी भारी लहरें उठने लगीं जहाज़ों में ज़ोर २ से लगनेलगीं केवट लोग ज़िन्दगी से निराश होगये और आंसू बहानेलगे मनोरथरूपी किनारा तो न मिला मौतने आ घेरा फिर अमीर ने कहा कि अधैर्य न होना चाहिये ईश्वर की दयापर दृष्टि करना चाहिये ॥

दोहा । प्रथम दुखित जो होत हैं, सुख पावैं ते अन्त । जो पहिले सुख लहत हैं, पुनि पीछे दुखवन्त ॥

अमर सबमें अधिक घबरागया और रोरो कर कहनेलगा कि ऐ केवट ! सब मुसल्मानोंका बेड़ा तेरे हाथ है तू पार उतारेगा तो उतरेंगे कभी कहता था ऐ हज़रत अलियास ! इस बेड़े को जो मँझधार में फँसाहै अगर किनारे लगादोगे और इस उपाधिसे बचाओगे तो यद्यपि इस समुद्रमें बल नहीं है परन्तु सवा दमड़ीकी खांड़की पुड़िया चढ़ाऊंगा और इसकी पुण्य तुमभी पाओगे इसके सिवाय तुम्हारे भाई हज़रत ख़िजर तुमसे प्रसन्न होंगे कि मैं उन्हींका बरदानी हूं और इस आफ़त में फँसा हूं कभी अमीर से कहता था ऐ हमज़ा ! यह सब तेरी करनी करतूत है मेरीभी मिट्टी तूने बेक़बर और बेकफ़न के ख़राब की जो कुछ किया सो तूने किया मैं इसी कारण समुद्र में पांव नहीं रखता था यद्यपि मैं तेरे स्नेह में बहुत फँसा था और तूभी जानता था कि मैं पानी से पहले कोसों भागता था किनारे के भांति सदा अलग रहता था इतनी उमर हुई कभी हौज़ में भी न पांव धरा था नहाते समय शिर से कभी पानी नहीं डालता था तूने अपने बलसे मुझे लाकर समुद्र में डुबोया और समुद्र के बीच में मुझे दोनों जहान से खोया सुननेवाले यातो दुःख में थे या अमर की बातें सुनकर खिलखिलाकर हँसपड़े फिर ईश्वर २ करते तीन दिन के पीछे उजाला हुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश किया लहरों की थप्पड़ें बन्द हुईं समुद्र का उलझना बन्द होगया अधिकारी लोग प्रसन्न होनेलगे और परस्पर कहनेलगे कि हम तो जीने से हाथ धोचुके थे ईश्वर ने बचाया कोई बोला कि डूबने में क्या कुछ बाक़ी रहाथा ? परन्तु ईश्वर ने पार लगाया अमर ने कहा कि यारो ! मेरे आशीर्वाद ने तुम सबको डूबने से बचाया और दुःख से निकाला क्या मैंने मानता नहीं मानी

है ? हां कुछ देते जाओ कि मैं उन सब को अर्पण करूं हर एक ने कुछ २ दीना अमर को दिये और बाज़ों ने देने का वादा किया अमर ने कहा चाचा अलियास जब सरन्द्वीप में पहुँचलूंगा तब शक्कर मोल लेकर चढ़ाऊंगा इस खारी समुद्र में शक्कर कहां से लाकर चढ़ाऊं लोग उसकी बातों पर हँसनेलगे और खुश हुए अभी मनका खेद न गयाथा कि इतनेमें समाचार मिला कि बहराम मल्लखाक़ान चीन के जहाज़ों का पता नहीं लगता हज़ारों जहाज़ बेपते हैं किसी भांति से जहाज़ों का पता नहीं पाते दूरबीन भी लगाई परन्तु दृष्टि नहीं पड़ते अमीर सुनतेही शोकरूपी समुद्र में डूबगया रो २ कर कहने लगा कि बड़ाभारी पहलवान बूड़गया जिससे सेना की शोभा थी उसीका थलबेड़ा नहीं लगता लोग बोले कि ईश्वर न करे जहाज़ किसी ओर को तबाह होगये हैं किसी बन्दर में लगे होंगे ईश्वर उसको किसी द्वीप के किनारे लगादेगा वह ईश्वर बड़ा दयालु है फिर अपनी कृपा से मिला देगा अमर बोला कि हमज़ा ! कुछ मानता मानो मैंने मानी थीं उसीसे बच रहा और मेरेही पुण्य से तूभी बचगया अमीर ने कहा यह जगह हँसने की नहीं है समय को पहिंचान मेरी ओर से तूही मन्नत मान जिस समय बहराम की सूरत देखूंगा जो तू कहेगा सो मैं दूंगा अमर बोला कि बहुत अच्छा परन्तु जो पार उतरे और बहराम मिले तब कहो कि थोड़े से खर्च में काम निकाललो तो उस समय में क्या करूंगा ? आपसे क्या भुनालूंगा ? अपनी गिरह से मुझको करना पड़ेगा अमीर ने हँसकर कहा कि ऐसा न होगा जो तुम कहोगे वही देंगे ॥

अमीर के जहाज़ों का सिकन्दरी तूफ़ान में फँसना और उससे निकलकर सरंद्वीप में पहुँचकर सादानशाह के पुत्र लन्धौर से कर लेना ॥

बुद्धिमान् गुणवान् इस वृत्तान्त को लोगों को इसप्रकार से सुनाते हैं कि तूफ़ान बन्द होने के पीछे थोड़े दिन बराबर अच्छी वायु मिली किसी भांति से कुछ चित्त स्वस्थ हुआ केवट पाल उठाये चलेजाते थे एक दिन जहाज़ के देखनेवालों ने गुल मचाकर कहा कि यारो ! बड़ाही तूफ़ान आता है इसके आगे जिसमें पड़े थे वह बहुत छोटा था देखें परमेश्वर किसे बचाता है और इसमें कठिनता अधिक है कि सिकंदरी यहां से बहुत निकट है ईश्वर बचावे कदाचित् जहाज़ इसमें पड़गये तो चक्कर खाकर डूबजावेंगे अमर के तो हाथ पांव ढीले पड़गये फूट २ कर रोने लगा और घबरा २ कर जान अपनी खोने लगा कभी कहता था कि ऐ अलियास चचा ! बचाना मैंने तो पहलेही से कहा है कि सरंद्वीप में पहुँचकर तुम्हारा प्रसाद चढ़ाऊंगा कभी चिल्लाता कि हज़रत ख्वाज़े खिज़र ! मेरी सहायता अपने भाई से करवाओ ईश्वर से वर मांगा कि जो मानता मानी है वह सूखे में पहुँचकर करूंगा अमीर ने हल्ला गुल सुनकर कहा कि अब यह रोना पीटना कैसा है ? हज़रत अलियास और खिज़र से क्यों फ़िरियाद होती है सक्कानियों ने कहा कि हज़रत तूफ़ान बहुत उठा है इससे ईश्वर ही बचावे तो बचेंगे नहीं तो बचना कठिन है यह बातें होरही थीं

कि तूफ़ान आपहुँचा और समुद्र में लहरें उठीं और जहाज़ बात की बात में सिकन्दर के घेरे में जापड़ा चक्कर में आकर घूमने लगा तब तो सब की बुद्धि घूमने लगी चित्त घबराया अमीर ने उस तूफ़ान में ध्यान करके जो देखा तो उस भँवर के बीच में एक खम्भा पत्थर का गड़ा है वह लम्बा चौड़ा है उसके सिरे पर एक तख़्ती सफ़ेद पत्थर की है और उसमें काले पत्थर के अक्षर छीले छिलाये बने हैं और वह अर्बीभाषा में लिखे हैं उसके पढ़ने से जानपड़ा कि यह लिखा था कि एक समय में साहबकिरां के जहाज़ इधर आवेंगे और वह सब इस घेरे में फँसेंगे साहबकिरां को उचित है कि आप इस खम्भे पर चढ़जावें उस दमामे को जो उसपर धरा है बजावें या अपने नायब को इसपर चढ़ावें कि उसके हाथ से यह दमामा बजाया जावे तो उसका जहाज़ निकल जायगा अमीर ने अमर से कहा कि लो भाई! हम तो इस शृङ्गपर जाते हैं और ईश्वर का नाम लेकर नक़्क़ारा बजाते हैं जो केवल हमारे जी से हज़ारों की जान बचे तो क्या कठिन है ईश्वर के बन्दों की जान तो बचावें अमर ने कहा कि आपके नायब का भी तो नाम लिखा है सो मैं आपका नायब हूं इस शृङ्गपर जाकर नक़्क़ारा बजाता हूं और अपने मन में शोचा कि इस शृङ्गपर चढ़कर मज़े से बैठरहूं समुद्र के भय से तो बचूंगा जब कोई जहाज़ इधर आवेगा तब सवार होकर किसी ओर की राह लूंगा बालबच्चे तो हैं नहीं अकेले किसी भांति से ज़िन्दगी निबाह लूंगा फिर सब सर्दारों की ओर देखकर कहा कि यारो! तुम लोगों का बलिबकरा होता हूं इस समय तो गांठ खोलते जाओ कदाचित् जो बचजाऊं तो अपनी मेहनत की मज़दूरी तो पाऊं सबों ने एक के स्थानपर सौ और सौके स्थानपर लाख रुपये का तमस्सुक लिखकर अमर के हवाले किया अमर ने तमस्सुक लेकर यह सोरठा पढ़ा ॥

सोरठा। यह समुद्र की धार, अगम अथाह असीव है। सोई लगावे पार, जासु नाम लैके धस्यो ॥

और श्वास रोककर एक फलांग लगाई तो उस शृङ्गपर पहुँचकर श्वास टूटी तो समुद्र में गिरपड़ा और अमर तलेको चला तो क्या देखा कि एक निहंग मुँह खोले बैठाहै ख़ुराक की ताक में है अमर घबरागया कि यह बला कहांसे आई जो उस उपाधि से बचे तो यहां जान गँवाई हवास सावधान करके उसके दांतों पर खड़े होकर फलांग जो मारी तो ऊपर जाखड़ाहुआ फिर उस खम्भे की चोटीपर जा पहुँचा अमर की यह तीव्रता देखकर सबों ने सराहा अमर ने जो देखा तो सचमुच एक नक़्क़ारा रक्खा है और उस दमामे पर सिकन्दर का नाम लिखा हुआ है अमर ने ईश्वर का नाम लेकर उसपर चोब लगाई तो बड़ी भयानक आवाज़ आई उसके शब्दसे चौंसठ कोसतक समुद्र में लहरें पड़गईं अद्भुत भांति का शोर हुआ जितने जीव समुद्र में थे सब उतराआये और जो पक्षी उसपर रहतेथे सबके सब घबराये एकबारगी उड़े उनके परोंकी वायुसे जहाज़ चल निकले पर अमर उसी शृङ्गपर रहगया यद्यपि मन से उसकी यही इच्छा थी कि मैं इसपर रहजाऊं परन्तु अकेले से

घवरागया कुछ दिनके पीछे सरंद्वीप के टापू में जहाज़ों के लंगर पड़े और साहबकिरां सेनासमेत सूखेमें उतरे उधर अमर का यह हाल हुआ कि अकेले और घाम के ज़ोर से बेहोश होता और ईश्वर से हाथ जोड़कर दुआ मांगता था और रोता था कि एका-एक अमर के कानमें आवाज़ सलाम की आई तब तो अमर की तबियत और भी घब-राई भवचक्कासा होगया और इधर उधर देखकर आश्चर्य मानकर कहनेलगा कि यहां मेरे सिवाय आदमी कहां ? कि जो मुझे जोहार करे और मेरी खबर ले किन्तु कदाचित् अजराईल अर्थात् यमराज़ आये होंगे मेरी जान लेनेका मनोरथ किया होगा अफ़-सोस क्या बुरे स्थानपर मौत आई कि कफ़न तक न मिला इतने में हज़रतख़िज़र आपहुँचे अमर ने देखा कि वस्त्र हरा पहिने एक मनुष्य खड़ाहै और चेहरे पर टोपी शोभितहै तब अदब समेत सलाम करके पूछा कि आपका नाम क्या है ? और इस स्थानपर किसहेतु आयेहो ? हजरतख़िज़र ने कहा कि मैं ख़िज़र हूं और तुझे निका-लने आया हूं ईश्वर चाहता है तो अभी तुझे निकालकर बाहर करूंगा अमर उनके पांवोंपर गिरपड़ा जब उठा तब कहनेलगा कि ऐ हज़रत ! मैं भूखा हूं आपकी कृपा चाहताहूं तब हज़रत ने एक रोटी का टुकड़ा दया करके दिया और कहा कि इसे खा मैं पानी भी पीनेको दूंगा और तुझे इस बलासे छुड़ाऊंगा अमर उसको देखकर जल-गया कि इस टुकड़ेसे मैं काहेको अघाऊंगा भूख की कठिनता से बड़बड़ानेलगा कि ऐ हज़रत ! जो आप पैग़म्बर अर्थात् ईश्वर के दूत हैं यद्यपि आपकी बराबरी और अ-धिकारपर मैं नहीं पहुँचता हूं परन्तु मैं भी वली अल्लाह का सेवक जानकार हूं आप हमसे ऐसे समय में दिल्लगी करते हैं यहां हम अपनी जानको मरते हैं जब मनुष्य का पेट भरता है तब उसे दिल्लगी सूझती है नहीं तो उसे बात करना अच्छा नहीं मालूम होता है हजरतख़िज़रने कहा कि दिल्लगी कैसी तैंने भूख की शिकायत की मैंने तुझे एक टुकड़ा रोटी का दिया और पानी पिलाने का भी वादा किया अमर बोला कि साहब ! यह वही कहावत है कि (ऊंटके मुखको ज़ीरा) भला इस टुकड़ेमें मेरा क्या होताहै ? एक अन्तड़ी भी तो न अघायगी आपने केवल प्रसाद कृपा किया है ख़िज़र ने कहा कि भलेमानुष ! प्रथम नियत अच्छी करके खा देख तो इसे सब खा सक्ता है या अभी से अधैर्य होकर अनायास बकता है अमर ने वह टुकड़ा खाया पर वह उतनाही रहा किन्तु पेट भरगया और हज़रतख़िज़र ने सवा बालिश्तकी एक मशक निकाली और उसे पानी पिलाया और कहा कि तू तो पहलेही से अधैर्य होता था अब क्यों टुकड़ा बचरहा अमर ने जो देखा भूख की भूख जाती रही और प्यास बुझगई ईश्वर का धन्यवाद किया और कहा कि हज़रत ! भूख प्यास आदमी साथ रहती है आप तो चले जायँगे मैं फिर भूखा प्यासा मरूंगा तो किससे क हूंगा जो यह टुकड़ा मुझे कृपा होजाय तो जीते ज़िन्दगी रोटियों की चाह न हो आपकी अत्यन्त प्रशंसा करता हज़रत ने अमर की प्रार्थना अङ्गीकार की और टुकड़ा अमर को देदिया और कहा कि ऐ अमर ! यह वस्तु तुझे बड़े २ गाढ़े

काम आवेगी और यह सिकन्दरी दमामा असबाब समेत हमज़ा को देदेना खबरदार इसमें से कुछ न लेना अमर बोला कि हज़रत ! मैं इस बोझ को किस भांति से लेजाऊंगा और इसका बोझ क्योंकर उठाऊंगा? हज़रतखिज़र ने एक कमली देकर कहा कि इसमें लपेटले तुझे कुछ भी बोझ न जान पड़ेगा अमर ने अपने मन में कहा कि कमली भी अच्छी वस्तु है समय पर काम आवेगी और जाड़ेमें आराम देगी फिर सब सामान नक्कारे समेत अपने शिरपर रक्खा और अपने पांव हज़रत के पांवों की पीठपर रक्खे फिर इस्मआज़म अर्थात् ईश्वर का नाम जो हज़रत ने बतायाथा पढ़ने लगा और आंखें बन्द करलीं तो बहुत ही शीघ्र कहीं से कहीं पहुँचा हज़रत ने कहा कि अमर ! आंखें खोल ईश्वर की रचना देख कि दमकी दम में कहां से कहांतक पहुँचा है पहले किस कष्ट में फँसा था अब कहां खड़ा है, अमर ने आंखें खोलीं आपको सूखे में पाया तो ईश्वर का धन्यवाद किया और कोहिस्तान की ओर चला और अमीर को ढूंढ़नेलगा अब साहबकिरां का हाल सुनिये कि जब बन्दर सरंद्वीप में पहुँचे और सेना समेत उतरे हज़रतखिज़र और अलियास का प्रसाद जो माना था अच्छी भांति से चढ़ाया और कहा कि हमारा दो महीने तक यहां रहना होगा दुःख कष्टसे कास रहेगा और हम अमरका मातम करेंगे और उस के नाम से बहुत कुछ पुण्य करेंगे ज़ाहिर है कि मैं उसको अपनी जान के बराबर प्यारा जानता था और सब मित्रों से उसे अधिक जानता था उसने मेरे हेतु अपनी जान दी और सदा मुझसे अच्छी भांति प्रीति रखता था फिर जितने लोग वहां थे सब ने वस्त्र रँगाकर अमर का मातम किया रोने पीटने चिल्लानेलगे कुछ दिन के पीछे अमर ने उस बनमें एक मसजिद देखी कि बहुत अच्छी बनीहुई है जब निकट पहुँचा तब पांच आदमी नमाज़ पढ़ते दृष्टि पड़े अमर भी उनमें मिलगया जब नमाज पढ़चुके तब चार मनुष्य तो अपने २ घोड़ोंपर सवार होकर चले और एक आदमी पैदल चला अमर ने दया करके उससे हाल पूछा उसने कहा कि ऐ प्यारे भाई ! हम पांचों शहीद हैं ईश्वर के मार्ग में जान दी है उसके बदले ईश्वर ने ये पदार्थ कृपा किये हैं चारों आदमी ये घोड़े समेत मारेगये थे इससे वे सवार हैं और मैं पैदल मारागया था इससे पैदल रहगया किन्तु तू मेहरबानी करे तो मैंभी घोड़ा पाजाऊं तेरे निमित्त दुआ करतारहूंगा अमर ने कहा कि मुझसे जो आपकी सेवा होसके वह करूं ऐसे लोगों की सेवा करना मैं बड़ा पुण्य जानताहूं वह बोला कि यहां से एक नगर थोड़ी दूरहै उस नगरके फलाने महल्लेमें मेरा घरहै और मेरे घरके आंगन में एक वृक्ष अमरूद का है उसके थाले में दोसहस्र अशर्फियों अर्थात् मोहरों का लोटा मुख ढपा गड़ा है तू निकालकर तिहाई तो मेरे लड़के बालोंको दे और एक तिहाई तू ले और एक तिहाईका घोड़ा और उसका असबाब खरीदकर ईश्वरके मार्ग में मेरे नामपर किसीको देदे कि मुझे इस प्यादे पांव से छुट्टी मिले अमर उससे बिदा हुआ और उसके घर पर जाकर उसके कहेहुए को किया फिर आगे को चला

कई कोस गयाहोगा कि एक वृक्ष डालीदार मिला उसकी छाया में सुस्ताने के हेतु बैठ गया एक क्षण पीछे एक वृद्ध मनुष्य को अपने दाहने खड़ा देखा तो पैर छूके पूछा कि आप कौन हैं ? उसने कहा मेरा नाम अलियास है तेरी धरोहर तुझे देने आया हूं यह जाल और कमली ले जाल में तो जितना बोझ बांधेगा सब हलका दिखाई देगा और कमली जब ओढ़लेगा तब तू सबको देखेगा और तुझे कोई न देखेगा यह कहकर चले गये अमर कुछ दिनके पीछे साहबकिरां की सेना के निकट पहुँचा पहले मनमें प्रसन्न हुआ और ईश्वर की प्रशंसा की कि उसने सेना तो देखाई फिर देखा कि प्रत्येक मनुष्य काले वस्त्र धारण किये हैं कोई २ शोक करते २ अचेत होगया है अमर ने अपने मनमें कहा कि ईश्वर हमज़ा का अच्छा सुनवाये उसकी सूरत देखावे फिर एक मनुष्य अजनवी से पूछा कि यह कटक किसका है ? और सेना तमाम मातमी क्यों होरहीहै ? वह बोला कि यह सेना साहबकिरां की है कुछ दिनों से यहीं पड़ी है अमर अय्यार नामी एक अमीर का भाई था अमीर उसका बहुत प्यार करते थे सो वह खारी समुद्र में एक शृङ्ग के ऊपर चढ़के मरगया उसके शोक में सबों ने काले बस्त्र पहिने हैं और अमीर ने आप बहुत दुःख किया है आज उसका चेहलम है फ़क़ीरों को खाना बटता है अमर ने अपने मनमें कहा कि अमीर की प्रीति की भी परीक्षा होगई फिर दिन तो उन्हीं फ़क़ीरों में जिन्हें खाना बटता था काटा रातको कमली ओढ़कर मादीकर्ब के तम्बू में घुसा देखा तो मादीकर्ब अचेत निर्भय सोता है तो उसकी छातीपर चढ़बैठा वह जागकर पूछने लगा कि तू कौनहै और कहां से आयाहै ? मुझसे बैर का क्या कारण है ? अमर बोला कि यमराज का दूतहूं आज अमर को जी बैकुण्ठ में भेजतेथे वहां जाना उसने अङ्गीकार न किया और यमराज से कहा कि मादीकर्ब मेरा बड़ा मित्र है बिना उसके मैं बैकुण्ठ में न जाऊंगा॥

दोहा। यह मैं नहीं सुजान सुन, इकले स्वर्गहि जाउं। मित्र सनेही साथ ले, तब वहु विधि गुण गाउं॥

यद्यपि उसे समझाया कि उसके आनेमें अभी बड़ी देर है अभी उसकी बहुत है परन्तु तब भी उसने न माना मुझे आज्ञा दी कि जाओ मादीकर्ब को लेआओ सो मैं तुझे मारने आया हूं मादीकर्ब ने कहा कि मैं उसका मित्र कभी हूं बल्कि उसका बैरी जीघातक रहाकरताहूं और उसकी मौत ईश्वर से था बल्कि उससे हमसे कभी मेल भी न था अमर बोला कि तुम मुझको कुछ तो छोड़कर जाऊं और जो कुछ तुमने कहाहै वह यमराज से कहूं आदीने कहा वह सामने एक सन्दूक़ अशर्फ़ियोंका रक्खाहै आप लेलीजिये मेरी जान छ अमर वहां से सन्दूक़ लेकर सुल्तानबख़्त के तम्बू में गया और वही बातें भी कहीं उसने भी एक सन्दूक़ अशर्फ़ियों का दिया और अपनी जान बचाई सं यह कि उस रात को इसी भांति से तमाम सरदारों के पास गया और जमा की उसी झोली में भरलीं फिर अमर के आने के पीछे सबको डरके कारण

जूड़ी ताप आई और किसीने डरके सबब से रातभर चैन न पाया जब प्रातःकाल हुआ पहले तो आदीने रातका हाल अमीर से कहा अमीरने जाना कि यह अच्छा स्वप्न नहीं है तो उसकी बातें सुनकर बहुत हँसे सुल्तानबख़्तने भी अपना समाचार वर्णन किया और २ लोगों ने आकर ऐसाही सब बयान किया अमीर ने कहा कि जल्द यहांसे तम्बू उखड़ाओ आगे सेना को बढ़ाओ यहां शैतान का वास रहता है नहीं तो क्या कारण है ? कि सबलोग स्वप्न एक से देखें ऐसा न हो कि लोग सिड़ी होजायँ दूसरे दिन अमर ने अमीर से यही बात की अमीर ने कहा बड़ी अद्भुत बात है कि शब्द आता है परन्तु आदमी नहीं देखपड़ता है अमीर ने हाथ से टटोला तो उसका शरीर हाथ में मालूम हुआ तो प्रेत समझकर एक हाथ से उसको पकड़ा दूसरे हाथ से चाहा कि घूंसा मारें तो अमर ने कहा कि ख़बरदार ओ अबे वाले ! घूंसा न मारना मेरे चोट लगेगी और झटपट कमली उतारकर ऊपरसे फेंकदी अमीर ने बोली पहिंचानकर गलेसे लपटा लिया फिर अमर ने सब हाल वर्णन किया और सारी कहानी कह सुनाई और नक़ारा आदि सिकन्दरी असबाब अमीर को दिया और वह टुकड़ा रोटी का और छोटी मशक का पानी बहुत सुगन्ध देता था और कमली और जाल अमीर को दिखाकर अपने पास रक्खा और कहा कि यह हज़रत ख़िज़र अलियास ने मुझे दियाहै इसमें और कोई साझी नहीं है अमीर ने प्रातःकाल होतेही वहांसे कूच किया और सरन्द्वीपके तले तम्बू खड़ाकिया चारों ओर यह समाचार विदित हुआ कि हमज़ा नामी बादशाह नौशेरवां का दामाद लन्धौरसे लड़नेके हेतु आया है सेना यद्यपि थोड़ी है परन्तु प्रति मनुष्य की वीरता की शाका रुस्तम आदिसे बढ़कर है और आप अमीर भी बड़े दमदावा का मनुष्यहै सरन्द्वीप गिरिपर मेले के समय अमीर पहुँचे थे और आसपास के लोग वहां जमा होतेजाते थे मेला होनेका कारण यह था कि हज़रत आदमको उन्हीं दिनों में ईश्वर के यहां से प्रतिष्ठा और मुक्ति उसी स्थानपर हुई थी और उस पहाड़पर उनके पांवका चिह्नभी बनाहुआथा हिन्दू और मुसल्मानों का पूज्यस्थान था दो २ चार २ महीने की राहसे लोग जमा होतेजाते थे और जो दिन ठीक होता उसमें दर्शन करते अमर ने अमीर से कहा कि आज्ञा कीजिये तो पहाड़ की सैर करआऊं और वहां जाकर कुछ ख़बर लाऊं अमीर ने आज्ञा दी अमर ने अपनी राह ली जो पहाड़ के तले आया तो एक वृद्ध मनुष्य को तप करते देखा उस वृद्ध ने जो अमर का नाम लेकर सलाम किया अमर ने दिवालपाव समझकर कटार पर हाथ किया और त्योरी चढ़ाई तो उस वृद्ध ने हँसकर कहा कि ऐ अमर ! मैं दीवालपाव नहीं हूं हज़रतनूह अलेहुस्सलामके कुटुम्बमें हूं तेरा बैरी नहीं हूं सालिम मेरा नाम है रात को मुझे ख़बर हुई थी इससे मैंने तुझे पहिंचाना नहीं तो मैं तुझको और तेरे नाम को क्या जानता ? यह कहकर एक गज़ दिया और कहा कि सामने जाकर इस गज़भर धरती खोद जो तेरी भाग्य में होगा वह मिलेगा किन्तु लालच को अपने हृदय में न

करना और जो कुछ मिलजाय लेलेना अमर ने उस गज़ को नापकर धरती जो खोदी तो एक दाना लाल का अति प्रकाशवान् निकला जब खोदते २ थकगया और कुछ न निकला तब तो लज्जित होकर सालिम के पास आया और वह लाल का दाना दिखाया सालिम ने कहा कि अब पहाड़ पर जाओ आदम के चरणों का दर्शन करआओ अमर ने कहा कि पहाड़पर जाने की राह तो किसी ओर दृष्टि नहीं आती है उसकी उँचाई पर चढ़तेहुए मेरी बुद्धि चकराती है किस भांति से जाऊँ सालिम ने कहा वह जो पतली पगडण्डी है उसपर सीधा चलाजा अपने मन में कुछ न घबरा अमर उसी राह से पहाड़पर गया परन्तु चलते २ थकगया फिर देखा कि एक हाता बहुत अच्छा बना है उस हातेके भीतर हरेरामयी है उसके आसपास बहुत साफ़ तड़ाग बहता है और हरजगह वृक्षों पर चिड़ियां लहलहाती हैं जब और आगे गया तो एक सफ़ेद पत्थरपर हज़रत आदम के चरण का चिह्न देखा तो आंखों की पलकसे उसे चूमलिया और वहां की भभूत को आंखों में लगालिया उस चरण के आसपास आदमी भर ढेर जवाहिरात का देखकर मन में लालच दुबारा आई शोचा कि आदम के चरण के दर्शन तो करचुका इस जवाहिरात को अब ले और बेग यहांसे सेना की राह लें यहां कौन देखने आता है ? तुझे जो बँधुआ करके लेजायगा फिर कमली बिछाकर सब जवाहिरात को उसमें समेटा और चला परन्तु जब दरवाज़े के पास गया तो दरवाज़ा आंखों से न देखपड़ा अमरने फिर उलटे पांवों आकर जहां जवाहिरात पड़े थे वहीं डाल दिये और दरवाज़े पर जो दृष्टि की तो उसी भांति से जैसाका तैसा दृष्टि पड़ा फाटक की चौखट आदि सब देखी अमर ने फिर विचार किया कि पहले इस दरवाज़े पर कोई चिह्न वना आवें तब जवाहिरात यहां से लेजावें तो नीमताज अपना दरवाज़े की चौखट पर धरके जवाहिरात के ढेरों के पास खड़ा होकर दरवाज़े को ताका तो दरवाज़ा और ताज दिखाई दिया अमर ने फिर उस जवाहिरातको कमली में बांधकर राह ली जिस समय दरवाज़े के पास पहुँचा तब नीमताज और दरवाज़ा बेपता पाया जैसा किया वैसा फिर भी आगे आया मन में कहनेलगा कि दादा आदम भी बड़े प्रबन्धी थे उनका माल किसीको न पचेगा उन्हीके आगे रक्खा रहेगा फिर उसी भांति जैसे के तैसे जवाहिरात रखदिये तब ताज दरवाज़ेपर दृष्टि पड़ा अमर ने देखा कि नमाज़ का समय आया तो तालाब से वज़ू करके नमाज़ पढ़ी और धाड़ें मार २ कर रोनेलगा और उस जगह को पाक जानकर ईश्वर से बरदान मांगनेलगा कि एकाएक उस रोवा-धोई में अमर की आंख झपक गई तो देखा कई वृद्ध साहब करामाती मेरे शिरपर खड़े हैं जिनका चेहरा अति प्रकाशित है और मेरी ओर कृपादृष्टि से देखते हैं उन में से एक वृद्ध ने जो सबसे लम्बा था एक जामा देकर कहा कि इसे तू पहिन इस को देवजामा कहते हैं इसके पहिनने से सब प्रकार की उपाधियों से बचारहेगा और किसी भांति का घाटा जिन्न प्रेत आदि से न पावेगा और इसमें जो जेब है उसमें

जो तमाम संसार की बस्तु डाल देगा सब समाजावेगी और इसके सिवाय जो बस्तु दरकार होगी वह इसमें से निकल आवेगी और इसपर हाथ धरके कहेगा कि दादा आदम! मेरी सूरत ऐसी बनजाय शीघ्र उसी भांति की बनजावेगी यह इसकी करामात है और जिसकी बोली चाहेगा बोलेगा औ नाम मेरा आदम है अमर ने सलाम करके चरणोंपर शिर रक्खा दूसरे बृद्ध ने प्याला देकर कहा कि इस प्याले पर जो बड़ा नाम लिखा है उसको याद रखना तेरे बड़े काम आवेगा और इसमें तुझे लाभ बहुत होगा और मेरा नाम इसहाक़नबी है तीसरे ने अपना नाम दाऊद पैग़म्बर बताया और एक दुतारा देकर कहा कि जब तू इसको बजाकर गावेगा तो तेरी बराबरी में कोई गन्धर्व भी न आवेगा जो गानाबिद्या भी जानता होगा तोभी तेरे गाने की चोट उसके हृदय में लगेगी चौथे ने साल्हेः पैग़म्बर अपना नाम बताकर अमर की पीठपर हाथ फेरा और कहा कि दौड़ में तेरे बराबर कोई न होगा और कोई घोड़ा भी तेरी बराबर न जावेगा और कभी न थकेगा हज़रत साल्हेः यह कहरहे थे कि एक तख़्त आसमान से उतरा उसपर एक बृद्ध बैठेहुए थे उनकी सूरत देखकर अमर की आंखों में चकाचौंध छागया फिर चारों पैग़म्बरों ने उठके सलाम किया अमर ने उनसे पूछा कि ये कौन साहब हैं? उन्हों ने कहा कि ये पैग़म्बर अन्त के समय के हैं मुहम्मद सल्लेअल्लाहुस्सलम इनका नाम है अमर ने हाथ बांधके बन्दना की और पहले से प्रार्थना करनेलगा या हज़रत! सब पैग़म्बरों ने एक २ बस्तु कृपा की आपसे भी मांगताहूं कि जबतक मैं तीन बेर मौत न मांगूं तबतक यमराज मौत मेरी जान न निकाले मुहम्मद साहब ने कहा कि ऐसाही होगा इतने में अमर की आंख खुलगई देखा जो जो बस्तु पाई थी वह सब पास धरी हैं अमर इस प्रसाद को लेकर सालिम के पास गया और सब कहानी ब्योरा समेत बर्णन की सालिम ने कहा कि अमर अब जाकर हमज़ा को भेजदे तो उस के भी जो भाग्य में बदा होगा सो मिलेगा अमर वहां से चला मार्ग में ज़ेबपर हाथ रखकर कहनेलगा कि ऐ दादा आदम! मैं बड़े क़दका होजाऊं मेरा क़द बहुत भारी आदमी से कई गुना बढ़जावे फिर देखा तो शीघ्र क़द बढ़गया फिर दर्पण में अपनी सूरत देखी तो अपनी सूरत से आप मन में डरा कि ऐसा न हो जो ऐसीही सूरत बनीरहे फिर उसीपर हाथ रखकर चाहा कि मेरी सूरत ज्योंकी त्यों होजावे फिर भी बहुत जल्द वैसीही सूरत होगई तब तो अमर प्रसन्न हुआ बग़लें बजानेलगा कि मैं जैसी सूरत चाहूंगा वैसीही बनजायगी फिर सूरत बदलके मुसल्मानों की सेना में पहुँचा और दुतारा बजाकर गानेलगा जिसने सुना अपना काम छोड़कर अमर के साथ हुआ लोगों ने यह ख़बर साहबक़िरां को पहुँचाई कि एक हिन्दू आदमी इस सूरत का सेना में आया है दुतारा बजारहा है कि सुननेवालों का होश ठिकाने नहीं रहताहै साहबक़िरां ने उसको अपने सामने बुलवाया देखा तो जाना कि अजब सूरत का आदमी है कि स्वप्न में भी ऐसी सूरत कभी न देखी होगी गाना बजाना जो

सुना तो कान खड़ेहुए अमीरने पूछा कि ऐ भाई! तू कहां का रहनेवाला है? तेरा नाम क्या है? अमर बोला कि मुझे महसूद स्याहतन कहते हैं और रहनेवाला इसी जगह का हूं हिंदुस्तान का बादशाह मुझे अच्छीभांति से जानताहै और बहुतकुछ इनाम उससे पाताहूं परन्तु मुझे कोई हौसिलेभर नहीं देता है जिससे अघाजाऊं और किसी रईस के पास हाथ न फैलाऊं साहबकिरां ने कहा कि इसको हमारे ख़ज़ाने में लेजाओ जितना रुपया अशर्फ़ी जवाहिरात इससे उठसकें दिलवादो सुल्तान बख़्त अमर को अमीर के ख़ज़ाने में लेगया और इनआम के उठानेको कहा अमर ने जितने ख़ज़ाने में संदूक़ थे सब एक २ निकालकर धरे सुल्तानबख़्त बोला कि यह तो सैकड़ों गाड़ी का बोझ है तुझसे जितना उठसके उतना उठा और जितनी अमीरकी आज्ञा है उतना माल लेकर घर को जा इतना लालच क्यों करता है? जा नाहक़ ख़ज़ाने के संदूक़ उठाता है अमर बोला हां हज़रत! वही करताहूं नहीं तो क्या मेरे पास छकड़ा बहलें हैं जो उनपर लादके लेजाऊंगा या और लादनेवालों को कहींसे बुलालाऊंगा सुल्तानबख़्त यह समझा कि क्या यह विक्षिप्त होगया है चुप होरहा और भी लोग यह हाल देखते रहे सब के सब चुप खड़ेरहे अमर ने उन सब संदूक़ों को तले ऊपर रक्खा और उस जाल में खूब कसा और रस्सी से बांध कांधे पर रख पहाड़ की ओर जानेका मनोरथ किया देखनेवालों के होश उड़गये सुल्तान-बख़्त ने उसे रोंककर कहा कि थोड़ासा ठहरजा हम अपने हाकिम को इस बात की ख़बर करदेवें अमर संदूक़ों को कांधेपर से उतारकर बैठगया सुल्तानबख़्त ने जाकर अमीर से सब हाल कहा कि ऐ साहबकिरां! वह तो मालूम नहीं होताहै कि जिन्न है या प्रेत या कोई जादूगर है या कोई आफ़त आसमान से उतर आई है उसने तमाम संदूक़ कांधेपर बांधके एक जाल में रक्खे और ऐसा हलका चल निकला कि उसके पांव तक न हिले इस आधीन ने उसे रोंका है कि हम इसकी ख़बर अपने मालिक को करलेवें तब तुझे बिदा करें साहबकिरां ने सुनतेही तजवीज़ किया कि यह बेशक अमर है कोई तमाशा सीखकर आया है यह उसीकी चालाकी है तो आप जाकर कहा कि क्यों भाई! यह तो बहुत अच्छे तमाशे दिखाते हो पहले हमारे ही ऊपर हाथ साफ़ कररहेहो अमर ने हँसदिया अमीर ने उसे गले लगालिया फिर अमर ने सारा समाचार कहा और कहा कि आपको भी सालिम ने बुलाया है कुछ प्रसाद आपके हेतु भी रक्खाहै अमीर ने रातको आराम किया प्रातःकाल मित्र स्नेहियों समेत अमर को साथ लेकर पहाड़ की ओर चले और बाग़ व तालाब व नहरों की सैर करनेलगे फिर एक स्थान देखा कि धरती वहां की सफ़ेद चन्दन समान बनाई गई है और अत्यन्त सुन्दर बराबर चबूतरेसी बनीहुई है और आनन्ददायक है कहीं नीची ऊंची नहीं है और उसके किनारे पर पत्थर की नाल और मोगदर और लेजम व गदा आदि सब असबाब रक्खे हैं कुछ लोग उसके निगहबान खड़े हैं अमीर ने उनसे पूछा कि यह किसका अखाड़ाहै वे बोले कि हिन्दुस्तान के बादशाह

ज़िसका नाम लन्धौर है उसका अखाड़ा है उसकी कसरत करने की यही जगह है अमीर ने अमर से कहा कि मैं भी अपना बल अजमाऊं अमर ने कहा कि बहुत अच्छा फिर अमीर यहांपर जाकर सब मोगदर व बल्लम व लेजम को बहुत हलका उठालिया परन्तु गदा न उठी तो अमीर को अत्यन्त दुःख हुआ और कहनेलगा कि ऐ ईश्वर! तूही प्रतिष्ठा व लाज रखनेवालाहै जब उसकी गदा न उठी तब लड़ाई में कठिनता होगी फिर आगे चले और सालिम के निकट गये सालिम ने बग़लगीर होकर वही गुर्ज़ अर्थात् गदा देकर कहा कि आप इसके प्रमाण उक्त स्थान की धरती खोदें जो कुछ आपका भाग होगा वह मिलेगा वह आप मेरे पास लावें अमीर ने सालिम के कहने से जो काम किया तो एक दाना हीरे का निकला अमीर ने सालिम को लेजाकर दिखलाया सालिम ने कहा कि यह माल आप का है इसको अपनी जेबमें रखिये और इस पहाड़पर दर्शन करने को जाइये आप का सहायक ईश्वर है जबतक उधरसे सहायता न होगी तबतक हिंदुस्तान के बादशाह से जीत न पाइयेगा अमीर ने पहाड़ पर चढ़के हज़रत आदम के चरण का दर्शन किया और उसी स्थान में तप करने और ध्यान धरनेलगे और रोरोकर आशीर्वाद मांगनेलगे यहांतक कि अमीर को झपकी सी आगई तो देखा कि एक तख़्त आसमान पर से उतरा और उसी स्थान में स्थित हुआ उसपर कई वृद्ध अति प्रकाशवान् तेजस्वी बैठे हैं उनमेंसे एक वृद्ध बड़े क़द का आके उनसे अमीर का नाम ले सलामअलेक किया और आशीर्वाद देकर कहा कि हमज़ा! यह बाज़ूबन्द ले अपनी भुजा पर बांध कभी तू किसीके साथ नहीं हारेगा और जो तेरे वैरीका शरीर हज़ार गज़ लम्बा होगा तो भी इसी बाज़ूबन्द के प्रताप से तेरी तलवार उस पर पड़ेगी तुझे कभी किसी भांति से उसके हाथ से कष्ट न पहुँचेगा परन्तु लड़ाई के नक़ारा पर कभी पहले चोब मत लगवाना उसके ऊपर कभी पहले वार न करना जबतक तेरे ऊपर तीन वार न करलेवे अपने अच्छे स्वभाव को कभी बुरा न करना जो जीदान मांगे उसको जीदान देना और जो तुझसे भागे उसका पीछा न करना कि तू इस संसार के काफ़िरोंका मुख छीलेगा और मुसल्मानों का दीन बढ़ावेगा अभिमान कभी न करना दीनपर दया करना॥

दोहा। अपनेको आधीन कर, कि मैंते छोट न कोय। सुन्दर है यह राज्यते, जेहि भय कबहुं न होय॥

और देखना रण में कभी अनायास शब्द न करना तेरे शब्द की आवाज सोलह कोसतक जावेगी सुननेवालों का हृदय भयभीत होजावेगा यह सिखाके हज़रत आदम ने अमीर को गले लगालिया और सब पैग़म्बरों ने अमीर के ऊपर कृपादृष्टि की फिर खुशी के मारे अमीर की आंखें खुलगईं और नींद से जागा और उठकर स्वप्न की नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़के सालिम के पास आया और मङ्गलसमाचार कहा सालिम ने अमीर को धन्यबाद किया और यह कहा कि मुझको केवल आप ही को देखना था आपको पता बताने का बोझ था लो ईश्वर सहायक है मैं अब

अपनी राह लेताहूं परन्तु इतना कहेदेता हूं कि इतना कष्ट अङ्गीकार कर लीजियेगा कि मुझे कफ़न और क़बर आप अपने हाथसे बनाइयेगा यह कहकर दुनियांसे हाथ खींचलिये और पांव फैला दिये ईश्वर का नाम लेकर बैकुण्ठ में पहुँचे अमीर भी इस क्षणभंगुर शरीर को देखकर आंसू बहानेलगा और उनको कफ़न और क़बर दोनों अपने हाथ से बनवाया और उसमें रखदिया और वहांसे उठकर लन्धौर के अखाड़े में आया वह जो एक सहस्र सातसौ मन की गदा थी तृणके समान उठा कर एक कोने से दूसरे कोने में रखदी और आनन्दित अपनी सेना में आया वहां पहुँचकर कई हज़ार रुपया फ़क़ीरों और भिक्षुकों को दिया निगहबानों ने यह समाचार लन्धौर को पहुँचाया लन्धौर यह समाचार सुनकर अपने अखाड़े में आया गदा दूसरे स्थानपर देखकर अति आश्चर्य किया कि और दूसरा भी कोई हमारी बराबरवाला आनपहुँचा और निगहबानों पर ताकीद की कि जिस मनुष्य ने मेरी गदा को एक कोनेसे दूसरे कोनेमें रक्खाहै और अपना बल अज़माया है जो वह फिर आवे तो मेरे पास उसको लेआना और बहुत शीघ्र मुझे ख़बर करना अब अमर का हाल सुनिये कि अमीर से सैरके बहाने बिदा हुआ और वहांसे लन्धौर की सभा की ओर चला एक खुरासानी की सूरत बनकर हाथमें वही दुतारा लिये हिन्दुस्तान के बादशाह की चौखटपर जा खड़ाहुआ दरबानियों ने पूछा कि तू कौन है, तेरी जीविका क्या है और किस देश से आया है ? बोला कि सातद्वीप के बादशाह के जामाता के साथ यहांतक पहुँचाहूं हिन्द के बादशाह की उपकारता और उदारता देखकर यहांतक आया हूं भाई ! ज़रा मेरा समाचार बादशाह से कहदो और मुझे वहांतक लेचलो दरबानियों ने दारोग़ा को ख़बर दी दारोग़ा ने लन्धौर से प्रार्थना की हुक्म हुआ कि हाज़िर करो अमर उसकी आज्ञानुसार उनके दरबार में पहुँचा लन्धौर ने अमर को देखकर आश्चर्य किया कि इस सूरत का आदमी उसने कभी देखा न था अमर से पूछा कि तेरा नाम क्या है और कहां का वासी है ? अमर आशीर्वाद दे कर बोला कि मुझको बाबायज़दवरद कहते हैं अर्थात् मारा और उठाया और कहा कि मेरे सब घरवाले खुरासान में रहते हैं अमर से लन्धौर ने कहा कि तेरा नाम व तेरी बातें बड़ी अद्भुत हैं मालूम होताहै कि तू किसीको मारे आता है और उसका माल उठा लेजाता है अमर बोला कि सेवक तारको मिज़राब से मारता है और सुनने वालों और क़दरदानों के चित्तों को उठालेता है लन्धौर इस चुटकुले पर बहुत प्रसन्न हुआ और गाने का हुक्म दिया अमर सब लोगों से ऊपर जा बैठा और दुतारे को मिलानेलगा जितने गवैये, बजवैये थे अमर के ऊपर बैठने से कुनमुनाने और नाक भौंहें चढ़ानेलगे इसमें क्या ऐसा बढ़के गुण है ? जो हमलोगों से ऊपर चढ़के बैठाहै इनकी तरहाहै लन्धौर ने कहा प्रथम तो यह मुसल्मान है और एक शाहज़ादे तेजस्वी के साथ आया है और इसका फ़क़ीरी सामान है और इसका मनोरथ मुझे करना अवश्य है कि देश बिदेश जायगा और सब जगह यहांका ज़िक्र आवेगा में

इसका मन जो तोडूं तो दूसरे देश का रहनेवाला है और जगह मेरी निन्दा करेगा और जो शिष्टाचार करूंगा तो इसे तमाम उमर याद रहेगा और दूसरे निकट से इसका गाना सुनना मुझे मंजूर है तुम्हारे क्रोध करनेका यह स्थान नहीं है और इन वातोंसे तुम्हें कुछ काम नहीं है उनको समझाकर अमर को शान की अमर गाने लगा जितने सुननेवाले थे सबके सब प्रसन्न होगये और कहनेलगे कि इसके गले में कहीं हड्डी है गला क्या बांसुरी है लोग तो अमर के गानेपर मस्त थे ही अचेत हो गये परन्तु अमर जमुर्रद के मोरोंपर जो चारों कोने तख़्त के जड़े थे दांत लगाये बैठाथा निगाहों से तकरहा था लन्धौर ने प्रसन्न होकर कहा कि ऐ बावा यजदवरद ! मांग क्या मांगता है ? तेरी इच्छा किस वस्तुपर अधिक है अमर बोला कि आप की उमर अधिक हो हुजूरकी कृपासे नौशेरवां के जामाता ने वहुत कुछ दियाहै और संसार की आधीनता से कुछ प्रयोजन नहीं है फिर लन्धौर ने कहा कि तू इससमय मांग मेरा मन तुझे कुछ देना चाहताहै तुझसे अति प्रसन्न हुआ हूं अमर बोला कि आपकी कृपा से मुझे कुछ भी नहीं चाहिये सेवक रुपये पैसे का भूखा नहीं है परन्तु यह जी चाहता है कि जो आज्ञा हो तो इस समय मदिरा बांट एक प्याला वारुणी का पिलाऊं पहले जो बांटता था उसकी ओर इशारा किया उसने प्याला और बो-तल अमर के हवाले किया अमर गुलाबी मदिरा जड़ाऊ प्याले में भर २ कर पि-लाने लगा जब दो तीन बार पिलाचुका तो देखा कि लन्धौर की आंखों में ललाई दौड़ी हवास बदले एकदफ़ा हाथ बढ़ाकर उन मोरों में से एक उखाड़कर अपनी बग़ल में चुरालिया लन्धौर कनखियों को देखकर कहा कि यजदवरद यह क्या करता है मोर क्यों झोली में धरता है आंख मारके कहनेलगा कि चुपरह ऐसा न हो कि जिस में कोई सुनले या और कोई देखे लन्धौर इस बातपर बहुत हँसा कि यह तो अद्भुत मनुष्य है कि मेरा ही तो माल चुराता है और मुझीको उड़नघाइयां बताता है कि चुप रह ऐसा न हो कोई सुनले या कोई देखले बादशाह ने कहा कि सुन तो यजदवरद ! चीज़ तो मेरी है दूसरे के सुनने से क्या होगा ? मुझे चोरी किसकी है ? किन्तु जोकि तेरी इस चोरी ने भी इस समय नया स्वाद दिखाया इसके बदले ये मोरभी तुझे मैंने दिये अब तो प्रसन्न हुआ अमर ने सलाम करके उन मोरों को अपने जेब में रक्खा और कमली कथरी के लेने के उपाय में हुआ खुसरो की आंख बचा कर थोड़ीसी दारू बेहोशी की उस जेबसे निकाली और उस मदिरा में डालदी और उसमें से दो २ प्याला लन्धौर समेत सब सभा के लोगों को पिलादी एक क्षण न बीताथा कि सबकी आंखों में सरसों फूली सब अपने २ नशे में चूर होगये नशेकी तरङ्ग में सबने अपनेको तालाब समझकर भारी शब्द से कहा कि यारो ! तालाब बहुत बढ़ाहुआ हैं डुब्बी लगा २ कर किनारे निकलो झटपट तैर २ कर किनारे पहुँचो सबके पहले यहांतक लंधौर कूदा और मुँह के बल गिरा उसके पीछे सब सभा के लोग अपने २ स्थानसे उछले और तड़ाक पड़ाक अचेत होहोकर पृथ्वीपर गिरनेलगे

अमर ने अपना हाथ फैलाया जहां तक उसमें असबाब कि फ़र्शतक था उठा के उसी झूलमें भरी और अपनी राह ली बातकी बातमें अपने डेरे पर आनपहुँचा और लूट का माल लेकर गुप्त होगया दैवयोग से उससमय अमीर ने आज्ञादी कि देखो तो अमर कहां है कौन फ़िक्र करता है देरसे गया है देखो तो लश्करमें है या कहीं बाहर गया है बेग जाओ जिस काम में मिले उसे लेआओ लोग जो अमरके तम्बू में आये देखें तो अधिकता से भांति २ का असबाब फैलापड़ा है उसमें पहली दूसरी क़िस्म चुन रहा है उन्हों ने अमर से कहा कि चलिये साहबकिरां ने याद किया है इसी भांति से आपको लाने की आज्ञा दी है अमीर ने असबाब समेत बोलाया है बोला कि अच्छा भाई! असबाब संभाल लूं तो चलता हूं तुम्हारे साथही तम्बू से निकलता हूं वह बोला कुछ ख़बर है मैं सब असबाब समेत तुमको लेजाऊंगा नहीं तो साहबकिरां तुम पर ख़फ़ा होंगे अमर असबाब समेत अमीर के पास गया अमीरने समझा कि इसका कहीं वार लगगया हँसकर पूछा कि यह असबाब कैसा है? बोला कि हिन्द के बादशाहने मुझे इनाम दिया है साहबकिरां को धैर्य हुआ उस समय तो असबाब को हवालात में रक्खा प्रातःकाल आदी से कहा कि हिन्दुस्तान के बादशाह को हमारी ओर से सलाम कहना और यह असबाब और जो मैं उसके हेतु सौगात देताहूं देकर यह संदेशा कहना कि मालूम हुआ कि रात को अमर आपकी सभा में गया था उसका बयान यह है कि हिन्दुस्तान के बादशाह ने मुझे यह असबाब इनआम में दिया है परन्तु जोकि उसकी बात और काम का मुझको विश्वास नहीं है कि उससे बढ़के कोई संसार में छली और मकार नहीं है इस निमित्त से इस असबाब को मैंने भेजाहै और इस सौगात को जो बहुत थोड़ी है जो अङ्गीकार कीजिये तो मेरी बड़ीखुशी होगी इसका लेलेना आपको उचित है अमर ने जो कुछ बेअदबी की हो तो मुझे ख़बर करना कि मैं उसे दण्ड करूं आदी उस असबाब को छकड़ों पर भरवाकर बादशाह हिन्द के निकट गया वहां लन्धौर की सभा का यह हाल हुआ कि जब सूर्य का प्रकाश हुआ तब सब लोग होश में हो आये अपनी सभाको उजड़ी देखकर पूछने लगा कि यज़दवरद कहां? लोगों ने कहा कि हमको नहीं मालूम कि वह किधर को गया? फिर लन्धौरने अपने गले में एक चिट्ठी बँधी देखी खोलकर जो पढ़ी मालूम हुआ कि वह अमर था उसी समय स्नान करके पोशाक पहिन दरबार की तैयारी होनेलगी फ़र्शवालों ने न्यायशाला में फ़र्श बिछाया नये सिर से फिर कमरे सजे इतने में हरकारों ने ख़बर दी कि मादीकर्ब नामी नौशेरवां के जामाता का एलची आपके लिये बहुत वस्तु लाया है लन्धौर ने कई सरदार आदी की अगवानी लेनेके हेतु भेजे वह सब जाकर आदी को साथ लेकर दरबार में आये आदी ने मस्तक झुकाके सलाम किया साहबकिरां ने जो कुछ कहाथा सुनाया और वह असबाब जो अमर उठालेगया था वह और सौगात साहबकिरां की दीहुई बादशाह के आगे रखदी बादशाह आदी के बिवेक

पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अपने सरदारोंसे सबके ऊपर बैठारा साहबकिरां की सौगात भेजीहुई तो ले ली और कहा कि हमने अमर का अपराध क्षमा किया और हमारी ओर से अमीर को सलाम करके कहना कि अमर की ओरसे हमको कोई कष्ट नहीं पहुँचाहै बल्कि अमर की असली सूरत देखा चाहताहूं जो आप उस को असली सूरत में मेरे पास भेज देंगे तो मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा यह कहकर आदीको खिलअत देकर बिदा किया आदी ने जो कुछ देखा सुना था अमीर के आगे बर्णनकिया अमीरने कहा कि ऐ बाबा यज़्दवरद! तुमको बादशाह हिन्द ने असली सूरत से बोलाया है और असबाब तुम्हारे निमित्त लौटा दिया है अमर अत्यन्त खुश हुआ और असबाब अपने तम्बूमें रखकर लन्धौर की ओर चला मार्ग में अमरने देखा कि एक समूह सौदागरों का जाताहै और उनके पास बहुत अच्छे२ माल सौदागरी के हैं उनमें से एक के हाथमें एक छत्र लाखों रुपये का ऐसा है कि कभी किसी ने न देखा न सुना होगा अमर भी सौदागरों का भेष बनाकर उनके साथ होलिया जब वह समूह बादशाहकी चौखट तक पहुँचा दरबानों ने खबर की बादशाह ने उनका असबाब मांग भेजा लन्धौर ने जो छत्र देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ अपने दारोगा को बुलवाया और कहा जो मोल इस छत्र का हो इन सौदागरों को देदो और इनआम भी इसको दिलवा दो इनको प्रसन्न करके बिदा करो मैं अभी इस ताज को अपने शिरपर रक्खूंगा अमर ने सुनकर कहा कि पहले ताजकी क़ीमत हमको मिले तब बादशाह ताज अपने शिरपर धरें बादशाह ने यह बात सुन ताज दारोगा को देदिया और कहा इसका मोल सौदागरों को देकर हमारे पास लाओ मैं किसीकी वस्तु ज़बरदस्ती से नहीं लेताहूं मुक़ीम दारोगा ताज को सौदागरों से लेगया और मोल पूछनेलगा अमर ने उसके हाथ से लेकर कहा कि उजेले में देखकर इसका मोल मैं कहूंगा बादशाहों का दरबारहै यहां देखभालके लेन देन की बातें करूंगा मुक़ीम बोला कि बहुत अच्छा है मैं तुम्हारीही कही क़ीमत दूंगा अमर सभासे निकलकर आसमान की ओर देखकर कहनेलगा कि क्या बुरा बादल उठा है कुछ आंधी की अवाई है धुन्ध छारही है यह कहकर एक ओर चला और झटपट ताज लेकर भागा सौदागर और शाही नौकर आसमान के चारों ओर देखकर कहनेलगे कि ये भाई कहीं चिह्न भी बादल का है इतना झूंठ क्यों बोलता है? फिरकर जो देखा तो जाना कि वह ताज लिये भागाजाताहै और बहुत दूर निकलगया है जल्द यह खबर बादशाह को पहुँची और सेना में बिदित हुई बादशाह आप एक हाथीपर बैठकर उसके पीछे हाथी दौड़ाताहुआ चला और अमर को जाकर रोका अमर एक झाड़ी की ओर भागा उधर राह न थी अमर खड़ा होकर इधर उधर देखनेलगा देखा तो एक झोपड़ा उसे सूझ पड़ा उसमें एक मनुष्य चक्की पीसरहा है झटपट उसके घर में जाकर उससे कहनेलगा कि तुझे कुछ मरने जीने की खबर है हिन्द के बादशाह ने एक स्वप्न देखा था हकीमों ने उसे बिचार

कर कहा है कि जो किसी चक्कीवाले के शिर की खाल नक्कारे में मढ़कर बादशाह अपने हाथ से बजावे तो स्वप्न के दुःख से छूटजाय सो तेरे पकड़ने को दौड़े आते हैं वह विचारा सुनकर घबड़ागया कि मुफ़्त में जान गई घबराकर अमर से पूछने लगा कि मैं किस भांति से इन अन्यायियों के हाथसे बचूं और थोड़ी ज़िन्दगी के दिन टेर करूं अमर ने कहा कि अपनी धोती मुझे दे कि मैं पहिनकर चक्की पीसने लगूं तेरी जान बचनेका उपायकरूं तू इस हौज़ में बुड्डी लगाकर बैठ रह जो कोई आवेगा मैं उसको जवाब देलूंगा तेरे घर से हीला कर टालदूंगा उसने जाना कि मानो हमारा नया जन्म हुआ अतिशीघ्र धोती छोरके अमर को देदी अमर ने पोशाक अपनी उतारके चुरा ली और वह चक्कीवाला नङ्गा झटपट हौजमें कूदपड़ा और दबकर बैठरहा अमर ने उस धोती को बांधकर चक्की पीसना शुरूअ किया लन्धौर हाथी पर से उतरकर उस चक्कीवाले के घर में घुसा कि ऐसीही सूरत का आदमी अभी तेरे घरमें आया है सच बता वह कहां छिपा है अमर ने कहा कि हौज में बुड्डी लगाकर बैठाहै उससे देख रहाहै लन्धौर कपड़ा उतार कर हौज पर रखदिया और आप उस हौज में कूदा और अमर चक्की से उठकर लन्धौरके कपड़े उठाकर ले भागा खज़ानची से जो मिलाप हुआ उसने कहा कि बादशाह ने यह चिह्न दियाहै कि दिखाकर वेग दोसौ रुपये ले आओ खज़ानची ने दोसौ रुपये उस के हवाले किये अमर ने लेलिये फिर अपने डेरेकी ओर का मार्ग लिया और रुपये अपनी झोलीमें भर लिये अब वहां लन्धौर का हाल सुनिये कि उस चक्की के पीसने वाले को हौज से लन्धौर निकालने और ऊपर उछालनेलगा उसने हौज़के पत्थरों पर अपने शिर को देमारा और शिरको घायल कर फिर कहने लगा कि अब मेरे शिर की खाल ख़राब होगई और किसी काम की न रही किसी दूसरे चक्कीवाले को ढूंढ़कर उसके शिरकी खालका नक्कारा मढ़वाकर बादशाह को दे और अपनी इच्छा-पूर्वक इनआम ले कि बादशाह उसको बुलावे स्वप्न का दोष मिटावे लन्धौर ने आश्चर्य किया कि यह क्या बात है? जान पड़ता है यह विक्षिप्त है जो ऐसी बे-मतलब की बातें करता है जब वह चक्की पीसनेवाला हौज के बाहर आया लन्धौर ने देखा कि यह वह मनुष्य नहीं है इसमें और उसमें बड़ा भेद है बाहर निकल के लोगों से पूछा कि इधर कोई आदमी गया है इस घर से कोई आदमी और भी निकलता है लोगों ने कहा कि और तो कोई नहीं निकलाहै परन्तु जिस मनुष्य को आपने अपने वस्त्र चिह्न देकर भेजा था और दोसौ रुपये देने को कहाथा सो खज़ा-नचीसे रुपया लेकर इधर गयाहै नहीं मालूम है कि कहां रहताहै बादशाह समझ गया और उसकी चालाकी और मक्कारी पर प्रसन्न होगया पोशाक बदल कर अ-केला सीधा अमीर के डेरेकी ओर चला अमीर को हरकारोंने खबर दी कि लन्धौर हिन्द का बादशाह अकेला हाथीपर चढ़ा आता है और कोई मित्र स्नेही व अधि-कारी सिपाही साथ नहीं है साहबकिरां ने कहा कि आने दो और सब चुपके

रहो जब लन्धौर हाथी पर से उतरा और अमीर के तम्बू की ओर चला साहबकिरां तम्बू से उठकर अगवानी करके ले आये और जड़ाऊ चौकी पर उसे बैठारा और उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार उसको शिष्टाचार किया और रंगबरंग की सभा की लन्धौर अमीर का शिष्टाचार देखकर तन मन से प्रसन्न होगया और बड़ी प्रशंसा की और पूछा अमर कहां है उसको इस समय बुलवाइये परन्तु अपनी ही सूरत में उसे मँगाइये कि जल्द आवे मुझे उसके देखने की लालसा है मेरे निकट जब जाता है भेष बदल के जाता है और नया चुटकुला कर आता है अमीर ने आज्ञा की कि बेग अमर को लाओ आज्ञा पातेही अमर आया और जो उसका रूप था उसी रूप से हाजिर हुआ लन्धौर को सलाम किया और अपनी चौकी पर बैठगया मदिरा बांटनेवाले सज धजके सभामें आये और प्यालोंमें मदिरा भरकर फेरनेलगे पहला प्याला साहबक़िरां ने अपने हाथ से भरकर लन्धौर को पिलाया फिर आपने पान किया जब नशा जमी आंखों में अरुणाई आई लन्धौर ने अमर को गानेकी आज्ञा की अमर ने दुतारा मँगाकर मिलाया और ऐसी समय की रागिनी गाई कि सकल सभा मोहगई और लन्धौर ने मोतियों की माला गलेसे उतारकर अमर को देदिया और कहा कि वह ताज भी हमने तुमको दिया फिर साहबकिरां और लन्धौर से मित्रता की कुछ बातें गुप्तहुईं जब सूर्य अस्तहुआ हिन्दके बादशाहने बिदाके समय अमीर से कहा कि हमारी प्रार्थना आपके मन में कुछ ठनी या नहीं कहा कि आप स्नेहकी रीतिसे करते हैं मुझे अपनी मित्रता से अहसानमन्द बखानते हैं और मुझे सप्तद्वीप के बादशाह ने आपसे लड़ने को भेजा है यह स्थान बहुत लाचारी का है लन्धौर ने कहा कि इस मनोरथ को आप छोड़ दीजिये मिलाप में भलाई है या कि लड़ाई में नौशेरवां ने आपको मुझसे लड़ने नहीं भेजा है यह उसने आप से छल क़िया है वह आपका शत्रु है जब कोई उपाय न चला तब उसने आपसे यह उपाय कियाहै इस निमित्त मैं आपसे आश रखताहूं कि मुझे अपने साथ लेचलिये कि मैं उसको मारकर आपको गद्दीपर बैठादूंगा चैनसे राज्य कीजिये और अपनी प्रिया को बग़ल में लेकर रातदिन आनन्द कीजिये अमीर ने कहा कि मैंने तुम्हारे मारने का बीरा उठायाहै मैं किस भाँतिसे उसमें बुराईकरूं लन्धौर ने तलवार ईंचकर अमीर के आगे रखदी और शिर झुकाकर कहा कि जो यही मनोरथहै तो मेरे शिरको काट लीजिये और बेश्रमके नौशेरवांके आगे रखदीजिये साहबकिरांने लन्धौरको गलेसे लगा लिया और उसके मर्दानगी की प्रशंसा की और उसका मन प्रसन्न किया और कहा कि यह काम बधिकों काहै युद्ध की दुन्दुभी बजवाइये और रणभूमि में आइये उस स्थान में जो कुछ होगा वह होरहेगा लन्धौर बोला कि अच्छा ईश्वर मालिक है जो आपका यही मनोरथ है तो नक़ारा युद्ध के बजवाइये और सेना को ख़बर पहुँचाइये अमीर ने कहा कि पहले आप अपने कटक में युद्ध का नक़ारा बजाने की आज्ञा दीजिये प्रथम आपही की ओर से सजधज कीजावे फिर मैं भी अपनी सेना सजकर

दुन्दुभी बजाने की आज्ञा दूंगा लन्धौर ने लाचार होकर अपने यहां आकर नक़ारा बजवाया साहबकिरां ने भी उसके धौंसेका शब्द सुनकर अपना सिकन्दरी नक़ारा बजाने की आज्ञा दी और कहा कि नक़ारा पर चोब पड़े हुक्म होतेही नक़ारेवाले ने नक़ारेपर चोब डाली उसके शब्द से सारी पृथ्वी डगमगाउठी जो लोग शूरबीर थे उनके मन बढ़गये कि कल तलवार बांधने को मिलेगी लड़ाई में अत्यन्त सुख पावेंगे किसी को मार किसीका उर बिदार लाशों से खाईभर आवेंगे यह बिचार स्नानकर पोशाक बदली पान चबा २ कर परस्परमें बातें करनेलगे कि देखिये कल किसको बड़ाई प्राप्त होती है और सब बग़लगीर होकर मिलने लगे कि भाई आज फाग है सब लोग गले मिल लीजिये कल मौत अपना बेड़ा सवाँरेगी देखिये मिलने का समय दे या न दे अभी स्नेहसे आनन्द प्राप्त कीजिये देखिये कौन घायल होता है और कौन अपनी जान खोता है बाज़ों ने अपनी तलवारमें डोरा डलवाया कि शत्रुकी गर्दन का डोरा न बचे बाज़ों ने तलवार का पट्टा चढ़वाया कि जिसमें शरीर की नस व पट्टा लगा न रहे कोई कहता है कि कल अपनी तलवार की चाल ढाल देखना है कोई बोला कि अस्फ़हान की तलवार का मुँह लाल दिखाता है कोई कहता ईश्वर हमारी प्रतिष्ठा रखनेवाला है दो सरदारों की लड़ाई में उसीका भरोसा है कोई कहता है कि हिन्दुस्तान की तलवार और हिन्दुओं का पराक्रम दीखना है और अपने २ अस्त्रोंपर लोग बाढ़ धरानेलगे और हथियारों को देखने भालने लगे बरछी आदि सब सँवारने लगे किसी ने तलवार किसी ने कटार और कोई भाला कोई बल्लमपर शानें व बाढ़ धरवानेलगे जिसमें शत्रुपर लगातेही बेग प्राणहरे कोई अपने तीर और कमान दुरुस्त करनेलगे और जो नामर्द थे उनको नक़ारे का शब्द सुनतेही जूड़ी आई और मुँह सूख गये रो रो कर आशीर्वाद मांगनेलगे और प्रसाद मानने लगे कि जो बिना युद्ध के मिलाप होजावे तो आके मदारबाबा तुम्हारी छड़ियां चढ़ावेंगे कोई बोला कि मैं पीरजलीलों पर जाके बेभुचड़ी की कड़ाही करूंगा किसी ने कहा कि मैं पीर अलूले का मेला करूंगा इसी भांति से प्रत्येक नामर्द मानता था और अपने साईससे कहता था कि देखना भाई प्रातःकाल न होनेपावे तुम घोड़ेको कसना हम ठण्ढे २ तारों की छांह में सवार होकर अपने घर की राह लेवेंगे हम दश घण्टे सेनाके साथ युद्ध क्योंकरें? अमीर को तो मलिका से लव लगी है हम क्यों ऐसे स्थानमें मुफ़्त जानदें साईस ने कहा कि साहब सिपाही होकर ऐसी बात जीभपर लाते हो बर्षों से मुफ़्त में दरमहा खाते हो समयपर जान बचाओगे तो लोग क्या कहेंगे साथवालों को क्या मुँह दिखाओगे मर्दों का काम शत्रुको पीठ दिखाना नहीं इस समय बीरता दिखाने का काम है या घर चलेजाने का जो ऐसा करोगे तो साथ के जवान आपको लज्जित करेंगे सभा में बैठने से ठेना देंगे आपका जीना उनके हाथों से कठिन होजावेगा और अप्रतिष्ठा होगी यह चर्चा सब जगह विदित होगई तो आपको चाकरी मिलना दुर्लभ

होजायगा और किसी रईसके पास आप की आबरू न रहेगी जो ऐसा हृदय रखते थे तो क्यों सिपाहगरी में नाम लिखवाया ऐसा समय क्यों अङ्गीकार करलिया यह आपको क्योंकर मालूम हुआ कि मैं माराही जाऊंगा जो आपके बैरीही मारेजावें देखिये घोड़े को जो दाना दियाजाता है जिसकी भाग्य में दो टुकड़े होना नहीं है वह चना समूचा चक्की से निकल आता है ईश्वर के हेतु दृढ़ता को न त्यागिये बढ़२ के तलवार मारिये मर्दाना वार बैरियों पर कीजिये काम बनपड़े तो मालिक से पारितोषिक लीजिये आज एक घोड़ा है तो कल दो घोड़े होजावेंगे और आगे जो और काम बनपड़ेगा तो आपकी नौकरी और अधिकार बढ़जावेगा झुँझुलाकर साईस को गालियां देनेलगे और कहनेलगे कि अबे तेरा क्या जावेगा? वल्लाह जी तो हमारा जायेगा तुझपर क्या कष्ट आवेगा तूभी तो चाहताहै कि जो हम लड़ाई में युद्ध करें और वहां मारेजावें तू हमारा घोड़ा और वस्त्र लेकर सज धज बनाके सवारों में नाम लिखादे और मजे से तनख़्वाह लेवे मुझसे कहताहै कि इस उत्तम देहको काटाकरो अम्माजान और बड़ी भाभी साहबा को बहकाकर उनका गहना बेचवाया औ अपने परोसी से रुपया लेकर घोड़ा मोललेंगे और बख़्शीजी से मिल कर घोड़े के दाग़ करवाया हमको उपाधि में फँसाया यद्यपि हम कहते थे कि हम को लोहू देखकर जाफ़ आजाती है चिड़ियां शिरपर से उड़कर निकलती हैं तो डर के मारे जान सनसनाती और दम घबराताहै कि कहीं गोली न लगे कि घोड़ा हथियार हाथ से जाय यह रणभूमि और लड़ाई भिड़ाई को हम कब जानते थे लड़कपन से तो हमको अम्माजान ने बिबिधप्रकार से लाड़ करके पाला है कभी सिपाहियों की संगति के निकट जानेकी इच्छा नहीं की सिवाय सितार व शतरञ्ज व गञीफ़ा व नाचरङ्ग आदि के कुछ काम नहीं रहा अब सवारों में नाम लिखवाकर घर के बाहर निकला अभी ब्याह के दो चार बर्ष नहीं बीतेहैं जो सूरत औरही हुई तो वह बिचारी क्या कहेगी उठती जवानी किसके शिरपर रहेगी परिश्रम करके खाते बेल काढ़ते और नैचा बांधते शामको दो पैसे घर लाते माता और भाभी के पास बैठकर खुश होते रात को अपनी स्त्री के पास टांग फैलाकर चैन से नींद भरके सोते और शब्द तो कोई उस समय फेंकेगा जो हमको इस सेना में देखेंगे हमको अपना जी भारू नहीं है कि यहां से निकलकर फिर इस अभाग्य समूह सिपाहगरी में नौकरी करें या फिर इसमें नाम लिखवाने की इच्छा करें और जो तूने मुझे पुरचक दी उसे मैंने समझली तू किसी भांति से जान बचनेदे तू नहीं जानता कि जब कभी ऐसी वैसी लड़ाई हुई है तो हम भागके पछाड़ी रहे हैं किसी ने हमारी सूरत देखी नहीं हां एक बात है जो तू खैरख़्वाही जानता है और नमकहलाली बतलाता है तो तू अपना अँगोछा लँगोटी हमको दे कल हम खारा खुरपा लेकर तेरे बदले घास छीललावेंगे शाम को घोड़े के आगे डालदेंगे और तुझे रोटी बनाकर खिलादेंगे तू हमारे कपड़े पहिनकर हथियार लगाके घोड़े

पर चढ़ और हमारे बदले नौकरी करना लड़ाई में मर्दोंका साथ देना खिलअत और इनाम जो मिले उसे तुमहीं लेना संक्षेप यहहै अर्थात् कायर कूर सब अपना २ उपाय कर रहेथे और जो योधा बहादुर थे वे ईश्वर से वर मांगतेरहे कि ईश्वर! कल इस रणभूमि में हमारी लाज रखना भलाई है और कायर रातहीं को भाग निकले जब सूर्य के प्रकाश होने का डङ्का बजा इधर से साहबकिरां नमाज़ पढ़कर योधों समेत और उधर से लन्धौर सेना लेकर रणभूमि में आया और सेना जमाई और लड़ाई करनेपर उतारू हुए सफ़ाईवालों ने मैदान को झाड़ी वृक्ष आदि से साफ़ किया और बेलदारों ने ऊंची नीची पृथ्वी को बराबर किया और सक्कावालों ने मशकों से धरती को छिड़क दियां सब प्रकारसे चौदह पंक्ति होके दोनों ओर की सेना रणभूमि में खड़ी कीगई अभी किसी ओर से लड़ाई नहीं मांगी गई थी कि सामनेसे बहुत काला एक बवण्डल उठा जब वायुने उस रेणुको स्वच्छ किया चालीस झंडे देखपड़े सम्मुख के लोग सावधान हुए मालूम हुआ कि चालीस सहस्र सवार की इस सेना में भीड़ है जिस समय वह कटक सामने आया साहबकिरां ने देखा कि पहली लड़ी में गुस्तहम अस्कजरींका पुत्र झंडा के तले खड़ा है सेना का मार्ग देख रहा है अमीर ने अमर को दिखाया अमर अपने मनमें एक चुटुकुला शोचकर अपनी सेना से अलग होकर गुस्तहम के कटक की ओर चला और वहां पहुँचकर अदब समेत गुस्तहम को सलाम की और अपना चुटुकुला किया गुस्तहम बोला कि कहो ख़्वाजे अमर! अच्छे तो रहे बहुत दिनों के पीछे देखपड़े अमर बोला कि अच्छे क्या खाक हैं न जीते हैं न मरते हैं ज़िन्दगी का दम भरते हैं इस अरबवालेकी नौकरी करके अपनी मिट्टी ख़राबकी मुफ़्तमें बला अपने शिरपर ली गुस्तहम बोला कि भलाई तो है आजकल हमज़ा नौशेरवां की दामादी के आश में ऐसा अभिमान करके घोड़ेपर सवार है कि किसी का आदर नहीं करताहै यह समझता है कि संसार में न तो कोई मेरे समान मल्ल है न बलवान् न बुद्धिमान् है यातो मुझे खुशामद करके दंगलपर बैठाताथा या अब कुरसी पर बैठने का भी मनोरथ नहीं रखता है अब कुछभी मेरी वहां प्रतिष्ठा नहीं है मैंने जैसी भांति से परिश्रम किया है वैसा जब कोई करेगा तब मालूम होगा और उसी समय मेरी ख़ैरख़्वाही का मज़ा मालूम होगा अब मेरा भी यही मनोरथ है कि इसकी नौकरी छोड़दूं और किसी ओर की राहलूं ईश्वर की सृष्टि तंग नहीं है और मेरा पैर लंग नहीं है एक नहीं तो आधी कहीं मिलेहीगी इस उपाधि से मेरी जान तो बचेगी गुस्तहम बोला यह क्या बात है तुम जहां रहोगे वहां तुम्हारे निमित्त सब कुछ है जो मुझ को प्रतिष्ठा प्राप्तकराओ तो मैं तुमको जान समान मानरक्खूं और तुम्हारी सेवा अच्छी भांति से करूं अमर बोला किइसीहेतु मान मैं तुम्हारे निकट आया हूं परन्तु एक काम कीजिये कि हमज़ा को लंधौर से लड़ने न दीजिये उचित यह है कि आप सबसे पहले अपना घोड़ा कुदाकर लन्धौर से लड़ाई मांगें अमीर मुँह देखकर रह

जाय और उसकी सेना सबकी सब लज्जित होजावे लन्धौर को कुछभी बल नहीं मैंने उसकी गदा देखली एक लकड़ीपर लोहे का खोल चढ़वाया है मैं जानताहूं कि लन्धौर के समान संसार में कोई कायर और निर्बल नहीं है सो हमज़ा जो उसको मारलेगा तो नौशेरवां का दामाद बनेगा उसमें देखें क्या उधुम जोतेगा गुस्तहम ने कहा कि अच्छा हुआ जो तुम मेरे पास आये मैं लन्धौर को मारकर हमज़ा को भी मारताहूं और दोनों को तलवार के घाट उतारताहूं अब तुमसे छिपा क्या है जो कुछ हाल मेरा है सो यह है कि मैंने बहराम को मारकर जाबुल में बास किया था और वहां बहुत अच्छीभांति से गुज़र होती थी इतने में नौशेरवां का परवाना इस मज़मून का मेरे पास आयाथा कि वेग सरंद्वीपमें जाकर पहले लन्धौर का शिर काट-कर हमारे पास लाओ फिर हमज़ा को मारकर मेरे पास आओ कि मैं मेहरनिगार का व्याह तेरे साथ करूंगा अन्त को अमर गुस्तहमको उभारकर रणभूमिमें लाया और आप भी गुस्तहम के घोड़े के साथ किसी के भेष में आया गुस्तहम ने अपने घोड़े को बढ़ाकर आवाज़ दी कि लन्धौर सादान का पुत्र कहां है यही गेंद यही मै-दान है मेरी तलवार का काट देखे मेरी मार अपने ऊपर ले लन्धौर ने अपने हाथी को रेलकर गुस्तहम से कहा कि क्या बेफ़ायदा बकता है अपना वार कर गुस्तहम ने तलवार ईंचकर लन्धौर के शिर पर एक वार किया लन्धौर ने उसको गदापर रोंका तलवार ने दो दांत निकाल दिये लन्धौर ने गदा का एक वार उसपर लगाया गदा तो पूरी उसपर न पड़ने पाई पर गदाकी डांड़ी की झपट गुस्तहम की पसुलियों में लगी थोड़ी पसुलियां उसकी टूटगईं सब बहादुरी धूरि में मिलगई और वह औंधा मुँह होकर धरती पर गिरपड़ा और अचेत होगया साथके सवारों ने चालाकी करके गुस्तहम को उठालिया और जल्दी से फिरने का डङ्का बजादिया लन्धौर ने अमीर की ओर देखकर मुसकराकर कहा कि अब कल आपसे भी समझलेंगे आप भी तलवार का स्वाद देखेंगे अमीर ने कहा कि इस समय कौन मना करता है आज का काम कलको मत छोड़ो ईश्वर का नाम लेकर लड़ने पर कमर बांधो वह बोला कि आज यही भलाई है कि कलही पर यह युद्ध उठ रहे दोनों ओर से दुन्दुभी बजी फिरने का मनोरथ हुआ अमीर की सेना अमीर समेत अपने डेरे पर आई और लन्धौर अपने घरगया और गुस्तहम रातको भागकर पहाड़ में छिपरहा और मनमें यह बिचार किया कि जो हमज़ा लन्धौर को मारकर फिरेगा तो अवश्य इधर से आवेगा उस समय गांड़ा से उठकर उसे मारलूंगा और उसकी सेनाको पराजय करूंगा यह न समझा कि हमज़ा बड़ा बली है हमारे मारने योग्य नहीं है॥

अमीरहमज़ा के साथ लन्धौर का युद्ध करना और लन्धौरको आधीन होना॥

अब लेखनी इस युद्ध के बृत्तान्त का कागज़ पर इस प्रकारसे बर्णनकरती है कि यह इतिहास युद्ध का हिन्दुस्तान के दो सिंहों की लड़ाई का बयान है कि गुस्तहम ने लन्धौर की गदासे पसुलियां तोड़वाकर रणभूमि से भागकर पहाड़ की खोह की

राह ली परन्तु साहबकिरां रातभर अपनी प्रतिष्ठा रखने के हेतु आशीर्वाद मांगते रहे एक योधा दूसरे को ललकारता था कि कल परीक्षा का दिन है यह रणभूमि योधों के हेतु सोने की कसौटी है देखिये कौन तलवार की बाढ़ सहता है कौन अपना भेष बदलताहै किसका सिक्का पराक्रमके देशपर जारी होताहै किसकी प्रतिष्ठा का पल्ला भारी होताहै कल सब क़लई खुल जायगी यही चर्चा लन्धौर की सेना में मचा था जिससे परस्पर में लागडाट थी हांक मारता था कि कल बांकों की निकबतियां देखेंगे देखिये कौन नदीरूपी पराक्रम में गोता मारता है कौन तलवार की धारपर खड़ा रहकर उस नदी में ललकार कर तैरता है? कौन शत्रुओं के साथ कुस्ती करके उनके शरीर की मौत का तूफ़ान देखाता है संक्षेप यह है कि रातभर यह गुलगपाड़ा दोनों ओरकी सेनाओं में इन्हीं बातों की परस्पर में चर्चा रही जब सूर्य ने प्रकाश किया साहबकिरां ने वस्त्र व अस्त्र सजधज के स्याहक़ैतास घोड़ेपर सवार हुए नक़ीब और चोबदार विजय का आशीर्वाद ईश्वर से मांगनेलगे कमान तरकश एक कांधेपर रखकर दूसरे कांधेपर रक्खा ईश्वररचना की शोभा प्रकट हुई लौक़हैरान का पुत्र झण्डा की छाया शिरपर किये हुए चला अमीर उसकी छाया तलेहुए अब दायें ओर मुक़बिलवफ़ादार और बायेंओर सुल्तानबख़्तक पराक्रम का क़िनारा चला और अमरअय्यार बारहसौ मक्कारों के बीच में वस्त्र अस्त्र पहिन कन्तूरा सोनहला और पांतावे सकरलाती को सजेसजाये गोफ़ना को कमर में बांधे तलवार क़टार छूरी आदि हथियार बांधकर छः शब्द बारह स्थान चौबीसख़ाने अढ़ाई कोने नीचे में कहता हुआ छलांगें फलांगें मारताचला और तीस सहस्र सवार लोहे से सजेसजाये परों का पर्रा जमाये साथ अमीर के हुए उधर से हिन्दुस्तान का बादशाह लन्धौर सादान का पुत्र सात लाख सवार बड़े योधा खुमाची, संदली, बंगाली, करनाटकी, मरहटा, दक्खिनी, गुजराती, रांगड़ा, भील, सियारखोरा, काईन,भोजपुरी,बुन्देला, राजपूत, मन्दराजी, आसामी, बनाफ़ी, भूटिया, फ़ौलाद लोहेको पहिने, बैसवाड़े के बैस, अवध देश के क्षत्री, ठाकुर, दिषित, पवांर, ब्राह्मण, सुकुल, तेवारी, दुबे, पांड़े, चौबे और बहुतेरे गवांर हथियार, छुरी, कटारी, सिरोही, तलवार, पटा, बाना, शेरबचा, क़राबीन, पिस्तौल, बर्छी, सांग लगाये हुए बर्क़ोबर्क़ लेकर मस्तमतङ्ग पर सवार जब दोनों सेना पांति पांति जमाई गई उनके बीचो बीच में यमदूतों ने अपना तम्बू खड़ा किया साहबकिरां ने अपने घोड़े की लगाम ली और सिंहसमान लन्धौर के सौंह आकर कहा कि ऐ लन्धौर बादशाह! मुझको तुमसे काम तुमको मुझसे काम है और लोगों के मारे जाने से क्या प्राप्तहोगा यह समझने का स्थान है जिस गुण में तुमको दावा हो वह तुम करो अपने मन की अभिलाष मिटालो लन्धौर ने कहा कि ऐ साहबकिरां! जो मैंने पहले तुमपर वार किया तो तुम्हारे मनकी अभिलाष मनहीं में रहजावेगी तुम्हारी मनोकामना न प्राप्तहोगी पहले वार तुम करो अपनी बाढ़ दिखाओ साहबकिरां ने कहा कि मेरे गुरूने यह नहीं बताया है॥

रणभूमि में युद्ध होना अमीर और लन्धौर से और तलवार मारना अमीर का लन्धौर के शिरपर और तलवारके घाव से लन्धौर के घोड़े की गरदन अलग हो कर धरतीपर गिरना और घोड़े का मरजाना॥

साहबकिरां ने कहा कि जबतक तीनवार तुम न कर लोगे तबतक मैं अपनी वार नहीं करूंगा अपना हाथ भी तुमपर न लगाऊंगा जोकि लन्धौर साहबकिरां पर नेह करताथा इस निमित्त गदापर हाथ न डालकर भाला साहबकिरां पर लगाया साहबकिरां ने उसके भाले की नोक अपने भाले पर रोंकी एक दूसरे से भाला की लड़ाई होनेलगी जब सौ २ नोंकें भाले की चलगईं और चोट किसीपर न आई और घोड़ा भी पसीना में डूबगया साहबकिरां ने उसके भाले को गांठकर एक डांड़ी ऐसी मारी कि भाला उसके हाथ से छूटकर दूर जागिरा और बायु के समान उड़गया यद्यपि भाला की अनी लन्धौर की छाती में पार होगई लाज में डूबकर अपने चेहरे को पीला करदिया परन्तु अपने को सँभालकर प्रशंसा करके बोला कि ऐ साहबकिरां! भाला लगाने का ढङ्ग केवल संसार में ईश्वर ने तुम्हीं को दिया है जो मैं योधा और मर्द हूंगा तो फिर आज से कभी भाले को हाथ में न लूंगा यह कह गदा लेकर बोला कि साहबकिरां! अब भी मिलाप का पट खोलो देखो युद्ध से सलाह अच्छी होती है नाहक़ तमाम उमर तुम्हारा शोक मेरे हृदय में रहेगा मुझे रञ्ज अपना न दो अमीर ने कहा कि यह समय लड़ने मरने का है सीख व स्नेह का नहीं है मैं पहलेही कहचुकाहूं कि अपनी बात से लाचार हूं नौशेरवां का अब तो आज्ञामानक हूं उसका हुक्म करनेवाला हूं लाओ देखूं तो तेरी गदाकी कैसी मार है लन्धौर लाचार होकर दोनों जङ्घा मिलाकर गदाको तोलकर दोहत्थड़ साहबकिरां के शिरपर मारी साहबकिरां ने ईश्वर का नाम लेकर गदा को ढालपर गांठा उसपर कुछ धमक भी न लगी यद्यपि अमीर के शरीर में पसीना निकल आया परन्तु हज़रत आदम के बाजूबन्द की तासीर से बाजू टेढ़ी न होनेपाई लन्धौरने अपने मनमें कहा कि गदा जिसपर लगी उसकी हड्डियां चकनाचूर होगईं परन्तु साहब के कुछ धमक भी न मालूम हुई त्यौरीपर मैल भी न आया दूसरी बार अत्यन्त बलके साथ गदा अमीरपर लगाई यद्यपि साहबकिरां ने सिकन्दर के समान उसको रोका परन्तु छठीका दूध याद आया लन्धौर ने तेहराई को फिर गदा झुंझलायके लगाई और इस बल से उस गदा को हनी कि जो कांसे के पहाड़पर पड़ती तो चर २ होजाता और जो साधारण गिरिपर मारता तो उसमें से पानी बह निकलता साहबकिरां ने उसको भी रोका परन्तु तुरङ्ग स्याहक़ैतास धरणी पर चारों पैर से चित्त गिरपड़ा और अमीर गर्द के बगोले में पड़गये इस धमक से जो शरीर में गदापड़ी उससे गर्मी में अटगये लन्धौर के मुख से निकलगया कि आपके मुखका रङ्ग बदल गया कि वह मारा और तले गिरादिया बलवन्त को निर्बल किया परन्तु अफ़्सोस है कि साहबकिरां की युवाअवस्था का मैंने इसी कारण से बार २ मना किया पर इनकी मीचने न मानने दिया यह कहकर अमीर के पास हाथी परसे उतरके गया

जांघें और हाथ मलकर कहा कि ऐ बादशाह, तेजस्वी ! जो जीताहो तो बोल कि जिससे मेरी जान में जान आये और जो मरगया हो तो प्रलय के पीछे मेरा तेरा मिलाप रहे मुझे तेरा अतिशोक व्यापाहै साहबकिरां जो होश में आये . दाऊदी स्याहक़ैतास के ऊपर चमकाया घोड़ा चारों सुम झाड़ कर उस स्थान अलग जा खड़ा हुआ और स्वच्छ निकल आया अमीर ने कहा कि ऐ हिंदुस्तान बादशाह ! किसको मारा और किसको तले किया और कौन बलवन्त और किस को निर्बल किया मैं तो अभी जीताहूं एक वार और अपना लगाले अपने मन की हौस मिटाले अभी तो युद्ध का आरम्भ हुआ है ईश्वर जिसकी लाज रक्खे उसकी रहे इतना क्यों अधैर्य होताहै ? किसी मर्द से कभी काम न पड़ा होगा ॥

चौपाई । द्विजदेवता घरहि के बाढ़े । परेउ न कबहुँ सुभट रण गाढ़े ॥

लन्धौर ने अचम्भा माना और हाथी पर से उतरकर घोड़ेपर सवार हुआ और तलवार बर्धानी बाढ़ेदार खींचकर अमीर पर लगाई अमीर ने जड़ाऊ रेशम सत रङ्ग में गुंधी हुई ढाल को आगे किया और उसकी तलवार कराल को उसपर गांठ लिया और कहा ऐ बादशाह, लन्धौर ! मैंने तेरी पांच वार रोकीं अब दौर मेरा है मेरी वार का अवसर आया ख़बरदार हो यह न कहना कि धोखे में मुझे मारा और जानने न पाया यह कहकर रकावसे रकाब मिलाकर तलवार ईंचकर अत्यन्त चालाकी व होशियारी से लन्धौर के शिरपर मारी बादशाह ने ढालपर रोंककर चाहा कि रद करे और अमीर के हाथ को गांठ ले परन्तु तलवार ढालके दो टुकड़े करके घोड़े की घींचके तले जा निकली घोड़े का शिर गिरपड़ा बादशाह हिन्द ने जीन को ख़ाली किया और लज्जित होकर क्रोध में आया और तलवार खींच कर अमीर पर दौड़ा अमीर ने अपने मन में कहा कि ऐसा न हो कि स्याहक़ैतास घायल होजाय या अपनी जान इसके हाथ से खोवे तो बल मेरा आधा रहजावेगा और फिर ऐसा घोड़ा कहां मेरे हाथ आवेगा चालाकी करके घोड़े से अलग हुए और बल तलवार लन्धौर के हाथसे एकाएकी निकाल ली और छीनकर अपनी सेना में दी लन्धौर ने अमीर की गर्दन हाथसे बांधी अमीर ने उसकी कमर में अपना डालदिया दोनों ओर से जोरावरी होनेलगी देखनेवालों का मुँह फिरगया जब बीतगया और रात हुई तब दोनों ओर से मशालें बारी गईं रातभर बराबर तीन रात व तीन दिनतक लन्धौर और अमीर मल्लयुद्ध करते रहे परन्तु किसी किसीसे लङ्गर न लगा चौथे दिन अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर लन्धौर को छ तक उठालिया परन्तु शिरतक ऊंचा न करसका उस लङ्गर को जो बहुत भारी रोंकेरहा उसको छोड़कर चाहा कि जांघ के ऊपर कटार मारें जान को शरीर से द हर करके मिट्टी में मिलावें लन्धौर ने अमीर का हाथ पकड़ लिया और हाथ के कहा ऐ साहबकिरां ! आपके सिवाय और किसीने इतनी शक्ति पाई है कि लङ्गर धरती से उखाड़े और मुझे पृथ्वी से उठा लेवे मैंने तन मन से .

आधीनता अङ्गीकार की और आज से मैंने आपका साथ पकड़ा अमीर ने लन्धौर को गले लगालिया और उसी समय ईश्वर का धन्यवाद किया और कहा कि बादशाह ! तुम मेरे बांहबल हो मैं तुम्हें भाई की भांति जानूंगा और जान से अधिक प्यारा रक्खूंगा परन्तु मेरी यह इच्छाहै कि तुम मेरे साथ नौशेरवां के पास चलो मुझे उस से सच्चा करो लन्धौर ने कहा कि मैं आधीन हूं जहां आज्ञा हो वहां चलूं बिस्मिल्लः कहकर वहां चलिये आगे तम्बू भेजिये अब तो मैं बात हारचुका इस बात में बे उत्तर हूं लन्धौर ने उसी दम अपनी सेना के सरदार बुलवाकर अमीर की नौकरी करवाई और सबके ओहदों अर्थात् अधिकारों का हाल अमीर को बताया और आप अमीर के साथ होकर अमीर के तम्बूमें गया साहबकिरां ने बहुत कुछ रुपया पैसा लन्धौर के ऊपर न्यवछावर किया और सभा सज के मेहरनिगार के चित्र को देख-कर रोने लगा आंसुओं की नदी बहाने लगा लन्धौर ने देखकर मालूम किया कि अमीर को मेहरनिगार की सुधि हुई है अपने रूमाल से अमीर के आंसू पोंछकर समझानेलगा कि यह आंसू बहाना किस हेतु है ? अब बिछोह का समय बीत गया और मिलाप का अवसर शिर पर पहुँचा साहबकिरां ने मनमें धैर्य बांधकर अमर को गाने की आज्ञा दी अमर ने अदब समेत दो जांघों को बांधकर मिजराब की टोपी अँगुली में पहिनाई और छेंड़ छांड़ की ठहरी और दुतारा बजाकर पहले साभा राग की दिखाई फिर अच्छे स्वरोंसे दाऊदी राग का गाना आरम्भ किया ऐसा गाया के अमीर और लन्धौर और सभा में जो २ लोग बैठे थे सबके सब मोहित होगये और सबसे लन्धौर और अमीर का मन बहुत आनन्दित हुआ दोनों ने अमर को हीरा रत्न देकर मन भरादिया उसके पीछे लन्धौर ने खजाने की कुंजियां अमीर के आगे रखदीं और हिंदुस्तान की अच्छी २ वस्तु अमीर के आगे धरीं लन्धौर मुस-मान होगया बुतपरस्ती को त्यागदिया दारोगा बावरचीखाने को बुलवाकर एक कमरे में भांति २ के खाने दस्तरख्वान पर चुनवाये अमीर ने लन्धौर को साथ ले-कर खाना खाया लन्धौर ने खाना खाने के पीछे प्रार्थना की कि मैं अभी आपसे आश बड़ाई की रक्खेहूं बहुत दिनों से यह इच्छा मेरे मनमें है कि मेरे घर में आप अपने चरण पधारिये और लवण रोटी खा लीजिये और मेरे मनोरथ को पूर्ण कीजिये और यह दोहा कहा ॥

दोहा। मम गृहके जो मध्य में, क्षणकमात्र पगजाय। निज तिहारे पैरते, गृह काबा होजाय ॥

अमीर ने कहा कि मुझे तन मन से यह मंजूर है और हिन्दुस्तान का रवाना होना बहुत जरूर है इसके पीछे लन्धौर बिदा हुआ साहबकिरां अपने साथ और २ के अधिकारियों को लेगया सभा आनन्ददायक सजी गई तबलेपर थाप पड़ने लगी अब लन्धौर और अमीर दोनों को उस जश्न में रहने दो थोड़ा समाचार गुस्तहम का बर्णनकरूं विदित हो कि गुस्तहम निर्बल मारखाने की निशानी जो लन्धौर से पसुड़ियां तुड़वाकर भागा मंजिलों पीछे फिरके न देखा एक पहाड़ की

खोह में छिपकर बैठा और रात दिन साहबकिरां के मारने के उपाय में रहा हरकारों ने उसे समाचार पहुँचाया कि अमीर ने उसे तले किया और मुसल्मानों की सेना विजय प्राप्त की और आज कई दिन से लन्धौर के साथ विलास कररहे हैं सिवाय मुक़बिल वफ़ादार के और कोई दूसरा अमीर की सेना में सरदार नहीं सब मित्र स्नेही अमीरही के साथ हैं गुस्तहम ने देखा कि अब इस समय में अवसर घात का मिला है पड़ाव मारा चाहिये इन लोगोंपर वार लगाया चाहिये कहीं मलिका मेहरनिगार की दो लौंड़ियां साथ लायाथा और साहबकिरांने भी उनको मेहरनिगार के पास देखाथा गुस्तहम ने विष हलाहल दो बोतलों में जो अंगूरी शराब से भरीहुई थीं चार मिसकाल अर्क़ मिलादिया जो एक बूंद भी उसका खारी समुद्र में गिरता तो उसके जीवधारी एकभी न बचते डाट शीशों में लगाकर मेहरनिगारकी जाली मोहर की और चेलियों की सूरत पथिकों की सी बनादी और स्नेहपत्र मेहरनिगार की ओर से लिखकर उनको देदिया और उनको मज़मून उस का अच्छी भांति से समझा दिया कि पहले मुक़बिल के पास जाकर हाल वर्णन करना कि मलिका मेहरनिगार ने हमको भेजाहै वह तुमको अमीर के पास लेजावेगा अमीर से बहुतसी बातें स्नेहमय मलिका मेहरनिगार की ओर से कहना फिर ये दोनों शीशे देदेना और यह पत्र भी देना और उसका मन अपने हाथ में लेना जो यह उपाय कर लाओगी तो तुमको मैं अपने महल में रक्खूंगा और अपनी स्त्रियों में मिलालूंगा वे दोनों मुरदारें मरदाना भेष बना के चलीं जब सेना के निकट आईं पहरावालों ने रोका बोलीं कि हम मलिका मेहरनिगार के पास से आतीहैं और उनका पत्र लिये तुम्हारे अमीरके पास जाती हैं वे लोग उनको साथ लेकर मुक़बिलके पासलाये मुक़बिल ने हाल जानकर सभा में जा अमीर के कानमें सबहाल वर्णनकिया कि दो लौंड़ियां मलिका मेहरनिगार की भेजी हुई आई हैं और दो शीशे अंगूरी के पत्र समेत लाई हैं आपके पास आनेकी आज्ञा चाहतीहैं अमीर को नशा था ही और भी आनन्द में लीन होगया और जल्द अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और बादशाह से कहा कि आप तबतक सभा में रहिये मुझे काम बहुत आवश्यक है उससे निपटकर अभी आताहूं और अमर से कहा कि तुम मेरे बदले तबतक बादशाह के पास हाज़िर रहो अमीर अपने तम्बू में आनकर एक किनारे बैठा और उनके आने के लिये आज्ञा दी उन दोनों टहलुइओं को बुलाकर हाल सुना पत्रके लिफ़ाफ़े पर जो मोहर मेहरनिगार की थी उसको चूमा और आंखों से लगाया और बारम्बार जांघपर रक्खा फिर उठाया संक्षेप यह कि पत्र को पढ़कर ऐसे फूले कि शरीर में न समासके बुराई भलाई समय की भूलगये एक शीशेकी मोहरको खोलकर उजेले में हलाया और मेहरनिगार का नाम लेकर मुँह में लगाकर पीगये उस मदिरा का गलेसे नीचे उतरना था कि अमीर बेहोश होगये मुँह से फेना जारी हुआ हाथ पांव मारनेलगे नेत्रों में जल भर आया॥

- दोहा । यह मदवे उस यार के, दुखित हृदय मँझधार । गर्दन में जो छिद्र किये, होय नयन के पार ॥

लौंड़ियों ने जाना कि अमीर का काम समाप्त होगया कोई दम के पाहुन हैं व हमारा काम अच्छी भांति से बनगया किसी भांति से तम्बूकी मेखें ड़ उन्हों ने राहली और खुश होकर गुस्तहम की ओर चलीं दैवयोग से बादशाह ने अमर से कहा कि अमीर के विना सभा फीकी लगती है क्योंकि जिस सभा के बीच में पाहुन न हो उसका कुछ ढङ्ग नहीं है ख्वाजे! जो अमीर को इस समय ले आओ तो चारसौ रुपये तुमको देकर अभी तुम्हारा झोरा भरदूंगा अमरने रुपया का नाम जब सुना तब कब ठहरताहै शीघ्र वहांसे चलता हुआ तम्बू के दर्वाज़े पर मुक़बिल को देखा उससे पूछा कि अमीर क्या करते हैं मुक़बिल ने कहा दो लौंड़ियां मेहर-निगार की आई हैं उनसे एक किनारे बातें कररहे हैं लौंड़ियों का नाम सुनतेही अमर का कलेजा धड़का मुरझागया बोला कि ईश्वर कुशल करे तम्बू में जाकर दीपक को बुझापाया झटपट बाती बारकर दीवा जलाया देखा कि अमीर के शरीर में सब फफोले पड़गये हैं नीलारङ्ग होगया है फेना मुँह से बहता है इस अचेती में हाथ पांव धुनरहे हैं बोतल चकनाचूर पड़ी है और दूसरी वैसेही धरी है जहांतक उसके बूंद धरती पर पड़े हैं वहांकी धरती फटगई है इधर उधर देखा तो किसीको न पाया परन्तु तम्बूकी मेख एकओर की उखड़ी देखपड़ी जल्दी उसी ओरसे निकलकर लात लगाताहुआ उन लौंड़ियों के पीछे चला जाते २ उनके समीप पहुँचा और वे दोनों कहती जाती थीं कि क्या शुभ सायतपर चली थीं कि कुछ देर भी न लगी कि अमीर को मारकर चली आई चलो गुस्तहम से वादा पूरा करादो और उससे पारितोषिक दिलवादो पीछे से अमर बोला ऐ दुष्टनियो ! हम तुम्हारे यमदूत आपहुँचे भले घर बैना दिया यह कहकर कमर से कटार निकालकर दोनों को वहीं ठिकाने लगादिया और उसी स्थान से उलटे पांवों फिरा मुक़बिल को तम्बू में लेजाकर अमीर का हाल दिखाया और कहा कि यह तेरीही ग़फ़लत है अब बता क्या करें क्या दवाकरें मुक़बिल शिर पीटनेलगा अमर ने कहा कि चुप रहो ऐसा न हो कि हिन्दकी सेना इस समाचार को सुनकर फिर जाय और हमारी सेना उन लोगों से नाहक़ घिरजाय तू अमीर की निगहबानी कर और यहां से पांव बाहर न धर जब तक मैं न आऊं किसीको तम्बू में न आनेदेना और इस स्थान से हिलने का नाम न लेना लन्धौर से जाकर चुपके से कहा कि अमीर इस समय आ नहीं सक्के और आपको भी वहां बुला नहीं सक्के क्योंकि दो सर्दार नौशेरवां के पास से आये हैं और यह हुक्म लाये हैं कि जो तुमको मुझसे अपना वादा करना मंजूर है तो जल्द लन्धौरको बँधुआ करलेना किसीभांति से उसको छोड़ न देना सो अमीर ने आपसे कहाहै कि जो तुमको बँधुआ होना अङ्गीकारहो तो मेरा काम निकलता है तुम्हारा किसीभांति से बाल भी टेढ़ा न होगा बादशाह ने कहा कि बँधुआ होना तो कोई बात नहीं है अमीर जो मेरा शिर मांगे तो हाजिर है इसमें मुझे क्या ढील है यह

तो बात मेरी खुशी का कारण है अमर ने कहा कि ऐसा न हो कि आपकी सेना बिगड़े और कुछ झगड़ा करे बादशाह ने कहा कि किसमें इतनी शक्ति है सरदारों को समझा दिया और अपने हाथ बँधवाकर मुसल्मानों की सेना में आया अमर एक किनारे बैठाकर शिष्टाचार करनेलगा और एक प्याला चालाकी का पिलाकर लन्धौर को बेहोश करदिया फिर उसे सांकरों में बांधकर एक ऐसा सन्दूक़ जिस में वायुलगे रखकर बन्द करदिया और सेना का प्रबन्ध करके वहांसे मार्ग लिया राह के मध्य में दो सवार देखे यद्यपि उनसे छिपा परन्तु छिप न सका और उनके सामने आया तो वे अपने २ घोड़ेसे उतरकर अमर को बग़ल में लेकर मिले और मिज़ाज का हाल पूछने लगे अमर ने पूछा कि आप कौन हैं? वे बोले कि हम शहपाल हिन्द के बेटे हैं तुम्हारी तलाश में दूरसे आये हैं सबूर व साबिर हमारा नाम है बाप हमारा ऊपरदरा मुसल्मान है परन्तु अन्तःकरण में कुमार्गी और बेईमान है रात से अमीर को हलाहल पान करनेका हाल सुनकर गुस्तहम की सहायता को गयाहै और उस दुष्ट से मिलगया है इसकारण से आये हैं कि अमीर को लेजाकर अपने क़िले में रक्खें और अच्छी भांति से मन लगाकर दवा करें अमर ने खुश होकर कहा कि अन्धा चाहे दो आंखें अमीर को साथ लीजिये और ईश्वर को बीच में दीजिये कि कुछ छल न हो और कोई झगड़ा न खड़ा हो उन्होंने ईश्वर को बीच में दिया और कहा कि जो ऐसा हमको मंजूर होता तो क्यों इधर का मनोरथ करते अमर उनको लेकर तम्बूमें आया और एक तम्बू में अलग बैठाया जब आधी-रातका डङ्का बजा अमीर को डोली में सवार करके साबिर और सबूर के क़िले में पहुँ-चाया और क़िले में अपना प्रबन्ध करके साबिर और सबूर से कहा कि अब अमीर के अच्छे होनेका उपाय क्या है वे बोले कि यहां से दशमंज़िल नारवन नामी एक द्वीप है उसमें हकीम अक़लीमून रहता है दुनियां में केवल वही इनकी दवा करने योग्य है अपने समय का धन्वन्तरि है एक चिट्ठी लिखेदेते हैं उनको बोलालाओ तो अमीर बेगही आराम होजावेगा अमर ने पहले अपने मनमें बिचार किया कि जब-तक हकीम आवेगा नहीं मालूम कि हमज़ा का क्या हाल होजायगा फिर शोचा कि जो वैद्य न आयेगा तो दवा कैसे होगी वायुके समान जाना चाहिये और साथ ही उसको लानाचाहिये यह अपने मनमें ठानकर चाहा कि जायें साबिर व सबूर ने उसके साथ दाराबनामी चालाक को राह बताने के हेतु साथ करादिया अमर बा-हर क़िले के निकलकर वायु से कहा मामा वायु इस समय बड़ी आवश्यकता है मुझे अपने आगे जाने देना और मेरे आगे इसका पैर भी न बढ़ने देना दाराब पूरी मंज़िल भी न गयाथा कि फूलगया अमर से कहनेलगा कि कहीं सवारी मिलती तो आगेको चलना होता यह सुन अमर बोला कि अच्छा सुसतालो किसी वृक्ष के तले हवा खालो कि चलने का जिसमें बल हो थोड़ा चलेथे कि एक बाग़ मिला एक वृक्ष के तले दोनों बैठगये अमर ने चालाकी से मकर का खाना देकर कहा कि कुछ खालो

कि चलने का बल हो और मार्ग का हाल पूछने लगा वह कहनेलगा कि सीधे नाक की सूत चलेजाओ दाहिने बायें ओर न देखो उस द्वीप के निकट एक पगडण्डी दाहिने हाथकी ओर मिलेगी तुम उसी लकीरपर समुद्र के किनारेतक चलेजाना बीच में और भी उधर की राहें मिलेंगी पर और तरफ़ न जाना चारकोस के लगभग चौड़ा उस समुद्र का पाट है वहां नावपर सवार हो पार जाकर थोड़ी दूर जाओगे तो उस द्वीप के मकान दिखाई देवेंगे वहां जाके तुम आप बुद्धिमान् हो पता लगालोगे अमर ने देखा कि दाराब की आंखों में सरसों फूली अमर के आगे चौकड़ी भूली दाराब से कहा कि लो भाई! जल्दी चलो दूर जाना है अपनी कमर कसो उसका उठना था कि उसी स्थानपर मिट्टीका थूहा बनकर गिरपड़ा अमर ने एक वृक्ष में उसे बांधदिया और आप चलताहुआ शाम न हुई थी कि समुद्र के किनारे पहुँचा नाव के आने में देर देखी दरिया में अलियासपर सवार होकर चला बात की बात में पार जाकर शाम के समय करामातद्वीप में पहुँचा हिन्दू की सूरत बनकर बाज़ार में गया एक आदमी से पूछा कि हकीम अक़्लीमून का मकान कहां है भाई! हमको पता बतादो वह बोला कि इस बस्ती के मालिक वही हैं यह फाटक जो देखपड़ता है सो उन्हींका मकान है अमर ने दरबानसे जाकर कहा कि साबिर व सबूर के पास से आया हूं हकीम साहब के नाम का पत्र लायाहूं उनको ख़बर दो दरबानीने हकीम साहब से सब हाल कहा हकीमसाहबने कहा कि आनेदो ख़बरदार उसे कोई न रोंके दरबानी ने अमरसे कहकर उसे हकीमसाहब के पास भेजा अमर ने निकट जाकर युक्तिसमेत सलाम किया और वह पत्र दिया हकीम ने अमरसे पत्र लेकर पढ़ा क्रोधित हो भौंहें समेटकर कहा क्या अच्छा मुझको लिखाहै कि जो शीघ्रआकर हमज़ा को अच्छा करदोगे तो तुम्हारी थैली हीरा रत्न से भरदेंगे बहुत खुश होके तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे कहनेलगा कि क्या खूब मुझे लालची जानलिया जो यह बात लिखी है जो यह बात न लिखते तो मैं जाता परन्तु अब न जाऊंगा कभी उधर का मनोरथ न करूंगा अमर बोला कि कृपानिधान! उनसे अपराध हुआ जो ऐसे निर्लोभी बेपरवाही को यह बात लिखी क्षमा कीजिये और सवारी मँगवाइये हकीमजी बोले कि तू अपने से क्यों पैर बाहर धरता है तुझको इन बातों से क्या प्रयोजन है? जब मैंने इनकार किया तब इनकारही जान इसमें विवाद से तुझे क्या लाभ होगा? अमर ने कहा कि बातें बढ़ाने को जाने दीजिये संक्षेप यह कि आपके न जाने से एक ईश्वर का सेवक मराजाता है वहां जाकर अच्छा फल देखियेगा पुण्य लीजियेगा हकीमजी बोले कि जो हो मैं नहीं जाऊंगा अमर ने कहा कि भारी छोटा तो मैं नहीं जानता यह बात किस क़ानून में लिखी है कि हकीम बीमार का हाल सुनकर अपने स्थान से न टसके यह क्या भला है? कि एक ईश्वर के सेवक के इलाज में कि जिसके हेतु सहस्रों आदमियों को लाभ पहुँचे उसपर ध्यान न करे हकीम अक़्लीमून बोला कि तू क़ाज़ी है या मुफ़्ती या तेरी मौत आई है क्यों

खोपड़ी खाई है जो अपनी राहले अमरने कहा कि आपका चलना मुख्य है किसी भांति से चलने की सूरत निकालना चाहिये ऐसी बात आप क्यों कहते हैं ? हकीम ने कहा कि क्या तू विक्षिप्त है ऐसा बुद्धिमान् होकर मुझसे बतकही कररहा है अपनी हैसियतभर बातें नहीं करता है अमर ने कहा कि हज़रत किसी भांति का सौदाई हो लड़कों को उसके पीछे ताली बजाना उचित है इतनी दूर से आताहूं मेरे पीछे तो किसी ने चुटकी भी न बजाई तुम्हारी तरह सौदाई हो तो उसके पीछे ताली बजाना लड़कों को उचित है आप मुझे विक्षिप्ती बनाते हैं यह बड़ा अन्याय है तवतो अक़्लीमून ने अपने सेवकों को आज्ञादी कि इस बीमार वेअदब को बांधो और घूंसों से इसकी ढिठाई निकालो यह सुनकर जब अमर ने जाना कि हकीम न जायगा और मैं दण्ड पाऊंगा तो रोने चिल्लानेलगा और कहनेलगा कि ये बातें जो मैंने आपसे कही हैं मानो साबिर व सबूर के मुख से भाषी गईं भला है कि आप न जायें हां नाहक में कष्ट वे फ़ायदा न उठावें परन्तु साबिर व सबूर दोनों बड़े मसख़रे हैं जो मुझे काले कोशों दौड़ाया जो आज की रात अँधियारी है यहां से जा नहीं सक्राहूं और कोई आगे नगर भी नहीं है न रातको कोई राही मिलसक्ता है आज्ञा हो तो इस सङ्कट में आप के द्वारे पररहूं प्रातःकाल अपना मार्ग लूं अक़्लीमून ने अपने सेवक को आज्ञादी कि इसको बावरचीख़ाने में लेजाकर कुछ खिलवाकर सो रहने दो कल सवेरे यहां से रवानाकरो अमर ने अपने मन में विचार किया कि हकीम अक़्लीमून बड़ा नादान है बुद्धिमान् होकर लाभ हानि नहीं समझता है यही मूर्ख का चिह्न है इसका कुछ इलाज करना चाहिये कोई होश की दवा दिया चाहिये बावरचीख़ाने में जाकर बावरची से चिकनी २ बातें करनेलगा बावरची अमर की मधुर बातें सुनकर दूध खांड़ की भांति घुलगया अमर ने ख़मीर मिठाई के कई टुकड़े उस थैली से निकालकर उसे दिये कि थोड़ी इसकी भी चाशनी चखिये बहुत आपने रकाबदारी की और बहुतसी मिठाइयां बनाई होंगी बहुधा बुद्धिमानोंके साथ सङ्गति रही होगी बावरची ने उस की बातें सुनकर वह मिठाई अच्छी भांति से खाई और प्रसन्न होकर सब पड़े खा लिये बोला कि सचमुच इसकी मिठाई होंठ बन्द करती है इस स्वाद की मिठाई कभी नहीं खाई अमर बोला होंठ क्या कोई दम में श्वास बन्द करेगी फिर और ही स्वाद देखावेगी अन्त को उसके मज़े में लाकर एक कोनेमें ले गया और बोला कि कुछ नमकीन का भी स्वाद चखिये बावरची ने कहा कि जब मिठाई में यह स्वाद नमकीन में इससे अधिक स्वाद देखावेगा अमर ने अपनी झोरी से एक टिकिया निकालकर दी उस मरभुक्खे ने उसको भी खालिया फिर तो झूमने लगा अमर ने अति चिल्लाके एक गाली उसे दी वह आगबबूला होगया एक चैला लेकर मारने को उठा पांव जो लड़खड़ाया दर्वाजे के चरणों तले आरहा अमरने बावरचीख़ाने में एक चूल्हे के पास गढ़ा खोदकर उसे गाड़दिया ऊपर से लकड़ियां जला

कर रखदीं और हांड़ी में पानी चढ़ादिया और आप उसकी सूरत बनकर हकीम के हेतु बियारी पकानेलगा कलोचाकी रोटी में अपना दाना खर्चकिया और ऊपर से सौंफ़ लगादी और क़लिया व कुर्मा व पुलाव आदि में अपने झोरेसे घी निकाल कर डाला और सब सामान अपनीही झोरी से निकालकर डाला और सब प्रकार के भोजन बनाये प्रातःकाल होतेही हकीम साहब के दस्तरख़्वानपर सब वस्तु चुन दी और हकीमसाहब को खिलानेलगा हकीमसाहब ने जो वस्तु खाई उसमें प्रशंसा करते २ मुँह बन्द होगया अमर ने कहा कि कृपानिधान! यह आपकी दवा कीगई और क़ानून से आंच दीगई है बन पड़ा हो तो सदा ऐसाही खाना खाया कीजिये तो दिमाग़ में बल अधिक हो जानबूझ के कामकरें और बीमारी को अच्छीभांति जान लिया करें कुछ छिपा न रहे हकीम साहब खानाखाकर बहुत खुशहुए थोड़ी देर के पीछे ज़ोर से डकारनेलगे और कहा कि तेरी बुद्धि बड़ी तीव्रहै हम और बातें भी तुझे खानापकाने की बतायेंगे अमर ने थोड़ीदूर पीछे हटकर कहा कि सृष्टि में हकीम साहब आप भी बलिष्ठ नुसख़ा हैं पढ़ लिखकर सब चौपट किया कितने बेहूदाहैं अक़लीमून झुंझुलाकर उठा और कहा ऐ निर्बुद्धी! यह क्या बेहूदा दिमाग़ पकाता है यह क्या बेअदबी की बातें मुख में लाताहै अमर ने पीछे को फलांगमारी और हकीमसाहब फलांग के मारतेही अचेत होकर धम से मुँह के बल धरतीपर गिरपड़े अमर ने हकीम साहब को चादर अय्यारी अर्थात् चालाकी से लपेट कर झोरी में लेटाया थोड़ी सी बेहोशी की दवा देकर सारे विद्यार्थियों को खिलादी जब सब बेहोशहुए अमर ने कुतुबख़ाना व दवाईख़ाना और कुल घरके सामानको उसी झोरी में भरकर उसके ऊपर हकीमसाहबको लेटाकर एक परवाना राहदारी हकीम साहब के नाम से लिखकर उनके क़लमदान से मोहर निकाल कर परवाने पर करके प्रसन्नता से अपने स्थान की राहली उसका मज़मून यह था कि घाट के मांझी को उचित है कि शीघ्र बे तकरार इस मनुष्यको नदी के पार उतारदे और एक पैसा भी उतराई का न ले जो थोड़ी भी देर लगावेगा तो कठिन समुद्र में डुबाया जायगा थोड़ीदेर के पीछे अमर गठरी बांधेहुए नदी के किनारे जापहुँचा और घाट के मांझी को राहदारीका परवाना दिया घाटवाला शीघ्र उतारनेपर उद्यत हुआ पहलेही खेवे में अमर को पार उतारा अमर एक पहर के भीतर में वहां पहुँचा जहां दाराब को वृक्ष में बांध गया था दाराबको खोलकर कोई दवा दी उससे चेत हुआ दाराब जो सावधान हुआ नींदसे चौंका तो बोला कि बहुत सोये नहीं तो आधीराह उस द्वीपकी लपेटजाते नींद ने मंज़िल भी खोटी की अब चलिये द्वीप की राह लीजिये अमर ने आदि से अन्ततक सब समाचार हकीम के लानेका वर्णनकिया दाराब के होश कहानी सुनकर उड़गये और गुरू कहकर अमरके चरणोंपर गिरपड़ा और अमरका चेलाहुआ अमरने दाराब

९ कि तू हौले २ आ मैंतो लम्बी लेताहूं साहिर सबूर को यह सब समाचार हूं हवाको जो पछिले पांवों से मारा तो दाराब की नज़रसे जातारहा थोड़ी

देरके पीछे क़िला के पास पहुँचा देखै तो अद्भुत चरित्र है गुस्तहम सेनालिये हुए क़िला के तले खड़ाहै और एकओर सेना हिन्द के वादशाह की खड़ीहै क़िलेके बुर्ज़ों परसे गोली वरसती है गोलंदाज़ तोपों को महतावी देरहे हैं अमर घुसकर क़िले के बुर्ज के तले पहुँचा और कमन्द फेंककर बहुत जल्द क़िलेकी दीवार पर चढ़गया परन्तु तले से एक मनुष्य ने निशाना बाँधकर उसकी गठरी में तीर लगाया वह तीर गठरी को तोड़कर गोली सोनहली पर बैठा अमर फलांग मारकर क़िले के भीतर गया और वह गठरी को साविर सवूर के आगे रक्खी जिस उपाय से हकीम साहव को लायाथा सब बयान किया साविर सवूर ने अमर की बुद्धि की बहुत प्रशंसा की अमर ने सब असवाव हकीम साहव के आसपास चुनकर चेत होने की दवा दी कि इतने में हकीम साहव की बेहोशी दूर हुई और उसी पियादे की सूरत वनकर कहा कि आपको साविर सवूर ने बुलाया है और मुझे अति कष्ट में आपके पास भेजा है हकीम अक़लीमून मुँह सिकोड़कर बोला कि यहां कोई है इस दीवाने को बाँधकर मेरे पास लाओ कि मैं फ़स्द खोल दूं बेफ़ायदा दिमाग़ खारहाहै इसका इलाज करूं अमर ने कहा कि कृपानिधान ! मैं विक्षिप्त नहींहूं कि नश्तर दीजियेगा मैं दीवाना अपने कार्यका होशियारहूं क्यों दवा कीजियेगा हकीम साहव बोले कि सिड़ी के शिरपर क्या सींग लगेहोते हैं ? जो तेरे नहीं हैं तेरे क्या सुरख़ावका पर लगा है लाखवार कहा कि मैं नहीं जाऊंगा तू अपनी रटेजाताहै जब कोई न बोला हकीम साहव देखकर खुस होगये भवचक्का होकर इधर उधर देखनेलगे कि सभी असवाव मेरे मतलब का मेरे पास धरा है परन्तु मेरा मकान नहीं है उस स्थान और आदमियों का कुछ चिह्न नहीं है इतने में साविर सवूर ने आकर मुलाक़ात की हकीम साहव को शिष्टाचार आदरपूर्वक किया हकीम साहव अक़लीमून ने पूछा कि मैं असवाव समेत यहां क्योंकर आया अमर बोला कि मर्ज़ नहीं है जो वे कहे हुए जानलीजियेगा किसी विक्षिप्त की अपनीही हड्डी से फ़स्द खोलदीजियेगा यह पियादा लाया है इतनी दूर चलकर यहां पहुँचाया है अक़लीमून को जव मालूम हुआ कि अमर है उठकर गले से लगालिया कि ख़्वाजे जो मैं जानता कि तुम हो तो मैं वेतक़रार चलाआता और कभी इनकार न करता अमर बोला कि अब भी आपके उपकार का बोझा मेरे ऊपर बहुतहै कि आपने मुझे देडाला परन्तु शीघ्र कोई ऐसा उपाय कीजिये कि अमीर के शरीरसे विष दूर होजाय और इनको आराम होजाय हकीम अक़लीमून देखकर अफ़सोस करनेलगे और कहा कि इसका इलाज नौशेरवां के सिवाय दूसरी जगह कहीं धरतीपर नहींहै अमर ने कहा कि हजरत यह ऐसी वस्तु क्याहै कि जो संसार में दूसरे स्थान में नहीं है अक़लीमून ने कहा कि शाहमोहरा उस दवाका नाम है कयानियों के पीढ़ी दरपीढ़ी चलाआया है उसके बिना अमीर को आराम न होगी विष नस २ में व्यापगया है अमर ने कहा कि कृपानिधान ! यह वही मसल है कि जबतक इराक़से जहरमोहरा लायाजायगा तबतक सांप का काटा

मरजायगा इस आने और जानेतक हमज़ा काहेको बचेगा उस समय तक इसका दम अच्छा काहेको रहेगा अक़्लीमून ने कहा कि अब तो अमीरका अच्छा होना कठिन है बहुत बड़ी बीमारी है अमर रोतापीटता शिरपर धूल उड़ाता क़िलेके दरवाज़े पर आया वहां मुक़बिल खड़ाहुआथा कहा कि ख़्वाजे कहो हकीम ने क्या इलाज ठीक की ? अमर ने कहा कि क्या कहूं कि इस श्रमसे तो हकीम को लाया और उस कमबख़्त को यहांतक पहुँचाया अब वह कहता है कि इसका इलाज शाहमोहरा के सिवाय संसार में नहीं है अब शाहमोहरा नौशेरवां के यहां के सिवाय और अत्तारख़ानों में कहीं नहीं निकलेगा और पृथ्वीपर उसका पता न लगेगा मुक़बिल सुनकर चुपहोरहा अमर दोचार क़दम आगेबढ़ा मुक़बिल ने पीछेसे पुकारके कहा कि ख़्वाजे जो मदायन जाओ तो नौशेरवां के फाटकपर एक बुढ़िया रहती है उससे मेरा सलाम कहदेना अमर ने खिसिया कर पलटके एक सोंटा मुक़बिल के शिरपर इस वज़से मारा कि मुक़बिल खून में भीग गया चक्कर खाकर धरती पर गिर पड़ा उस समय मुक़बिल छोटे बोल से कहने लगा कि ख़्वाजे ख़फ़ा क्यों होतेहो शाहमोहरा यहीं मिलजायगा तब तो और भी अप्रसन्न होकर मुक़बिल को गाली देनेलगा कि तुझे मेरा रास्ता खोटा करने में क्या मिलेगा ? मुक़बिल ने कहा कि ख़्वाजे हमज़ा के शिर की क़सम है शाहमोहरा इसी स्थान में है मुझसे लीजिये कोई दम में हाथ आवेगा बुज़ुरुचमेहर ने मेरे सामने अमीर की जांघ में रखकर टांके लगा दिये हैं और उसका लाभ भी बता दिया है अमर ने मुक़बिल को छाती में लगा लिया और हमज़ा के पास पहुँचा अक़्लीमून ने कहा कि ख़्वाजे अभी यहीं हो मैं जानता था कि मदायन पहुँचे होगे शाहमोहरा कहीं से ढूंढ़े लाते होगे अमर बोला कि हज़रत मैं गया भी और पता लगाकर ले भी आया अक़्लीमून ने कहा कि तुम से कुछ दूर नहीं है लाओ जो लाये हो तो दो अमर ने कहा कि अमीर की जांघ में है अक़्लीमून ने अमीर के शरीर को देखा तो सचमुच नीलकांच के समान होगया है परन्तु जिस स्थानपर शाहमोहरा है उतने शरीर का साधारण रङ्ग बना है विष कुछ अभी नहीं बेधा है अक़्लीमून ने कहा यद्यपि अमीर का रङ्ग नीला है परन्तु शाहमोहरा जो अमीर की जांघ में न होता तो अबतक अमीर मरगये होते फिर कई सौ मन दूध मँगा के रक्खा और छूरा से अमीर की जांघ चीरकर शाहमोहरा निकाला और रेशम में बांधकर अमीर के कण्ठ से पेटमें उतारा और कुछ काल के पीछे उसे निकालकर दूधके कड़ाह में डाला उसीमें उसको खूब गोतादिया दूधका रङ्ग हरा जङ्गाल के समान होगया दूध का रङ्ग बदलने लगा उसी भांति से मोहरा को अमीर के पेट में पांच २ छः मिनट रखकर कईबार दूध में डाला जब दूध ने रङ्ग न बदला और रङ्गत बदन की बदलचली और अमीर को छींक आई अक़्लीमून थोड़ी चादरें कतांकी अमीर को ओढ़ाई और होश में लानेका उपाय किया और लोगोंसे कहा कि ख़बरदार कोई मनुष्य अमीर के सामने ज़हर खाने का हाल बयान न करे भूलेसे

भी इस हाल का नाम न लेवे दोघड़ी के पीछे इतना पसीना अमीर के शरीर से निकला कि सब बिछौना डूबगया दूसरे दिन जब अमीर को कुछ होश आया खाना मांगा अक्लीमून ने तीतर का शुरुआ अमीर को पिलाया जब अच्छी भांति चेत हुआ और अमीर तकिया लगाकर बैठा पूछा कि लन्धौर बादशाह कहां है ? और सभा का औरही सामान है अमर ने झटपट लन्धौर को चेताके अमीर के पास पहुँचाया और राहके मध्य का सकल वृत्तान्त बयान करके तमाम समाचार कह सुनाया कि आप के फिरजाने के डरसे मुझसे यह अपराध हुआ है अमीर से इसका ज़िकर न कीजियेगा अब तो जो कुछ होनाथा सो होचुका जिस समय लन्धौर और बड़े २ सरदार अमीर के पास स्थितहुए प्रत्येक ने अमीर के ऊपर से बहुत कुछ न्यवछावर किया सब फ़क़ीरों को माल से भर दिया अमीर ने हकीम अक्लीमून को देखकर कहा कि यह कौनहै और कहां से आया है ? या किसी के पासजाता है या सौदागर है जो माल बेचने के हेतु लाया है आदी के मुँह से बेसम्हार निकलगया वह जो लौड़ियां शीशे शराब अंगूरीके लाई थीं वह आपका जानलेने को बिष हलाहल भर के लाईथीं गुस्तहम की भेजी हुई थीं आपने जो एक शीशा शराब का पिया उसमें बिष मिलाहुआ था तमाम बदन में बेध गया था साबिर व सबूर आपको जो शहपाल के बेटे हैं अपने क़िले में उठालाये और आपकी अत्यन्त निगहबानी करते रहे और हमलोगों से अतिकृपादृष्टि से पेश आये और अमर को भेजकर नार्वेनद्वीप से हकीम को बुलवाया जिससे हुजूर का इलाज हुआ ईश्वरने आपको इस कराल बिष से बचाया और गुस्तहम क़िलेको घेरे पड़ाहै और बराबर लड़रहा है यह बात सुनतेही लन्धौर के तलुओं से आग लगी शिर में जाबुझी बोला कि अभी उस दुष्ट को रसातल में भेजताहूं अभी तो मैं उसका बधिक जीता बैठा हूं उस खल को थोड़ी ही बात में तो दफ़ा करता हूं अमीर ने मना किया कहा कि आप धीरज धरिये मैं समझ लूंगा इसमें खबर पहुँची कि शहपाल भी उसका सहायक है क़िलेपर चढ़ने का मनोरथ किया था साबिर नामी उसके बड़े लड़के ने मारकर स्वर्ग को भेज दिया गुस्तहम ने यह हाल सुनकर क़िलेपर धावा करने की आज्ञा दी है और आपने भी मनोरथ किया है थोड़ी देर में ख़ंदक उतरके क़िले पर आयाचाहता है अमीर ने अमर से कहा कि तुम जाओ और गुस्तहम को मेरी ओरसे कह दो कि मैं नौशेरवां के कारण तरह देताहूं अभीतक चुपचाप बैठाहूं परन्तु तेरे हृदय में यह बात नहीं आती है अपनी दुष्टता को छोड़ता नहीं उसपर झगड़ा फ़िसाद कररहा है जा यहां से अपना मुँह काला कर नहीं तो अपना किया पावेगा अमर ने अमीर का सँदेशा गुस्तहम से जाकर कहा उस दुष्ट ने हँसकर उत्तर दिया कि ओ सर्वानवच्चे ! तू से मक्कर करताहै हमज़ा को मरेहुए बहुत दिनहुए और हमज़ा का चिह्न भी नहीं रहाहै मृतकों को जिलाता है जिसकी ओर से संदेशा लाया है अमर ने लाकर कहा कि ओ दुष्ट ! तू साहबकिरांके निमित्त ऐसी बातें मुख से कहताहै

के दिन तेरे निकट आये हैं जो ऐसी बातें सटांय पटांय की उड़ारहाहै क्या करूं ? अमीरका हुक्म नहीं है नहीं तो गोफन से तेरे दांत तोड़कर तेरी हलक़ में डालदिये होते बढ़ २ के जो बातें करताहै और दावा कररहाहै सब हौसले तेरे निकाल दिये होते गुस्तहम बोला कि अच्छा हमज़ा जो जीताहै तो जाकर पूछआ कि मेरे किस भेद से आगाह है अमर जो तू यह उत्तर सही लाया तो भला नहीं तो तू ये बातें मुझसे करताहै कि उसका खैरख्वाह है अमर अमीर के समीप आया और जो गुस्तहम ने कहाथा सम्पूर्ण कह सुनाया और कहा कि ऐ साहबकिरां ! आश्चर्य होता है कि तुम गुस्तहम ऐसे दुष्ट से कि जिसने तुम्हारे मारडालने में उपाय न छोड़ाथा उसके भेदको अभीतक आप छिपाये हैं और उस खल से जिसके पानी व मिट्टी में खमीर है भूलेहुए हो पहले उपाधि बहरामके शिर पर से टरी और अब बिष दिलवाया ईश्वर बुजुरुचमेहर का भला करे कि उसने शाहिमोहरा जांघ में रखदिया था नहीं तो जीनेकी कौन सूरत थी अमीर ने उसके पाद मारने का हाल कहकर अमर से कहा कि बस यही उसका भेद है तू जाकर उसे जतादे वह क्या करता है और उसे मंजूर क्या है ? अमर ने गुस्तहम से आकर कहा कि अमीर ने कहाहै कि ओ गूही ! भेंटके समय तूने तीन बार पाद मारा था जब हथियार लगेगा तब हग २ देगा गुस्तहम ने इस भेद के सुनतेही जाना कि हमज़ा अभी जिन्दा हैं देखिये अब क्या आफ़त आवे यहांसे चला जानाही उचित है उसी समय सिन्ध नदी की ओर भागा और वहां जाकर उस दुष्ट ने बड़ा फ़िसाद मचाया दो मृतकों के शिर मँगाकर नौशेरवां के पास भेजे और अपना बसीठी उन शिरों के साथ भेजा और बिनय पत्र में यह लिखा कि लन्धौर ने मैदान में हमज़ा को मारा और मैंने आपके प्रताप से लन्धौर को मारडाला और उन दोनों के शिर आपके समीप भेजता हूं बड़ी २ लड़ाई बीच में हुई हैं और एकपत्र बख्तक को ब्योरासमेत लिखा और उसमें यह दर्जकिया कि मैंने बादशाह के बिनयपत्र में झूंठ इस निमित्त लिखाहै कि नौशेरवां मेहरनिगार की शादी किसीसे कर देवे और वह मृगनयनी अमीर के हाथ न लगे और नहीं तो सत्य यह है कि हमज़ा ने लन्धौर को जीतलिया और लन्धौर तन मन से उसका आधीन हुआ और अमीर के सामने गर्दन अपनी झुकादी मुझ से सिवाय हमज़ा को बिष देने के कुछ न बनपड़ी और कोई उपाय न होसका सो हमज़ा बड़ा कड़ा जीव का निकला कि बिष से भी उसका कुछ न बिगड़ा मैं लाचार होकर वहां से भाग कर सिन्ध में आया अपनी जान वहां से बचा लाया इस कारण से बारंबार लिखता हूं कि बादशाह को बहकाकर मेहरनिगार का विवाह किसी से करादेना और इस सलाह में और लोगों को भी मिला लेना कि जिससे हमज़ा सुनकर मरजाय शत्रुके मारने का डर है किसी भांति से जान गँवाये जिस समय वह बिनयपत्र और शिर नौशेरवां के पास पहुँचे और देखकर नेत्रों में जल भरके बुजुरुचमेहर से कहा कि अफ़सोस हमज़ाकी जवानी में जानता

हूं कि हजार वर्ष आसमान घूमेगा तो भी ऐसा स्वरूपवान् उत्पन्न करके न दिखा-येगा बुजुरुचमेहर ने कहा कि मैं कुछ कह नहीं सक्ता अन्दाज़ से तो हमज़ा अच्छा जान पड़ताहै परन्तु उसके शरीर को कष्ट हुआ है आगे ईश्वर जाने ॥

विजयप्राप्त करनेके पीछे मदायन की ओर लन्धौर समेत बड़े सजधज से अमीर का चलना ॥

सजधज से अब अमीर के मार्ग का समाचार बर्णन है कि अमीर को जब कुछ बल हुआ तब माशूक़ा की याद कर गह्वरगति होजाती भई और तबियत अति घबराती भई लन्धौर से कहा कि अब जी चाहताहै कि मदायन को चलें बादशाह ने कहा कि जैसी आपकी मर्ज़ी हो बहुतदिन राह चलते बीते बादशाह के मिलने का मनोरथ हो बिसमिल्लः मनोरथ चलनेका कीजिये पर हिन्दुस्तान में सिक्का अपना जारी करके किसीको अपना युवराज अपनी ओरसे छोड़े जाइये अमीर ने कहा कि ऐ बादशाह ! तुम्हारा देश तुमको फले मैं केवल तुम्हारे स्नेह का भूखाहूं बादशाह ने जयपुर में अपने भाई चचाज़ाद को अपना नायब किया और आप सिपाह स-मेत साहबकिरां के साथ हुआ आदी ख़ीमा लेकर पहले एक दिन आगे गया था उसने एक रमणीक स्थान देखकर नदी के किनारे तम्बू गाड़दिये अमीर भी सेना और लन्धौर समेत धूमधाम से चले और तम्बू में पहुंचे प्रातःकाल वहां से कूच किया और इसी भांति से प्रति दिन कूच मुक़ाम करते चले जाते थे यद्यपि अमीर के शरीर में केवल हाड़ व खालके कुछ न रहाथा परन्तु मेहरनिगार के नेहबश मं-ज़िलों मार्ग लपेटते चलेजाते थे अब बख़्तक का हाल सुनिये कि गुस्तहम का पत्र पढ़के उपाय करने में प्रवृत्त हुआ उसके मन में आया कि ख्वाजेज़ादा जौपीन मुर्जवांके बंश जो कैकाऊस का है इसके कुटुम्ब में है मेहरनिगार के ब्याह के हेतु उभारा चाहिये और किसी भांति बेग उसे बुलवाना चाहिये झटपट एक पत्र इस मज़मून का औलाद मुर्जवांके पुत्रके नाम लिखा कि मलिका मेहरनिगार सप्तदेश के बादशाह की पुत्री अब युवा हुई हमज़ा नामी अरबवाले ने उसकी इच्छा की थी बादशाह ने दूसरी क़ौम जानकर उसके साथ अङ्गीकार न किया और उसको हिन्दु-स्तान में लन्धौर के साथ लड़नेको भेज़दिया और वह सुनते हैं कि लन्धौर के हाथ से मारागया सो मेरी इच्छा आपकी भलाई के हेतु है कि आप बहुत जल्द जिस भांति होसके यहां का मनोरथ करें और अति शीघ्र अपने आपको मदायन में पहुँ-चाइये मैं उपाय करके आपका ब्याह उसके साथ करादूं और नौशेरवां का पुत्र अ[illegible] बनादूं औलादमुर्जवां का पुत्र पत्र को देखकर अति आनन्दित होगया तीस [illegible]कलम [illegible]वार लेकर जाबुल से चला थोड़े दिनके पीछे मदायन में पहुँचा बख़्तक ने [illegible]पहाड़ [illegible]कर उसका प्रबन्ध करना आरम्भ किया गोशे में बादशाह से प्रार्थना की बल [illegible]आदमुर्जवां का पुत्र कैकाऊसी आपके मिलने के हेतु जाबुल से आया है पर मु[illegible] उसकी अवश्य चाहिये कि वह भी एक बड़े मनुष्य के घरानेका है थोड़े अच्छा को आज्ञा दी कि अगवानी करके तिलशाद कामपर उसे उतारें और उस

की पहुनई में आरूढ़ रहे बादशाह की आज्ञानुसार उसकी प्रतिष्ठा कीगई दूसरे दिन बख़्तक ने उसकी नौकरी करवाई और खिलअत दिलवाई कई दिनके पीछे अपना समय पाके बादशाह से अलग प्रार्थना की कि हमज़ा तो मारागया मलिका मेहरनिगार के ब्याहका उपाय अवश्य करनाचाहिये क्योंकि अब अवस्था बड़ी कठिनता की आई और होशियार होचुकी है और गुस्तहम के साथ जो हुजूरने ठीक किया था सो वह बूढ़ा है और उमर से उतरगया है और विदित है कि जवान अवस्था की स्त्री का बैठना बूढ़े मर्द की गोद में बहुत अनुचित है किसी ऐसे युवा और प्रतिष्ठितपुरुष और अच्छेघराने का हो उसके साथ ब्याह करदेना उचित है और इस भले काम में जितनी शीघ्रता हो करदेनाचाहिये क्योंकि समय बेढब है नौशेरवां ने कहा कि तुम्हीं किसीको पसन्द करो इस काम की कोई सूरत निकालो बख़्तक ने प्रार्थना की कि मेरे समीप औलाद मुजवां से कि कैकाऊसी है और सूरत और लियाक़त भी अच्छी मालूम होती है और तो इस से अच्छा कोई नहीं जानपड़ता है फिर आपकी जैसी सलाह हो और मलिकासाहवा की मर्ज़ी वह सब से अच्छीबात है बादशाह ने यह बात पसन्द की और मलिका मेहरअंगेज़ को इस समाचार से प्रकाशित किया जो कि उसदिन तक अमीर का मरना बादशाह के घरमें किसी को मालूम न था मलिका मेहरअंगेज़ को यह वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ सब पर कड़ाई की कि कोई अमीर के मरने का समाचार मेहरनिगार को न बतावे और उसके सामने इसकी ज़िकर किसी भांति से न कीजावे परन्तु उसे खबर पहुँचादी मेहरनिगार ने अपने को ऐसा दुखित किया कि देखनेवाले हैरान होगये उसका यह हाल देखकर सब मुरझागये मलिका मेहरअंगेज़ ने आकर बहुत समझाया परन्तु उसने कुछ न माना मलिका मेहरअंगेज़ लाचारहुई बादशाहको खबर दी नौशेरवां ने बुज़ुरुचमेहर से कहा कि तुम जाओ मेहरनिगार को समझाकर औलाद मुजवां के बेटे के साथ ब्याह करनेपर राज़ी करो बुज़ुरुचमेहर महल में गये और मलिका मेहरनिगार को इलाहदा करके कहनेलगे कि मलिका अमीर की सब भांति से कुशल है और ईश्वर की कृपा से अच्छी भांति है यह लोगों ने झूठमूठ उड़ाके उसके बैरियों के निस्बत जो खबर उड़ाई है निहायत झूठ है केवल इस मनोरथ से कि अमीर का गुज़र इस राजधानी में न होने पावे यह उपाय किया है हां अमीर को गुस्तहम ने ज़हर दिलवाया था उससे तकलीफ़ बहुत पाई आप देख लीजियेगा आजके चालीसवें दिन अमीर से और आप से बखूबी [illegible] त होगी मेरेनिकट मुनासिब है कि नामचार औलाद मुजवां के पुत्र को [illegible] जिये परन्तु यह बात ठहरालीजिये कि औलाद चालीसदिन जिसमें अ[illegible] न आये और परदेके निकट तबतक पांव न धरे मेहरनिगार ने बुज़ु[illegible] कहने से अङ्गीकार किया बुज़ुरुचमेहर ने बादशाह को शुभपूर्वक बात मेहरनिगार का सँदेशा दिया नौशेरवां ने दरबार के बीच जामातृताका

देकर कहा कि चालीस दिवस के पीछे ब्याह किया जावेगा बख़्तक ने मुर्जवां के पुत्र से कहा कि यह मोहलत बुरी है और उसके आने का भी हाल सुनागया है क्योंकर कि हमज़ा जीता है जो इतने में आजायेगा तो सब उपाय नष्ट होजायगा आप एक काम करें कि कल उठने के समय बादशाह से प्रार्थना कीजिये कि सेवक की यह इच्छा है कि यह ब्याह जाबुल में जाकर करें वहाँ पहुँचते २ चालीस दिन भी बीत जायँगे और मेरे कुटुम्ब परिवार के लोग भी सब जमा होंगे और इस ब्याहसे आनन्द प्राप्त करेंगे और मैंभी आपकी बात पर पुष्टक देदूंगा और बादशाह को राज़ी करदूंगा औलाद इस बात से अति प्रसन्न हुआ खुशी के मारे चेहरा का रङ्ग लाल पड़ गया और मुलाक़ात के समय नौशेरवां से कहा और बख़्तक ने भी उसकी बात की सहायता की और अपनी ओरसे भी पुष्टक दी बादशाह ने अङ्गीकार किया और दाइज आदि देनेका प्रबन्ध किया बख़्तक से कहा कि मेहरनिगार की बिदा का प्रबन्ध तुम्हारे अधीन है इस काम से निपटके बेग बिदा करना अच्छाहै बख़्तक ने एकके स्थान सौ ख़र्च करके कई दिनमें मार्ग आदि का सामान तैयार करदिया बादशाह ने मेहरनिगार को बड़ी धूम धाम से बिदा किया और मंज़िलतक मलिका मेहरअंगेज़ समेत गये और आपभी अधिकारियों समेत साथ चले औलाद मलिका को लिये कूच करता हुआ मंज़िलों प्रसन्न चला जाता था किन्तु तम्बू मलिका के हुक्म से तीन कोस पर खड़ा किया जाताथा बारह सहस्र टहलुये, हब्शी व तुरकी मलिका के तम्बू के आसपास रहतेथे पक्षियों को यह शक्ति न थी कि उड़कर मलिका के तम्बू में जासकें जिस समय उन्तालीस दिन ब्यतीत हुए वह समझी कि मिलाप के दिन शिरपर पहुँचे औलादने एक पहाड़ अतिरमणीक पर कि बायु वहां की चित्त को प्रसन्न करती थी वहांपर तम्बू खड़े करने को आयसु दिया और कहा कि कल्ह हमारा यहां मुक़ाम है मलिका का वादा पूरा होगा इसी मुक़ाम पर ब्याहका मङ्गला चार करूंगा मेहरनिगार अपने मन में ठाने हुए थी कि जिस समय औलाद तम्बू में पांव रक्खै उसीसमय अपनी तीव्रता देखावें अपने को मारडालें ॥

पकड़ाजाना औलाद मुर्जवां के पुत्र का और जाना बंधुवा होकर अमीर की आज्ञा से प्रतिष्ठा रहित होकर नौशेरवां के समीप ॥

चौपाई। लागत देर क्षणक नहिं वोही। करत सकल विधि सुख बहु जोही ॥
आश त्यागि आशक्त जनि देई। सेवा मन लगाइ करि लेई ॥

ईश्वर की रचना का तमाशा देखना है बिपिन में नया फूल खिला बुलबुलरूपी क़लम यों चहकता है ईश्वर की कृपा से साहबकिरां भी वहां [illegible]
पहाड़ के ऊपर तम्बू गड़वा दिया और कहा कि यहां की बायु ले[illegible]
बल प्राप्त होताहै और यहां के पास करने से मन भटकता है एक[illegible]
पर मुक़ाम रहे और इसी ठौर कुछ दिन डेरा रहे सबोंने अङ्गीका[illegible]
अच्छा है जो हुक्म आपका हकीम अकलीमून ने अमर से कहा[illegible]

स्थान है कि तुम शिकार का सामान लेजाओ और एक हिरन का तुम शिकार कर लाओ उसके क़बाब की बास अमीर को सुँघाओ ईश्वर के अक़बाल से हमेशः अमीर को बल होगा पीछे उसके हम तुम साथ खावें अमरको आज्ञा होतेही कमन्द गोफन लेकर वहां से चला चराई के स्थान एक सुन्दर हिरन देखकर चौकड़ियों भागने लगा हिरनों ने करवटियां बदल कर चराई के स्थान से भागकर जङ्गल की राहली अमर भी एक हिरन के साथ फ़लांगें मारता हुआ उसके समीप पहुँचकर पहाड़ के निकट बांध हलका कमन्द का इस चालाकी से हिरन के सींगोंपर मारा कि वह कमन्द में फँसकर अपनी चौकड़ी भूलगया अमर ने उसके चारों पांव बांध कर एक पत्थर के तले राह से अलग दबादिया और आप पहाड़ के देखनेको जा बैठा देखे तो एक तम्बू ऊपर जो तना है उसकी शोभा बादशाही तम्बू के समान झलक रहीहै और दो आदमी सोने चांदी की चिलमें और आफ़ताबा लिये खड़े हैं किसीके हुक्म को देखते हैं अमर एक हाथ को झुलाता और पांवों से लँगड़ाता उनके पास जाकर खड़ा हुआ और अतिदीनता से उनसे पूछने लगा कि क्यों भाई। यह डेरा किसका है? आप कौन हैं? और आप के सिपुर्द कौन काम है? वह बोले कि यही डेरा मालिका मेहरनिगार काहै हम उसके सेवक हैं उसकी अधीनता और आज्ञा करलाने का हमारा काम है पहले हमज़ानामी एक मनुष्य अरबवासी से मलिका का व्याह ठीक हुआ था सो वह लन्धौर के हाथ से मारा गया उसका मनोरथ पूर्ण न होने पाया कि वह बिचारा मरगया यद्यपि मलिकाने अपने को अति दुःखित किया और बादशाह भी सशोक है परन्तु मौत से किसीका कुछ बल नहीं चलता वख़्तक दुष्ट ने बादशाह को समझा बुझा के मलिका को औलाद मुर्जवां के पुत्र कैकाउसीको दिलवाय दिया है और वह व्याह करने के हेतु अपने साथ जाबुल को मलिका को लिये जाता है मलिका साहबा ने बुजुरुचमेहर से सुना था कि आज के चालीसवें दिन तुम साहबक़िरां को मार्ग में पाओगी उससे मिलाप करके आनन्द उठाओगी इस निमित्त से चालीस दिवस का क़ौल क़रार कर लिया था कि जबतक दिन न बीतिलेवें तबतक वह तम्बू में न आने पायेगा सो आज चालीसवां दिन है जो शामतक साहबक़िरां यहीं पहुँचे तो मलिका जीवेगी नहीं जिस समय रात को औलाद तम्बू के निकटतक पहुँचेगा मलिका बिषकी पुड़ियां फांकजायगी जो हाथमें लिये बैठी है अफ़्सोस मलिका का है कि उसने अभी कुछ नहीं देखा है नाहक़ में जान देतीहै अमरने कहा कि बाबा! ईश्वर का स्मरणकरो आश्चर्य क्याहै? जो साहबक़िरां आजही आपहुँचें सब भांति ईश्वर मलिका का मनोरथ पूर्ण करे फ़क़ीरका तुमसे इतना सवाल है कि मेरा एक हाथ और एक पांव सुन्नहोकर रहगया है बैद्यने बताया था कि जो सोने रूपे की चिलमची और आफ़ताबासे हाथ पांव धोवेगा तो तेरा हाथ पांव अच्छा होजावेगा मुझको तो कहां प्राप्त होता कि यह सेवक करता परन्तु जानपड़ा कि कुछ दिन अभी जीने के शेष हैं जो तुम ऐसे साहब मनुष्यों के

हाथ में चिलमची और आफ़ताबा देखपड़ा अपने जीनेका कुछ सहारा हुआ थोड़ी देर के निमित्त जो कृपा कीजिये तो आपके सामने इस नदीसे पानी भरके हाथ पांव धोलूं नहीं तो फिर कहां ऐसा अवसर मिलेगा कौन ऐसी बहुमौल्य की वस्तु मुझे देगा उन दोनों मनुष्यों ने तर्स खाकर सलाह की कि एक फ़क़ीर का काम निकलता है और हमारा इसमें घाटा क्या है? कहीं इसे लेकर लेनासे भाग नहीं सक्ता अभी हमको लौटा देगा यह सोचकर चिलमची और आफ़ताबा अमर को देदिया अमर ने सलाम करके लेलिया और नहरसे पानी भरके हाथ पांव धोये और उनको अपने पास रक्खा उनलोगों ने कहा कि लाओ भाई! अब तुम्हारा काम निकलगया अब चिलमची आफ़ताबा हमको देदो अमर एक फ़लांग मारकर वहांसे बोला कि मैं ऐसा निर्बुद्धी नहीं हूं कि लेकर उलट पलट करूं और अपनी दवा तुमको देदूं हमने मान लिया कि जो मैं इस समय अच्छा हुआ और इस बीमारी ने फिर मेरे ऊपर आकर क्लेश दिया तो मैं तुमको कहां पाऊंगा और यह चिलमची आफ़ताबा किससे मांगता फिरूंगा यह कहकर औलाद के तम्बूकी ओर भागा उन दोनों ने पीछा किया अमर भला उनको कहां मिलताथा हवा होगया कहीं का कहीं पहुँचा औलाद के तम्बू में जा घुसा छलकी चादर विछाकर पण्डितकी सूरत बनकर पांसा लेकर बैठा उन दोनों मनुष्यों ने उसके आस पास भीड़ देखकर अपने मनमें कहा कि इससे पण्डिताव का पांसा फेंकवाइये इसका ज्योतिष देखिये और चोर का ठिकाना लगवाइये पास जाकर खड़ेहुए और उसका हाल देखनेलगे कि जो कोई उससे पूछता है वह उसके मन का भेद वर्णन करता है यह बड़ी आश्चर्य की बात करता है यह भी जाकर बैठगये अपना समाचार उससे पूछनेलगे उसने कहा कि तुम्हारे कोई बरतन जाते रहे हैं और वह दोनों चांदी सोनेके हैं यह बात सुनकर अत्यन्त उसका विश्वास माना और आपस में सलाह करनेलगे तिसके पीछे एक तो अमरके पास बैठा रहा और दूसरे ने मलिका के पास जाकर प्रार्थना कर भेजी कि सेवक कुछ प्रार्थना किया चाहता है और बहुत अवश्य काम है मलिका तो रातकी राह तकरही थी कि जब शाम हो मैं बिष हलाहल खाऊं इस ज़िन्दगी से छुट्टी पाऊं गुलाम की यह बात सुनकर शीघ्र उठ खड़ीहुई कि कदाचित् कोई ख़ुशी की बात सुनावे उस प्यारे का समाचार बतावे पर्देसे लगकर पूछा कि क्या कहता है? कोई ख़बर अच्छी लाया है उसने प्रथम हाल चिलमची और आफ़ताबे का वर्णन किया उसके पीछे पण्डित का हाल बताया मलिका अत्यन्त बुद्धिमान् थी मनमें सोची कि इतनी शक्ति सिवाय अमर के किसीने नहीं पाई है कि मेरे डेरे के निकट इस चालाकी से वस्तु लेकर चलता होजाय और सहस्त्रों मनुष्यों की आंखमें धूल झोंककर चलदे और आश्चर्य नहीं है कि वहां पण्डित की भी सूरत बनाहो यह भी तमाशा किया शीघ्र आदमी पर आदमी भेजकर अमर को बुलवाया और एक किनारे में चिलमन के निकट उसे बैठाला और कहा कि ऐ पण्डित! मेरे मनका भी तो कुछ हाल कहो अमर ने कहा

कि साहब मैं विना मुँह देखे कभी नहीं किसीका भी हाल कहताहूं और पर्देसे किसी का हाल कहना मैंने नहीं सीखा है मलिका ने विचार किया कि आखिर आज मरना है यह बूढ़ा मनुष्य मुझे देखेगा तो क्या होगा? किसपर मेरा भेद विदित होगा पर्दा उठादिया और अपनी सूरत दिखादी अमर ने पांसे मेहरनिगार के हाथ में देकर कहा कि आप पांसों को हाथ में लें और उन शकलों पर फेंकें मैं शकलों का हाल देखकर आपका मनोरथ कहदूंगा और विचारके हाल वतादूंगा मलिका ने जो पांसे के चिह्न देखे तो पण्डित के पांसे न पाये औरही कुछ वाही तवाही पांसे दृष्टि पड़े क्योंकि मलिका तो इस गुणमें बुजुरुचमेहर की चेली थी किन्तु श्वास साधे रही कि देखें क्या करता है इसकी आज्ञा कैसी है पांसों को जो फेंका अमर ने सव आदि से नेह वताना आरम्भ किया और कहा कि आज आपको हमज़ा की ख़बर मिलेगी ख़ुशी का समाचार सुनाई देगा मेहरनिगार ने अपनी वुद्धि से जाना कि यह अमर है यह वही छली रङ्ग कररहा है हाथ वढ़ाकर उसकी वनीहुई दाढ़ी को जो ऐंचा तो दाढ़ी अलग होगई अमर की सूरत दिखाई दी मलिका अधीर हो-कर गले से लिपटगई धाड़ें मारकर रोनेलगी और पूछनेलगी कि सच कह अमीर मेरा जीवनाधार कहां है? अमर ने कहा कि अमीर आज सवेरे से इसी पहाड़ के तले तम्बू गाड़ेहुए हैं ईश्वर की कृपा से अच्छे हैं परन्तु आपके शोक में ग्रसित हैं ऐसा सुनकर मलिका तो मनो फूले नहीं समाई चाहती थी कि अमीर का हाल पूछे और अपनी वीती कहे कि इतने में आदमी पर आदमी डेउढ़ी पर पहुँचे कि पण्डित को व्याह की सायत देखने के हेतु औलाद ने वोलाया है सव सामग्री व्याह की इकट्ठा है केवल इसी पण्डित का मार्ग तकरहा है अमर ने कहा कि अव आप वेफ़िक्र रहें चैनसे वैठें देखिये तो इस व्याह के वदले कैसा औलाद को दुःखित करता हूं उन ज़ातिउजागर के साथ क्या २ करता हूं? यह कहकर विदा हुआ मलिका ने ख़िल-अत विदा की दी और वहुत से रुपये कृपा किये अमर वहांसे लेकर चला और औ-लाद के पास पहुँचा देखा कि एक अग्निका पुञ्ज सजा सजाया जवाहिरकी चौकीपर वैठा है और व्याहकी सामग्री उसके आस पास धरी है औलाद ने पहले पूछा कि म-लिका ने तुझे क्यों वुलाया था वह वोला कि एक मृतक की ज़िन्दगी पूछती थीं और वहुत अफ़्सोस उसका करती थीं मैंने कहदिया कि वह मरगया और आपको औलाद मुज़ेवां से वहुत फल मिलेगा पहले तो राज़ी न थीं परन्तु मेरे कहने सुननेसे राज़ी हुई हैं यह वात सुनतेही औलाद वहुत कृतकृत्य हुआ और मङ्गलाचार होनेलगे अमर को भारी मोल की ख़िलअत देकर पूछने लगा कि व्याह कव करूं? उस चन्द्र-वदनी से कव मिलाप करूं? अमर ने कहा कि जितनी शीघ्रता इसमें होसके कीजिये औलाद इस वात से और भी ख़ुश हुआ एक थैली मोहरों की और अमर को दी अमर उसको लेकर अशीस देनेलगा और कहनेलगा कि सेवक के चार लड़के हैं एकतो गदा अच्छी चलाना जानता है इस कर्तव में दूसरे को नहीं समझता है

और दूसरे ने पटेबाज़ी में अपना दूसरा नहीं रक्खा और तीसरे को ढोल खूब बजा आता है और चौथा सहनाई बहुत अच्छी बजाता है जो आप उनका तमाशा देखें तो बहुत प्रसन्न होवें औलाद बोला कि कल प्रातसमय तुम अपने सब कुटुम्ब को हमारे पास भेजदेना अलबत्ता यह तमाशा देखने योग्य है कि तेरा परिवार भी गुणी अपनें गुण में होगा कि तू आपभी होशियार है अमर उससे विदा हुआ और पहाड़ के तले आकर अपने साधारण भेप में होकर हिरन को हकीम अक़लीमून के पास लाया उन्होंने मारके क़बाब की बू अमीर को सुँघाई उससे शरीर अमीर का बहुत प्रसन्न हुआ और अमर सीधा राही हुआ लन्धौर के पास गया राह में मुक़-बिल से जो भेंट हुई उससे कहा कि तू आदी को लेकर लन्धौर के तम्बू में वेग आ बादशाह लन्धौर ने पूछा कि ख्वाजे किधर आये क्यों इतना घबराये हो बोला कि आपही के पास आयाहूं कुछ हाल अपना कहूंगा आप जानते हैं कि साहबकिरां मलिका मेहरनिगार पर जान देते हैं और उसके निमित्त यह सब कष्ट अपने शिर पर लेते हैं अफ़सोस है कि आपके होते मलिका को कोई दूसरा लेजाय और अमीर उसके नेहमें गरल खाय यह कहकर सब हाल बयान किया और कहा कि पहाड़ के तले उसका डेरा गड़ा है और वहां सामान व्याह का इकट्ठा है शामतक वारा न्यारा है लन्धौर इस वृत्तान्त को सुनतेही आगबबूला होगया गदा लेकर उठ खड़ाहुआ कि मैं अभी उसकी हड्डी पसुलियों का भी सुरमा करताहूं इसी समय उसका शिर फोड़ताहूं अबतो उसके रक्त का पियासा हूं अमर ने कहा कि ऐसा मनोरथ न की-जिये कदाचित् अमीर को नागवार हो उसको जीता पकड़ लीजिये लन्धौरने कहा फिर जो तुम्हारी सलाह हो मैं राज़ी हूं जैसा तुम्हारा मनोरथ हो वैसा करूं इतने में मुक़बिल भी आदी को लेकर आन पहुँचा अमर ने उससे सलाह की और अपना मनोरथ वर्णन किया उन्हों ने भी लन्धौर की बात मानी जब दिनहुआ सूर्य ने अपना प्रकाश फैलाया अमर ने बड़ा ढोल तो आदी के गलेमें डाला और सहनाई मुक़बिल को दी लन्धौर से कहा कि आप गदा सम्हारें और अपनी सूरत एक अच्छे छोकड़े की बनाकर पट्टा हिलाता हुआ औलाद की डेवढ़ीपर गया और औ-लाद ने सुना कि उस पण्डित के बेटे आये हैं अपने पास बुला भेजा और तमाशा करने के हेतु आज्ञा दी अमर ने ग्यारह पट्टे अपनी झोरी से निकालकर ऐसी पटे-बाज़ी की कि औलाद ने सभा सहित आश्चर्य किया और प्रशंसा करने लगे कि हमने अपनी उमर में कभी ऐसी पटेबाज़ी नहीं देखी थी और ऐसा गुरू इस गुण का देखने में नहीं आया औलाद ने बहुत कुछ इनआम भी दिया मुक़बिलने सह-नाई और आदी ने ढोल बजाकर सभा को प्रसन्न किया उनको भी इनआम दिया गया लन्धौर भी जो गदागरी करनेलगा उसकी वायु से लोग अखाड़ा और कुर्सी से धरतीपर गिरने लगे और सब ओर से एक हल्ला बस २ का होनेलगा अमर ने लन्धौर को इशारा किया कि यही समय है ईश्वर का नाम लेकर अपनी गदा की

चोट दिखाइये और इन सबको अपना बल दिखाइये लन्धौर ने हिलाते २ उस गदा को औलाद के तम्बू पर मारा औलाद दरबारियों समेत तम्बू में दबगया और सेना से युद्ध होने लगा लन्धौर गदा उठाकर ज़ोर से कहने लगा जो मनुष्य जानता हो सो जाने और जो न जानता हो वहभी जाने मैं लन्धौर हिन्दके बादशाह का पुत्र हूं उसका नाम सुनतेही बारह सहस्र सवार लन्धौर के जो गाढ़ा बांधे घात में बैठे थे तलवारें खींचकर शत्रु की सेना के शिरपर पहुँचे दश सहस्र सवार औलाद की सेना के मारेगये और पांच सहस्र घायल हुए और दश सहस्र बन्दि में फँसे और शेष पांच सहस्र जीव लेकर भागे अब आदी का चरित्र सुनिये कि युद्ध के समय विचार किया कि आज औलाद का मनोरथ ब्याह करने का था खाना अवश्य अच्छा २ बनाहोगा बावरचीखानेकी ओर चलकर खाना चाहिये यह सोच कर बावरचीखाने की ओर चला थोड़ीदूर गयाथा कि ख़ीमें के तले से एक मनुष्य को निकलते देखा ढोल उसपर रखकर उसे नीचे को दबाया तो ढोल का चमड़ा भार से फटगया और वह मनुष्य उसके भीतर समागया॥

आना अमर व मुक़बिल व आदी व लन्धौर का बाज़ीगरों के भेष में औलाद के तम्बू के निकट और तमाशासे युद्ध करना और पकड़ना औलाद का॥

अतिशीघ्र उसके मुखको कड़ा बन्द करके बावरचीखानेमें घुसा खाना तो बहुत थाही जो जो वस्तु जीमें आई निडर होकर खानेलगा हाथ अपना मुँह अपना भरने लगा अमर ने यद्यपि औलाद को तम्बू में ढूंढ़ा परन्तु उसका खोज न मिला लाशों में ढूंढ़ता हुआ बावरचीखाने की ओर जा निकला देखा कि आदी बड़े २ कौर खारहा है भांति २ के भोजन निकालकर अपने आगे रक्खा है अमर ने त्यौरी चढ़ाकर कहा कि तू हमज़ा की सेना में प्रसिद्ध पहलवान कहलाता है और युद्ध के समय लुककर एक क़िनारे पेट पालन करता है यह समय पेट भरने का नहीं है अपनी प्रतिष्ठा का भी ध्यान न रक्खा आदी ने कहा कि मैंनेभी एक आदमी पकड़ा है मेरा खाना ठीक व उचित होगया अमर ने कहा कि हम भी उसकी सूरत देखें आदी बोला कि वह ढोल के भीतर बन्द है उठकर देखले मुझे खाना खानेदे अमर ने उसकी झलक देखकर कहा कि यह एक आदमी तो लाख आदमी के बराबरहै सचमुच सबसे तूने बड़ाअच्छा काम किया कि इसे जो अधीन करके फँसाया यह कहकर प्रसन्न हो आदीसे ढोल उठवाकर लन्धौर के निकट लेगया और कहा कि ऐ बादशाह! मैंने एक बड़ा शिकार फँसाया है लन्धौर ने कहा कि वह शिकार मुझे दिखाओ ज्योंही आदीने ढोलका मुँह खोला औलाद ढोलसे निकालकर कटार लेकर लन्धौरपर दौड़ा लन्धौर ने कटार उसके हाथ से छीनकर उसको धरतीपर दे पटका अमरने कमन्दसे नख शिखसे उसे जकड़ा और यह शुभसमाचार मलिका को सुनाया मलिकाने ईश्वर का धन्यवाद करके अमरको इनआम दिया अमर वहां से अमीर के पास पहुँचा आदि से अन्ततक जो हुआ था वह अमीर को सुनाया अमीरने

अमरको गले से लगा लिया और लन्धौर से कहा कि सचमुच हमारी तुम्हारी एकही आबरू है तुम न रक्षा करो तो और कौन रक्षाकरे और ऐसे अवसरमें मित्रोंके सिवाय और कौन काम आवे और सहायक हो और साथ दे ? सुल्तान बख़्तक पश्चिमी के साथ मलिकामेहरनिगार का भेजना ठीक हुआ और औलाद को भी बेड़ी पहिनाकर भेजने का मनोरथ किया नौशेरवां जैसा उचित जानेगा वैसा करेगा और एक विनयपत्र बादशाह सप्तद्वीप को इस मज़मून का लिखा कि मैं आप की आज्ञानुसार सरन्दीप में गया और मार्ग में जैसा २ कष्ट पाया उसका बर्णन नहीं होसक्ता और मैंने लन्धौर को जीत लिया और ईश्वर ने सब भांति से प्रतिष्ठा रक्खी और उसको मैं अपने साथ लिये आता हूं आपके पास शीघ्र उसे पहुँचाता हूं और इस समय में मेरे मरने का समाचार शत्रुओं ने आपको पहुँचाया था उसको आप सत्य समझकर कुबुद्धियों की सलाह से आपने मलिका मेहरनिगार को औलाद के अधीन करदिया कुछ उस असत्य समाचार को आपने नहीं जांचा मार्ग के मध्य में मुझसे और औलाद से मिलाप हुआ उसको पकड़के आपके पास भेजा इसमें मेरी हीनताई विदित हुई जो दण्ड आप उचित जानें इसे करें और जो लोग इस सलाह में थे उनको भी जानना चाहिये और मलिका को भी विदाकिया अपनी धरोहर को आपके पास भेजा है ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र उपस्थित होकर ब्याह करूंगा और अपने बैरियों को समझलूंगा इस विनयपत्र को लिखकर सुल्तान बख़्तक पश्चिमी को दिया और गुस्तहम ने मुझे विष दिया था उससे जीव तो बचा परन्तु कष्ट अधिक हुआ और मलिका के साथियों को अलग २ ख़िलअत कृपा की मेहरनिगार ने अमर को बुलाकर कहा कि मैंने मङ्गलाचार की सभा की तैयारी की थी अमीर ने मुझे अपने पासतक न बुलाया और मदायन को बिदा किया ऐसा क्या अपराध मुझसे हुआ है ? कि मेरा मुँह देखने के योग्य नहीं रहा है अमर ने अमीर से आकर कहा कि मेहरनिगार सशोक बैठी है और इसभांति से कहती है अमीर ने कहा कि तुम देखतेहो कि मेरी सूरत विष खाने से कैसी होगई है इस कारण से मेरा जी नहीं चाहता है कि अपना मुँह मलिका को दिखाऊँ अथवा मैं जाऊँ या उनको यहां बुलाऊं ईश्वर चाहेगा तो मदायन पहुँचतेही ज्योंकी त्यों देह होजायगी वहां फिर मिललेयँगे मलिका को अच्छी भांति से समझादो और मार्ग के बीच में तुम हमारे पास आओ और जितनी जल्दी होसके मुझे मिलो हकीम अक़्लीमूनने कहा ख़्वाजे तुम मदायन जातेहो नोशदारू लेते आना परन्तु अमीर के नाम से किसीसे न मांगना नहीं कोई न देगा अमर अमीर से बिदा होकर मेहरनिगार के पास पहुँचा और उसे समझाकर चुपका किया और डोलीपर सवार करके मदायन का मार्ग लिया थोड़े दिनों के पीछे मलिका की सवारी मदायन में पहुँची नौशेरवां अगवानी करके लेगया सुल्तानबख़्तक पश्चिमी को ख़िलअत कृपाकी और अमीर की आरोग्यता सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ अब अमर का हाल सुनिये कि एक गवांर

का भेष बनाकर एक क़साई की दूकानपर गया और दो घिसुआ पैसा जिसमें अक्षर का चिह्न भी न था लेकर गया और उसके आगे फेंक कर कहा कि ये दो पैसे ले और इसकी नोशदारू दे उसने कभी नामतक न सुना था वह बोला साहब! नोशदारू किस जीव का नाम है उसकी सूरत कैसी है?। अमर यह सुनकर एक बनिये की दूकानपर गया और उसके आगे पैसे फेंककर नोशदारू मांगने लगा वह बोला साहब आटा, दाल, चावल, लोन, लकड़ी, घी, तेल, महुआ, कोदों, बाजरा आदि मेरे यहां है जो लीजिये तो लीजिये दूकान आपकी है नोशदारू तो मेरे पास नहीं है कि जो मैं तुमको दूं मैंने तो कभी इस वस्तु का नाम भी नहीं सुना किसी पंसारी से पूछिये कदाचित् उसकी दूकान पर निकले अमर पंसारी के समीप गया वह बोला कि केराने में नोशदारू किसी पदार्थ का नाम नहीं है हमने इस नामका केराना नहीं सुना देखो कुँजरे के पास हो अमर कुँजरे के पास आया उसने कहा कि साहब! गाजर, मूली, साग पात आदि चाहो तो मेरे पास है नोशदारू नाम तो किसी तरकारी का भी नहीं है आगे किसी की और दूकान देखो अन्तको होते २ अत्तार की दूकान पर गया और उससे नोशदारू का नाम पूछा उसने कहा नोशदारू हमने कहां पाई कभी देखने में भी नहीं आई परन्तु तू एक काम कर बादशाह की न्यायशाला की सांकर हिला हां बादशाह के दवाईखाने में मिलेगी अमर ने जाकर उस सांकर को खड़खड़ाया बादशाह ने बुलाकर उसका हाल दरियाफ़्त किया अमरने दो पैसे जेब से निकाले और नौशेरवां के आगे रखदिये कि साहब! इसकी नोशदारू चाहता हूं "मोरे बेटवा का सँपवा काटेसि है गाँओं का बैदवा कहेसि है कि मदायन से सवातोला नोशदारू ला दे है तो तेरा बेटवा छिनमां नीक होजैहै सो कसाई बनियां कुँजड़ा पंसारी से पूछत फिरउँथा कोऊ नाहीं बतावत रहा आज एक मनई से बाट में जो भेंट भई वह सहिका कहेसि कि पादशाह के लगे मिलिहै सो मैं तुम्हारे पास हाजिर भया हूं खामिन्द के चरनन ले पहुँच गया हूं यह टकौना लेउ और तीन मिसकाल नोशदरुआ मोहिका देउ मोल तोल जोख में कम होइहै तो काम न निकसिहै मोरे दामो जैहैं सो मैं पूरे तीन मिसकाल लेहौं नहीं तो दाम न देहौं" बादशाह सभा समेत उसकी बातें सुनकर बहुत हँसे और उसकी शकल देखकर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि पैसे उठा ले हुजूर से नोशदारू तुझे कृपा होगी अमर बोला कि साहब! मैं गरीब मनई हौं बे क़ीमत कैसेउ नाहीं लेतिहौं तब पांवछोहों से मुफ़त २ नोशदरुआ कब लेहौं नाहक़ में आपका यहसान अपने मूड़ेपर धरौं बादशाह ने बुजुरुचमेहर से कहा कि इसको खज़ाने में लेजाकर तीन मिसकाल नोशदारू देदो और किसी भांति से इसके देने में कमी न करना बुजुरुचमेहर अमर को साथ लेकर खज़ाने में आया और संदूक को खोलकर एक जड़ाऊ हुक्का खोला और उसके ऊपर की दट्टी खोली उस में से तीन मिसकाल नोशदारू अमरको दी और तीन मिसकाल लेकर अपनी जेब

में रक्खी इस कारण से कि रमल के विचार से गुस्तहम का ज़हर देना अमीर को जान पड़ा था यह अच्छीभांति मालूम था कि अमर नोशदारू मांगने को आवेगा अमर ने मार्ग में बुज़ुरुचमेहर से कहा कि वाह हज़रत! बादशाह के नौकर होकर साहब चोरीभी करते हैं ऐसे इज़्ज़तदार मनई होकर कोई दमड़ी पर नियत बहँकावत है नोशदरुआ जो चोराके टेंटेमें रक्खी है सो मोंका देदो इसमें भलाई है नहीं तो बेइज़्ज़त होइहौ बुज़ुरुचमेहर ने रुसवाई के डरसे डरकर अमर को देदी मनमें बिचार किया कि यह गँवार आदमी है जो भेद विदित करे तो कुछ बात न बनेगी अब बख़्तक का हाल सुनिये उसको तो अमीर का बिष खाना मालूम था अत्यन्त घबरा कर मनमें शोचा कि बुज़ुरुचमेहर ने अवश्य हमज़ा के हेतु नोशदारू छिपाकर रक्खी होगी अपनी असालत का मार्ग जानकर बादशाह से प्रार्थना की कि बुज़ुरुचमेहर को देखिये और नोशदारू को देखिये बादशाह भी उसके कहने में आगया जो आवश्यकता थी तो हुज़ूर से मांग क्यों न ली एक गँवारको हुज़ूर ने कृपा की क्या इनको न मिलती कठिन आज्ञादी बुज़ुरुचमेहरका झारा लियाजावे बादशाहकी आज्ञानुसार काम किया गया परन्तु कुछ भी न निकला उसी समय बुज़ुरुचमेहर को ख़िलअत दीगई और बख़्तकपर जुरमाना किया गया और बुज़ुरुचमेहरसे बहुत कुछ लल्लोपत्तोकी बातें कहीं उस समय बुज़ुरुचमेहर को मालूम हुआ गँवार जो नोशदारू लेगया है वह अमर था अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ कि अमर की बदौलत चोरी की ज़िल्लत से तो बचे अमर ने नगर से बाहर निकलकर अपना साधारण भेष बनाया और अमीर के ओर का मार्ग लिया यहां अमीर एक दिन निर्बलता के कारण बहुत रोये और अपने आपको भला बुरा कहने लगे कि इस जीने से मरना अच्छा है रात के समय उसी शोक में हज़रत इबराहीम साहब ने आकर अमीर को ढाढ़स दी अमीर ने प्रातःकाल उठकर स्मरण ध्यान परमेश्वर का किया और पलँग पर तकिया लगाके बैठे कि इतने में अमर पहुँचा अमर ने अमीर को न पहिंचाना और दूसरा कोई जानकर पूछने लगा कि आप कौन हैं और कहांसे आये हैं? आपको मालूम है कि हमज़ा कहां टिके हैं अमीर ने कहा कि मैं औलाद का भाई हूं बन्दि से छोड़ाने के हेतु आया हूं उसको तो न पाया परन्तु हमज़ा को संसार की बन्दि से छोड़ाया ज्योंहीं यह बात अमर ने सुनी झटपट कटार निकालकर दौड़ा अमीर ने ख़ंजर अमर से छीनकर गलेसे लगा लिया और कहा कि मैं हमज़ा हूं आपने नाहक़ में इतना क्रोध किया अमर ने नोशदारू हकीम अक़लीसून के आगे रखदी और उसके लाने का हाल कुछ भी न कहा वह अमीर को कई माशे रोज़ खिलाने लगे कि उससे कुछ अमीर को बल व मन ठिकाने हुआ अब थोड़ा हाल बहराममल्ल ख़ाक़ानचीन का सुनिये कि चार जहाज़ जो उसके पास तूफ़ान में अमीर से अलग होगये थे छः महीनेतक समुद्र में हलचल पड़ारहा सिन्धु के किनारे लङ्गर जहाज़ों का देकर अनाज आदि लेने की नियत हुई ग़ल्ला के हेतु सूखे में उतरकर थोड़ी दूर गया देखा

कि एक बड़े वृक्षतले एक तख़्त पर कमान और हज़ार मोहरों का तोड़ा धरा है वहराम ने लोगों से पूछा कि यह कमान और तोड़ा क्यों चौकीपर रक्खा है निगहवान बोले कि सरकश हिन्दी जो यहां का बादशाह है उसका भाई कोहबख़्त अत्यन्त बलिष्ठ है उसने परीक्षा के हेतु कमान मोहरों समेत रखवादी है और यही सूरत बल की परीक्षा लेने के हेतु रक्खी कि जो कोई इस कमान को चढ़ादेवे मोहरों का तोड़ा लेलेवे बहराम ने विचार किया कि यह माल ईश्वर का दियाहै इसको न छोड़ना चाहिये चौकी के पास जाकर कमान का चिल्ला चढ़ाया और उसके गोशे को कान की लौरतक खींचकर रक्खा और तोड़ा उठाकर अपने आदमियों को दिया और मनोरथ चलने का किया निगहबानों ने यह हाल कोहबख़्त हिन्दीसे कहा कि एक सौदागर ने आपकी कमानपर चिल्ला चढ़ाया और तोड़ा मोहरों का अपने लोगों को सौंपा दैवयोग से एक मक्कार भी यह तमाशा देखता था कड़ी कमान के तीर के समान सरकश हिन्दी के निकट पहुँचा और यह सब हाल बयान किया सरकश हिन्दी ने आज्ञा की कि अभी जाओ और उसको हमारे पास लाओ आज्ञा पातेही लोग चिल्लाते हुए दौड़े कि सौदागर को कमान समेत इस नगर के हाकिम ने याद कियाहै और उसे देखना चाहता है बहराम मर्दों के समान सरकश हिन्दी के पास पहुँचा सरकशहिन्दी अत्यन्त शिष्टाचारसमेत आगे आया और उसके आदमी भी कमान लेकर पहुँचे और अधिकारी भी उपस्थित हुए सरकश हिन्दी ने बहराम से पूछा कि इस कमान को तुम्हीं ने चढ़ाई है बहराम ने कहा कि हां ईश्वर की कृपा से मैंने चढ़ाई है सरकश ने कहा कि एक बार मेरे आगे भी खींचिये अपना बल दिखाइये और देखनेवालों की भी यही इच्छा है बहराम ने कमान को लेकर इस बलसे ईंचा कि कमान टूटगई सरकश ने क़दरदानी की राहसे उसे बैठने की आज्ञा दी बहराम कुर्सी सोनहली पर जो सरकश के निकट पड़ीहुई थी बैठगया बहराम का बैठना हुआ कि इतने में कोहबख़्त शेरबबर के समान पहुँचा कमान को टूटा और बहराम को कुर्सीपर बैठा देखकर आपे में न रहा कटार खींचकर यह कहता हुआ दौड़ा कि एक तो तूने मेरी कमान तोड़ी दूसरे हमारी कुर्सीपर बैठा तेरी यह प्रतिष्ठा कहां से हुई बहराम ने कोहबख़्त का हाथ मिरोड़कर कटार छीन लिया और कमर में हाथ डालकर चारोंशाने चित्त पृथ्वीपर गिरादिया और कहा कि अब क्या मनोरथ है ? इतनीही शान थी अथवा कुछ अधिक बल था सरकश ने बहराम से उज़र किया और कोहबख़्त का अपराध क्षमा करवाया और कहा कि तुमको अपने दीन की क़सम है कि तुम कौन हो और क्या नाम है और किस देशमें रहतेहो? बहराम ने कुल हाल अपना आदिसे अन्ततक कहा कि सरकश ने अमीर का नाम सुनकर एक आह सर्द भरी और कहा कि मुझको हमज़ा के देखने की बड़ी इच्छा थी परन्तु ईश्वर गुस्तहम का बुरा करे कि उसने ऐसे जवान प्रसिद्ध पहलवान को मारा और उसकी जवानी को धूल में मिलाया बहराम यह बात सुनतेही चिल्लाकर

अचेत होगया जब सुगन्ध सुँघाने से उसे चेत हुआ उसने पूछा कि यह समाचार ब्योरेवार कहिये इसको अच्छी भांति कौन जानता है किसने आपको यह हाल बताया है सरकश ने कहा कि गुस्तहम यहां आया था उसने यद्यपि मेरे मिलने की इच्छा की परन्तु मैंने उसे अपने यहां आने न दिया उसने यहां से लन्धौर और हमज़ा के शिर को एक मित्र के हाथ नौशेरवां के पास रवाना किया और यह फिर नहीं जान पड़ा कि आप कहां को गया परन्तु मुझको उसकी बात का विश्वास नहीं कि वहभी बड़ा झूठा मालूम होताहै इस निमित्त मैंने कई मनुष्य सरंद्वीप की ओर भेजेहैं कि ठीक २ हाल मालूमकरें और इस हाल से मुझे इत्तिला दें बहराम ने कहा कि आपने जो नाम गुस्तहम का लिया मुझे विश्वास हुआ कि उसकी दुष्टता को खूब जानताहूं निश्चय करके उस खल ने अमीर को छल से मारा होगा वह उसके मारने के उपाय में था अवश्य अवसर पाकर कुछ न कुछ छल किया होगा अब मैं यहां एक क्षण भी ठहर नहीं सक्ता मदायन को जाऊंगा और इसी चार सहस्र सवारों से नौशेरवां की सेनाको न मारडाला और नौशेरवां का गला कटार की नोक से न पार करूं तो संसार में किसीको मुँह न दिखाकर विष खाकर या कटार मारकर मर जाऊंगा जब सरकश ने देखा कि बहराम नहीं ठहरता शीघ्र छः महीने के निमित्त ग़ल्ला जहाज़ोंपर भरवा दिया और बहराम को विदा किया बहराम रोता पीटता जहाज़पर सवार हुआ और जहाज़ों के लंगर उठवा दिये छः महीने के काल में जहाज़ बसरे में पहुँचे बहराम ने चार हज़ार सवारों समेत सूखे २ मदायन की ओर राह ली और सेना को आज्ञा दी कि जो गाँव नगर आदि मदायन के आधीन मिलें उनको लूट लो कोई स्थान बसाहुआ बचने न पावे सबको नष्ट करदो यह खबर नौशेरवां को पहुँची कि बहराम ने अमीर के मरनेका हाल सुनकर लड़ने भिड़ने पर कमर बांधी और तमाम गाँव नगर जो मार्ग में मिलते जाते हैं उनको उजाड़ता हुआ चला आता है नौशेरवां ने फ़ौलाद गुस्तहम के पुत्र को भेजा कि तू जाकर बहराम को समझादे कि अमीर जीते हैं मरने का बतानेवाला बहुत झूठा है शत्रुओं ने झूठी खबर उड़ाई थी तुमको उचित है कि सीधे होकर और सत्य मानकर हुज़ूर में आओ और अमीर की ख़बर बद से किसी भांति शोक न करो फ़ौलाद गुस्तहम का पुत्र मार्ग के मध्यमें बहराम के सामने हाज़िर हुआ कि साहबकिरां जीता है पर वह कब मानता था फ़ौलाद गुस्तहम के पुत्र को देखकर जलकर बोला कि ऐ दुष्ट! तेरी बातें ये हैं और तेरा बाप यह कुछ कर बैठा है तेरी बात क्योंकर मानें जो कुछ वीरता रखता हो तो मैदान में आ तू भी क्या याद करेगा कि किसीसे काम पड़ा था फ़ौलाद गुस्तहम के पुत्र ने लाचार होकर सफ़ बांधी और मुक़ाबिला के समय उसने एक भाला बहराम की छाती पर मारा बहराम ने हाथ बढ़ाकर भाला उसका छीन लिया और वही भाला उसकी छातीपर हनककर मारा घोड़े को जो जांघोंसे दबाया फ़ौलाद अपने घोड़े से अलग होकर नटकी भांति भाला के साथ

उतरताहुआ चला आया बहराम ने देखा कि फ़ौलाद का काम तमाम होगया भाला को हाथ से फेंकदिया फ़ौलाद की सेनाने धावा किया बहराम ने उन्हीं चार सहस्र सवारों से सबको मारडाला कुल पांचसौ आदमी दशसहस्र सासानियों में बच रहे वे अपनी जान लेकर भागे और नौशेरवां से जाकर ब्योरा समेत सब हाल वर्णन किया नौशेरवां को अत्यन्त शोच हुआ कि क्या उपाय किया जावे कि इतने में बहराम चारसहस्र सवार लेकर क़िला के निकट पहुँचा यद्यपि लोगोंने कहा कि अमीर ईश्वर की कृपा से जीते हैं बादशाह से तू इस समय ढिठाई करताहै अमीर सुनकर तुझसे ख़फ़ा होंगे परन्तु उसको तो धैर्य न था समझा कि नौशेरवां अपनेको बचाता है लाचार होकर क़िलाकी फ़सीलों में से लड़ाई होनेलगी हथियार बजने लगे बहराम चालाकी करके क़िलेके तले पहुँचा नौशेरवां अत्यन्त शोकयुक्त था कि बहराम थोड़ी देरमें क़िले का दर्वाज़ा तोड़कर भीतर आवेगा मुफ़्त में सब मारे गये अभी तक बहराम ने क़िलेपर गदा न लगाई थी कि नौशेरवां की दुआ ईश्वर ने अंगीकार की अमीरके आगमन का धुरिहर दूरसे देखपड़ा और सवारों का पर्रा दिखाई दिया घिरेहुए क़िलेमें जो थे सब चिल्लाये कि साहबक़िरां आये बहराम ने जो फिरकर देखा तो सचमुच अलम अज़दहा पैकरगर्द के ऊपर दिखाई दिया बहराम ने घोड़े को फिराकर दौड़ाया और अमीर की रकाब को चुम्मा दिया अमीर ने घोड़े से कूदकर बहरामको छाती से लगाया और लन्धौर से मिलाप जान पहिंचानका करवाके कहा कि मेरी बाहों का बल एक आप हैं और दूसरा यह हैं और अतिबलिष्ठ और सच्चा मित्र है अभी सवार न हुए थे कि एक सवार नौशेरवां का पहुँचा अदबसमेत आगे आया और सेवकाई की रीति करताहुआ नौशेरवां की ओर से बोला कि बादशाह सप्तद्वीप ने आपको आशीर्बाद के पीछे कहाहै कि इसी स्थानपर तुम आज डेरा करो कल मैं आप प्रातःकाल आपकी अगवानी के हेतु आऊंगा तुम्हें अपने साथ नगर में लाऊंगा साहबक़िरां ने बादशाह की आज्ञानुसार उसी स्थान में तम्बू गाड़दिया और अपना सलाम बादशाह को कहलाभेजा जब सूर्य प्रकाशहुआ तब साहबक़िरां लन्धौर और बहरामसमेत सवार हुए और बादशाह की चौखट चूमनेके हेतु चले उधर से नौशेरवां अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेनेको चला राह के मध्यमें बादशाह का तख़्त देखकर अमीर घोड़ेपर से उतर पड़े और तख़्त के मचवा को चुम्मन किया नौशेरवां ने भी अपना तख़्त रखवाकर अमीर को छातीसे लगाया और सवार होकर मीठी२बातें अमीरके प्रसन्न करनेकेहेतु कहीं और नगरकी ओर चला और वहां जाकर कहा कि अमीरकी सेना अगलीभांति तिलशादकामपर उतरे जब कैख़ुसरोके तख़्तपर नौशेरवां और अमीर सभा न्यायशाला में पहुँचे बादशाह गद्दीशाहीपर बैठगया और अमीर उसीभांतिसे रुस्तमके दंगल पर बैठे नौशेरवांने बहुत कुछ अमीरपर से उतार कर पुण्य किया और सभा के उठने के समय अमीर को ख़िलअत कृपा की अमीर तो ख़िलअत लेकर तिलशादकामपर पहुँचे और वहां जाकर आनन्दमय सभा रचित

की और आनन्द बधाये होनेलगे बख़्तकबदबख़्त ने नौशेरवां से प्रार्थना की कि जब हमज़ा अकेला था तब तो एक २ की औसान उससे ख़ता होती थी सब का दम निकलता था अब तो लन्धौर और बहराम उसके दो मित्र हैं उससे कौन आंख मिलासक्ता है मुझको डर लगता है कि कहीं तख़्त न छीनले और आपको पराजित करे बादशाह बख़्तक की इस बात से अत्यन्त डरगया और कहनेलगा कि फिर इसका उपाय क्या है बख़्तक ने कहा कि एक २ की सफ़ाई करलीजिये कल जिस समय हमज़ा आपके पास आवे तो उससे कहिये कि मैंने लन्धौर का शिर तुमसे मांगा था यह नहीं कहा था कि उसको जीता लेआओ और मेरी आज्ञानुसार काम न करो नौशेरवां ने कहा कि इस बात के कहने को तुम्हीको अधिकार दिया है जिसभांति से उचित जानना उस भांति से हमज़ा से बातें करना उस समय तो बख़्तक खुशी बखुशी अपने घर आया और अतिकठिनता से रात काटकर प्रातःकाल होतेही सभा में आया जब प्रातःकाल अमीर दरबार में आये अभी कोई बात न हुई थी कि बख़्तक ने कड़ाई से कहा कि ऐ अमीर ! बादशाह यह फ़रमाते हैं कि मैंने लन्धौर का शिर तुमसे मांगा था न कि यह कहा था कि लन्धौर को मेरे शिर पर लाओ और एक उपाधि मेरे नगर में लगाओ कि यह कहना उसका अमीर को बुरा मालूम हुआ कहा कि मनोरथ अधीनता से है या मारने से शिर काटनेको वह सेना समेत अधीन है बख़्तक ने कहा कि अधीनता से कुछ काम नहीं इसका अच्छा अंजाम नहीं है आज इसने चरणोंपर शिर रक्खा कल को फिर अभिमान कर फिर जाय तो उस समय क्या होगा ? अमीर ने कहा कि मेरे जीतेजी उसको क्या शक्ति है जो आपसे फिर जाय अगर बादशाह की यही मरज़ी है तो उसका शिर हाज़िर है मुझे बादशाह की खुशी सब भांति से मंजूर है बख़्तक बोला कि बादशाह को तो उसका शिरही दरकार है बादशाह कब उसकी सूरत देखसक्ता है और यह मैं क्योंकर कहूं कि लन्धौर आपके कहने से शिर देदेगा और देने में किसी भांति से इनकार न करेगा अमीर ने कहा कि यह क्या बात है जो आज्ञा उसे दूंगा तो शीघ्र शिर देने पर उपस्थित होजायगा और तलवार के तले शिर झुकादेगा बल्कि अपने हाथ से अपना शिर क़ाटकर देदेगा बख़्तक बोला कि फिर देर क्या है लन्धौर को बुलाइये जो कहना हो सो कहिये साहबकिरां ने अमर को आज्ञा दी कि लन्धौर को बुलालाओ अमर लन्धौर के निकट आया और कहा कि चलिये बादशाह ने आपके मारे जाने को आज्ञा की है अमीर ने बादशाह की आज्ञानुसार आपका शिर काटने के हेतु बुलाया है लन्धौर यह सुनकर उठखड़ा हुआ और यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा । सजननेह मदमस्तहूं, सुधि नाहीं कछु मोहि । इस मारग में जाय शिर, कछु चिन्ता नहिं होहि ॥

मुझे साहबकिरां की खुशी की चाहना है कि मुझे अब शिर शरीरपर भारी जानपड़ता है ॥

चौपाई । एक लालसा यह मन माहीं । चल तू बेग बधिक के पाहीं ॥

कांध पै अधिक बोझ शिर केरा। सधत नहीं पुनि होत अबेरा॥

और अब तू मेरे हाथ रूमाल से बांधदे और बादशाह की सभा की राह ले अमर लन्धौर की बातें सुनकर गले से लिपटगया और वीरता की बातें कहनेलगा कि ऐ बादशाह, लन्धौर! किसको इतना बल है कि तुमको बुरी दृष्टि से देखसके मेरे साथ आइये तुम्हारे शिर के साथ पहले तो हमज़ा का शिर है उसके पीछे ये जितने पहलवान हैं उनका और मेरा शिर है आप अच्छी भांति से हथियार बांध कर और हाथीपर सवार होकर चलिये बादशाह लन्धौर हथियार बांधकर हाथी पर सवार होकर और गदा कांधेपर धरकर बादशाह की सभा में उतर पड़ा अमर ने दरबार में जाकर अमीर को ख़बर दी कि लन्धौर हाज़िर है उसे सब प्रकार से अमीर की ख़ातिर मंज़ूर है यहां लन्धौर गदा को हवापर फेंकने लगा और हाथोंपर रोकनेलगा चारों ओर से शोर हुआ कि जो अभी गदा हाथ से छूटगई तो दश बीस मनुष्य बे अपराध मरजायँगे सैकड़ों की हड्डी टूटजायँगी बादशाह ने गुल सुनकर कहा कि भलाई तो है यह हल्ला गुल कहां होता है लोगों ने सब हाल बताया बादशाह चुप होरहा अमीर ने कहा कि लन्धौर को बुलालो अमर जाकर बुलालाया लन्धौर ने अमीर से प्रार्थना की कि क्या आज्ञा होती है? आपने क्यों याद किया है? अमीर ने कहा कि बादशाह आपका शिर चाहते हैं तुम्हारी ओर से बदगुमान होगये हैं लन्धौर ने कहा कि मैं आपका आज्ञाकारक हूं जो आपकी मरज़ी हो मैं हाज़िरहूं अमीर ने कहा कि अच्छा तुम हज़रत से बिदा हो और जिलोख़ानः के आंगन में शिर झुकाकर बैठो जिसको बादशाह की आज्ञा मिलेगी वह तुम्हारा शिर काटने के आवेगा लन्धौर उसी तरह प्रणाम करके जिलोख़ानः के आंगन में गया और गदा से तकिया लगाकर बैठा अमीर ने आदीको आज्ञा दी कि लन्धौर का शिर काटलाओ, आदी ने लन्धौर से कहा लन्धौर ने शिर झुकादिया और यह दोहा कहनेलगा॥

दोहा। अलग शीश करु बेगि तू, चित न करहु भ्रमजाल। पूर्ण करू इतिहास यह, नहिं कलेश विकराल॥

और कहा कि धन्यवाद है उस ईश्वर का मेरा शिर अमीर की आज्ञा से काटा जाताहै मेरी आधीनता में बालभरेका भेद नहीं होताहै आदी लन्धौर की आधीनता देखकर अचेत होगया और यह कहकर लन्धौर की जांघोंपर जा बैठा और कहा कि कोई प्रथम हमारा शिर काटलेवेगा फिर लन्धौरका शिर काटेगा अमीरने इस माजरे को जांचकर बहरामको आज्ञा दी कि तुम जाकर लन्धौर का शिर अपने हाथ से काट लाओ वहभी लन्धौर की बातोंपर भूलगया दूसरी ओर जा बैठा कि हमारा शिर भी लन्धौरके शिर के साथहै साहबकिरांने बहराम की बातें सुनकर सुल्तानबख़्त पश्चिमी को भेजा वहभी लन्धौर के पास आनकर बैठगया और कहनेलगा कि अमीरने अच्छी ख़ूंरेजी पर कमर बांधी है जो यही मरज़ी है तो हमारा भी शिर इनके साथ है जब ये बातें उन लोगों की बादशाह के कान में पड़ीं इतने में बख़्तक बोला कि जल्लाद बादशाही को क्यों नहीं आज्ञा होती है कि वह जिस २ के शीश को कहिये काट

लावे एक दम में क़िस्सा पूर्ण करदे अमीर ने कहा तुमको अख़्तियार है जिसको चाहो भेजो बख़्तक ने उसी समय एक जल्लाद को आज्ञा दी वह लन्धौर के शिरपर पहुँचकर पुकारा कि किसकी ज़िन्दगी के दिन बीतगये हैं अमर ने देखा कि जल्लाद बाघकी खाल का अंगा पहिने कन्धवस्त्र लोहू से भरा हुआ कटि के ऊपर एक खड्ग खोंसेहुए एक तलवार हाथ में पकड़ेहुए लन्धौरकी ओर चला अमर भी उस जल्लाद अर्थात् बधिक की पीठपर पहुँचा कि इतने में एक भारी शब्द हुआ और होते २ यह आवाज़ बादशाह के मकानतक पहुँची देखें तो मलिका मेहरनिगार व मलिका मेहरअंगेज़ किसी ओर से झप्पानपर सवार आती हैं और महल की ओर जाती हैं मेहरअंगेज़ ने चिलमन से देखकर मेहरनिगार से पूछा कि यह क्या है कुछ गुलशोर कासा तौर है मेहरनिगार ने कहा कि यही लन्धौर है मलिका ने ख़्वाजेसरायों को आज्ञा दी कि जान तो आओ यह क्या बात है ? मकानपर इतना जमाव क्यों हुआ है ? और वहीं से सवारी धीरे २ चली ख़्वाजेसरायों से जानकर मलिका ने कहा कि मालूम होताहै कि बादशाह के शिर पर खून चढ़ाहै नाहक़ निरपराधियों के मारनेपर तैयार हुआ है जाओ लन्धौरको हमारे पास लेआओ ख़्वाजेसराय लन्धौरके लानेको गया जल्लाद रोकनेलगा मलिका ने सुनकर कहा कि इस जल्लाद के कान नाक काट कर सभासे निकालदो जल्लाद तो यह बात सुनकर चुप होरहा लन्धौर को उस उपाधि से छुड़ाकर मलिका के मकानपर लेगये मलिका ने लन्धौर को ख़िलअत देकर बिदा किया लन्धौर व बहराम व आदी व सुल्तानबख़्त प्रसन्न होकर तिलशादकाम को रवाना हुए और यह ख़बर ख़बरदारों ने बादशाह को पहुँचाई कि मलिका मेहरअंगेज़ने लन्धौर को बुलाकर ख़िलअत दी और बिदा किया और उसे जीदान दिया नौशेरवां ने कहा मलिका ने यह काम बेसमझे बूझे नहीं किया होगा कोई बात इसमें बिचारी होगी अन्त में भेद खुलेगा यह कहकर कचेहरी बरख़ास्त की और महल में पहुँचे ॥

विदित होना मरना मलिका मेहरनिगार का संकरग़ारवानों मा बख़्तक की ज़बानी और
यह हाल सुनकर अमीर की परेशानी और मारना अमरका संकरग़ार को
और पत्तोंमें छिपाना उसी बदकार को ॥

समय का समाचार बड़ा अद्भुत है नये नये रङ्ग दिखलाताहै उसी पै यह इतिहास है लिखनेवाले का यह बयान है कि जब बादशाह घर में पहुँचे मलिकामेहरअंगेज़से पूछा कि तुमने क्या शोचके लन्धौरकी जान बचाई ? मलिका बोली पहले तो लन्धौर आपका अपराधी नहीं है और यद्यपि उसे इतना बल है पर उसने कुछ सरकशी नहीं की अमीर के स्नेहसे लाचार है दूसरे लन्धौर भी एक देश का बादशाह है बादशाह बादशाहों को इसभांति से नहीं माराकरते हैं तीसरे जिस समय देश प्रदेश यह ख़बर विदित होगी तुम्हारा विश्वास जातारहेगा तमाम दुनिया आपको दोष देगी तुम्हारी बातपर कोई कान न धरेगा चौथे जब लन्धौर इसभांति

से माराजायगा हमज़ा सकल देश के दीपक लन्धौर के बदले बुझादेगा आप देखते नहीं हैं कि लन्धौर हमज़ा की आज्ञा से शिर देनेको तैयार हुआ नहीं तो आपकी तमाम बादशाहत में कौन पहलवान ऐसा है जो लन्धौर का शिर लाकर आपको देता इस निमित्त मैंने खिलअत देकर उसे बिदा किया बादशाह मलिका की बुद्धिमानी देखकर बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु कहा कि अफ़्सोस है कि हमज़ा के मारने का कोई उपाय नहीं निकलता है उस समय सकरगारबानों बख़्तक की माता वहां पर थी हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि जो मुझे आज्ञा होवे तो मैं एक उपाय करके हमज़ा को मारडालूं नौशेरवां ने कहा कि क्योंकर तब उसने कहा कि कल आप दरबार के बीचमें हमज़ा से कहें कि एक सप्ताह के पीछे तुम्हारा ब्याह कियाजावेगा तुम ब्याह की सामग्री करो और सरकार से भी नौकरों को तुम्हारी सहायता के हेतु कहा जायगा और लौंड़ी मेहरनिगार को छिपाकर तहखाने में बैठावेगी दो दिनके पीछे मेहरनिगार की बीमारी प्रसिद्ध करके उसके चौथेदिन जिस समय हमज़ा यह बात सुनेगा कि मेहरनिगार मरगई आप मरजायगा ॥

दोहा। छल युवतिनकरो कठिनहै, तन मन सब हरिलेइ। दो टुकड़ा मनके करे, दुख नानाविधि देइ॥

यह सुनकर बादशाह को यह मंसूबा सकरग़ारवानों का पसंद आया दूसरे दिन दरबार में हमज़ा से ब्याहकी तैयारी करने की आज्ञा दी अमीर खुश २ बिदा होकर अपने स्थान में पहुँचे और ब्याह की तैयारी करने लगे और महल में सकरग़ारबानों ने मेहरनिगार को मङ्गलाचार देकर तहख़ाने में बिठलाया और कहा कि बन्नो इस तहख़ाने से एक सप्ताहतक बाहर न निकलना ब्याह में इसी तरह होता है और उसकी हमजोलियां जमा हुईं दिल्लगी करने लगीं और इच्छा ब्याह के मिलाप की हुई और जो कुछ समझाना था समझाया मेहरनिगार हर्षित हो तहख़ाने में बैठी दो दिनके पीछे उस छलिन ने प्रसिद्ध किया कि मेहरनिगार बीमार है उसके चार दिन के पीछे मकान में सब रोने पीटने लगे कि मेहरनिगार मरगई अमीर उस की बीमारी ही सुनकर सहस्रों बीमारों के एक बीमार होगये थे मरने का जो समाचार सुना कटार पेट में मारनेलगे लन्धौर व बहराम ने पांवोंपर शिर रख दिया कटार अमीर के हाथसे लेलिया और धैर्य देकर बातें कहनेलगे कि आजतक कोई मृतक के साथ नहीं मुआ है मीच से कुछ वश नहीं है अमीर ने कहा कि माशूक़ मरना आशिक़ को जीना नेह के विषय में अनुचितहै कुछ करो मैं अपनी जान दूंगा मुझे अब जीनेसे क्या काम है ? अमर ने देखा कि अमीर अब किसी भांति से मानते नहीं हैं बोला कि भला आप सुनते हैं कि किसीने आपके मारने के निमित्त जो यह छल किया हो तो मेहरनिगार तो जीतीरहे और आप मरगये तो उसका कुछ घाटा न हो थोड़ा धैर्य धरिये मुझे ख़बर लेआने दीजिये अमीर को यह बात अमर की पसन्द आई और उनलोगों ने भी सुनकर अमर की बुद्धि को सराहा अमर शीघ्र चलकर मलिका की डेवढ़ीपर पहुँचा और अपने आनेकी मलिका मेहर अंगेज़ को

खबर की सकरग़ारबानों ने मलिका से कहा कि इस समय अमर को महल में बुलालेना बहुत उचित है कि वह यह रोना पीटना देखकर हमज़ा से कहेगा हमज़ा सुनकर बहुत शीघ्र आप मरेगा मलिका ने अमर को महल में बुलाया जब अमर महल में पहुँचा देखा तो सबके शरीर में काले वस्त्र शोक के चढ़े हैं छोटे बड़े सब उदास हैं परन्तु थोड़ी देर के पीछे सकरग़ारबानों ने और कुछ मलिकाके कान में कहा और उल्टे पांवों फिरगई अमर ने शोचा कि इसमें कुछ भेद है यह सनक बे काज नहीं है इसी दुष्टा का यह छल है शाम तो होगई तमाम महल में रोने पीटने के कारण अँधेरा पड़ा था अमर धीरे २ सकरग़ारबानों के पीछे २ चला इधर उधर देखकर एक बुढ़िया की सूरत बनगया जब वह अकेली पाई बाग़ में पहुँची आहट पाकर ठिठुकी बोली कि कौन आता है? अमर ने धीमी आवाज़ से कहा कि मैंहीं हूं कोई दम में मलका के बदले यमदूत आपको लिये जाता है जबहीं सकरग़ारबानों ने आगे पांव धरा अमर ने कमन्द का हलक़ा उसके गरदन में डालकर पीछे को झिटका दिया अचेताचित्त होकर धरतीपर गिरपड़ी अमर ने ऐसी गर्दन उसकी दबाई कि प्राण शरीर से बाहर निकल गये उसको सूखे पत्तों के ढेर में छिपा दिया और आप उसकी सूरत बनकर रौसपर खड़ारहा परन्तु हैरान था कि अब किधर को जाऊँ और मलिका का किससे पता लगाऊँ? इतने में एक लौंडी मोमकी बत्ती लियेहुए फुलवारी की ओर से आकर बोली कि बुआ सकरग़ारबानों! तुम्हें देर से मलका साहबा बुलारही हैं अमर ने उसके उत्तर में कुछ न कहा और उस छोकड़ी के साथ २ तहख़ाने में गया देखे तो मलिका मेहरनिगार शृङ्गार कियेहुए अति प्रफुल्लित मसनदपर दुलहन बनी बैठी है लौंड़ियों से दिल्लगी कररही है और मसनद के समीप बोतल और प्याला रक्खा है फ़ितनाबानों प्याला भर २ देती जाती है मलिका साहबकिरां का नाम लेलेकर पीती जाती हैं मेहरनिगारने कहा कि सकरग़ारबानों तुम आजकल मुझपर बड़ी कृपादृष्टि रखती हो पहले इतनी कृपा न करती थीं अमर बोला इस डर से कि कदाचित् आपको बदी का गुमान मेरी ओर से होवे कि बख़्तक की मा है उस दुष्ट की भांति से बैरियों पर अदावत रखती होगी परन्तु आपके प्रताप से आपके आशीर्वाद देने में तन मन से प्रकट रहकर अलग २ पैरों से पड़ी थी अब आप मुझे अपने भला करने के लिये समझिये देखिये कि शादी के सामान में कैसी दौड़ रही हूं एकदम मेरा पांव नहीं लगता मेहरनिगार ने कहा कि जो कुछ तुमने कहा वह सत्य है अब कहो कि बरात के आने में कितनी देर है वहां क्या सामान होरहा है? अमर ने सबको अलग करके कहा कि कैसी बरात तुम्हारा तो महल में रोना धोना पड़ा है कि मेहरनिगार मरगई हमारी सेना में भी एक बुरी गति होगई है कि अमीर ने यह खबर सुनकर अपने को मारही डाला था परन्तु मुझे कुछ सूझगई कि मैंने अमीर से कहा कि थोड़ा धैर्य धरिये मैं जाकर हाल पूछआऊं वैसाही आपको सुनाऊं ऐसा न हो कि शत्रुओं ने आपके मारने के

हेतु यह हाल किया हो मैंने यहां आकर उस सांपिन को मारकर पत्तोंमें छिपादिया और उसकी सूरत बनकर आप तक पहुँचा लो अब वेग जाकर अमीर को तुम्हारी सलामती का हाल सुनाऊं जिसमें उनकी जान बचे होश व हवास ठिकाने हों दम में दम आवे यह बात सुनकर मेहरनिगार का मन प्रसन्न हुआ और अमर को बहुतसी मोहरें देकर बिदा किया परन्तु अमरने चलते समय एक रुक्का मेहरनिगार के हाथ से अमीर के नाम लिखवा लिया जिससे अमीर को विश्वास पड़े और जाकर यह रुक्का अमीर के हाथ में दिया अमीर ने उसके पढ़ने से जिन्दगी दुबारा पाई और दशहज़ार मोहरें उस समय अमर को पारितोषिक में दीं अमर ने अमीर से कहा कि अब मेरा कहना मानिये तो मैं बहुत अच्छी भांति से इस भेद को विदित करूं हरामज़ादों को जिन्होंने फ़िसाद उठाया है अच्छी भांति से कष्ट दूं और निश्चय है कि तमाम उमर बादशाह भी इस बात से लज्जित रहे और फिर कभी भले मनुष्य के साथ ऐसा झूंठ न बोले अमीर ने कहा कि इससे अच्छा क्या है? जो तू कहेगा सो मैं करूंगा और तेरे कहने को न छोड़ूंगा अमर ने कहा कि आप लन्धौर, बहराम, आदी और सुल्तानबख़्त आदि जितने सरदार हैं तिन समेत काले वस्त्र धारण करके बादशाह के पास जाओ और बादशाह से ताकीद कीजिये कि अब शीघ्र लाश निकलवाइये जिससे लोग ताना न करें कि बादशाह सप्तद्वीप की लड़की मरी हुई इतनी देरतक पड़ीरही अमीर ने यह मंसूबा अमर का बहुत पसन्द किया और बहराम आदि जिनको कहा था साथ लेकर बादशाह के पास गये और सब के सब सशोक हो अपने२ स्थानपर बैठे देखा तो बादशाह सब सासानियों और कैयानियों समेत काले वस्त्र पहिनेहुए हैं और सब ओर से रोने पीटने का जोश है एक घड़ी के पीछे अमीर ने बादशाह से प्रार्थना की कि अब जो होना था सो तो हुआ अब बहुत देरतक घर में लाश रखने से क्या है? आज्ञा दीजिये कि महलसे जनाज़ा निकालाजाय बाहर किसी स्थान पर रक्खाजाय बादशाहने मलिका मेहरअंगेज़ से कहला भेजा तो उत्तर आया कि दिनभर तो मेहरनिगार पहुनई में रहे और रात को लाश निकाली जावेगी अलग़रज़ वह दिन रोने पीटने में गुज़रा महल में कोहराम मचारहा जब सांझ हुई सैकड़ों ब्राह्मण शङ्ख व घुंघुरू बजानेलगे और अपने देवताओं के नाम लेनेलगे महल में सक़रग़ारवानों की तलाश हुई तो लाश उसकी पत्तों में से निकली मेहरअंगेज़ ने उसी लाश को संदूक़ में रखकर महल से निकाला लाखों मशालें रोशन होगईं और सहस्रों मनुष्य उस लाश के साथ होलिये अमर ने देखा कि मनुष्य शङ्ख व घुंघुरू बजाते और अपने क़ौमों को गले में लगाते और पैर २ पर आतशबाज़ी छोड़ते जाते हैं अमर ने भी अपनी सूरत बदल घुंघुरू हाथ में ले प्रत्येक के गले से मिलना शुरू किया होते २ बख़्तक के पास पहुँचा एक छछूंदर जलाके बख़्तक के गले में डालदी और दबाया बख़्तक ने समझा कि यह काम सिवाय अमर के कौन करेगा? अशक्त हो हाय! जला हाय!! जला कहके

बोला कि अमर हमज़ा के वास्ते मुझको छोड़दे सब छाती और पेट जलाजाता है और सब शरीर में फफोले पड़े जाते हैं अमर ने कहा आपकी मा मरगई है जो के समान दीपकवत् जल जायेगा तो नेकबख़्त कहलावेगा यह कहकर बख़्तक छोड़दिया और आप आगे को बढ़ा और वह छछूंदर पेट व छाती बख़्तक की जला कर गर्दन से निकलगई बख़्तक मार्ग में एक गढ़ा पानी का देखकर उसमें कूदपड़ा अपने शरीर का कुछ चेत न रहा जितने लोग जनाज़े के साथ या तो रोते थे या हँसपड़े और थोड़े मनुष्यों ने बख़्तक के शरीर की आग बुझाई परन्तु बख़्तक को ताब न आई अपने उस मृतक को तो मनुष्यों को सौंपा आप रोता पीटता अपने घर को फिरा जब नदी किनारे बख़्तक की मा को दबाकर फिरे बादशाहको दीवान-ख़ास में सशोक बैठे देखकर जो लोग हाज़िर थे वे भी फूट २ कर रोनेलगे अमर ने ज्यों ध्यान लगाकर देखा त्यों बादशाह के रूमाल में प्याज़ का एक गंठा है जब आंख से लगाते हैं तब आंसू बह आते हैं अमर ने निकट जाकर चुपकेसे कान में कहा कि तुझसा छली कपटी बादशाह देखने सुनने में नहीं आया है कोई ऐसा छल भले मनुष्यों के साथ करता है ? यह सुनकर बादशाह ने हँसदिया और कहा कि जिसने मक्र व छल किया था वह अपने फल को प्राप्त हुआ यद्यपि बादशाह ने यह बात तो कही परन्तु अपने मन में बहुत लज्जित हुआ और लाज के मारे पसीना शरीर से निकल आया अमीर ने कहा कि बख़्तक अपनी सज़ाको पहुँचा और जान नहीं पड़ता अमर बोला कि हुज़ूर ! यह जनाज़ा उसकी माका था अपनी माता कृपाशालिनी के शोक में है उसका किया उसके आगे आया इससे वह घर में जा कर शोक में बैठा है नौशेरवां ने अमीर से बहुत उज़र किया और कहा कि मैं कुछ भी नहीं इस छल को जानता था आप मुझपर गुमान न कीजिये यह मक्कारी जिसकी थी वह अपनी सज़ा को पहुँची अमीर ने कहा कि मैं सब प्रकार से आपके आधीन हूं यह कहिये कि अब ब्याह कब होगा ? बादशाह ने कहा कि चालीस दिवस के पीछे ब्याह किया जायगा आपका मनोरथ पूर्ण होजायगा अमीर तो विदा होकर तिलशादकाम पर गये परन्तु अमर रुकरहा जब बादशाहने दरबार बरख़ास्त किया अमर ने बुज़ुरुचमेहर को ठीक करके बादशाह से प्रार्थना अमीर की ओर से की कि अमीर को चालीस दिवस की देरी मंज़ूर नहीं है भले कार्य में ढील करना कुछ अच्छी बात नहीं है बादशाह ने कहा कि अभी सामान ब्याह व दाइज का तैयार नहीं है अमर बोला कि आप बादशाह हैं आज्ञा की देरी है असबाब के न होने में क्या ढील है ? बारे कहने सुनने के पीछे बुज़ुरुचमेहर ने बीस दिन का इक़रार कराया अमर इस बात से अत्यन्त प्रसन्न हुआ अमर ने कहा कि कृपानिधान ! इस मज़मून का एक परवाना साहबकिरां के नाम लिखदीजिये कि वे उसको देखकर सामान आदि सब तैयार करें बादशाह ने एक परवाना इक़रारनामा की भांति लिख दिया अमर ने जो वह परवाना आनकर अमीर को दिया अमीर पढ़कर अमर की

बुद्धिमानी पर प्रसन्न हुए और गले से लगालिया और बहुतसी मुहरें अमर को दीं और आनन्द बधाये होने लगे अब बादशाह का हाल सुनिये कि महल में जाकर मेहरनिगार को गले से लगाया और बीस रोज़ का क़ौल जो अमीर से किया था कहा इसके पीछे अमर की हरकतें जो जनाज़े के साथ की थीं वर्णन कीं मलिका मेहरअंगेज़ व मेहरनिगार अमर की बातोंपर हँसते २ लोटगईं अब बख़्तक का हाल सुनिये कि उसने जो सुना बादशाह ने हमज़ा को इक़रारनामा लिखदिया है कि बीस दिवस के पीछे ब्याह करदूंगा और पांचदिन उसमें बीतभी गये पन्द्रह दिन ब्याह के शेष रहे हैं दोनों ओर ब्याह का सामान होरहा है नगर में इसका घर २ चरचा है यह सुन डाहकी चिनगारियों में फुँकगया यद्यपि उसके जलने के घाव अभी नहीं पूरे थे परन्तु फफोला तोड़ने के हेतु बादशाह के पास गया अलग करके कहा कि मैंने सुनाहै कि आपने हमज़ा को पत्र लिखदिया है कि बीस दिवस पीछे ब्याह करदूंगा और ब्याह की सामग्री होरही है नगर में इसीकी धूम मची है अफ़सोस है कि आपको अपनी बात का कुछ ध्यान नहीं है सिवाय इसके मलिका का ब्याह हमज़ा के साथ करना उचित नहीं सब देशों में यह बात प्रसिद्ध होगई है कि बादशाह सप्तदीप को हमज़ा की जामातृता नामंज़ूर होगई है जिसने सुना उसने कहा कि सचमुच बादशाह दूसरी क़ौम को जो बिना देखे ईश्वर को पूजता है क्योंकर अपनी पुत्री देगा और आप ब्याह करने पर मुस्तैद हुए हैं यह सारा संसार क्या कहेगा ? नौशेरवां ने कहा कि मैं क्या करूं ? बहुत हैरान हूं कोई बातभी बन नहीं आती यह सुन बख़्तक ने कहा कि हुज़ूर ! हैरान न होवें मैंने एक बहुत अच्छा उपाय ठहराया और बहुत दूरकी बात शोची है नौशेरवां ने पूछा कि वह क्या तुमने शोचा है ? बख़्तक ने कहा कि कल जिस समय हाली मोहाली सभामें हाज़िर हों और हमज़ा भी उसी भांति से आवेगा मैं दो तीन आदमी नाक कान काटकर भेजूंगा वे न्यायशाला की जंजीर हिलावेंगे हुज़ूर भी उसी भांति से उनका हाल पूछें वे लोग प्रार्थना करेंगे कि हम हुज़ूरके नौकर पुराने हैं सप्तद्वीप का ख़ज़ाना साल बसाल जमा करके हुज़ूर में भेजते थे इस साल में किसीने एक पैसातक नहीं दिया उसपर नाक कान काटकर दुखित किया और कहते हैं कि बादशाह सप्तद्वीप का कर देने के योग्य नहीं है वह अग्निपूजक होकर हमज़ा नामी मुसल्मान को अपनी बेटी देगा और उसने अपने कुलकी रीति भांति छोड़दी अब बादशाह का जामाता आवेगा हमसे कर लेलेगा सेवकों ने इसपर बिबाद किया उन्होंने सेवकों की यह सूरत बनाकर अपनी हद से निकाल दिया जिस समय ये बातें हमज़ा सुनेगा तो अवश्य लज्जित होकर आपसे बिदा मांगेगा नौशेरवां को यह सलाह बख़्तक नीच की बहुत अच्छी मालूम हुई उस दिन तो बख़्तक बिदा होकर अपने घर गया दूसरे दिन जब बादशाह तख़्तपर बैठे और हकीम व विद्यावान् व बुद्धिमान् सब अपने २ स्थानपर बैठे अमीर भी आकर अपने स्थानपर बैठे उसी समय किसीने न्याय-

शाला की जंजीर हिलाई जब सांकर का शब्द नौशेरवांके कान में आया तो नौशे-
रवां ने फ़िरयादियों को बुलवाकर देखा कि थोड़ेलोग नाक कान कटेहुए न्याय कराने
के हेतु घवराये हुए अचेत आये हैं दरबार के सबलोग उनको देखनेलगे कि किसने
ऐसी सूरत इनकी बनाई कि नाक कान जड़से उड़ादिये फ़िरियादियों ने जो कुछ
बख़्तक ने सिखादिया था अच्छी भांति से वर्णन किया लाज के मारे अमीर के रोयें
खड़े होगये क्रोध से वे अख़्तियार बोल उठे कि ईश्वर व कावाकी क़सम है कि
जबतक उन खत्रों से कर न लेलूंगा तबतक व्याह न करूंगा आदी को आज्ञा दी
कि आज सतदेश की ओर डेरा रवाना हो नौशेरवां ने कहा कि ऐ अब्दुलअला! जो
यही मर्जी है तो पहले व्याह से निपटलो पीछे उनको जाकर दण्ड दो अमीरने कहा
कि मैंने क़सम खाई है कि जबतक उन खलों से कर न लेलूंगा तबतक व्याह का
मनोरथ न करूंगा इस बात में आप दख़ल न दें हँसी खुशी से बिदा करें बादशाह
ने कहा कि जो यही मर्जी है तो लन्धौर या बहराम को मलिका की निगहबानी के
हेतु छोड़ें जाओ अमीर इस बात से बहुत प्रसन्न हुए और बहराम से कहा कि तुम
बादशाह के पास रहो बादशाह ने अमीर को ख़िलअत देकर सात ख़त सातों देशों
के बादशाहों के नाम लिखकर अमीर को देकर बिदा किया कि सब बादशाहों को
भेजवा दीजियेगा और जहांतक होसके उनसे सलाह कीजियेगा और कारन देव-
बन्द को बारह सहस्र सेना देकर अमीर के साथ किया कि जो कुछ अमीर कहें
उसे करें किसी भांति से अमीर की आधीनता व सेवकाई से चूक न करें अमीर ने
प्रार्थना की कि कारन के बदले और किसी सरदार को मेरे साथ कीजिये और इनको
आप यहां रहने दीजिये क्योंकि ये सासानियों में सब से बड़े और आपके नातेदार
हैं और इसके सिवाय कई बार मुझसे और इससे तकरार भी होचुकी है कदाचित्
मार्ग में किसी भांति की कोई तकरार करे तो अच्छा न होगा मैंने जो छोड़ दिया
तो मेरे साथियों से यह कभी न बचेगा कारन ने एक क़ौलपत्र आधीनता के हेतु
इस मज़मूनका लिखा कि जो मैं कोई अपराध करूं तो अमीर को मेरे मारडालने
का अख़्तियार है अमीर ने कहा कि दो अपराध तक मैं क्षमा करूंगा परन्तु तीसरे
पर दण्ड दूंगा अमीर तो तिलशादकामपर बिदा होकर पहुँचे बादशाह ने सातपत्र
सातों बादशाहों के नाम लिखे और कारन के हवाले किये और मज़मून उन पत्रों
में यह था कि हमज़ा को हमने समय जांचकर उधरको भेजा है कर क्या दख़ल
तक न पावे इसका शिर काटकर हमारे पास भेजदेना और सात मिसकाल अर्थात्
साढ़े इकतीसमासे बिष हलाहल कारन को देकर कहा कि जब अवसर पाना हमज़ा
को खिलाना और ख़िलअत देकर बिदा किया कारन अमीर की सेना में आया
अमीर ने दमामे पर कूचकी चोब लगवाई और रवाना हुए उस समय अमर ने
अमीर से कहा कि आपने युद्ध करनेपर ध्यान लगाया है मेहरनिगार का नेह कहने
सुनने का है अब आपको अख़्तियार है जहां जी चाहे वहांको जावें देश परदेश

फिरें और युद्ध में लड़ें सेना व पहलवानों को लड़ाकर तमाशा देखियेगा बन्दा बहुत दिनों से आपके साथ खराब फिरता है और किन २ उपाधियों से बचा है अब मक्के को जाता हूं यहीं आपके निमित्त दुआ करूंगा जो कोई पत्र अपने पिता को देना हो दीजिये तो उनकी सेवामें पहुँचादूंगा अमीर ने एक पत्र लिख हवाले किया और अमर मक्के की ओर रवाना हुआ ॥

इति प्रथमभागः समाप्तः॥ १ ॥

दूसरा भाग ॥

अब लेखनी देश विदेश की बातों के हेतु पधारती है दूसरी मंज़िलरूप सादे पत्रके लपेटनेपर मुस्तैद हुई अमीर के मार्ग का हाल जीभपर लाती है नये २ इतिहास सुनाती है कि जब अमीर सप्तद्वीप की ओर चलनेवाले हुए यहांतक कि सात मंज़िलें जाचुके थे कि कारन ने एक दुराहापर घोड़ा खड़ाकिया अमीर ने पूछा कि क्या कारण घोड़ा रोंकने का हुआ है ? कारन ने कहा कि यहां से सप्तद्वीप को दो राहें गई हैं एक राह तो वहुतदूर है इसमें दो सड़कें बड़ी २ हैं मार्ग बहुत कठिन है जो कूच करते चलेजाइयेगा तो कमसे कम महीनेभर के पीछे उस स्थानतक पहुँचियेगा और दूसरा मार्ग समीप है कि आज से दशदिनतक चलना पड़ेगा और कष्ट किसी भांति से न होगा परन्तु इस मार्ग में तीन दिनतक पानी नहीं मिलताहै प्यासका डर है अमीर ने कहा कि तीन दिन के निमित्त पानी पखालों में भरवा लियाजावे अधिक चलना क्या ज़रूर है सेना को इतना कष्ट क्यों दिया जावे सेनावालों ने तीन दिन का पानी ऊँटोंपर लादलिया और उसी राह से जाने का मनोरथ किया जब तीन दिन बीतगये और पानी का एक बूंद भी पखालों में न रहा चौथेदिन सेना प्यास से बेताब होगई और अमीर की भी जीभ में प्यास के कारण कांटे पड़गये यद्यपि आसपास ढूंढ़ा परन्तु कोई तड़ाग नदी आदि दृष्टि न पड़ा कारन से कहा कि तू ने कहा था कि चौथे दिवस पानी मिलेगा वह पानी कहां है ? इस बात में भी कोई मतलब ठीक नहीं है कहा ऐ साहब ! और किसी भांति का ख़्याल न कीजिये मुझको बारह वर्ष का अर्सा हुआ कि मैं इस तरफ़ आयाथा बिदित हुआ कि इस समय नदी सोते बालूसे पटगये और कोई तालाब आदि बाक़ी न रहे परन्तु आप के पीने लायक़ पानी मेरे छागल में भरा है आज्ञा दीजिये तो मैं ले आऊं अमीर ने कहा बहुत अच्छा कारन जल में बिष मिलाकर प्याला भर अमीर के पास लाया अमीर ने प्याले को हाथ में लेकर मन में कहा कि पश्चात्ताप है कि मैं तृप्त होऊं और खुसरो मेरा मित्र प्यासा रहे खुसरो को प्याला देकर कहा कि मैं अर्बी हूं तुमसे ज़्यादा प्यास सहसक्ताहूं तुम्हारे देश में जल मिलता है तुम प्यास नहीं सहसक्ते पीलो यह सुनकर खुसरो ने कहा कि यह मित्रता से अलग है कि मैं तो पानी से प्यास दूर करूं आप प्यासे रहें ऐसा कह उस पानी को न पिया और आदी को जो

बहुत प्यासा था देदिया आदीने देखा कि थोड़ासा जल पीकर अधिक प्यास बढ़ाना है यह शोच उस पानी को न पिया मुक़बिल को देकर कहा यह जल तुम्हारी प्यास दूर करने के योग्य है तुम पियो यह सुन मुक़बिल ने कहा कि यह मित्रता से अनुचित है कि अमीर प्यासे रहें और हम पानी पीवें इसी तरह विष का पानी अलग रहा किसीने न पिया अन्त को सबोंने उस प्याले को अमीर के हाथ में देकर कहा कि आपके प्यासे रहनेपर हमको पानी पीना उचित नहीं है यद्यपि अमीर ने बहुत कुछ कहा पर किसीने न माना॥

हज़रत ख़िजर अलैहुस्सलाम की आज्ञानुसार अमर का निषेध करना विष मिले जल के पीने से अमीर को और आकाशवाणी के सुनने से अमीर का उस जल को न पीना॥

इतिहासरूपी समुद्र के ग़ोता लगानेवाले उत्तम २ वार्तारूपी मोतियों को निकालकर व अर्थरूपी सुन्दरता को सन्मुख यों प्रकट करते हैं कि अमर मक्केसे यात्रा करके आता था कि मार्ग में एक वृद्ध मनुष्य को देखकर इच्छा की कि इससे बातें करते चलें कि मार्ग सुखके साथ कटे और थोड़ी देर चित्त आनन्दमें रहे यद्यपि उसने बहुत शीघ्रता की परन्तु पहुँच न सका तब तंग होकर सौगन्दें देनेलगा कि हज़रत सलामत! आपको अपने दीन और धर्मकी सौगन्द है अगर आप आगे पैर उठावें उसका ठहराना था कि अमर ने जाकर देखा कि हज़रत ख़िजर हैं दण्डवत् करके हाल युद्ध करने का पूछा तब हज़रत ख़िजरने कहा कि इस समय अमीर तृषावान् हैं और कारन ने जल में विष मिलाकर अमीर को दिया है अबतक वह गिलास अमीर के हाथ में है जल्द जाकर अमीर के हाथ से गिलास पृथ्वीपर डालदे और यहींसे पुकारता चला जा कि ख़बरदार जल न पीना २ परमेश्वर तेरा शब्द अमीर के कानोंतक पहुँचावेगा और उस धर्मिष्ठी के जीव को पापी के हाथ से बचावेगा अमर बेहोश होकर दौड़ा और हरक़दमपर कहता हुआ चला कि ख़बरदार? न पीना २ मैं भी पहुँचा अमीर की यही इच्छा थी कि जल पीवें शब्द जल न पीने का उसके कानों में पड़ा गिलास को मुखके पाससे हटालिया और इधर उधर देखने लगा कि किसने मुझे जल पीने से निषेध किया है जब मना करनेवाला दृष्टि न पड़ा तब फिर जल पीने की इच्छा की परन्तु फिर वही शब्द सुनकर अचम्भित होकर चारों तरफ़ देखनेलगा कि कोई मना करताहै पर देख नहीं पड़ता कि किसका शब्द है तीसरी बार अमीरने फिर गिलास को मुखसे लगाया कि फिर वही शब्द सुनाई पड़ा तब अमीर गिलास को हटाकर बड़े सन्देह में हुआ कि यह क्या है? कि जब जल पीने की इच्छा करते हैं तभी मना करता है यह ईश्वर की रचना है और अनेक २ तरह के सन्देह कररहा था कि सामने से एक बवण्डल आया और उसमें से अमर निकला देखा कि गरद के समान उड़ता चलाआता है और कहता है कि जल न पीना जब अमीर के समीप गया तब उस गिलास को अमीर के हाथ से लेकर पृथ्वीपर पटकदिया और जहांतक उसकी छींटें पड़ीं पृथ्वी जलने

लगी यह हाल देखकर लोग बड़े संदेह में हुए उसमेंसे एक छींट अमीर के मुखपर पड़ी खाल और हड्डी काटती हुई पीठतक पहुँची अमर ने अति शीघ्रतासे शाह-मोहरा घिसकर लगादिया कि विषका असर जातारहा कारन ने जो देखा कि भेद खुलगया है तब शीघ्रता से अपनी सेना की ओर भागा और सेना को तो पहलेही से तैयार होनेकी आज्ञा दी थी शीघ्रही बारह हज़ार सवार अमीर के ऊपर आगिरे और एक बरछी लन्धौरको मारी उसने बरछी छीनकर जो एक डाट मारी तो कारन लोट पोटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और बाक़ी जो सवार थे उसे उठाकर बनकी तरफ़ हवाके समान लेभागे अमरने सेनाको उसी सोतेपर जो ख़िज़रने बताया था लेजा-कर जल पिलाया और ख़ुदभी पिया अमीर ने अमर को गले से लगाया और कहा कि तूने आकाशरूपी शब्द सुनाकर ख़ूब मेरे जीवकी रक्षा की नहीं तो मैं मरचुका था पर अब मार्ग ढूंढ़ना उचित है कि इस निर्जल देश से बाहर चलें तब अमर सेना सहित एक नगर में गया तो सब मनुष्य अमर को देखकर भागे तब उसने दौड़-कर एक मनुष्य को पकड़ा और भागने का कारण पूछा उसने कहा कि परसों एक सेना आई थी उसने हमलोगों को बहुतसा मारा और रुपया लिया और हरएक प्रकार का दुःख दिया है उसी कारण से जीव की रक्षा के लिये भागेजाते हैं अमर ने उनको धैर्य देकर कहा कि हमलोग वैसे नहीं हैं और किसीको दुःख नहीं देते हमारा स्वामी दयावान् और धर्मात्मा है तुमको उससे बड़ा लाभ होगा और बहुत प्रसन्न करेगा तुम हमारी ओर से निर्भय होकर सब मनुष्यों को हमारे समीप ले आओ तब उसने जाकर सब मनुष्यों को अमीर के समीप हाज़िर किया अमीर ने उनको बहुतसा धन दिया और उस पहले एक मनुष्यसे पूछा कि यह बन कहांतक है और मीठा जल कितनी दूरपर प्राप्त होगा और पहले नगर और नगरके अधिपति का क्या नाम है? वह बोला कि बारह कोस तक यह बन है और इसके बाद एक मीठे जल की नदी है और वहां से एक दिन की राहपर इलजावेनाम नगर है और उसके स्वामी का नाम हाम है और उसीसे मिलाहुआ इलजलाकनाम नगरहै और उसके स्वामी साममहज़्ज़री और कामरू हैं और वे बड़े शूरवीर और युद्ध करने वाले हैं और प्रत्येक मनुष्य दशसहस्र सवारों का समूह रखता है आप कहेंगे तो मार्ग दिखाने को चलूंगा और आपकी आज्ञा बिना न फिरूंगा अमीरने सबसे अ-धिक द्रव्य उसको दिया और उसी तरफ़ चले जब बन नांघगये और नदीके किनारे पहुँचे नदी के जलका रङ्ग हरा देखकर उस मनुष्य से पूछनेलगे कि इस नदी का जल सदैव हरा रहता है या इन्हीं दिनोंमें ऐसा बहता है? उसने कहा कि इस जल की सुन्दरता देखकर मोतीका भी पानी लज्जित होताथा सूर्य का कुण्ड इसकी स्व-च्छता के सम्मुख मलिन था लेकिन विदित होता है कि जैसे इसमें किसीने विष घोल दिया हो जो जल का स्वभाव और सूरत पलटगई है अब यह जल पीने के योग्य नहीं है मारक विषके तुल्य होगया है अमर ने अमीर से कहा कि यह काम

उसी पापी का है जिसने प्रथम आप को विष दिया है कहीं २ नये सोतों से सेना को जल प्राप्त हुआ और आवश्यकता के लिये पखालें और मशकों और चंगुलोंमें भरलिया दूसरे दिन ईश्वर २ करके इच्छित स्थानपर पहुँचे और इलाजालिवाके क़िले से समीप वास किया कारन का वृत्तान्त यह है कि बिष की गांठें नदियों और सोतों में घोरता हुआ हाम के समीप पहुँचा और नौशेरवां का पत्र देकर कहा कि हमज़ानामी अरब का बादशाह ब्रह्मपूजक अपने इष्टमित्रों को साथ लिये आता है जो कर मांगे तो न देना और जिस प्रकार उचित हो उसको और उसके सहायक लन्धौर को मारडालो या बांधलो तो तुम्हारे राज्य का तीनसाल का कर माफ़ करके और २ भी बादशाही कृपा तुम्हारे ऊपर होगी॥

यही कहतेहुए साम और महज़्ज़रींको भी जाकर समझाया और वहांसे आगे को चला और सेना को आगे भेजदिया हामने जो देखा कि अमीर की सेना बहुत है दशसहस्र सेना से मैं इससे जय न प्राप्त करसकूंगा तब अपने दोनों भाइयों को लिखा कि सेनासाहित तुम यहां आओ क्योंकि हमज़ा के साथ सेना बड़ी है अगर इसने मेरा क़िला लेलिया तो तुम्हारे क़िलों का लेना कुछ कठिन नहीं होगा इस देश में इसके समान दूसरा कोई नहीं है साम और महज़्ज़रीं व कमर ये लोग अपने भाई साम का ख़त देखकर सेनासाहित क़िले में आये प्रत्येक सलाह करनेलगे साम ने कहा हमज़ा के साथ सेना अधिकहै इसे धोखा से मारना चाहिये महज़्ज़रीं व कमर बोले कि छलसे मारना नीचों का कामहै उचित है कि तीससहस्र सवार लेकर युद्ध करें बड़े भाई हाम ने कहा कि मैं तो इस बातको पसन्द नहीं करता उचित है कि सौगात लेकर हमज़ा के समीप चलकर मिलें जो वह प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हो तो उसकी ताबेदारी कीजिये और कर दीजिये कदाचित् प्रत्येक के वार्तालाप में कुछ भेदहोगा तो पीछे जैसा उचित होगा करेंगे हमारे निकट यह बात उत्तम है और आश्चर्य नहीं कि हमज़ा बहुत प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हो क्योंकि सहरयार वग़ैरह बड़े २ अमीर उसके साथहैं और वह भी शूरता और उदारता आदि में प्रसिद्ध है और शूरबीर लोग शूरबीरों की प्रतिष्ठा करते हैं इससे वह तुम्हारी प्रतिष्ठा करेगा और हमज़ाकी बीरता प्रसिद्ध है कि जब सात देशों के महाराजाधिराज से कुछ न होसका तो हमको पत्र लिखा कि किसी प्रकार से हमज़ा को मारडालना लेकिन यह वार्ता प्रसिद्ध है कि धोखे से मारना नीचों का काम है इसलिये यह बात हमको किसी प्रकार करना उचित नहीं है उन सबको हामकी सलाह पसन्द आई और युद्ध की इच्छा निवृत्त हुई दूसरेदिन सौगात लेकर अमीर के स्थान पर गये॥

सात देशों में से इलज़ाबिया व इलाजकिया के अधिपति हाम, महज़्ज़रीं, कमर और सामका अमीर के हाथसे मुसल्मान और आधीन होना व कर देना और सेवा करना हामआदिक का॥

शीघ्रगति लेखनी जो लिखने में अति शीघ्रहै वह अमीर के मंजिलों और कूच

का बृत्तान्त यों लिखती है कि अमीर उन तीनों अधिपतियों से बड़ी कृपा करके सम्मुख हुआ और तीन दिनतक उनके लिये नाच और तमाशा कराता रहा और जब देखा कि ये लोग हमारे बश होगये हैं कहा कि बड़े सन्देह की बातहै कि तुम ऐसे बुद्धिमान् होकर ईश्वर को नहीं पूजते और अग्नि और एक पत्थर की मूर्ति जो कि मनुष्य की बनाई है पूजतेहो और उसमें किसी प्रकार की शक्ति भी नहीं है यह सुनकर वे तीनों भाई साफ़ मन से कलमा पढ़कर मुसल्मान हुए और अमीर ने प्रत्येक को ख़िलअत देकर कहा कि अब तुमलोग हमारे भाई हुए अगर ख़ज़ाना तुम लोगों का ख़ाली हो तो मैं अपने पाससे दाख़िल ख़ज़ाने सरकारी में से करदूं और तुमसे कभी एक कौड़ीभी न मांगूंगा उन लोगों ने कहा कि आपकी कृपा से ख़ज़ाना अशरफ़ी और रुपयों से भराहै अगर आज्ञा हो तो पेशगी दाख़िलकरें हम लोग हरएक प्रकार से आपकी कृपा चाहते हैं अमीर ने आज्ञा दी कि पेशगी की कुछ आवश्यकता नहीं है माल वाजबी देना उचित है और दारोग़ा दीवानख़ाने और दारोग़ा ख़ज़ाने से दाख़िला लेना चाहिये तब उन तीनों भाइयों ने उस पत्र को जो क़ारन देगया था दिखाकर पढ़वाया अमीरने उसको पढ़कर प्रथम तो क्रोध किया परन्तु फिर शोचकर कि शायद जाली हो किसीप्रकार का सन्देह न किया और पूछने लगा कि अब जो देश मिलेगा उसका और उसके स्वामी का क्या नाम है और यहांसे कितनी दूर पर है और मार्ग में कौन २ शोभायमान स्थान हैं? हाम ने कहा कि यहां से पन्द्रह मंज़िल पर अलीना नगर है और उसके स्वामी का नाम अनीसशाह है जो महाशय और उच्च पदवीवाला है अमीर ने कहा कि ईश्वर मालिक है तुम सब अपने २ देश में राज्य करो और मैं जाता हूं और परमेश्वर की कृपासे बिजय करके शीघ्रही आताहूं तब उन लोगों ने कहा कि हमलोग आपके सेवक हैं आपको माफ़ करने से भी करका रुपया हाज़िर करेंगे ख़ज़ानची को आज्ञा हो कि वह दाख़िल करके दाख़िला देवे और हमलोगों को हमराह में चलने की आज्ञा दीजिये अमीर ने बहुत उपदेश दिया पर किसी ने न माना अपने २ मन्त्रियों को राज्य में छोड़कर और कर का रुपया देकर साथ चले जिस समय कि स्थान अलीना दो कोस बाक़ी रहा अमीर घोड़े परसे उतरकर एक स्थानपर जो बड़ा शोभायमान था डेरा डाला जब अनीसशाह को ख़बर पहुँची तो वह अपनी सेना लेकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ परन्तु जब देखा कि बिजय न पाऊँगा अपने घोड़े पर से कूदकर अमीर के चरणों पर गिरा और जीव की रक्षाके लिये मुसल्मान होकर कलमा पढ़ा तब अमीर उसको अपनी सेना में लेजाकर अनेक प्रकार के बार्तालाप करनेलगा और वह पापी मनुष्य अमीर के समीप कई दिनतक रहा एक दिन संयोग पाकर प्रार्थना की कि महाराज! सेवकने एकस्थान नहानेके लिये तैयार करवाया है बिनय करताहूं कि आप एकदिन उसमें चलकर स्नानकरें कि मार्ग का श्रम दूर होजावे पहले तो अमीर ने न माना परन्तु फिर उसकी प्रार्थना करनेसे गया तो उस

स्थान को ऐसा बनवाया था कि जो कोई देखताथा वे इच्छाभी स्नान करने की इच्छा करताथा और यत्न यह किया था कि लोहेके पावेपर छत रक्खीथी और उनमें ज़ंजीरें डालीथीं कि चार आदमी चारोज़ंजीरों को छोड़देवें तो वह छत नहानेवाले के ऊपर गिरपड़े और वह दबकर मरजाय इसीप्रकार उसीदिन चार मनुष्य अतिबल-वान्को नियत करके आज्ञा दी थी कि जब हम तास दैमारें तो तुमलोग उसका शब्द सुनकर छोड़ कर भागजाना अमीर तो लन्धौर और मुक़बिल आदिक को साथ लेकर स्नान करने को गया पर अमरू और आदीम ने अमीर की आज्ञा को न माना पर अमरू वृद्धमनुष्य का भेष धारण करके उसस्थान के पीछे गया तब उन चारों मनुष्यों ने कहा कि ऐ बुड्ढे ! तू यहां से जल्द भागजा हम अभी तास का शब्द सुनकर ज़ंजीर को छोड़देवेंगे नाहक़ तूभी दबकर मरजायगा और तेरा पाप हमलोगों के ऊपर होगा यह हाल सुनकर वह लौटा और उस स्थान के दर-वाज़े पर जाकर सब हाल अमीर से अपनी भाषा में कहा तब अमीर ने बाहर निकलकर ज़ंजीर की कांटी चढ़ाकर सब अपना वस्त्र पहिना तब अनीसशाहने कहा कि इसके पीछे एकस्थानपर कुछ मेवा आदिक आप के लिये रक्खा है अमीर ने कहा कि तुम चलकर प्रत्येक के लिये भाग लगाकर रक्खो हम अपने साथियों समेत आते हैं खूब खावेंगे और खिलावेंगे अनीसशाह का उसमें जानाथा कि अमरू ने तासको दैमारा वे चारों मनुष्य ज़ंजीर छोड़कर भागगये और वह छत अनीसशाह के ऊपर गिरपड़ी और वह आपही अपनी तदबीर से मारागया अमीर ने अमरू की बुद्धिमानी की बड़ी प्रशंसा की और उसके पुत्र को सेनासमेत मुसल्मान करके महज़ूरी और क़मर को सौंपा और आज्ञा दी कि इसकी तालीम और रक्षा करो और जब अमीर ने सेनापतियों से सुना कि कारन एकपत्र बादशाह को देकर जिसमें यह लिखाथा कि अमीर और लन्धौर को किसी तरह से मारडालना देकर हलब की तरफ़ को गया है यह सुनकर बड़ा संदेह करके हलब की तरफ़ कूच किया अब और कारन का हाल यहहै कि वहांपर जाकर हदीसशाह को एक पत्र दिया और कई एक दिन के बाद कहा कि बादशाह ने मुझसे यह भी कहदिया है कि जो कोई हमज़ा और लन्धौर को मारेगा उसके उपकार से हम कभी उऋण न होंगे और यह एहसान उसका हमारे ऊपर रहेगा ऐसी २ बातें कुछ बादशाह की तरफ़ से और कुछ अपनी ओरसे कहीं और बहुत तरह से अमीर की बुराई की यह सब कहकर यूनान की तरफ़ जानेकी इच्छा की तब हदीसशाह ने कारन से कहा कि अभी तुम यूनानदेश को न जाओ हम तुम्हारे सामने हमज़ा को मैदान में मारेंगे कारन ने कहा कि यह कहने की बात है कि हमज़ा को मैदान में मारेंगे हमज़ा ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारी सेना से हारजाय और माराजाय हदीसशाह ने कहा कि अगर यह तदबीर अच्छी नहीं है तो हमने एक कुवाँ खोदवाया है उसमें अनेक २ प्रकार के हथियार हैं और जो कि बहुत तेज़ और नोकीले हैं वे खड़े हैं मैं हमज़ा को चौगान

बाज़ी के खेलमें कुयें में मारूंगा कारन ने कहा कि यह यत्न अच्छा है और इससे वह मारा जायगा यह तदबीर करके जब सेना हमज़ा की हलब के समीप पहुँची उसी समय हदीसशाह भी सौगात आदिक और तीनसाल का पेशगी कर लेकर हाज़िर हुआ और कलमा पढ़कर मुसल्मान हुआ अमीर ने उसको सबसे अधिक ख़िलअत दी चार पांच दिनतक नाचरङ्ग हुआ किया एकदिन हदीसशाह ने कहा कि मैंने आपकी शूरता की बड़ी प्रशंसा सुनी है चाहताहूं कि आप थोड़ी देरके लिये चलें और मुझे विद्या चौगानबाज़ी की सिखलावें अमीर ने कहा बहुत अच्छा सबेरे हदीसशाह ने अपने कोट में जाकर मनुष्यों से कहा कि ख़बरदार कुयेंपर इस तरह से घासजमाना कि किसी को कुयें और ख़न्दक़ का संदेह न होवे और जिस समय कि हमज़ा कुयेंमें गिरपड़े तुमलोग उसकी सेनापर चढ़ाई करके लूट पाट लेना और सबको मारडालना जब हदीसशाह अमीर को मैदान में लेगया तो एकतरफ़ हदीस की सेनाथी और एकतरफ़ अमीर की दोनों मैदान में गये और दोनोंतरफ़ के अफ़सरलोग तमाशा देखने के लिये गये हदीसशाह ने कहा कि आप चौगान लगाइये अमीर ने कहा कि हम तो कोई कार्य पहले नहीं करते और गुरू ने यह बात नहीं बताई है प्रथम तुम चौगान को (गुये) पर लगाओ पीछे मैं भी हाथमें लेकर जो कुछ जानताहूं तुमको दिखलाऊंगा तब उसने सलाम करके घोड़े को तेज़ किया और जब वह एक बाण की दूरीपर गया तो अमीरने भी चौगान (डंडा) लेकर अपने घोड़े को तेज़ किया हदीसशाह तो पीछे रहगया और अमीर आगे जिधर कुआं था बढ़गया और उसके जालपर नज़र न की स्याहकैतास नाम घोड़ा उसके समीप जाकर झुका अमीर ने कोड़ा उसके मारा तब उस घोड़े ने चाहा कि कूद जावें मगर पिछले पैर कुयें में जारहे तब अमीर उस परसे कूद कर अलग होगया और घोड़े की बाग थामकर आगे से झुकाकर बाहर निकालकर फिर सवार होते समय कारन को देख कर उसकी तरफ़ घोड़ा छोड़ा और वह पहाड़ की तरफ़ भगा अमीर भी उसके पीछे घोड़ा दौड़ाते हुए गया हदीसशाह ने जाना कि अमीर कुयें में गिरकर मरगया अपने बीस सहस्र सवार लेकर अमीर की सेनापर चढ़ाई की और बहुतसी सेना मुसल्मानों के हाथ से मारीगई और आपभी लन्धौर के हाथसे मारागया और सेना उस की भागी लन्धौर ने जब देखा कि अमीर नज़र नहीं आता घबड़ाकर अमरू से कहा कि उसका पता लगाना चाहिये अमरू स्याहकैतास नाम घोड़े के पैरों के पतेसे चला कारन एक साधु की कुटीपर जाकर उस स्थान से एक सेरवा लेकर और उसमें बिष मिलाकर उस साधुको दिया और कहा कि मेरे पीछे एक सवार आता है यह उसको देना और वह जो कुछदे लेलेना अगर उसने खाया तो सौ अशरफ़ी मैं तुम को देऊंगा और अगर कार्य मेरा पूर्ण होगया तो मैं बहुत ख़ुश करूंगा यह कहके वह पहाड़ की तरफ़ चलागया पीछेसे अमीर जो गया उसने वह सेरवा दिया अमीर ने उस सेरवे को लेकर पूछा कि मेरे आगे २ एक सवार आया है वह किस तरफ़ को

गया है उसने कहा कि सामने पहाड़ की दर में गया है उसतरफ़ राह निकलने की नहीं है और वहां शेर लागू है मनुष्य का वहां जाकर लौटना अति दुर्लभहै अमीर ने इच्छा की कि उस सेरवे को लिये उसी समय साधु ने कहा कि ऐ जवान! यद्यपि मुझे सौ अशरफ़ी इसके बदले में मिलेंगी पर तेरी सुन्दरता और स्वभाव देखकर लेने की इच्छा नहीं होती इस सेरवे में उस पहले सवार ने कुछ मिलाकर मुझे दिया था कि पीछे जो सवार आता है उसको देना अगर वह मरजायगा तो सौ अशरफ़ी मैं तुमको दूंगा तब अमीरने उस सेरवे को फेंकदिया और हज़ार अशरफ़ी के मोल का जवाहर देकर पहाड़ की तरफ़ घोड़े को दौड़ाया ज्योंहीं पहाड़पर पहुँचा कि एक बाघ उसके ऊपर आगिरा अमीर ने एक तेज़ तलवार जो मारी तो उसके एकके दो भाग होगये फिर अमीर पहाड़ के दरमें गया और देखा कि कारन एक दर में दब का पड़ा है चाहा कि खंजर मारें वह मरजावे कि इतने में उसने कहा कि अगर मुझे न मारो तो तीन वस्तु मैं तुमको देताहूं अमीर ने कहा कि क्या देता है दे थोड़ी देर इसी से जान बचा उसने एक खंजर निकालकर दिया और कहा कि यह देवबन्दी की कमरका है बड़े दुःख और यत्न से मिला है और एकबाज़ूबन्द हाथ से खोलकर दिया जिसमें बारह लाल थे और हरएक तीन २ करोड़ के थे यह दो वस्तु देकर बोला कि इस पहाड़में एक स्थानपर बहुत ख़ज़ाना है चलो वह भी बतलादूं तुम्हारी भाग का था मिला इतने में अमरू गया तब अमीर ने कारन के हाथ बांधकर अमरू को सौंपा कि देखो कहां ख़ज़ाना बतलाता है या कोई यत्न करता है अगर सही है तो उसको अपने हाथ में करो और अगर झूठ है तो इसको लेकर आओ अमरू ने कमन्द से उसके हाथ और कमर को बांधकर उसे बाहर लेकर चला तब कारन बल करने लगा कि रस्सी कमर से टूट जाय और मैं उसके हाथ से निकलजाऊं अमरू ने कहा कि क्यों बल करता है ख़ज़ाना बतलादे मैं तेरेलिये अमीर से कहकर छोड़वादूंगा कारन ने कहा कि ख़ज़ाने का नाम तो मैंने अपना ज़ीव बचाने के लिये लिया है मगर तू मुझे छोड़दे तो दोलाख अशर्फ़ी मदायन में चलकर दूंगा अमरू ने कहा कि अब मैं जीतेजी कब तुझको छोड़ताहूं कि कोई बात शत्रुता की मुझसे और अमीर से उठा नहीं रक्खी है ऐसी क़ाबू पाकर मैं तुझको क्यों छोड़ूंगा? यह कहकर खंजर कमर से निकालकर मारडाला और अमीर के समीप जाकर सब हाल कहा तब अमीर ने कहा कि तूने अच्छा कार्य किया कि रोज़ का झगड़ा मिटादिया॥

अमीर का यूनान की तरफ़ जाना, और महदमरहीम के साथ ब्याह करना॥

पुस्तक निर्माण करनेवाले उत्तम अर्थ को लेखनरूपी भूषणसे सुशोभित करते हैं उत्तम वर्णों को नये २ प्रकार से अलंकृत करके यों वर्णन करते हैं कि जब शाहज़फ़र अमीर के शीशारूपी चित्त में प्रकाशित हुए तो अमीर ने क़िले में जाकर सात दिनतक वास किया और वहीं से पांचों देशों का कर और कारन पत्र आदिक

संयुक्त हाल कारन के या और २ जो उसने किया था लिखकर मुक़बिल के हाथ बादशाह नौशेरवां के समीप भेजकर आप यूनान की तरफ़ चलकर थोड़ेदिन के बाद उसके समीप पहुँचकर बासकिया फ़रेदूंशाह बादशाह यूनान को अख़बार के द्वारा पहलेही मालूम हुआथा इस वृत्तान्त के सुनतेही कर और अपने भाइयों को साथ लेकर चला और मार्ग में अमीर से भेंटआदिक देकर मिला और साफ़ मनसे कलमा पढ़कर भाइयों समेत मुसल्मान हुआ तब अमीर ने अति प्रसन्न होकर उसको और उसके भाइयों को ख़िलअत दी और कई दिनतक उसी जङ्गल में मङ्गल रहा फ़रेदूंशाह ने एक दिन संयोग पाकर अमीर से प्रार्थना की कि सेवक को तीन कार्य करने की अति आवश्यकता है और प्रत्येक का होना अति दुर्लभ है अगर आप इन कार्यों को करदेवें तो बड़ी ही कृपा होगी अमीर ने कहा वह कैसा कार्य है ? कहो उसने बिनय करके कहा कि प्रथम कार्य तो यह है कि थोड़े दिनों से एक अजगर यहां रहता है उस के कारण से मंज़िलों की आबादी वीरान होती जाती है और लाखों रुपये का नुक़सान होता है और दूसरा कार्य यह है कि कोट के समीप एक पहाड़ है उसपर डाकूसैयदों ने अपने रहने के लिये एक स्थान बनाया है और सालभर में एकबार लूटमार करते हैं कई सहस्र मनुष्य उनके हाथ से मरते हैं तीसरा कार्य इन दोनों के होनेपर कहूंगा तब अमीर ने कहा कि प्रथम हम अज़दहे को मारेंगे और फिर कोट में सोने के लिये स्थान बनावेंगे प्रातःकाल हमारे साथ चलकर अज़दहे का स्थान बतलाकर तुम लोग अलग खड़े होकर तमाशा देखना खुसरो ने कहा कि आप सैयदोंपर क्या जावेंगे अगर आज्ञा हो तो खड़ी सवारी जाकर उसका शिर काटकर आपके समीप लाऊं अमीर ने कहा कि प्रातः-काल हम अज़दहे को मारने जायँगे तो तुम उसके मारने को जाना और मार यम-पुर को पहुँचाना अमीर तो फ़रेदूंशाह को साथ लेकर अज़दहे को मारने चला और खुसरो हिन्द असफ़भाई फ़रेदूंशाह को साथ लेकर उस जङ्गी सैयदोंपर गया जब कि अज़दहे के समीप पहुँचे फ़रेदूंशाहने घोड़ेपर से उतरकर प्रार्थना की कि आप देखें कि कोई बृक्ष आदिक बेजले नहीं हैं और सब बन और पहाड़ आदिक जलकर राख होगये हैं और जब वह अज़दहा निद्रा से रहित होकर जागता है और सांस लेता है तब यहांतक उसकी लपक आती है इस समय वह सुख नींद सोरहा है नहीं तो मनुष्य तो क्या जन्तु आदिक का भी इस स्थानपर आना अति दुर्लभ है अमीर भी घोड़ेपर से उतरकर अमर को साथ लेकर अज़दहे के मारने के लिये आरूढ़ हुआ फ़रेदूंशाह भी साथ चला समीप जाकर देखा तो एक बस्तु काले रङ्ग की बिदितहुई पर अति निकट जाने से प्रत्यक्ष हुआ कि अज़दहा पड़ा है अमीर ने कहा कि निद्रा में मारना उचित नहीं है यह तो एक केवल कीड़ाहै अमीर ने उसको जगाया उसको देखकर अज़दहे ने अपना शरीर ताड़ के बृक्ष के समान करके फुफकारता हुआ अमीर के ऊपर चला उसकी लपक से जो बृक्ष कि

हरेथे सूखगये और बहुत से भस्म होकर कोयले होगये तब अमीर ने जो एक तीर मारा उसके दोनों नेत्र फूटगये और पृथ्वीपर गिरपड़ा तब फिर अमीरने जाकर एक तलवार ऐसी मारी कि एकके दो अज़दहे होगये और उस स्थान से उठ न सका तब फ़रेदूंशाह अति प्रसन्न होकर अमीर की परिक्रमा करके सलाम किया और अमीर जिस समय कि सवार होकर क़िले में पहुँचा था उसी समय लन्धौर भी शिर लेकर पहुँचा और ख़ज़ाना जो क़िले से लूटकर लाया था अमीर के समीप लेगया फ़रेदूं शाहने यह सब रुपया और जवाहर लन्धौर को देकर नाच व रङ्ग कराने का आरम्भ किया और कई दिनतक ख़ुशी रही अन्त को फ़रेदूंशाह ने प्रार्थना की कि दो कार्य तो आपकी कृपा से पूर्ण होगये और तीसरा यह है कि मेरी बेटी के साथ ब्याह कीजिये कि सब बलवान् मनुष्यों और आपके समीप मुझ सेवक की प्रशंसा रहे और सब शत्रु भी डरें तब अमीर ने कहा कि यह कार्य तो अतिही कठिन है यह तेरा बिचार मिथ्या है क्योंकि मैं मलिकामेहरनिगार से प्रतिज्ञा करचुका हूं कि जबतक तेरे साथ ब्याह न कर लूंगा तबतक दूसरी स्त्री की तरफ़ दृष्टि न करूंगा यह सुन फ़रेदूंशाह अपनासा मुँह लेकर रहगया और अपने भाई असफ़ से एकान्त में कहा जो कदाचित् मैं अपनी बेटी के ब्याह की वार्ता अमीर से न करता तो अतिउत्तम होता और क्यों सभा में इस प्रकार लज्जित होता और सर्वत्र यह वार्ता प्रसिद्ध होती कि अमीर ने फ़रेदूंशाह को अप्रतिष्ठित जानकर उसकी बेटी के साथ ब्याह न किया ऐसे जीवन से तो मृत्यु उत्तम है यह कहकर चाहा कि एक ख़ंजर पेट में मारें और मरजायँ तब असफ़ ने उसका हाथ पकड़कर कहा कि ऐसे कार्यों का परिणाम बिचारना उचित है और इसकी प्रतिज्ञा करता हूं कि अमीरके साथ महदमरहीम का ब्याह करदूंगा और अवश्य है कि आप का कार्य सिद्ध होगा और शत्रुओं को लज्जा प्राप्तहोगी अमरू को बुलाइये तब फ़रेदूंशाह ने अमरू को बुलाकर अपने समीप अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाया और पांचसहस्र अशर्फ़ी देकर कहा कि यह मेरी प्रतिष्ठा तेरे हाथ है परमेश्वर के लिये मेरी लड़की का ब्याह अमीर के साथ कराके इस कठिनकार्य को सिद्ध करो तो दशसहस्र अशर्फ़ी और बाद ब्याह होनेके दूंगा कदाचित् ऐसा न होगा तो बिष खाकर मरजाऊंगा अमरू ने उसको समझाकर कहा कि यह कुछ बड़ी बात नहीं है आजही ब्याह होजायगा आप सन्देह न कीजिये चुपचाप ब्याह का सामान कीजिये यह कहकर अशर्फ़ियों को लेकर अपने स्थान पर जाकर अमीर से एकान्त में महदमरहीम की सुन्दरता और स्वभाव की प्रशंसा की कि अमीर को उसके सम्मुख किया अमीर ने कहा कि इस फ़रेदूंशाहकी लड़की से ब्याह अभी करते पर मलिका को क्या जवाब दूंगा कि मैंने उस से प्रतिज्ञा की है जबतक तेरे साथ ब्याह न करूंगा तबतक दूसरी स्त्रीपर दृष्टि न करूंगा परीभी जो सम्मुख आवेगी उसको कुरूप जानूंगा अमरू ने कहा कि ऐ अमीर! कहीं जवान भी ऐसी बातों में सच्चा रहता है स्त्रियों से इससे अधिक भी क़रार करते हैं और

पूर्ण नहीं होते फिर वह मनुष्य जो देश और प्रजा का अधिपति हो उसकी प्रतिज्ञा ऐसी होती है आपने तमाशबीनों की वार्ता नहीं सुनी शेर (तुम नहीं और सही और नहीं और सही) आप खुशीसे ब्याह कीजिये और मलिकामेहरनिगार का वृत्तान्त वह जाने या मैं अगर वह आपसे कुछ कहे तो आप मेरा नाम लेलीजियेगा मैं उसको समझादूंगा तब अमीर ने अमरू के कहनेपर उसके साथ ब्याह करनेका क़रार किया परन्तु कहा कि मैं जबतक मलकामेहरनिगारके साथ ब्याह न करलूंगा तबतक उसके साथ न रहूंगा फ़रेदूंशाहने इस बातको अति प्रसन्नता के साथ मान लिया और उसी दिन तिलक हुआ और ब्याह का सामान होनेलगा फ़रेदूंशाह ने अमरू को दशसहस्र अशर्फ़ी के सिवाय एक ख़िलअत जड़ाऊ की देकर कहा कि ऐ ख़्वाजः! मैं तेरी सेवा सदैव इसी प्रकार से किया करूंगा अमरू तो अति लुब्धही था फ़रेदूंशाह को भी दिलासा दिया और अमीर से इस प्रकार से उसकी सुन्दरता की प्रशंसा की कि अमीर ने दूसरे दिनकी रात्रिको सर्वपूजन आदि करके महदमरहीम के साथ ब्याह करके पन्द्रह दिवसतक उसके साथ वास किया सोलहवें दिन महदमरहीम को उन्हीं बारह लालों में से जो कारन से प्राप्त हुए थे देकर महल से बाहर निकाला उसके दर्शन की इच्छा करनेवाले बहुत से मनुष्य इकट्ठा हुए और फ़रेदूंशाह से कर का रुपया लेकर साथ उन वस्तुओं के जो लन्धौर लूटकर लाया था सब लेकर नौशेरवांके समीप भेजकर अमरू कोभी साथ किया और अपने यात्रा की आज्ञा मिश्र की तरफ़ दी॥

जाना अमीर का मिश्र देश को और क़ैद होना बादशाह के हाथ दग़ा से॥

नगर के लेखकों के लिखने से प्रसिद्ध होता है कि जिस समय खुसरो अमरू के साथ मदायन के समीप पहुँचा तब बादशाह नौशेरवां ने सुनकर सरदारों को उसकी अगवानी के लिये भेजा और आने के समय बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर देरतक अमीर का वृत्तान्त पूछतारहा तब थोड़े काल के व्यतीत होनेपर सब करका रुपया व पत्र और सवग़ात आदिक नौशेरवां के समीप रखकर सर्व वृत्तान्त कारन व अनीसशाह और हदीसशाह आदिक की शत्रुता का बयान किया और अमीर की ओर से प्रार्थना की कि अमीर ने कहा है कि बादशाह की आज्ञा से बाहर मैं नहीं हूं और जो बादशाह आज्ञा देवें तो मैं अग्नि में भी कूदपरूं पर प्रतिष्ठा में भेद न होवे तब बादशाह ने करका रुपया खज़ाने में भेजकर खुसरो और अमरू को ख़िलअत देकर आज्ञा दी कि तुम लोग बराबर हाज़िर रहाकरो और अपने २ स्थानपर बैठाकरो खुसरो तो अपने स्थानपर जाकर स्थित हुआ परन्तु अमरू उठकर सबसतानहरीम के दरवाज़े तक गया था कि तुरन्तही मलकामेहरनिगार ने सुनकर बुलाया और अमीर का वृत्तान्त पूछनेलगी अमरू ने अमीर का पत्र देकर सब वृत्तान्त जो कुछ उसके सामने हुआथा कहा कि मलका अमीर का चित्त आपही में लगाहै जो समय व्यतीत होता है वह आपही के याद में गुज़रता

है मलका बोली कि ऐ ख़्वाजे ! अब तो बिरह ऐसा सताताहै कि दिन व रात्रि अति कठिनता से व्यतीत होती है॥

चौपाई। तेरे ध्यान माहिं दिन बीतै। रात्रि स्वप्न में तुहीं प्रतीतै॥

दोहा। हमज़ा तेरे वियोग में, प्रान न होत पयान। हृदयसों बाहर जान को, औठन करते थान॥

चौपाई। आवै मृत्यु तो मैं जीजाऊं। अभयप्रद दुख बिरह से पाऊं॥

हे ईश्वर ! यातो साहबक़िरां को लेआओ या मृत्यु दे कि इस दुःखसे छूटूं अमर ने कहा कि ऐ मलका ! बहुत गई थोड़ी रही अब किसी प्रकार का संदेह करना अनुचित है जिस ईश्वर ने उनको इतनी आपत्तियों से बचाया है और तुमको एक पापी के हाथ से छोड़ाया है वही एकदिन यह भी करेगा कि तुम और अमीर अति प्रसन्नता के साथ संयुक्तहोगी अब केवल मिश्र का कर लेना शेष था वह भी ईश्वर की कृपा से अति शीघ्र पूर्ण होगया होगा और आश्चर्य नहीं है कि वह इस तरफ़ चले हों इसी प्रकार से मलका की दिलजमई करके बाहर निकलकर बहराम, ख़ाक़ान और मुक़बिल आदिक से मिलने को गया तब मुक़बिल और बहराम अति प्रसन्नता के साथ मिलकर नाच रङ्ग आदिक करवाने लगे इसके संपूर्ण होने पर अमरू ने खुसरो बहराम और मुक़बिल आदिक से कहा कि तुमलोग प्रत्येक दिन बादशाह की सभा में जाया करना परन्तु अपने कौल-क़रारों से ख़बरदार रहना क्योंकि बादशाह की कृपा और शत्रुता का कुछ ठीक नहीं है उसका मन स्थिर नहीं रहता और बुजुरुचमेहर के समीप सदैव जाया करना क्योंकि वह अमीर का एक मित्र और शुभचिन्तक है और उसकी बातों पर ध्यान रखना यह सब उपदेश देकर कहा कि मैं तो अब मक्का को जाता हूं और अति शीघ्र अमीर की ख़बर लाताहूं सब वस्त्र जिस प्रकार से यात्री लोग पहिनते हैं धारण करके मक्के की तरफ़ चला॥

अब और वृत्तान्त अमीर का यह सुनाता हूं कि जब अमीर मिश्रके समीप पहुंचा तो नीलनदी के निकट डेरा डालकर सब दिन बातों में बिताया और जब कि रात्रि हुई उस समय फ़राशों ने बिल्लौरी झाड़ और फ़रसी आदिक प्रत्येक स्थान पर रक्खी और झाड़ व फ़ानूस आदिक में मोम की बत्तियां लगवाकर प्रज्वलित करवाया और फिर जो नदी की तरफ़ चिराग़ उड़वा दिया तो उसके कारण करके और अधिक तमाशा होगया और उसकी परछाहीं जो जल में पड़ी तो एक दूसरी शभा बँधगई इसके पश्चात् अमीर शराब और मांस अपने साथियों समेत खाकर रात्रिभर नाच और गाना आदिक देखता और सुनतारहा जब कि यह वृत्तान्त मिश्र के बादशाह को प्रकट हुआ कि अमीरहमज़ा नौशेरवां बादशाह की ओरसे कर लेने को साथ अपनी सेना के आकर नीलनदी के निकट स्थित है उसी समय क़ारवां नामे सेनापति को बुलाकर सब वृत्तान्त कहकर सम्मति पूछने लगा कि हमज़ा आया है क्या करना उचित है ? सेनापति ने जो अति बुद्धिमान् था कहा कि उस की शूरता आदि का वृत्तान्त तो आपको अख़बार के द्वारा विज्ञात होचुका है वह

अति बलवान् और युद्ध करनेवाला है ऐसे मनुष्य से युद्ध करने का यत्न करना अपने हाथ से अपना शिर काटना है इस कारण से मेरी बुद्धि में तो यही आता है कि आप चलकर अगवानी मिल सौग़ात आदिक देवें और उसकी प्रबलता और शीलता तो जगत् में प्रसिद्ध है जो आपका स्वभाव और प्रकृति अच्छे प्रकार से जानजायगा तो निश्चय है कि आपके ऊपर अति कृपा करेगा मिश्र के बादशाह ने अति क्रोधित होकर कहा कि तेरी सलाह उत्तम नहीं है जो मैंने विचारा है वही उत्तम होगी तब उसने बिचारा कि यह इस समय मिश्र का स्वामी होनेके कारण यद्यपि यह बेसामान है परन्तु अपने को सहित सामान के जानता है इस समय जो परमेश्वर भी समझावें तो अपनी बुद्धि के सामने कुछ न मानेगा यह विचारकर चुप होरहा और कहा कि अवश्य यह माराजायगा॥

प्रातःकाल मिश्र का बादशाह तीनसाल का कर और सौग़ात आदिक लेकर अमीर के समीप जाकर मिला और सब उसके समीप रखकर प्रार्थना की कि आप ने नगर होते बन में क्यों बास किया है? कि हर प्रकार से दुःख प्राप्त होता है आप नगर में चलकर सेवक के स्थान में बास करें अमीर ने खिलअत देकर कहा कि मित्रोंका स्थान मित्रोंही के लिये है हमको किसी प्रकार का सन्देह तुम्हारे स्थान पर चलने का नहीं है यह कहकर उठ खड़ाहुआ और सेना को उसी स्थानपर छोड़कर साथ अफ़सरों के चला ज्योंहीं अमीर नगर में पहुँचा सब छोटे बड़े इसके देखने के लिये दौड़े और अमीर का रूप देखकर सबलोग आशीर्बाद देनेलगे॥

दोहा। ईश्वर स्वाँहि यहि जगत में, राखै सपौतें युक्त। सफल दृष्टि नव भूति अरु, नववय अरु उयुक्त॥

अन्त को अमीर यूनान में जाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठा और सरदारलोग कुरसियों पर बैठे तब मिश्र के बादशाह नें साकियों को शराब लेआने की आज्ञा दी और नाच रङ्ग की सभा करके शराब पिलाने का आरम्भ किया और आप टहलू के समान सब कार्य करता रहा और यदि अमीर बैठने को कहता तो हाथ जोड़कर विनय करता कि आपकी टहल करना मुझे उचित है और बड़ी भाग्य थी कि आप आये अमीर उस की मीठी २ बातों से अति प्रसन्न होकर निस्संदेह होगये। रात्रि के समय उस पापी बादशाह ने अपने हाथ से बेहोश करनेवाली मदिरा साकियों को देकर आज्ञा दी कि अब जो मदिरा दीजावे वह इसी में से देना तब उन लोगों ने वही शराब गिलासों और सुराहियों में भर भरकर देना शुरू किया अमीर ने पहले ही गिलास पीनेपर पूछा कि क्या यह दूसरी मदिरा है बादशाह मिश्र ने हाथ जोड़कर कहाकि यह शराब आपही के निमित्त सेवक ने मँगवाई है और इससे उत्तम मदिरा दूसरी नहीं होती पर अमीर ने अपनी अवस्थाभर में दारू बदहोशी की नहीं पी उसकी बातों को सत्य जाना चार पांच गिलास पीने के पश्चात् अमीर के साथी झुक झुककर गिरनेलगे जब अमीरने उनका यह बृत्तान्त देखा तब उठने की इच्छा की तो खुद भी पृथ्वीपर गिरपड़ा बादशाह मिश्र ने अपने वज़ीर से कहा

कि देखो हमने यही विचार कियाथा उसी समय आज्ञा दी अतिशीघ्र जल्लादों को बुलाओ कि हमज़ा का शिर साथ हमराहियों के काटकर शुतरसवार को दे कि वह अतिशीघ्र नौशेरवां बादशाह के समीप पहुँचावे तब फिर कारवां ने हाथ जोड़कर बिनय की कि सत्य है कि आपने ऐसे बलवान् शत्रु को यत्न से अति शीघ्र अपने आधीन करलिया है परन्तु मेरी बुद्धि में आता है कि अभी हमज़ा का मारना उचित नहीं है क्योंकि हमज़ा के ऐसे २ मित्र हैं कि हमज़ा के मारने का हाल सुनकर मिश्र की मिट्टीतक खोदकर उड़ादेंगे जिनमें से एक खुसरो जिसके साथ लाख सवार और बहुत से पैदल जो अपने जीवपर खेलते हैं और सब बड़े २ बली और शूरवीर हैं दूसरे बहरामशाह जिसके साथ कई लाख चीनी और खाकानी सवार और बहुत पैदल हैं और हरएक तलवार बहादुर हैं तीसरे मुक़बिल जिसके साथ कई सहस्र तीरन्दाज़ हैं चौथे अमरू जो सबसे बलवान् और शूरवीर है और ऊँटपर अकेला रहता है इन सब बातों से उचित है कि इन लोगों को क़ैद रखिये और बादशाह नौशेरवां को पत्र भेजिये जैसी वह आज्ञा देवे वैसा कीजियेगा जो बादशाह हमज़ा को मारने की आज्ञा देवे तो मारकर अपने हौसिले को मिटाइयेगा मिश्र के बादशाहने कहा कि यह बात अति उत्तम है और मैंने भी यही विचारा है परन्तु केवल इतनीही बात का संदेह है कि जबतक दूत आवे जायगा जो इसीसमय में अमरू आगया और हमज़ा को छुड़ा लेगया तो सब परिश्रम बृथा जायगा और तब हमज़ा किसी प्रकार से हमको उठा न रक्खेगा और दुबारा फ़साद उत्पन्न होगा कारवां ने कहा मैं पत्र का जवाब दो दिन में मँगा सक्ताहूं परन्तु जो बादशाह जवाब लिखने में बिलम्ब न करें और किसी प्रकार से मार्ग में आपत्ति न पड़े मेरे घर में एक जोड़ा मदायन के कबूतर का है आप पत्र लिख दीजिये मैं उसके गले में बांधकर प्रातःकाल यहां से छोडूंगा सन्ध्या को वहां पहुँचेगा जो बादशाह ने शीघ्रही जवाब लिखा तो दूसरे दिन यहां लेआवेगा बादशाहने उसकी बुद्धि की बड़ी प्रशंसा करके लुहारोंको बुलाकर आज्ञा दी कि हमज़ा सहित उसके साथियों के पैरों में बेड़ी डालकर चाह यूसुफ़ में क़ैद करो और सरहङ्ग मिश्र के सरदार को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम साथ अपने सिपाहियों के इन क़ैदियोंकी खबरदारी में रहो और किसी भेद और मेल की बातें न कहना नहीं तो अमरू आकर इनको छोड़ा लेजायगा और परिश्रम बृथा जायगा और लज्जा प्राप्त होगी और नगर में ढिंढोरा पिटवादिया कि जो कोई हमज़ा का नामलेगा वह बिना बादशाह की आज्ञा के मारडाला जा। नगरवासियों ने डरके मारे मुसल्मानों का नाम लेना छोड़ दिया इस प्रकार से [illegible] करने के पश्चात् दूसरे दिन एकपत्र नौशेरवां के नाम लिखकर कबूतर के गले में बांधकर मदायन की तरफ़ उड़ादिया वह बायुके घोड़ेपर सवार होकर उसीतरफ़को

कबूतर का मदायन में पत्र लेकर पहुँचना और मुक़बिल आदिक के मारने का यत्न करना और अमरू का आजाना॥

आशिक़ों ने जिनकी वाक्य रचना में सुमधुरभाषी पक्षियों की ऐसी मा

और इश्क़बाज़ लोग कि जिनके बिचारांश की उच्चता आकाशगामियों की ऐसी है वररांररूपी पक्षी को पंक्तिरूपी पींजरे में बन्द करके तमाशा देखनेवालों को देखाते हैं और नई २ भांति के आशयों को यों वर्णन करते हैं कि कबूतर ने मिश्र से छूटकर जो सन्नाटा भरा तो शाम न होने पाई कि मदायन में पहुँचकर बादशाह नौशेरवां के कबूतरों की ठाटपर जाकर दम लिया कबूतरबाज़ ने नया कबूतर देखकर अपने कबूतरों को खोलकर जाल फैलाकर दाना फेंका और कटोरे का पानी उछाला जोकि वह कबूतर तमाम दिन का भूखा प्यासा था सबसे पहले जाल में जारहा कबूतरबाज़ ने दौड़कर उसको पकड़ा तो देखा कि एक पत्र उसके गले में बांधा है पत्रको खोलकर बख़्तक के समीप लेगया और कहा कि इस समय मैंने एक कबूतर पकड़ा है उसी के गले में यह पत्र बँधा था सो उसको मैं आपके समीप लायाहूं बख़्तक ने उस पत्रको जो कबूतर के परों से बँधा था पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होकर बादशाह को दिया उस पत्र के पढ़ने से बादशाह भी प्रसन्न हुआ बख़्तक ने कहा अब अति शीघ्रही हमज़ा के मारने की आज्ञा लिखकर पत्र को दीजिये कि जो मेरे निकट एक कबूतर मिश्र का है उसके गले में पत्र बांधकर प्रातःकाल उड़ादूंगा निश्चय है कि सन्ध्यातक लिखनेवाले के पास पहुँच जायगा और इसमें किसी दूसरे की सम्मति न लीजिये नौशेरवां ने कहा ऐसे २ कार्यों में बुज़ुरुचमेहर की सम्मति लेना अवश्य है क्योंकि मुझको पिता की आज्ञा पालनी ज़रूर है तब वह बोला कि अति उत्तम है परन्तु बुज़ुरुचमेहर मुसल्मान है अपनी जाति का पक्ष अवश्य करेगा और हमज़ा ऐसे बलवान् का बारबार वश में आना कठिन है बादशाह ने उत्तर दिया कि इसी बात में बुज़ुरुचमेहर की भी परीक्षा होजायगी और विचार भी प्रकट होजायगा यह कहकर बुज़ुरुचमेहर को बुलाकर पत्र दिया पत्र को देखते ही विक्षिप्त होकर अपने चित्त में कहा कि बड़े आश्चर्य की बात हुई परन्तु स्वस्थ होकर कहा कि परमेश्वर आपका कार्य सिद्ध करे कि आपभी अलग रहे और सब सन्देह मिट जायगा परन्तु अभी हमज़ा के मारने की आज्ञा देना उचित नहीं है कदाचित् यह वृत्तान्त लन्धौर बहराम व मुक़बिल तक प्रगट होगा तो वे मदायन के सम्पूर्ण जीवों का नाश करदेंगे और मिश्र की जो दशा करेंगे उसको परमेश्वर जाने प्रथम तो आप इन लोगों का यत्न कीजिये तत्पश्चात् हमज़ा के मारने की आज्ञा दीजिये बख़्तक बोला कि इन लोगों का मारना कुछ बड़ी बात नहीं है कल जिस समय वे लोग सभा में आवें उस समय उनको शराब बेहोशी की पिलाकर पकड़ लीजिये तत्पश्चात् मिश्र के बादशाह को हमज़ा के मारने के वास्ते आज्ञा लिखकर उसी कबूतर के गले में जो आप के पास है बाँधकर उड़ा दीजिये और जब हमज़ा का शिर आवे तब लन्धौर आदिकों भी मारकर सदैव के लिये अपने देश के उपद्रव मिटादें नौशेरवां को यह सम्मति अति पसन्द आई और बख़्तक ने उसकी बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की जोकि बख़्तक बुज़ुरुचमेहर को अति ईश्वर का

भेक्क जानता था न तो आप उस रात्रि को अपने स्थान को गया और बादशाह से कहकर बुजुरुच्चमेहरको भी न जानेदिया प्रातःकाल जब सभाहुई तो लन्धौर वहराम व मुक्कविल भी यथोचित् सभा में आके अपने २ स्थानपर बैठे बादशाह उस दिन अति प्रसन्नता से उनके सम्मुख होकर उनको बिष मिली मदिरा पिलानेलगा तब पोर्तुगालीय व फिरंगी बेहोश होकर गिरनेलगे और बुजुरुच्चमेहर ने आंखें छिपा कर लन्धौर आदिक को मदिरा पीने से बहुत निषेध किया परन्तु उन लोगों ने कुछ न समझा केवल मुक्कविल दो गिलास मदिरा पीकर शिर की पीड़ा का बहाना करके सभासे उठगया और गिरता पड़ता बुजुरुच्चमेहर के स्थानपर जाकर पड़ा और लन्धौर व बहराम मदिरा पीकर अचेत हो कुरसियों पर से गिपरड़े तब बादशाह ने अति शीघ्रता से पैरों में बेड़ियां गले में तौक़ कमर में जंजीर आदि से बांध कारागार में भेजकर मिश्र के बादशाह को यह पत्र लिखा कि हमज़ा का शिर काट कर अति शीघ्रता से हमारे समीप भेजदो यह लिखकर बख़्तक को दिया कि प्रातः काल कबूतर के गले में बांधकर उड़ादेना और इसभेद को किसी से न कहना यह आज्ञा देकर बादशाह दरबार से उठकर महल में गये और बुजुरुच्चमेहर ने अपने स्थानपर आकर देखा तो मुक्कविल दारू के नशासे मुरदेके समान पड़ा है उसको चैतन्य करके सब वृत्तान्त सुनाया तब मुक्कविल हाय २ करनेलगा तब बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि हाय २ करने से कुछ न होगा इसका उपाय करना चाहिये तुम हमारी ऊँटनीपर सवार होकर दौड़ो और मार्ग में किसी यत्न से कबूतर को मारडालो उसी के मारने से सब बातें है यही उपाय हमारे निकट उचित है मुक्कविल उसी समय सवार होकर निकला बुजुरुच्चमेहर ने रमल से प्रश्न उठाया तो मालूम हुआ कि यह कार्य केवल अमरूही से पूर्ण होगा और बिना उसके कुछ न होगा तब बुजुरुच्चमेहर बड़े संदेह में होकर बाहर खड़ा था उसके बड़े पुत्र ने कहा कि आप किस संदेह में हैं तब बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि तू कुरिया पहिनकर मुझको बतला कि किस संदेह में हूं तब उसने बतलाया कि आप किसी मनुष्य के आने के संदेह में हैं वह शाम तक आपके समीप अवश्य पहुंचेगा तब खुद उसने शकल कुरिया की मिलाकर देखी और अति प्रसन्न होकर नौकर से कहा कि देख कौन मनुष्य दरवाजे पर खड़ा है और उसकी सूरत शकल किस प्रकार की है उसने आकर कहा कि एक मनुष्य रंगीन पोशाक पहिने और सफ़ेद दाढ़ी का खड़ा है और यह कहता है कि ख़्वाजे को मेरा सलाम कहो और उसको यहां भेजदो यह सुनकर नंगे पैर दौड़कर अमरू को घरमें लाया और सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि जो तूने कबूतर को मार्ग में न मारा तो अच्छा नहीं हमज़ा कल मारा जायगा यह सुनकर अमरू रोनेलगा और कहा कि ऐ ख़्वाजे ! मैं किस प्रकार से सहस्रकोस एक दिन में जासक्ताहूं ? मेरे न कबूतर के समान बाल व पर हैं कि उड़कर चलाजाऊं तब बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि ऐ अमरू ! मैंने तेरी कुण्डली में देखा कि तीनबार तू

अपनी अवस्था में ऐसा दौड़ेगा कि न कोई दौड़ा है न दौड़ सकेगा प्रथम तो इस कबूतर के साथ सहस्रकोस एकदिन में जायगा दूसरे जब अमीर के शत्रु लोग चोब अक़ाबीन पर खींचेंगे तो ग्यारह सहस्रकोस बारह दिन में जाकर मुसलमान सरदारों को जमा करेगा तीसरे हमजा के पुत्र के लिये सिकन्दर के बन में सात सहस्र कोस सातदिन में जायगा और किसी समय मार्ग में न थकेगा अमरू ने कहा कि ऐ ख़्वाजे! बड़े रञ्ज की बात सुनाई कि मुझे अवस्थाभर दौड़ते ही व्यतीत होगा ख़्वाजे ने कहा कि प्रसन्न होकि इस दौड़ धूप में इतनी द्रव्य प्राप्त होगी जो किसी बादशाह ने भी न देखी होगी इसके पश्चात् बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि अब देरी न कर मुक़बिल को भी मैंने सांड़िनीपर सवार कराकर भेजा है मार्ग में तुमको वह मिलेगा और निश्चय है कि अतिशीघ्र तुम उसके समीप पहुँचोगे अमरू ने बुज़ुरुचमेहर से बिदा होकर हिन्द और चीन के अफ़सरों के समीप आकर कहा कि तुम लोगों को यहाँ बास करना उचित नहीं है तुमलोग जाकर बेशेफ़ेज में छावनी करो और ईश्वर की कृपा के आश्रित होकर देखो क्या २ रचना दिखाई पड़ती है यह कहकर कबूतर के मारने के लिये चला॥

जाना अमरू का मिश्र को कबूतर के पीछे और मारना उसका मिश्र के दर्वाज़ेपर और छुड़ाना अमीर का कारागार से॥

लेखनीरूपी पक्षिणी काग़ज़रूपी बिस्तृत मैदान में यों गूंजरही है कि जब सुबह का डंका बजा उसी समय अमरू उठकर बादशाह के कबूतरख़ाने के समीप जाकर खड़ाहुआ और जिस समय कि बख़्तक ने पत्र कबूतर के गले में बांधकर मिश्र की तरफ़ ठाटपर से उड़ाया उसी समय अमरू ने बख़्तक से कहा कि जो हमजा या उसके साथियों का एकबाल भी बिखरेगा तो तू तो क्या नौशेरवांतक मारेजायँगे और जो इसमें शरीक हैं उनके बालबच्चे भी न बचेंगे इस समय तो तेरे कबूतरके शिकार को जाताहूं देख तुझको क्या ख़राब दिन दिखलाताहूं और जिस समय बख़्तक ने कबूतर को मिश्र की तरफ़ उड़ाया उसी समय अमरू भी कबूतरके पीछे परमेश्वर २ कहता हुआ उड़ाचलाजाता था और जहां कहीं नदी नाले आदिक पड़ते थे कूदकर पार होजाता था और किसी रोधक बस्तु को कुछ न समझता था बहरी के सदृश कबूतर के पीछे चलाजाता था अब थोड़ा बृत्तान्त कृतज्ञ मुक़बिल का इस प्रकार बर्णन करताहूं कि जब वह साँड़िनीपर सवार होकर चला तो सत्रह कोसतक निश्चिन्त चलागया परन्तु एक नहर का जल मोती से भी अतिस्वच्छ देखकर साँड़िनी से उतरकर साँड़िनी को बनमें चरने के लिये छोड़दिया और आप कमर में जो रोटी बांधी थी उसको खोलकर खानेलगा संयोगसे जो उस बन में घियाबिषकी जड़ी बहुत जमीहुई थी ऊंटनी ने जो खाई शीघ्रही मरगई मुक़बिल अति बिकल होकर पैदर चला और कई कोसतक गया पांव कि उसके शिथिल होगये लाचार हो कर एक बृक्ष के नीचे बैठकर रोते २ बिकल होगया इतने में अमरू जो कबूतर का

पीछा किये चलाजाता था मार्ग में मरीहुई साँड़िनी देखकर समझा कि यह वही साँड़िनी है जिसपर चढ़कर मुक़बिल आया था ज्योंहीं थोड़ीदूर आगे गया देखा कि पैर सूजने से मुक़बिल एक वृक्ष के नीचे बिकल पड़ा है अति शीघ्रता के साथ जल लेकर उसके मुखमें डाला तब मुक़बिल के नेत्र खुलगये और रोनेलगा अमरू ने कहा कि यह रोने का समय नहीं है शीघ्र मेरे कन्धेपर सवार हो किसीप्रकार इस कबूतर का शिकार कर मुक़बिल तीर को कमानपर चढ़ाकर अमरू के कन्धेपर सवारहुआ तब अमरू अति शीघ्रता के साथ उड़ताहुआ वहांसे चला कभी तो कबूतर मुझसे आगे और कभी मैं कबूतर से आगे होजाताथा अभीतक सूर्य न अस्तहुए थे कि कबूतर मिश्र के क़िले की दीवार के समीप पहुँचकर चाहताथा कि भीतर जाऊं कि मुक़बिल ने अपने सफ़ल बाण से मारकर गिरादिया अमरू ने उसके गलेसे पत्र खोल कर पढ़ा और अमीर के दिखलाने के वास्ते पत्र को अपने जेब में रखलिया और कबूतर को मारकर उसका मांस मुक़बिल के खाने को दिया और मुक़बिल समेत जहां मुसल्मानोंकी सेना पड़ी थी जाकर पहुँचा तब सुल्तानबख़्त मग़रबी अमरू को देखकर रोने लगा अमरू ने उसके आंसू अपने रूमाल से पोंछकर कहा कि अब कुछ सन्देहकी बात नहीं है परमेश्वर चाहता है तो शीघ्र अमीर को छुड़ाकर लाता हूं और तुम सबको दिखाताहूं सो ईश्वर ने चाहा तो मैं अमीर को इस दुःख से छुड़ाकर मिश्र के मक्कार बादशाह को कैसे २ तमाशे दिखलाता हूं जोकि अमरू मार्ग का थका था रातभर बेहोश होकर पड़ारहा जिससमय अरुणोदय हुआ और सूर्य प्रकट हुए उसी समय अरबी का वेषधर मिश्र में जाकर देरतक फिरा लेकिन अमीर की कुछ चर्चा कहीं न सुनी सन्ध्यासमय देखाकि एक भिश्ती कन्धेपर मशक रक्खे प्यासों को पानी पिलारहा है मालूम हुआ कि यह मनुष्य बुद्धिमान् और बृद्ध है अमरू ने उससे जल मांगा उसने कटोराभर जल अमरू के पीनेको दिया अमरू ने कुछ जल पिया और कुछ फेंककर कटोरे को अपने झोले में रखकर भागा भिश्ती भी उसके पीछे यह कहताहुआ दौड़ा कि कहां का उठाईगीरहै जो मेरा कटोरा लिये भगाजाता है चौकसे निकल अमरू खड़ा होगया तब भिश्ती ने अमरू के हाथ से कटोरा छीन लिया और चौक की तरफ़ चला तब अमरू उसके दोनों हाथ पकड़ कर एकान्त में लेजाकर पूछने लगा कि ऐ भिश्ती ! मिश्रके बादशाह ने अमीरहमज़ा को कहां क़ैद कररक्खा है वह बेचारा किस आफ़त में फँसा है ? तब उस भिश्ती ने अमरू के हाथ पकड़कर चिल्लाना आरम्भ किया कि दौड़ो २ मैंने अमरू को पकड़ाहै चारोंतरफ़ से लोग उसके पकड़ने को दौड़े अमरू ने अपने चित्त में बड़ा आश्चर्य किया कि इस भिश्ती ने मुझको कैसे पहिंचाना अति शीघ्रता से उसके हाथों को अपने दांतों से काटकर छुड़ाया और बलसे कूदकर एक ऊंचे स्थानपर चढ़कर कोठों २ कूदकर दूर निकल गया जब यह ख़बर सरहंग मिश्रतक पहुँची तब वह अपने शागिर्दों समेत चारोंतरफ़ ढूँढ़ने लगा जब पता न मिला तो अपने

शागिर्दोंको आज्ञा दी कि जो कोई नया मनुष्य मिले उसीको पकड़लाओ वही अमरू नामवर है आख़िर को अमरू ने चलते फिरते एक तरफ़ देखा कि एक तकिया लगी है उसपर एक अन्धा फ़क़ीर बैठा है अमरू एक खोटा पैसा देकर बैठगया वह आशीर्वाद देनेलगा तब अमरू जाकर उससे हमज़ा का हाल पूछनेलगा वह अमरू का दामन पकड़कर सरहंगमिश्र की दोहाई देनेलगा तब अमरू ने अपने चित्त में सन्देह करके विचार किया कि इस अन्धे ने किसतरह से मुझे पहिंचाना वहां भी मनुष्य हरतरफ़ से जमा होगये और अमरू के पकड़ने की यत्न करनेलगे अमरू वहां से अपने दामन को काटकर भागगया इसी समय में जब रात्रि हुई और पहरा फिरने लगा तब अमरू मीरआशक़ के डरसे रात्रि भर एक कन्दरा में रहकर न कुछ भोजन किया न जल पिया सवेरा होतेही एक सौदागर का भेष धारण करके इधर उधर फिरते २ कोतवाली के समीप जा निकला उस समय सरहंगमिश्र पोशाक पहिने कुरसी पर बैठा हुआ अपने साथियों के साथ तमाशा देखरहा था अमरू भी मार्ग में खड़ा होकर तमाशा देखने लगा सरहंगमिश्र और अमरू की दृष्टि एक होगई समीप आकर पूछनेलगा कि आप कौन हैं और कहां से आते हैं आपका नाम क्या है और इस नगर में किस प्रकार से आये हैं? अमरू ने उत्तर दिया कि मैं सौदागरहूं चीन में मेरा स्थान है आपके नगर का नाम सुनकर आयाहूं नगर के दरवाज़ेपर उतराहूं नाम मेरा (ख़्वाजेतयुफ़ुस विनसायूस विन सरबोस विनताक़, विनतमतराक़ वाजरगान है) सरहंग ने कहा कि मैंने आज के सिवाय और कभी ऐसा नाम नहीं सुनाहै अपने सिपाहियों में से दोको बुलाकर आज्ञा दी कि इसके साथ जाकर देखआओ कि कौन २ वस्तु इनकी दुकान पर है ख़्वाज़े ने कहा कि यह मसल सही है सही दूर की ढ़ोल सोहावनी होती है मैं अपने नगर में सुनता था कि मिश्र एक उत्तम स्थान है और वहां हरप्रकार के मनुष्यों का गुज़र है और माल व असबाब की रक्षा होती है परन्तु बड़े सन्देह की बात है कि राजा के मनुष्य सौदागरों की तलाशी लिया करते हैं और सौदागरों और यात्रियों को वे प्रतिष्ठित जानते हैं सरहंगमिश्रने कहा यह सत्य है इस नगर में हरप्रकार से रक्षा जीव वस्तु की होती है और मैं जो आपके साथ मनुष्य भेजताहूं तो इसकारण करके कि रात्रि को पहरेवाला आप के स्थान पर वास्ते रक्षा के भेजूंगा अमरू ने क़हा कि जो यह है तो अति उत्तम है यह कहकर दोनोंको साथ लेकर चला॥

मित्रता करना अमरू का सरहंगमिश्र के शागिर्दों के साथ और बाज़ी लेजाना उनदोनों मक्कारों से॥

अख़बारनवीस और बहुतसे बुद्धिमान् लोग यों लिखते हैं कि जब अमरू उन दोनों मनुष्यों को साथ लेकर दोपहरतक इधर उधर स्थानों पर फिरा किया तब उनलोगों ने कहा कि यह बतलाइये कि आप किस स्थान पर स्थित हैं और इस प्रकार से आप क्यों सन्देह करतेहैं? अमरू ने कहा कि नाम उस दरवाज़े का अमनहै और मैं उसकी रास्ता भूलगया हूं ईश्वर जाने वह रास्ता कहां है दोनों मनुष्य बोले

कि आपने प्रथम ही क्यों न कहा कि आपको पहुँचाकर हमभी अपने स्थान पर ठढे २ चलेजाते अब चलिये आपको उस स्थानपर पहुँचादेताहूं तब अमरू ने कहा कि अब दोपहर हुआ है अभीतक न कुछ भोजन कियाहै न जल पियाहै मारे क्षुधा के मरे जाते हैं उन लोगोंने कहा कि यहां से बहुत समीप बाज़ार है वहां चलकर भोजन लेकर खाइये और स्थान पर चलकर हमलोगों को विदा कीजिये अमरू ने कहा कि तीन मनुष्यों का भोजन कितने में होगा ? उन लोगों ने कहा कि एक रुपया से पूर्ण होजायगा तब अमरू ने कहा कि एक रुपये से क्या होगा पांच रुपये का अति उत्तम भोजन नानबाई की दूकान पर से लाओ तब उन मनुष्यों ने चित्तमें विचारा कि यह कोई बड़ा धनवान् मनुष्य है तब अमरू ने एक नानबाई की दूकान पर जाकर पांच रुपये का अति उत्तम भोजन उन लोगोंसे मँगवाया और उनके साथ बैठकर भोजन करनेलगा जब पूर्ण होगया तो उठकर टहलने लगा और कहा कि मैंतो सन्तुष्ट होगया तुमलोग अच्छे प्रकार से भोजन सब खालो और उनलोगों से कहनेलगा कि हमारे पास इससे उत्तम २ भोजन हैं चलकर तुमलोगों को झोलियां भर २ देवेंगे और हरप्रकार से तुमलोगों को प्रसन्न करेंगे तब वे दोनों मनुष्य अतिप्रसन्न हुए और अपने मनमें कहनेलगे कि गुरूने आज अच्छे धर्मात्मा के साथ भेजाहै और प्रातःकाल किसी अच्छे का मुख देखाहै अमरू उनके नेत्रों की तरफ़ देख २ कर टहलने लगा ज्योंही उनलोगों ने पलक बदली त्योंही कोठे परसे नीचे उतरकर चलदिया वह दोनों मनुष्य जब भोजनकरके नीचे आये लोगों से पूछने लगे कि वह मनुष्य जिसने हमसे भोजन मँगवाया है कहां गया तब उस नानबाई ने कहा कि क्या भोजन करके दाम देना कठिन मालूम होताहै मैं उसको क्या जानूं जिसके हाथ में खाना दिया है उसीसे रुपये लूंगा दूकानदार ने कहा कि मैं बे पांच रुपये दिये तुमलोगों को यहां से आगे न जानेदूंगा और जो अधिक बातें करोगे तो इतना मारूंगा कि जो खाया है वह सब भूल जाओगे वे दोनों बोले कि नानबाई होकर कैसी २ बातें कहताहै क्या मारखायेगा तब वह नानबाई बोला कि क़बाब खा- चुकेहो केवल चाशनी बाक़ी है भोजन करते समय तो न बोले अब दाम देते समय दुःख मालूम होता है और इधर उधर टहलाते हो अब अच्छी बात इसी में है कि पांच रुपये हमारे देदो नहीं थोड़ी दममें मार २ के अचार निकालदूंगा और अम- चुर की ऐसी सूरत लेकर रहजाओगे हलुवा निकल आवेगा मामा की चपातियां नहीं हैं कि जब भूख लगी उठाकर घर में लेजाकर खालिया जब दूकानदार ने ऐसी ऐसी बातें कहीं तब वे दोनों अतिक्रोधवान् होकर उससे लपट गये और मारने लगे तब नानबाई ने दो चार मनुष्यों को लेकर अच्छी प्रकार से उनका हलुवा बनाया तब तो धीरा होकर प्रार्थना करने लगे कि जो कोई मेरा वृत्तान्त सर- हंगमिश्र तक पहुँचा देवे तो मेरे जीव की रक्षा हो किसी दयावान् ने सरहंगमिश्र से जाकर कहा कि तुम्हारे दो सिपाही और एक नानबाई से दाल रोटी बँटरही है

जो अति शीघ्रही न जाओगे तो मारे जूतों के उनका दम निकाल देगा सरहंग मिश्र ने उस स्थान पर आकर सब वृत्तान्त सुना और पांच रुपये नानवाई को देकर उन दोनों मनुष्यों को नौकरी से छुड़ादिया अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उस दिन भी फिर फिराकर रात्रि को एक भुजवे के भार में जाकर सोरहा और सुबह को साधु का वेष धारण करके दूकान २ शेर पढ़कर भीख मांगने लगा संयोग से सरहंगमिश्र अपने सिपाहियों के साथ उसी मार्ग से आ निकला अमरू को देखकर पहिचाना कि अवश्य करके यह वही यार अमरू है उसके समीप जाकर एक अशरफ़ी देकर उसके हाथ को पकड़कर लोगों को बुलाया कि दौड़ो यह अमरू है और जो अमरू चर व थैली यारी का अपने हाथों में पहिने रहता था जब सरहंग मिश्र ने अपने यारों को पुकारा तब वह हँसकर हाथ अपना खींचकर सरहंगमिश्र का ताज लेकर एक कोठे पर कूदगया और थोड़े ही समय में छतों २ जाकर हवा होगया तब सरहंगमिश्र पागलों की तरह अतिलज्जित होकर शिर खोलेहुए कोतवाली पर आया और विचारने लगा कि प्रतिष्ठा की प्रतिष्ठा गई व बादशाह की दृष्टि से अलग उठा और संसार में बदनाम ऊपर से हुआ लोगों से कहा कि जो कोई अमरू को लावेगा उसको मैं अतिप्रसन्न करके बादशाह से अपनी नायबियत की खिलअत दिलवाकर तरक़्क़ी का आश्रित कराऊंगा तब सब सिपाही अपनी २ पोशाक पहिनकर सब जगहों पर जाकर ढूंढ़ने लगे परन्तु अमरू कब मिलता था दिन के समय तो एक नाले में पड़ारहा रात्रि को दो घड़ी रात्रि बीतने पर एक साधु का वेष धारण करके एक नानवाई की दूकान पर गया उसने पूछा कि क्यों शाहसाहब कहां से आनाहुआ और आपका नाम क्या है? अमरू बोला कि बाबा फ़क़ीरों के नाम से क्या काम है मैं तो तेरा मेहमान हूं इस नगर में फिररहा हूं मेहमान का नाम सुनतेही नानवाई दूकान पर से उतरा और उसको अपने साथ ले जाकर अतिप्रसन्नता के साथ क़बाब और शराब खिलाने लगा थोड़े समय के व्यतीत होनेपर फिर पूछा कि जो नाम व निशान बताने में आपको कुछ दुःख न हो तो बताइये क्योंकि दूसरे नगर के मनुष्य से नाम व निशान बताना उचित है तब अमरू ने कहा कि फ़क़ीर का पुत्रहूं और मदायन नगर की तरफ़ से आता हूं नानवाई ने कहा कि तूने कभी यार अमरू को भी देखा है वह जीताहै या मरगया अमरू बोला कि चलते समय कई दिन उसके स्थानपर बासकर आयाहूं और कई दिनतक मेहमानी खाआयाहूं उस नानवाई ने कहा कि वह बड़ा नमक़हराम है जो मैं उसको देखता तो अवश्य दण्ड देता अमरू बोला कि उसने तेरे साथ क्या बदी की है? जो तेरा मन उससे बिगड़ा है नानवाई बोला कि मेरे साथ तो क्या करसक्ताहै परन्तु मेरा मन उससे यह बिगड़ाहै कि हमज़ा की सहायता से उसने धन प्रतिष्ठा आदि प्राप्तकिया है परन्तु उसकी ख़बर नहीं लेताहै कि आज इतने दिनों से वह बादशाह मिश्र की बन्दिमें है अमरू बोला कि जो अमरू आता तो क्या करता?

यहां जिस नवीन मनुष्य को पाते हैं अमरू जानकर पकड़ लेजाते हैं वह नानबाई बोला कि जो वह हमारे पासतक आता तो उसको हम हमज़ातक पहुँचा देते तब अमरू बोला कि मैं ही अमरू हूं मुझे हमज़ा के समीप लेचल नानबाई बोला कि फ़क़ीर तुझे दोही गिलास में नशा होगया कि सिड़ी होकर बकनेलगा भला कहां तू और कहां अमरू और कहां मदायन और कहां उसका आना? यदि मैंने उसकी सूरत नहीं देखी परन्तु लोगों से उसका बृत्तान्त सुना है तब अमरू ने कहा कि अब मैं वृद्ध होगयाहूं इस कारण से सब प्रकार के वस्त्र आदि का पहिरना छोड़ दिया है और नानबाई की दूकान २ से रोटी मांग २ कर भोजन करता हूं फिर अपने कपड़े आदि पहनकरके बोला कि देखो अब मैं अमरूहूं या नहीं नानबाई देख कर बोला कि हमज़ा को बादशाह मिश्र ने यूसुफ़ी नाम कारागार में रक्खा है चलो मैं तुमको दिखलादूं कि वह बेचारा कैसे दुःख में है यह कहकर नानबाई ने भी अपने वस्त्र पहन अमरू को साथ लेकर छिपता २ उसकी तरफ़ चला थोड़ेही दूर जाके देखा कि एक मनुष्य दूकानपर बैठा है नानबाई ने कहा कि तू कौनहै? जब वह न बोला तो तलवार लेकर दौड़ा पर उसने खड्ग छीनकर उस नानबाई को उठाकर देमारा तब अमरू भी ख़ंजर निकाल कर उसपर दौड़ा जब समीप पहुँचा देखा कि मुक़बिल है तो गले से मिलाकर पूछने लगा कि तू यहां किस प्रकार से आया है? उसने उत्तर दिया कि मैंभी कई दिनों से इसी नगरमें हमज़ा के लिये फिर रहाहूं परन्तु पता नहीं मिलता है उस नानबाई ने जो मिलते हुए देखा तो कहा कि इसने तो हमको देमारा है और तुम मिलतेहो तब अमरू ने कहा कि यह मुक़बिल वफ़ादार है जो कि हमज़ा का बड़ा मित्र व शुभचिन्तक है और उसीकी तलाश में फिररहा है तब वह भी मिला और तीनों मनुष्य उस क़िले की तरफ़ चले और धीरा २ जाकर उसके समीप पहुँचे अमरूने एक कमन्द फेंकी परन्तु उसका सिरा मुखपर आ गिरा और दूसरी बार फिर जो फेंकी वह भी न लगी तब उस नानबाई ने फेंकी पर वह भी न लगी अन्त को मुक़बिल ने फेंकी तो उसकी कमन्द दीवार पर चपक गई और तीनों मनुष्य उस पर चढ़कर नीचे उतरे तो देखा कि एक मनुष्य पोशाक पहिने खड़ा है और किसी का आसरा देखरहा है जब अमरू उसके समीप गया तो उसने अमरू की तरफ़ हाथ बढ़ाया तब अमरू सन्देह में होकर कहने लगा कि जो यह मनुष्य लोगों को बुलावेगा तो मैं तो किसी यत्न से निकल जाऊंगा परन्तु ये दोनों मनुष्य फँस जायँगे इतने में उसने अमरू का हाथ पकड़कर चूमा और कहा कि मैं बादशाह मिश्र की बेटी हूं ज़हरामिश्री मेरा नाम है और इबराहीम अलेहुस्सलाम ने मुझे मुसल्मान करके मुक़बिल के साथ व्याह करने की आज्ञा दी है और कहा है कि फ़लाने बुर्ज की ओर से अमरू और मुक़बिल फ़लाने समय आवेंगे तू उसी स्थानपर खड़ीरहना जब वे आवें तो अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर उनकी मेहमानी करना इस कारण सायङ्काल

से खड़ीहुई तुम लोगों का आसरा देखरही थी यह कहकर पांचसहस्र का हार गले से उतारकर अमरू को दिया अमरू ने उसका मुख चूमा और उसको अपने पास रखलिया और मुक़बिल से कहा कि लीजिये शकुन अच्छा हुआ ईश्वर कार्य सिद्ध करेगा ज़हरमिश्री ने पांचसहस्र अशरफ़ी औरभी अमरू को देनेका इक़रार किया तब ज़हरमिश्री उन तीनों मनुष्यों को साथ लेकर क़िलेकी दीवार से नीचे उतरी और कारागार यूसुफ़ी जिसमें अमीर अपने साथियों समेत क़ैद था गई ॥

छूटना अमीर का कारागार यूसुफ़ी से और बचना सरहङ्गमिश्र से ॥

क़लम नवीन २ आशय अन्धकार अप्रकट कूपसे निकालकर अंगुलियों की सहायता से अपूर्व वृत्तान्त को साफ़ काग़ज़पर यों लिखती है कि जब वे चारों मनुष्य कारागार के समीप पहुँचे तो सामने से सरहङ्गमिश्र प्रकट होकर सलामवालेकम् कहकर कहा कि ऐ अमरू ! इस समय मैं सोरहाथा कि इबराहीम अलेहुस्सलाम ने नरककुण्ड और बैकुण्ठ देखाकर मुसल्मान करके आज्ञा दी है कि अतिशीघ्रही जाकर उन चारों मनुष्यों के साथ होकर जो हमज़ा के छोड़ाने के लिये आये हैं शीघ्रही यत्न करके हमज़ा आदि को कारागार से छुड़ादे और उस कार्य को पूर्ण करके प्रतिष्ठा प्राप्तकर इतनेही में मेरी आंख निद्रा से खुलगई और उठकर दौड़ा आयाहूं अब तुम थोड़े समय ठहरो मैं यत्न करलूं तब तुमलोगों को ले चलूं तब अमरू ने अतिप्रसन्न होकर सरहङ्गमिश्र को गले से मिलाय और उन चारों मनुष्यों समेत एक स्थानपर छिपगया तब सरहङ्गमिश्र पहरेवाले को बेहोश करके अमरू को साथियों समेत उस कारागार पर लेगया तब अमरू ने उन पहरेवालों का शिर काट कर कुयें का मुख खोलकर उसमें कमन्द डालकर उतरा वहां जाकर देखा कि वे बिचारे बैठेहुये परमेश्वर का ध्यान कररहे हैं और अपनी मौत की घड़ी गिनरहे हैं जब अमरू की आहट पाई जाना कि बादशाह ने मारने के लिये जल्लाद को भेजा है अब जीने से हाथ धोवें इतने में अमरू ने जाकर पूछा कि ऐ मुसल्मानो ! तुम में से आदी किस का नाम है ? आदी ने डर से कहा ऐ ! यह मुझे मारने आया है अमीर की तरफ़ देखकर कहा वह बैठा है तो सब क़ैदी आदी की बातपर हँसने लगे तब अमरू ने अपनी आवाज़ बदलकर कहा कि बादशाह ने तुझे छोड़ने की आज्ञा दी है तब आदी घबराकर बोला कि साहब आदी मेरा ही नाम है मैंने हँसी की थी अमरू बोला कि सत्य है मुझे तेराही पता दिया है कि वह लम्बाहै और हग २ कर क़ैदियों को दुःख देता है और कुयें को भी नष्ट करता है सो उसे निकालकर मारो और उसकी लाश को दूर फेंकदो यह बात सुनकर आदी का दम निकलने लगा और अतिलज्जित हुआ परन्तु अमीर ने निश्चय करके जाना कि यह अमरू है और उन्हीं की ऐसी २ बातें होरही हैं फिर अमीर ने ईश्वर का ध्यान किया तो ज़ंजीरें डोरेके समान टूटगईं और अमरू के डराने के लिये ज़ंजीरें लेकर दौड़े अमरू ने देखा कि जो ज़ंजीर लगेगी तो मरजाऊंगा बोल उठा कि मैं अमरू

तेरा शुभचिन्तक और पुराना सेवक हूं अमीर ने अमरू को गले से लगाकर सब साथियों को क़ैद से छुड़ाकर कुयें से बाहर निकाला तब अमरू ने अपना सब बृत्तान्त जो उस समयतक हुआ था कह सुनाया और ईश्वर की रचना पर बड़ा आश्चर्य करके ऊपर जो दृष्टि की तो देखा कि प्रातःकाल के तारे अमीर की भाग्य के समान चमक रहे हैं और प्रातःकाल होने के निकट है तब अमीर अमरू आदिके सहित बादशाहमिश्र की तरफ़ चले और जाकर तलाश किया परन्तु उसका कुछ पता न मिला अमीरके साथी उस के बाग़ में जाकर फल फूल तोड़कर खानेलगे आदीने जो अधिक मेवा खाया तो उसको दस्त की आवश्यकता हुई तो बादशाही मकान में जाकर दिशा फिरनेलगा संयोग से उस स्थान पर बादशाह छिपा हुआ बैठा था शिरसे पैरतक बिष्ठामें डूबगया जाना कि यहां भी जीव नहीं बचता तब आदी के फ़ोते पकड़कर लटकरहा आदी के जो दर्द हुआ तो वे पानी लिये वहां से उठकर भागा बादशाहमिश्र भी उस के साथ लटकाहुआ चलाआया आदीने चिल्लाकर कहा कि इस नगर की बायु बड़े आश्चर्य की है कि मनुष्य के पेट से मनुष्य गिरता है तब शाहबनी आदि दौड़े देखें तो शाहमिश्र आदी के बैज़ेको पकड़े हुए लटका है हँसते २ लोट २ कर गिरपड़े और बादशाहमिश्र को नहवाकर अमीर केसमीप लेगये अमीरने कहा कि ऐ बादशाह ! जैसा तू ने किया वैसापाया अब मुसल्मान होकर कल्मा पढ़ने में देरी न कर और तेरे देशसे मुझे कुछ प्रयोजन नहींहै तू राज्यकर परन्तु मुसल्मान होना अवश्य पड़ेगा बादशाहमिश्र जो कि अपने सामने दूसरे को न डरता था कुछ और तौर बकने लगा और संयोग से अमीर के समीप खड़ा था उसने एक तलवार जो लगाई तो शिर धड़से अलग होगया तब अमीर ने ज़हरमिश्री को राजगद्दीपर बैठाकर उसका कारोबारी सरहङ्गमिश्र को बनाकर खिलअतदी और मुक़बिल को ज़हरमिश्री के साथ ब्याह करने की आज्ञादी मुक़बिल ने हाथ जोड़कर बिनयकी कि जबतक आप मलकामेहरनिगार के साथ ब्याह न करेंगे तबतक सेवकभी न करेगा इतने में दूतों ने ख़बरदी कि नगर में सबलोग मारेगये हैं और जो बचे हैं वे जंगी २ की दोहाई कररहे हैं अमीर ने उन लोगों को बसने की आज्ञा दी और सबका खून माफ़ करके आप मित्रों के साथ बैठकर नाच व रङ्ग करानेलगे और मुबारकबादी के डंके बजने लगे और शब्द उसके आसमानतक पहुँचे पश्चात् इसके अमरूने खुसरोहिन्द और बहराम के क़ैदहोनेका सब बृत्तान्त कहकर वह पत्र दिया अमीर उस पत्रको पढ़कर रोनेलगा और अफ़सरोंसे कहनेलगा कि देखो यारो ! मैंने नौशेरवांके लिये बड़े २ दुःख सहे हैं और जो कुछ उसने आज्ञा दी उसे पूर्ण किया परन्तु वह सदैव मेरे साथ शत्रुता करता चला आताहै अब मैं भी जो ईश्वर की कृपा होगी तो मदायन में पहुँचकर नगर को जलाकर उसकी बहू बेटियों को सईसों को दूंगा जो ऐसा न किया तो हमज़ा नाम मेरा न रखना और तुम सब गवाह रहना कि ईश्वर के समीप गुनहगार और

संसारमें बदनाम न हूं जितने सरदारलोग बैठेथे सब एकमुख होकर कहनेलगे कि सत्यहै कि नेकी का फल बदी मिलताहै तब अमीरने वहांसे सवार होकर अपनी सेना में आकर कूच की आज्ञा दी तैयारी होनेलगी ज़हरमिश्रीने अमीर से जाकर प्रार्थना की कि दासीको मेहरनिगार के देखने की बड़ी इच्छा है और इसदेशमें गद्दीपर बैठने से उसकी टहलुई होना उत्तम जानतीहूं और उनकी टहलुई से मेरी प्रतिष्ठा है ॥

दोहा। मेरे मन अभिलाष अस, करि अञ्जन निज नयन। तव पद रेणु हि सुभगप्रद, यश सुनियत है चैन ॥

जो आज्ञा हो तो आपके साथ चलूं और जबतक ब्याह मलकासाहवा का आपके साथ न हो तबतक मलकासाहवा की सेवकाई में रहूं अमीर ने उसकी बिनय मान कर साथ चलने की आज्ञा दी और नगर का नायब कारवां को बनाकर ज़हरमिश्री को साथ लेकर मदायन की तरफ़ कूचकिया अब नौशेरवां का बृत्तान्त सुनिये कि एक दिन सभा में बैठाथा कि एकबारगी बोलउठा कि लन्धौर और बहराम को कारागार से निकालकर हमारे सम्मुख धारपर चढ़ाकर मारो बुजुरुचमेहर ने कहा कि अभी इनका मारना उचित नहीं है और आपको किसी का डर भी नहीं है कि इनलोगों को मार डालिये परन्तु मैंने रमल में बिचारा तो यह मालूम हुआ कि हमज़ा अभी ज़िन्दा है और आपपर आजकल सितारे सख़ावतका घर है और मेरे बिचार में तो जो आप नगर छोड़कर थोड़े काल के लिये वाहर चलेजावें तो अतिउत्तम होगा और जिससमय हमज़ा के मारने की ख़बर आवे उस समय इन दोनों को भी अपने सम्मुख धारपर चढ़ाकर मारियेगा तब नौशेरवां ने बख़्तक से पूछा कि तेरी क्या सलाह है? उसने भी कहा कि जो ख़्वाजे कहते हैं वही उत्तम है क्योंकि कबूतर छोड़ते समय अमरू कहआयाथा इस कारण करके मदायन को छोड़ना अतिउत्तम है और मिश्र के तरफ़ यात्रा कीजिये और रसद आदिके लिये उस तरफ़ को आज्ञा दीजिये और जो हमज़ा मारा न गया होगा तो आप उसको अपने सम्मुख मरवा-इयेगा और वहांसे लौटकर लन्धौर और मुक़बिल को धारपर खिंचवाइयेगा नौशेरवां को यह बात बहुत पसन्द आई और हारवत और मारवत को चालीस सहस्र सवार के साथ नगर और क़ैदियों की रक्षा के वास्ते छोड़कर आप सेनासमेत मिश्रकी तरफ़ कूचकिया अब थोड़ा बृत्तान्त अमीर का और सुनिये कि क्रोधके कारण दो मंज़िल तीन मंज़िल कूचकरके अतिशीघ्रही मदायन में आकर पहुँचा और वह सेना जो पसेफ़ेयज में छावनी किये पड़ीथी अमीर के आनेका हाल सुनकर सम्मुख हाज़िर हुई और सब बृत्तान्त वहांका कहकर प्रार्थना की कि नौशेरवां मारवत व हारवत को चालीस सहस्र सवार के साथ नगर और दोनों क़ैदियों की रक्षा के लिये स्थित करके आप नौशेरवां मिश्र की तरफ़ सेना सहित गया है और बख़्तक भी उसके साथ गया है अमीर ने चाहा कि मुझे तो अपने काम से काम है देखो थोड़ेही समय में नगर का क्या हाल करता हूं यह कहकर अमरू से कहा कि तुम जाकर हारवत और मारवत से कहो कि लन्धौर और बहराम को हमारे पास भेज देवें

बादशाह को हम जवाब दे लेवेंगे तुम पर किसी प्रकार से दण्ड न होने पावेगा उन दोनों ने उत्तर दिया कि हमज़ा कौन है ? जिसकी आज्ञा से शाही क़ैदियों को छोड़देवें अमरू ने आकर उसी प्रकार से अमीर से कहा तब अमीर ने आज्ञा दी कि युद्ध की तैयारी कीजावे जो खड़ी सवारी जाकर विजय न किया तो हमज़ा नाम न रखना यह कहकर सिकन्दरी डंकेपर चोब दिलवाया और उनको कहलाभेजा कि युद्ध का सामान करो हम आते हैं यह सुनकर नगर में बड़ा तहलका पड़गया रात्रि तो अमीर ने दुःख व क्रोध में काटी प्रातःकाल होतेही अमीर ने क़िले बादशाही को जाकर चारों ओर से घेरलिया हारवत और मारवत ने जो देखा कि हमज़ा बड़े क्रोध से चढ़ाचला आता है और नगर को लूटपाट कर हमारा क़िला लेलेवेगा तो उन दोनों ने सलाह करके लन्धौर और बहराम को लाकर क़िले की दीवारपर बैठाकर पुकार दिया कि जो एक पैर भी आगे बढ़ोगे तो हम इन दोनों का शिर काटकर खन्दक में फेंकदेवेंगे और मांस चील कव्वे खावेंगे पश्चात् जो होगा वह देखलेंगे अमीर ने विचार किया कि जो इन पापियों ने ऐसाही किया जैसा कहते हैं तो वृथा लन्धौर और बहराम की जान जायगी सेना को आज्ञा दी कि जबतक हम न कहें आगे कोई न बढ़ना अमीर ने अमरू से कहा कि मेरा पैर कभी पीछे नहीं हटा अब जो लन्धौर और बहराम के लिये लौटजायँ तो अतिलज्जा प्राप्त होगी ऐ ख़्वाजे ! कोई ऐसी तदबीर कर कि लन्धौर और बहराम मारे न जावें और क़िला लूटजाय तो तुझे मैं लाख अशरफ़ी दूंगा ख़्वाजे ने कहा यह कितनी बड़ी बात है कि इन नीचोंने जो युक्ति विचारी है वह अतीव तुच्छ है खन्दक कूद कर हारवत व मारवत के निकट गये और कहा कि अमीर कहता है कि लन्धौर और बहराम को न मारो हम फिरे जाते हैं तुम्हारे नगर में किसीतरह का उत्पात न करेंगे और बहराम व ख़ुसरो से चीनी हिन्दी बोली में कहा कि अमीर ने यह आज्ञा दी है कि तुम दोनों बड़े आलसी हो कि हाथ पर हाथ धरे बैठेहो आदी ने चाहयूसुफ़ी में अपने बन्दक़ैद से तार अनकबूत की तरह तोड़डाले और तुम ऐसे बलवान् होके तार ऐसी दो बेड़ियां और ज़ंजीरें नहीं तोड़सक्के लन्धौर व बहराम को लज्जा आई और ईश्वर का नाम लेके जो बल किया तो सब बन्द रस्सी के समान टूटगये तब हारवत व मारवत लन्धौर व बहराम के मारने को तलवार खींच कर दौड़े उन्होंने खड्ग छीनकर ऐसे मूके लगाये कि वे मरगये और जितने मनुष्य उस क़िले की दीवार पर थे सबको मारडाला इसी समय अमरू भी कमन्द लगा कर उसके पास पहुँचा और बारह सहस्र हिन्दुस्तानी मनुष्य भी क़िले की दीवार पर चढ़गये और युद्ध होनेलगा अमरू ने क़िले का दरवाज़ा खोलदिया सब सेना घुसगई और बादशाही सेना को पराजय देकर सबके मारने की आज्ञा देकर लूट को माफ़ किया और आज्ञा दी कि जितने स्त्री पुरुष मिलें सबको पकड़कर क़ैद करो व सम्पूर्ण नगर को लूटो यह आज्ञा देकर अमीर व अमरू बादशाह के स्थान को

गये वहां मलकामेहरनिगार को ढूंढ़नेलगे जब उसका पता न लगा तो मेहरंगेज़ से पूछनेलगे तो उसने कहा कि बादशाहज़ादी मेहरनिगार को बादशाह अपने साथ लेगया है यह सुन अमीर ने उत्तर दिया कि इस बात को बुद्धि नहीं ग्रहण करती कि तुमको छोड़ मेहरनिगार को जङ्गल २ फिराये तब उसने कहा कि मुझे असत्य बोलने से क्या लाभ है सब स्थानमें ढूंढ़लीजिये यह सुन अमीर ने अमरू से कहा भाई! यह कार्य तुम्हारा है जो तुम उसको ढूंढ़लाओ तो बारह सहस्र अशरफ़ियां दूंगा तब अमरूने जाकर बादशाही स्थान व सम्पूर्ण बाटिकाओंमें ढूंढ़ा परन्तु उनका के समान उसका कहीं पता न लगा अमरू अत्यन्त संदेह में खड़ा था कि संयोग बश बाटिका के मैदान में उसकी दृष्टिपड़ी तब अमरू ने चित्तमें विचारा कि ईश्वर करे मलकामेहरनिगार इसी कुयेंमें हो फिर उसके समीप जो गया तो देखा कि उस कुयें पर बड़ीभारी लोहे की शिला रक्खी है और चारोंतरफ़ से हवा जाने की सांस नहीं थी और वह शिला अमरू से न उठसकी तब उसने अमीर को बुलाकर कहा कि मलका मेहरनिगार इसी कुयेंमें है परन्तु यह शिला मुझसे नहीं उठसकती ईश्वर ने आपही को ऐसा बल दिया है तब अमीर उसको हटाकर कुयें में हलगया पहले तो कुयें में उतरते समय अँधियारे में कुछ दृष्टि न पड़ा परन्तु थोड़ेसमय के बाद एक दालान देखाईपड़ी उसकी तरफ़ जो गया तो देखा कि मलका शिर झुकाये बैठी है और रोरोकर आंसू नेत्रों से पोंछरही है जब मलका ने अमीर के पैरों की खटक से जो नेत्र उठाये तो अमीर को देखकर दौड़कर लपटगई और रोरोकर सब बृत्तान्त कहने लगी॥

चौपाई। मैं अस समझ करी नहिं प्रीती। प्रीति करी नहिं करी अनीती॥
प्रिय संगम महँ बीती वय यह। बिरह प्रवेश रहा न ज्ञान यह॥

हे हमज़ा! ईश्वर के लिये अब मुझे अपने साथ से जुदा न करना क्योंकि कामदेव के दुःख से रहा नहीं जाता॥

दोहा। प्रियविरहानल दाह को, चिह्न जो भानु समान। ताके प्रकटन हेतुको, हृदय पूर्बदिश मान॥
प्रलयसमय के प्रातके, उदय करन जनु काज। प्रिय बिरहिनको फटतभो, सुभग गरेबां आज॥

अमीर ने अपने अँगरखेके परदेसे आंसू पोंछकर कहा कि हे मेरी प्यारी! अब तो हमको और तुमको ईश्वर ने मिलादिया है अब क्यों रोती हो अब चलो इस कमन्दपर चढ़कर कुयें से बाहर निकलो और इस अँधियारे से निकलकर उजेला देखो यह कहकर प्रथम तो मलका को बाहर निकाला तब और जो उस कुयें में थीं सब को बाहर निकालकर आप भी निकला और उसी समय सवार करोकर अपने स्थान पर लाया उससमय सब सरदारों ने भेंटआदि देकर आशीर्बाद दिया फिर मलका ने अमीर से बिनय की कि तुमको मुझसे काम था सो ईश्वर ने पूर्ण किया अब नगरबासियों को कारागार से छुड़ाकर जानेदो अमीरने आज्ञा दी कि सब क़ैदियों को छोड़कर लूटका मालफेरदो अतिशीघ्रही उसकी आज्ञा के मुवाफ़िक़ किया गया अब थोड़ा सा बृत्तान्त आदी का सुनिये कि ज़िस समय अमीर ने नगर

वासियों को बध करने की आज्ञा दी थी उस समय आदी अपने दरवाज़े पर खड़ा था कि इतने में एक बहुत स्वरूपवती स्त्री जवान दश बारह सहेलियों के साथ भागी चली जाती थी परन्तु अति कोमलता के कारण चल न सकतीथी थोड़ी २ दूर पर ठहरजाती थी आदी उसकी सुन्दरता और कोमलता पर लोभित होकर दौड़कर अपने स्थानपर पकड़कर लाया तो मालूम हुआ कि यह वख़्तक की बेटी है तो अति प्रसन्न होकर कहनेलगा कि अमीर ने बादशाह की बेटी पाई मैंने वख़्तक की बेटी पाई कि जिसका ब्याह अभी नहीं हुआ यह कहकर उसे अपने डेरे में लेगया और रात्रि को जब उसके साथ भोग करनेलगा तो वह क्लेशसे चिल्लाई आदी ने बिचारा कि जो इसका शब्द अमीरतक पहुँचेगा तो अतिलज्जा प्राप्त होगी यह बिचारकर उसके साथ भोग न किया परन्तु युवा स्त्री को देखकर काम से पीड़ित हुआ तो बाहर निकलकर सिकन्दरी चोब बजाने की आज्ञा दी और डेरे में आकर उस स्त्री के साथ भोग करनेलगा और उसकी कोमलता और आयु का कुछ विचार न करके निर्मोहियोंके समान जो धरकर दबाया तो उसने पक्षी की तरह मुख खोलदिया और मरगई डङ्का सिकन्दरी का शब्द जो सेना के कानतक पहुँचा तो सब सेना और सवारों के रिसाले और खुसरोहिन्द व मुक़बिल और बहराम आदि जितने सरदार थे कमर बांध २ घोड़ोंपर सवार होकर आपहुँचे उस समय अमीर मलकामेहर-निगार को लिये मसनदपर बैठाथा और अमरू शराब पिलारहा था और कुछ गाता था कि इतने में जो सिकन्दरी डङ्के का शब्द उसके कानों में पड़ा तो घबराकर उठा और अमरू को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखो कि क्यों डङ्का सिकन्दरी बजा है और आपभी मसनद से उठकर पोशाक पहिनकर बाहर निकला और खड़ा होकर अमरू को देखनेलगा अमरू जो गया तो देखा कि खुसरोहिन्द मुक़बिल बहराम आदि साथ सब सरदार और सेनाके कमरबन्द होकर खड़ेहैं अमरू ने लन्धौर और बहराम से पूछा कि कारण तुमलोगों के तैयार होने का क्या है ? उनलोगों ने उत्तर दिया कि और तो हम कुछ नहीं जानते केवल सिकन्दरी तबलेका शब्द सुनकर तैयार हुए और अमीर की आज्ञा के आश्रित खड़े हैं और बृत्तान्त तुम जानते होगे और अवश्य है कि तुमने कुछ सलाह भी दीहोगी अमरू ने सन्देहमें होकर उसीमार्ग से डङ्के के समीप जाकर पूछा कि तुमलोगों को किसने डङ्का बजाने की आज्ञा दी है उनलोगों ने कहा कि आदी कहगया है तब अमरू आदीके डेरे में जो गया तो देखता है कि आदी ने एक युवा स्त्री को मारडाला है और उसको आगे रक्खे हुए शिरपर हाथ धरे बैठा है आदी से उसका बृत्तान्त पूछा तो उसने अपना सब बृ-त्तान्त कहा तब अमरूने अमीरके समीप आकर सब बृत्तान्त सुनाया अमीरने आदी को बुलानेकी आज्ञा दी और कहा कि आदी को भी हम उसी स्त्री के साथ ग़ोर में गाड़ेंगे तब मेहरनिगार ने आदी की बड़ी सहायता की और अमरू ने भी प्रार्थना की कि आपने क़िला बिजय किया उसने एक गढ़ीही तोड़ी अमीर अपने महल से

निकलकर सेना में गया और सब वृत्तान्त कहकर हरएक पहलवानों से बिनय करके कमर खोलने की आज्ञा दी और आप महल में आकर आराम करनेलगा और सब सेना ने भी कमर खोली जब प्रातःकाल हुआ तो अमीर ने सात दिनतक नाच रङ्ग होनेकी आज्ञा दी सब सामान इकट्ठा हुआ और अभी कूच की आज्ञा न दीथी कि आदी एक पत्र जैपालहिन्दी का अमीर के समीप लेगया अमीर उस पत्रको पढ़कर बड़े सन्देह में हुआ और लन्धौर को दिया उसने पढ़ा तो लिखा था कि फ़ीरोज़ शाह खतानी साढ़ेतीन लाख सवार लेकर चढ़आयाहै कई बार युद्ध हुआ परन्तु उसके पास सेना बहुत है इस कारण विजय न हुई और सेवक क़िले साबरमें बन्द है जो अमीर या लन्धौर या खुसरोहिन्द न आवेंगे तो इसदेश में तुर्कियों का राज्य होजायगा और हमलोगोंको अतिक्लेश पहुँचेगा अमीर ने आज्ञा दी कि तुम जाकर उसको विजय करो तब लन्धौर ने रोनी सूरत बनाकर कहा कि मैं जानता था कि अपनी अवस्था आपही के क़दमों के नीचे काटूंगा परन्तु आप सेवक को अलग करने की इच्छा करते हैं अमीर ने कहा कि ईश्वर जानताहै मैं तुमको अलग करने की इच्छा नहीं रखता परन्तु जो इस समय न भेजूं तो सारा हिन्दुस्तान हाथसे निकल जायगा और जिस समय कि ईश्वर विजय का हाल सुनावेगा उसी समय मैं तुमको बुलालूंगा और जबतक तुम न आओगे मैं मलकामेहरनिगारके साथ ब्याह न करूंगा यह कहकर चालीस सहस्र सवार समेत मुक़बिल को मेहरनिगार और ज़हरमिश्री को साथ करके मक्का की तरफ़ रवाना किया और बहुत रुपया और जिंस आदि मार्ग के सामान से परिपूर्ण किया और कहा कि हमभी खुसरोहिन्द को सवार कराकर आतेहैं जो ईश्वरने चाहा तो बहुत जल्द तुमलोगों से मिलतेहैं यह कहकर आदी को अपनी यात्रा बसरेकी ओर करनेकी आज्ञा दी और कहा कि ऐसी युक्ति करो कि अमरू और मुक़बिल मलकामेहरनिगार और ज़हरमिश्री को लेकर मक्के को जावें और अमीर लन्धौर और बहराम के साथ सेनासमेत हुए और मीर बहरको बुलाकर जहाज़ मँगवाया और खुसरोहिन्दको चढ़ाकर साथसे नाके जहाज़ खोलवादिया अमीरने प्रातःकाल होतेही बहरामसे कहा कि ऐ बहराम ! मैं तुझे और खुसरोहिन्द को अपने हाथ समझताहूं और तुमलोगों को जुदा करनेसे अतिदुःख होताहै परन्तु क्याकरूं ? जो हिन्दुस्तानके युद्धमें खुसरोको न भेजता तो क्या करता ? इसके सिवाय और कोई युक्ति नहींथी और जो तुमको भी खुसरोकी सहायताके लिये न भेजूं तो और कौनहै ? जिसे जाने की आज्ञा दूं क्योंकि फ़ीरोजशाह अतिबलवान् है और उसके पास सेनाभी अधिक है इसकारण उचित है कि तुमभी चीनमें जाकर फ़ीरोज़शाहको विजय करके उसके देशको लूटमार करतेहुए साथलन्धौर और आदी के चलेआओ और जब इस कार्यको सिद्ध करोगे तो खुसरोके साथ तुमकोभी बुला लूंगा और जबतक तुम दोनों मेरे पास न पहुँचोगे तबतक मैं ब्याह मेहरनिगार के साथ न करूंगा तब बहरामने प्रार्थना की कि मुझे आपकी आज्ञा माननी उचित है

परन्तु केवल आपके क़दमोंके छोड़नेसे दुःखप्राप्तहोताहै जो आपके क़दमोंकी कृपा है तो जानेमें कुछ संदेह नहीं है तब बहराम सेना के साथ उसी दिन जहाज़पर सवार होकरचला और अक्सर लोग कहतेहैं कि चीनमें एक शत्रु आयाथा उसके निवृत्त करनेके लिये अमीरने बहरामको चीनकी तरफ़ भेजाथा परन्तु यह अवश्य है कि अमीर ने बहरामको रुख़सतकरके सेनाके साथ मक्केकी तरफ़ कूच कियाहै और जब कि सात मंज़िल जाचुके थे साथ के सरदारों ने कहा कि यहां से दो कोसपर दाहिनी ओर एक बड़ी भारी नदी है और उसके निकट एक स्थान जिसका नाम (अलंगज़मुर्रद) है अतिउत्तम देखने के लायक़ है तब अमीर ने आदी से कहा कि हमारा ख़ीमा उसी स्थान की तरफ़ लेचलकर खड़ाकरो आदी ने अतिशीघ्रही उसी तरफ़ चलने की आज्ञा दी और थोड़ेही समय में जाकर अमीर उस (अलंगज़मुर्रद) पर पहुँचे और रात्रि को अपने डेरेमें सोरहे परन्तु प्रातःकाल होतेही जो उठकर देखा तो अतिउत्तम स्थान मालूम हुआ कि एक तरफ़ जहां दृष्टि पड़ती थी तो फ़र्श हरा २ बिछाहुआ देखाई देता है और कोसों तक हरी रङ्गत लहरा रही हैं दूसरी तरफ़ हज़ारा गुल्लाला कैसा फूला हुआ नज़र आता है कि नेत्रों से देखने में अतिप्रसन्नता प्राप्त होती है और एकतरफ़ नदी से मिलाहुआ पहाड़ परशीकोह है जिसपर सैकड़ों तख़्ते गुलबहार के खिलेहुए हैं और अनेक प्रकार के वृक्ष और मेवे फले फूले खड़े हैं और बहुतसे हरिण, पाढ़ी, चीतल, बारहसिंगा, लीलगाय आदि घुट२ की छलांगें माररही हैं और हज़ारों प्रकार के पक्षी वृक्षों पर मेवा खा २ कर चहचहा रहे हैं और पहाड़ पर जो सोते भील आदिक हैं उनके किनारे पर भुण्ड के भुण्ड करकरे, मुरग़ाबी, सुरख़ाब, चकई, चकवा आदि अनेक प्रकार के पक्षी बैठेहुए हैं और पहाड़ के कोनों में तीतर बटेर आदिक फिरते हैं अमीर इस स्थान को देखकर अतिप्रसन्न हुआ और सर्वत्र दिन शिकार करतारहा सायङ्काल को डेरेपर आकर जो पक्षी आदिक लाया उसमें से कुछ अपने लिये रखकर शेष सरदारों और पहलवानों को भेजवादिया और रात्रिभर आराम के साथ सोया प्रातःकाल जब उठकर कुल्ला दतून से निश्चिन्त होकर वस्त्र पहिनकर बैठाथा और अभी कूच की आज्ञा न दी थी कि दो सरदारों ने आकर सलाम करके विनय किया कि जोपीनकाऊस सत्रह सहस्र सवार लेकर आपसे युद्ध करने के लिये आता है और बहुतसी सेना बलवान् साथ लिये आता है और कारण उसके आनेका यह है कि नौशेरवां जो मिश्र की तरफ़ आपके मरवाने के लिये जाताथा उसने मार्ग में सुना कि हमज़ा ने मदायन में आकर नगर को लूटलिया और नगरवासियों को मारडाला है और हमारी सेना को बिजयकरके मेहरनिगार को पकड़लेगया है यह वृत्तान्त सुनकर नौशेरवां मदायन को लौटआया और जब अपने नगर को ख़राब देखा और मलकामेहरनिगार को न पाया तो अतिदुःखित होकर कहनेलगा कि यह सब वख़्तक ने ख़राब किया है कि नगर को लूटालिया और मलका को निकाल लेजाकर मेरी

आबरू मिटादी और संसार में लज्जा प्राप्तहुई और जो मैं बुज़ुरुचमेहर के कहनेपर करता तो आज काहेको यह गति होती इतने में बख़्तक ने अपने घर से आकर पगड़ी दे मारी कि मेरी माता को तो अमरू ने और बेटी को आदी ने मारडाला यह वृत्तान्त जो सातदेशवासी शाहंशाह को पहुँचेगा तो आपको क्या कहेंगे कि एक अरब के रहनेवाले को ऐसा मुँह लगाया कि उसने सब देशों को बरबाद कर दिया है और उसकी युक्ति नौशेरवां से न चलसकी नौशेरवां ने रोनी सूरत बना कर कहा कि जो कुछ तूने कहा वह मैंने किया परन्तु हमज़ा किसी युक्ति से वशमें नहीं आता है कि उसे मारूं और उसके साथियों का मांस चील कौवों को लुटादूं बख़्तक ने कहा कि सिवाय गुस्तहम के और कोई ऐसा नहीं है जिसे हमज़ा के साथ युद्ध करने को भेजिये बादशाह ने पत्र लिखकर गुस्तहम को बुलवाया उसी दिन ख़बर पहुँची कि ज़ोपीनकाऊस सत्रह सहस्र सवार लेकर आपसे मिलने को आता है और यहां से दो कोसपर ठहरा है बादशाह ने उसी समय बख़्तक को और सरदारों के साथ उसकी पेशवाई के लिये भेजा बख़्तकने मार्ग में सर्व वृत्तान्त अमीर का बयान किया वह बोला कि तुम निश्चिन्त रहो जो खड़ी सवारी हमज़ा को न मारा तो मेरा ज़ोपीनकाऊस नाम न रखना इसके पश्चात् जब वह नौशेरवां के पास पहुँचा तब वह बहुत रोया और बादशाह को बहुत समझाया और कहा कि मैं इसी समय जाने की आज्ञा चाहताहूं यहां मुझे एकक्षणभर वर्ष के समान मालूम होता है जबतक हमज़ा का शिर और मलकामेहरनिगार को न लादिया तो संसार में मुख न दिखलाऊंगा तब बादशाह ने प्रसन्न होकर ख़िलअत दामादी देकर कहा कि तुम पहलवान और सेना के साथ जाकर हमज़ा का शिर लाओ तो मैं तेरा व्याह उसके साथ करदूंगा और अपना युवराज बनाऊंगा और अपने भी दो सरदार तीस हज़ार सवारों के साथ करके भेजता हूं अमीर ने हँसकर कहा कि आज इसी स्थानपर वास करो उसको आनेदो जबतक कहो कि पहलवान लोग अपना डण्ड पेलें और नाच रङ्ग जारीरहे यह आज्ञा देकर फिर अमीर अपने आरामगाह में चलेगये और उसका आसरा देखनेलगे सायङ्काल के समय एक गर्द उठी और सेना के समान देखपड़ी और जब गर्द बन्द हुई तब सत्रह अलम और कई हज़ार सवार परेट के परेट देखाईपड़े ज़ोपीन आकर सामने डेरा डाल कर युद्ध का सामान करने लगा रात को नामियान और तुबियान ने आकर अमीर से कहा कि ज़ोपीन की सेना में युद्ध का बाजा बजता है अमीरने कहा कि हमारी सेना में भी युद्ध का बाजा बजाओ और अतिशीघ्र लड़ाई का सामान जमा हो- जावे आज्ञा देतेही कबाबेचीनी और कलावंचीनी ने अठारह मनकी तबरेज़ीकी चोवें जो डङ्के सिकन्दरीपर देमारा तो उसके शब्द से ज़ोपीन की सेना में कितने ही मनुष्यों के कान के परदे फटगये और सब सेना डरगई परन्तु दोनोंतरफ़ रात्रि भर युद्ध का सामान हुआ किया और प्रातःकाल होतेही ज़ोपीन सत्रह हज़ार

सवार लेकर युद्ध के स्थान पर आया और इस तरफ़ से अमीर पांच लाख सवार अतिपलवान् लेकर चले जिस समय अरबी पहलवानों ने जाकर युद्ध का आरम्भ किया तो वे बेचारे डरनेलगे और भागने की इच्छा करनेलगे और बेलदारों ने मैदान को साफ़ किया और भिश्तियों ने मशकों से बातकी बात में हज़ारों बिगहे ज़मीनको सींचदिया नक़ीब और ज़ारजियोंने ज़ोर से चिल्ला २ कर कहना शुरू किया कि जिसको युद्ध करने की इच्छा हो वह युद्ध के मैदान में निकलकर लड़े और प्रतिष्ठा प्राप्त करे कि आज बलवानोंकी परीक्षा है और यही युद्ध का मैदान है यह सुन कर सब के रोंयें खड़े होगये और एक दूसरे का मुख देखनेलगे और मृत्यु ने आकर अपना डेरा युद्ध के स्थानपर किया मानो मङ्गल ग्रह हरएक मनुष्य के मस्तक पर चमकनेलगा और हरएक मनुष्य का गला बन्द होगया और एक दूसरेपर ताना देने लगे और कहनेलगे कि आज नेकों की नेकी बदों की बदी प्रसिद्ध होजायगी और देखें किसका पैर शत्रु के ऊपर बढ़ता है और किसका पीछे पड़ता है ये बातें सेनाओं में होही रही थीं कि ज़ोपीनक़ाऊस ने घोड़े को मैदान में बढ़ाकर ललकारा कि ऐ ईश्वर के पूजको ! तुममें से जिसको मरने की इच्छा हो वह मेरे सम्मुख होकर लड़े अमीर से उसका हँसना सुनकर न रहागया स्याहक़ैतास घोड़े पर सवार होकर सेना से बाहर निकला और बाजेवालों की तरफ़ से ज़ोपीन के समीप जाकर इस प्रकार से कावा दिया कि उसका घोड़ा बीस क़दम पीछे चलागया ज़ोपीन यह हाल देखकर बेहदास होगया और अमीर से पूछा मालूम होता है कि हमज़ा तेराही नाम है तुहीं मुसलमानी सेना का सरदार है अमीर ने कहा हां मैंहीं हूं और ईश्वरपूजकों की टहलुई करताहूं ज़ोपीन बोला कि ऐ हमज़ा ! किसलिये अपनी ज़ान को दुःख में डालता है और तेरा चित्त कहां है उत्तम यही है कि मेहरनिगार को मेरे साथ करदे मैं जाकर उसके साथ ब्याह करूं और तू रूमाल से हाथ बांधकर मेरे साथ चल मैं बादशाह से तेरी सिफ़ारिश करके बचादूंगा अमीर ने कहा कि ऐ नामर्द ! तू क्या बकता है ? जो नशा बहादुरी का रखता हो तो अपना नशा उतारले और अपने हौसले को पूर्ण करले फिर मेरी वार रोंक यह सुनतेही ज़ोपीन ने एक बरछी अमीर की छाती में लगाई उसको उसने छीनकर तोड़डाली तब उसने झुंझलाकर गदा उठाई उसको भी अमीर ने रोंका कोई वार लगने न पाई तो अति लज्जित होकर कई वारें बराबर चलाईं अमीर जब धूल में छिपगये तो ज़ोपीन कहनेलगा कि देखो हमने मारा पृथ्वी में हमज़ा धसगया और कहा कि जो कोई एक किरच हड्डी की निकालदे तो उसको पारितोषिक देकर सेना का सरदार बनाऊं अमीर ने जो यह वार्त्ता उसकी सुनी तो स्याहक़ैतास को लेकर उसके समीप आकर ललकारा कि ऐ पापी ! किसको तू ने मारा और ख़ाक में मिलाया है तेरा मारनेवाला मैं तेरे शिरपर खड़ाहूं देख अभी क्या तुझे देखाताहूं एक वार और चलाकर अपने हौसिले को मिटाले तब उसने एक गदा चलाई अमीर

ने उसको छीनकर जिसतरह वहरी कबूतर को झपटती है उसके गरदनपर खंजर रखकर कहनेलगा कि बताओ अब उस हँसने की मज़ा देखावें ? अब भी कुछ हौसिला बाक़ी है ? यह सुन ज़ोपीन गिड़गिड़ानेलगा और ईर्षा मन में रखकर मुसल्मान हुआ अमीर उसकी छातीपर से उतरकर अलग खड़ाहुआ॥

युद्ध करना ज़ोपीन का अमीर के साथ और दबाना अमीर का ज़ोपीन को और खंजर रखकर मुसल्मान होना॥

ज़ोपीन फिर उठकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उसको उठाया और अपनी सेना में लेआकर गले से मिलाया और सेना में बिजय का डङ्का बाजनेलगा और झण्डावालों ने परचम खोलदिये और ज़ोपीनकी सेना अतिलज्जित होकर लौटकर अपने डेरे में आई अमीर मुज़फ़्फ़र और मंसूर के साथ ज़ोपीनको लेकर अपनी सेना में पहुँचे मुबारकबादी के डङ्के बजनेलगे और बड़ी धूमधाम से नाच रङ्ग होनेलगा और उसी समय भोजन तैयार हुआ अमीर ने ज़ोपीन के हाथ मुँह धुलाकर अपने साथ भोजन करवाया और शराब पिलवाई तब उसने अमीर से कहा कि अब सेना में जानेकी मैं इच्छा करताहूं कि जाकर सब सेना को मुसल्मान करूं और कल सबेरे सब सरदारों को आपके समीप लाकर मुलाक़ात कराऊंगा अमीर ने कहा कि जाइये और सबको मुसल्मान कीजिये तब वह सेना में आया और मक्कर व ज़ालकी युक्ति विचारने लगा॥

रात को लड़ाई करना ज़ोपीन का और ज़ख़मी होकर न मिलना अमीर का॥

सुहृद मनुष्य का चित्त जिससे एकबार साफ़ हुआ तो साफ़ही रहता है व्यतीत विरोधों का विचार नहीं करता है यहां तो अमीर उसपर बिश्वास करके उसके आने का आश्रित था उधर वह जाकर औरही युक्ति करनेलगा अपनी सेना से कहा कि मैं तो जीव की रक्षा के लिये मुसल्मान हुआ हूं और एक मुसल्मान को दम दे आया हूं तुमलोग तैयार हो उसपर हम रात्रि को लड़ाई करके मारेंगे हमारी विजय होगी और उसकी पराजय होगी यह सुन उसकी सेना तैयार हुई जब आधी रात्रि हुई तब सत्रह हज़ार सवार लेकर अमीर की सेनापर धावा करने चला मार्ग में शेसयमन जो चार सहस्र सवार लिये पहरे पर घूमता था घोड़ों के पैर का शब्द सुनकर ललकारा कि कौन इस समय आता है ? ख़बरदार आगे क़दम न बढ़ाना आकर समीप जो देखा तो मालूम हुआ कि ज़ोपीन सत्रह सहस्र सवार और बहुत से पैदल लियेहुए लड़ाई करने को चला आता है शद्दस से तलवार चली शद्दस उसके हाथ से मारा गया और ज़ोपीन मुसल्मानी सेनापर जागिरा और जो सेना अमीर की वेखटके सोरही थी जब सत्रह सहस्र सवार जागिरे तो उनकी खरक से जाग उठे परन्तु उसके आपहुँचने के कारण हथियार न लेसके जो जिसके पास था वही लेकर दौड़ा तलवार चलनेलगी और चारों तरफ़ शब्द होनेलगा अमीर भी सोते २ शब्द की खरखराहट सुनकर जाग उठा और पूछने लगा कि

क्या शोर गुल सुनाई देता है दूतों ने विनय की जोपीन धावा मारने आया है तो यह सुनकर अमीर स्याहक़ैतास के थानपर जाकर लगाम देकर वेज़ीन का सवार होकर आया उसी समय अनासानमलक नामक तलवार जो उसके हाथ में रुधिर से भरी थी उसके ऊपर चलाई अमीर ने वार खाली देकर तलवार उसकी छीनकर उसे मारडाला दूसरे भाई ने कहा कि हमज़ा ने वड़े आश्चर्य की वात की जो मेरे भाई को वधकिया परन्तु मैं भी उसे मारूंगा अमीर ने कहा कि चिन्ता न कर तुझे भी उसीके पास भेजनेका उपाय कररहाहूं तव उसने अमीरके ऊपर हथियार चलाया परन्तु अमीर ने उसकी वारको रोंककर एक तलवार मारी कि उसके दो भाग होगये परन्तु जोपीन ने अमीर के पीछे आकर एक तलवार उसके शिरपर सावधान होकर मारी तो चार अंगुल का घाव होगया फिर अमीर ने पीछे हटके मारा तो उसके भी उसी तरह घाव होगया और दो तीन तलवारें मारकर घोड़े से गिराया तव सेना के लोग भी उसको उठाकर वहुत जल्दी मदायन की ओर भागे जोपीन जो सत्रह हज़ार सवार लेकर आया था उसमें से केवल दश हज़ार मनुष्य वचे और सव मारे गये और उस रात्रिके धावे के कारण मुसलमानी सेना भी वहुत मारी गई अमीर के शिरसे भी वहुत रुधिर वहा कि अमीर वेहोश होगया घोड़े स्याहक़ैतास ने देखा कि सवार मेरा ज़खमी है मैदान से निकलकर वनकी ओर चला आदी आदिक सेनापतियों ने अमीर को वहुत ढूंढ़ा पता न मिला तो शोक करनेलगे जितने सर-दार थे सव अपनी सेना समेत काला वस्त्र धारण करके वहुत शोक करनेलगे तीसरे दिन आदी सव सेना को साथ लेकर मक्के में पहुँचा और ख़्वाजे अब्दुलमतलव और अमरू से सव वृत्तान्त कहा यह हाल सुनकर मक्के के निवासी भी काला वस्त्र धारण करके वहुत शोक करनेलगे और चारों तरफ़ से रोने का शब्द सुनाई देने लगा ख़्वाजे अब्दुलमतलव को सकता की ऐसी वीमारी होगई अमरू और मुक़विल ने अपना गला काटडाला और मेहरनिगार ने मार मार कर अपने कपोलों को लाल करदिया और शिरके वालों को इस प्रकार के नोचडाला कि कंघी और चोटी की आवश्यकता न रही और रांड़ का स्वरूप धारण करलिया उस समय अमरू ने कुछ विचारकर सवलोगों को चुप किया और कहा कि न डरो अमीर ज़िन्दा है क्योंकि जो अमीर को कुछ होता तो स्याहक़ैतास अवश्य अपनी सेना को ले भागा आता जो अवतक स्याहक़ैतास नहीं आया तो तुमलोग ईश्वर को जपो मैं अमीर को जाकर ढूंढ़ लाताहूं यह कहकर क़िले को वन्द करके हर एक स्थान पर सेना मुक़र्रर करके और मुक़विल से कहा कि खवरदार कोई नवीन मनुष्य क़िले के समीप उतरने न पावे आप अमरू अमीर के ढूंढ़ने को चला और उसी मार्ग होकर अलंगजमुर्रद के तरफ़ पोशाक़यारी पहिने हुए जिस मैदान में युद्ध हुआ था रवाना हुआ ॥

आना अमीर के लेने को अबुलरहीमन जिनी वज़ीर शाहंशाह परदेकाफ़ का ॥

अख़वारनवीस और नक़ल करनेवाले यों लिखते हैं कि जिस समय दीवान

रूस्याह ने शहपाल पुत्र शाहरुख़ शाहंशाह परदे काफ़ से शत्रुता करके नगर समीन, ज़र्रीन, वकम, काकुम, क़ैसर विलौर, मीना का वन, कतर वयज़, क़ैसर गौहर, क़ैसर ज़मुर्रद, क़ैसर याकूव, छल सितून, वाग़ सदावहार, वाग़संतुष्ट करनेवाली, वाग़ हस्त वहिश्त, क़ैसर मीना, वाग़ जिन्नात जिनको कि हज़रत सुलेमान ने वनवाया था छीनलिया और केवल वाग़ आराम उसके पास रहगया जिसमें कि अपने लड़के वालों को लेकर क़िले का दरवाज़ा बन्द करके बैठे थे एक दिन वादशाह को याद आया तो वज़ीर अब्दुलरहीमनजिनी को बुलाकर कहा कि वह लड़का हमज़ा नामी जिसको तुम मक्के से लाये थे और कहा था कि एक दिन ऐसा होगा कि सब दूतलोग आपका देश छीन लेवेंगे केवल वाग़ आराम आपके पास रहेगा उसी में वन्द होकर आप रहेंगे और यह लड़का आपको उन लोगों को मारकर आपका सब देश देवेगा तो अब वह लड़का कहां है उसको ढूंढ़ना चाहिये विचारो तो वह आज कल कहां है और किस देश में उसका स्थान है तव उसने रमल से विचारकर कहा कि आजकल वह एक वड़े युद्ध में था और उसके एक तलवार लगी है जो आप आज्ञा देवें तो वह आसक्ता है तव शाहंशाह ने कहा कि इससे उत्तम और क्या है ? उसी दम मलहम सुलेमानी मँगवाकर और अनेक २ प्रकारके मेवे देकर कहा कि अतिशीघ्रही जाकर इस मलहम को उसके शिरपर लगा देना और जव घाव अच्छा होजाय तो इन मेवों को खिलाकर अपने साथ लेकर हमारे समीप लाओ उसी समय अब्दुलरहमान तख़्तपर सवार होकर कई सौ जिन् साथ लेकर काफ़पर्वत से चला और थोड़ेही समय में जव उस स्थानपर पहुँचा तो चारों ओर दृष्टि करके देखने लगा तो देखा कि हमज़ा रुधिर में डूवाहुआ उस सब्ज़ेपर वेहोश पड़ा है उसी समय जाकर हमज़ा को तख़्तपर वैठाकर पहाड़ अवुलक़ैस के एक गढ़े में उठा लेगया और उसके घाव को धोकर पट्टी मलहम सुलेमानी उसपर रखकर मेवों की डालियां चारों तरफ़ लगादीं कि उसकी सुगन्ध से कुछ शिर में वल होजाय और जीव को आनन्द होजाय तीसरी पट्टी वदली थी कि अमीर ने नेत्रों को खोल दिया होश में आये तव उसने सलाम किया अमीर ने सलाम का उत्तर देकर पूछा कि आप कौन हैं ? और कहां से आये हैं और आपका नाम और पता क्या है ? और क्या आपही मुझे इस तख़्तपर उठालाये हैं ? उसने कहा कि मैं शहपाल का पुत्र शाहरुख़ शाहंशाह परदेकाफ़ का वज़ीर हूं मेरा नाम अब्दुल रहमान है और उसकी आज्ञा से यहां आया हूं जिसने आप को जब आप सात दिन के थे तव आपको पलँग समेत मँगवालियाथा और सातरोज़ अपने मकान पर रखके वहुत देव और भूत जिनका दूध पिलाया था कि जवानी में किसीसे आंख न झपे और सुरमा सुलेमानी आंखों में लगाके घोड़े पर लेटाके भेजवा दिया था और वहुत क़ीमती साज आपके साथ भेजा था इस समय जो आपका चर्चा आया तो मुझसे पूछा कि विचार कर वतलाओ कि वह आजकल कहां है मैंने जो विचार

तो मालूम हुआ कि आप इस सब्ज़े पर तलवार के घाव से रुधिर में डूबे बेहोश पड़े हैं और अपने दोस्तों और सेना से अलग होगये हैं यह कर बादशाह ने मलहम सुलेमानी और मेवे की डालियां देकर आपके समीप भेजा है जो मैं यहां आया तो उसी प्रकार से पाया जिस तरह कि बिचार से मालूम हुआ था सो उसी समय आपको उठाकर इस तख़्त पर रखकर इस स्थान में लाया हूं और मलहम सुलेमानी रखकर आपका घाव अच्छा किया अब केवल शरीर में बल आना बाक़ी रहा है सो इस मेवे को खाइये ईश्वर की कृपा से बल भी शरीर में अतिशीघ्र आजावेगा तब अमीर ने कहा तुमने मुझे किस तरहसे पहिंचाना उस ने विनय किया कि अपनी बुद्धि और आपके स्वरूपको देखकर अमीर उसकी बातों से अति प्रसन्न हुए और उसकी प्रशंसा करनेलगे तब अब्दुलरहमान ने और जो कईसौ जिन् साथ थे बुलाकर अमीर से भेंट कराई और कहा कि एक बिनय मेरी भी है जो आपही के किये सिद्ध होगी ईश्वर जब आपको अच्छा करेगा तो कहूंगा अमीर ने कहा शिर और नेत्रोंसे आपका कहना करनेको वे आपके कहेहुए मुस्तैद हूं इसमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं है अब थोड़ासा बृत्तान्त अमरू का यह है कि वह अमीर को ढूंढ़ता २ उस सब्ज़े में आनिकला तो देखा कि स्याहक़ैतास चररहा है और इधर उधर नेत्रों को उठाकर देखरहा है जब अमरू उसके पास गया और पकड़ने की इच्छा की तो प्रथम तो उसने अमरू को न पहिंचान कर बाघ के समान अमरू के ऊपर दौड़ा परन्तु जब अमरू ने चिल्लाकर चुचकारा तब वह अमरू का शब्द सुनकर खड़ा होगया और कान हिलाने लगा तब अमरू ने उसका मुख चूमकर पूछा कि तुम्हारा सवार कहां है मुझे वहां लेचलो तब वह हिनहिनाकर गढ़े के तरफ़ इशारे करनेलगा परन्तु अमरू ने न समझा और सर्वत्र ढूंढ़ ढांढ़कर बिचारा कि स्याहक़ैतास को अपने मकानपर लेचलो और लोगों के आंसू पोंछाओ फिर आकर अमीर को ढूंढ़ेंगे यह बिचारकर स्याहक़ैतास को लाकर लोगों से कहा स्याहक़ैतास को मैं ढूंढ़लायाहूं अब अमीर को भी जाकर लाताहूं यह कहकर अमरू पहाड़ के नीचे चला और उस गुफा के समीप गया तो मनुष्यों की घुनघुनाहट मालूम हुई उस स्थानपर ठहरगया और थोड़े काल सुनकर उसके भीतर गया तो देखा कि अमीर एक तख़्तपर बैठा अनेक २ प्रकार के मेवे खारहाहै जाकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उसका शिर उठाकर छाती से लगाया और मलकामेहरनिगार की कुशल पूछनेलगा तब अमरू ने सब बृत्तान्त कहा और हाथ बांधकर अमीर के सम्मुख खड़ा हुआ अमरू की आंखों में सुरमा सुलेमानी न था इस कारण जिन्नात न दीखपड़े और जिन्नोंने जो उसको देखा तो उसके साथ हँसी करनेलगे एक जिन्ने अमरू के दोनों पांव पीछेसे खींचलिये वह मुंह भरा गिरपड़ा और अमरू के शिरसे एक जिन्ने ताज उतार लिया परन्तु अमरू को कुछ देखाई न देता था क्योंकि उसके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी न था अमीर ने जब पूछा कि

अमरू तुम नङ्गे शिर क्यों खड़े हो तब अमरू ने शिरपर हाथ फेरा तो ताज़ न पाया क्रोध करके झुलझुलाने लगा तब अमीर ने जिन्नों से ताज़ दिलवाकर उसके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी लगादिया तब वह भी सब जिन्नों को देखने लगा और कहा कि भाई शहपालका पुत्र शाहरुख़ ने अपने वज़ीर अब्दुलरहमान जिन्नी को किसी प्रयोजन के लिये मेरे समीप भेजा है और उसीने मेरा घाव अच्छा कियाहै और यह मेवा आदि भी ले आये हैं उन्हीं के साथ वे जिन्न हैं जो तुम्हारे साथ हँसी करतेहैं यह सब बृत्तान्त कहकर अब्दुलरहमान से मुलाक़ात करवाकर आज्ञा दी कि अब तुम मक्के में जाकर हमारे कुशल का हाल सब लोगोंसे कहो परन्तु हमारे यहाँ रहने का हाल किसीसे न कहना अमरू तो मक्के की तरफ़ गया और अमीर ने अब्दुल-रहमान से कहा कि जो कुछ तुम्हारे स्वामी ने आज्ञा दी है वह अब मुझसे कहो तब उसने कहा कि यह तो आपसे पहलेही मैं कहचुका हूं कि जब आप सात दिन के थे तो मैंने रमल से बिचारकर बादशाह से कहा था कि मक्के में एक लड़का पैदा हुआ है वह आपको किसी समय में जब सब जिन्नलोग शत्रुता करके सब देश छीन लेंगे तो वह लड़का आकर सबको मारकर आपको फिरसे उन नगरों को देकर बसा-वेगा तब बादशाह ने मेरी मारफ़त आपको मक्केसे मँगवाया था और सातरोज़ के बाद फिर बहुत जवाहिर आदि साथ करके भेजवा दिया था और आपको देव जिन्न पक्षी आदिका दूध पिलवाया था कि जवानी में कोई बराबरी न करसके और आप के पिता जिनको आपके खोजाने का दुःख था मिटाया था सो वही दिन आपड़ा है इफ़रीत नाम जिन्नने नगर आदि सब छीन लिया है केवल बाग़-आराम शाहंशाह के वश में है उसीमें अपनी सेना और लड़के बालों के साथ दरवाज़ा क़िलेका बन्द करके पड़े हैं और उसको भी कहता है कि जल्द खाली करो इसलिये मुझे आपके समीप भेजा है और कहा है कि मेरी दुआ कहकर कहना कि इस पापी से जो मेरे पिताके समय में एक प्यादा था और अब एक सवार होकर बहुत से लोगों को अपने साथ करके शतरञ्ज के फ़रज़ी के तौर से टेढ़े चलना अख्तियार कियाहै और मुझे बड़ा दुःख देरहा है और मुझे एक स्थान में कि आरामगुलिस्ताँ उसका नाम है बन्द कररक्खा है और उसको भी लिया चाहता है मैं दहिनेबायें आगे पीछे कहीं हिल नहीं सक्ता जो वह लड़का मेरी सहायता न करेगा तो नक़्श उलट जायगा बाज़ी मेरी मात होचुकी है शत्रु ने नक़्श मेरा बिगाड़ दियाहै और बिसात उलटने की इच्छा किये है और प्रसिद्ध है कि मैं हज़रत सुलेमान की सन्तान में से हूं और तुम हज़रत इब्राहीमकी औलाद हो इससे उचित है कि एक पैग़म्बर की औलाद के लोग दूसरेकी सहायता करें और अपनी क़ाबूभर उसके कार्य को पूर्ण करें अमीर ने कहा कि जो वह देव मुझसे माराजावे और नगर आदि छीनकर शाहंशाहको मिल जाय तो मैं चलनेको मुस्तैद हूं अब्दुलरहमान ने कहा कि मैं रमल से बिचारचुका हूं और निश्चय है कि वह आपही के हाथसे माराजायगा और सब देश आपही का

है और आपही के हमलोग हैं और ईश्वर चाहेंगे तो आपही के हाथ से सब दुःख दूर होजायगा अमरू का हाल सुनिये कि अमीरके पाससे मक्केमें आकर सब लोगों से अमीर की कुशल का हाल कहकर कहा कि जो तुमलोग आजही हमको कुछ न देओगे तो फिर कब देओगे तब सबलोगों ने अपनी प्रसन्नता से जिसकी जो खुशी में आया वही दिया और हरएक मनुष्य ने अपने २ स्थानपर नाच रङ्ग करवाया फिर प्रातःकाल अमीर के समीप आया और सब हाल अपने जाने और प्रसन्नता का सुनाया तब अमीरने अमरूसे कहा कि भाई एकसफ़र थोड़ेदिनोंका और शेष रहाहै देखें ईश्वर उसमें क्या करताहै? अमरूने कहा कि कैसाहै? तब अमीरने जो कुछ अब्दुलरहमान से सुना था बयान किया अमरू ने कहा ऐ अमीर! यह तू कैसा बिचार करता है कि ऐसा आराम और मलकामेहरनिगार को घर में बैठाकर बाहर जाने की इच्छा करता है यह बात उत्तम नहीं है अमीर ने कहा कि अब उनका एहसान मेरे ऊपर है कि उन्होंने आकर दवा की और मेरा शिर अच्छा करके मेवा खिला कर शरीर में बल का प्रवेश कराया है तब अब्दुलरहमान ने कहा कि आपको तीन दिन जाते और तीन दिन आते और एक दिन वहां पहुँचकर स्वस्थ होनेमें और एकदिन उसके मारने में और पीछे एकदिन बिजय की प्रसन्नता में सब नवदिन आपको लगेंगे अमीर ने कहा चाहे अठारह दिन लगें परन्तु हम चलेंगे ऐसे समय में आंख छिपाना और न जाना अनुचित है अब अमरू ने कहा कि आपकी खुशी है चाहे अठारह दिन रहो चाहे उन्नीस दिन मेहरनिगार को लीजिये आप जानिये आपका काम जाने में तो अपनी राह लेता हूं अमीर ने कहा बहुत अच्छा जाओ मेरा क़लमदान लेआओ तो मैं मेहरनिगार और सेना के सरदारों को पत्र लिखदूं कि जबतक मैं न आऊं सब तुम्हारी आज्ञा में रहें परन्तु ईश्वर के लिये बहुत आज्ञा बारंबार न देते रहियेगा और सेनापति आदि अधिकारियों पर हुकूमत न रखियेगा अमरू रोता हुआ उस गुफ़ा से निकला और मक्के की तरफ़ चला जिस समय मक्के में पहुँचा ख्वाजे अब्दुलमुत्तलिब ने अमीर के परदे काफ़पर जाने का हाल सुना तो अशक्त होकर अमरू से कहने लगा कि किसी युक्ति से अमीर को जाने से मना करो और किसी युक्ति से यहां तक लाओ अमरू ने कहा कि मैंने बहुत समझाया परन्तु वह नहीं मानता अब जो आपके लिखने को मानजाय तो अति उत्तम है ख्वाजे अब्दुलमुत्तलिबने अमीर का क़लमदान मँगवाकर एक पत्र लिखकर अमरू को दिया अमरू वहां से सेना में आकर सेनापतियों को अमीर के जाने का हाल सुनाया वे लोग सुनकर रोने पीटनेलगे तब मेहरनिगार के समीप आकर अमीर के जाने का हाल कहा वह पृथ्वीपर गिरपड़ी और रोनेलगी अमरू ने कहा कि ऐ मलका! रोने पीटने से कुछ न होगा इसमें कोई युक्ति करनी चाहिये जिसतरह से ख्वाजे अब्दुल मुत्तलिब ने पत्र लिखा है उसी प्रकार से तुम भी लिखो उत्तर में आपही साफ़ खुलजायगा मलका ने एक पत्र लिखा और उसमें यह भी लिखदिया कि जो तुम

जाओगे तो फिर आकर मुझको ज़िन्दा न पाओगे नहीं तो मुझे भी साथ लेते चलो अमरू उस पत्र को भी उस पत्र के साथ रखकर चुपके अमीर का क़लमदान लेकर अमीर के समीप आकर क़लमदान को रख उन दोनों पत्रों को भी समीप रखदिया अमीर ने प्रथम एक पत्र अपने पिता के नाम लिखा और फ़िर एक पत्र सेनापतियों के नाम लिखा कि जिसको २ हमारी आज्ञा माननी है वह अमरू की आज्ञा में रहे और हम परदेकाफ़ को जाते हैं अतिशीघ्रही उसके कार्य को पूर्ण करके आते हैं और तीसरा पत्र मलकामेहरनिगार को लिखा कि मैं अठारह दिनके वास्ते जाता हूं और ईश्वर ने चाहा तो इससे अधिक न ठहरूंगा शाहंशाह परदेकाफ़ ने अपने सेनापति को मेरे इलाज के लिये भेजा है उसीने आकर मुझे अच्छा किया है इस कारण मुझे उसके कार्य के लिये जाना उचित है और मेरी आज्ञा जो तुम मानती हो तो अठारह दिनतक और सबर किये बैठी रहो और पुरुष स्त्रियों को युद्ध में नहीं लिये फिरते कि मैं तुझे साथ लेचलूं और हर स्थानपर तुम्हारा डेरा भी साथ रक्खूं हां जो केवल फिरने के लिये जाता तो लेजाने में सन्देह न था और जबतक मैं न आऊं अमरू को अपना शुभचिन्तक जानना इसमें बुराई कभी न होगी और इसी की आज्ञा पर रहना अमरू को पत्रों को देकर कहा कि इनको पहुँचाकर हमारी सला (हथियार) लादो परन्तु किसीको मालूम न हो अमरू अमीर के पास से नगर में आया परन्तु पत्र किसीको न दिया हथियार लेकर अमीर के पास पहुँचा अमीर अतिप्रसन्न हुआ चलने की तैयारी होनेलगी हथियार बदन पर लगाया ॥

मारा जाना गुस्तहम का अमीर के हाथ से और छुटना उसकी सेना के साथ में ॥

भाग में जो लिखा होता है वही होता है और जिस स्थान पर जिसकी मृत्यु होती है वह वहीं पहुँच जाता है गुस्तहम के युद्ध का बृत्तान्त यों है कि जिस समय अमीर मलकामेहरनिगार और सेना के बहादुरों के साथ मक्के की तरफ़ चले थे उसी समय नौशेरवां ने एक पत्र उसके बुलाने के लिये लिखकर भेजा था वह बेचारा दो मंज़िलें चलकर मदायन में पहुँचा नौशेरवां ने नगर के लूटने और मलका के लेजाने का बृत्तान्त कहकर कहा कि आज कईदिन हुए हैं कि ज़ोपीनकाऊस चालीस सहस्र सवार लेकर आया था उसको मैंने ऐय्याशान मलिक को तीस हज़ार सवार साथ करके हमज़ा को मारने और मेहरनिगार के लेआने को भेजा है परन्तु तुम भी जाकर उन दोनों सरदारों को साथ लेकर हमज़ा को मारो और मेहरनिगार को लेआओ गुस्तहम तीस सहस्र सवार लेकर मक्के की ओर चला जब समीप पहुँचा तो मालूम हुआ कि अमीर को ज़ोपीन ने तलवार मारी है उसका पता नहीं है कि मरगया या ज़िन्दा है पर ज़ोपीन और गुस्तहम से मार्ग में मुलाक़ात न हुई क्योंकि ज़ोपीनकाऊस अलग ज़मुर्रद की तरफ़ से गया था और गुस्तहम जङ्गल फ़ौज की तरफ़ से चला था और रास्ते में यह ख़बर सुनी कि थोड़े से मुसल्मान मक्के में बदहवास होकर पड़े हैं यह सब बृत्तान्त सुनकर गुस्तहम अतिप्रसन्न हुआ और

मक्के से तीन कोस पर डेरा डालकर डङ्का युद्ध का बजवाया और अभीतक अमीर परदेकाफ़ की तरफ़ रवाना न हुए थे कि तबला का शब्द उनके कानों में पहुँचा अमरू से कहा कि देखो तो भाई यह तबला कहा बजा क्या किसीकी सेना तो नहीं आती अमरू ने यह सुनकर बाहर निकलकर देखा तो एक सेना कई सहस्र सवारों की दिखाई पड़ी तब लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि गुस्तहम तीस हज़ार सवारों से लड़ने को आया है नौशेरवां ने अमीर के मारने और मलका मेहरनिगार के लेजाने के वास्ते भेजा है पहले तो अमरू ने क़िलेपर जाकर लोगोंको दीवालों और बुरजोंपर मुक़र्रर किया और तीरंदाज़ और बरक़ंदाज़ों को अपने स्थानपर मुक़र्रर किया तदनन्तर अमरू ने इच्छा की कि यह वृत्तान्त अमीर को सुनाऊं कि गुस्तहम तीस हज़ार सवार लेकर क़िलेपर आपहुँचा और लोगोंको धावा करनेकी आज्ञा दी उसी समय कई हज़ार सवारों से क़िलेपर धावा किया और भीतर जानेकी इच्छा की अमरू ने वह आतशबाज़ी मारी कि जितने आये थे वे सब जलगये शेष डरसे भागकर सेना में चलेगये तब गुस्तहम ने लौटनेका बाजा बजवाकर आज्ञा दी कि आज चलो कल एकदम में सबको पराजय करके नाश करदेंगे जब हमज़ा नहीं है तो इस छोटे से क़िले को लेना कौन बड़ी बात है और यह थोड़ीसी मुसल्मानी सेना कब हमसे विजय पासक्ती है प्रातःकाल खड़ी सवारी चलकर सेना मुसल्मानी को मार मलका को लेकर चलेंगे अमरू ने जब उसके युद्ध से छुट्टी पाई तब जाकर अमीर से सब वृत्तान्त कहा अमीर ने आज्ञा दी कि तुम चलकर डङ्का युद्ध का बजवाओ और प्रातःकाल सेना लेकर मैदान में जमाओ मैं आकर ईश्वर चाहेंगे तो विजय करूंगा और स्याहक़ैतास को मेरे पास भेजकर सेना को समझा देना कि अमीर भी आते हैं अब्दुलरहमान ने विनय किया कि स्याहक़ैतास को न मँगवाइये अगर जल्द चलना है तो इसी तख़्तपर बैठकर चलिये अमीर ने उसकी प्रार्थना मानली स्याहक़ैतास के लाने को मना करदिया और अमरू से कहा अच्छा भाई तुम जाकर प्रातःकाल सेना को जमाकर हमारा आसरा देखते रहना ईश्वर चाहेगा तो आकर उसको यहां आनेका फल दिखलादेंगे अमरू ने क़िले में आकर हरएक को प्रसन्न किया और कहा कि प्रातःकाल तुमलोग अमीर को देखोगे हमने जाकर सब हाल गुस्तहम का कहा है तब अमीरने कहा कि तुम इसी समय चलकर युद्धका डङ्का बजवाओ लड़ाई की तैयारी करो प्रातःकाल मैदान में परेट जमाके हमारा इन्तिज़ार करना हम आकर गुस्तहम को दण्ड देंगे उसका अभिमान धूल में मिला देंगे विजय करेंगे यह कहकर कबाबचीनी और कलाबचीनी तबला सिकन्दरी बजाने की आज्ञा देकर युद्ध का सामान करनेलगा यह हाल सुनकर लोग अतिप्रसन्न हुए हर स्थानों पर शब्बरात और शबईद होगई रात्रिभर दोनों सेनाओं में युद्ध का डङ्का बजाकिया और युद्ध का सामान हुआ प्रातःकाल अमरू एक ऊंटपर सवार होकर सेना को युद्धस्थल में लेजाकर श्रेणीबद्ध खड़ी करादिया उधर से गुस्तहम की भी

सेना आई जब गुस्तहम ने देखा तो मालूम हुआ कि अमीर नहीं है अमरू सब सामान कररहा है तब तो अतिप्रसन्न होकर सेना को बाहर करनेलगा इतने में अमीर का तख़्त देखपड़ा तब अमरू ने अपनी सेना से कहा कि देखो अमीरका तख़्त आता है सब उसी तरफ़ देखनेलगे और समीप आया तो देखा कि पलथी मारे सब हथियार धारण किये हुए बैठे हैं और मुखपर बीमारी का लक्षण कुछ नहीं मालूम होता देखकर सबलोग अपने २ घोड़े पर से उतरनेलगे तब बहुत से लोगोंका पैर रिकाब में फँसकर गिरने लगे तब गुस्तहम देखकर हँसने लगा और कुछ अपनी सेना के सरदारों से कहरहा था कि अमरू ने कहा कि तू क्या बकता है तेरे जीव का गाहक अमीर आपहुँचा वह इधर उधर देखने लगा इतने में अमीर का तख़्त आसमान पर से पृथ्वीपर आउतरा तब तो वे लोग दङ्ग होगये और कहनेलगे कि कहाँ का शैतान चरखा आ पहुँचा इसका तो हमने औरही कुछ हाल सुनाथा यह जीता कहाँ से आया इतने में अमीरने तख़्त परसे उतरकर ललकारा कि जो आया है तो सामने आ वह तो ईर्षा और ग़रूर से भरा था आतेही अमीर की छाती में एक बरछी मारी अमीर ने वही छीनकर उसको जो मारी तो उसका भेजा निकल आया और पृथ्वीपर गिरके मरगया जब गुस्तहम प्यादा हुआ तो एक तलवारका वार अमीर पर किया अमीर ने अपनी तलवार पर रोंका तो उसकी तलवार के दो टुकड़े होगये और केवल क़ब्ज़ा उसके हाथ में रहगया फिर जब अमीरने तलवार चलाई तो गुस्तहम ने अपना शिर झुकाया अमीर ने ऐसा मारा कि दो टुकड़े हो गया यह देखकर सेना जो उसकी दौड़कर आई तो अब्दुलरहमानने अपने चारसौ दूतों को जिनको साथ लाया था आज्ञा दी कि अब क्या देखते हो इनको मारो तब चारसौ दूत दो २ मनुष्यों को उठाकर आसमान पर उड़गये इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना गुस्तहमकी मारीगई और तीन सहस्र पहले दिन जब गुस्तहमने क़िले में आने की आज्ञा दी थी अमरू ने आतशबाज़ी से जमाकर मारडाला था सात सहस्र सेना जो तीस सहस्र सेना में से शेष रहगई थी उसने अपने प्राणके डर से गुस्तहम की लाश को लेकर मदायनकी राह ली तदनन्तर अमीर ने गुस्तहम के युद्ध से विजय पाकर अब्दुलरहमान को साथ लेकर परदे क़ाफ़की तरफ़ यात्रा की और अपनी सेना को उसी स्थानपर रहने की आज्ञा दी॥

अमीर का परदेक़ाफ़को जाना और उसका अठारह वर्षके बाद लौटना॥

इस बृत्तान्त के लिखनेवाला पत्ररूपी बनको इस तरह तै करता है कि सफ़र बहुत दूर दराज का पेश आने और गुस्तहम को साथ सेना के मारे जाने और अमीर का परदेकाफ़ के जाने का बृत्तान्त यों लिखता है कि जब अमीर परदेकाफ़की तरफ़ गये तो अमरू ने जो माल और असबाब गुस्तहम की सेना का लूटाथा उस को कुछ तो सेनाको बांटदिया और कुछ आप लेकर ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलिब के पास जाकर पत्र का उत्तर दिया और मेहरनिगार का मेहरनिगार को और सेनाका

सेनापतियों को देकर अमीर के परदेकाफ़ जानेकी खबर सब छोटे बड़ों को दिया तब ख्वाजे अब्दुलमुत्तलिब ने सन्तोष किया और अमीर के लौटआने की दुआ मांगने लगा और विजय का हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ तदनन्तर सेना ने अमरू से कहा कि ऐ ख्वाजे! हमलोग तो सदैव से तुमको दूसरा अमीरहमज़ा समझते हैं हमलोगों को हरप्रकार से आपकी सेवकाई और आज्ञा माननी उचित है जो आप अग्नि में कूदने को कहें तो कूद पड़ें यह सुनकर अमरू ने सब को छाती से लगाया और सबको प्रसन्न करके कहा कि यह क्या बात है ? तुम सब अमीर के मित्र हो मुझको उचित है कि तुमलोगों के साथ भाई की तरह रहूं और जान देने को तैयार रहूं और सबलोग मिलकर मलकामिहरनिगार की रक्षा करें क्योंकि नौशेरवां ऐसा बादशाह उसके लेजाने की इच्छा रखता है और अब जो अमीर के परदेकाफ़ के जानेका हाल सुनेगा तो अवश्य करके कोई युक्ति मलका के लेजाने की करेगा तब सरदारों ने कहा कि और तो क्या जो नौशेरवां खुद एकदफ़ा मलकामेहरनिगार के लेने को आवेगा तो वह भी लज्जित होकर लौटजायगा अमरू ने कहा कि मुझे इससे अधिक तुमलोगों का भरोसा है और यही पहलवानों और बुद्धिमानों का काम है जो ऐसा न होता तो अमीर मलका को तुम्हारे भरोसे कब करजाते यह कहकर सेना को क़िले में लेजाकर क़िलेको अच्छी तरहसे बनवाकर खन्दक़ खोदवाके पनियासोत करवाया और पुलका तख़्ता उठवाकर उसी फाटकपर कारचोबी का एक डेरा खड़ा कराकर उसके चारोंतरफ़ कुरसियां पत्थर की बराबर से चुनवाकर बादशाही सामान से अधिक सामान करके मलकामेहरनिगार के समीप गया और विजय का हाल सुनाया मेहरनिगार ने कहा कि ऐ ख्वाजे! तुम को मैं पिता के समान जानती हूं और हरप्रकार से तुम्हारा कहना मानती हूं अमीर ने पत्र लिखा है कि अमरू की आज्ञा मानना और कोई कार्य बेसलाह उसके न करना ईश्वर उस साय्त मुझे भी न रक्खे जिस सायत मैं तेरी आज्ञा से बाहर हूं ख्वाजा यह सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि ऐ मलका! जो कुछ मैं कहूंगा वह तेरे लिये उत्तम होगा और अमीर ने जो लिखा है वह इसलिये लिखाहै कि हम जाते हैं और स्त्रियों की बुद्धि मरदों की तरह नहीं होती है और स्त्रियों को युद्ध करना अच्छा नहीं मालूम होता और आपके पिता से शत्रुता है कि वह आपको ले जाया चाहता है और मैं तो आपका सेवकही हूं मेहरनिगारने कहा कि ऐ ख्वाजे! यह कौनसी बात है मैं अमीर के आगे पीछे हर समय तुम्हारी आज्ञा से बाहर नहीं हूं यह सुनकर अमरू अपने चित्तमें अतिप्रसन्न हुआ और छः मासकी जिंस भोजन के वास्ते लेकर क़िले में रक्खी और कहनेलगा कि अब छः मास चाहे सब देश की सेना आवे तो क़िला न छूटेगा ईश्वर की छाया में पनाह ली है वही हरप्रकार से रक्षा करेगा यह कहकर सरदारों और पहलवानों को हर स्थानों पर स्थित करके आप बादशाही कपड़े धारण करके शामियाने के नीचे बैठकर अमीर के आने के दिन गिननेलगा ॥

वृत्तान्त अमीर का जो क़ाफ़ के मार्ग में हुआ ॥

अमीर के आश्चर्यरूपी सफ़र का बृत्तान्त यों लिखते हैं कि जिस समय जिन्नों ने अमीर को तख़्तपर बैठाकर उड़ाया तो इस क़दर दूर ऊपर उड़ालेगये कि पहाड़ और क़िले आदि भी न दिखाई देते थे सायंकाल के समय एक बन में तख़्तको उतारा अमीर ने पूछा कि यह कौन स्थान है और इसका नाम क्या है ? अब्दुलरहमान ने कहा कि अभी यहांतक मनुष्यही का राज्य है और इस बादशाह का नाम रुस्तमपुत्र ज़ाल है और यह उसीका अखाड़ा है अमीर ने जब निमाज पढ़कर छुट्टी पाई तब उस शहर के तरफ़ देखने के लिये चलागया और दो एक जिन्न भी साथ गये उसमें एक गुम्बद दिखाई दिया उसके भीतर जो गये देखा कि एक सन्दूक़ बन्द किया हुआ छत में लटका है उसको अमीर ने उतारकर खोला तो देखा कि उसमें एक कमरबन्द और एक ख़ंजर और एक हलका कमान रक्खा हुआ है और पत्थर पर लिखा है कि यह असबाब रुस्तम का है और कोई इसको नहीं लेसक्ता है केवल वह मनुष्य जो साहबकिरां और हमारे रुतबे का जाननेवाला होगा वही इसको उतारसकेगा अमीर ने उसको सहज में लिया और अतिप्रसन्न होकर अब्दुलरहमान के पास आया उसको वह असबाब और तख़्ती दिखाई उसने कहा कि आपको सफल हो यह सगुन अति उत्तम अकस्मात् से मिला है उस दिन उसी स्थानपर बास किया दूसरे दिन सवेरे चलकर एक मुक़ामपर आ उतरे तो देखा कि एक दीवार लोहे की बहुत पुरानी कोसोंतक खड़ी है और उसके दरवाज़े का कहीं पता नहीं मिलता है मनुष्य क्या जानवरों की भी वहांतक पहुँच नहीं थी आज्ञा दी कि दरवाज़ा तलाश कियाजावे जिन्नों ने ढूंढ़कर दरवाज़े का पता लगाया अमीर उसके भीतर गये तो देखा कि सब्ज़ घास आदिक उपजी है और एक गुम्बद है उसमें एक साधु बैठा पूजा कररहा है उसने अमीर को देखकर नमस्कार किया और कहा कि ऐ अमीर ! दो वर्ष से आपके आसरेमें बैठाहूं अमीर ने भी सलाम करके पूछा कि आपने मुझे किसतरह जाना और क्योंकर पहिचाना कि साहबकिरां है उस साधू ने कहा कि मैंने सुना था कि यह सरहद काफ़ का है यहां कोई मनुष्य न आवेगा केवल एक मनुष्य हमज़ा नामे है वह आवेगा सो ईश्वर की कृपासे मैंने आपको देखा और केवल इतनीही बिनय है कि मेरे दिन पूरे होगये हैं मुझे स्नान कराकर गाड़ते जाइये मेरी मिट्टी ठिकाने लगाइये यह कहकर मन्त्र पढ़कर प्राण को त्याग करदिया यह देखकर अमीर को आश्चर्य हुआ उसकी आज्ञानुसार उसकी मिट्टी स्वार्थ की और उससे छुट्टी पाके थोड़े कालके बाद भोजन करके तख़्तपर सवार हुए एक रात्रि दिन लिये चले गये दूसरे दिन तीसरे पहर एक बन में उतरे अमीर ने अब्दुलरहमान से कहा कि अभी तो दिन अधिक है यहां उतरने का क्या कारण है अब्दुलरहमान ने कहा कि इस स्थानपर इसलिये उतरते हैं कि यहां से थोड़ी दूर पर एक राहदार नाम देव रहता है कि वह लोगों को जो

इस मार्ग से आते हैं देखकर मारडालता है और जिसको नहीं देखता वह निकल जाता है इस कारण मैं यहां उतराहूं कि आधीरात्रि को निस्सन्देह चलेंगे कि उससे बचकर चलेजायँगे अमीर ने कहा कि हमको उसके स्थानपर चलो कि हम भी उसे देखलेवें और जो बनपड़ेगा तो उसको मारकर लोगों को आराम देवेंगे अब्दुलरहमान ने कहा कि वह बड़ा बलवान् देव है वहां आप न जाइये अमीर ने कहा कि भला यह बताओ कि वह जिन् है या मार्ग का डाकू केवल बलवान् है अब्दुलरहमान ने कहा कि जिन् के आगे राहदार क्या चीज़ है यह उसके आगे तुच्छ है तब अमीर ने कहा कि जिन्को मारने के लिये तो तुम हमको लिये जातेहो और इसके मारने को मना करते हो तब अब्दुलरहमान ने माकूल होकर कहा कि एक बला इस राह में और भी है जिसके डर से कोई इस स्थानपर नहीं ठहरता अमीर ने कहा कि वह क्या है? उसका क्या नाम है? उस ने कहा एक व्याघ्र बड़ा लागन है अमीर व्याघ्र का नाम सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और उसी दम चला व्याघ्र मनुष्य की बास पाकर अपनी मांद से बाहर निकलकर चारों तरफ़ देखने लगा अमीर ने देखा तो साठ हाथ का लम्बा था अतिबलवान् हज़ार व्याघ्रों का एक व्याघ्र है अमीर ने उसको ललकारा तो वह गर्जता हुआ दौड़ा अमीर ने छिपकर एक तलवार ऐसी मारी कि साफ़ दो टुकड़े होगया और पृथ्वी पर गिरपड़ा जिन् अमीर के बलको देखकर दङ्ग होगये अब्दुलरहमान ने अमीर के क़ब्ज़े को चूमलिया और वहीं से सवार कराकर राहदार के स्थान की राह ली अमीर तमाम रात इस विचार से न सोये कि ऐसा न हो कि मेरी जान के डर से राह काटकर चलेजायँ और उसके स्थान पर न लेचलें इतने में प्रातःकाल होते उस के स्थानपर जा पहुँचे परन्तु जिन्नों के शरीर में फफ़ोले पड़गये पैर फूलगये उस के डर से उसके स्थान के समीप तख़्त को रखकर सब जिन् इधर उधर छिपगये अमीर तख़्तपर से उतरकर राहदार की तलाश में चले राहदार का हाल सुनिये कि वह तीनसौ देवों के साथ उस स्थानपर रहताथा और सदैव हाल मँगवाया करता था कि शाहन्शाह परदेकाफ किस विचार में है उसी तरह से एक दिन एक देव ने आकर हाल दिया कि शाहन्शाह ने अब्दुलरहमानको मनुष्य के लानेके लिये दुनिया में भेजा है सुनाहै कि वह बड़ा बलवान् पहलवान और बहादुरहै वह आकर काफ़ के देवों को मारकर फिर शाहन्शाह काफ़ को राज्य दिलवादेगा उसी दिन से वह राहदार घात में दिन रात बैठा रहता था संयोगसे उस समय भी बैठाहुआ देखरहा था कि अमीर को देखा तो जाना कि वह आदमी आया है और यह उस का साथी है उसी समय एक देव को आज्ञा दी कि जाकर उस मनुष्य को जीता मेरे पास लाओ देव जो अमीर के पास आया हाथ बढ़ाकर चाहा कि अमीर को उठाकर राहदार के समीप पहुँचावे अमीर ने उसका हाथ पकड़कर एक झिटका दिया तो वह घुटनों के बल बैठगया तब अमीर ने एक घूंसा उसके शिरपर ऐसा

मारा कि मग़ज़ उसकी गरदन में घुसगया और वह मरगया राहदार ने यह देख कर जाना कि निश्चय करके यह वही मनुष्य है जिसे अब्दुलरहमान लेनेगया था यह बिचारकर तीनसौ देवों समेत अमीर के ऊपर आया अमीर ने इस ज़ोरसे ईश्वर का नाम पुकारा कि सब बनका बन हिलगया जिन्नों का दम सा निकल गया राहदार अपने तीनसौ देव लेकर अलग खड़ाहुआ और एक तरफ़ जाकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ अमीर ने जो देखा कि एक बला लम्बी क़रीब तीनसौ गज़के थी और पचास २ हाथ के समान बृक्ष की दो डालियां ऐसी शिरपर हैं और बड़ा भारी मुख जिससे लार निकलरही है और नेत्र लाल होरहे हैं पलकें साही के कांटा की तरह खड़ी हैं नाक एक ताबूत के समान नेत्रों के नीचे ओंठों के ऊपर रक्खी है कमर में शेरों की खाल कसीहुई है उसपर पूछ अपनी लपेटे जंजीरें केवल सोने की अपने हाथ पैर गले में डालेहुए अमीर के सामने आकर कहने लगा वे (स्याह शिर दांत सफ़ेद) तूने मेरे देवको क्यों मारा मुझसे कुछ डरा नहीं अब तू किस तरह मुझसे बचकर जायगा यह कहकर एक तलवार अमीर के शिरपर चलाई अमीर ने उसको रोका एक खंजर रुस्तम का ऐसे ज़ोर से उसके पहलू में मारा कि दूसरे पहलू की तरफ़ से वह खंजर निकलगया उसने एकही वार में दांत निकाल दिये अमीर ने खंजर निकालकर मियान में किया तलवार निकाल कर और जो तीनसौ देव खड़े थे उनपर दौड़े और जिसपर एक बार चलाई वह फिर न उठा अब्दुलरहमान ने जाकर जिन्नों से कहा कि अब तो राहदार मारागया और किसी का डर नहीं है अब चलकर अमीर की सहायता करनी चाहिये जितने जिन् थे देवों पर कूदपड़े और खूब जी खोलकर लड़े बहुतसे देव तो मारेगये थोड़े से बचकर भाग गये अमीर ने उनका पीछा न किया और उसी दम अब्दुलरहमान को लेकर उसके मकान पर गया तो वहां बहुतसा जवाहिर और अनेक २ प्रकार के असबाब देखकर अमरू को याद किया कि अफ़्सोस इस समय अमरू न हुआ और अब्दुलरहमान से कहा कि यह सब माल मलिक शहपाल का है उससे मुझे कुछ काम नहीं है इसको उठवाकर अपने शाह के समीप पहुँचाओ कि उसका चित्त अपने माल को देखकर प्रसन्न हो जितने जिन् थे अमीर की बहादुरी और हौसिले की बड़ी प्रशंसा की कि इस क़दर माल को अपने हाथ से खोता है राहदार का शिर चार जिन्नों से उठवाकर अमीर अपने तख़्तपर सवार होकर चले और जिस समय क़िले के समीप पहुँचे सुलासल जिन्नी चालीस सहस्र सवार लेकर अमीर की अगवानी के लिये आया और क़िले में जाकर शाहानी दावत का सामान अमीर को दिया दूसरे दिन अमीर सुलासल जिन्नी को भी साथ लेकर गुलिस्तान आराम की तरफ़ रवाना हुए लिखनेवाला लिखता है कि शहपाल अमीर के आने का हाल सुनकर फूलकी तरह फूलगया और आज्ञा दी कि सामान शाहन्शाही तैयार हो हम हमज़ाको अगवानी लेने के वास्ते जायँगे अति शीघ्रही सामान शाही तैयार हुआ शाहन्शाह

काफ़ बड़े धूमधाम से अमीर की पेशवाई के लिये चले अमीर का हाल सु
कि दाहिने बायें तो अब्दुलरहमान और सुलासल के तख़्त थे और बीच में
किरां बातें करते चले आते थे कि सामने से सैकड़ों तख़्त जिन् परियां नाच
और गातीं जिनको देखकर मनुष्य मोहित होजाय दिखाई पड़े तत्पश्चात् सैकड़ों
तख़्तों पर हज़ारों परीज़ाद के मनुष्य जिनके कोमल शरीर और स्वभाव व
देखकर प्रेत लगेहुए मनुष्यों के समान बेहोश होजावे और किसी के हाथों
गुलदस्ते शहपाल के गिरदागिरद दिखाई दिये देखनेवालों को बड़ा आश्चर्यहुआ
बन सब खुशबूसे भरगया था अब्दुलरहमान और सुलासल जिन्नी ने दूरसे देखकर
अमीर से कहा कि शाहनूशाह आपकी पेशवाई के लिये आते हैं क्या आज्ञा
जब तख़्त समीप पहुँचा तख़्त को पृथ्वीपर रखवाया और शहपाल ने भी परी
ज़ादों से कहा कि हमारा तख़्त साहबकिरां के समीप रक्खो साहबकिरांने तख़्तप
से उतरकर शहपाल को चूमा शाहनूशाहने भी खूब छाती से लगाया और मुख
चूमकर कहा कि हमने आपको बड़ा दुःख दिया परन्तु यह प्रसिद्ध है कि बड़ेही
मनुष्य बड़ों का काम करते हैं अमीर ने कहा यह कौन बड़ी बातहै जो मेरा प्राण
जाता हो और आपका कार्य हो तो मैं देने को तैयारहूं और उसमें मेरी बड़ी
प्रतिष्ठा होगी यह कहकर राहदार का शिर और सब माल जो उसका लेआया था
शाहनूशाह के समीप रखदिया शाहनूशाह अमीर से बहुत प्रसन्न हुए और सब
लोग अमीर के बल और बहादुरी पर आश्चर्य करनेलगे और अतिप्रशंसा आपस में
करने लगे शाहनूशाह ने उसी स्थान पर अब्दुलरहमान को खिलअत देकर उसका
ओहदा दूना करदिया फिर अपने साथ अमीर को तख़्तपर बैठाकर गुलिस्तान इरम
में पहुँचे अमीर को बारगाह सुलेमानी में उतारकर एक जवाहिर लगेहुए तख़्तपर
बैठाया और जवाहिर आदि लाकर अमीर के सामने रक्खा और परियों को जोड़े
पोशाक पहिनाकर खड़ा करवाया और अमीर का स्वरूप और सुन्दरता को देखकर
प्रशंसा करने लगे और शाहनूशाह का यह हाल था कि अमीर की तरफ़ देखने
सिवा और कुछ न करता था और अमीर शिर झुकाये हुए बैठा था शाहनूशाह ने
जब अमीरको चुप देखा तो काफ़के अंगूर की शराब मँगवाने की आज्ञा देकर कहा
कि जबतक शराब न आवे तबतक राक़िम परदे दुनिया का हाल लिखा सुनावे॥

नौशेरवां का अमीर के कोहकाफ़ की तरफ जाने का हाल सुनना और उसका सेना भेजना मक्के को॥

अख़बारनवीस लोग इस तरह बयान करते हैं कि नौशेरवां ज़ोपीन और अ
ब्बास का वृत्तान्त सुनकर अतिव्याकुल ही था कि इतने में गुस्तहमकी भी ख़
आई और हमराहियों ने सर्व वृत्तान्त हमज़ा का उससे कहा कि जिससमय गुस्त
हम ने अपनी सेना को लेजाकर युद्ध के लिये आरूढ़ किया उसी समय हमज़ा
तख़्त आसमान से आकर उतरा हमज़ा ने तो गुस्तहम को मारा और सवारों

पृथ्वी से किसीने उठाकर आसमान पर लेजाकर वहीं से ताक २ के ऐसे निशाने मारे कि जो सेना पृथ्वी पर थी वह भी दब २ कर मरगई और इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना मारीगई परन्तु उसके मारनेवाले दृष्टि न पड़े इस बृत्तान्त को सुनकर बुजुरुच्चमेहर को बुलाकर यह सब बृत्तान्त उससे पूछा उसने रमल से बिचारकर सर्व बृत्तान्त परदेकाफ़ का बयान किया कि शहपाल शाहन्शाह परदेकाफ़ ने अमीर को अपनी सहायता के लिये बुलाया है और उन्हीं जिन्नों ने जो अमीर के बुलाने के लिये आये हैं गुस्तहम के सवारों को मारा है और हमज़ा जो अठारह दिन के लिये गया है परन्तु अठारह बर्षतक वहां रहेगा और काफ़ के जिन्नों को नाशकर पृथ्वीपर आवेगा और कोई जिन् उससे न जीतेगा यह बृत्तान्त सुनकर नौशेरवां अतिप्रसन्न हुआ कि अठारह बर्षतक कौन जीता और मरता है अवश्य करके हमज़ा किसी जिन् से मारा जावेगा इस समय में मुसल्मानों से अपना बदला लेना चाहिये यह बिचार कर बीलम और क़ीलम को जो कि उसकी सेना के सरदारों में अतिबलवान् और बहादुर थे तीस सहस्र सवार देकर मक्के की तरफ़ भेजा और कहा कि इस समय हमज़ा काफ़ की तरफ़ गया है और मैदान ख़ाली है तुमलोग जाकर जिसतरह से उचित हो मक्के को वीरान करके मलकामेहरनिगार को मेरे सम्मुख लाओ तब दोनों सरदार बादशाह से बिदा होकर चले अब अमरू का बृत्तान्त सुनिये कि जब अठारह दिन व्यतीत होगये और अमीर न आये तो बेहोश होकर रोते २ मलकामेहरनिगार के पास गया तो उसको भी बेताब देखा तब वह अमरू से कहनेलगी क्यों अमरू बाबा अमीर तो अभी तक न आये अब उन का स्नेह मुझे अतिब्याकुल कररहा है और नहीं मालूम कि उनपर क्या २ दुःख पड़ते होंगे और मुझे सिवाय बिष खाकर मरजाने के और कुछ नहीं सूझता और अब मैं मरीजाती हूं जिस स्थान पर तुम्हारी इच्छा हो वहां गाड़देना तब ख़्वाजे ने कहा ऐ मलका ! तू यह क्या बिचार करती है कोई जुदाई में बिष खाकर मरजाता है और हर एक प्रकार से उसको समझाकर कहा कि अब मैं अमीर का बृत्तान्त पूछने के लिये मदायनको जाताहूं बुजुरुच्चमेहरसे बिचरवाकर जल्द आताहूं आप अपने मन में ऐसा बिचार न कीजिये मलका को समझाकर मुक़बिल के समीप आया और उससे कहा कि मैं तो बुजुरुच्चमेहर से अमीर का हाल बिचराने के लिये मदायन को जाताहूं और तुम अपने चालीस सहस्र तीरन्दाजों को लेकर मलका की रक्षा करना और क़िले के हरस्थानपर पहलवानों को स्थित करके रखना और आप अमरू भेष बदलकर फ़ैज़ जङ्गल की मार्ग से चला थोड़े दिन में पहुँचकर एक बनिये की सूरत बनाकर बुजुरुच्चमेहर के दरवाजे पर जाकर खड़ा हुआ संयोग से उसी समय वे भी दरबार से आते थे अमरू को खड़ा देखकर पूछा तू कौन है ? अमरू ने कहा कि आपकी जागीर का असामी हूं लोगों ने मुझे बड़ा दुःख दिया है इसलिये तुम्हारे पास फ़िरयाद ले आया हूं और जो आप न

सुनेंगे तो बादशाह के पास जाऊंगा बुज़ुरुच्चमेहर ने उसकी अरज़ी को नौकर से मँगवाकर जो देखा तो मालूम हुआ कि अमरू है बैठके में बुलवाकर गले से मिलाकर सब बृत्तान्त पूछा अमरू ने कहा क्या कहूं बड़ी आपदा में हूं कि हमज़ा अठारह दिन का वादा करके गया था उससे अधिक बीत गया परन्तु अभी तक न आया मालूम नहीं हुआ और मलकामेहरनिगार बिष खाने पर तैयारहै ख़्वाजे ने कहा सत्य है कि अठारह दिन का वादा करके गया था परन्तु अठारह वर्ष के पश्चात् आवेगा और सब देवों का बध करेगा उसे किसी प्रकार से दुःख न होगा और इस समयके बृत्तान्त होने में तुमको भी बड़े २ बादशाही पहलवानों से युद्ध करना होगा परन्तु सब में तुम्हारीही बिजय होगी आप अतिशीघ्रही मक्के में पहुँच कर अपने क़िले का सामान करो किसीसे डरना नहीं नौशेरवां ने बीलम और क़ीलम को तीस सहस्र सवार से तुम्हारे मारने और मलका के ले आने को भेजा है अमरू ने कहा कि जो हमज़ा की मित्रता में मेरा प्राण भी जायगा तो कुछ सन्देह नहीं है यह पहले से मैं बिचार चुकाहूं जहांतक होसकेगा युद्ध करूंगा और बीलम और क़ीलम तो क्या जो जमशैद और ख़ुरशैद फिर जी उठें और मेहरनिगार का नाम मुखसे लेवें तो फिरसे गाड़ेजावें और इसपर क़ाबू न पावें परन्तु आप एक पत्र मलकामेहरनिगार को लिखदेवें कि उनको तसल्ली हो और मेरे कहने पर रहें बुज़ुरुच्चमेहरने क़लमदान मँगवाकर एक पत्र जिसमें सब बृत्तान्त अमीर के अठारह बर्ष के बाद आने का और तसल्ली मलका को देने के लिये लिखकर अमरू को दिया वह उस पत्र को लेकर फ़ैज जङ्गल के मार्ग से मक्के में अतिशीघ्र मंज़िलें तै करके पहुँचा जब मलकामेहरनिगार ने उस पत्र को पढ़ा तो रोनेलगी और कहनेलगी कि किसतरह से अठारह बर्ष बीतेंगे अमरू ने हरप्रकार से मेहरनिगार को समझाया और कहा कि ये अठारहबर्ष अठारह दिन के समान बीतेंगे और साथ कुशल आनन्द के आते हैं तुम बैठकर ईश्वर का भजन करो और हमज़ा की कुशल के लिये बर मांगो अपने दिल को स्वस्थ कीजिये ईश्वर हमज़ा को एक दिन लाकर आपसे मिलावेगा अमरू ने मेहरनिगार के समझाने के पश्चात् सेना में आकर सब सेनापतियों और सिपाहियों से कहा कि अमीर अठारह बर्ष तक न आवेंगे बुज़ुरुच्चमेहर ने रमल से बिचारकर मुझसे कहा है सो जिसको जानाहो वह अपने घर अभी से जाये और जिसको रहनाहो वह हमारे भाई के समान हमारे साथ रहे और मलका की रक्षा करे तब सब सेनापति और सिपाहियों ने कहा कि हमलोग जबतक प्राणरहेगा हमज़ा को छोड़ कहीं न जायँगे और अब आप हमज़ा के स्थानापन्न हैं आपकी आज्ञानुसार होकर रहेंगे और आपको छोड़कर कहां जावें? ये बातें अमरू सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और सबको छाती से लगाकर कहने लगा कि तुमलोग सब हमारे भाई हो जब हमज़ा आवेगा तुमलोगों के साथ अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होगा और हरएक

के ओहदे बढ़ावेगा यह कहकर सब पहलवानों को क़िले की दीवारों पर स्थित करके रक्षा करनेकी आज्ञा दी आप शामियाने पर आकर शाहाना पोशाक पहिन कर जड़ाऊ कुरसी पर बैठकर उन दोनों का आसरा देखनेलगा कि थोड़ेही समय पर क़िले के सामने एक गर्द उड़ती हुई मालूम हुई और थोड़ेही समय पर बहुत से बीर बलवान् शस्त्र धारण कियेहुए दिखाई दिये अमरू ने जाना कि बीलम और क़ीलम यही हैं उन बेवक़ूफ़ों ने आतेही सेना को क़िले के घेरने की आज्ञा दी कि मुसल्मानों को मारकर मलकामेहरनिगार को निकाल लेआओ कि उसके बदले में खिलअत और पारितोषिक प्राप्तकरके अतिशीघ्रही मलका को साथ लेकर मदायन में पहुँचें और जाकर बादशाह से अपना ओहदा बढ़वावें सवारों ने उसकी आज्ञा से घोड़ों को दौड़ाकर क़िले के समीप पहुँचाया जब क़िले की दीवार पर चढ़ आये तब अमरू ने ऐसी आतशबाज़ी की वृष्टि की कि जो आगे बढ़े थे उनको उस आग में जलादिया और जो पीछे थे उन्होंने मारे डरके आगे को पैर न दिया बीलम और क़ीलम ने जो देखा कि दिन व्यतीत होआया है और सेना भी घबड़ाई है डङ्का लौट आने का बजवाया और क़िले के समीप से हटकर डेरा लिया और अपनी रक्षा के लिये सेना को रौंद घूमने को आज्ञा दी अब अमरू का हाल सुनिये कि वह जिस समय से अमीर परदेकाफ़ को गये थे उसी समय से मलका के साथ भोजन करता था और उसको रोज़ समझाता था शामके समय भोजन करने के लिये और भोजन करने के पश्चात् दो पहरतक हाज़िर रहता और मलका के समझाने के पश्चात् उठकर सरहंगमिश्री को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम मंज़रशाह यमनी की बेटी हुमायूंताजदार को जाकर लेआओ और इस कार्य के पूर्ण करने में बड़ी युक्ति करो कि वह और ज़हरमिश्री दोनों मलका के समीप हरसमय मौजूद रहकर दिल बहलावें और हरसमय हँसी की बातें करती रहें यह कहकर अपने महल में जाकर चैन से सोरहा जब प्रातःकाल हुआ तो अपनी आवश्यक कृत्य से निवृत्त होकर सब को अपने कार्य के लिये आज्ञा दी और शामियाने के नीचे कुरसी पर शाहानापोशाक धारण करके बैठा और हरएक मनुष्य उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य करनेलगे इतने में बीलम और क़ीलम सिपाह लेकर क़िलेपर आपहुँचे और सेना को भीतर जानेकी आज्ञा दी तब अमरू ने पहले दिनकी तरह आतशबाज़ी पत्थर ईंट तीर आदिक क़िलेपर से मारने शुरूअकिये तो सेना बेहोश होकर लौटपड़ी बीलम और क़ीलम ने सेना को ललकारा और जो भागेजाते थे उनको पुकारा कि आगे क़दम बढ़ाकर पीछे न हटाना चाहिये भागना नामर्दों का काम है और बहादुर और दिलावरों का लड़ने में नाम है तब सेनाने फिरसे चढ़ाई की परन्तु आतशबाज़ी से आगे न बढ़सकी तब बीलम और क़ीलम ने जवांमरदी करके अपने घोड़ेको कुदाकर क़िले की दीवारपर पहुँचाया सेना ने देखा कि सरदार हमारी दीवारपर खड़े हैं लज्जित होकर आपस में सलाह करके घोड़ेको बढ़ाकर

अपने सरदारों के पास पहुँचे तब अमरू ने बिचारा कि यह बात तो अच्छी न हुई कि शत्रु आपहुँचा तो अतिशीघ्रही एक गोला दीवार तेलका भराहुआ आग लगाकर तीन चक्कर देकर बीलम की छातीपर मारा वह छातीपर लगकर फूटगया तो तमाम बदन जलनेलगा तब हाथों से बुझानेलगे तो अंगुलियां भी बत्तीकी तरह जलनेलगीं और जो तेल की छींटें दाढ़ीपर पड़ीं तो रुई की तरह जलगईं और जब मुखपर हाथ फेरा तो मोछें भी जलगईं जब क़ीलम ने देखा कि बीलम जलता है उससे कुछ और न बनपड़ी आकर हाथ से बुझानेलगा तो उसका भी हाल वैसाही हुआ वह भी अतिक्लेश में पड़ा और दोनों भाई लोटन कबूतर की तरह लोटनेलगे सेना ने देखा कि सेनाके सरदार जले जाते हैं दौड़कर मिट्टी उड़ानेलगे इस युक्तिसे वह अग्नि बुझाई वे दोनों फ़ुरसत पाकर डेरेकी तरफ़ भागे और जाकर इलाज करनेलगे युद्ध का सामान भूलगये अमरू चैनसे फिर कुरसी शामियाने पर डालकर बैठा जब दो घड़ी दिन बाक़ी रहा अमरू को अपने भेष का बिचार आया कुरसी से उठकर भेष की पोशाक पहिनकर नौशेरवां के अय्यार की सूरत बनाकर बीलम और क़ीलम के डेरे में चलागया और बीलम और क़ीलम से मुलाक़ात करके प्रीतियुक्त बातें करनेलगा वे दोनों रोनेलगे कि देखो भाई अमरू ने हम लोगों का यह स्वरूप बनाया है उसके हाथ से हमलोगों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ आतिश बोला कि सुनो साहब अय्यार पर अय्यार जबरदस्त होता है न कि सिपाही अय्यार से बराबरी करे आप जानते हैं कि अमरू कैसा अय्यार है कि आज पृथ्वीपर अपनी बराबर दूसरे को नहीं जानता है इसी कारण से बादशाह ने मुझे तुम्हारी रक्षा को भेजा है परन्तु तुमलोगों ने शीघ्रता की है कि मुझे न आने दिया जल्दी करके अपना कार्य ख़राब किया अच्छा जो हुआ सो हुआ अब देखो अमरू को कैसा मैं बनाताहूं जो तुम्हारे साथ उसने ऐसा कियाहै उसका मज़ा उसे कैसा चखाता हूं तो वे दोनों दरद से आह करनेलगे आतिशने कहा कि इस समय दोचार प्याले अंगूर की शराब के पीजिये कि बलभी हो और दरद दूर होजावे उन दोनों ने कहा कि भला तुमसे बढ़कर कौन पिलानेवाला है जो यही उत्तम हो दो चार प्याले पीलेंगे अमरू तो यह चाहताही था अतिशीघ्रही गिलास और सुराही हाथ में लेकर दो २ गिलास बिष मिलीहुई शराब सबको पिलाई तीसरे दौरे में दो २ चार ४ प्याले पीकर लोटपोट होगये सारा होश और हवास खो बैठे अमरू ने बाहर आकर सब शागिर्दपेशों को शराब दी और उनकी भी युक्ति अच्छी तरह से की जब हरतरह से इतमीनान होचुका तो प्रथम तो सबके वस्त्र उतार लिये और जितना असबाब उस डेरे में था फ़रशतक उठाकर रखलिया और सब की एक तरफ़ की दाढ़ी बनाकर दूसरी तरफ़ घुंघुरू बांधा और गाल में एक तरफ़ चूने काजल के टीके देदिये और दूसरी तरफ़ काजल लगादिया तब उलटा करके खम्भे में बांधकर एक रुक़्क़ा लिखकर कि मैं अमरू था आज तो तुम लोगों का प्राण

छोड़े जाता हूं केवल दुःखही दियाहै उत्तम होगा कि तुम कूच करके चलेजाओ अपना कारखाना यहांसे हटा लेजाओ नहीं तो अबकी दफ़ा प्राणभी न छोडूंगा बीलम के गलेमें बांधकर अपना रास्ता लिया क़िले में आकर पोशाक उतारकर भोजन किया और आराम से सोरहा अपने कार्य से छुट्टी पाई जब प्रातःकाल हुआ सब सरदार बीलम और क़ीलम के सलाम को आये तो सब नंगे पांव थे उस हालत को देखकर कोई मुख से न बोलता था सब लज्जा के मारे चुप होरहे अन्त को सब का मुख हाथ धोलाकर अपने पास से कपड़ा मँगवाकर दिया और पत्र जो बीलम के गले में बांधा था खोलकर पढ़ा तो मालूम हुआ कि आतिश न था वह अमरू था बीलम और क़ीलम लज्जित होकर मुख बन्द करके मदायनकी तरफ़ कूचकरके भागे और उसी हाल से बादशाह के सामने आकर रोनेलगे॥

भेजना नौशेरवां का हरमर पुत्र अकबर अमरू के बध करनेको॥

लिखनेवाला लिखताहै कि जब बीलम और क़ीलम घायल और लज्जित होकर मदायन को चले तब अमरू ने छःमहीनेके भोजनके लिये जिन्स मोल लेकर क़िले में रखवाली और युद्ध का सामान इकट्ठा करके बैठा बीलम का बृत्तान्त सुनिये कि वे दोनों गिरते पड़ते थोड़ेही दिनके पश्चात् मदायन में पहुँचे और नौशेरवां को अपनी सूरत ख़राब दिखलाकर अमरूकी शिकायत करनेलगे बादशाह उनका रूप देखकर हँसनेलगे और कहा कि अमरू अतिदुष्ट मनुष्य है देखो किस युक्ति से वह पकड़ा जाता है और हमारी सेना क्या युक्ति करती है? यह कहकर हरमर को बुलाया और आज्ञा दी कि तुम मक्के को जाकर अमरू को मारो और मलका मेहरनिगार को हमारे सम्मुख लाओ और हरप्रकार से समझाया कि ऐसा युद्ध बादशाहों और शाहज़ादों के पुण्य और प्रताप से बिजय पायाहै और सरदारों ने अपने नाम और निशान के लिये बड़ी २ आपदा उठाई हैं इस प्रकार से समझाकर चालीस सहस्र सवार और बहुत से पहलवान और बख़्तियार के पुत्र बख़्तक को भी साथ करके सब लोगों से जान देने का इक़रार कराकर भेजा जबतक ये लोग मक्के में पहुँचें तबतक थोड़ासा बृत्तान्त अमरू का सुनाताहूं कि एकदिन अमरू ने बिचारा कि बहुत दिन हुए भेषका मज़ा नहीं उठाया लिबास शाहाना उतारकर बहुरूपी पोशाक पहिनकर मदायनकी तरफ़ चला बीस बाइस कोस गया था कि एक बवण्डल दिखाई पड़ा तो बिचार किया कि इसमें अवश्य कोई सेना होगी तो एक भिश्ती का भेष धरकर एक मशक लेकर उसी ओर चला समीप पहुँचकर देखा कि हरमर ताजियेदार एक बड़ी भारी सेना साथ लिये चलाआता है जिसके धूमधाम से पृथ्वी कांप रही हैं परन्तु प्यास के मारे किसीके मुख से बात नहीं निकलती है सबका प्राण प्यास से निकलरहाहै जब उन लोगों ने भिश्ती को देखा तो ऐसे प्रसन्न हुए कि मानो ईश्वर मिले नेत्रों में तरावट आगई एक २ जलके लिये दौड़ने लगे तब एक सरदारने कहा कि इसको पहले शाहज़ादे के पास लेचलो कि वह सब से

अधिक प्यासा है जब उसको हरमर के पास लेगये तो उसने पहिचाना कि
हरमर है और प्यास के कारण अतिव्याकुल होरहाहै अपना पराया किसीको प।
चानता नहीं है और पृथ्वी पर पड़ाहुआ एँड़ी रगड़रहा है और मुख का रङ्ग
गड़ गया है बहुतसे मनुष्य चद्दर ताने उसके मुख की छाया किये हैं और ठ.
श्वास गिनरहे हैं अमरू ने थोड़ीसी बूंदें जलकी उसके मुखमें टपकाईं तो उस
होश और हवास ठिकाने हुए और नेत्रों को खोलदिया भिश्ती को पानी लिये दे
कर अतिप्रसन्न हुआ और जल पीने का इशारा किया और थोड़े समय के पश्च
हाथ में लेकर पिलाया फिरसे जिलाया जिस समय हरमरकी जान में जान आ
तो उठकर बैठा और एक गिलास जल पीकर कहा कि ऐ भिश्ती! तूने इस सम
में ईश्वर का काम किया है इसमें तुझे बड़ा यश होगा और यह जल तूने न
पिलाया मुझको मृत्यु से बचाया है अच्छा अब थोड़ा जल मेरे लिये रखदे शे
हमारी सेना को पिलादे कि वेभी जी जावें अमरू के पास ईश्वर की कृपा से च
जितने मनुष्य पियें परन्तु वह मशक भरीही रहती थी अमरू ने सब सेना
पिलाया और वह भरी की भरीही रही इस बातपर ईश्वर ने दया की जब सब से
पानी पीचुकी हरमर ने कई सौ अशरफ़ी इनाम देकर आज्ञादी कि तुम हमारे स
रहो और ऐसे मार्ग से मक्के को लेचलो कि राहमें जल मिले और हम मक्के
विजय करने जाते हैं जो विजय होगया तो तुमको वहां का सरदार बनावेंगे अम
एक ऐसे वन में लेगया कि जहां मंज़िलोंतक जल न मिलसक्ताथा थोड़ीदूर जाव
हरमर से कहनेलगा हे हरमर! तू जो अमरू से युद्ध करने के लिये जाता है
क्या विचार किये है उससे तू क्योंकर जीतेगा वह एक बड़ी बला है देखना तु
कैसी आपत्ति में डालेगा हरमर बोला हे भिश्ती! अमरू एक सिपाही है देख
जो खड़ी सवारी उसे न मारलिया तो कुछ न किया भिश्ती यह सुनकर हँ
और कूदकर हरमर से कहने लगा हे हरमर! तू क्या जो तेरा पिता सात देशों
शाहन्शाह है अपनी सब सेना लेकर आवे तो मेरा कुछ नहीं करसक्ता है -
नहीं जानता कि मैं ही अमरू हूं और इस समय तेरी सेना में अकेलाहूं परन्तु -
कुछ नहीं करसक्ता यह कहकर कूदकर हरमर के शिरका ताज लेकर चलदिया
उसको नङ्गे शिर करदिया तब बहुतसे सवार उसके पीछे दौड़े परन्तु किसी ने
की गर्द तक भी न पाई सब व्याकुल होकर लौट आये और थोड़े से सवार
बीलम और क़ीलम के साथ के टूटे फूटे आते थे उन्होंने हरमर को अति ०५
देखकर उनको उस वन से निकालकर सीधी राह का पता बताया तो इस दुः
पश्चात् चौथेदिन शामको मक्के में पहुँचे डेरा डालकर युद्ध का सामान
सेना ने अपनी पंक्ति बराबर से रक्खी रात्रि को जिससमय सब सरदारलोग
मर के पास जाकर बैठे तो मुसल्मानों का चरचा होने लगा हरएक सरदार -
विचार कहनेलगा दर्ज़ाजिरहपोश ने हाथ जोड़कर बिनय किया कि हे ए

मरू क्या है ? और मुसल्मानी सेना क्या माल है ? आपका बड़ा प्रताप है एक
ममें वे पायमाल होजायँगे जो आज्ञा हो तो इस बाण में जो मेरे हाथमें है क़िले
। दरवाज़ा तोड़कर अपने सिपाहियों से सब मुसल्मानी सेना के साथ अमरूको
ारकर मलकामेहरनिगार को निकाललाऊं और आपको अपनी बहादुरी और
लको देखाऊं हरमर बोला कि मैं जानताहूं तुम ऐसे जवांमर्द और बहादुर युद्ध
व्याघ्रके समान हो परन्तु मैं कहताहूं सांप मरै पर लाठी न टूटे यह ऊपर से
ासान भीतर कठिन है इसको बुद्धिमानी के साथ से करो और अपनी काररवाई
गत् में प्रसिद्ध करो क्योंकि एक बहुरूपिये से युद्धकरना मेरे लिये अति लज्जा
ी बात है कि एकछोटे मनुष्य से बादशाही सामान से युद्ध करना अति लज्जाकी
ात है बख़्तियारक इस बातपर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि शाहज़ादों और
दशाहों को ऐसाही बिचार करना चाहिये कि वे बड़े २ कार्य करते हैं उनसे और
ल अधिक बुद्धिमान् होसक्ता है और बोला कि जो आज्ञा हो तो सेवक उसको
मझाकर प्रातःकाल आपके समीप लेआये और उसे अच्छे प्रकार से सब वृत्तान्त
नको समझादेवे हरमर ने कहा इससे क्या उत्तम है ? तू खुद बुद्धिमान् और
शियार है इसी तरह से रात्रि तो इसी बिचार में काटी जब प्रातःकाल हुआ बख़्ति-
रक अपने खच्चरपर सवार होकर क़िले के ख़न्दक़पर गया देखा कि अमरू
हानालिबास पहिनेहुए बड़ी धूमधाम से पत्थर की कुरसीपर शामियाने के नीचे
ा है और उसके चारों तरफ़ सब सरदार और नगरबासी हाथ जोड़े खड़े हैं और
एक मनुष्य उसकी आज्ञा का आश्रित है और मुक़ाबिल बारह सहस्र तीरंदाज़
हेत तरकश कमर में कमान कांधेपर लगाये पीछे तैयार खड़ाहुआहै बख़्तियारक
जाकर सलाम किया और कहा कि ख़्वाजे ! जोकि मैं तुझे अपना बड़ा जानताहूं
ालिये मैं तुझे समझाने आयाहूं जिसमें आपको हरप्रकार से उत्तम होगा वह यह
कि हमज़ा काफ़को गया है और उसका देवों के हाथसे बचआना असंभव है
के कुशल में आने की कुछ आश नहीं है और तुम अच्छी तरहसे जानतेहो कि
ाम बादशाह और शाहज़ादे मेहरनिगार के नामपर लोभित हैं तो कौन है ? कि
ाई न करेगा और इस बात से रहित होगा सो इस कारण अपनेको दुःख में डा-
ा बुद्धिमानी नहीं और उत्तम है कि मेहरनिगार को शाहज़ादे हरमर को देओ
र उससे मक्के की राजधानी लेओ अमरू बोला तू नहीं जानता कि जो नौशेरवां
ह सब अपनी सेना लेकर आवे तो मलकामेहरनिगार को नहीं लेजासक्ता और
ेरे सामने बातें बनाने आया है अठारह बर्ष तो बात कहतेमें बीत जायँगे कौन
ी बात है यह तेरी मीठी २ बातें मेरे चित्त में कब आती हैं और काफ़के देवों
की क्या मजाल है कि वे अमीर को दुःख दें और उसपर ग़ालिब आवें मेरे सामने
से हटजा नहीं तो तलवार से मारडालूंगा और तेरी बातों का मज़ा चखाऊंगा
... की शामत जो आई कहने लगा कि देखना तेरा यह बलबला कैसा

मिटाताहूं और कैसी आफ़त में डालताहूं जो तेरी नाक में नकेला न लगाया
कुछ न किया अमरू ने उसकी ऐसी बातें सुनकर एक पत्थर का टुकड़ा
मारा जो दोअंगुल उसके माथे में धँसगया तब अति शीघ्रही अपना खच्चर
कर भागा कि ऐसा न हो फिर दूसरा भी मारे रुधिर में भराहुआ हरमर के
आया और उसको अपनी खराबदशा दिखाई और मलहम पट्टी करने के पश्च
अब कुछ होश हुआ तो अपनी और अमरू की बातों का सब बृत्तान्त हरमर
कहा हरमर यह हाल अमरू का सुनकर क्रोधित हुआ और गालियां देने लगा

साहबक़िरां (हमज़ा) के पीने के लिये देवों का अंगूर की शराब लाना॥

इस बृत्तान्त को इसतरह बयान करते हैं कि जिससमय परियों ने शराब अं
की हाज़िर की तो उसीसमय शहपाल ने एक गिलास शराब अपने हाथ से अमी
को पिलाया तो अमीर का चित्त अतिप्रसन्न हुआ उस गिलास को पीकर शहपा
के तख़्त को चूमा और बड़ीप्रशंसा करनेलगा तत्पश्चात् शराब अंगूर की पिला
वालों के हाथ से खूब अच्छी तरह से पीकर अपने चित्त को आनन्दित किया ने
में डोरे पड़गये और जिस समय नेत्र उठाकर देखा तो चारसौ परियां सजी हु
ऐसी दिखाई दीं कि होश हवास उनपर मोहित होकर सब भूलगये बुद्धि उन
देखने से दङ्ग होगई और हरप्रकार से सभा शराब और क़बाब की ऐसी बनाई
कि जिससे बे पियेहुए मज़ा मिलता था और अक्सर स्थानों पर ऐसी पहलवा
की तसवीरें बनाई थीं कि मानो तसवीर हाथ में लिये युद्ध कररहे हैं और बृक्षों
पक्षी ऐसे २ बनाकर रक्खेथे कि देखनेवाले का चित्त अवश्य शिकार खेलने
चाहताथा और हज़रत सुलेमान की तसवीर सरदारों समेत बनाकर एक जड़ा
शामियाने के नीचे ऐसी सुन्दरता के साथ रक्खी थी कि मानो सब बैठे सभा
बातें कररहे हैं और प्रत्येक मनुष्य अपना २ कार्य कररहाहै और उन शामिया
में लाल वा ज़मुर्रद व याकूत वा इलमास के तकिये लगाकर जवाहिरों के ख
में बांधे थे और खम्भोंकी गांठोंपर सुवर्ण के गिलास बांधकर लटकायेथे और
सुन्दरता के साथ बनाया था कि देखने से चित्त अतिप्रसन्न होताथा और बरा
से झाड़ें लटकाई थीं और चारहज़ार चारसौ चालीस तख़्त और कुरसियां
हली जवाहिर से अलंकृत हुए क़ाफ़के प्रतिष्ठित लोगों के बैठने के लिये उस
पर बिछीहुई थीं और सबके मध्य में एक तख़्त अतिउत्तम हज़रत सुलेमानके
के लिये रक्खाथा उसीपर हज़रत सुलेमान बैठेथे और अब उसपर
बैठाहै और वह तख़्त सम्पूर्ण जादूका बना था और चारों कोनोंपर चार तख़्त
मुर्रद के रक्खे थे कि देखने से बड़ा आश्चर्य होता था कि किसी के मुख में
लटकाया था कि वह कभी लीलता और कभी उगिलता था और पीठ पर
गुलदस्ते बनाकर रक्खे थे उसमें ऐसी सुगन्ध आती थी कि सूंघनेवालों का
प्रसन्न होजाताथा और जब बादशाह उसपर पैर रखताथा तो वे बोलते और

ागिनी छोड़ते थे कि सुनकर लोगों को आश्चर्य होताथा और फूलों में यह बड़ा
ाश्चर्यथा कि जिसप्रकार के फूलथे वैसीही सुगन्धभी आतीथी और कठरोंके सब
एडोंपर कमल लगेथे और दोकमलों के बीच में एक दीपक गिलास अतिसुन्दरता
े साथ रक्खाथा और हीरे के चार खम्भोंपर एक नमगीरा जिसमें सुराही और
ोतियों की भाड़ें लटकाई हुईथीं और छतमें माणिक दीप्यमान लगेहुए खिंचाता
ा और तख़्त के चारों कोनोंपर अनेक प्रकार के पत्थर के गिलास थे उनपर भी
वाहिरात जड़ेहुए थे और हरएक में गुलाब केवड़ा रक्खाथा और हरएकमें पिच-
ारियां लगीथीं कि उनसे लोगों का चित्त अतिप्रसन्न होताथा और ऐसे फूल फूले
कि जिसके नाक में उनकी सुगन्ध पहुँचती थी वह हँसते २ लोटजाताथा और
स न्यायशाला के भीतर बारह सहस्र छःसौ सायबान और बारह सहस्र खम्भे
ौर चारसहस्र डोरियां ऐसी सुन्दर उसके साथ लगीथीं कि देखने से अति आ-
न्द होताथा और जिस स्थानपर हज़रत सुलेमान की सवारी रहतीथी उसके आगे
िनकोस का घेराथा जिसमें नौवत बजती थी मानो वादल गरजताथा और उस
ायशाला के पीछे एक स्थान ऐसा बनाथा कि जिसके देखने से चित्त अतिप्रसन्न
ोताथा और उसके सामने एक बाटिका अतिसुशोभित बनीथी कि वृक्षोंपर जवा-
िर के पक्षी बुलबुल, पिड़की, कोयल, तूती आदिक बैठेहुए अपनी बोली बोल रहे
कि सुननेवालों का चित्त अतिप्रसन्न होताथा और नहरें जो बाटिका के समीप
ीं उनपर बकुले, सुरख़ाब, टिटहरी, मछरंगे जवाहिरके बनायेहुए बराबर से रक्खे
ुथे और देखने से यही विदित होताथा कि मानो पक्षी जानदार फिर रहेहैं और
ितर, वटेर, कबूतर आदिक न्यायशाला की दीवारोंपर बराबरसे फिररहेथे अमीर
न सब तमाशों को देखकर बड़े आनन्द में हुए और यह सुनिये कि एक शह-
ाल की बेटी आसमानपरी नामे शहपाल के तख़्त के पीछे परदा डालेहुए अपने
ख़्तपर बैठी थी उसने जो उस परदे की आड़से अमीर की सूरत देखी तो अति
ोभित होकर उसके साथ ब्याह करने की इच्छा की तत्पश्चात् जब एक दिन
ौर रात्रि व्यतीत हुई तो अब्दुलरहमान ने शहपाल से कहा कि मैं केवल नौ
िनको कहकर अमीर को लायाहूं इससे अधिक लगे तो मेरे शिरपर बदनामी है
हपाल ने अमीर से कहा कि साहबकिरां जैसा मैं इन देवों के हाथ से दुःख उठा
ाहूं ऐसा दुःख कभी नहीं पड़ा जो आप कृपा करके इन लोगों को मारकर मेरे
ख को छोड़ायें तो सदैव का दुःख दूरहोजावे और आपकी सेवामें मैं सदैव प्रवृत्त
ुंगा अमीर ने कहा यह क्या बातहै ? जो ईश्वरकी कृपा होगी तो दमभर में एक२
ा शिर काटकर आपका देश आपके आधीन न करदिया तो हमज़ा नाम न
खूंगा और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है आप युद्ध का डङ्का बज-
ाइये तो आपको ईश्वर की रचना का हाल देखाऊं शहपाल ने अतिप्रसन्न होकर
ब्दुलरहमान को आज्ञादी कि वे चारों तलवारें जो सुलेमान के कमर की रक्खी

हुई हैं उनको उठालाओ और अमीर के सम्मुख रखदेओ जो इनके पसन्द हो वह लेलेवें अब्दुलरहमान ने लाकर हाज़िर किया शहपाल ने अमीर के सामने रखकर कहा कि जिसको आप पसन्द करें लेवें और हरएक का नाम बतलाया कि एकका नाम समसाम दूसरी कमकाम तीसरी अकरब चौथी ज़ुलहिज़ाम है अमीर ने अकरब सुलेमानी को लेकर अपनी कमर में लगाया तब सब जितने परीज़ाद खड़ेथे हँसकर शहपाल को मुबारकबादी देनेलगे अमीर ने यह हाल देखकर अब्दुलरहमान से पूछा कि यह क्या बात है? उसने कहा कि सुलेमान ने आज्ञादी थी कि जब देवोंको मारना तो इसी अकरब को लेकर मारना सो आपने भी उसीको लिया तो लोगों को खुशी हुई कि वे देव अब अवश्य करके मारेजायँगे आपने भी बे जानेही उसी तलवार को उठाया तब अब्दुलरहमान ने कहा कि एक बात और शेष रही है उसको भी तै करलीजिये अमीर ने कहा वह क्या है? उसने कहा कि चनार का वृक्ष है वह सर्वत्र परदेकाफ़ में प्रसिद्ध है कि जो कोई इस वृक्षको अकरब सुलेमानी से एकवार से काटेगा वही इन देवों को भी मारेगा अमीर ने उस वृक्ष के नीचे जाकर एक वार जो लगाया तो साबुन के तार की तरह से तलवार पार हो गई परन्तु वृक्ष गिरके पृथ्वीपर न आया तो अमीर ने बिचार किया कि वृक्ष नहीं कटा अति संदेह में हुए अब्दुलरहमान ने अमीर को मुबारकबादी देकर कहा कि वृक्ष सब कटगया है इसको हिलाकर देख लीजिये अमीर ने एक धक्का जो मारा तो वृक्ष बड़ा शब्दकर पृथ्वीपर गिरपड़ा शहपाल ने अमीर के हाथों को चूमा और अतिप्रसन्न होकर स्थानपर लाये और कहने लगे कि निश्चय है कि तू हज़रत सुलेमान है और तेरे सिवाय और किसी की ताक़त नहीं है कि देवों का बध करे और ऐसे प्राण जाने के स्थानपर ऐसी बहादुरी और हौसिले से पैर रक्खे अमीर ने कहा कि जो ईश्वर ने आपकी कृपा से चाहा तो केवल देव तो क्या है सब देवों का शिर काटकर इस मैदान को पाटता हूं परन्तु अब आप अपनी सेना को आज्ञा देवें कि वह गुलिस्तानअरम से निकलकर बाहर मैदान में पड़े और युद्ध का डङ्का बजावे और अपने युद्ध करने की युक्ति हमको देखलावे शहपाल के आज्ञा देते ही सब सेना गुलिस्तानअरम से बाहर निकलकर डेरा डालकर पड़ी और शहपाल भी उन्हीं के साथ आया जब यह वृत्तान्त देव को पहुँचा कि शहपाल ने परदे दुनिया से एक मनुष्य अतिबहादुर और बलवान् हमलोगों के मारने के लिये बुलाया है वह आकर मैदान में पड़ा है और युद्ध का डङ्का बजवाता है देव ने जब यह हाल सुना एकबारगी क़हक़हा मारकर हँसनेलगा कि चलो इसी बहाने से वह नगर से निकला और कहां मनुष्य कहां देव कहीं वह बराबरी करसक्ता है यह कहकर अपनी सेना को तैयार कराकर युद्ध का डङ्का बजवाने की आज्ञा दी तब शहपाल शाह ने भी अपनी सेना में डङ्का युद्ध का बजवाया दोनों तरफ़ लड़ाई का सामान सब रात्रि को हुआ किया जब प्रातःकाल हुआ वह देव कई

निकला तो देखा कि कोई देव तो शेर की खाल कोई अजदहे की कोई हाथी की खालें गले में डाले हुए हैं और शिरपर फ़ौलादी खोल दिये हैं जंजीर तोड़े फ़ौलादी कमर में बांधेहैं और गलोंमें खोपड़ियों के हार डालें बरछी तलवार चकमाक आदि शस्त्र धारण किये हुए युद्ध के लिये तैयार हैं परन्तु शहपाल को देखकर दङ्ग होगये कि एक तख़्तपर आप सवार और एक पर साहबकिराँ को सवार करके देव की सेना की तरफ़ चला कि देव इस सामान को देखकर डरे और अपने जीवन से हिरास हुए देवों ने जो साहबकिराँ को देखा तो बड़े आश्चर्यरूपी खेल करने लगे कि कोई तो मैदान में आकर चूतर पीटने की कला करता है कोई अपनी दाढ़ी पकड़कर बैठकें करता है कोई कूदकर आसमान की तरफ़ जाता है और वायु में उड़ता है और वहां से कला मारते हुए पृथ्वीपर आता है और कोई दांत निकालकर अमीर को दिखाता है यह सब देखकर अमीर हँसनेलगे कि देखो ये कैसे पागलपन का काम करते हैं इसके पश्चात् एक देव अहरमन अफ़रेत का पिता जो पांचसौ गज़ का लम्बा था मैदान में आकर ललकारा और ऐसा चिल्लाया कि तमाम परदेकाफ़ हिलगया और कहा कि वह कोचक सुलेमानी कहां है ? जो अपने को अति वलवान् और बहादुर समझकर हमसे लड़ने को परदे दुनिया से आया है हमारे सामने आवे कि उसको मौत का मज़ा चखाऊं अमीर शहपाल से आज्ञा लेकर मैदान में निस्सन्देह होकर आये और एक बार ईश्वर का नाम इस ज़ोर से लिया कि सब लोग कांप गये अहरमन बोला कि तू इतने से रूपपर ऐसा चिल्लाता है कि हमको इस शब्द से डराता है अच्छा है शस्त्र को मार देख अमीर ने कहा कि मैं तो पहले कुछ कार्य नहीं करता और यही हमारे पुश्तहापुश्त चली आती है प्रथम तू वार चला पीछे हम चलावेंगे और अपनी बहादुरी तुझे दिखलावेंगे वह बोला कि तुझ पर जो मैं पहलीवार लाऊं तो सब देव आदि हँसेंगे और तू कब बचेगा कि फिर तू मुझपर वार चलावेगा अमीर ने कहा क्या जिस समय डील डौल की बांट होती तू वहां था और सिवाय इसके तू नहीं जानता है कि मैं तेरे मारने के लिये परदे दुनिया से आयाहूं और तेरे लिये मौत लायाहूं यह सुनकर हरमन ने एक तलवार अमीर के ऊपर चलाई अमीर ने उसको रोककर अक़रब सुलेमानी कमरसे निकाल कर कहा ओ नापाक ! खबरदार हो कि मैं भी वार चलाता हूं और नापाक रुधिर से अपनी तलवार को डुबोता हूं यह कहकर एक हाथ उसकी कमर पर ऐसा मारा कि दो टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शहपाल ने ईश्वर का गुणानुवाद किया और परीज़ादों को बाजन बजाने को आज्ञा दी अफ़रेत ने एक आह करके कहा कि तूने बड़ा ग़ज़ब किया कि मेरे पिता को मारडाला देख तुझे भी कैसा दिखलाता हूं यह कहकर एक देव को जो हरमन से भी बलवान् था अमीर के सामने भेजा साहबकिराँ ने उसको भी मारा यहां तक कि थोड़े समय में नौ देवों को जो अति [illegible] मारडाला तब तो अफ़रेत ने कांपकर डंका लौटजाने का बजवाया और

अपने पिता की लोथ उठाकर अपनी राह ली शहपाल जवाहिर और अशरफ़ी अमीर की नेवछावर में लुटाते हुए गुलिस्तान अरम में आये और अमीर की बहादुरी की बड़ी प्रशंसाकरनेलगे ॥

वृत्तान्त ख़्वाजे अमरू का ॥

अब थोड़ासा बृत्तन्त ख़्वाजे अमरू का सुनिये कि जब बख़्तियारक अमरू के हाथसे घायल होकर हरमन के पास गया तो दज़ादजहपोश ने कहा कि जो आज्ञा हो तो तबलजङ्ग बजवाया जावे अभी चलकर अमरू को मारें कि फिर ऐसा कभी न करे हरमन ने कहा कि मुझे किसी को मारने की इच्छा नहीं है और युद्ध करने की कुछ आवशकता नहीं है केवल यह कियाजावे कि पहरा क़िले के चारों तरफ़ फिराकरे कि कोई वस्तु क़िलेमें न जानेपावे कि भूख और प्याससे दुःख उठावें और बन कटाकर रणगढ़ा और सीढ़ियां बनवाई जावें जब संयोग मिले क़िलेपर लगाकर चढ़चलें यहबात सबको पसन्द आई और सीढ़ी और रणगढ़े बननेलगे चार महीने के बाद तैयार हुए तब हरमन ने आज्ञा दी कि रणगढ़े क़िले के समीप गड़वादो और सीढ़ियें भी उस स्थानपर रखकर तबलजङ्ग बजवाओ कल हम क़िले पर चढ़ाई करके क़िल्वालों को अपनी तलवार से मारेंगे यह सब बृत्तान्त अमरू ने सुना कि हरमर ने रणगढ़ा क़िले के समीप रक्खा है और सीढ़ी भी बनवाई हैं सब तैयारी युद्ध की करचुका है कल सेना को लेकर हमारे क़िले पर चढ़ेगा तब अमरू ने आदीसे कहा तुमभी डङ्का सिकन्दरी बजवाओ मैं थोड़ीदेर सैर को जाताहूं अभी थोड़ीदेर में आऊंगा यह कहकर पोशाक शाही उतारकर बहुरूपियोंकी पोशाक पहिनकर एक सिपाही का भेष धारण करके रणगढ़े के पासगया तो देखा कि चारसौ सिपाही हथियार बांधे उसके चारों तरफ़ फिर रहे हैं जाकर कहा कि हरमर ने हमको भेजा कि जाकर देखआओ रणगढ़े के पास कौन २ सिपाही ग़ाफ़िल है और कौन होशियार है तुम सबके नाम लिखलाओ जो ग़ाफ़िल हैं उनको दण्ड मिलेगा और जो २ होशियार हैं उन लोगों को कुछ इनाम मिलेगा सबलोग अमरू के पैरोंपर गिरनेलगे कि आप जाकर कहदीजियेगा सब अपने २ कामपर होशियार हैं अमरू वहां से अपने क़िले में आया कईसौमन मिठाई दारू बेहोशी में मिलाकर बहुरूपियों कीसी सूरत बदलाकर उनके ऊपर रखाकर लेआया और कहा कि यह शरबत हरमर ने तुम लोगों के वास्ते भेजा है परन्तु मैं तुम्हारे सरदार को नहीं पहचानताहूं वही आकर सबको भाग लगादेवे एकने आकर कहा कि मैंही सरदार हूं हरएक का हाल जानताहूं और शातिर मेरा नाम है और यही मेरा काम है यह अँगूठी फ़ीरोज़ेकी निशानी देना आपका क्या नाम है और क्या कार्य आपकरतेहैं? अमरूने कहा कि तहर अक़ीक़ मेरा नामहै और मैं दारोग़ाफ़रशख़ाने का दामाद हूं बहुत से लोग मेरे आज्ञा में हैं यह कहकर वह अँगूठी उसने लेली और शरबतके घड़े देदिये सरदने वह सबको देदिया और

प्यादे थे सभोंने अच्छीतरह से ओठ चाट २ कर मिठाई खाई पहले तो बड़ामज़ा मिला परन्तु थोड़ेही समय में सब लोटगये अमरू ने जैसे हा सुना जाकर सब का शिर खञ्जर से काटकर रणगड़े और सीढ़ियों को बटोरकर अग्नि में भस्म करके अपने क़िले में आकर निस्सन्देह होकर सोरहा और रात्रिभरमें जितनी सीढ़ियां और रणगड़े थे सब जलकर राख होगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर चार हाथी के तख़्तपर सरदारों और सेना के साथ इस बिचार से किआज चलकर सीढ़ी लगाकर क़िले में सरदारों और सेनाको चढ़ाकर मुसल्मानी सेनाको मारकर मलका मेहरनिगार को निकाललावें थोड़ीदूर जैसे आगे बढ़ाथा किदूतों ने आकर हाल दिया कि रणगढ़ा और सीढ़ियां जली पड़ी हैं और सब चौकदारों के शिरकटेपड़े हैं यह सुनकर हरमर अतिक्रोधित हुआ और बख़्तियारक से कहनेलगा देखते हो अमरू ने चार महीनेकी मेहनत मेरी सब मिट्टी में मिलादी बख़्तियारक बोला कि आप अच्छीप्रकार से जानते हैं जैसा वह है कि उसकी युक्तिको कोई नहीं पहुँचता है अब सवार तो होहीचुके हो चलके क़िलेपर युद्धकरो शायद बिजय होजाय हरमरने क़िलेके समीप आकर दशसहस्र सवार क़िलेके चारोंतर्फ़ घेरनेकी आज्ञादी अमरूने जो देखा कि बड़ी सेनाहै इससे हम युद्ध से बिजय न पावेंगे तो उसने भी चारों तरफ़ से तीर क़ारूरे कङ्कर पत्थर मारनेका आरम्भकिया और ऐसा आतशबाज़ी का मेह बरषाया कि उसकी सेना अग्नि से घबड़ागई और हज़ारों जलकर राख होगये और शेष पीछेको हटी तब हरमरने दज़ाज़िरहपोश से कहा कि तुम जो उस दिन कहते थे कि जो आज्ञा हो तो अभी जाकर इसी तीर से मुसल्मानों को मारकर मलका मेहरनिगारको निकाललेवें सो आज जाओ और मुसल्मानी सेनाको मारकर मलका को लेआओ तब उसने कहा कि आपने कब आज्ञा दी है और मैंने नहीं की तुरतही अपने चार सौ सवार लेकर क़िले की ख़न्दक़ पर जापहुँचा आप वह घोड़े को कुदाकर दरवाज़ेपर होरहा परन्तु शेष सवार अग्नि के कारण न जासके तब अमरू ने आतशबाज़ी उड़ाकर सिपाहियों को तो हटादिया परन्तु दज़ा जिरहपोश अपनी जवांमर्दी से दरवाज़े पर खड़ारहा और पै पीछे को न हटाया बख़्तियारक ने कहा कि दज़ाजिरहपोश बड़ा बहादुर और दिलेर हक़ीक़त में है उस ने जो कहा था सो किया परन्तु क्या करे वह अकेला उसकी सेना अमरू की आतशबाज़ी से आगे नहीं बढ़सकी है यह उन्होंने अच्छीबात नहीं की अब आप अपनी सेना को आज्ञा दें कि वह जाकर उसकी सहायता करे और इस समय मरनेसे न डरे नहीं तो वह माराजायगा और जो आपकी सेना सहायता करेगी तो अभी क़िला बिजय होजायगा हरमर ने अपनी सेना से कहा देखो वह कैसा अपनी बातपर अड़ा है तुमलोग जो सहायता करो तो अभी क़िला बिजय होजाय यह सुनकर जितने सरदार थे सबोंने घोड़ोंको दौड़कर ख़न्दक़पर पहुँचाया परन्तु ... आगे न बढ़सके अमरू दीवार के ऊपरआकर दजाहसे कहनेलगा कि

हे बहादुर ! तू क़िला तो लेचुका और हमारी बिजय हुई अब मैं तुमसे बिनय करता हूं कि मुझे शाहज़ादे के पास लेचल और मेरा अपराध क्षमा करादे तो मैं तेरा बड़ा गुण मानूंगा और क़िला खाली करके मेहरनिगार को तेरे साथ करदूंगा दज़ाहने उत्तर देने के लिये ढाल को मुख के आगे से हटाया और घोड़े को थोड़ासा बढ़ानाचाहा कि अमरू ने एक पत्थरका टुकड़ा नोकीला चरखी पर घुमाकर ऐसा मारा कि उसका प्राण निकलगया और मरकर खन्दक़ में गिरपड़ा तब जो उसके सिपाही खड़े थे उसकी लोथ लेकर हरमर के पास पहुँचे तब वह देखकर अति व्याकुल होगया कि बड़ा बहादुर सरदार मारागया और व्याकुल होकर बख्तियारक से कहने लगा अब क्या करूं ? कि अमरू से बिजय पाऊं बख़्तियारक ने कहा इस समय सेना व्याकुल होगई है लौट चलिये कल फिर कोई उपाय बिचारकर बिजय कीजियेगा तब हरमर ने डङ्का लौटने का बजाने की आज्ञादी सारी सेना ने रास्ता लिया और हरमर ने भी गिरते पड़ते अपने डेरे में आकर एक पत्र में सब बृत्तान्त लिखकर बादशाह नौशेरवां के पास भेजा जब वह पत्र बादशाह के पास पहुँचा पढ़कर बुज़ुरुचमेहर से कहनेलगा कि देखतेहो अमरू ने मेरे कैसे २ पहलवानों को मारा है और मुझे ज़रा भी नहीं डरता बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि सत्य करके वह बड़ा दुष्ट है वह इस बात को कुछ नहीं बिचारता है परन्तु आप शाहज़ादे को लिख भेजें कि तुम लड़ो भिड़ो नहीं किसीतरह से अमरू को पकड़लाओ यह बातचीत होहीरही थी कि सरदारों ने नौशेरवां के सामने आकर कहना शुरूअ किया कि देखिये बीलम और कीलम और दज़ाह पहलवानों को बधकरना और हरप्रकार से लज्जित करना उचित नहीं था अब जबतक हम इसका बदला न लेंगे और उसको दण्ड न देलेंगे तबतक हमको नींद न आवेगी बादशाह ने उन लोगों को समझाकर कहा कि देखो अख़ज़रफ़ीलगोश जो तुम लोगों का अतिबलवान् सरदार है उसे सत्तरसहस्र सवार के साथ हरमर की सहायता के लिये भेजा है और हरमर को लिख दिया है कि तुम घबराकर लौटने की इच्छा न करना और किसीतरह से न डरना हमने तेरी सहायता के लिये अख़ज़रफ़ीलगोश को भेजा है और उनको हरप्रकार से समझादिया है तत्पश्चात् नौशेरवां दरबार से उठकर रात्रि के समय महल में गया तो महरअंगेज़ ने बादशाह को व्याकुल देखकर पूछा कि आप क्यों व्याकुल हैं ? तब बादशाह ने कहा कि तुम्हारी बेटी के कारण सदैव व्याकुल रहताहूं कि हरमर को हमने भेजा है उसे अमरू तीनबार पराजय करचुका और कैसे २ पहलवानों को उसने मारा है कि मेरा जीव जानता है महरअंगेज़ ने कहा कि बादशाह यह युक्ति उसके बध करने की उत्तम नहीं है ख़्वाजेनिहाल को सौगात लेकर जिसने मलका को पाला है भेजिये और एक पत्र उसको लिखिये कि बड़े रंज की बात है कि तुम्हारे माता पिता तुम्हारी प्रीति से मररहे हैं और कुछ नहीं सूझता कि एक दफ़ा हमलोगों को अपनी सूरत देखलाजाओ कि हमारी जान

बचे और अमरू के लिये कुछ रुपया भेजो कि वह लोभ में आकर क़िले में जाने देवे और जिस समय क़िले के भीतर पहुँचे कुछ दिन रहकर उससे मिलकर विष देवे और दरवाज़ा क़िले का खोलकर सेना को बुलाकर मुसल्मानों को मारडाले और मेहरनिगार को लेकर चलाआवे और हमको तुमको इस जुदाई के दुःख से छोड़ावे बादशाह ने इस बात को पसन्द किया और ख़्वाजेनिहाल को तोहफ़ा और नक़्द रुपये देकर मक्के को रवाना किया ॥

जाना ख़्वाजे निहाल को मलकामेहरनिगार के लाने को मक्के की तरफ़ और उसका माराजाना अमरू के हाथ से ॥

लेखक लोग लिखते हैं कि जिस समय बादशाह ने ख़्वाजेनिहाल को मक्के की तरफ़ भेजा उसी समय एक पत्र लिखकर कि ऐ पुत्र हरमर ! परसों मैंने अख़ज़र-फ़ीलगोश को सत्तर सहस्र सवार के साथ भेजा है और आज ख़्वाजेनिहाल को इस प्रकार से समझाकर भेजताहूं इस प्रकार से पत्र लिख एक सिपाही के हाथ हरमर के पास मक्के को भेजा और उसमें यह भी लिख दिया था कि किसी युक्ति से ख़्वाजेनिहाल को क़िले के भीतर पहुँचादेना और जब वह पहुँच जावे तो तुम अख़ज़रफ़ीलगोश को साथलेकर क़िला तोड़कर मलका को निकालकर चले आना अब ख़्वाजेनिहाल का बृत्तान्त सुनिये कि वह अख़ज़रफ़ीलगोश के एकदिन पीछे चला परन्तु अतिशीघ्र चलकर अख़ज़रफ़ीलगोश से जाकर मिला और उससे सब बृत्तान्त बयान किया और दोनों साथ मिलकर चले और तीन महीने के बाद मक्के में पहुँचकर हरमर से मुलाक़ात की और सब पत्र बादशाह को देकर ज़बानी भी सब बयान किया हरचन्द कि वह सब बृत्तान्त उस पत्र से जो सिपाही के हाथ बादशाह ने भेजा था सुनचुके थे परन्तु इन पत्रों को पढ़कर उन लोगों को ख़िलअत देकर अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर बहुत प्रसन्न किया और वे लोग जो मार्ग के थके थे शीघ्र उठकर अपने डेरे में आकर आराम करनेलगे यह बृत्तान्त अमरू के दूतों ने उस जगह पहुँचाया तब अमरू ने अपने दिल में विचार किया कि देखें कौन अबकी बार सरदार सेना का है धोबी की सूरत बनाकर हरमर की सेना में गया और जहां दो चार मनुष्य बातें करते थे वहां खड़ा होकर सुनने लगा यहांतक कि एक स्थानपर चार पांच सिपाही बातें करते थे कि अबकी दफ़ा नौशेरवां ने अख़-ज़रफ़ीलगोश को सत्तर सहस्र सेना के साथ हरमर की सहायता के लिये भेजा है निश्चय है कि अबकी क़िला विजय होकर अमरू माराजावे एक ने कहा कि ख़्वाजे निहाल भी आये हैं दूसरे ने कहा कि वह युद्ध करने को नहीं आया परन्तु बाद-शाह ने उसे भेजा है कि तुम किसी तरह से क़िले में जाकर अमरू को मिलकर विष देकर मारडालो और मलका को निकाल लाओ तो तुमको बहुत इनाम और ख़िलअत दीजायगी तब सब सिपाही कहने लगे कि यह युक्ति अमरू के मारे कब होनेपावेगी वह ऐसा असामी नहीं है कि किसी के जाल में आकर माराजावे और

अखेज़रफ़ीलगोश चाहे कुछ युक्ति करे परन्तु ख़्वाजेनिहाल की युक्ति न होने पावेगी यह सुनकर अमरू आगे बढ़ा और धोबी का भेष बदलकर साईस का रूप धरकरके तोबड़ा हाथ में लेकर पुकारनेलगा कि भाई! ख़्वाजेनिहाल का डेरा बता दो घोड़े को दाना लेने आया था अब रात्रि को रास्ता नहीं पाता घोड़ा दाने के लिये टापता होगा कोई कृपा करके मुझे वहां पहुँचा देवे एक मनुष्य ने कहा चल भाई! तुझे ख़्वाजे का डेरा बतादूं उठकर थोड़ी दूर जाकर बतला दिया कि देख वह डेरा ख़्वाजेनिहाल का दिखाई देता है जिसकी तलाश में तू व्याकुल था अमरू ने अपना असलीरूप धरके ख़्वाजेनिहाल के डेरे पर जाकर चोबदार से कहा कि ख़्वाजे को ख़बर दो कि अमरू तुम्हारी मुलाक़ात को आयाहै और एक पैग़ाम तुमको लेआया है ख़्वाजे यह सुनकर अतिव्याकुल होगया कि इस समय अमरू क्यों आया है परन्तु उठकर अमरू को लेआया और अपने बराबर मसनदपर बैठाकर कहा कि आपने बड़ी कृपा की है कि इस नीच मनुष्य के पास आये परन्तु जो आप आज न आते तो कल मैं आपकी मुलाक़ात को क़िले में आता और आपका सब सामान देखकर प्रसन्न होता क्योंकि ठिकाना ज़िंदगी का कुछ नहीं है मित्रों से मिलना उचित है अमरू ने रोनी सूरत बनाकर कहा कि क्या करूं? ख़्वाजे! मैं बड़े दुःख में पड़ाहूं कि प्राण जाया चाहता है ख़्वाजेनिहाल ने कहा क्या है? बतलाइये तो अमरू बोला कि कृपाकरके मेरा वृत्तान्त सुनिये और इसके दूर होनेकी कोई युक्ति बतलाइये वृत्तान्त यह है कि हमज़ा अठारह दिनका वादा करके परदेकाफ़ को गया है परन्तु उसको इतने दिन हुए मालूम नहीं होता कि वह मारागया या ज़िन्दा है और अब मलकामेहरनिगार अकेली व्याकुल रहती है अब मुझे कुछ नहीं सूझता उसे हरमर को सौंपदेता हूं तो डरता हूं कि मैंने बहुतसे लोगों को माराहै बादशाह काहेको जीता छोड़ेगा और जो बादशाह अपनी दयालुता से मेरा अपराध क्षमा भी करेगा तौभी बख़्तियारक और बख़्तक के मारे काहे को मेरा प्राण बचेगा सो आज विचारकर आया था कि चलकर हरमर के पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमाकराके मलका को उनको सौंप देवें और हम जिधर सुभीता होगा उधर चलेजायँगे परन्तु सेना में आकर आपके आने का हाल सुना सो आपके समीप आया हूं सो अब आप मेहरनिगार को लीजिये मैं जिधर सुभीता होगा उधर जाऊंगा ख़्वाजेनिहाल यह बात सुनकर अति प्रसन्न हुआ और ख़्वाजे,अमरू को छाती से लगाकर कहने लगा कि किसी का जोर है कि हमारे तुम्हारे विषय में बादशाह से बुराई करे और बादशाह को तुम्हारे तरफ़ से नाराज़ करे और यह मैं ज़िम्मा करताहूं कि तुम्हारा अपराध क्षमाकराकर मक्के की गद्दी तुमको बादशाह से दिलवाऊंगा और मुझे इसपर सत्य समझना अमरू ने कहा आपसे मैं इससे अधिक भरोसा रखता हूं यह कहकर झोली से खुरमे निकालकर दिये और कहा कि यह मक्के का परसाद है इसको आप खाइये

ख़्वाजेनिहाल की जो मौत आई तो बेसन्देह खागया और यह कहकर मैं घर जाता हूं और मलकामेहरनिगार को तुम्हारे पास लिये आता हूं बाहर आकर सब शागिर्दपेशा के लोगोंको सक्के का परसाद देकर उसी जाल में फँसाया ख़्वाजे निहाल अपने चित्त में कहनेलगा कि तेरा बड़ा प्रताप है कि घर बैठे सब कार्य सिद्ध होगया थोड़ी देरके बाद बाहर के सिपाही और डेरे में ख़्वाजेनिहाल बेहोश होगये अमरू ने जेब से छुरी निकाल कर सब सन्दूकचों को तोड़कर जो रुपया था अपनी जेब में रक्खा और छोटासा सन्दूक जो अच्छीतरह से बन्द था उसको जो खोला तो उसमें एक पत्र बादशाह की तरफ़ से मलका के नाम था उसको भी लेकर जेब में रक्खा और सब सन्दूक बन्द करके ताले लगादिये और ख़्वाजेनिहाल को एक गढ़ा खोदकर जीता उसी में गाड़दिया और आप उसी की सूरत बनकर उसके पलँग पर सोरहा और सब अपना कार्य पूर्ण करलिया हरमर का हाल सुनिये कि प्रातःकाल उठकर बख़्तियारक से कहा कि आज मैं अख़ज़रफ़ीलगोश और ख़्वाजे निहाल की मेहमानी करने का विचार करता हूं उसने कहा कि इससे क्या उत्तम है यही आपको उचित है तब हरमर ने जशन की तैयारी की और मेहमानी का सामान इकट्ठा करने की आज्ञा दी और अख़ज़रफ़ीलगोश और ख़्वाजेनिहाल को बुलवाया तो अख़ज़रफ़ीलगोश साथ अपने सरदारों के गया और थोड़ी देरके बाद बनाहुआ ख़्वाजेनिहाल भी जाकर साथ अदब के शाहज़ादे के सामने सलाम करके खड़ाहुआ हरमर उसकी बातों से अतिप्रसन्न हुआ और खिलअत देकर बड़ी कृपा से कहा कि हे ख़्वाजेनिहाल! अदब तू अब करचुका अब आकर सभा में बैठो तब फिर उस बहुरूपिये ने कहा कि मेरा मुँह है कि आप के सामने बैठूं हरमर ने हाथ पकड़ खींचकर अपनी बराबर कुरसीपर बैठाला और कहा इस समय अदब को ताक़ के ऊपर रक्खो तब गाने बजानेवालों ने अपने २ नाचरङ्ग करने का आरम्भ किया और सभावालों को अपने शब्द और गतिसे लोभाने लगे और सबका मन उसी नाच रंग में लगारहा और जब रातहुई मशालचियों ने मोम की बत्तियां दोशाख़ों तिशाख़ों पंशाख़ों में चढ़ाकर रोशन किया तब हरमर ने एक गिलास शराब का अख़ज़रफ़ीलगोश को अपने हाथ से उड़ेलकर दिया उसने भी एक गिलास हरमर को दिया उसदिन यह था कि जो एक मनुष्य दूसरे को पिलावे तो दूसरा भी उसको पिलावे इसीतरह से प्रत्येक दूसरे को पिलाने लगे जब पहर रात्रि बीती बनेहुए ख़्वाजेनिहाल ने विनय करके कहा सेवक इससमय सब लोगों को शराब पिलाया चाहता है यह सभा इस समय अति उत्तम है हरमर ने कहा आपही को मुबारक रहे तुम्हीं साक़ी बनकर सबको पिलाओ ख़्वाजेनिहाल असली ने गिलास और सुराही हाथ में लेकर प्रथम हरमर को एक गिलास पिलाया और अपनी युक्ति से उसे बेहोश किया तत्पश्चात् सभा में घुस कर सबको दोबार तक तो वही शराब पिलाता रहा तीसरी बार बेहोशी दारू पिलाकर सब

लोगों को बेहोश किया जब उसने देखा कि अब सभाभर बेहोश होगई है गिलास और सुराही लेकर बाहर निकला और सब शागिर्दपेशों को पिलाकर बेहोश किया तब डेरे में आकर सब असबाब शागिर्दपेशे की बोरी तक उठाकर अपने जेब में किया और अख़ज़रफ़ीलगोश की दाढ़ी मूछ मूंड़कर सात रङ्ग के टीके जिस तरफ़ की मुड़ी थी देकर दूसरी तरफ़ मूछ में घुंघुरू बांध दिया और गालों में स्याही बाल लगाकर एक खाल उढ़ादिया बख़्तक की मूछ दाढ़ी मूंड़कर सेंदुर की टिकुली देकर स्त्री का स्वरूप बनाकर दोनों पैर गले में बांधकर अख़ज़रफ़ीलगोश को एक पलँगपर लेटाकर उसको भी उसीके गोद में लेटादिया और सब सरदारों की दाढ़ी मूछ मूंड़कर मुखमें करिखा लगाकर सतूनों में बांधकर आप ख़्वाजे निहाल की सूरत बनाहुआ अपने कार्य से छुट्टी पाकर निःसन्देह होकर अपने क़िलेमें आकर बैठा अख़ज़रफ़ीलगोश का हाल सुनिये कि जब उसकी नींद से आँख खुली तो देखा कि एक स्त्री नंगी उसकी गोद में सोरही है और अपने हाल से बेख़बर है उसने विचारा कि शायद हरमर ने कृपाकरके मेरा थका उतारने के लिये इसको भेजा है मैंने रातभर सोकर ऐसी अच्छी वस्तु को हाथ से खोदिया प्रातःकाल सबके सामने कहेगी कि अख़ज़र हिजड़ाहै जो स्त्रीकी चाह नहीं है अभी तो सवेरा नहीं हुआ इस मज़े को चखना चाहिये ऐसा विचार करके अख़ज़र ने जो धरकर दबाया तो बख़्तियारक ने एक ऐसी चीख़ मारी कि सब जो सोते थे जागकर उठे और अपना रूप देखकर अतिलज्जित हुए और जो दरबार के लोग खम्भों में बँधे थे वे तो न उठसके पर चोबदार आदि दौड़कर डेरे में आये तो देखा कि एक मर्द स्वरूपवान् स्त्री के ऊपर चढ़ा भोगकररहाहै और किसी तरह से डरता नहीं वे लोग उन दोनों को मारनेलगे कि यह शाहज़ादे का डेरा है तुमने ऐसा काम इस में क्यों किया ? तुमको अवश्य दण्ड मिलेगा इस प्रकार से शागिर्दपेशे के लोग दौड़े तब बख़्तियारक प्राण बचा उठकर भागा और अख़ज़रसे मारपीट होनेलगीं कई मनुष्य अख़ज़र के मुक्कों से मरगये जब उजालाहुआ लोगों ने देखा कि अख़ज़र है और सरदारलोग डेरों के खम्भों से बांधे हुए उलटे लटके हैं तब उनलोगों ने जाकर सब लोगों को खोला परन्तु मारे लज्जा के कोई मुखसे न बोलता था तब उनके मकानों से कपड़े लाकर उनलोगोंको पहिनाये और उनके हाथ मुख धोये तब आदमी की सूरतहुई बख़्तियारकभी हाथ मुँह धोकर अख़ज़रकेपास आकर कहनेलगा कियह सब अमरूके सिवाय और कोई नहीं करसक्ताहै अख़ज़रने क्रोध करके मुखपर हाथ फेरा कि अमरू है कि मैं हूं देखो तो मैं अब उसे कैसे सिखाताहूं जो उसने हम लोगों के साथ ऐसा काम कियाहै इतने में घुंघुरू बोला और मालूम हुआ कि मुँह पर एक तरफ़ मूछ दाढ़ी नहीं है और एक मूछ में घुँघुरू बँधाहै तो वह और क्रोध में हुआ तब बख़्तियारक ने कहा देखा चाहिये कि हमारी तुम्हारी तो यह गति है हरमर और ख़्वाजेनिहाल का क्या हाल है ? और जो रात्रि को शराब पिलाता था

वह अमरू था यक़ीन है कि ख़्वाजेनिहाल को मारकर उसकी सूरत बनाकर अमरू आया था ढूंढ़ा तो न तो अपने डेरे में ख़्वाजेनिहालहै और न उसका कुछ असबाब है और हरमर को भी उठालेगया है यह बड़ा दाग़ हमको देगयाहै अख़ज़र ने भुल-भुलाकर तबलजङ्ग बजाने की आज्ञा दी और कहा कि जो क़िले की ईंटसे ईंट न बजवाई और उसकी लोथ काटकर चील कौवोंको न खिलाई और मुसल्मानों को काटकर रुधिर की नदी न बहवाई तो अख़ज़र मेरा नाम न रखना और मुझको एकदम बे इसके किये कल न आवेगी आख़िरकार दूसरेदिन सबेरे सत्तरसहस्र अपने और तीससहस्र हरमरके सवारों को लेकर क़िले को घेरलिया और सेना से प्राणतक देने का वादा लिया अमरू ने उससमय जम्बील से हरमर को नि-कालकर देखा तो बेहोश है तब दो तीन बूंद सिरके की शरबत के उसके मुख में डाले जब वह पेटमें पहुँचे तो नेत्रोंको खोलदिया देखा कि अमरू शाहाना लिबास पहिने बैठा है और उसके चारोंओर सरदार लोग और नगरवासी हाथ जोड़े खड़े हैं और मुक़बिल बारह सहस्र तीरन्दाज़ लैसकिये अपने पहरेपर खड़ा है और हर एक स्थानों पर पहलवानलोग मुरचोंपर खड़े हैं और बरक़न्दाज़ आदिक क़िलेकी दीवारों पर खड़े हैं और अपनेको गिरफ़्तार देखकर जीवका न भरोसा देखकर रोने लगा और डरसे व्याकुल होकर इधर उधर देखने लगा जब अमरू ने उसको व्या-कुल देखा तो उसको समझाने लगा कि हे शाहज़ादे! तू न डर मैं तेरे साथ किसी तरह की बदी न करूंगा तुझे किसी तरह का दुःख न दूंगा परन्तु तीन प्रश्न मैं करता हूं उनमें से एककोभी तू मानेगा तो मेरे लिये उत्तम होगा उसने कहा वह क्याहै? बतलाओ तो मैं सुनकर उनका उत्तर दूंगा अमरू ने कहा प्रथम तो यह है कि तू मुसल्मान होकर मुसल्मानी सेना का सरदार बनकर रह हरमर ने कहा यह मुझ से न होगा कि पुराने धर्म को छोड़कर नया अख़्तियार करूं अमरू ने कहा कि तुम मुसल्मान होना उत्तम नहीं समझते कि इस संसार में भी अच्छी तरह से रह कर बाद मरनेकेभी क़बर में जाकर आराम से सोवें दूसरा प्रश्न यह है कि तू जाकर बादशाह को समझादे कि जबतक अमीरहमज़ा परदेकाफ़ से न आवे तबतक वह मुझसे युद्ध करनेको किसीको न भेजे क्योंकि हमज़ा मलका मेहरनिगार को मुझे सौंप गया है मैं उसके आनेतक उसकी रक्षा करने में किसी प्रकार से कोताही न करूंगा जब वह आवेगा तब जैसा जी बादशाहका चाहेगा वैसा करेगा और जो न मानेगा तो नहीं मालूम कि क्या मुझसे बदख़्वाही होजावे कि बादशाह नाराज़ हों और इस समय तेरे साथ जो जी चाहे वह करूं किसीका डर नहीं है हरमरने कहा दूसरा सवाल तेरा होसक्ता है बादशाह मानलेवें अमरू ने कहा मैं जानताहूं कि बा-दशाह इसको न मानेगा और जो बादशाह मानेभी तो बख़्तक और बख़्तियारक न माननेदेवेंगे और क्यों अपनी बदज़ाती से बाज़ आवेंगे इसलिये इसकोभी मैं छो-ड़ताहूं तीसरा सवाल मेरा यह है कि अब तुम मुझसे कभी युद्ध करने का नाम न

लेना और जो करोगे तो फिर शिकायत न करना हरमर ने कहा कि मैं सौगन्द खाकर कहताहूं कि तुमसे कभी युद्ध करने का नाम न लूंगा इतनी बातें होरहीथीं कि अखज़रफ़ीलगोश सिपाही लेकर क़िलेके सामने आपहुँचा अमरू ने देखकर हरमर को क़िलेकी दीवारपर खड़ा कराकर अखज़रसे कहा कि जो एक सिपाही भी क़दम आगे बढ़ावेगा तो मैं हरमर का शिर काटकर इस खन्दक़ में डालदूंगा पीछे जो चाहे वह होगा बख़्तियारक ने अखज़रसे कहा कि जो वह करता है उसका कुछ आश्चर्य नहीं है जो हरमर को मारडाले इससे उत्तम है कि डङ्का लौट का बजवाकर फिर चलें नहीं तो हरमर के मारडालने का डर है तब वह डङ्का बजवाकर अपने डेरे की तरफ़ फिरगया अमरू ने एक ख़िलअत उसके योग्य पहिनाकर घोड़े पर सवार करा कर उसकी सेना में भेजदिया और आप अमरू ने मेहरनिगार के पास आकर सब हाल उससे कहा मेहरनिगार ने प्रसन्न होकर कहा कि ऐ बाबा! मैं रातदिन तेरी विजय का बर मांगा करतीहूं कि मैं उनलोगों की अधिक सेना से डरतीहूं हरमर का हाल सुनिये कि सेना में जाकर अखज़र और बख़्तियारक से कहा कि मैंने अमरू से वादा किया है और उसने मुझसे इस बात में सौगन्द लिया है कि आज से मैं तुमसे युद्ध करने की इच्छा न करूंगा और बादशाह को भी समझादूंगा कि जब तक हमज़ा न आवे तबतक आप अमरू से युद्ध न करें पस तूभी बख़्तियारक अपनी दग़ाबाज़ी छोड़दे उसने कहा मैं आपकी आज्ञामें हूं जैसी आज्ञा हो वहीमैं करूंगा और आपकी आज्ञा से बाहर न हूंगा पर अखज़र ने कहा कि हम तो क़िला तोड़ने और मुसल्मानों को मारकर मलका मेहरनिगार को लेजाने के वास्ते आये हैं जबतक कार्य पूर्ण न होगा तबतक न जायँगे हरमर को उसकी बातें पसन्द न आईं और उसका कहना न माना और बोला कि मैं अच्छी तरह से देखचुका हूं कि जिसका बदन बादी होता है मोटाई के कारण कोई काम बहादुरी और जवां-मर्दी का नहीं होसक्ता है ऐसा मनुष्य जो काम करता है उसमें धोखा पाता है अखज़र हरमर की यह बातें सुनकर बहुत नाराज़ हुआ और कहनेलगा कि शाह-ज़ादे बहादुरों की आवाज़ जिससे न सुनीजाय और दिलावरों की तलवारों की चमक जिससे शत्रु के नेत्रों में चकाचौंध लगे आपको दिखाई नहीं पड़ती इस का-रण से आपके दिलमें यह बात नहीं समाती है और शाहज़ादों और बादशाहोंको सिपाही से नाराज़ होना उचित नहीं है हरमर ने उसकी बातों से नाराज़ होकर उसी समय डङ्का बजवाकर मदायनकी तरफ़ कूच किया परन्तु अखज़र ने डङ्का युद्ध का बजवाया और बदज़ाती से बाज़ न आया अमरू तबलजङ्ग की आवाज़ सुनकर व्याकुल हुआ कि यह क्या बात है कि अभी हरमर मुझसे वादा करगया और जाकर फिर तब्लजङ्ग बजवाया यह हाल क्या है अमरू क़िले से निकलकर जो हरमर की सेना की तरफ़ गया तो मालूम हुआ कि वह अपनी सेना समेत मदायन को कूच करगया परन्तु अखज़र हरमर से बिगड़कर रहगया है उसने

यह तवलजङ्ग बजवाया है और मुझसे युद्ध करेगा अपने सिपाहियों से वादा लिया है कि कल या मरेंगे या क़िला विजय करेंगे अमरू ने यह हाल सुनकर दिन तो इधर उधर में बिताया रात्रि को एक सिपाही की सूरत बनाकर अख़ज़रकी सेनामें गया तो देखा कि हरएक सरदार युद्ध का सामान कररहा है तब अमरू छिपता २ अख़ज़र के डेरेके पास पहुँचा तो देखा कि कई मशाल दरवाज़ेपर रोशन हैं परन्तु सब चौकीदार वेहोश होकर सो रहे हैं एक तरफ़ से परदा उठाकर अन्दर डेरेके गया तो अख़ज़र को सोता हुआ पाया और चिराग़ बराबर से जलरहे थे चिराग़ों को चद्दर से बुझादिया केवल एकही रोशन रक्खा बग़ल में बैठकर आठ बन्द जोड़ कर अबीर वेहोशी उसमें भरकर नेत्रोंसे लगाकर जो फूंका तो सब अबीर वेहोशी की उसके दिमाग़ में समागई एक वार चीख़ मारकर बेहोश होगया अमरू ने वहां से उठकर टहलुओं कोभी वेहोश किया और सब असबाब की गठरी बांधकर ज़म्बील को दिया और अख़ज़र को गठरी बांधकर कन्धेपर उठाया और एक डेरे का खम्भा लेकर बाहर आया और उस खम्भे को सेना के चौराहे में गाड़कर अख़ज़र का कान काटकर उसी में बांधकर और तमाम बदन उसका कालाकर सात रंग के टीके देकर लटका दिया और एक बीते भर की मेख़ पूंछ की तरह लगादी फरके स्थानपर एक ताव काग़ज़पर सातरङ्ग का कुछ लिखकर उस पर चपकाकर अपने क़िले की राह ली फिर कुछ उसकी शत्रुता और सेना का डर न किया क़िले के दरवाज़ेपर आकर देखा कि कुछ लोग शोर गुल कररहे हैं यह देखकर व्याकुल हुआ कि क्या मामिला है फिर खंदक़ के पार कूदकर गया तब पहरेवाले ने पुकारा कौन है ? अमरू ने कहा मैं हूं अमरू ने पूछा कि खंदक़ के उस पार भीड़ कैसी है पहरेवाला बोला कि सरहंगमिश्री सत्तरसहस्र तुमन और बहुतसी वस्तु तीनसौ सिपाहियों के साथ तुम्हारे पास सौग़ात लेकर आया है अमरू यह हाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ और सरहंगमिश्री को बुलाकर मिला और सब माल असबाब लेकर क़िले में आकर दाख़िल हुआ इसकी मुलाक़ात और माल और असबाब के लेआने से अतिप्रसन्न हुआ प्रातःकाल होतेही सरहंगमिश्री को एक बड़ी ख़िलअत जिसमें ज़रबफ़्ती और ताज जड़ाऊ जिसमें दो मोती लगे थे देकर साथ उस असबाब के ज़हरामिश्री के पास भेजा और ज़हरामिश्री उन असबाबों को मलका मेहरनिगार के पास लेगई और हरएक चीज़ उसको पृथक् २ दिखलाई मेहरनिगार ने अमरू को बुलाकर सब असबाब उसको सौंपा और जो लिबास और ज़ेवर पहिने थी वह सब उतारकर ज़हरामिश्री को दिया अमरू ने अख़ज़रफ़ीलगोश का हाल जो मलका से बयान किया तो मलका हँसकर बोली कि ईश्वर ने तुझे मुसल्मानी सेना का सरदार किया है और तुझपर चालीस वलियों का साया रहता है तुम्हारी सदैव विजय हुआ करेगी और कभी किसीसे अविजय न पाओगे,तब अमरू इन बातों से प्रसन्न होकर मेहरनिगार को आशीर्वाद देनेलगा और मेहरनिगार से कहा

कि मैं चाहताहूं कि इस सत्तरसहस्र अशरफ़ी में से तीस सहस्र की जिन्स मोल ले कर क़िले में रखदूं कि सब लोगों के भोजन के लिये रहे और चालीस सहस्र देकर सरहंगमिश्री को बारह हज़ार हब्शके गुलामों के सामान युद्धके लिये गोली बारूद आदिक मोल लेने को भेजूं उनसे बड़े २ काम निकलेंगे और उनको मैं सब तरह का फ़न सिखलाऊंगा फिर देखना कि इस सेना से बढ़जायँगे मेहरनिगार ने कहा बाबा! तुम्हारी राय बहुत अच्छी है तुमसे अधिक कौन बुद्धिमान् है अब थोड़ा सा वृत्तान्त अख़ज़रफ़ीलगोशका सुनिये कि वह तो सब रात्रि पूंछ लगाये बँधापड़ा रहा और वह सतून उसीतरह से खड़ारहा और सेना में युद्ध का बाजा बजाकिया प्रातःकाल होतेही सेना तैयार होकर डेवढ़ी पर प्राप्त हुई कि सम्मुख देखा तो चौराहे पर एक मनुष्य खम्भे में उलटा लटकाया है निकट जाकर देखा तो शिर से चरणतक कालिख लगी है और पीले श्वेत काले रक्त टीके दिये हैं एक आश्चर्यरूप मनुष्य बनाहुआ है और एक कान कटा है बहुत ध्यान करके देखा कि पहले कभी इसे देखा है परन्तु न पहिंचान सके पर एक कागज़ जो उसके शरीर में चिपका था उसमें लिखा था कि अख़ज़र! तू हरमर से बहस करके मुझे मारने और क़िला तोड़के मेहरनिगार को लेजाने के वास्ते रहगया है इस कारण यह दण्ड तुझे दिया है कि तेरा एक कान काट लिया और तेरी गुदा में पूंछ लगाकर ऐसा आश्चर्यरूपी मनुष्य बनाया है देख सावधान हो दुष्टता छोड़कर मेरे हाथ से अपने जीव की रक्षा कर नहीं तो मुझे सब मनुष्य मित्रघातक कहेंगे ऐसेही सबलोग मुझसे डरते हैं कदाचित् तू अपने ऐसे कामों को न छोड़ेगा तो इससे भी अधिक दण्ड पावेगा उस पत्रके जो उसके देह में चिपका था पढ़नेसे विदित हुआ कि यह अख़ज़रफ़ीलगोश है अति शीघ्रतासे उसे खोलकर ख़ीमे में लाये और उसके शरीर के सब दाग़ छुटाकर उसे कपड़े पहिनाये तब वह कहने लगा कि अब क्योंकर मदायन में जाकर लोगों को मुँह दिखलाऊंगा यह कहकर एक ख़ंजर अपने पेट में मारकर मरगया और सम्पूर्ण सत्तर हज़ार सेना अख़ज़र की लोथ उठाकर मदायन की तरफ़ चली गई जब यह हाल अमरू को पहुँचा कि अख़ज़र अपने हाथ से ख़ंजर मारकर मरगया और उसकी सेना लोथ लेकर मदायन को चलीगई तो अति प्रसन्न हुआ और उसी समय काबे में जाकर निमाज़ पढ़ी और क़िले का दरवाजा खोलकर यह वृत्तान्त मेहरनिगार से जाकर कहा उसने भी सुनकर अति प्रसन्न होकर अमरू की विजय की मुबारकबादी देनेलगी तब अमरू ने नगरवासियों को बुलाकर सबकी मेहमानदारी की और कहा कि आपलोग कृपा करके तीस हज़ार अशरफ़ी की जिन्स भोजन के लिये मँगवादेवें उन लोगों ने कहा ईश्वर आप की सदैव विजय कियाकरे जिन्स हम लोग अतिशीघ्रही मँगवा देवेंगे परन्तु हम लोगों को इतना डर है कि जिस समय नौशेरवां अख़ज़रफ़ीलगोश की लाश देखेगा नहीं मालूम कितनी सेना भेजेगा या ख़ुद चढ़ आवेगा उस समय हमलोगों को

सिवाय प्राण देने के और न सूझेगा उससे कौन युद्ध करेगा इस कारण से आप किसी दूसरे क़िले में जिन्स रखवाकर रहिये और हम लोगों का प्राण बचाइये कि सबलोग आपको आशीर्वाद देवें और छिपे २ सहायता भी जो होसकेगी करतेरहेंगे तब अमरू ने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि इस प्रकार से नगरवासी कहते हैं उसने कहा कि जो कुछ ये विचारे कहते हैं वह सत्य है उनको हरप्रकार से दुःख होगा अमरू ने विचारा कि ख़्वाजे की भी यही सलाह है कि इस नगर से दूसरे स्थानपर चलकर रहें कि मक्के के बासी नौशेरवां से छुट्टी पावें तब अमरू ने अपने सेनापतियों से बृत्तान्त कहकर पूछा कि कहां चलना चाहिये ? आदी ने कहा कि अभी तो चलकर क़िले तङ्ग में बास कीजिये फिर और कोई दूसरा क़िला देखकर लेलिया जावेगा अमरू ने उसी समय सेना को क़िले से बाहर किया और दोपहर रात्रि ब्यतीत होनेपर मेहरनिगार को महाफ़े में बैठाकर क़िले से बाहर किया और सरदारों और नगरवासियों को उसके साथ करके रवाना किया और सब रात्रि वह सेना मलका की रक्षा करते हुए चलीगई प्रातःकाल होते सेनाको अमरूने एक स्थानपर उतार कर दाना पानी घोड़े बैलों के लिये और सेना के भोजन आदिक के लिये सामान बटोरा और उस बन में डेढ़ पहर दिन चढ़ेतक वह सेना ठहरी रही और मुक़बिल और सरदारों को मलका की रक्षा में करके आप एक साधू का रूप धरकर क़िले तङ्गकी तरफ़ चला और दोपहर होते क़िले के समीप जाकर पहुँचा परन्तु बालू धूप से जलरही थी उसी में धूपके कारण अतिब्याकुल होगया और प्यासके मारे इधर उधर घूमनेलगा परन्तु जाते २ एक स्थानपर दूरसे कुछ बृक्ष सायेदार दिखाई दिये तो अतिप्रसन्न होकर उनकी तरफ़ दौड़ा जाकर समीप देखा कि एक चरवाहा कमरी बिछाये उस स्थानपर बैठा है उसने इनको देखकर सलाम करके पूछा कि आप कहां से आते हैं और क्या प्रयोजन है ? अमरू ने उत्तर दिया कि माता पिता के पेट से आयाहूं आदमी का स्वरूप हूं उसने कहा कि वहाँ से तो सब आये हैं केवल आपही ने यह मर्तबा नहीं पाया है परन्तु बतलाइये तो कि आप कहां से आते हैं और कहां जाइयेगा ? साधू बनकर ऐसा दुःख क्यों उठाते हैं ? अमरू ने कहा बाबा ! रूम से आताहूं मदायन को जाताहूं वहां पहुँच कर आराम पाऊंगा पर इस समय क्षुधा के मारे अतिब्याकुल हूं और प्राण निकलरहा है उसने थोड़ीसी बकरियों का दूध दुहकर कहा कि बाबा ! यही इस समय मेरे पास है और कुछ नहीं है अमरू बोला कि बाबा ! साधू हरदम ईश्वर के भजन से युक्त रहता है और ईश्वरही का दियाहुआ भोजन करता है केवल तेरी परीक्षा लेता था कि तू साधू मित्र है या नहीं ईश्वर तेरा भला करे और इसका बदला देवे थोड़े समय के पश्चात् उससे एक अज्ञान मनुष्यों की तरह पूछनेलगा कि भला इस क़िले में कौन रहता है और इस के अधिपति का क्या नाम है ? वह साधुओं को मानता है या नहीं चरवाहेने कहा कि ऐ बाबा ! आगे तो इसमें ईश्वरपूजकों का राज्य था परन्तु जबसे अमरू नाम एक

मनुष्य बागी हुआ है तब से बादशाह ने सब स्थानोंपर अपने सरदार भेजे हैं ... तरह यहां भी एक सरदार है जिसका नाम हमराज़री है. अमरू यह हाल सुन व्याकुल होगया और कहनेलगा कि ईश्वरने बचाया कि मैं मलकाको यहां न ... नहीं तो मुफ़्त ही हाथ से जाती यह विचारकर एक नय निकाली और उस चरवा... के आगे रखदी चरवाहा उसको देखकर कहनेलगा कि शाहसाहब ! मेरे पास भी एक नय थी परन्तु वह ऐसी उत्तम न थी और वह अब थोड़ेदिनों से गुम भी होगई है अमरू बोला कि कृपा करके बजाइये तो और यह अब मैं आपको अपनी निशानी दियेजाता हूं परन्तु आपका बजाना तो सुनें कि चित्त प्रसन्न होवे देखें किस प्रकार बजातेहो तब उस चरवाहे ने निःसन्देह होकर अपने मुख के समीप उस नय को लगाकर ज़ोर से फूंका तो सब ज़हर उसके मुख में चलागया और बेहोश होकर गिरपड़ा अमरू ने उसी स्थानपर एक गढ़ा खोदकर उसको गाड़ दिया और आप उसकी सूरत बनाकर क़िले के दरवाज़े पर जाकर रोनेलगा और अपना ऐसा हाल बनाया कि सबको आश्चर्य मालूम हुआ और बहुतसे मनुष्य उसके समीप आकर जमा होगये और एक सिपाही ने जाकर हमरां से उसका हाल कहा वह उसे बहुत मानता था आज्ञा दी कि जल्द मेरे पास लाओ उसका हाल मुझे देखाओ कि उसको धैर्य दूं कि वह अपनी बीमारी से छुट्टी पावे क़रीब शाम के सिपाही लोग उसे उठाकर लाये हमरां उसे देखकर रोनेलगा तब तो अमरू ने अपनी और खराब सूरत बनाई और पृथ्वी पर लोटनेलगा तब हमरां ने पूछा कि सत्य तू बता तुझे क्या बीमारी है ? उसने कहा क्या बताऊं सेवक अपनी बकरियां चरारहा था और वनकी ठण्ढी २ वायु की सुगन्ध लेरहा था कि तीसरे पहरे को एक सेना काबे की तरफ़ से आई और उसमें एक डोली थी जिसके चारों तरफ़ बहुत से सरदार लोग पहरेपर मुक़र्रर थे आकर मेरे पास कहने लगे कि हम मक्के से आते हैं और भूखे हैं तुम्हारी बकरियों को खायँगे जब हमने मना किया तो हमको बहुत पीटा कि थोड़ी देरतक बेहोश पड़ारहा और बोटी २ में दर्द होरही है हमरां ने पूछा कि फिर वे मनुष्य किधर गये बनेहुए चरवाहे ने कहा कि वे अमन की ओर गये हैं तब तो हमरां ने प्रसन्न होकर कहा कि अमरू था मक्के के बासियों ने नौशेरवां के डरसे अपने नगर से निकाल दिया होगा अब वह मेहरनिगार को लेकर क़िले अमन की तरफ़ जाता होगा यह विचार करके कि चलकर मलका को छीनकर बादशाह को देकर प्रतिष्ठा प्राप्त करें यह कहकर अपनी सेना को साथ लेकर दौड़धाया तब अमरू ने क़िले से निकलकर अपनी राह ली और सेना में जाकर सुल्तानबख़्त मग़रबी को हमरां की सूरत बनाकर सेना समेत क़िले में प्रवेश करके क़िलेवालों को मार करके अपना प्रबन्ध करके और मुलका तख़्ता उठाकर आराम से बैठा और बहुरूपियेपन में अपना नाम प्रसिद्ध किया अब हमरां का हाल सुनिये कि बीस बाईस कोस तक धावा किये चलागया

और कहीं पता न मिला तो लाचार होकर पलट कर अपने क़िले के समीप जो आया तो क़िलेपर से आतशबाज़ी और तीर आदिक छूटने लगे तो बहुत से सिपाही मारेगये हमरां बड़े आश्चर्य में होकर कहने लगा कि यह क्या बात हुई? कि क़िलावाले हमारे शत्रु होगये तब क़िले के समीप से हटकर दूरबीन लगाकर देखा तो कोई अपना सिपाही न दिखाई पड़ा सब नवीन ही मनुष्य दिखाई पड़े पीछे को विदित हुआ कि कल जो चरवाहा हमारे पास आकर रोता था वह अमरू था उसने इस युक्ति से हमको निकालकर क़िले को लेलिया और अब अपना प्रबन्ध करके बैठा है तब सरदारों ने कहा कि अब आप धीरज धरके क़िलेको चारोंतरफ़ से घेरे पड़े रहिये और जिन्स कहीं से न जाने पावे जब जिन्स क़िले में नहीं होगी तो आपही क़िला छोड़कर भाग जावेगा क्योंकि कोई मनुष्य विना भोजन के एक दिन भी नहीं रहसक्ता है तब हमरां ने कहा कि इतने दिनोंतक कौन आसरा देखेगा? उत्तम यही है कि नौशेरवां के पास चलकर सब बृत्तान्त उससे कहें जैसी वह आज्ञा देवे वह फिर आकर करेंगे यह विचार करके मदायन की तरफ़ चला और थोड़े दिनों के पश्चात् जाकर पहुँचा तो उस समय बादशाह अपनी सभा में बैठा हुआ देशों का प्रबन्ध कररहाथा अब हरमर का हाल सुनिये कि वह सभा में जाकर बादशाह के पैरोंपर गिरपड़ा तो बादशाह ने उसको छाती से लगाकर सब बृत्तान्त पूछा तब उसने सब बृत्तान्त कहकर बिनय किया कि मेरे निकट यही उत्तम है कि जबतक हमज़ा न आवें तबतक आप अब चुप रहिये बादशाह क्रोधित होकर कहने लगा कि तुम्ह ऐसा नपुंसक मैंभी बनूं तो चुप होकर बैठरहूं तब बुज़ुरुच-मेहर ने कहा कि ऐ महाराज! यह नपुंसक नहीं है परन्तु अति बुद्धिमान् है और दो कार्यों के कारण पलट आये हैं एक यह कि एक सिपाही से युद्ध करके अपनी प्रतिष्ठा राजकुमार होकर क्यों खोवें दूसरे बहुत दिनों से गये थे आप के स्नेह के कारण चले आये हैं तब बादशाह ने बख़्तक की ओर सम्मुख होकर कहा कि बख़्तियारक जो गयाथा उसकी भी कोई युक्ति न चलसकी उसने भी अमरू के हाथ से धोखा उठाया तब हरमर ने कहा कि उसकी दाढ़ी मूछें पेशाबसे मूंड़कर स्त्री का स्वरूप बनाकर बेवस्त्र करके फ़ीलगोश की गोद में बांधकर लेटा दिया था उसने नशे की उतार में बेजाने हुए उसके साथ स्त्री जानकर भोग करने की इच्छा की थी बादशाह इसको सुनकर बहुत हँसे और अमरू की चालाकी पर बड़ा आश्चर्य किया तब बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि महाराज! फ़ीलगोश ऐसा पहलवान आपकी सेना में कम होगा और वहां ठहरा है तो अवश्य अमरू को दण्ड देगा दूसरे सरदारों ने सुना कि बुज़ुरुच्चमेहर फ़ीलगोश की प्रशंसा करता है तब वे लोग भी मिलकर ख़्वाजे की प्रशंसा करनेलगे और बादशाह जब सभा से उठकर शबिस्तान हरम में हरमर समेत गया तो तीन दिनतक नाच रङ्ग करवाता रहा और चौथे दिन महल से न्यायशाला में आकर सब सरदारों के आने की आज्ञा दी कि थोड़े समय में किसी

ने अदालत की जंजीर को खटखटाया और दोहाई देने लगा बादशाह ने कहा कि देखो तो कौन है ? उसको यहां बुलालो आज्ञा पातेही सिपाहियों ने उनको लाकर हाज़िर किया तो देखा कि एक मुरदा उनके पास है और सब दुःखित हैं बादशाह ने पूछा कि क्या हुआ ? तो उन लोगों ने कहा कि यह अख़ज़रफ़ीलगोश की लोथ है और इसीसे सेना ने काला वस्त्र धारण किया है तब बादशाह ने पूछा कि यह क्योंकर मारागया तब साथियों ने सब बृत्तान्त बर्णन किया तो बादशाह ने क्रोधित होकर कहा कि इस पापी ने बड़ा दुःख दिया है और अपने को बड़ा बहादुर समझता है अच्छा अब हमारा अगुवानी खेमा चले और सेना इकट्ठी की जावे हम आपही अब जाकर उसको मारेंगे तब नौलाख सेनासमेत अगुवानी का खेमा रवाना हुआ और बादशाहने कूच न किया था कि इतने में ख़बर आई कि ज़ोपीन काबुली फिर सेना लेकर आताहै तो थोड़े से सरदारों को आज्ञा दीगई कि अगुवानी लेकर हमारे समीप लावे कि हमभी उसको देखकर चित्तको प्रसन्न करें इतने में हामरा ज़री ने सम्मुख आकर सब बृत्तान्त क़िले से लूटने का सुनाया बुज़ुरुचमेहरने कहा कि विदित होता है कि मक्के के वासियों ने अमरू को निकाल दिया अब अमरू को पराजय करना कुछ बड़ी बात नहीं है जो जायगा वही विजय पावेगा बादशाह आप ख़ुद अब अपने ऊपर दुःख न देवें बादशाहने बुज़ुरुचमेहर से कहा कि उत्तम है हमारा खेमा लौटा लियाजावे और सब सेना अपने २ स्थानपर जाकर आराम करे परन्तु तुम शाहज़ादों को लेकर जाओ और अमरू को परास्त करो उसने कहा मैं तो आपका सेवक हूं जानेको आरूढ़ हूं तब बादशाह ने बुज़ुरुचमेहरको चालीस सहस्र सेना देकर सब शाहज़ादों समेत अमरू के पराजय करने को और मेहरनिगार के ले आने के लिये ख़िलअत देकर भेजा जिस समय यह सेना क़िलेतङ्ग रवाहिल पर पहुँची तो ज़ोपीन ने देखा कि क़िले के दरवाज़े पर एक नमगीरा अतलस का जड़ाऊ खींचा है और सब बादशाही सामान उसमें रक्खा है और उसके नीचे अमरू एक जड़ाऊ कुरसी पर शाहाना पोशाक पहिने बैठा है और सब छोटे बड़े यथा उचित खड़े हैं और मुक़बिल भी बारह सहस्र तीरन्दाज़ लिये बराबरसे पीछे खड़ा है और सब सरदार लोग कुरसियों पर बैठे हैं और सब सिपाही बराबर से हथियार लियेहुए क़िलेकी दीवारोंपर युद्ध करनेको तैयार हैं शाहज़ादों ने बुज़ुरुचमेहर से पूछा कि कौनसी युक्ति करनी चाहिये ? कि यह हाथ आवे ख़्वाजेने कहा कि इस समय युद्ध करना उचित नहीं है क़िलेको चारों तरफ़ से घेरकर पड़े रहिये जब इनके पास जिन्स न रहेगी तो युद्ध करके क़िला लेलेना होगा तब शाहज़ादोंने बख़्तियारक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है ? उसने कहा कि जो ख़्वाजे कहते हैं वह अति उत्तम है परन्तु इतने दिनों तक कौन पड़ा रहेगा ? इससे यही उत्तम है कि क़िले पर धावा कियाजावे तब शाहज़ादों ने ज़ोपीन से धावा करने की आज्ञा दी ज़ोपीन ने सेनाको धावा करनेकी आज्ञा दी तबतक अमरू बैठा तमाशा देखाकिया जब सेना

शाहज़ादों की क़िलेपर पहुँचगई तब अमरूने ललकार कर कहा कि अब दौड़कर मारलेओ एकभी न जानेपावे तब अमरू की सेनाने आतशबाज़ी और तीर मारकर हज़ारहों सेना के मनुष्यों को मारडाला पीछे शाहज़ादों की सेना भागकर चलीआई तब शाहज़ादों ने बख़्तियारकसे पूछा अब क्या करना उचित है? तब उसने कहा कि अब डङ्का लौटका बजवाकर चलकर क़िलेको घेरकर पड़ेरहिये जब क़िले में जिन्स न रहेगी तो कुत्तों की तरह बुलाकर सबको मारलेवेंगे तब शाहज़ादों ने डङ्का लौटका बजवाकर सेनाके पलटने की आज्ञा दी और बख़्तियारक के कहनेपर पलटकर अपने खेमोंमें आकर उतरे अमरूका हाल सुनिये कि जिस समय शाहज़ादों ने युद्ध करना बन्दकरके क़िले को घेरलिया तो अमरू ने अपनी सेना के सरदारों को आज्ञा दी कि इस क़िलेमें रहकर शत्रुसे बचना दुर्लभ है क्योंकि सेना शत्रु के पास अधिक है इस से तुमलोग इस क़िले की रक्षा करो मैं दोतीन दिनमें दूसरा क़िला ढूंढ़कर आता हूं तो तुमको भी लेचलूंगा यह कहकर भेष बदलकर क़िले से निकला जाते २ दूसरे दिन क़िले शिकोह पर पहुँचा जो कि क़िले तङ्गवाहिलसे सात कोस पश्चिम था जाकर जो देखा तो क़िले में जानेका कहीं रास्ता न दिखाई पड़ा जाने की युक्ति सोचरहा था कि इतने में एक घसियारा क़िले में से घास लिये निकला तो अतिशीघ्र ही आप घसियारा बनकर उसके पास गया और पूछनेलगा कि तू घास बेचेगा उसने कहा कि साहब मेरा काम क्या है? अमरूने पूछा कि तू इसी क़िले में रहता है उसने कहा कि हां साहब! इसी क़िले में रहता हूं फिर अमरू ने पूछा कि इस क़िले का स्वामी कौन है? और उसका स्वभाव कैसा है? उसने कहा कि दाराब और सोहराब दो भाई हैं परन्तु बड़े नोक टोक के मनुष्य हैं अमरू घसियारे से यह बातें कररहा था कि इतने में एक ओर से सोहराब की सवारी आ निकली अमरू ने देखकर पूछा कि यह सवारी किसकी है? उसने कहा कि सोहराब मियां यही हैं अमरू सोहराब का नाम सुनकर अति प्रसन्न होकर कहनेलगा कि तू यहीं खड़ारह मैं अभी आता हूं यह कहकर एक बृक्षके ओट में जाकर अपना असली रूप बनाकर सोहराब के पास जाकर अतिनम्रता के साथ सलाम करके खड़ाहुआ और रोनेलगा तब सोहराब ने उसके स्वरूप को देखकर जाना कि कोई प्रतिष्ठित मनुष्य है दुःख के मारे रोरहा है घोड़े को खड़ाकरके पूछा कि आप कौनहैं? अमरू ने हाथ जोड़कर कहा कि आपने सुनाहोगा अमरू का नाम सो मैंहीं हूं आपके समीप आया हूं कुछ प्रयोजन है मलिका मेहरनिगार ने मुझको आपके पास भेजा है आज्ञा होवे तो आपसे कहूं सोहराब मेहरनिगार का नाम सुनकर अतिप्रसन्न होकर सब लोगों को हटाकर कहनेलगा कि जो कुछ कहना हो अब कहो अमरूने रूमाल से आंशू पोंछकर कहा कि आपने सुना होगा कि हमज़ानाम एक अरब के रहनेवाले ने मेहरनिगार को तलवारके बलसे नौशेरवां के घर से निकालकर अपने घरमें रक्खा था लेकिन हौसिला पूरा न होने पायाथा कि एक प्रयोजन ऐसा पड़ा

कि अठारह दिन के लिये परदे काफ़ को मलका मेहरनिगार को मुझे सौंपकर गया था और मुझको आज्ञा देगया था कि जबतक मैं न आऊं मलका की रक्षा करने में कोताही न करना परन्तु अब कई वर्ष ब्यतीत होगये और उसका कुछ पता नहीं मिला कि मारागया या जीता है सो अब मेहरनिगार ने मुझसे कहा है कि अब तुम मुझे किसी के पास करदेना नहीं तो कोई तुमसे छीनकर लेजायेगा मुझको भी लज्जा होगी और तुमको भी सो मैं उसकी तलाश में आया हूं और आपका स्वरूप हमज़ा के समान देखकर स्नेह से रोआई आगई है और पांच हज़ार अरबी मेरी तलाशमें फिर रहे हैं कि मुझको मारकर मेहरनिगार को छीनकर नौशेरवां के पास लेजावें सो जो आप मेरी रक्षा हमज़ा की तरह करें और यह इक़रार करें कि पीछे से तुमको पकड़कर नौशेरवां के पास न भेजेंगे तो मैं मलका को लाकर आपको सौंपकर आपकी आज्ञा में होकर रहूं सोहराव मेहरनिगार का नाम सुनतेही घोड़ेपर से उतरपड़ा और अमरू को छाती से लगाकर कहनेलगा कि नौशेरवां क्या माल है जो सारी दुनिया चढ़कर आये तौभी मुझसे मेहरनिगार को न पासकेगा और तुम को मैं हमज़ा से भी अधिक मानूंगा किसी प्रकार से दुःख न होनेपावेगा और यह क़िला सिकन्दर का बनवाया है ऐसा पुष्ट बना है कि कोई इसमें प्रवेश नहीं पासक्ता है चलो हम तुमको सब क़िला के स्थानों को देखादेवें यह कहकर अमरू को साथ लेकर क़िले में आया जब अमरू क़िले में पहुँचा तो ईश्वर का धन्यवाद करनेलगा और कहनेलगा कि अब ईश्वर के प्रतापसे क़िला मिलजावेगा और सोहराबको भी धोखा दूंगा क़िले के स्थानों को देखकर अतिप्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि ऐसा क़िला मैंने संसार में कहीं नहीं देखा है तब सोहराव ने अमरू को दीवानख़ाने में लेजाकर बैठाकर सब सामान उसके लिये इकट्ठा करके अपने भाई दाराबसे अमरू के आनेका हाल कहा और कहनेलगा कि मेरी बड़ी भाग्य है कि मेहरनिगार ऐसी स्वरूपवान् स्त्री और अमरू ऐसा सिपाही मिला दाराव उससे बुद्धिमान् था उसने सुनकर कहा कि विदित होता है कि तेरी भाग्य उलटगई है कि तू अमरू के जाल में आगया देखना अमरू तुमको कैसा धोखा देगा? परन्तु सोहराव अमरू के दम में ऐसा आया था कि उसका समझाना उसके चित्त में न आया और अपने नेक बद पर दृष्टि न की और अमरू की बातों से सब सत्यही मालूम करके कहा आपभी बुलाकर पूछ लीजिये और उसके असत्य और सत्य को बिचार लीजिये दाराव ने कहा कि अच्छा बुलवाओ हमभी देखलेवें सोहराबने अमरू को दाराव के सम्मुख बुलाया अमरू ने दाराबके समीप आकर नम्रता के साथ सलाम करके प्रशंसा करने लगा तो दाराव भी उसके दम में आगया और उठकर अमरू को गलेसे मिलाया अमरू ने जब देखा कि दाराव भी मेरे दम में आगया है उठकर सलाम किया और कहा कि अब आज्ञा होवे तो जाकर मलका मेहरनिगार को लेआऊं परन्तु द्वार-पालकों को आज्ञा दीजिये कि जिस समय मैं आऊं चाहे दिन हो या रात्रि मना न

करें तब दाराब ने द्वारपालकों को बुलाकर आज्ञा दी कि ख़बरदार जिस समय अमरू आवे बिना हमारी आज्ञा सेनासमेत आनेदेना और आजसे क़िलेका स्वामी अमरू है जो इसका कहना न मानेगा वह दण्ड पावेगा नौकरोंको क्या चारा पासवानों ने स्वीकार किया और एक दूसरे को आज्ञा सुनादिया तब सबोंने स्वीकार किया और बाहर निकलकर सोहराबने दाराबसे कहा कि हमभी अमरूके साथ जायँगे नहीं तो कोई रास्ते में मलका को छीन लेवेगा हाथसे ऐसी उत्तम वस्तु निकलजा- वेगी दाराब ने कहा कि तुम्हारे जानेकी कुछ आवश्यकता नहीं है अमरू बड़ा यत्नी है वह क़िसी युक्तिसे लेआवेगा परन्तु उसने न माना पश्चात् जब अमरू के साथ चला और पांच कोस क़िला तङ्गरवाहिल बाक़ी रहा तवहीं सोहरावको ठहराकर कहा कि आप यहीं रहिये हम जाकर मलिकाको लेआते हैं उसको धोखा देकर क़िले में पहुँचा और सब वृत्तान्त सरदारों से कहकर बिचार करनेलगा किसी युक्ति से सोह- राब को मरवाडालना उचित है परन्तु कोई युक्ति बिचार में न आई पीछे को बिचार करके जासूसों की सूरत बनाकर हरमरकी सेना में कोतवाली चबूतरे से होकर जा निकला सिपाहियों ने जासूस समझकर पकड़लिया और उससे पूछने लगे कि तू कौन है? और कहां से आताहै? वह भायँ २ करनेलगा कुछ उत्तर न दिया तब कोतवालने जाकर बुज़ुरुचमेहर से कहा कि एक जासूस आयाहै सिपाहियों ने उस को गिरफ़्तार किया है परन्तु कुछ बोलता नहीं है बहिरों की तरह भायँ २ करता है और पूछने से कुछ उत्तर नहीं देता ख़्वाजे ने बुलवाकर अरबी फ़ारसी तुरकी कश्मीरी आदि भाषाओं में पूछा कि तू कौन है और किसने तुझको यहां भेजा है मुझे सत्य २ बता तो मैं तुझको पारितोषिक देऊंगा और अनेकप्रकार से प्रसन्न करके छोड़दूंगा जब कुछ न बोला तो पहलवान जो ख़्वाज़े के समीप बैठे थे उन्होंने कहा कि सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता है मोम बे अग्नि पिघलता नहीं टिकठी में बंधवाकर मरवाइये तो अभी सब बतलादेगा ख़्वाजेने कहा नहीं जो यह बतलादेवे तो यही ख़िलअत जो हम बादशाह की दी हुई पहिने हैं उतारकर देदेवें और पांच तोड़े अशरफ़ी और देंगे यह कहकर उसको प्रसन्न किया और कहा कि अब तू सत्य २ हमसे कहदे मैं नौशेरवां के शिरकी सौगन्द खाकर कहताहूं कि तुझको छोड़दूंगा और अनेक प्रकार से तुझको प्रसन्न करूंगा यह कहकर ख़िलअत और अशरफ़ियां देखकर अमरू के मुँह में पानी भरआया तब उसने पश्चिमी भाषा में कहा कि मैं क़िले करगिस्तान के लेनेकी युक्ति में हूं कि वहां जाकर आराम पाऊं इसलिये सो- हराब को यहां लेआया हूं और मैं अमरू हूं भेष बदलकर आपसे कहने आया हूं कि आज वह आपकी सेनापर छापा डालेगा सो किसी युक्ति से उसको मार डालिये या पकड़ लीजिये कि मेरा कार्य सिद्ध होजावे ख़्वाजे ने अमरू को सहस्र अशरफ़ी और देकर जानेकी आज्ञा दी और हरमर से जाकर कहा कि आज एक भेदिया हमने पकड़ा था तो मैंने उसको लोभ देकर पूछा तो विदित हुआ कि

अमरू सोहराब को अपने जाल में फाँसकर लाया है सो आज वह हमारी सेनापर छापा मारेगा तब शाहज़ादों ने पूछा कि आपने कौनसी युक्ति बिचारी है उसने कहा कि सरदारों को बुलाकर आज्ञा दीजिये कि आज सबेरे खा पीलें और चार घड़ी रात्रि व्यतीत होनेसे जाकर पहाड़के निकट छिपकर बैठरहें जब छापा पड़े और लूटनेलगे तो निकलकर शत्रुको मारलेवें या सोहराब और अमरू को ज़िन्दा पकड़ लेवें तो अतिउत्तम है हरमर ने उसी सायत सरदारों को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम को जो कुछ ख़्वाजे आज्ञा देवें वही करो अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि क़िले में ज़ाकर अपनी सेना के सरदारों को आज्ञा दी कि सवारियां सायंकाल से तैयार होकर आवें और सब कमर बांधे तैयार रहें जब मैं आऊं उसी दम सबको लेकर चलूंगा सब युक्ति करने के पश्चात् सोहराब के समीप मुँह बनाकर गया तो उसने पूछा कि कुशल तो है क्यों दुःखी हो अमरू ने कहा कि क्या कहूं कुछ कह नहीं सकता कि क्या हाल है कि जब मैंने आकर सब हाल आपका मलिका से कहा तो वह भी आपका हाल सुनकर अति मोहित हुई और ज्योंहीं मैंने इच्छा की थी कि मलिका को मियाने में सवार कराकर आपके समीप लेआऊं इतने में एक सिपाही ने आकर ख़बर दी कि एक सेना क़िले के बाहर पड़ी है परन्तु बिदित नहीं होता कि क्यों आई है और किसकी सेना है मैंने जाकर लोगों से पूछा तो विदित हुआ कि बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर को मलिका के लिये भेजा है कि तुम जाकर समझाकर लेआओ सो उसी समय से मैं बड़े सन्देह में हूं कि ऐसा न हो कि मलिका उसके कहनेपर चलीआवे सो मेरे पास हजार सिपाही भी हों तो मैं उस को छापा मारकर हटादेता सोहराब ने कहा कि तुम सन्देह न करो मुझको चल कर उसकी सेना दिखादो तो मैं उसको हटादूंगा यह सुनकर अमरू प्रसन्न होकर और उसकी प्रशंसा करनेलगा कि बड़ी भाग्य मलिका की हुई कि आप ऐसा पुरुष मिला तब तो सोहराब और भी फूलगया और सेनाको साथ लेकर अमरूके साथ हुआ जब क़िले के समीप पहुँचे तो अमरू सोहराबको उसी स्थान पर ठहराकर हरमर की सेना में गया तो देखा कि सब खेमे ख़ाली पड़े हैं वहां से पलटकर सोह- राब को बुलाकर हरमर की सेना के खेमे दिखाकर आप चलागया सोहराब ने जो जाकर देखा तो सब असबाब पड़ा है और कोई मनुष्य नहीं दिखाईपड़ा तब उसने विचारा कि मेरे डरसे सुनकर कहीं जाकर छिपे होंगे सब लूटलाटके चलने की इच्छा की थी कि हरमर की सेना ने आकर चारों तरफ़ से घेरकर बहुतों को मारकर सोहराब को थोड़े सरदारों समेत पकड़कर क़ैद किया अब अमरू का हाल सुनिये कि वहां से आकर मेहरनिगार को स्त्रियों समेत डोलियों में सवार करवाके सेना के साथ क़िले से निकालकर क़िले करगिस्तान की तरफ़ जो पश्चिम की ओर है चला मैंभी थोड़े समय में आता हूं यह कहकर सेना को तो भेजदिया और अपनी सूरत का एक पुतला बनाकर अपने स्थान पर खड़ाकर कई सौ पुतला

और बनाकर क़िले की दीवारों पर खड़े करके हाथों में तीर रखदिया दो कुत्ते एक स्थान पर बांधदिया कि एक दूसरे को देखकर भुकरता है और एक गधा क़िले के दरवाज़े पर बांधकर उसके ऊपर झूल डाल दिया और बहुत मुर्ग़ ताख़ोंपर बराबर से बैठाकर आप क़िले के खन्दक़ का तख़्ता उठाकर वायु के समान कूदके पार चलागया और अपनी सेना की तरफ़ की राह ली कई कोस जाकर सेना से मिला और रात्रिही को सेना को भगाकर लेगया और दो घड़ी रात्रि बाक़ी थी कि क़िले करागिस्तान के दरवाज़े पर पहुँच कर सरदारों से कहा कि मैं जाके क़िले का दरवाज़ा खोलवाता हूं और तुमको यह युक्ति बतलाता हूं कि जिस समय क़िले का दरवाज़ा खुलजावे तुमलोग स्त्रियों को लेकर भीतर चले जाना और सबलोगों को एक तरफ़ से मारना केवल उन लोगों को छोड़कर जो मुसल्मान होजावें और किसी प्रकार से डर नहीं है सरदारों से यह कहकर आप क़िले पर आया और दरबान से कहा कि मैं अमरू आया हूं मलका मेहरनिगार दिल प्यारी सोहराव को साथ लेकर दरवाज़ा खोल देव वह तो पहलेही से जाने था क़िले का दरवाज़ा खोलदिया सब सवारियां साथ सेना के क़िले के भीतर चलीगई तब अमरू अपनी इच्छापूर्वक कार्य करके मलका को एक स्थान में बैठाकर सरदारों का पहरा करके आप सेना लेकर क़िलेवालों को मारने लगा और केवल उन्हीं लोगों को छोड़कर जो मुसल्मान हुए दाराव ने यह हाल देखकर जाना कि अमरू आया क़िला हाथ से गया देखें सोहराब का क्या हाल हुआ? अमरू ने जब दाराव के मारने की इच्छा की तब उसने कहा ऐ ख़्वाजे! मैं मुसल्मान होता हूं मुझे न मार मैंने कलमा पढ़ा अमरू ने उसको छाती से लगाया और कहा कि मुझे तेरे देश क़िले से कुछ प्रयोजन नहीं केवल जबतक हमज़ा परदेकाफ़ से न आयेगा तबतक मैं मलका की रक्षा के लिये इस तेरे क़िले में रहूंगा तत्पश्चात् मुझसे तेरे क़िले से कुछ वास्ता नहीं है तुम अपना क़िला लेना मुझसे तुमसे कुछ शत्रुता नहीं है तब दाराब उसी समय कलमा पढ़कर मुसल्मान हुआ और क़िलेवालों का बल हीन होकर क़िला अमरू के हाथ में आगया अब थोड़ा वृत्तान्त सोहराव का सुनिये कि वह हरमर की सेना में क़ैद होने से अमरू की चाल से बचरहा था बख़्तियारक और ज़ोपीन ने हरमर और बुज़ुरुचमेहर से कहा कि अब अमरू ने क़िले करागिस्तान में पहुँचकर उसको अपने आधीन करलिया होगा प्रातःकाल होतेही सिपाहियों को भेजा कि जाकर देखआओ कि क़िला तङ्ग ख़ाली है या उसमें कोई है सिपाहियों ने देखकर जा कहा कि आदमी बराबर क़िले की दीवारों पर फिर रहे हैं और सब प्रकार के पक्षी कबूतर मुर्ग़ आदि बोलरहे हैं और एक गदहा दरवाज़ेपर बांधा है कुछ आसार ख़ाली का नहीं पाया जाता क्योंकर कहें कि ख़ाली है बख़्तियारक ने हरमर से कहा यह झूठ है आप तबलजङ्ग बजवाकर देख लीजिये जो मैं कहता हूं वह सत्य है या झूठ हरमर ने बुज़ुरुचमेहर को

क़ैदियों की रक्षा के लिये छोड़कर आप तवलजङ्ग वजवाकर चला समीप पहुँचकर ज़ोपीन ने वख़्तियारक से कहा कि देख कहां क़िला ख़ाली है वहां सब सामान मौजूद है सब लोग क़िले पर खड़े हैं अमरू शस्त्र लिये खड़ा है और हरएक निशान गड़े हैं वख़्तियारक ने फिर देखकर कहा कि यह अमरू नहीं है यह अमरू ने पुतले बनाकर खड़े किये हैं वह देख वायु से हिल रहे हैं फलाखन के पत्थर की डोरियां एक दूसरे से लगरही हैं ज़ोपीन जो आगे बढ़ा संयोग से एक पत्थर का टुकड़ा उसके उसी घाव पर जहां अमरू ने मारा था फिर लगा तब तो उसे और निश्चय होगया कि ये पुतले नहीं परन्तु अमरू है जो पत्थर माररहा है उस स्थान से रुधिर में डूबाहुआ भागा वख़्तियारक ने कहा ऐ ज़ोपीन! क्यों भगा जाता है और लोगों के सामने लज्जा उठाता है तुम ऐसे डरपोक मनुष्य कपकाविस के कुल में उत्पन्न न होना चाहिये था कि उनकी बहादुरी का नाम डुबाता है और मर्द होकर तुझे लज्जा न आई ज़ोपीन ने कहा कि यह भी आश्चर्य की बात है कि अमरू सामने से पत्थर माररहा है और तू कहता है कि अमरू नहीं है तो बताओ कि किसने यह पत्थर मारा है वख़्तियारक बोला यह भी एक संयोग की बात है कि वायुके बहनेसे पत्थर गिरके तेरे शिरपर पड़ा है और तेरा शिर टूट गया और जो अमरू होता तो अवतक ऐसे पत्थर बरसाता कि हमलोगों के दम फूलजाते और भागते न बनता और दीवारों पर से ऐसी आतशबाज़ी की वृष्टि करता कि लोग वे मारें मरजाते और भुजवे के भाड़की तरह चने के समान जल जाते जाकर दरवाजेको तोड़ मेरे कहनेपर यक़ीन जान पस लाचार होकर ज़ोपीन ख़न्दक़ के पार गया और दरवाज़े को तोड़कर हरमर जाफ़रांमरज को वख़्तियारक और और सरदारों को साथ लेकर क़िले के भीतर गया तो देखा कि दरवाज़ेपर एक गधा बांधा है और अन्दर ताखों पर बराबरसे कबूतर व मुरग़ाबी चुने हैं और बोलरहीं हैं और क़िलेपर बराबर से काग़ज़ के पुतले खड़े हैं ज़ोपीन ने जाके अमरू के पुतले के पेट में एक बरछी मारी तो उसमें से एक गीदड़ का बच्चा निकलकर भागा तो ज़ोपीन ने वख़्तियारक से कहा कि इस क़िले में तो बड़े २ तमाशे दिखाई देते हैं वख़्तियारक ने कहा कि यह अमरू का प्राण है कोई जाकर पकड़लावे यह सुन कर सबलोग हँसनेलगे और जबहीं याद आवे तभी हँसनेलगें तब पश्चात् हरमर ने सेना में जाकर वख़्तियारक से पूछा कि अब क्या करना उचित है यह दो बड़े आश्चर्य की बातें हुईं कोई युक्ति करनी चाहिये उसने कहा कि अमरू का पीछा छोड़ना उचित नहीं है और सिवाय इसके अभी वह नये क़िले में गया है अभी अच्छे प्रकार से उसका सामान जुदा होगा हरमर ने कहा यही उत्तम है तब तो हरमर ने बुज़ुरुचमेहरको बुलाकर कहा कि ख़्वाजे तुम तो सोहराबको लेकर बादशाह के पास जाकर जो कुछ देखा बयान करो और मेरी पत्री देकर कुछ आज्ञा लेना बुज़ुरुचमेहर सोहराबको लेकर मदायन को रवाना हुआ और हरमर जाफ़रांमरज़

ज़ोपीन और बख़्तियारक अस्सी सहस्र सेना लेकर क़िले गुरस्तानपर गये वहाँ जा कर क़िले को घेरा और रसद न जानेकी आज्ञा दी अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उसने छः महीने भोजन के लिये जिन्स मोल लेकर क़िले में रखवाली और क़िले को अच्छी तरह से बनवाकर बन्दकरके दरवाज़े पर एक शामियाना खड़ा करके उसीमें जड़ाऊ कुरसियाँ बराबर से रखवाकर बादशाह से भी अधिक लिबास पहिनकर बैठा कि इतने में हरमर जाफ़रामरज़ सेना लेकर पहुँचे और बख़्तियारक की सलाह से क़िलेपर चढ़ाई की अमरू ने जो देखा कि सेना समीप आगई है अपनी सेनाको आज्ञा दी कि देखना जाने न पावे हरएक को इसी स्थान पर मारो इतनेमें हरमर की सेनापर तीर कारूरा पत्थर आतशबाज़ी का मेंह बरसाने लगे कि हरएक मनुष्य प्यास के मारे मरनेलगे कई सहस्र सवार मारेगये शेष के पैर आगे न उठसके पीछेही को हटनेलगे बख़्तियारक हरमर जफ़रमर्ज़ से कहने लगा कि यह युक्ति युद्ध करने की नहीं है जो इस प्रकार से युद्ध कीजियेगा तो सब सेना मारीजायगी और कभी विजय न पाइयेगा तब तो दोनों शाहज़ादे नाराज़ हुए कि क्या बकता है तेरेही कहने से चढ़ाई की और तूही अब यह कहता है कि तू क़ाबिल दण्ड पाने के है वह बोला अच्छा बुराई क्या हुई यही न कि हज़ार सवार मरे आप उनके पालन करनेसे बचे और क़िलेवाले को मालूम हुआ कि शाहज़ादा बड़ी सेना साथ लेकर हमसे युद्ध करने को आया है और सीधे अपने बैकुण्ठ को चलेगये अब इस समय डङ्का लौट का बजवाकर चलकर किसी बराबर पृथ्वी पर डेरा लेकर घोड़ों को दाना और साथवालों को कुछ खाने पीने को दीजिये और जब क़िले में जिन्स न रहेगी और बाहर से भी न जानेपावेगी तो आपही क़िला ख़ाली करके चलेजायँगे शाहज़ादे ने डङ्का लौटका बजवाकर डेरा डालकर इसी आसरे में पड़ारहा बुज़ुरुचमेहर का वृत्तान्त सुनिये कि जिस दिन मदायन में पहुँचा उसी दिन सीधा सोहराब को साथ लिये बादशाह के दरबार में जाकर सलाम करके बैठा और सोहरावको सामने करके सब हाल ख़राबी का कहकर हरमर की विनयपत्री दी पहले बादशाह ने सोहराब से कहा कि तू जो अपना प्राण बचाना चाहता है तो सच २ अपना हाल कह मैं तुझे दण्ड न दूंगा सोहराब ने अमरू के बहकाने और अपने क़ैद होने का सत्य २ हाल कहकर विनय किया कि जो यह अपराध बादशाह! मेरा क्षमा करके प्राण को छोड़ दीजिये तो अब सदैव आपकी सेवा में रहूंगा बादशाह ने उसका अपराध क्षमा करके हरमर की बिनयपत्री को पढ़वाकर सुना तो उसमें लिखा था कि मुझे आपकी आज्ञा से चार बरस अमरू से युद्ध करते हुआ और एक दिनभी विजय की सूरत नज़र न पड़ी इससे निश्चय है कि अमरू के युद्ध में हमलोगों को विजय न मिलेगी और दिन रात्रिही डर रहता है कि कहीं अमरू सोते में मार न डाले या पलँग परसे उठाकर किसी और दुःखमें डाले इस कारण से आपका इस तरफ़ आना अवश्य है और आपके आने से अधिक सेना देखकर

उसके सहायक लोग भी न आवेंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि वह खुद आकर आपके पैरोंपर गिरे और अपना अपराध क्षमा करावे और इस तरह से वृथा सेना मारीजाती है और हमलोग भी हलाक होते हैं आगे आप मालिक हैं जिस तरह से आज्ञा दीजियेगा वैसा हमलोग करेंगे बादशाह ने पहले यह पत्र पढ़कर बख़्तक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है उनको बुलालेना अच्छा है या नहीं बुजुरुचमेहर से पूछा कि तुम क्या कहते हो? उसने कहा कि जो पहले मैं कहचुका हूं कि आपका अमरू से युद्ध करने के लिये जाना आपकी प्रतिष्ठा से बाहर है और जो शाहन्शाह सुनेगा तो वहभी नाराज़ होगा कि एक सिपाही से युद्ध करने के लिये खुद बादशाह गया और सिवाय इसके हरएक मनुष्य आपका रोब न करेगा और जो संयोग से हरमर की तरह आपको भी उठालेगया तो जो उसने आपको जीता भी छोड़दिया तो बड़े लज्जा की बात होगी और जो मारडाला तो सातों देश अनाथ होजायँगे और जिस तरह का वह बद बला है यह तो आप जानतेही हैं इससे आप का जाना उचित नहीं है यह बातें सुनकर बादशाह कांप गया और आज्ञा दी कि बख़्तक को मेरे सम्मुख से गरदन पकड़कर निकालदेओ यह इसी तरह से सदैव मुझको बहकाकर ख़राब करता है और आपभी बदनामी लेता है बख़्तक को तो गरदन पकड़कर निकलवादिया और बुजुरुचमेहर की सलाह पर कारन फ़ीलगरदन जो बड़ा बहादुर था और अकेला हज़ार सवारों से सामना करता था एकलाख सवार साथ करके आज्ञा दी कि तुम जाकर अमरू को साथ उसके सहायकों के जीते पकड़लाओ॥

कारनफ़ीलगरदन का अमरू के पकड़नेको जाना और उसका मारा जाना नक़ीबदार के हाथ से॥

लिखनेवाले लिखते हैं कि जब कारनफ़ीलगरदन हरमर की सेना में पहुँच कर उससे मिला उस समय उसको अति प्रसन्नता प्राप्त हुई तब रात्रि को दोनों सेना के सर्दारों को बुलाकर शराब पिलाना शुरू किया और ज्योंहीं एक गिलास शराब भरकर शाहज़ादे को दिया उसी समय कारन ने हरमर से कहा कि आप जो बहुत दिनों से इस स्थानपर पहाड़ के समान पड़े हैं परन्तु एक सिपाही को न मारसके न पकड़सके किसी तरह की क़ाबू उसपर तुम्हारी न चलसकी जो कोई सुनेगा वह क्या कहेगा? हरमर ने कहा कि अब तो तुमभी लाख सवार और पैदल साथ लेकर आये हो और तुमभी जैसे बहादुर और बलवान् हो यह भी जगत् में प्रसिद्ध है जब तुम उसको मारलेना या पकड़लेना तब हम तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और तुमभी ऐसी २ बातें कहना और अभी तो मार्गके थके थकाये आये हो थोड़े दिनतक आराम करलो तब हम तुम दोनों मिलकर देखेंगे तब कारन ने नाराज़ होकर कहा कि हम तो सिपाही हैं हमको क्या सुस्ताने का काम है केवल इतनी रात्रि व्यतीत होजाने दीजिये सबेरे सवार होकर आप दूरसे तमाशा देखिये हम लड़ाई

सवारी क़िला ख़ाली करालेते हैं या नहीं यह कहकर अपनी सेना में तबलजङ्ग बजवानेकी आज्ञा दी और आप युद्ध का सामान करनेलगा और तुरन्त नफीरी, कुनज, नफरी, गावदुम, शेरदुम, कोसहरबी बजनेलगे तब सिपाहियों ने तबलजङ्गका शब्द सुनकर जाकर असरू से कहा उसने भी आज्ञा दी कि तबल सिकन्दरी बजे कि इसका शब्द सुनकर कुछ उसके भी कान खड़े हों इसी तरह से सब रात्रि दोनों सेनों में तबलजङ्ग बजाकिया और पहरे फिरा किये प्रातःकाल होते ही हरमर और जोपीन जो असरू के हालसे आगाह थे क़िलेसे दूर अपनी सेना लेकर खड़े हुए कि हमपर और हमारी सेना पर किसी तरह का दुःख न होवे और कारन अपनी दिलेरी का फल पावे परन्तु कारनने अपनी सेनाके चार भाग करके घोड़े दौड़ाते हुए जाकर क़िलेको चारों तरफ़ से घेरलिया जब असरू ने देखा कि बड़ी सेना क़िलेके चारों तरफ़ आगई और बड़ी बहादुरी देखारही है तब सरदारों को बुलाकर आज्ञा दी कि आज शत्रु बड़ी सेना लेकर आया है आज तुमलोगों का भी इम्तिहान है देखें कौन जवांमर्दी और बहादुरी देखलाताहै उचितहै कि सिवाय क़दम आगे बढ़ने के पीछे न हटनेपावे चाहे वहीं मरजावे यह आज्ञा पातेही उसी स्थानपर मुक़बिल ने अपने बारह हज़ार तीरन्दाज़ों को तीर चढ़ाने की आज्ञा दी और लेकर आगे बढ़कर तीर का छोड़ना शुरूअ किया तो एक एक चार २ पांच २ मनुष्यों को मारा एक सायतभर में कई हज़ार सिपाही मारेगये और जो शेष रहगये थे वे उलटे पीछे को भागे और फिर युद्धका नामतक भी न लिया दूसरे तरफ़ से पत्थर फेंकनेवालों ने जो पत्थरके टुकड़े काटेहुए चरखियोंपर घुमा २ कर मारनेलगे तो एकबारगी दश २ लोट जानेलगे इसीतरह से कई हज़ार मारेगये और बाक़ी ब्याकुल होकर उलटे पैर फिरे और तीसरी तरफ़से बरक़न्दाज़ोंने इसीप्रकारसे मारकर हटादिया और चौथी तरफ़से आतशबाज़ों ने ऐसा आतशका मेह बरसाया कि कई हज़ार मारेगये और शेष भागगये और इसीप्रकार से कारनकी कई सहस्र सेना मारीगई और घायल हुई परन्तु तिसपरभी कारन फ़ीलगरदन ढालसे अपना मुँह बचाताहुआ क़िलेके दरवाज़े पर आपहुँचा और प्राणका न भरोसा करके क़िले का दरवाज़ा तोड़नेलगा असरू यह हाल देखकर ब्याकुल होगया परन्तु थोड़े समय के पीछे सरदारों को बुलाकर आज्ञा दी कि जाकर दरवाज़ेपर छिपे खड़ेरहो जिससमय वह दरवाज़ा तोड़कर हाथ भीतर खोलनेको डाले उसी समय हथियार पकड़ खींचलो अच्छीतरह से मारो कोई प्राण जानेको न डरे इसमें ईश्वर सहाय होंगे सबलोग एकचित्त होकर उससे वर मांगो जो आकर सबके सहायक भेजें तो निस्सन्देह बिजय होगी नहीं तो केवल मरने और मारने के और कोई उपाय नहीं है ज्योंहीं सबलोग एकचित्त होकर ईश्वर का नाम लेनेलगे थे कि सामने से एक सेना आते देखाई पड़ी इतने में असरू ने सबसे कहा कि तुम्हारी मंशा पूरी हुई कि ईश्वरने सहायताके लिये भेजा और नीचे झुकाकर कहनेलगा देख तेरे प्राण का गाहक आपहुँचा वह अभी तुझे

मारकर नरककुण्ड में पहुँचावेगा तब उसने शिर उठाकर देखा तो चालीस निशा दिखाई दिये उसको देखकर तो वह भी व्याकुल होगया इतने में एक नक़ाबदार अपने घोड़ेको कुदाकर खन्दक़पार आकर उसके सामने खड़ाहुआ तो सबलोग डरगये पूछा कारन फ़ीलगरदन और अमरू इस क़िलेमें कौन है और तू क़िले के दरवाजे पर क्यों खड़ा है? कारन ने कहा इस क़िले में ज़ातका मुसलमान मुजरिम बादशाह नौशेरवांका है और इनको न कुछ डर है न पाप है क़िले का दरवाज़ा तोड़कर मार चाहताहूं अब आप बतलाइये कि कौन है और किसको डराताहै? नक़ाबदार बोला मैं मुसलमान की सहायता के लिये यह सेना लेकर आयाहूं सो पहले हमसे युद्ध करलेओ तब दरवाज़ा तोड़कर क़िले के भीतर जाना और जब हम मारेजायँ तो उनसे बदला लेना कारन ने कहा भला तू लड़का होकर मेरी तलवार की वार कब सम्हाल सकेगा तब नक़ाबदार ने झुंझलाकर कहा ऐ पापी! तू क्या बकता है? अभी खन्दक़पार आकर तुझे दिखलाऊंगा तब तो कारन लज्जित होकर कूदकर खन्दक़पार खड़ा हुआ तब नक़ाबदार ने कहा ला अपनी वार चला अभी तो तेरे आने का मज़ा चखाता हूं तब तो कारन ने क्रोध करके एक बरछी उसके ऊपर चलाई बरछी को आड़कर एक तलवार अपनी क़मरसे निकालकर उसके शिरपर चलाई कि नेत्रों में अँधियारी छागई तिसपर भी उसने एक तलवार चलाई परन्तु उसकी तलवार ने दम न लेने दिया शिरसे काटतीहुई घोड़े के तंग तक पहुँची कारन चार टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना ने यह हाल अपने सरदार का देखकर चारों तरफ़ से कारन को आकर घेरलिया नक़ाबदार की सेना ने भी तलवार मियान से निकाली तलवार चलनेलगी अमरू ने देखा कि नक़ाबदार के पास केवल चालीस हज़ार सेना है और हरमर के पास पौने दो लाख इससे अपनी सेनाको भी क़िले के बाहर निकालकर नक़ाबदार की सहायता के लिये भेजदिया तब उस दिन ऐसा युद्ध हुआ कि सत्तर हज़ार सेना हरमर की मारीगई और नक़ाबदार की सेना में किसी के एक हलका घाव भी न लगा और हरमर की सेना व्याकुल होकर भाग गई तब अमरू ने नक़ाबदार से पूछा कि आपका क्या नाम और निशान है? अपना हाल बतलाइये कि हमज़ा जिस समय परदे क़ाफ़से आवेंगे तो आपका सब हाल उनसे कहेंगे कि इससमय क़िलेके तोड़ने और हमलोगोंके मारेजाने में कुछ सन्देह न था परन्तु आपने आकर हमलोगों का प्राण बचाया नक़ाबदार ने कहा जिस समय हमज़ा आवेंगे वह खुद मेरा नाम और निशान जानलेंगे अभी बताना कुछ अवश्य नहीं हमको कुछ अपनी नामवरी की आवश्यकता नहीं है तुम प्रसन्नता के साथ क़िलेदारी करो और किसी प्रकार से अन्देशा न करो जिस समय प्रयोजन पड़ेगा उसी समय हमको ईश्वर तुम्हारी सहायता के लिये भेजेगा यह कहकर नक़ाबदार तो जिस तरफ़से आया था उसी तरफ़ यह कहकर चलागया और अमरू सब जिंस खेमा और डेराआदिक लूटकर अपने क़िले में दाख़िल हुआ और ईश्वरकी कृपासे

उसको सबतरह से आराम प्राप्तहुआ अब थोड़ासा वृत्तान्त हरमरका सुनिये कि वह जो नक़ाबदार से विजय न पाकर भागा तो बारहकोस तक भागता चलागया और कहीं एकदम भी आराम न किया उस स्थानपर ठहरकर बख़्तियारक की सलाह से एक विनयपत्र बादशाहको लिखा कि हमको इसप्रकार से दुःख पड़ा है कि न तो हमारे पास वस्त्र है न ख़ेमाआदिक रहनेको है तब नौशेरवां ने एक पहलवान नामी के साथ डेरा और ख़ज़ाना बेटों के वास्ते रवाना किया और एक रुक्का भी लिखकर दिया कि इसक़दर रुपया तुम्हारे पास भेजा है और थोड़े दिनके बाद बहुतसी सेना और ख़ज़ाना भी तुम्हारे पास भेजते हैं ख़बरदार अमरू का पीछा किसीतरह से न छोड़ना हरमर को बादशाह के पत्र के पढ़ने से धीरज हुआ चालीस सहस्र गिरेपड़े सिपाही बटोरकर फ़िर अमरू के क़िले के समीप आकर डेरा गाड़कर पड़े अब मुसल्मानी सेना का वृत्तान्त सुनिये कि जब क़िले में ग़ल्ला बाक़ी न रहा तो सब सेना ने मिलकर आदी अक़रब से कहा कि ग़ल्ला तमाम होचुका है जो अब भोजन को न मिलेगा तो हमलोगों का भी काम तमाम होजायगा अब जो अन्न है वह चार दिन से अधिक न होगा फिर सबलोग भूखों मरेंगे इससे पहले चलकर अमरू से कहना चाहिये आदी ने कहा तुम सबलोग आओ तो हमभी साथ चलकर अमरू से कहें और जो मैं अकेला जाकर कहूंगा तो उसको बिश्वास न आवेगा और जानेगा कि कुछ मेरा प्रयोजन है वृथा मुझसे नाराज़ होगा तब सब सेना आदी के समीप आई और वह भी साथ होकर अमरूके पास गये और सब वृत्तान्त विनय करके कहा यातो ग़ल्ला मँगवाया जावे या क़िला खोल दीजिये कि हमलोग जाकर शत्रु की सेनापर धावा करके यातो मारें या मरजायँ अमरूने सेनासे कहा कि अभी जो चार दिन के वास्ते है उसको खाओ और ईश्वर का भजन करो मैंने खेत बोया है उसमें बहुत रुपया ख़र्च किया है थोड़े दिनमें उसमें बहुतसा ग़ल्ला पैदा होगा सेना जाकर अपने स्थानपर बैठी अमरूके कहने का बिश्वास जाना अमरूने थोड़ी देर के बाद एक छल शोचकर बहुरूपिये वस्त्र पहिनकर उठा और एक तरफ़ की राह ली और सेना को होशियार करके एक पहाड़ के दर में गया और जंबील पर हाथ रखकर करामात तलब किया तो उसका चालीस गज़ का क़द होगया और दो हाथ की दाढ़ी सफ़ेद बनगई तब अपनी खड़ाऊं पहिनकर हरमर की सेना की तरफ़ बकताहुआ चला और बग़ल में एक शेर की झोली डालली इसीतरह चारों तरफ़ देखतेहुए ज़ोपीन के खेमे के समीप जा निकला तो अमरू का क़द और सूरत देखकर बड़े आश्चर्य में होकर बहुत डरा क्योंकि उसने कभी ऐसा मनुष्य न देखा था कांपते २ पास आकर सलाम कर बड़ी आधीनताके साथ हाथ जोड़कर पूछनेलगा कि आप कहां से आते हैं और इस तरह किस प्रयोजनसे आये हैं? और सेनाकी तरफ़ को क्या आप बार २ देखते हैं? अमरू ने कहा तू कौन है कि पूछता है? तुझको पूछने से क्या प्रयोजन है और तेरा क्या नाम है? उसने कहा हरमर की

सेना का सरदार और बादशाह नौशेरवांके दामाद का भानजा कनारकाबली करके प्रसिद्ध हूं और बादशाहकी बड़ी कृपा रहती है अमरू ने कहा मेरा नाम साद-जुल्माती है और मैं सिकन्दर जुल्माती बादशाह जुल्मात का छोटा भाई हूं और इस तरफ़ एक बड़े प्रयोजन के लिये आया हूं कि जो हमज़ानामी मनुष्य शहपाल बादशाह परदेकाफ़ की सहायता को गया था वहां अफ़रेतनामे देव से युद्ध करके मारागया है उसीकी हड्डियां शहपाल ने हमारे भाई के पास एक चमड़े की थैली में रखकर भेजी थीं कि तुम्हारे राज से मनुष्यों का देश मिला है तुम इसको नौशे-रवां बादशाह के पास भेजदेना कि वह इसकी मिट्टी स्वार्थ करदेवे सो यह बहुत दिनों से रक्खी थीं कि कोई मनुष्य उस तरफ़ से आवे तो भेजदेवें परन्तु अबतक कोई मनुष्य इस तरफ़ का आनेवाला न मिला तो भाई ने हमसे कहा कि लेकर जाओ तुमको बड़ी पुण्य होगी इस कारण से मैं उसकी हड्डियां लेकर आया हूं और इधर उधर देखता हूं कि यही मदायन का क़िला है और हमज़ा की यही सेना है या नहीं इसी सन्देह में कई दिनों से व्याकुल इधर उधर घूमता हूं कनार इस हाल को सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि हज़रत यह नौशेरवां के दामाद और बेटोंकी सेना है चलिये आपको चलकर मुलाक़ात करादूं वह बोला इससे क्या उत्तम है अन्धा बस दो नेत्र चाहता है कनार ने उसको अतिप्रसन्नता के साथ ज़ोपीन के समीप ले आकर सब वृत्तान्त बयान किया ज़ोपीन उसको अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर जवाहर की कुरसीपर बैठालकर सब वृत्तान्त पूछनेलगा तब उसने जो कनारसे कहा था वही फिर बयान किया ज़ोपीनने उसपर बड़ी कृपा करके कहा कि वह थैली कहां है? मुझे दीजिये और मुझसे उसकी रसीद लीजिये मैं वह सब वृत्तान्त लिखकर वह थैली बादशाह के समीप अतिशीघ्रही भेजदूंगा अमरूने वह थैली अपनी झोली से निकालकर ज़ोपीन को दिया और उसने कहा कि आपने एक बड़ा भार मेरे शिरसे उतारा अब आप उसको बादशाहके पास भेजदीजिये मैं अब जाता हूं तब ज़ोपीन बहुत प्रकारसे कहनेलगा कि आप कुछ दिवस यहां बास कीजिये कि मार्गकी थकावट भी दूर होजाय और हमलोगों के ऊपर कृपा कीजिये परन्तु उसने न माना वहांसे चलकर अपना असली स्वरूप बनाकर क़िलेमें आया तब सरदारों ने फिर जिन्सके लिये कहा अमरू ने कहा कि बीज बो आया हूं दो तीन दिन में जाकर काटलाऊंगा तब तुमलोग अपने आराम से बसर करोगे ज़ोपीन का हाल सुनिये कि उस थैलीको ले जाकर हरमर ज़ाफ़रांसर्ज को दिखलाकर सब वृत्तान्त बयान किया हरमर यह हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ परन्तु बख्तियारक हँसकर बोला कि मुझे अमरू की चालाकी मालूम होती है कि उसके क़िले में ग़ल्ला नहीं रहा है इसीसे वह यह जाल तुमलोगों पर फेंकरहा है और जो हमज़ा मारा गया होता तो निश्चय है कि परीज़ादें आकर अमरू को ख़बर देते और यह तो चालीस हाथ का मनुष्य था परन्तु अमरू हज़ारगज़तक का क़द बना सकता है

ज़ोपीन ने कहा कि इसपर चारसौ बादशाह क़ाफ़ की मोहरें हैं क्योंकर तेरा कहना मानें बख़्तियारक ने उत्तर दिया कि मुझे तो सत्य नहीं मालूम होता और तुम जो चाहे वह कहो तब ज़ोपीन ने कहा अभी चुप रहो मैं क़िले से हाल मँगवाता हूं वहां जो मालूम होगा वही ठीक जानना उसी समय सिपाही को बुलाकर आज्ञा दी कि तुमलोग जाकर क़िले के चारों तरफ़ घूमकर देखो कि अमरू और उसके सरदार लोग किस हालत में हैं प्रसन्न हैं या हमज़ाके मरने के कारण सन्देह में हैं अमरू का हाल सुनिये कि उसने उसी दिन से नौबत का बजाना बन्द करदिया था और क़िले में सन्नाटा होरहा था ज़ोपीन के सिपाही तीन दिन तक क़िले के चारों ओर फिरा किये न तो नौबत बाजते सुना न और कोई प्रसन्नताका कार्य होने पाया नहीं तो सदैव पांचबार नौबत बजती थी और हरएक मनुष्य प्रसन्न रहते थे यह सब हाल सिपाहियों ने आकर ज़ोपीन से कहा बख़्तियारक ने कहा जो यह हाल है तो अवश्य करके कुछ हुआ है यह सुनकर हरमर जाफ़रामर्ज बख़्तियारक ज़ोपीन और सब सरदारोंको ईदकी तरह खुशी होगई और सब दुःख दूर होगया अमरूने उसी दिन आधीरात्रिको सब सेनासे कहा कि तुमलोग ज़ोर से चिल्लाकररोओ कि हाय साहबकिरां! हाय साहबकिरां!! इसीतरह से सब सेना आधीरात्रि को चिल्लाकर कहनेलगे और हरमर ज़ोपीन बख़्तियारक तो कान लगाये थे इन लोगों का रोना सुनकर अतिप्रसन्न हुए और डङ्का खुशी का बजवानेलगे और सबलोगों को प्रसिद्ध हुआ कि अमीर मरगये उसी दिन अमरू रोते पीटते शिरपर राख डालेहुए ज़ोपीन के डेरेके समीप जाकर चोबदारों से कहा कि शाहज़ादे को ख़बर देओ कि अमरू आपकी मुलाक़ातको आया है चोबदारों ने जाकर ज़ोपीनसे कहा कि अमरू शिर पर खाक डाले नंगेपैर आपकी मुलाकात को आया है ज़ोपीन ने कहा उसको हमारे पास लेआओ अमरू जाकर उसके पैरोंपर गिरपड़ा ज़ोपीन ने पूछा यह क्या हाल है कौनसा दुःख तुझपर पड़ा? बतला तो अमरू ने रोकर कहा क्या कहूं? अब मैं बेस्वामी का होगया और मेरा सब सामान आराम का खोगया पांच दिन हुए कि परीज़ादों ने आकर हाल कहदिया कि हमज़ा क़ाफ़ में अफ़रेत देवके हाथसे मारा गया चार दिनतक तो मैं छिपाये रहा परन्तु कल सबपर ज़ाहिर होगया उसी समय से सब छोटे बड़े दुःखसे दुःखी होरहे हैं और क़िले में हरएक प्रकार से तहलका पड़ा है इस कारण से अब मैं आपके समीप आया हूं कि मलका को तो आपको सौंपदूं और मैं जाकर किसी पहाड़पर शिर देमारकर मरजाऊं और शाहज़ादे के पास मैं मुख दिखलाने के लायक़ नहीं हूं कि उसके समीप जाऊं क्योंकि हमज़ा के साथ रहने से कोई ऐसी बुराई और बे अदबी नहीं है जो मुझसे न हुई होगी और अब हमज़ा ऐसा मित्र कहां पाऊंगा? कि उसके पास जाकर रहूंगा इससे मरना उत्तम है ज़ोपीन ने अमरू को गले से लगाकर कहा ऐ अमरू! कहां तेरा ध्यानहै? मैं तुझे अपने गले का तावीज़ बनाकर रक्खूंगा किसी तरहसे तेरी सहायता करने से

उठा न रक्खूंगा अमरूने कहा मुझे इससे भी अधिक आपका भरोसा है कि आप बादशाही कुलके हैं परन्तु आपको बहँकाकर मुझसे नाराज़ करादेवें और अपनी कारगुजारी मख़्तक और बख़्तियारककी शत्रुता से डरता हूं कि ऐसा न हो कि दिखावें ज़ोपीन ने कहा वह क्या करसकता है ? जो कोई तुम्हारी तरफ़ बुरी दृष्टि से देखेगा उसको उसी समय मैं मारडालूंगा तुम जाओ और अतिशीघ्र ही मेहरनिगार को मेरे पास ले आओ अमरूने कहा कि मैं तो अभी जाकर लाता परन्तु सरदार सेनाके कहेंगे तुम तो मलका को देकर शाहज़ादे से अपने प्राण की रक्षा करालोगे और हमलोग हरप्रकार से दुःख उठावेंगे इस कारण वे लोग न लाने देवेंगे ज़ोपीन ने कहा तुम जाकर उन लोगों से कहो कि हम उनको हमज़ासे अधिक मानेंगे समझाकर हमारे पास लाओ अमरूने कहा वे लोग मेरे कहनेपर यक़ीन न करेंगे आप एकपत्र सरदारों के नाम लिखदीजिये कि हम लेजाकर उनलोगों को देकर साथ लेआवें ज़ोपीन ने कहा एक क्या दशपत्र कहिये लिखदेवें उसी समय क़लमदान मँगवाकर एक पत्र लिखाकर अमरू को दिया अमरू उस पत्रको लेकर अपने क़िले में आया और उस पत्रको सरदारों को दिखाकर कहा कि अब खेत पका है काटनेवाला चाहिये अब तो पहले चलकर मेहमानी खाओ फिर देख लियाजावेगा सब सरदार अमरू के साथ हुए केवल मुक़बिल चालीस सहस्र सवार लेकर क़िलेकी रक्षा को रहगया और सबलोगों की जवाबदिही अपने ऊपर की अब ज़ोपीनका हाल सुनिये कि उस ने जाकर हरमर जाफ़रामर्जसे यह सब वृत्तान्त कहा बख़्तियारक सुनकर बोला कि जो ऐसी बात हो तो बड़ी ईश्वर की कृपा है परन्तु जो अमरू सब सरदारों के साथ आवे तो अवश्य करके कोई न कोई दुःख हमलोगों पर डालेगा वह बड़ा जालिया और मक्कार है जो थोड़ीसी देरभी किले में सांस पावेगा तो बड़ा दुःख देगा यह कहकर ज़ोपीन को समझानेलगा कि ज़ोपीन वह चालाक फ़रेबी है उसके फ़रेब में तुम न आना और उसकी चालाकी से धोखा न खाना निश्चय करके जानो कि उसके क़िले में जिन्स नहीं रही इसी कारण वह अब अपनी युक्ति कररहा है कि आपको मिलाकर हमलोगों को दुःख देवे और अपना कार्य पूर्ण करलेवे ज़ोपीन क्रोधित होकर कहा कि ऐ मख़्तक ! तू चुपरह मैं जानूं कि अमरू जाने वह ह[illegible] से कहचुका है कि बख़्तियारक के मारे यह न होनेपावेगा बख़्तियारक ने कहा क्यों न वह कहे मेरा उसका एकही मन है अच्छा मैं कुछ न बोलूंगा तुम जानो अमरू जाने उससे क्या कहे ? जो किसी का कहना नहीं मानता जब कुछ बुरा होते देखूंगा उसी समय यहां से चलाजाऊंगा ज़ोपीन ने डेरे में जाकर मेहमानी का बटोरा और सिपाहियों को भेजा कि जाकर देखो अमरू मलकामेहर निगार को लेकर आता है या नहीं सिपाहियों ने जाकर देखा अमरू चारसौ प[illegible] लवान साथ लिये जिनको देखकर डर मालूम होताहै आताहै सिपाहियों ने ज़ोपीन से कहा कि चारसौ पहलवान लिये आता है ज़ोपीन ने सुनकर [illegible]

के पास जाकर कहा कि अमरू चारसौ पहलवान मेरी आज्ञा में करने के लिये लेकर आताहै मालूम होताहै कि सत्य है बख़्तियारक तो सुनतेही सुन्न होगया कि देखें क्या होताहै अमरू का इतने मनुष्यों के साथ आना बेढब है इतने में अमरू साथ सरदारों के ज़ोपीन के डेरेके समीप आ पहुँचा तब ज़ोपीन ने अगवानी लेकर सरदारों को अपने डेरेमें लेआकर बैठाला और अमरू की कुरसी अपने समीप बिछवाई और सब लोगों से बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हुआ और थोड़े समय के पश्चात् साक़ियों को आज्ञा दी कि सबलोग शराब लेआकर सब सरदारों को पिलाओ इतने में आदी अकबर बोला कि ऐ शाहज़ादे! एक मसला है कि प्रथम भोजन उपरान्त बार्त्ता सो पहले भोजन कराइये पश्चात् शराब पिलाइये तब शराब भी स्वाद देगी आज्ञा होतेही बावरची ने खाना सामने लाकर रक्खा और सबसे पहले आदी अकबर को दिया तब उसने कहा और रखदेव काबल ने क्रोध करके कहा कि केवल आपही को परसूं या और कोई है तब आदी ने कहा पहले मैं अपना पेट भरलूं तो और को देना काबल ने आदी के आगे ढेरका ढेर रखदिया यहांतक कि सब उसीके आगे रखदिया और आदी खानेलगा जब सब खागया तब उठकर खड़ा होगया ज़ोपीन बैठा देखरहा था बोला कि और कुछ मँगवाया जावे या नहीं आदी ने कहा अब तो खाचुका परन्तु मुझको साधू का शाप है कि कितनाही तू खायगा तेरा पेट न भरेगा और खाने से हाथ न उठावेगा ज़ोपीन ने और खाना आदी के आगे रखवाया आदी वह भी सब चखगया और पानीतक न पिया ज़ोपीन ने फिर पूछा कि और मँगवायाजावे या आप खाचुके आदी ने कहा जो कलिया रोटियां हों तो थोड़ासा और मँगवाइये ज़ोपीन ने कहा आप खूब खाइये मेरे यहां से भूखे न जाइये यह कहकर कई मनकी रोटी और कलिया मँगवाई उसको भी आदी चखगया ज़ोपीन ने फिर चाहा कि पूछे इतने में बख़्तियारक ने ज़ोपीन से कहा भला तू इसका पेट भरसकेगा और हरमर ने भी आंख मारी बख़्तियारक कहने लगा कि अमरू ने यही तो युक्ति की है कि सब जिन्स चलकर खालेवें जब उसकी सेना भूखों मरनेलगी तो आपही भाग जायगी तब तो ज़ोपीनने कहा कि अभी तो खाना होरहा है कहिये तो जबतक बाज़ारसे कुछ मँगवादूं आदीने कहा मैं ऐसा मरभुक्खा भी नहीं हूं कि आपसे बाज़ारसे मँगवाऊं उठकर हाथ धोकर पलंग पर जाके लेटगया तब ज़ोपीन ने दूसरा खाना बनवाकर और बाक़ी लोगों को खिलवाया जब सब खापीचुके तब शराब मँगवाकर पिलवाने लगे और नाच रंगकी भी सभा गरम हुई और जब सब लोग प्रसन्न हुए ज़ोपीन ने कहा अब मलकामेहरनिगार के लेआने में क्या देरी है अमरू ने कहा सरदारलोग कहते हैं कि इसतरह से मलकामेहरनिगार को देना उचित नहीं है शाहज़ादा ब्याह का सब सामान करे क़िले में चलकर ब्याह करे तब ज़ोपीनने कहा इसमें क्या देरी है अमरू ने कहा कुछ रुपया चाहिये क्योंकि इसमें

सब रुपयेहीका काम होता है ज़ोपीन ने कहा सब मौजूद है जो आपका जी चाहे वह लेजाइये और अपने दिलसे इसका सामान कीजिये तब अमरू तीनदिनतक साथ सरदारों के ज़ोपीन के मेहमान रहे और सहस्र रुपया अमरू को दिया और थोड़ा २ रुपया सरदारों को भी दिया सब लेकर अपने क़िले में आये और क़िलेको अच्छी तरह से बनवाकर छःमहीने के लिये जिन्स मोल लेकर फिर उसी सामान से बैठे ज़ोपीनका हाल सुनिये कि सातदिनतक उबटना लगवाया किया और मोटे होनें के लिये अच्छे २ भोजन कियाकिये और हरप्रकारसे नाच और रङ्ग में मज़बूत रहे और सब सेना को मेहमान रक्खा और अपना मन मलका के पाने को प्रसन्न रक्खा जब सात दिन व्यतीत होगये और अमरू एकदिन भी ज़ोपीन के पास न आया तब तो व्याकुल होगया बख़्तियारक ने ज़ोपीन से पूछा अब तो लगन चढ़चुकी अब व्याह करने को बरात कब लेजाइयेगा कि मलकामेहरनिगार को लाकर मज़े उड़ाइये ज़ोपीन ने तब बहुत सी गालियां बख़्तियारक को दीं और सिपाहियों को अमरू के पास भेजा कि जाकर देख आओ अब क्या देरी है यहां तो सब सामान बटोरा है और सातदिन भी व्यतीत होगये हैं जब सिपाही वहां गये तो देखा कि क़िला भी पहरे से चुना है और सब सरदारलोग भी अपने २ क़ामपर पहरा देरहे हैं और अमरू उसी तरह से शामियाने के नीचे कुरसी जड़ाऊ पर शाहाना लिबास पहिने बैठा है सिपाहियों ने दूरसे जाकर सलाम किया और ज़ोपीन का सँदेशा कहा तब अमरू ने जवाब दिया कि अब तो छःमहीने तक तुम्हारी और हरमर की सेना क्या माल है जो जमशेद और अफ़रासिया भी क़बर से जीकर युद्ध करने को आवें तो हमभी कुछ नहीं डरते हैं यह सुनकर सिपाही वहां से उलटे पैर फिरे और सब हाल आकर ज़ोपीन से कहा तब तो ज़ोपीन अतिलज्जित होकर दांत चबानेलगा कि इस चालाक ने मुझको बड़ा धोखा दिया और यहां से मदायनतक लज्जा हुई परन्तु क्या करें चुप होरहा न तो उससे बदला लेसक्ता था न दण्ड देसक्ता था अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि क़िलेको बन्द कियेहुए दरवाज़ेपर बैठकर चारोंतरफ़ की सैर कररहा था कि संयोग से एक बनकी ओर दृष्टि गई तो देखा कि बड़ाबन है और वहां बहुत से जीव बास करते हैं दाराब से पूछा कि इस बन में व्याघ्र आदिक बहुत होंगे उसने कहा केवल व्याघ्र कई सहस्र होंगे और इससे अधिक और किसी बन में व्याघ्र नहीं हैं और पक्षी आदिक भी इस क़दर हैं जैसा कहीं न होंगे अमरू को जो चालाकी सूझी तो सिपाहियों को बुलाकर आज्ञा दी कि इस बनसे लकड़ी काटकर तीनों तरफ़ जमा करो और केवल एकतरफ़ से हरमर की सेनामें जाने का रास्ता रहने दो और वृक्षों के ठूँठों में नफ़्त रोग़न लगाकर अग्नि लगा देओ कि सब लोग तमाशा देखें सिपाहियों ने उसकी आज्ञानुसार वैसाही किया सब सिपाहियों ने दोपहर रात्रि गये जाकर उस बनमें तीन तरफ़ घेरकर ठूँठों में रोग़न लगाकर अग्नि लगादी सब जानवर अग्नि से व्याकुल होकर एकस्थान पर

टूटकर हरमर की सेना की राह से भागे जो सामने मनुष्य पड़ा उसका शिकार किया इसी तरह से सैकड़ों मनुष्य मारेगये और सब व्याकुल होकर इधर उधर फिरने लगे और ज़िरा पहिनकर घोड़े कसनेलगे तो कोई किसीको पहिंचान न सके आपसमें युद्ध करनेलगे इस विचार से कि अमरू आकर छापा मारेगा ऐसे सब रात्रि आपस में कुछ युद्ध करके और कुछ व्याघ्रों से मार खाकर बराबर होगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर ज़ोपीन बख़्तियारक साथ सरदारों के जो इस आफ़त से बचे थे लोथों को देखने के लिये गये तो देखा कि सब अपनी ही सेना कटी पड़ी है और कहीं जंगल के जानवर भी कटे पड़े हैं और दूसरी तरफ़ से एक भी नहीं हैं तो ज़ोपीन हरमर और सरदार लोग देखकर बड़े आश्चर्य में हुए कि क्या माजरा है बख़्तियारक ने कहा यह अमरू की एक छोटी सी चालाकी है कि उसने जङ्गल में तीन तरफ़ आग लगादी है और केवल इस तरफ़ को निकलनेका रास्ता रक्खा जब जानवर अग्नि की गरमी से भागे हैं वे इसी तरफ़ होकर आपकी सेनापर आगिरे हैं और उन्हीं से सब मारेगये हैं यह कहकर सिपाहियों को जो तलाश करने को भेजा तो सत्य पाया अमरू का हाल सुनिये कि उसने जो दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि हरमरकी सेना बड़े दुःखमें है तब उसके दिलमें यह बात समाई कि आज रात्रि को शत्रु की सेनापर छापा मारें आदी अकरब को बुलाकर कहा उसने कहा मैं आपका सेवक हूं जो आज्ञा होवे वही करूं अमरू ने सरदारों से सब हाल कहकर आदी से कहा कि तुम ज़ोर से चिल्लाकर लन्धौर २ पुकारना तब तो सब सरदारलोग अपने कील कांटे से होशियार होगये और जब आधीरात्रि बीती तब अमरू अपनी सेना को लेकर क़िले से बाहर आया और शत्रुपर छापा मारा आदी ने तलवार खींचकर पुकारना शुरूअ किया कि लन्धौरपुत्र सादान कहां है? हरमर ज़ोपीन आकर मेरी तलवार की चाशनी चक्खें अपना शिर मेरे पैरपर रक्खें तब तो बहुतसे लोग जो डरपोकने थे वे घोड़ों के आगे जो घासके गट्ठे रक्खे थे उसमें नेत्र दबाकर छिपगये और बहुतसे लोग खेमे में जा छिपे सब इधर उधर प्राण बचानेके लिये छिपगये हरमर ज़ोपीन भी जागकर बख़्तियारक से पूछनेलगे कि लन्धौर इससमय कहां से आया उसने कहा यह भी अमरू की चालाकी है और लन्धौर कहां है? हज़ारों सेना हरमर की मारीगई चारघड़ी रात्रि बाक़ी थी कि अमरू के सिपाहियों ने हाल दिया कि ऐ भाई! ज़ोपीन के ज़हांदार काबुली और जहांगीर काबुली बादशाह की आज्ञा से हरमर की सहायता के लिये बड़ी भारी सेना लेकर आते हैं कि सामने से देखिये कि गर्द के मारे दिखाई नहीं देते हैं अमरू ने नेत्र उठाकर देखा तो उसीतरह बहुत सी सेना आती हुई दृष्टि पड़ी तो देखते ही अमरूके भी छक्के छूटगये और कहनेलगा कि आज इस सेना से बचना अतिकठिन है भला मैं हमज़ाको क्या उत्तर दूंगा और इसमें उससे क्या कहूंगा? परन्तु अमरू बड़ा युक्ती और प्रतापी था जब कोई युक्ति न चलसकी तब

ईश्वर को स्मरण करनेलगा चालीसबार स्मरण करने के पश्चात् तीनसौ पहलवान आपहुँचे तो उसी समय डङ्का वजवाकर अमरूने पुकारा कि ओ पहलवानो! आज शत्रुकी सेना एकभी न बचे ऐसी बहादुरी से लड़कर युद्ध करना इसमें पहलवानों का नाम होता है और यह जो सामने गर्द दिखाई देती है यह सेना वहराम बादशाह खाकान और चीन की मेरी सहायता के लिये आरही है शत्रुकी सेना यह वृत्तान्त सुनकर अतिव्याकुल होगई और कहनेलगी कि इससे प्राण बचाना दुर्लभ है यह विचार करके सब सेना भागी और किसीका पैर युद्ध में न अड़ा यह हाल देखकर बख़्तियारक डङ्का वजवाकर सेना से कहनेलगा कि थोड़े समय और ठहरो प्रातःकाल हुआ जाता है कौन जानता है जो यह सेना हमारीही सहायता को आती हो परन्तु किसीने उसकी बातों को न सुना सब भाग गई तब हरमर ज़ोपीन बख़्तियारक भी उन्हींके पीछे फेरने को दौड़े तब अमरू ने जाकर अच्छी तरह से लूटकर अपने क़िले में आकर सब वृत्तान्त कहकर क़िले को फिरसे मरम्मत करवाकर सब सामान युद्धका करके सब सेना को आराम से बैठने की आज्ञा दी और आप भी लिवास शाही पहिनकर शामियाने के नीचे कुरसी डाल कर बैठा॥

बादशाह नौशेरवां की आज्ञानुसार आना जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली भाई ज़ोपीन शाहज़ादे जहांगीर का जाफ़रांमर्ज की सहायता को॥

लेखकलोग लिखते हैं कि सब सेना व्याकुल हुई भागी चली जाती थी कि दूतों ने आकर ख़बर दी कि जिसको अमरू ने बहराम की सेना जानकर भरोसा किया था वह जहांदार और जहांगीर काबुलियों की सेना है जिसकी बराबरी करने वाला इस संसार में दूसरा नहीं है बादशाह ने शाहज़ादे की सहायता के लिये भेजी है अब ईश्वर की कृपा से विजय होगी इतने में जहांदार और जहांगीर काबुली भी आ पहुँचे ज़ोपीन से मिलकर शाहज़ादे के पास जाकर उनको बड़ा भरोसा दिया और कहने लगे कि इतनी देर आप न अड़ सके कि हम पहुँचकर शत्रु को पराजय देते बख़्तियारक ने कहा मैं बहुत समझाता और मना करता रहा था परन्तु किसीने मेरा कहना न माना मुझको भी लज्जित करवाया और सब असबाब भी लुटवाया और आपभी लज्जित हुए तब ह[illegible] काबुली और जहांदार काबुलियों ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ अब ह[illegible] चलकर खड़ी सवारी क़िले को विजय करके सब मुसल्मानों को मारकर मलक मेहरनिगार को निकाल लाते हैं यह कहकर क़िले की तरफ़ फिरे और ज्योंहि क़िले के समीप पहुँचे अमरू अग्नि की वृष्टि करनेलगा और आतशबाज़ी आदिक चारों तरफ़ से मारनेलगा और आतशबाज़ी न बढ़सकी परन्तु ज[illegible] और ज़हांगीर ढालको मुख से लगाये हुए ख़न्दक़पार कूदगये और चाहते थे बलछी लगाकर दरवाज़ा तोड़कर क़िले के भीतर जावें कि इतनेमें न[illegible] साथ चालीस सहस्र सेना के आपहुँचा अपना घोड़ा कुदाकर ख़न्दक़पार [illegible]

ललकारा कि ऐ जवान! पहले मुझसे युद्ध करले तो क़िले का दरवाज़ा तोड़ नहीं तो अभी वह गति बनाऊंगा कि सब भूल जायगा यह सुनकर वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर दोनों की तरफ़ तलवार लेकर दौड़े नक़ाबदार ने दोनों की तलवारें छीनकर उनकी कमर के पटके पकड़कर उठालिया परन्तु उनकी मृत्यु न थी पटके टूटगये और वे दोनों हाथ से छूटकर पृथ्वीपर गिरपड़े तब सेना ने उनको उठा कर भागना उत्तम जानकर भागी और नक़ाबदार भी साथ अपनी सेना के उन की सेनापर जागिरा और निश्चय थी कि सब सेना शत्रुकी मारीजावे कि बख़्तियारक ने लौटका डङ्का बजवाकर उस समय चलाजाना अच्छा जाना तब नक़ाबदार जिधर से आया था विजय करके चलागया शत्रुकी सेनाभी रोते पीटते अपने स्थान आकर उतरी और अमरू अपने विजय के डङ्के बजवानेलगा और सब लोगों ने मुबारकबादियां दीं दूसरे दिन भण्डारी ने आकर आदी से कहा कि अब क़िले में जिन्स भोजन को नहीं है तब आदीने आकर अमरूसे कहा अमरू ने कहा कि अब चलकर कोई दूसरे क़िलेमें रहना चाहिये दाराब ने कहा कि यहां से एक मंज़िलपर एक क़िला रश्कगुलिस्तां है और वह ऐसा बनाहुआ है कि जो बादशाह अपनी सेना लेकर आवे तो न विजय पासके और उसके स्वामी का नाम निसतान है तब अमरू ने सरदारों और सरहंगमिश्री से कहा कि तुम सबलोग क़िले की रक्षा करो मैं जाकर कोई युक्ति करूंगा और जिस दिन तुमको हम बुलावें उसी रात्रि को थोड़ेसे लंगूर बन्दर पकड़कर पीनसों पर बैठाकर इस्मर की सेना की तरफ़से निकलना और मलकामेहरनिगार के साथ और स्त्रियों को पिछवारे के रास्ते से निकालकर अतिशीघ्रही लेकर चलेआना और इस बात को कोई जानने न पावे यह कहकर अमरू दो सिपाहियों को साथ लेकर क़िले निसतान की तरफ़ चला और किसी से अपने मन की बात न कही दोघड़ी दिन शेष रहे उस क़िले के समीप जापहुँचा देखा तो ऐसा बनाहुआ है कि ऐसा क़िला उसके समीप और कोई नहीं था चारोंतरफ़ फिरकर जो देखा तो सब दरवाज़े बन्दपाये और ख़न्दक़ पनियासोत किसीतरह से भीतर जानेकी रास्ता न पाया इसी सन्देह में दो घड़ी रात्रि बीततक इधर उधर घूमाकिया संयोग से पांच छः कुत्ते उस क़िले के भीतर से निकले और क्षुधा के मारे व्याकुल थे तब अमरू ने उन कुत्तों को अच्छेप्रकार से रोटी खिलाई जब वे अपने स्थानकी तरफ़ फिरे अमरू भी उन्हींके साथ चला और सुरङ्ग में घुस कर क़िले के भीतर गया तब उससमय केवल पहरेवाले जागतेथे और सब आरामसे सोरहे थे तब तो अमरू उनसे छिपकर एक वृक्ष जो दीवार के समीप था उस पर चढ़कर कोठेपर गया और सीढ़ीसे उतरकर बारादरी में गया तो देखा कि बादशाह नेसतान पलंगपर सोरहाहै और ख़िदमतगार भी फ़र्शपर बेख़बर सन्नाटे माररहे हैं परन्तु बत्तियां मोमकी बराबर जलरही हैं चादर से सब बत्तियों को बुझादिया केवल एक बत्ती जलनेदिया और उसको पलँग के पास बैठाकर विष बेहोश

करनेवाला लेकर उसकी नाक में लगाकर फूंका तो वह चिल्लाकर बेहोश होगय
उसको तो उस स्थान से उठवादिया और आप उसका भेष धारण करके उस
पलँगपर सोरहा और प्रातःकाल उठकर हाथ मुख धोकर जब गद्दीपर आकर बैठ
तो सरदारों से कहा कि आज मलकामेहरनिगार नौशेरवांकी बेटी का पत्र मेरेना
आया है कि वह मुझपर आशिक़ है इसलिये मैंने आज उसको बुलवाया है स
उसके आने में किसी तरह से रोक न करना सब दरवाज़ों को खोलकर हमारे पा
लेआना कि हमारी मुलाक़ात करके प्रसन्नता उठावे तब बहुतों ने तो मानलिय
और बहुतों ने कहा कि उसके साथ अमरू एक बड़ा मक्कार और जालिया है व
इसी तरह से क़िले को लेलेगा और आपको निकालदेगा तब अमरू ने सैकड़ों क
क़ैद करलिया और दारोग़ा को अपने मक्कर से दरवाज़ा खोलकर मलका के आ
की आज्ञा दी और अमरू जो दो सवारों को दरवाज़े के बाहर छोड़ आया था उनसे
यह सब भेद बता आया था जब उन दोनों यारों ने दरवाज़े खोलने की ख़बर पा
तो मालूम किया कि अमरू क़िलेपर क़ाबिज़ होगया तब उन दोनों ने कहा कि बाद
शाह से कहो कि दो सिपाही मलकामेहरनिगार के पास से आप को कुछ पैग़ाम
लेकर आये हैं अमरू ने हाल पाकर उनको अपने पास बुलाकर एकान्त में लेजा
कर यह सब वृत्तान्त कहकर उन दोनों सिपाहियों से कहा कि तुम जाकर सरहं
मिश्री और सरदारों से कहो कि जिसतरह से हम बता आये थे उसीतरह से आज
रात्रि को चलकर यहां आवें और किसी प्रकार से देरी न करें और अब मैं क़िले
पर क़ाबिज़ हूं किसी तरहसे देर नहीं है यह सब समझाकर उन दोनों को भेज
तब वे दोनों आकर क़िले में पहुँचे और अमरू की आज्ञानुसार सरहङ्गमिश्री औ
सरदारों से सब वृत्तान्त कहा तब वे लोग तुरन्तही तैयारी करनेलगे और सब
सन्देह दूर होगया रात्रि होतेही बहुत से पीनसों में व्याघ्र लंगूर के बच्चे
ज़ोपीन के डेरेकी राहसे सिपाही साथ करके रवाना किये और मलका मेहरनिगार
उसी तरफ़ से जिधरसे अमरू कहगया था लेकर सब सरदारों के साथ चले
के क़िले से निकलतेही एक सिपाही लेकर ज़ोपीन के पास दौड़कर ख़बर दी
मलका मेहरनिगार को लियेजाते हैं यह हाल सुनकर ज़ोपीन बड़ी प्रसन्नता के
डेरेसे निकलकर दौड़ा और देखनेलगा एक व्याघ्रका बच्चा उसमें बँधा
चिल्लाकर भागा परन्तु सिपाहियों को आज्ञा दी कि सब पीनसों को अच्छीतरह
देखलो तब सब सिपाही खोलकर देखनेलगे तो सब में व्याघ्र लंगूर आदिक बँधे
और चिल्लाकर भगे इतने में एक सिपाही ने आकर ख़बर दी कि क़िला ख़ाली मालूम
होताहै यह हाल सुनतेही घोड़ा मँगाकर सवार हुआ और दौड़ाकर मेहरनिगार
महाफ़े तक पहुँचाया मेहरनिगार का हाल सुनिये कि वह मार्ग में जाकर
से निकलकर मुखपर सेहरा डालकर घोड़ेपर सवार होकर चलीजाती थी कि
ज़ोपीन उसके समीप जाकर घोड़ेपर से उतरकर मलका का घोड़ा पकड़कर

गया और अपनी मुहब्बतकी बातें करनेलगा तब मलका ने हटादिया परन्तु उसने माना तब दिक़ होकर एक तमञ्चा निकालकर मारा तो वह भगकर अलग खड़ा आ और एक तीर निकालकर फिर मारा तो वह भगा परन्तु वह भी लगा तब घबराकर भगा इसी समय में सेनाभी पहुँचगई और मलका को साथ लेकर अति प्रसन्नता के साथ क़िले नेस्तानी में दाख़िल हुए अमरू को शत्रुओं से हरप्रकार से इतमीनान हुआ तब जिसने कि मुसल्मान होना क़बूल किया उसके तो प्राण छोड़ दिये नहीं तो सबको मारडाला इसीतरह थोड़े समय में सब क़िलेपर क़ब्ज़ा होगया तत्पश्चात् ख़ुसरो नेस्तान को अपनी ज़म्बील से निकाल कर सब हाल दिखलाया फिर कहा कि तुम मुसल्मान न होगे प्राण दोगे उसने विचारा क़िला तो सब हाथसे जाचुका है अब सिवाय मुसल्मान होने के और कोई युक्ति नहीं है कि प्राण बचे तब कलमा पढ़कर मुसलमान हुआ और अमरू ने अपने गले से मिलाया और कहा कि बाबा! तुम्हारा क़िला तुमको ईश्वर बनायेरक्खे मुझको तुम्हारे देश और क़िले से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं तो थोड़ेदिन का मेहमान हूं तत्पश्चात् जहां ईश्वर लेजायगा वहां जाऊंगा अब तो हमारा आपका कुछ दिन का साथ है फिर कभी मुलाक़ात करूंगा यह कहकर क़िले को अच्छीतरह से चारोंतरफ़से बन्दकरके दरवाज़े पर शामियाना खड़ाकराकर जड़ाऊ कुरसियां बिछाकर बैठा और सब सन्देह दूरहोगया ज़ोपीन का हाल सुनिये कि वह घाव से व्याकुल होकर घोड़े पर से पृथ्वीपर गिरपड़ा और उसका घोड़ा छोड़कर बनकी तरफ़ भागगया और अपने मालिक का साथ न दिया और हरमर जाफ़रांमर्ज़ भी क़िले के ख़ाली होने और ज़ोपीन के पीछा करने का हाल सुनकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली के साथ सेना समेत मुसलमानी सेना का पीछा करने को गये तो मार्ग में ज़ोपीन को घायल पड़ा देखकर बड़े सन्देह में हुए और कहनेलगे कि देखो अमरू ने कैसा दुःख इसको दिया है आख़िरकार उसको उठाकर पीनस में बैठाकर लेगये कि उसकी दवा करके अच्छाकरें तब सिपाहियों से मालूम हुआ कि अमरू अपनी सेनासमेत क़िले नेस्तान में जाकर रहा है तब जाकर क़िले से दूर डेरा डालकर पड़े कि आतशबाज़ी वहांतक न पहुँचसके जब अमरू ने देखा कि बड़ीभारी सेना आकर पड़ी है तब उसके दिल में आया कि कुछ चालाकी करनी चाहिये तब जर्राह की सूरत बनकर किस्वत बग़ल में लेकर ज़ोपीन के ख़ेमेकी तरफ़ से जानिकला सिपाहियों ने उसको देखकर ज़ोपीन से जाकर ख़बर की कि एक जर्राह इधरसे जारहा है ज़ोपीन ने कहा कि अतिशीघ्र उसको हमारे पास लेआओ सिपाही लोग अमरू को बुलाकर ज़ोपीन के पास लेगये उसने अपना घाव दिखलाकर सब वृत्तान्त कहकर कहा ऐ जर्राह! जितनाही शीघ्र तू अच्छाकरेगा उतनाही अधिक मैं तुझे इनाम दूंगा और अच्छीतरह से प्रसन्न करूंगा अमरू ने कहा घाव तो शीघ्रही अच्छा होजायगा परन्तु दूसरे में बड़ी युक्ति है जो आप थोड़े समय के लिये दुःख उठावें

तो मैं पांच पहर में आपके घाव को अच्छा करदूं जोपीन ने कहा इस दुःख से थो
देरके लिये क्या करूंगा तब अमरू ने कहा जो आपकी ऐसीही इच्छा है तो अ
अपने नौकरों को आज्ञा देदेवें कि पांच पहरतक हम कैसेही बुलावें और चिल्ला
परन्तु कोई मनुष्य समीप न आवे जोपीन ने सबलोगों को अपने खेमे से ह
दिया तब अमरू ने डेरेका परदा डालकर जोपीन को उलटा टांग दिया और उ
घावको छुरे से चीरकर बड़ा किया और उसमें हरताल और चूना बत्ती में लपेटक
भरकर ऊपर से हरताल और चूने का मलहम भरदिया तब तो जोपीन क्लेश
मारे चिल्लाने लगा बाहर के लोगों ने जाना कि जर्राह अपने कार्य में होगा इ
समय वहां जाना उचित नहीं है और पहले वे मनाकरचुके हैं आखिरकार जोपी
बेहोश होगया तब अमरू सब असबाब लेकर डेरे का परदा काटकर बाह
चला आया यह सब असबाब लेकर अपने क़िले में आकर बैठा जब पांच पह
व्यतीत होगये तो लोग खेमे में गये देखें तो जोपीन टँगा है और बेहोश होरहा
बड़े आश्चर्य में होकर जल्दी से छोड़कर घावों को धोकर काफूर की बत्तियां उ
में लगाकर नवीन मलहम बनानेलगे फिर दूसरे दिन जब जोपीन को कुछ होश
हुआ सब हाल बयान किया बख्तियारक ने सुनकर कहा वह जर्राह न था अमर
था जो शाहज़ादे की ऐसी गति बनागया है इतने में खबर पहुँची कि हकीम मज
दकको बादशाह ने खज़ाना और अच्छी वस्तु लेकर भेजा है सो आया चाहता
हरमर जाफ़रांमर्ज़ ने अतिप्रसन्न होकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली क
बहुतसे सरदारों के साथ अगवानी लेनेके लिये भेजा अमरू को जो यह खबर पहुँच
तो उसने भी जोपीन के सिपाहियों की सूरत बनाकर अपने मन में बिचारा कि चल
कर इसको भी कुछ अपना मक्कर दिखलाकर लज्जित करूं पांच कोसतक गया होग
कि उसकी सवारी दिखलाई दी और इधर से ये दोनों भी पहुँचे तब तीनों मनुष्य
उतरकर मिले और प्यारी २ बातें करतेहुए खीमे की तरफ़ चले जब अमरू ने
देखा कि सिवाय सवारियों के कुछ माल असबाब दृष्टि नहीं पड़ता निश्चय है कि
माल असबाब पीछे आता होगा यह बिचार कर उसी स्थान पर ठहर गया और
किसी से कुछ न कहा पहररात्रि बीते उठा और छकड़े खज़ानों से लदेहुए
सवारों के पहरे में आपहुँचे जिस समय वे लोग अमरू के समीप आये अमरू
अतिप्रसन्न होकर एकसवार से पूछा कि तुम्हारा सरदार कौन है और उसका
क्या है ? उसने कहा वह जो काली पगड़ी बांधे चलाआता है वही हमलोगों
सरदार है अमरू ने उसके समीप जाकर सलाम करके कहा कि मुझे शाहज़ादे
ने भेजा है मैं बड़ी देर से आपलोगों के आसरे में खड़ाहुआ हूं और कहा है
खज़ाना और असबाब आता है उसको रक्षा के साथ लेआना और जो रा
अधिक होजाय तो वहीं रहजाना सबेरे उठकर आना सबलोग बोले अच्छा तो
आज यहीं वास कीजिये सबेरे चलना होगा और किसीतरह से डर चोर

ग नहीं है तब सरदार ने उसी स्थानपर बास करने की आज्ञा दी अमरू ने कहा । जाकर शाहज़ादे से ख़बर करूं सब लोगों ने कहा कि उत्तम है आप जाइये अमरू जङ्गल में अपने यारों को बैठाये था उनके पास आकर कहारों की सूरत नाकर थोड़ासा भोजन जिसमें शराब बेहोशी मिलीहुई थी उनके ऊपर रखवाकर प्राप वैसेही बनकर उनके पास लेगया और उन लोगों से कहा कि शाहज़ादे ने यह भोजन तुमलोगों के वास्ते भेजा है इसको भोजन करो सरदार ने लेकर सब को दिया और आप भी भोजन किया और किसी तरह से सन्देह न किया और कोई उसके खाने से न बचा जब सब के सब उसके खाने के प्रश्चात् बेहोश हुए तब अमरू ने सब ख़ज़ाना और असबाब संदूक़ों में से निकाल कर जम्बील में रक्खा और कङ्कर पत्थर जानवरों की हड्डियां भरकर बन्दकरदी सब असबाब और ख़ज़ाना लेकर अपने क़िले में आराम से आकर बैठा प्रातःकाल जब वे लोग चैतन्य हुए और सब लेकर वहां से चले तो पहर दिन चढ़े शाहज़ादे की सेना में आकर पहुँचे तब हरमर जाफ़रांमर्ज़ ने सन्दूक़ों को मँगवाकर हकीम मज़दूक से कुंजी लेकर खोला तो उसमें ख़ज़ाने सौग़ात के बदले में कङ्कर पत्थर मरे जानवरों की हड्डियां भरी थीं देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ तब बख़्तियारक ने कहा कि अमरू सा चालाक भी संसार में न होगा यह चालाकी और मक्र में ईश्वर की बराबरी करता है कि सेना की वह सूरत बनाई ज़ोपीन को ऐसा दुःख दिया हरमर ने पहरेवालों से पूछा कि तुम को कोई मनुष्य मार्ग में मिला था और कुछ बातचीत हुई थी उनलोगों ने कहा कि केवल वही सिपाही मिला था जिसको ज़ोपीन ने भेजा था और उसीसे हमलोग कहकर उस स्थानपर रहगये थे और दूसरे जो आपने कुछ खाने के लिये लेकर भेजा था उसके साथ कहार सब होशियार थे तब बख़्तियारक ने कहा जो पहले गया था वहभी और जो कहारों के ऊपर खाना रखवाकर गया था वह भी दोनों बार अमरू था उसी ने यह चालाकी की है और दण्ड देने के लायक़ था तब शाहज़ादों और सरदारों को बड़ा रंज हुआ परन्तु क्या करें कुछ बश नहीं आख़िरकार सब बृत्तान्त लिखकर बादशाह के पास अपनी विनय पत्री को भेजा ॥

अफ़रेत पिशाच का सहरिस्तान में पहुँचकर पनाह लेना अपनी माता की भति से ॥

प्रथम उन बृत्तान्तों के सिवाय अब थोड़ासा बृत्तान्त अमीरहमज़ा का सुनाताहूं कि प्रथम बयान करचुके हैं कि अफ़रेत का पिता अमीर के हाथ से बध कियागया था और अतिलज्जित होकर उसके शोक में बैठकर रोदन किया था कि एक नदी उस के आंसू से बही थी उसके पश्चात् शहपालने सात दिनतक उसी की प्रसन्नता से नाचरङ्ग कराया था और इसतरह से उसने सामान किया था कि सब मनुष्य प्रसन्न होजाते थे आठ दिनके पश्चात् अमीर ने पूछा कि इन दिनों मालूम नहीं होता कि अफ़रेत किस बिचार में है कि वह युद्ध करेगा या नहीं जो वह युद्धकरना

नहीं चाहता तो आपही डङ्का युद्ध का वजवाइये और उसको आप रोव दिखलाइये मैं केवल अठारह दिन का वादा करके आया था परन्तु मुझे इतना काल व्यतीत होगया नहीं मालूम क्या हाल होगा और वादे पर न पहुँचने से हरएक मनुष्य को बड़ा दुःख होगा दूसरे यह कि नौशेरवां वादशाह से शत्रुता है वह भी युद्ध करने के लिये आरूढ़ है तव शहपाल ने युद्ध का डङ्का वजवाने की आज्ञादी वाजेवालों ने आज्ञा पातेही वारह सौ जोड़ी सोने की और वारह सौ चांदी की निकालकर वजाने का आरम्भ किया परन्तु नगारा सुलेमानी था उसका शब्द तीन मंज़िल तक सुनाई देताथा और अफ़रेत तो नज़दीकही था उसने भी डङ्के का शब्द सुना तो अपने यारों को वुलाकर कहनेलगा कि देखो भाई! अभी पिता के कामकाज से छुट्टी न पाईथी कि वह फिर लड़नेको आरूढ़ हुआ और आपलोग निश्चय करके जानें कि वह मेरे मारने को आयाहै यह कहकर वहुत रोया और एक पिशाच को वुलाकर एक पत्र अपनी मांके वुलाने के लिये लिखा और कहा कि वहुत शीघ्र जाकर वुलाला वह दुष्टा कि जिसका नाम मलामूनाजादू था हाल सुनतेही वायु के समान उड़ी और तुरन्तही आकर उसके निकट पहुँची अफ़रेत उसके गलेमें लगकर रोया और अमीर का हाल सव उसको सुनाया उसने विचारकर कहा कि सत्य है वह सव पिशाचों के मारनेकेलिये आया है इसलिये उत्तमहै कि जादूका मकान जो मैंने वनवाया उसमें चलकर कुछदिन वासकर और जव वह मनुष्य परदे दुनिया को चलाजायगा तव शहपाल से समझलेना होगा अफ़रेत को अपनी माता की सलाह वहुत पसन्द आई और उसी समय अपनी माता के साथ तिलस्मात सहरिस्तानजर्री की राह ली और इस भेद को किसीसे न वतलाया सव सेना उस की वहुत व्याकुल हुई इधर उधर ढूंढ़कर वहुतों ने तो अपने घरकी राहली और वहुतोंने आपस में यह सलाह की कि शहपाल हमलोगोंका पुराना स्वामी है चलकर उसीसे अपना अपराध क्षमाकराकर रहें जिस प्रकार से वह रक्खे उसी तरहसे रहें अव सिवाय इसके और कौन है जहां चलकर रहें किसी न किसी प्रकार से शहपाल को प्रसन्न रक्खें शहपाल और साहवकिरां तख़्तोंपर सेनासमेत सवार होकर युद्ध के लिये चले कि मार्गमें पिशाचों ने आकर ख़वर दी कि अफ़रेत तवलजङ्गका शब्द सुनकर साहवकिरां और वादशाह परदेकाफ़ के डर से भागगया और अपने पिता के मारेजाने से वड़े दुःखमें है और उसकी सेना थोड़ीसी तो आपके दरवाज़ेपर आकर खड़ी है और शेष इधर उधर चलीगई और जो सेना आपके दरवाज़ेपर खड़ी है वह आपसे अपराध क्षमाकराकर आपके समीप रहाचाहती है और हाथ वांधे शिर झुकाये दरवाज़े पर खड़ीहै वादशाह इसको सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और रुपये अशर्फ़ी लुटातेहुए क़िले गुलिस्तान में आया इस ख़वरसे कि अफ़रेतकी सेना वादशाह के आधीन होने आई है नगरवासियों ने भेंटदिया और वहुतसा ख़ज़ाना लुटाया और कई दिनतक नाचरङ्ग हुआकिया जव सवसे छुट्टीपाई अमीरने शहपाल

से कहा कि अब मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये मेरा बड़ा हर्ज होताहै और दुनियाका हाल न मिलने से मुझे बड़ा दुःखहै शहपालशाह ने कहा कि ऐ साहबकिरां ! आप का और मेरा यही इक़रार है कि आप अफ़रेत को मारकर तब दुनिया को जाइये और अफ़रेत अभी मारा नहीं गया जो आप बेमारे जायँगे तो फिर वह आपके जानेपर मुझे दुःख देगा तब फिर आपको बुलाना पड़ेगा इससे यही बात अच्छीहै कि आप उसको मारकर तब दुनिया को जाइये अमीर ने शिर नीचे करलिया थोड़ी देरके बाद शहपालशाह से कहा कि आपका कहना हमको मानना हरप्रकार से उचित है परन्तु यहभी तो मालूम होकि वह कहां भागकर गयाहै ? वहीं चलकर मारें शहपालशाह ने कहा कि उसका पता क़सर बिल्लौर जानेसे मालूम होगा अमीर ने कहा वहां चलने में देरी क्याहै ? मैं तो तैयार हूं शहपाल ने उसीदिन ख़ेमा आगे भेजा और दूसरे दिन अमीर को साथ लेकर उसी तरफ़को चले जब क़सर बिल्लौर में पहुँचे वहां के बासियों ने शहपालशाह को भेंट आदिक देकर हरप्रकार से सेवा में संयुक्त रहे और कहा कि अफ़रेत अपनी माता जादूगरनी के साथ आकर तिलस्मातज़री में जो सहरिस्तान में उसने बनायाहै उसीमें छिपा है और उसमें सब कारख़ाना जादूका है केवल बायुका बनाहुआ है अमीर ने कहा मुझको जाने की आज्ञा दीजिये ईश्वर मालिक है देखलिया जायगा जाकर उसको उसकी मां समेत मारूं और जो वह वहां अकेला है मैंभी अकेला जाऊंगा और ईश्वर की कृपा से बिजय पाऊंगा बादशाह ने वह बातें सुनकर अब्दुलरहमान की तरफ़ देखा तब उसने कहा आप किसी तरह से सन्देह न कीजिये इनको ख़ुशी के साथ जाने की आज्ञा दीजिये मैं अच्छी तरहसे बिचार करचुकाहूं जातेहीं उसको मारकर बिजय पाऊंगा तब बादशाह ने चार परीज़ादों को जो उड़ने में अतिशीघ्र और बहुत तेज़ थे बुलाकर आज्ञा दी कि अमीर को तख़्तपर बैठाल के बहुत आराम के साथ लेजाकर वहां पहुँचाओ परीज़ादों ने उसी समय तख़्त उड़ाया और तीन दिन रात्रि उड़ाये चले गये जाकर एक बनमें उतारा अमीर ने पूछा यह कौन स्थान है ? यहां क्यों उतारा है ? उनलोगों ने कहा यह एक पहाड़ ज़हरमोहरा नामे है और यहां एकप्रकार के नवीन मनुष्य रहते हैं अमीरने पूछा कि तुम जानते होकि इस स्थानसे सहरिस्तान कितनी दूरहै ? उनलोगोंने कहा कि छःकोस यहां सेहै तब अमीरने कहा यहां क्यों उतरे ? वहीं चलकर ठहरते उनलोगोंने कहा कि इस पहाड़ के नीचे से छःकोसतक सब जादूका कारख़ाना है जो हमलोग जायँ तो जलजायँगे और जो सामने देखाई पड़ताहै उसी में वह है तब अमीर उसरात्रिको उसी बनमें आराम से रहे जब सबेरा हुआ निमाज़ पढ़कर परीज़ादों को उसी स्थान पर छोड़कर उनलोगों से कहा कि किसीतरह से सन्देह न करना हमारी आवाज़ सुनते रहना हम जाते हैं परन्तु तुमलोगों को एक बात बतायेजाताहूं कि मैं तीन बार चिल्लाकर शब्द करूंगा एक जब युद्ध करने को चलेगा, दूसरा उसके मारने पर, तीसरा बिजय का, जब

तीसरी वार न सुनना तो जानना कि मैं अफ़रेत के हाथ से मारागया शहपाल शाह से मेरे मरने की ख़बर करना यह कहकर जरीं पहिनकर अकरवसुलेमानी को हाथमें लेकर आंसू रूमाल से पोछता हुआ पहाड़से नीचे उतरा परन्तु अँधियारे के कारण आगे न बढ़सका इसी तरह से कई बार ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आया गया परन्तु जब नीचे गया तो अँधियारा मालूम हुआ और ऊपर चढ़जावे तो फिर रोशनी तब परीज़ादों ने पूछा कि क्या आपके दुनिया में युद्ध के पहले इसीप्रकार से कसरत करते हैं अमीर ने कहा मैं कसरत नहीं करताहूं परन्तु जब पहाड़ के नीचे जाताहूं तो अँधियारे के कारण आगे नहीं बढ़सक्ता हूं लाचार होकर लौटआताहूं और जब ऊपर जाताहूं तो फिर रोशनी दिखाई देती है इसी संदेह में पड़ाहूं कि क्या ईश्वर की रचनाहै परीज़ादों ने कहा यह अफ़रेत की माता ने यहां से अपने स्थानतक इसी तरह से जादू बनाये हैं यह सब उसी की करामात है जिसके देखने से आपको आश्चर्य मालूम होता है अमीर ने यह सुनकर कहा अच्छा ईश्वर मालिक है मैं इसी अँधियारे में जाऊंगा यह कहकर पहाड़ के नीचे उतरा और थोड़ी दूर गया था कि आकाशवाणी हुई कि ऐ अमीर! खड़ा होजा मुझ को आने दे तब चल अमीर यह सुनकर खड़ा होगया कि इतने में सलासल परीज़ाद ने एक तख़्त हाथ में लिये आकर सलाम करके कहा कि यह तख़्ती अब्दुलरहमान ने दी है और कहा है कि बे इसके देखे कोई काम न करना नहीं तो बड़ा दुःख उठाओगे यह सब कहकर सलासल तख़्ती देकर जिधर से आया उधरी को चला गया अमीर ने उस तख़्ती को जो देखा ईश्वर के नाम के पीछे यह लिखा था कि ऐ अमीर! ईश्वर ने तेरे ऊपर कृपा की है कि यह तख़्ती तुझे दी है अब तेरी विजय होगी तू इसको पढ़ता चला जा तब अमीर ने उसको पढ़कर आकाश की ओर मुख किया तो सब अँधेरा जातारहा और रोशनी प्रकट हुई तब अमीर को निश्चय हुआ कि अब मेरी विजय होगी तब अमीर ने ईश्वर की रचना पर गुणानुवाद किया और उस तख़्ती को हाथ में लेकर आगे चला जब क़िलेके दरवाज़ेपर पहुँचे तब देखा कि एक अजदहा मुख नीचे और पैर ऊपर किये पड़ा है उसको देखकर बड़े संदेह में हुआ इतने में आकाशवाणी हुई कि ऐ अमीर! तू किसी तरह से संदेह न कर अजदहे के मुख में चला जा अमीर ने तख़्ती को निकालकर देखा तो उसमें लिखा था कि निस्संदेह अजदहे के मुख में कूद पड़ना वह अजदहा नहीं है केवल धोखे का अजदहा है ज्योंहीं अमीर आंख को मूंदकर अजदहे के मुख में कूदा त्योंहीं शोर गुल होने लगा थोड़े समय के पीछे जब आंख को खोला तो न तो अजदहा निकला न कुछ भी देखाई दिया सिवाय एक बाग़ के जो अति शोभायमान दिखाई दिया कि जिसमें हर प्रकार के फल फूल थे और मेवों के वृक्ष मेवों से लदे थे और हर प्रकार के पक्षी बने हुए मीठी २ बाणी के शब्द बोलरहे थे उसी बाग़ में अमीर एक नहर पर बैठ कर सैर करने लगे इतने में बाग़ की बारहदरी से

एक शब्द सुनाई दिया कि कोई ईश्वर का जन नहीं है कि मुझे इस क़ैदखाना से छुड़ाकर प्राण को बचावे अमीर यह शब्द सुनकर बारहदरी में गया देखा तो एक अतिस्वरूपवती युवा स्त्री तख़्त पर बैठी हैं हाथ और पैरों में लोहे की ज़ंजीरें पड़ी हुई हैं और बड़े दुःख में बैठी है अमीर को उसको देखकर बड़ी दया मालूम हुई समीप जाकर उससे पूछा कि ऐ सुन्दरी ! तू कौन है और किसने तुझे यहां कारागार में डाला है ? उसने कहा प्रथम आप अपना नाम और निशान और किस उपाय से आप यहां आये हैं बतलाइये तो मैं अपना हाल बतलाऊं अमीर ने कहा मैं सहायक शहपाल बादशाह परदेकाफ़ का अमीर हमज़ा नामक ईश्वरपूजक अफ़रेत के वध करने को आयाहूं उसने कहा मैं सोसन परी सलीम काही की बेटी हूं अपने दुःख का हाल क्या कहूं कि अफ़रेत ने मेरे ऊपर अतिमोहित होकर मेरे पिता से मेरा ब्याह अपने साथ करने को कहा जब उसने न माना तब अफ़रेत ने मेरे पिता को सेना लेकर पराजित किया तब मैंने अपने पिता से कहा कि आप मेरा ब्याह उसके साथ करदें मैं धोखा देकर बांध लूंगी तो तुम पकड़कर शहपालशाह के समीप भेज देना वह शत्रु के क़ाबू में आने से तुम से बहुत प्रसन्न होगा और तुमको बहुतसा रुपया और देश देगा परन्तु मेरा मकर उसकी माता को प्रसिद्ध होगया उसने मुझे बांधकर यहां डाल दिया है तबसे मैं यहां पड़ी हूं इससे मरना उत्तम है अब जो आप मुझे इस कारागार से छुड़ादेवें तो मैं चलकर अफ़रेत का स्थान जहां वह रहता है दिखा दूं और अच्छी तरह से आपको बतलादूं अमीर ने उसको कारागार से छुड़ाकर मानो फिर से प्राणदान किया तब वह अमीर को साथ लेकर एक दूसरे बाग़ में आई और अफ़रेत का स्थान दिखलाया अमीर ने देखा तो बारहसौ पिशाच पहरेपर बराबर से खड़े हैं एकबारगी सोसनपरी अमीर के सामने पृथ्वी पर गिरकर इस्मसहरा पढ़कर आकाश पर वायुके समान उड़गई अमीर का गुन न माना और जब थोड़ी दूर ऊपर गई तो पिशाचों से पुकार कर कहने लगी कि क्या देखते हो अफ़रेत का मारनेवाला और जादू का बिगाड़नेवाला तुम्हारे सामने खड़ा है इसे किसी युक्ति से मारो तब अमीर उसके छुड़ाने से अति लज्जित हुए और उसकी बेवफ़ाई पर बड़ा आश्चर्य किया इतने में सब देव चारों तरफ़ से अमीर को मारने के लिये हथियार लेले दौड़े अमीर ने अकरब सुलेमानी को मियान से निकाल कर जिस देवपर एकबार चलाई उसका शिर अलग हुआ परन्तु जितनी बूंदें रुधिर की गिरती थीं उतनेही नयेदेव बनजाते थे अमीरका हाथ मारते २ थकगया इतने में तख़्ती यादआई उसमें देखा तो लिखा था कि सोसन जादू को क़ैद से न छुड़ाना जो छुड़ाओगे तो बड़ा दुःख पाओगे और जो शायद ऐसा हो जाय और देव तुमसे लड़ने लगें तो इसको पढ़कर तीरसे मारकर सब दूर करदेना तब अमीर ने वैसाही किया सब थोड़ी देरमें दूर होगया जो शोरगुल होरहाथा सब बन्द होगया और एक नया शब्द सुनाई दिया कि लेना चाहिये मैं भी आ पहुँचा

बाद इसके अमीरने देखा तो न सोसन परी है न कोई देव है और बाग़की पीछेसे काफ़के लोगों का शब्द ऐसा सुनाई देता है अमीरने उस तरफ़ जाकर तो एक नया बाग़ है उसमें एक स्त्री युवा अति स्वरूपवती और एक मनुष्य काफ़की सूरतका बैठाहै और चारसौ देव उसके साथ सब क़ैद में पड़े हैं अमीरको उस स्त्रीने देखकर कहा ऐ जवान ! तू मुझको इस क़ैदसे छुड़ादे बड़ा सवाब होगा अमीर उसे पहले की तरह जाना कि शायद यहभी वैसीही हो कि पीछे को मुझे दुःख देवे (और सत्य है कि दूधका जला माठा फूंक फूंक पिये) तलवार निकाल कर दौड़े कि इसको अवश्य मारिये यह न जाने पावे तब उस वृद्ध ने रोकर कहा हे अमीर ! मारे हुए को क्या मारना है पहले मेरा हाल सुनलीजिये तब चाहे मारिये चाहे छोड़ दीजिये मेरा नाम जनीदशाह सब्ज़पोश है और शहपाल शाह का बड़ा भाई हूं और यह मेरी बेटी है रहियानपरी इसका नाम है और काफ़ में मेरा स्थान है जब अफ़रेत ने शहपाल को पराजय किया था तो मुझ से कहा था कि अपनी बेटी का ब्याह मेरे साथ करो मैंने जब न माना तो मुझे पराजय करके मुझे मेरी बेटी और इन चारसौ देवों समेत पकड़कर यहां लाकर क़ैद किया है अब तुझे अख़्तियार है चाहे मार या जिला अमीर ने तख़्ती देखी तो उसका कहना सत्य पाया तब अमीर को दया आई और उनको क़ैद से छुड़ा-कर जाने की आज्ञा दी और कहा कि शहपाल से मेरा सलाम कहने के पश्चात् कहना कि मुझे दुःख बड़ा पड़ा परन्तु अब बहुत जल्द अफ़रेत को मारकर आता हूं और कहना कि सब संदेह छोड़कर ईश्वर से मेरे विजय पाने का वर मांगे लिखा है कि जिस समय जनीद सब्ज़पोश को अमीर ने क़ैद से छुड़ाकर जानेकी आज्ञा दी उसके पश्चात् आगे को चले तो एक अतिशोभायमान स्थान दृष्टि पड़ा उसके सहन में जल भरा हुआ तालाब मालूम हुआ उसको देखकर बड़े संदेह में हुए फिर एक संदूक़ दिखाई दिया अमीर ने पैर आगे बढ़ाया कि देखें कि यह जल है पैर रखने से मालूम हुआ कि जल नहीं है परन्तु तख़्ती बिल्लौरी है और यह जल से भी अधिक साफ़ है अमीर ने चाहा कि इस संदूक़ को देखें कि इसमें क्या है ? अवश्य है कि इसमें भी कुछ जादू का कारख़ाना होगा ज्योंहीं अमीर सं-दूक़ की तरफ़ झुके त्योंहीं एक देव जो उसमें लेटा था कूदकर अमीर के गले में लिपटगया और अपना बल दिखानेलगा अमीर ने एक हाथ से संदूक़ का कि-नारा पकड़ा दूसरे हाथ से लङ्गर जमाकर तख़्ती को देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ अमीर ! ख़बरदार २ इस संदूक़ में न जाना इस दुःख से अपने प्राण को बचाना जो गया तो जीता न निकलेगा इस देव के शरीर में एक रसनवाल है वह रस्सी नहीं है एक जंजाल है उसमें एक तख़्ती बँधी है उसको सीने से तोड़कर वहा देना तो उससे तेरा प्राण बचेगा और तेरा कार्य सिद्ध होगा तब अमीर ने एक तीर ईश्वर का नाम लेकर जो मारा तो उसमें से बड़ा तमाशा मालूम हुआ और सब

संदेह ईश्वर की कृपा से दूर होगया अमीर ने तख़्ती को वालसमेत छाती से जुदा किया उसके टूटनेपर ईश्वर का धन्यवाद दिया और एक तीर संदूक़ में मारा तो उस देवने सीधे जहन्नुम की राह ली तीर के लगते ही एक बड़ा शोर गुल होनेलगा और वह संदूक़ जलनेलगा और ऐसा शोर और गुल हुआ कि उसका शब्द आकाशतक पहुँचा और सर्वत्र शब्द होनेलगा कि मनुष्य पिशाचों का मारनेवाला आपहुँचा इस शब्द के पश्चात् जो अमीर ने देखा तो न कहीं तख़्ती है न मकान केवल एक मैदान दिखाई पड़ता है और उसमें एक रुधिर का तालाब है और उस तालाब के बीच में एक चर्ख़ खड़ा है और उसमें से रुधिर होकर एक दरार में जाता है परन्तु उसका कुछ हाल नहीं मालूम होताहै उसे देखकर बड़े संदेह में हुए थोड़ी दूर और गये तो देखा कि एक बारा दिखाई पड़ा और उसके दरवाज़े पर एक लड़का खड़ापाया तब अमीरने कई बार उससे पूछा कि तू कौन है? अपना हाल बता परन्तु वह न बोला जब अमीर अन्दर चला तो उस लड़के ने पुकारकर कहा कि ऐ देव! ख़बरदार हो मारनेवाला देवोंका और बिगाड़नेवाला जादूका आपहुँचा तब अमीर ने फिरकर एक तलवार मारी वह दो टुकड़े होगया और ज्योंहीं अमीर थोड़ी दूर आगे गया त्योंहीं उसका शिर उड़कर अमीर के पैर में लगा तब वह फिर जीउठा तब अमीर ने बड़े संदेह में होकर तख़्ती में देखा तो उसमें लिखा था कि दरबान को कभी न मारना वह कभी न मरेगा उसपर तेरी वार न चलेगी परन्तु जो छाती में तीर मारोगे तो अलबत्ता माराजायगा और फिर न जियेगा और मुबारक हो कि अफ़रेत तक आपहुँचा अमीर ने जो उसको पढ़कर एक तीर उसकी छाती में मारा तो सर्वत्र अँधियारी छागई और चारोंतरफ़ से लूक और बाण गिरनेलगे और बड़ा शोर गुल होनेलगा तब अमीर तख़्ती को नेत्रों पर रखकर बैठगये कि नेत्रों को कुछ दुःख न पहुँचे इन सब आंधी आदिक के दूर होने के पश्चात् जो नेत्र खोलकर देखा तो कोसोंतक मैदान दृष्टि पड़ा और हर स्थान पर ऐसे २ शोभायमान फूल फूले हैं कि देखने से चित्तको बड़ा आनन्द प्राप्त होता है और उसमें बहुत से परीज़ादे गा बजारहे हैं और अनेक २ प्रकार के अपूर्व तमाशे कररहे हैं अमीर जो समीप उस स्थान के पहुँचे तो एक परी शराब और गिलास लेकर दौड़ी और कहनेलगी कि लो साहबक़िरां इसको पीकर मार्ग के श्रमसे रहित होकर थोड़ी समय हमलोगों के साथ बैठकर गाना बजाना सुनकर चित्त को प्रसन्न करो अमीर ने तख़्ती में देखकर शराब उसके हाथ से लेकर उसीके शिरपर छोड़दी जैसा तख़्ती में लिखा था वैसाही किया तब उसके बदन से लव निकलनेलगी और बड़ा शोर हुआ कि सिकन्दर तिलस्म ने असरार जादूगरनी को भी मारा और उसके साथियों को बड़ा दुःख दिया तत्पश्चात् अमीर ने जो देखा तो एक बड़ाभारी पहाड़ दिखाई पड़ा और उसके आगे एक टीला निराधार खड़ा है और उसके भीतर से नौबत के शब्द अतिप्रिय सुनाई दिये तब अमीर उसके भीतर गया तो अफ़रेत को

देखा बेख़बर सोरहा है और उसके श्वासा का शब्द अतिप्यारा मालूम होता परन्तु देखने से अतिभयानक मालूम होता है अमीर ने अपने मन में विचारा। सोतेको मारना एक नामर्दी है इसको उठाकर मारना चाहिये तब एक उसके पैर में मारा तो उसने पैर देमारा कि मच्छरों के मारे निद्रा नहीं । नहीं मालूम इतने मच्छर कहां से आये तब तो अमीर बड़े सन्देह में हुए कि इस वार को तो यह मच्छर समझता है तो और क्या असर करेगा तब दो हाथोंसे उस पत्थर को दबाकर एकबार ईश्वर का नाम लेकर ऐसा चिल्लाया कि पहाड़ और जङ्गल हिलगये अफ़रेत ने भी उसके सुनने से जाना कि पृथ्वी या आकाश फट गया है उठकर जब खड़ाहुआ तो अमीर को सामने खड़ा देखकर व्याकुल होगया और कहने लगा कि मैं तो अब माराही जाऊंगा परन्तु तेरा भी प्राण न बचेगा और मैं तो वहां से भागकर यहां छिपा था तू ने यहां भी मेरा पीछा न छोड़ा तो अब तेरे युद्ध से क्या भागूं यह कहकर एक तलवार जिसमें पत्थर भी लगे थे लेकर अमीर के ऊपर चलाया अमीर ने उसकी वार को रोककर अकरबसुलेमानी को निकालकर मारा तो दो टुकड़े होगया और फिर हिल न सका परन्तु थोड़ासा प्राण बचा था ॥

माराजाना अफरेत शाह देवों का अमीर के हाथ से और शीश काटने से सैकड़ों देव बनकर अमीर से युद्ध करने को आना ॥

तब अफ़रेत ने कहा अब तो मैं मारागया हूं यह भी जो श्वास रहगई है इसको भी एक तलवार मारकर निकालदे अमीर ने उसके कहने पर एक तलवार और लगाई तो ज्योंहीं उसका धड़ जुदा हुआ त्योंहीं दो टुकड़े आकाश पर उड़कर दो देव बनकर अमीर के सामने आखड़ेहुए इसी प्रकार से दो पहर में हज़ारों देव उत्पन्न हुए तब अमीर इस आश्चर्य को देखकर बड़े संदेह में हुए और मारते २ हाथ भी थकगया इतने में दाहिने तरफ़ से शब्द ऐसा आया कि कोई सलाम कररहा है अमीर ने फिरकर देखा तो हज़रत अख़ज़र अलेहुस्सलाम हैं तब तो सलाम करके कहनेलगे कि मारते २ हाथ थकगया है परन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि जिसको मारता हूं एक का दो होकर युद्ध करने को आरूढ़ होता है और एक भी इनमें नहीं मरता है तब हज़रत अख़ज़र ने कहा कि तुम अपने हाथ से यह सब दुःख सहरहे हो कि यहां जादू है और हरएक कार्य बेतवज्जी में देखे हुए करते हो और ज़ादू को नहीं डरते हो अब मैं एक बात बता दूं इसके अनुसार तुम करो तो अभी सब बला दूर होजावे कि यह मन्त्र जो मैं तुझे बताता हूं पढ़कर तीरसे उस देव के शिरपर जिसके माथे पर खाल चमकरही है मार तो सब बला अभी दूर होजाय तब अमीर ने उनकी आज्ञानुसार किया तब केवल वही अफ़रेत पड़ा हुआ दिखाई दिया और सर्वत्र मैदान पड़ा पाया परन्तु शिर अफ़रेत का उस स्थान पर न था हज़रत अख़ज़र ने साहबक़िरां से पूछा कि तुम इन देवों के उत्पन्न होनेका कारण जानते हो अमीर ने कहा मैं क्या ज़ानूं ईश्वर जाने या आप पैग़म्बर हैं जानें दूसरा कौन

जानसक्ता है उन्होंने कहा अफ़रेत की माता उसका शिर लिये इसी घर में बैठी है वह जादू से धनियें की पत्ती उसके रुधिर में डुबोकर आकाश में फेकती है उस से दो देव बनकर तुझसे युद्ध करने को आते हैं अब ग़ार में चलकर उसको भी मारकर नरककुण्ड में पहुँचाओ तब दोनों मनुष्य साथ होकर उस ग़ार में गये उस दुष्ट की माता जादूगरनी ने जो हज़रत अख़ज़र को अमीर के साथ देखा तो क्रोधित होकर बोली कि यह सब तूही करारहा है कि मेरे पुत्र को मरवाकर अपनी ईर्षा मिटाई परन्तु मैं तुझको भी जीता न छोड़ूंगी यह कहकर जादू करनेलगी तब हज़रत अख़ज़र ने एक मन्त्र पढ़कर फूंका तो सीधी नरककुण्ड को सिधार गई ॥

आना ख़्वाजे हज़रत अलैहुस्सलाम का अमीर के पास और उनकी आज्ञानुसार
तोड़ना जादू का और माराजाना अफ़रेत की माता का
हज़रत के मन्त्र से और लूटना तिलस्म का ॥

तत्पश्चात् सब जादू दूर होगई और दोनों मनुष्यों के चित्त प्रसन्न होगये और हज़रत अमीर को विजय की मुबारकबादी दी बल और हिम्मत की बड़ी प्रशंसा की और आज्ञा दी कि अफ़रेत के शिर का मुकुट उतार ले और ऐसेही तुझे एक और मिलेगा जब सफ़ेद देव तेरे हाथ से मारा जायगा तू इन दोनों को अपने ताज में लगाना इनसे बड़ाफल प्राप्त होगा और एक गिलास जिसमें साढ़े तीन मन शरबत असाता था दिया कि यह तेरी सभा में काम आवेगा और इससे बड़े २ आश्चर्यरूपी तमाशा देखोगे तब अमीर ने कहा हज़रत इस समय मैं अतिक्षुधावन्त हूं कुछ भोजन को दीजिये कि खाकर भूख मिटाऊं हज़रत ने एक भोजन का पात्र निकालकर दिया अमीर ने उसमें से निकालकर खाया परन्तु वह पूराही रहा तब हज़रत ने एक बिलहरा पानका दिया कि पान खाकर चित्त को प्रसन्न करे और कहा कि इन दोनों बस्तुओं को अपने पास रक्खो कि जबतक क़ाफ़ में रहो भूख प्यास से दुःख न उठाओ कि दूसरे से मांगो और जब ये दोनों बस्तु तुम्हारे पास से खोजायँ और ढूंढ़े न मिलें तो जानना कि अब थोड़ेदिनों के उपरान्त दुनिया को जायँगे और तुम क़ाफ़से बहुत दिनों के पीछे जाओगे यह कहकर हज़रत तो चले गये और अमीर ने जो कई दिनों के बाद भोजन किया आलस्य आगई और उसी चट्टानपर जहां अफ़रेत सोता था जाकर लेटगये और थोड़ेही समय में सोगये इस कारण से तीसरी बार शब्द न किया तो परीज़ादों ने जो ज़हरमोहरा पर खड़े शब्द सुनने के आश्रित थे जब शब्द न सुना तो शहपाल के पास जाकर अमीर के मारेजाने की खबर दी और सब वृत्तान्त अमीर का शहपाल को सुनाया तब शहपाल अमीर के मारेजाने का हाल सुनकर रोनेलगा और अब्दुलरहमान से कहा कि मैंने इब्राहीम के पुत्र का पाप अपने ऊपर लिया कि उसको वहां जानेदिया तब अब्दुलरहमान ने बिचारकर कहा कि अमीर अफ़रेत और उसकी माता को मारचुके हैं थोड़ा सा कार्य और बाक़ी रहा है उसको भी पूरा करके अति शीघ्रही

आते हैं और इसीसे तीसरी बार शब्द नहीं किया चलिये उनको लेआवें कि सब लोग देखकर प्रसन्न हों और आप किसीतरह से संदेह न कीजिये यह सुनकर शहपाल ने बड़ी खुशी की और सफ़र का सामान करके सहरिस्तान को चला इस प्रसन्नता से परीजादों ने ऐसे सिंहासन से तख़्त को उड़ाया कि अतिशीघ्र जहां अमीर सोरहे थे आपहुँचे तो देखा कि साहबकिरां एक ग़ार में सोरहे हैं और मुख पर धूप आगई है और धूप से स्वरूप बदल गया है आसमानपरी ने एक पर से छांह करली और दूसरे पर से बायु करनेलगी और हरप्रकार से सुख देने लगी अमीर को जो आराम मिला आंख को खोल दिया और दृष्टि उठाकर देखा तो आसमानपरी एक पर से तो छांह किये है और दूसरे से बायु कर रही है तब तो उठकर उसे गले से मिलाकर मुख को चूमा और हरप्रकार की प्रिय बातें करने लगा और उसपर अति मोहित होकर अपने गोदपर बैठालकर बहुत प्यार किया और पूछा कि इस समय के तेरे यहां आने का क्या कारण है ? मुझे बड़ा आश्चर्य मालूम हुआ कि तू यहां आई उसने कहा आपकी बिजय का हाल सुनकर अति प्रसन्न होकर दौड़ी आई हूं तब तो अमीर औरही अधिक प्रसन्न हुए उसने फिर कहा कि एक खुश ख़बरी भी लाई हूं कि शहपालशाह भी पीछे आते हैं और आप के बिजय और शत्रुओं के बध करने से अति प्रसन्न होकर आते हैं यह सुनकर अमीर अतिप्रसन्न हुए थे कि उसी समय शहपाल की सवारी आपहुँची अमीर तख़्त देखकर उठकर खड़ा होगया शहपाल भी तख़्त पर से उतरे और अमीर के हाथ मुख को चूमकर तख़्तपर बैठालकर क़िले गुलिस्तान को लेआये और अपने सब कार्य से रहित होकर नाचरङ्ग की सभा करके हरएक सरदार और नगरबासियों ने अमीर की न्योछावर में बहुतसा रुपया अशरफ़ी पुण्य की और हरप्रकार से खुशी करने लगे तब बादशाह ने अब्दुलरहमान से कहा कि तुम कहते थे कि हमज़ा आसमानपरी के साथ ब्याह करने के योग्य है सो अब क्या देरी है ? और इस समय से उत्तम समय न आवेगा कि सब सरदार और नगरबासी इस अपूर्व वस्तु के देखने को आये हैं और सब छोटे बड़े हमज़ा की प्रबलता से अतिप्रसन्न हैं तो अब ब्याह करने में देर न करो तब तो अब्दुलरहमान ने उठकर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीर को अति नम्रता के साथ सलाम किया अमीर ने पूछा यह क्या कारण है कि तुम ऐसे प्रसन्न हुए तब उसने कहा कि आप बादशाह के जामाता हुए और हमलोगों के स्वामी अमीर ने कहा कि मैं ऐसी बात मुसाफ़िरत में नहीं करता क्योंकि जो हम आसमानपरी के साथ ब्याह करेंगे तो दुनिया को न जासकेंगे और इसी स्थान पर काम के लोभ से रहजायँगे और दूसरी बात यह है कि हम मलकामेहरनिगार नौशेरवां की बेटी से प्रतिज्ञा करचुके हैं कि जबतक तुम्हारे साथ ब्याह न करलेंगे तबतक दूसरी स्त्री के साथ ब्याह न करेंगे इस कारण से मैं अपनी प्रतिज्ञा से विपरीत नहीं करसक्ता तब अब्दुलरहमान ने कहा कि आप

ने वह प्रतिज्ञा परदे दुनिया में की थी यहां नहीं की इसमें किसी प्रकार से आपकी प्रतिज्ञा से अनुचित नहीं होता और दुनिया में पहुँचाने का तो मेरा कार्य है मैं आप को दुनिया में पहुँचादूंगा अमीर ने पूछा कबतक पहुँचाओगे तब फिर अब्दुलरहमान ने कहा कि आप यह कुछ संदेह न कीजिये यह परदे काफ़ है जो हम कहते हैं मान लीजिये परन्तु हम यह कहसक्ते हैं कि एक बर्ष के पश्चात् आपको परदे दुनिया में पहुँचा देवेंगे और सबलोगों को आपको दिखला दूंगा अमीर ने बिचारा कि बिना इनकी सहायता हम दुनिया को जा नहीं सक्ते आखिरकार मानलिया और शहपालशाह ब्याह की तैयारी करनेलगे और बादशाहों को नेवता भेजनेलगे थोड़े समय के पश्चात् सब बादशाहलोग अपने २ नेवते लेकर गुलिस्तान अरम में आये और उस ब्याह की सभा में मिलकर प्रसन्न हुए और अफ़रेतदेव और उसकी माता जादूगरनी के मारेजाने की खबर सब देवों को पहुँचगई थी उसी में देव समन्दर जिसके हज़ार हाथ थे सुनकर अति क्रोधित होकर कहनेलगा कि देखो बादशाह शहपाल ने एक मनुष्य परदेदुनिया से बुलवाकर अफ़रेत और उसकी माता जादूगरनी को मरवाकर हमारी हज़ारों बर्ष की मेहनत जादू के कारखाने को तोड़वाकर बृथा करवा डाला और मुझसे कुछ न डरा और उसको गुलिस्तान अरम में लेआकर अपनी बेटी का ब्याह किया यह कहकर सफ़ेददेव को बुलाया और आज्ञा दी कि तुम चार सौ देवों समेत अति शीघ्र जाकर बादशाह से कहो कि उस मनुष्य को हमारे पास भेजदो कि उसको मारकर अफ़रेत का बदलालेवें और उसकी हड्डियों को काटकर देवों और कौवों को बांटदेवें यह सब बातें कहकर भेजा संयोग से उसी दिन ब्याह की तैयारी थी कि बादशाह सभा में सुलेमानी तख़्तपर बैठे थे और सब सेनापति आदिक यथा उचित अपने २ स्थानपर बैठे थे और अमीर उस तख़्तपर जो हज़रत सुलेमान ने अति उत्तम शोभायमान और बिचित्र अपने वज़ीर के लिये बनवाया था बैठे थे और उसमें हज़ारों प्रकार के जवाहिर जड़ेथे और सब सरदारलोग अपने २ स्थानों पर यथा उचित बैठे थे और हरप्रकार के नाचरङ्ग के तमाशे होरहे थे कि इतने में सफ़ेददेव चारसौ देवों समेत शस्त्र सब प्रकार के धारण कियेहुए निडर होकर बराबर चलाआया और बादशाह से सलाम करके कहनेलगा कि ऐ बादशाह! समन्दर सहस्रकर ने कहा है कि बादशाह ने देवों को एक मनुष्य परदे दुनिया से बुलाकर बड़ा दुःख दियाहै और अफ़रेत ऐसे सरदार को उसके माता पिता समेत मरवाडाला यह बात अच्छी नहीं की है परन्तु अब उचित है कि उस मनुष्य को हमारे पास भेजदो कि उसके बदले में उस मनुष्य की हड्डियां और बोटी २ कटाकर देवों को बांटदेऊं अमीर यह बातें सुनकर अतिक्रोधित हुए और कहनेलगे कि ऐ पापी! क्या बकता है अधिक बोला तो तुझे भी दण्ड दूंगा और तेरी बातों का मज़ा चखादूंगा और उससे जाकर कहदे कि जो अफ़रेत से मुलाक़ात करनी हो तो मेरे पास आवे उसे भी वहां भेजदूं सफ़ेददेव अमीर की बातें सुनकर क्रोधित

हुआ और कहा कि मालूम होताहै कि तुहीं हैं ये चारसौ देव तेरही पकड़ने के लिये आये हैं तुझको मेरे सरदार ने बुलाया है यह कहकर अमीर की तरफ़ हाथ बढ़ाया कि अपना बल दिखावे अमीर ने ईश्वर को स्मरण करके उसका हाथ पकड़कर ऐसा झिटका दिया कि वह दोनों पैरों के बल बैठगया और कमर से खंजर निकाल कर उसके पेट में ऐसा मारा कि एकबार आह करके प्राण को त्याग करदिया ईश्वर की कृपा से मनोरथ पूरा होगया तब तो सब देव व्याकुल होकर भागगये और सब जितने उस स्थान पर बैठे थे अमीर के बल को देखकर बड़े आश्चर्य में होकर प्रशंसा करनेलगे और बादशाह ने बहुतसा रुपया और अशरफ़ी कंगालों को अमीर की नेवछावर में लुटाया और सफ़ेददेव की लोथ को बनमें फुँकवादिया कि मरने के पश्चात् भी उसको इस प्रकार से लज्जित किया और उस दिन व्याह होनेके कारण कई कोसोंतक रोशनी की और सड़कों पर आतशबाज़ी गाड़कर छोड़वाते थे और एक फुलवाड़ी फूलों की ऐसी चुनवाई कि जो कोई देखता था वही जानता था कि फूलों के बृक्ष लगे हैं और देखकर अतिप्रसन्न होताथा और जिस समय अमीर को खिलअत बादशाही पहनाई गई थी और बारगाह सुलेमानी से हरमसरायशाही की तरफ़ लेचले और सामान उत्तम इकट्ठा था और सरदार और नगरबासी क़ाफ़ के अमीर के चारों तरफ़ मिलेहुए चलेजाते थे और गाने बजानेवाले आगे गाते बजाते और परियां हाथोंपर नाचतीहुई चलीजाती थीं और गुब्बारे आकाश से छूटकर पृथ्वी पर गिरते तो यही मालूम होताथा कि सितारे टूट २ कर गिररहे हैं इसीप्रकार से अपूर्वतमाशे होतेथे परन्तु अब अधिक लिखने से बड़ा काल व्यतीत होताहै इस लिये संक्षेप में लिखा है इसी धूमधाम से दुलहा दुलहिन के स्थान पर पहुँचा और अब्दुलरहमान ने पहर रात्रि व्यतीत होने के पश्चात् व्याह किया और दोनों से प्रतिज्ञा ली और दोनों का मनोरथ पूरा हुआ शहपालशाह ने आसमानपरी के दहेज में कई देश दिये और भी उत्तम २ बस्तु दीं और जिस समय अमीर महलमें गये तो सब कार्य से छुट्टी पाकर आसमानपरी को पलँगपर लेटालिया और उसके साथ भोग किया ईश्वर की कृपा से उसके उसी रात्रि को गर्भ रहगया देव और मनुष्य का स्वभाव मिलगया प्रातःकाल जब अमीर स्नान करके पोशाक पहिनकर सभा में जाकर बैठे तब उस दिन से और अधिक प्रतिष्ठा होनेलगी और हर प्रकार का सामान उनके लिये आनेलगा परन्तु अमीर रात्रि दिन गिना करते थे कि कब वर्ष समाप्त होगा कि हम जाकर दुनिया में सबसे मिलकर यहां की बातें कहेंगे और बहुतसी अपूर्व बस्तु यहां से लेजाकर देकर प्रसन्नता उठावेंगे ॥

अब अमीर का वृत्तान्त छोड़कर थोड़ासा वृत्तान्त सेनापति खुसरो हिन्द मलिक लन्धौर पुत्रसादान का संक्षेपपूर्वक लिखते हैं कि जब लन्धौर अमीर से आज्ञा लेकर नौकापर सवार होकर चले उसके दूसरे दिन बहराम से भी मुलाक़ात हुई तो बातों से मालूम हुआ कि अमीर ने इसको भी हमारी सहायता के लिये भेजा है यह

सुनकर अतिप्रसन्न हुए और अमीर ने ईश्वर का धन्यवाद किया पांचवें दिन एक तूफ़ान आया उसके कारण तीन दिनतक नौका इधर उधर फिरा की चौथे दिन जाकर तीर लगी और लोगों का प्राण बचा परन्तु जिस नौकापर बहराम सवार था उसका पता न मिला तब तो लन्धौर बड़े संदेह में हुआ कि अमीर ने हमारी सहायता के लिये भेजा है उनसे क्या कहेंगे हमको बड़ी लज्जा प्राप्त होगी बहराम का हाल सुनिये कि नौका जो तूफ़ान से बहती २ टूटगई तो बहराम एक पटरेपर बैठे हुए बहकर तीर जालगे और पृथ्वीपर जाकर ईश्वर का धन्यवाद किया और एक तरफ़ को पैदल चला और कई दिनों से अन्न जल न पाया था तीनकोस जाके एक सौदागर का डेरा पड़ा था उसी के समीप जाकर एक वृक्ष के नीचे चुपचाप जाकर बैठा कि ऐसा न हो कि इसमें कोई मुलाक़ाती मिले कि इस मेरी बुरी हालत को देखकर लज्जित करे परन्तु संयोग से सरदार उस डेरे को घूमताहुआ बहराम के समीप आनिकला तो बहराम से पूछा कि तू कौन है और कहांसे किस कार्य के लिये आताहै कहांजायगा ? बहराम ने कहा सौदागर हूं मेरी नाव तूफ़ान में डूबगई है परन्तु मेरा प्राण बचगया कि एक पटरेपर बहकर किनारे लगाहूं और वहां से उतरकर यहां आया हूं अब देख जो ईश्वर देखावेगा वह और देखूंगा उसने कहा ऐ प्यारे ! पास द्रव्य अधिक है परन्तु पुत्र नहीं है इसीसे उदास रहताहूं अब तू मेरे साथ चल तुझे अपना पुत्र बनाऊं और सब द्रव्य और असबाब का स्वामी करूं और मेरे पास इतनी द्रव्य है जो किसी बादशाह के पास भी नहीं है तब बहराम उसके साथ गया उसने स्नान कराकर अच्छी पोशाक पहिनाकर सब द्रव्य और असबाब दिखलाया और अपने साथ लेकर वहां से कूच किया और सब माल असबाब का उसे मालिक किया बहराम ने सौदागर से पूछा कि किस तरफ़ जाओगे और किस नगर में वास अपना करोगे उसने कहा माण्डू देश में जो सरन्द्वीप के समीप है और राजधानी मलिकशवाँ की है वहीं चलकर मार्ग के श्रम से आराम लेंगे तब तो बहराम अतिप्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा होगी तो लन्धौर से अतिशीघ्रही मुलाक़ात होगी पस कई दिनों के बाद माण्डूनगर में पहुँचकर सराय में असबाब उतारकर उतरे और दूसरे दिन सौदागर ने बहराम को साथ लेकर स्नान किया और पोशाक बदलकर बाजार की सैर को गया तो वहां उस को एक तमाशा दिखाई दिया कि चौराहे में एक चौकुण्ठा चबूतरा है उसपर एक चौकीपर एक कमान और अशरफ़ियों के तोड़े रक्खे हैं बहराम ने पहरेवालों से पूछा कि यह कमान और तोड़े कैसे हैं ? इसका हाल मुझसे बतलाओ उन लोगों ने कहा कि जग़ीमनाम हमारे बादशाहका एक सेनापति बड़ा बुद्धिमान् और बलवान् है यह क़मान उसका है और वह इसे खींच नहीं सका इसलिये तोड़े और क़मान यहां रखवादिया है कि जो कोई इस कमान को खींच लेवे वह इन तोड़ों को लेजावे और जो जी चाहे वह करे बहराम ने पूछा कि कहो तो मैं इस कमान को खींचूं

और अपना वल दिखलाऊं उन पहरेवालों ने कहा भला तू वेचारा इसे खींच सकेगा तुझमें ऐसा वल कहां है वहराम ने कहा ऐ यारो ! वल ईश्वरका हुआ है इससें अमीर और ग़रीब का कुछ भाग नहीं लगा है और न किसीके से मिलता है यह तेरी बातें वृथा हैं वहराम से पहरेवालों से वात चीत होती कि नेकरायवज़ीर शईबशाह की सवारी वड़ी धूमधाम से आनिकली वहराम देख कर वड़े आश्चर्य में हुए दूतों ने जाके नेकराय से वहराम की तरफ़ सम्मुख होकर पूछा कि ऐ जवान ! तू इस कमान को खींचेगा वहराम बोला (कि हाथ कङ्गन को आरसी क्या) परीक्षा लेकर देख लीजिये नेकराय ने कहा अच्छा खींचो हम भी देखें वहराम ने ईश्वर का नाम लेकर कमान को उठाकर क़ब्जे को अपने कमर में करलिया और कमान को उठाकर खूब वल दिखलाया लोगों ने उसके वल को देख कर वड़ी प्रशंसा की परन्तु ज़ग़ीम के नौकरों को अच्छा न मालूम हुआ आपस में वकने लगे और सिड़ियोंकी तरह हाहू करनेलगे वहराम ने क्रोधित होकर कईएक को मुक्कोंसे मारडाला तव नेकराय ने उनको वहांसे धमकाकर हटादिया और वहराम को लेकर अपने स्थानपर चला आया ज़ग़ीम ने जव यह सुना कि सौदागर कमान खींचकर अशरफ़ियोंके तोड़े भी उठालेगया और मेरे कई नौकरों को मारडाला है तिसपर नेकराय उसको अपने स्थानपर लेगये हैं और मेरा कुछ भी विचार न किया कि उसको अपने स्थानपर लेगया यह कहकर हथियार धारण करके वहराम के मारने के वास्ते चला और जव वहराम उसे दिखाई पड़ा तो अतिक्रोधित होकर उसे मारने को तलवार लेकर दौड़ा और यह कहनेलगा कि ऐ गज़ी बेचनेवाले ! तुझेभी वल हुआ कि मेरा कमान खींचकर अशरफ़ी के तोड़े उठा लेगया और मेरे नौकरों को भी मारडाला अव ले तुझेभी मारकर बदला लेता हूं यह कहकर दौड़ा कि इसे मारकर वदला लेलूं कि वहराम ने तलवार उसके हाथ से छीनकर एक ऐसा घूंसा मारा कि वह मरगया यह खवर वादशाह को पहुँची उसने तुरन्त ही नेकराय समेत लेआनेकी आज्ञा दी जव वहराम सामने गया तो वादशाह शईव ने क्रोधित होकर वहराम से कहा कि तूने हमारे इतने वड़े नामी सरदार को क्यों मारडाला ? वहरामने कहा आपने क्यों ऐसा निर्वल वज़ीर रक्खा है ? कि एक घूंसे के मारने मरगया वादशाह को वहराम की वातें वहुत पसन्द आईं और उसी समय ख़िल अत वज़ारत की देकर ज़ग़ीम के स्थानपर वैठने की आज्ञा दी वहराम ने दो वार उस कमान को वादशाह के सामने खींचकर सिपाहियों को आज्ञा दी कि इस कमान को उसी स्थानपर तोड़ों समेत लेजाकर रक्खो और जो कोई इसे उठावे उसे हमारे पास लेआओ वादशाह इन वातों को देखकर अतिप्रसन्न हुए और बेटी का व्याह उसके साथ करादिया और व्याह में वड़ी धूमधाम की और आधा देश अपना उसको देकर कहा कि दोपहरतक तुम तख़्तपर वैठकर हुकूमत करो और दोपहर भर हम हुकूमत राजसिंहासनपर वैठकर करेंगे अव थोड़ा

वृत्तान्त लन्धौर खुसरो हिन्दुस्तान का सुनिये कि जब लन्धौर बन्दर सरन्द्वीप में पहुँचा तो वहांपर नाव को लङ्गर डालकर आप सेनासमेत पृथ्वीपर उतरकर एक शोभायमान स्थान पर डेरा डालकर पड़े और कुछ दिन वहां रहकर सेनाको आरास्ता किया और जिस मनुष्य को जो लायक़ समझा वैसी आज्ञा देकर क़िले सवरसवूर की तरफ़ रवाना हुआ और वह हाल सबपर प्रसिद्ध है ॥

पहुँचना खुसरो हिन्दुस्तान मलिक लन्धौरपुत्र सादान का क़िले सवरसवूर पर ॥

लिखनेवाला लिखता है कि जैपूरशाह जिसको मलिक लन्धौर खुसरो हिन्दुस्तान राजगद्दी पर बैठालकर अमीर के साथ मदायन की तरफ़ चलेगये थे और उसको अपना स्थानापन्न बनाआये थे परन्तु बहुत दिनों से मलिक सारिज फ़ीरोज़ तुर्क और अहबूक खारजमी और महलील सगलियार इन सब लोगोंके मारे क़िला अपना बन्द कियेहुए बड़े दुःख में पड़े रहे आख़िर को सेना ने कहा क़िले में बन्द होकर कबतक दुःख उठावें बाहर निकलकर युद्ध करने को आरूढ़ होवें मरें या मारें दो में एक होगा इसमें बैठरहना मर्दानगी का काम नहीं है जैपूरशाह ने कहा कि जैसी तुमलोगों की खुशी हो हमको हरप्रकार से मंजूर है तब उसी समय शत्रु के पास एक दूत भेजा कि क़िलेसे हटकर पड़ो हमारा तुम्हारा युद्ध होगा तब तो उन लोगों ने अतिप्रसन्न होकर जैपूर की आज्ञानुसार किया और दोनों तरफ़ युद्ध का सामान होकर डङ्का युद्ध का बजनेलगा और प्रातःकाल को दोनोंतरफ़ की सेना युद्ध के खेतमें आकर युद्धको आरूढ़ हुई और प्रथम महलील सगलियार खेतपर आकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ और उधर से जैपूरशाह भी युद्ध के खेतमें घोड़ा बढ़ाकर खड़ेहुए परन्तु किसीकी वार न चलीथी कि एक बवण्डल सामने से ऐसा उठा कि सर्वत्र अँधियारा होगया और उसके दूर होनेके पश्चात् एक सेना सत्तर सहस्र की दिखाई दी कि जिसके देखने से सब लोग व्याकुल होगये आगे लन्धौर हाथी पर सवार सब शस्त्र धारण कियेहुए भयानक रूप बनाये बैठा था कि जिसके देखने से लोगों को बड़ा आश्चर्य होता था जब उस स्थानपर आ पहुँचा तो उतरकर महलील संगसार को ललकारा और ईश्वर का नाम लेकर बोला कि मैं तेरा प्राण का ग्राहक आ पहुँचा देख अभी मैं तुझको मारता हूं उसने यह सुनकर गुर्ज लन्धौर पर चलाया लन्धौर ने रोककर एक वार ऐसी मारी कि फिर उसने शिर न उठाया और फिर लोगों को ललकारा कि जिसको युद्ध करने की इच्छा हो वह आकर खड़ा होवे और अपनी बहादुरी दिखावे परन्तु यह हाल देखकर किसीने कुछ उत्तर न दिया और किसीका मन न हुआ कि इसके सन्मुख जाकर खड़े होवें तब लन्धौर ने एकबारगी हल्ला बोलदिया और सब सेना शत्रु की सेनापर जा गिरी बहुतसी सेना शत्रु की मारीगई और शेष सेना ने भागकर अपना प्राण बचाया और लन्धौर की सेना को बहुत खज़ाना और माल मिला कि हरएक मालदार होगया और खुसरोहिन्द अतिप्रसन्नता के साथ क़िलेमें गया सब संदेह मन से दूर होगया और सभा

नाच रङ्गकी करवाई तब फिर मलिकसारिज और अहबूकख़्वारज़ामी दो
को तीन लाख सेना लेकर युद्ध करने को आकर पड़ा एक पहलवान का नाम हिरा
सफ़ीलदन्दाँ था दूसरे का मङ्गल वफ़ीलज़ोर था और वे दोनों ऐसे थे कि हर
मनुष्य देखकर डरताथा युद्ध का डङ्का बजवाकर युद्ध करनेको उपस्थित हुए
ने भी डङ्के का शब्द सुनकर अपनी सेनामें भी डङ्का बजाने की आज्ञा देकर युद्धक
सामान इकट्ठा करनेलगे और प्रातःकाल होतेही दोनों तरफ़की सेना युद्धके खेत प
आकर खड़ीहुई तो हिरासफ़ीलज़ोर ने आगे बढ़कर ललकारा तब लन्धौर ने भी
अपने हाथी आगे बढ़ाये और उसके सम्मुख आकर बहादुरी के साथ कहा कि ल
अब वार चला देखूं कैसा बल तेरे है तब उसने एक तलवार जो चारसौ मन की थी
निकालकर लन्धौर के शिरपर मारी खुसरो ने उस वार को बचाकर अपनी तलवा
मियान से निकालकर ललकार कर कहा कि ख़बरदार हो नहीं तो पीछे से कहो वि
धोखेसे मारा अब मैं तलवार चलाताहूं रोको ऐसा कहकर वार चलाई तब उसन
ढालसे रोका और अपना सिपाहपना दिखलाया परन्तु वह ढाल काटतीहुई कलेज
के पास जा निकली और उसने फिर शिर न उठाया एकही वार में प्राण निकर
गया उसके भाई ने जो देखा कि भाई हमारा मारागया उस समय अपने घोड़ेक
दौड़ाकर लन्धौर के सामने आया और अतिदुःखित होकर कहा कि तू ने बड़ा ग़ज़
किया जो मेरे भाई को मारडाला देख तेरा प्राण अब कब बचताहै तेरी हड्डियों क
कैसा काटताहूं लन्धौर ने कहा कि संदेह न करो तुमको भी उसीके पास भेजते
कि तुम दोनों साथ जाकर रहो अब वार चला उसने एक तलवार खुसरो को खू
ज़ोर करके मारी खुसरो ने उसको रोककर वही रुधिर से भरीहुई तलवार कमर
निकालकर जो मारी तो दो टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और तलवार सा
अलग होगई अहबूक और सारिजने जो देखा कि दोनों पहलवान मारे गये स
सेना लेकर एकबारगी शत्रु की सेनापर आगिरे और उधरसे हिन्द की सेनामें धाव
किया दोपहर बराबर तलवार चला की तब अहबूक और सारिज ने विचारा कि
सेना मारीजाती है और शत्रु दबाये चलाआता है इस समय यहां ठहरना अनुचि
है तब डङ्का लौटने का बजवाकर वहां से भागकर और अपनी पराजय से ला
होकर अपने स्थानपर चलेआये और मलिक लन्धौर भी विजय का डङ्का
हुए अतिप्रसन्नता के साथ क़िले में दाख़िल हुए और मलिक सारिज अति व्य
हुआ महल में जो गया तो उसकी स्त्री और बेटी ने कारण व्याकुलता का पूछा
ने कहा कि लन्धौर के हाथ से प्राण नहीं बचा चाहता और किसी सरदार का दि
उससे युद्ध करनेको नहीं चाहता कि प्रथम वार तो उसने उस प्रकार से
किया कि जिसकी प्रशंसा नहीं करसके ऐसी बहादुरी की कि हम चार
मिलकर युद्ध करनेको गये थे परन्तु बिजय न पासके और बहुतसी सेना
और दूसरे युद्ध में कि मैंने तीन लाख सिपाही लेकर चढ़ाई की थी परन्तु लाख से

ग्रौर दो पहलवान मारेगये कि उसके कारण से अब एक सिपाही भी युद्ध का नाम नहीं लेताहै तिसपर भी बिजय न मिली सो अब पेट मारकर मरजाने के सिवाय और कोई युक्ति नहीं सूझती है इन बातों के सुननेसे उसकी बेटी को बड़ा दुःख हुआ और कहनेलगी कि जो आज्ञा हो तो मैं लन्धौर को अपनी युक्ति से बाँध लाऊं और आप को अपनी युक्ति दिखलाऊं सारिज ने पूछा तू क्योंकर ऐसे काम को करलावेगी उस ने कहा आपसे इससे क्या वास्ता जो मेरा जी चाहेगा वह करूंगी परन्तु उसको पकड़ लाऊंगी उसने कहा कि इससे क्या उत्तम तू जा मुझे मंजूर है तूने मसला नहीं सुना कि (अन्धा केवल दो नेत्र चाहताहै) तब उसने एक खेमा जङ्गल के समीप खड़ा करवाया और अपने बदन को अच्छी तरह से साफ़ करके अनेक २ प्रकार के कपड़े और ज़ेवर पहिनकर चारसौ सहेलियों समेत उस खेमे में जाकर परी की तरह बैठी और सब सहेलियों को गाने बजाने की आज्ञा दी और मलिक लन्धौर के दिल में यह बात आई कि शत्रु तो अब पराजय पाकर चलागया है जबतक वह फिर न आवे तबतक जङ्गल में चलकर शिकार में चित्त को बहलावें इस विचार से क़िले से निकलकर जङ्गल की तरफ़ गया तो वहां जाकर देखा कि एक बड़ा भारी खेमा खड़ा है और उसमें स्त्रियां गारही हैं समीप जाकर पूछा कि यह किसका खेमा है लोगों ने कहा कि सारिज की बेटी चित्त प्रसन्न करनेके लिये आई है लन्धौर उसके देखने के लिये एक पत्थरपर जो उसी स्थानपर पड़ा था बैठगया और उसीकी तरफ़ देखनेलगा उसने परदे के आड़से लन्धौर की सूरत देखकर एक अति स्वरूपवान् युवा स्त्री के हाथ एक गिलास में शराब उसके पीने के वास्ते भेजा तब लन्धौर ने पूछा कि उसने मुझे क्योंकर पहिंचाना उस स्त्रीने कहा कि जिस दिन से युद्धस्थल में देखा है उसी दिन से आपके ऊपर मोहित है यह सुनकर लन्धौर अतिप्रसन्न हुआ इतने में एक दूसरी लौंड़ी आई कि आपको मलका साहबा बुलाती हैं जल्दी चलिये नहीं तो वे खुद आवेंगी तब तो लन्धौर अतिप्रसन्न होकर खेमेके भीतर गया तो वहां देखा कि एक स्त्री चौदहबर्ष की जवान अपना स्वरूप बनाये हुए तख़्त पर बैठी शराब पीरही है और चारसौ सहेली चारों तरफ़ जिस प्रकार से चन्द्रमा के चारों तरफ़ तारे चमकते हैं उसी प्रकार से वे चारसौ सहेलियां बैठी थीं और परियां नाच गारहीथीं और हर प्रकार की प्यारी २ बातें करती थीं लन्धौर यह हाल देख कर चारों तरफ़ देखनेलगा तब उसने उठकर लन्धौर को तख़्तपर अपनी बग़ल में बैठालिया अर्थात् फँसाने का जाल बाँधा और कई गिलास शराब अपने हाथ से पिलाया और हरबार अपना लोभित होना उसको जताया तब लन्धौर ऐसा काम वश होकर बेहोश होगया कि किसीका कुछ विचार न किया और उसके गले में हाथ डालकर कहनेलगा कि ऐ प्राणप्यारी ! तू मेरे क़िलेमें चल वहां तुझको बड़ा सुख मिलेगा यहां क्यों दुःख उठारही है उसने कहा इस समय दिन है रात्रि को मैं चलूंगी और सब रात्रि आपके पास रहकर सुखको प्राप्तहूंगी लन्धौर ने मंजूर किया

और रात्रि को अपने पास बुलाया और हरचन्द वहां से दिल उठने को न चाहता था परन्तु लाचारी से उठकर अपने स्थान पर आया और अपने खेमे को सजाने की आज्ञा दी और आप रात्रि के आने की आश्रय में बैठा जब रात्रि हुई लिबास पहिनकर उस मक्कार के पास गया और काम से लोभित होकर व्याकुल होगया तब उसने दो गिलास शराब बेहोशी की पिलाकर बेहोश किया तब चाहा कि बाँधकर पिता के पास भेजें कि वह अपना बदला लेवे परन्तु उसकी मृत्यु न थी ईश्वर ने उसके मन को फेरदिया कि संदूक़ में बन्द करके खारी समुद्र में जो वहां से समीप था उस संदूक़ को डाल दिया और अपने पिता से जाकर कहा कि मैंने तुम्हारे शत्रु को मारकर नदी में फेंकवादिया और उससे तुम्हारा बदला लिया तब तो उसने अतिप्रसन्न होकर युद्ध का बाजा बजवाने की आज्ञा दी और युद्ध का सामान इकट्ठा किया और प्रातःकाल जब दोनों सेना युद्ध के खेत में आकर खड़ीहुई उस समय हिन्द की सेना ने लन्धौर को जो उस स्थान पर न देखा तो सब अति व्याकुल हुए और लड़ने से जी टूटगया और सारिज ने युद्धमें विजय पाकर बहुत से मुसल्मानों को मारडाला और सेना से अपना बदला लिया और जैपूरशाह ने देखा कि सेना लन्धौर के न होनेसे व्याकुल होरही है कि विजय नहीं मिलसक्ती लौटने का डङ्का बजवाकर फिर अपने क़िले का दरवाज़ा जाकर बन्द करलिया और लन्धौर को ढूंढ़नेलगे लन्धौर का हाल सुनिये कि वह संदूक़ जलपर लहर के धक्के खाताहुआ इधर उधर बहता चलाजाता था संयोग से एक सौदागर की नाव जो सिन्ध से आती थी मल्लाहों ने उस संदूक़ को पकड़ लिया और बेखोले सौदागर के हाथ बेचडाला उस अहमक़ ने लेकर जो खोला तो उसमें एक मनुष्य बेहोश पाया उसको निकालकर पलँगपर लेटाकर चैतन्य किया तब लन्धौर ने आंख खोलकर देखा तो नाव में एक पलँगपर बहुत से कपड़े बदन में लपेटे पड़ा है और न तो वह खेमा है न वह स्त्री देखकर बड़े आश्चर्य में होकर उस मनुष्य से पूछा कि तू कौन है और यह कौन स्थान है और यहां मुझको इस नावपर कौन लेआया तब उसने कहा मैं सौदागर हूं सिन्ध से माल बेचने के लिये लेजाता हूं और आप संदूक़ में बहे चलेजाते थे मल्लाहोंने संदूक़ पकड़लिया हमने उनसे लेकर खोला तो आपको उसमें बेहोश पाया निकालकर पलँगपर लेटाकर चैतन्य किया इतना गुण मैंने आपके साथ किया है अब आप बतलाइये कि कौन हैं और किसने आपके साथ यह सलूक किया है? लन्धौर ने अपना सब वृत्तान्त उससे कहा तब वह भी मुसल्मान अपने धर्म में पक्का था उसके पैरोंपर गिरपड़ा और कहा कि मैं आपको बहुत जल्द सरंद्वीप पहुँचादूंगा और आपको किसी प्रकार से दुःख न होनेपावेगा लन्धौर ने पूछा कि अब तुम कहां जाओगे और वहां से फिरकर कब आओगे सौदागर ने कहा मैं माण्डूदेश को जाऊंगा और वहां कुछ दिन रहूंगा इस प्रकार से कई दिनों के पीछे नौका माण्डू में जाकर पहुँची नाव को नदी में लङ्गर डाल

उतर कर सौदागर माण्डूनगर में जाकर ठहरा संयोग से एक दिन बाज़ार में खुसरो सैर के वास्ते गया तो उसी रास्ते से जहां वह कमान और अशरफ़ियों के तोड़े रक्खे थे और सिपाही पहरे पर थे जा निकला तो सिपाहियों से पूछा यह कमान किसका है और यहां क्यों रक्खा है? सिपाहियों ने कहा यह कमान बहराम का है जो कोई इस कमान को खींचेगा वह इन तोड़ों को पावेगा और संसार में प्रसिद्ध होगा लन्धौर बहराम का नाम सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और पहरेवालों से कहा कि बहराम जिसका नाम है वह मेरा नौकर है बहुत दिनों से उसका पता नहीं मिला था आज उसका पता मिला यह कहकर कमान को उठाकर दो तीन बार घुमाकर अशरफ़ियों के तोड़ों को लेकर उसी स्थानपर कंगालों को लुटादिया पहरे वालों ने जाकर सब हाल बहराम से कहा बहराम ने यह सुनकर कि वह कहता है कि बहराम हमारा गुलाम है क्रोधित होकर कई सिपाहियों को भेजा कि जाकर उसको हमारे पास पकड़लाओ जब वे लोग थोड़ी दूर गये तो देखा कि वह आपही आता था तब तो लौटकर बहराम से कहा कि वह खुदही आरहा है आपका इक़बाल उसको खींचे लाता है बहराम बैठके से निकलकर थोड़ीदूर आगे गया तो देखा कि लन्धौर चलाआता है दौड़कर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हुआ खुसरो ने उसको छाती से लगाया और अतिप्रसन्नता के साथ उस की पेशानी को चूमलिया और दोनों खुशी से बेहोश होगये मलिकशईब यह सुन कर कचहरी से निकलकर उनके पास आया तो देखा कि दोनों बेहोश थे तब गुलाब आदिक छिड़क उनको होश में किया तब बहराम से सब हाल पूछा बहराम पहले तो अपना हाल छिपाये था परन्तु उस समय सब अपना और खुसरो का सत्य बयान किया और उस छिपेहुए भेद को खोलदिया शईबशाह ने जो खुसरो का नाम सुना तो उसके पैरों को चूमकर अतिप्रतिष्ठा के साथ अपने बैठके में ले आकर खुसरो को तख़्तपर बैठाला और आप एक कुरसीपर अलग बैठा और नाचरङ्ग का सामान इकट्ठा करके सात दिनतक करवाते रहे सात दिनके पश्चात् खुसरो बहराम और बहुतसी सेना को भी साथ लेकर सामान के साथ सरन्द्वीप की तरफ़ रवाना हुए ॥

वृत्तान्त साहबकिरां (हमज़ा) का जिस समय में परदे काफ़ को गये थे ॥

कि जब वर्ष पूरा हुआ तब आसमानपरी के एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका स्वरूप सूर्य के समान था उसे देखकर बादशाह और सब सरदारलोग अतिप्रसन्न हुए परन्तु अमीर उस कन्या के होनेसे अतिलज्जित हुए तब बादशाह ने खिलअत सुलेमानी देकर अमीर से कहा कि यह ईश्वर की रचना है इसमें मलाल की कुछ बात नहीं पुत्र या कन्या दोमें से एक ईश्वर देता है यह आपका बिचार बुद्धि से विरुद्ध है तब अब्दुलरहमान ने कहा कि ऐ साहबकिरां! यह कन्या बड़ी प्रतापिनी होगी कि सब देव इसकी आज्ञा में रहेंगे और यह साहबकिरांकाफ़ कहलावेगी और बड़ा नाम होगा इन बातों के सुनने से अमीर का सब मलाल दूर होगया और चित्त

अतिप्रसन्न हुआ और बादशाह ने नातिन के होनेसे कई महीने तक नाच रङ्ग करवाया और कङ्गाल फ़क़ीर आदि को रुपया अशरफ़ी लुटाया और जब वह लड़की छः महीने की हुई तो एक दिन अमीर ने बादशाहसे कहा कि जो कुछ आपने अब तक कहा उसको मैंने किया अब कृपा करके मुझे परदे दुनिया को भेजकर अपने वादेको पूरा कीजिये तब बादशाह ने कहा ऐ साहबकिरां! आपकी आज्ञा से हम बाहर नहीं हैं और हर प्रकार से आपकी ख़ातिरदारी हमको उचित है और तुम्हारे रुख़सत करने में कुछ इन्कार नहीं है परन्तु क़िले सई में जो क़ाफ़ से उत्तर तरफ़ है और हमारा क़दीम क़िला है उसमें दो देव ख़रचाल और ख़रपाल नामे दशसहस्र देवों समेत रहते हैं और दोनों बहादुर हैं जो मेरी विनय मानिये और आपका चित्त चाहे तो उनको मारकर मेरा क़िला छोड़ाते जाइये नहीं जैसी आज्ञा आप देवें वैसा हमलोग करें हमलोग आपके सेवक हैं और किसी तरह से बाहर नहीं हैं अमीर ने कहा कि हम आपके सेवक और मित्र हैं आपका कहना हमको हरतरह से मानना उचित है लाइये सवारी मँगवाइये ईश्वर मालिक है वहांभी जाकर उन पापियोंको मारकर आवें कि वह भी अपने ठिकाने लगें बादशाह ने तख़्त मँगवाकर सब सामान इकट्ठा करके दश सहस्र देवोंसमेत तख़्तपर सवार करवाकर सब देवोंको अमीरकी सेवा करनेकी आज्ञा देकर भेजा अमीर वहां से चलकर एक मैदान उत्तम देखकर जहां से पांच कोस वह क़िला बाक़ी था उतरपड़े और कहा कि यह मैदान युद्ध करने के योग्य है जब यह ख़बर ख़रचाल और ख़रपाल को पहुँची तब वे दोनों बीसस हस्र देवों की सेना लेकर युद्ध करने को आये अमीर ने जब सेना देखी तो उसमें दो देव सेना से हटकर खड़े थे जिनके रूप देखने से आश्चर्य मालूम होता था कि एकका कान तो गधे की तरह था और दूसरे का रूप ही गधे का था पीछेसे मालूम हुआ कि यही दोनों सेना के सरदार हैं इतने में ख़रचाल ने शस्त्र धारण करके खेत में आकर ललकारा कि वह अफ़रेत का मारनेवाला कहां है मेरे सम्मुख आवे अपनी बहादुरी दिखावे कि मैं उसे एकहीबार में मारकर क़ाफ़ के देवों का बदला लूं तब अमीर ने उसके सम्मुख जाकर कहा कि तू अपनी बहादुरी दिखला तब तो वह हँसकर कहनेलगा कि तुम पर पहले मैं क्या बहादुरी दिखाऊं कि लोग देखकर हँसें और मुझे लज्जित करें अमीर ने कहा इसी छोटेरूप पर तो मैं अफ़रेत का और उसके माता पिताका मारनेवाला कहाता हूं और तू नहीं जानता कि मैं तेरे प्राण का गाहक हूं और इसी तलवार से तुम्हारा प्राण जायगा यही बात तेरी भाग्य में है तब तो उसने झुलझुलाकर एक तलवार अमीर के शिरपर मारी अमीर ने तलवार को रोककर एक अक़रबसुलेमानी की ऐसी धार मारी कि वह देव तलवार समेत चार भाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ख़रचाल अपने भाई को मरा देखकर तलवार लेकर अमीर के मारने को दौड़ा अमीर उसकी तलवार छीनकर कमरबन्द पकड़कर देमारकर उसकी छाती पर खड़ा होगया और चाहा कि इसको भी मारकर

यमपुरी को पहुँचावें परन्तु उसने प्रार्थना की कि जो आप मेरे प्राण छोड़ देवें तो मैं सदैव आपकी आज्ञा में रहूंगा अमीर ने उसका प्राण छोड़कर कहा कि ऐ खरचाल! तू मुझे परदे दुनिया में पहुँचा देगा या नहीं उसने कहा कि आपकी आज्ञा शिर आंखों से मंज़ूर है परन्तु आप थोड़ी समय के लिये क़िले समीन में चलकर आराम कीजिये फिर जहां आज्ञा दीजियेगा वहीं पहुँचादूंगा और जो आप कहियेगा वही करूंगा अमीर तव वहांसे चार देवों के द्वारा वादशाहके समीप विजय पाने का हाल भेजकर आप शेष देवोंसमेत क़िलेसमीन को गये तो वहां देखकर अतिप्रसन्न हुए और एक वाग़ की नहर में जाकर स्नान किया और उसीमें तलवार का रुधिर धोया और फिर जाकर तख़्तपर बैठकर कुछ मेवे खाये और उस वाग़ के मेवों को देखकर अतिप्रसन्न हुए आलस्य जो आई तख़्तपर पैर फैलाकर वेख़वर होकर सोरहे खरपाल ने देखा कि अमीर इस समय वेखवर सोरहा है अव मारना सलाह है यह विचारकर तलवार सुलेमानी अमीर के वग़ल से उठाकर मियान से निकालकर अमीर पर एक हाथ मारा परन्तु वह तलवार किनारे पर लगी जैसा एक मसला है (कि जिसको ईश्वर न मारे उसको कौन मारता और जिसे ईश्वर न जिलावे उसे कौन जिलासक्ता है) और अमीर ने उसी समय करवट ली तव खरपाल ने जाना कि अमीर उठते हैं तलवार मियान में करके अमीर के डर से भागा अमीर जब जागे तो देखा कि वहां न तो कोई देव है और अक़रव सुलेमानी भी नहीं दिखाई पड़ता और हाल वुरा मालूम होता है व्याकुल होकर देवों को बुलाकर पूछा कि खरपाल और खुरदचाल कहां हैं वतलाया कि जङ्गलमीनामें हैं परन्तु वहां कोई जा नहीं सक्ता बहुतप्रकारसे अमीर ने देवों से कहा कि मुझको वहां पहुँचा देव परन्तु किसीने न माना और उस क़िले का पता न दिया आख़िरकार सव देवों को छोड़कर अकेले पैदल उसकी तरफ़ चले सातवें दिन वहां जाकर पहुँचे तो देखा कि एक पहाड़ वड़ा ऊंचा है जिसपर कोई चढ़ने की शक्ति नहीं रखता उसके पत्थरों का रङ्ग पुखराज की तरह लाल है सूर्यकी रङ्गत उसके सामने लज्जित होती है और हरियाली ऐसी शोभा देती है कि जिस तरह से किसी ने वरावर से जमादी है और देखने में चित्तको अति आनन्द होता है और उस पहाड़ के नीचे कोसोंतक मैदान है और उस मैदान में एक चबूतरा विल्लौर का है और उसकी सफ़ाई जलसे भी अधिक है उसपर खरचाल वेख़वर वग़ल में अक़रव सुलेमानी रक्खेहुए सोरहा था गोया उसकी मौतकी निशानी रक्खीहुई है पहले तो जाकर अक़रवसुलेमानी को उठाकर हाथ में लिया तत्पश्चात् एकशब्द ऐसा किया कि पहाड़ आदिक हिलगये और खरचालभी जागकर मारे डरके कांपनेलगा और चाहा कि भागकर अपना प्राण अमीर के हाथ से बचावे त्योंहीं अमीर ने एक हाथ वढ़ाकर ऐसा मारा कि दोभाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा और प्राण वायु की तरह उड़गया तव अमीर उसको मारकर तलवार की तकिया रखकर उसी चवूतरे

पर बैठ रहा और उधर जो देवों ने यह वृत्तान्त बादशाह से जाकर कहा तो बादशाह ने अतिव्याकुल होकर अब्दुलरहमान से कहा कि ऐसे समय में अमीर की सहायता करनी चाहिये तब वहां से कई देव तख़्तपर सवार होकर अमीर को ढूँढ़ते २ कई दिनोंके बाद उस स्थानपर पहुँचे तो देखा कि ख़रचाल की लोथ दोभाग होकर पड़ी है जाकर अमीर से सलाम किया और बादशाह का सन्देशा देकर हाथ पैर को चूमकर तख़्तपर बैठालकर गुलिस्तान अरम को ले आये बादशाह ने अति प्रसन्नता के साथ अपने गले में लगाकर अमीर से कहा कि अब छः महीने के बाद आपको अच्छी तरह से दुनिया को भिजवादेंगे अमीर महलसराय में गये और बादशाह के कहनेपर सबर करके दिन गिनने लगे ॥

वृत्तान्त अमरू और हरमर ज़ाफ़रानज़ का ॥

लेखक और बड़े २ बुद्धिमान् लोग उन लोगों का वृत्तान्त यों लिखते हैं कि जब क़िले निस्तान में भी जिन्स चुकगई अमरू बड़े संदेह में होकर कि अब किसी युक्ति से कहीं से भोजन की तदबीर करनी चाहिये लुलरी नेस्तानी से पूछा कि कोई और भी क़िला है कि वहां चलकर इन लोगों के हाथ से बचकर अपने साथ वालों के बचाने की कोई युक्ति करूं उसने कहा कि यहां से पचासकोस पर एक रहतासगढ़ क़िला है और उसके दो स्वामी हैं एक का नाम तहमुरसशाह है और दूसरे का साबित है और वह क़िला ऐसा मज़बूत बना है कि उसमें कोई क़ाबू नहीं पा सक्ता है और वे दोनों सरदार भी बड़े बहादुर और लड़नेवाले हैं तब तो अमरू ने मुक़बिल से बुलाकर कहा कि तुम क़िले की रक्षा करना मैं क़िले रहतास के लेने की तदबीर में जाता हूं कोई युक्ति से उसको लेता हूं यह कहकर लिबास शाही उतारकर और बहुरूपियों की पोशाक पाहनकर क़िले से निकलकर उसी तरफ़ की राह ली डेढ़ पहर में क़िले रहतास के समीप पहुँचकर कई बार क़िले के चारों तरफ़ फिरा परन्तु भीतर जानेकी कोई युक्ति न पाई तब वहां से हटकर एक टिकुरी पर बैठकर क़िले में जाने की तदबीर विचारनेलगा कि किस युक्ति से क़िले में जानेका रास्ता पाऊं इतने में एक घसियारा कमर में जाली खुरपा बांधे एक टट्टू पर सवार क़िले से बाहर आया तब अमरू साधूका भेष धारण करके उसके पीछे २ चलागया और कुछ न बोला जब वह घसियारा दो कोस पर जाकर टट्टूपरसे उतरकर घास छीलने लगा तो अमरू ने पीछे से ईश्वर का नाम लिया तब उसने फिरकर सलाम किया और पूछा कि आप क्यों ऐसा दुःख उठाते हैं और कहांसे आते हैं अमरू ने कहा कि मुझको इसीमें आराम है तुझसे इसके पूछने से क्या प्रयोजन है हमको जहां ईश्वर आज्ञा देता है वहीं जाते हैं ईश्वर ने तेरे पास आनेकी आज्ञा दी है अमरू तुझपर ईश्वर की बड़ी कृपा हुई है अब सब तरह से तुझे सुख प्राप्त होगा यह कहकर दो खुरमें झोली से निकालकर उसको दिये और कहा कि ईश्वर का नाम लेकर इसको पाजा इससे तुझे बड़ा सुख मिलेगा उस सादे मनुष्य ने उसको

ख़ालिया दो घड़ी के बाद उस खुरमे ने बेहोश करादिया तब अमरू ने और दारू बेहोशी की उसको दी कि तीन चार दिनतक होश न आवे और घास के ढेर में छिपाकर आप उसी टट्टूपर सवार होकर जाली खुरपा कमर में बांधकर क़िलेकी तरफ़ चला और जब दरवाज़े के समीप पहुँचा तो थरथराकर कांपने लगा थके मांदे की तरह हांफनेलगा तब दरबान ने दरवाज़ा खोलदिया और उसको किसी तरह से न रोंका तब अमरू ने टट्टू की बाग ढीली करदी कि वह अपने घर की राह पहिंचानता होगा तब वह टट्टू घसियारों के महल्ले में जाकर एक झोपड़ी के पास खड़ाहुआ तब अमरू टट्टूपर से गिरपड़ा और कांपने लगा घसियारे की जोरू झोपड़ी से निकलकर पूछनेलगी कि सुनुवां के बाप! ख़ैर तो है? तब अमरू ने कहा कि जूड़ी आई है तब उसने अमरू को उठाकर बोरिये पर लेटाकर हाथ पैर दाबना शुरू किया अमरू ने दिनको तो सोकर काटा रात्रिको पसावन पीकर नवीनरूप धरा और आधीरात्रितक वहां रहकर और भेष धरकर पहरेवालों से छिपता २ क़ैसतह-मुरसशाह की दीवार के समीप पहुँचकर कमन्द लगाकर महल में दाख़िल हुआ इतने समय के दुःख और फ़रेब से अपना मनोरथ पूरा किया जाकर देखा कि तह-मुरसशाह दुशाला ओढ़े एक पलँग पर सोरहा है (सत्य है कि सोता और मुरदा बराबर होता है) और चिराग़ बराबर से जलरहे हैं अमरू ने केवल एक चिराग़ रहने दिया और सब बुझाकर उसके समीप जाकर दुशाले का आंचर जो उसके मुखपर से उठाया तब उसने अमरू का हाथ पकड़लिया अपना बदन न छूनेदिया अमरू जो अपने हाथों में सदैव भाले मचरब पहिने रहता था इसीलिये उसका दुःख सहता था हाथ खींचतेही भाला तहमुरसशाह के हाथ में रहगया अमरू हाथ छुड़ाकर दश क़दम पर जा खड़ाहुआ तब तहमुरसशाह ने कहा ऐ ख़्वाजे अमरू! तू मुझसे किसीप्रकार से संदेह न कर मेरे पास चलाआ कि अभी स्वप्न में हज़रत इबराहीम ने मुझको मुसल्मान करके तुम्हारे आने की ख़बर दी है और तुम्हीं अपने दिल में बिचारो कि मैं क्योंकर जानता और कौन तुम को इस रूप से पहिं-चान सक्ता है बे बतलाये तुम्हारा नाम जान सक्ता है तब अमरू उसके पास गया मिलकर उसने कहा जो आज्ञा हो वह मैं करूं कि आपकी कृपा मेरे ऊपर होवे तब अमरू ने सब अपना बृत्तान्त उससे कहा तब उसने कहा कि आप बेख़बर मेहर-निगार को इस क़िले में लेआइये और किसी तरह से संदेह न कीजिये यह क़िला आपही का है सब रात्रि इसी प्रकार की बातों में काटदी और जब प्रातःकाल हुआ तब तहमुरसशाह ने अपने सरदारों से कहा कि आज मुझको हज़रत इबराहीम ने मुसल्मान किया और यह क़िला मैंने अमरू को दिया जिस समय उसकी सेना आवे कोई मना न करे हमारी आज्ञा से दरवाज़ा खोलदेवे तब अमरू अतिप्रसन्नता के साथ बिदा होकर अपने क़िले में आया और सब हाल सरदारों से कहकर मलका आदिक को सवार कराकर सुरङ्ग की राह से निकलकर क़िले रहतास की तरफ़ चला

परन्तु तहमुरसशाह को मुसल्मान होनेकी खबर और अमरू के बुलाने का हाल साबितशाह ने जब सुना तो शमीम वज़ीर को बुलाकर सब वृत्तान्त पूछा तो उसने भी वही सब हाल बयान किया तब तो तहमुरसशाह को मुसल्मान होनेके कारण मार डाला और वज़ीर समेत दरवाज़ेपर सेना लेकर अमरू के आनेके आसरे में बैठा कि जब वह आवे तो मारकर मलका मेहरनिगार को छीनलेवें अमरू इस हालसे बेखबर सवारीपर मलका आदिक को सेना समेत क़िले के दरवाज़े तक चलाआया जब अति समीप पहुँचगया तो आप अमरू आगे दरवाज़ा खोलने के लिये जो गया तो क़िले के दरवाज़े पर से बरछी तीर तलवार बाण आदिक मारनेलगे तब अमरू ने कहा मैं अमरू हूं तहमुरसशाह ने मुझे बुलाया है और मेरे साथ सुलह किया है शमीम ने पुकारकर कहा कि ऐ दग़ाबाज़ ! यहाँ भी मेरे साथ फ़रेब करने आया है तहमुरसशाह तो तेरे फ़रेब में आकर मारागया खबरदार जो आगे क़दम बढ़ावेगा तो तू जानेगा जो मेरा कहना न मानेगा तो तू भी माराजायगा अमरू बड़े संदेह में हुआ कि पहला क़िला भी हाथ से गया और यह भी हाथ न आया लाचार होकर पलटा और विचारा कि जो हरमर जाफ़रांमर्ज़ अभी पीछा करे तो इतने दिनों की मेहनत वृथा जावे और शत्रु को प्रसन्नता प्राप्त हो लाचार पलटने के सिवाय और कुछ न बनपड़ा बीच में मेहरनिगार का खेमा खड़ा किया और सिपाहियों को सरदारों समेत उसके पहरेपर मुक़र्रर किया दूसरे दिन शमीम ने साबितशाह से कहा कि एक पत्र हरमर जाफ़रांमर्ज़ को लिखकर इस हाल को जनाइये कि वह भी आवे तो हम और वह दोनों मिलकर अमरू को मारकर मलकामेहरनिगार को छीन लेवें कि उसकी प्रशंसा होवे साबितशाह को उसकी बात पसन्द आई और एक पत्र हरमर के नाम लिखकर सय्यादनाम सरदार को दिया कि इसको लेजाकर हरमर से अतिशीघ्रही उत्तर लेआओ संयोग से वह सरदार तहमुरस का था तहमुरस ने लड़कपने से लेकर उसको पुत्र की भांति पाला था इस सबब से जिस समय से वह मारागया था लोहू के घूंट पीकर रहता था परन्तु साबितशाह के डरसे कुछ न कहता था वह पत्र लिये सीधा अमरू के पास चला आया उस पत्रको देकर सलाम किया अमरू ने पत्र को पढ़कर उसको गले से लगाया और अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर कहा कि डरो नहीं हम साबितशाह को मारकर तुमको इस क़िले का बादशाह बनावेंगे और सब देश तुम्हें देंगे अमरू ने हरमर जाफ़रांमर्ज़ की तरह से पत्र का जवाब लिखा कि आपने बड़ा कठिन कार्य सिद्ध किया इसके बदले में बादशाह नौशेरवां से हम आपको बहुत कुछ दिलावेंगे और आज हम क़तारह काबुली को भेजते हैं कि यह रात्रिको क़िले की रक्षा करें क्योंकि अमरू बड़ा होशियार और फ़रेबी है उससे बचाले और थोड़े समय में मैं भी आता हूं इसप्रकार से लिखकर शाहज़ादों की जाली मोहर करके उस पत्र को सरदार को देकर आप क़तारह काबुली का भेष धारण करके उसी के साथ क़िले में जाकर सलाम करके

साबितशाह के सामने बैठा और जब उस सरदार ने पत्र साबितशाह को दिया तो साबितशाह ने पूछा कि यह कौन है ? जो तुम्हारे साथ आया है और तू क्यों इसको लेआयाहै ? उसने कहा कि यह शाहज़ादों के सिपाहियों का सरदार है और शाहज़ादे काबुलका भानजा है और कतारह काबुली इसका नाम है और यह बड़ा बहादुर और लड़नेवाला है तब साबितशाह ने उसको अपने गले से लगाकर अपने समीप बैठाकर यथाउचित मेहमान्दारी की जब रात्रि हुई तो उसने साबितशाह से कहा कि शाहज़ादों ने मुझसे कहा है कि रात्रि को तुम आप क़िलेकी रक्षा करना सो अब मैं जाकर दरवाज़े पर बैठकर रात्रिभर रक्षा करूंगा और कल तो शाहज़ादे आप ही सेनासमेत आवेंगे यह कहकर सय्याद सरदार को अपने साथ लिया और जाकर दरवाज़े पर बैठा जब आधी रात्रि हुई तो सब पहरेवालों को मारकर अपनी सेना क़िले में लेआया और सबको मारना शुरूअ किया जो मुसल्मान हुआ उसका प्राण बचा शेष मारेगये शमीम और साबितशाह को मारकर उस क़िलेकी राजधानी सय्याद सरदार को दी और आप चारों तरफ़ से जिन्स मँगवाकर आराम के साथ क़िले के बुर्जों और दीवारों पर सिपाही रखकर साथ आराम के निःसंदेह होकर बैठा हरमर का हाल सुनिये कि जब सिपाहियों ने ख़बर दी कि क़िला खाली पड़ा है कोई सिपाही दरवाज़े पर भी नहीं देखाई देता नहीं मालूम आपही मरगये या क्या हुए अमरू सुरंग की राहसे क़िले रहतास की तरफ़ गया है तब शाहज़ादे क़िले में गये वहां किसीको न देखा तब वहां से पलटकर खेमे में आकर एक बिनयपत्र बादशाह के नाम लिखा कि हमको आठबर्ष से अधिक हुआ कि अमरू के पीछे ख़राब हैं अब या तो आप खुद आइये या किसी और को भेजिये कि अमरू को उसके साथियों समेत आकर मारें और मलका को लेजावें यह सब हाल लिखकर बादशाह के पास सासनी को लेकर भेजा और आप क़िले रहतास की तरफ़ चला कि चलकर अमरू से युद्ध करें वहां जाकर देखा तो ऐसा बनाथा कि पक्षीभी उड़कर नहीं जासक्ता और मनुष्य क्या है लाचार होकर चारों तरफ़ से क़िले को घेरकर उतरपड़े कि थोड़े दिन यहां रहकर अमरू का पता लेवें परन्तु अमरू के डरसे सेना के लोग दिनको बारी २ से सोते थे और रात्रि को सब जागते रहते थे और उस के छापा मारने से बहुत ख़बरदार रहते थे एक दिन हरमर बख़्तियारक सरदारों समेत शराब पीरहे थे क़तारह सरदार गश्त घूमता हुआ उसी तरफ़से आनिकला बख़्तियारक ने उससे कहा कि अमरू इसप्रकार से चालाकी करताहै तुमसे यह भी नहीं होसक्ता कि अमरू को पकड़करके बांधलाओ उसने कहा कि आज मैं अवश्य अमरू को बांधकर लाऊंगा जब रात्रि हुई तो क़िले के पास गया परन्तु कहीं जाने की राह न पाई आख़िरकार एक बुर्ज की तरफ़ गया तो वहां किसीका शब्द न सुना तो जाना कि पहरेवाले सोरहे हैं उसी तरफ़ कमन्द लगाकर ऊपर चढ़गया तो देखा कि सब पहरेवाले सोरहे हैं सबको मारकर नीचे उतर कर बरामदे में गया तो

अमरू का पलँग बिछाथा परन्तु उस समय अमरू मलकामेहरनिगार के साथ खाना खाने गया था आकर पलँग पर सोरहा और वह बहुरूपिया पलँग के पाये में लिपेटा पड़ा था जब अमरू अच्छी तरह से सोगया तो निकलकर अमरू के पास आकर दारू बेहोशी देकर अमरू को बेहोश किया और एक गठरी में बाँधकर उसी रास्ते से जिधर से आया था लेकर उतरा और हरमर के पास लेजाकर रख दिया और कहा कि देखो मैं आज चालाकी करके अमरूको बांध लेआया अब तो मुझे शाबाश दीजिये तब तो हरमर ज़ोपीन और बख़्तियारक को बड़ी खुशी प्राप्त हुई और मारे खुशी के कूदने लगे और उसको खिलअत देकर बड़ी प्रतिष्ठा और मान सम्मान से आदर किया और उसी सायत लुहार को बुलवाकर अमरू के पैरों में बेड़ियां और ज़ंजीर से बँधवाकर कारागार में डालदिया और प्रातःकाल तक कोई न सोया जब अमरू सबेरा होते होश में आया अपने को क़ैद में पाया देख कर कहने लगा राम राम कैसा बुरा स्वप्न देखता हूं हरमर ने सुनकर कहा ऐ पापी! यह स्वप्न नहीं है सत्य है तू जागता है यह तेरी मक्कारी का फल है हज़ारों मनुष्यों को तूने दुःख दिया है देख कैसा बदला पाता है अब तेरा प्राण कब बचता है अमरू ने कहा आप जानते नहीं कि मैं वली हूं मैं कब क़ैद में रहता हूं और कौन मुझे क़ैद करसक्ताहै तू अपने वास्ते कांटे बोताहै आराम से बैठा नहीं रहाजाता अब जब मैं छूटूंगा तो एक को भी जीता न छोड़ूंगा हरमर ने कहा अब भी तुझे बचने और छूटने का भरोसा है कौन तुझे मेरे हाथ से छोड़ावेगा? अमरू ने कहा मैं ईश्वर के भरोसे हूं वही आकर मुझे छोड़ावेगा मैं तुमलोगों से किसी तरह नहीं डरता जो तेरे जी में आवे वह तू कर कुछ मेरे साथ नेकी न कर हरमर ने अमरू की ऐसी बातें सुनकर क्रोधित होकर जल्लादों को बुलाकर आज्ञा दी कि इसको अभी लेजाकर मारो और इसीके शिर का बोझा उतार देओ॥

आना नारंज़ीपोश देवका और अमरू को क़ैदसे छुड़ाना॥

लिखनेवाला लिखता है कि जिस समय जल्लाद अमरू को मारने के लिये चबूतरे पर लेगया और तलवार मियान से निकालकर उसके समीप आया तब अमरू ने देखा कि अब कोई सूरत बचने की नहीं है तब मन में हज़रत ख़िजरका स्मरण किया और कहा कि इस समय जो मेरा प्राण बचाओ तो पांच कौड़ी की रेवड़ियां लेकर नदी के तीर जाकर चढ़ाऊंगा बख़्तियारक ने जो अमरू के ओंठ हिलते देखे तो हरमर से कहा कि आप जल्लाद को शीघ्रही आज्ञा दीजिये कि अतिशीघ्रही उस को मारे नहीं तो मन्त्र पढ़कर छूटकर भागजावेगा फिर हमलोगों को बड़ा दुःख देगा देखिये वह मन्त्र पढ़रहा है उसके मन्त्र में बड़ा गुण है फिर उसको किसीका दुःख न रहजायगा हरमर ने जल्लादों से दूसरी बार आज्ञा दी तब जल्लाद ने जाकर अमरू से पूछा कि जो कुछ खाना पीना हो खा पीले थोड़ी देर में तू माराजायगा मारनेवाला आता है अमरू ने कहा कि हम खाने के बदले दुःख और क्रोध खाचुके

अब कुछ खाने पीने की इच्छा नहीं है तुम अपना कार्य करो और कुछ बातें न करो जल्लाद तीसरी बार आज्ञा लेकर अमरू के मारने को आया अमरू तो शिर झुकाये बैठाथा उस समय कहा कि ऐ जल्लाद! तीक्ष्ण तलवार से मुझे मार कि एक ही बार में कटजावे कि मुझको दुःख न होवे तेरी तलवार की धार तो मुड़ी है तू क्या मुझे मारेगा जल्लाद अपनी तलवार देखनेलगा अमरू ने सांस पाकर हाथ पृथ्वी पर टेककर दोनों लात फैलाकर ऐसी दोलत्ती मारी कि लोटन कबूतर की तरह लोटगया और उसके दुःख से उठ न सका और चारों तरफ़ से शब्द होनेलगा कि मारा २ हरमरने जाना कि अमरू मारागया बख़्तियारक ने कहा नहीं साहब! अमरू ने जल्लाद को मारा है जल्लाद हारकर मारागया हरमर ने कहा कि बड़ा दुष्ट और चालाक है कि मरते २ एकको लेडाला देखो तो जल्लाद को कैसा बनाया है हरमर ने दूसरे जल्लाद को भेजा वह तलवार लेकर अमरू को मारने आया और तलवार मारने के लिये उठाई तब उस समय प्राणसे निराश होकर नेत्रों में आंशू निकल आये और मुख सफ़ेद होगया इतने में एक सिपाही हरमर के पास आया और सलाम करके कहा कि मैं ख़ासमज़ीस सुलतान पुत्र जाल शमास जादू बादशाह तुरकिस्तान का सरदार हूं नौशेरवां ने हमको ख़बर देने को भेजा है कि बादशाह हमारे आपकी सहायता के लिये अतिशीघ्रही आते हैं तब तो हरमर बहुत प्रसन्न हुए और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की यह सब बातें कहकर उसने अमरू की तरफ़ देखकर पूछा कि वह कौन है जो तलवार के नीचे शिर झुकाये हुए अपने प्राण को देकर बैठा है हरमर ने कहा यही अमरू मक्कार है जिसका तुमने नाम सुना होगा इसने हमलोगों को बड़ा दुःख दिया है कल क़तारह सरदार चालाकी करके इसको बांधकर मेरे पास बहुत दिनों के दुःख उठाने के पश्चात् लेआया परन्तु इस समय भी जल्लाद का प्राण एक दोलत्ती मारकर लिया है अब दूसरे जल्लाद को भेजा है कि उसको मारे तब उस सरदार ने कहा उसके मारने में भी बड़ी युक्ति है कि न तो कोई हथियार इसके पास है न और कोई वस्तु परन्तु प्राण के देने का बल है इससे जो बनपड़ेगा वही करेगा परन्तु मैंने ऐसे मनुष्यों को मारा है कि हज़ारों मनुष्यों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया है मुझे आज्ञा दीजावे तो एकहीबार में मारकर अपने बल और युक्ति का तमाशा आपको देखाऊं हरमर ने कहा बहुत अच्छा उस जल्लाद को अमरू के पास से बुलालिया और उसको मारने के लिये भेजा उस सरदार ने अमरू से कहा कि शिर झुका अमरू ने कहा कि शिर तो मैं झुकाये बैठा हूं तू समीप आकर मार उसने कहा क्या मैं भी उस जल्लाद की तरह पागल हूं कि तेरे पास जाकर प्राण दूं तू उसी तरह मुझेभी लातों से मारे तो मैं क्या करूंगा तब अमरू बड़े दुःख में हुआ कि यह अवश्य करके मारेगा यह विचार करके प्राण से अति निराश होकर रोनेलगा तब उस सरदार ने यूनानी भाषा में कहा कि मैं नक़ाबदार की सेना का सरदार हूं तुझे छुड़ाने के लिये आया हूं दुःख न कर मैं अभी

तुझको छोड़ाकर लेचलता हूं पहले तो पैरोंको फैला कि तेरी बेड़ियां काटकर इस दुःख से छुड़ाऊं फिर तुझे गरदन पर बैठालकर यहां से निकाल लेचलूं और देख कैसी युक्ति से लेचलता हूं यह सुनकर अमरू के प्राण में प्राण आया मानो फिर से उत्पन्न हुआ अमरूने ईश्वर का धन्यवाद करके पैर को फैलादिया उस सरदार ने एक तलवार ऐसी मारी कि दोनों पैरों की बेड़ियां एक दफ़ा कटगईं और फिर अमरू को गरदन पर लेकर भागा इस शीघ्रता से भागा कि उसका चिह्न भी न विदित हुआ सेना में बड़ा शोर हुआ चारों तरफ़ से सवार और पैदल तलवार खींचकर दौड़े परन्तु उस सरदार ने खड्ग लेकर जिसको एक हाथ मारा फिर उसने शिर न उठाया और अमरू को इस तरह शत्रु की सेना से लेभागा कि उसकी गर्द भी न मालूम हुई जिस समय जङ्गल में आया अमरू को कन्धे से उतारकर कहा कि अब ईश्वर मालिक है तुम अपने क़िलेमें जाओ और मैं अपने घर जाताहूं और प्रणाम करता हूं अमरू ने कहा थोड़ी देर ठहरो मैंभी तुम्हारे साथ चलता हूं वह बोला कि मैं ऐसा निर्बुद्धि नहीं जो तुम्हारे पास एक क्षण भी ठहरूं अगर थोड़ी देरमें तू नक़ाबदारका पता पूछे तो मैं क्या बतलाऊंगा तुमसे अपना पीछा क्योंकर छुड़ाऊंगा यह कहकर जङ्गल की तरफ़ चलदिया और अमरू को वहीं से विदा किया अमरू अपने क़िले में निस्संदेह पहुँचा देखे तो सब छोटे बड़े ईश्वर से प्रार्थना कररहे हैं कि हे ईश्वर! अमरू को कब दिखलावेगा इतने में जो सबकी दृष्टि अमरूपर पड़ी तो ईश्वर को धन्यवाद करके जो २ मानता मानी थी पूरी की मलकामेहरनिगार जो अमरू के पकड़ जाने से अत्यन्त दुःखी थी इसके आने से इस तरह प्रसन्न हुई जिसतरह मुर्दा सजीव हो मानो यहां तो देश का राज्य पागई अमरू को निकट बुलाकर रोनेलगी और उसके ऊपर जवाहिर नेवछावर करके ग़रीबों को बांटे और एक सप्ताह तक खुशीका नाच रङ्ग करवाया हरमर ने बख़्तियारक से पूछा कि वह कौन था? जो अमरू को लेगया और मुझको धोखा देगया बख़्तियारक ने कहा कि अमरू सत्य कहता था कि ईश्वर के भक्त मारे नहीं जासक्ते और किसीके बन्धन में भी नहीं आसक्ते उनकी सहायता ईश्वर आप करता है और प्रत्येक स्थानपर उनके रक्षक रहते हैं तब हरमर चुप होरहा क़िलेवालों का वृत्तान्त सुनिये जब उनके पास भोजनमात्र को भी न रहा तब आदीने सरदार के साथ होकर अमरू से कहा कि हमारे पास अब कुछ नहीं है तब अमरू ने कहा अब और कोई क़िला लेना चाहिये सय्याद ने कहा कि यहांसे सलासल हिसारनामे एक क़िला पांच मंज़िल पर अति उत्तम है और वहां के बादशाह का नाम सलासलशाह है वह बड़ा शूरवीर है अगर जी चाहे तो वहां जाकर रहिये अमरू ने कहा कि अच्छा मैं जाताहूं तुम इस क़िले में होशियार रहना मैं विचार करके उसके लेनेकी कुछ युक्ति निकालता हूं यह कहकर पोशाक बादशाही उतारकर और पुराना पहिनकर क़िले से बाहर आया और ऐसी शीघ्रता से चला कि एक रात्रि दिन में सलासलहिसार में जापहुँचा देखा तो

क़िला बहुत उत्तम है और असबाब क़िले में इकट्ठा है तब विचार करनेलगा कि किस युक्ति से इस क़िले को पावें इतनेमें एक जवान चौदह पन्द्रह वर्ष का घोड़ेपर सवार शाहाना लिबास पहिने हुए हाथपर बाज़ लिये निकला और सौ सवार और पैदल और सरदार आदि सब साथ अच्छी २ बातें करते चलेजाते थे अमरू ने बुद्धि से विचारा कि अवश्य यह यहां का शाहज़ादा है जब देखा कि सवारी दो कोस क़िले से बढ़गई अमरू ने साधू का भेष धारण किया और सुजनी की टोपी देकर चार पांच छड़ी हाथमें लेकर सवारी के पीछे लँगोट बांधकर चला और शाहज़ादेके सामने जाकर यों कहा कि आज ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि उनके भक्तों से मुलाक़ात हुई आज कुछ साधू को भी मिलजायगा शाहज़ादा साधूको देखकर अति प्रसन्न हुआ और घोड़े को रोंककर पूछनेलगा कि आप कहांसे आते हैं और कहां जाइयेगा? साधू ने कहा न पृथ्वी से न आकाशसे एक नवीन दुनिया से साधू का भी कहीं स्थान होताहै आज यहां कल वहां जो कुछ ठिकाना हो तो बाबा! आपको बताऊं शाहज़ादे ने कहा जो आपने अपने मुखारबिन्द से कहा वह सब सत्य है परन्तु संसार में आकर कोई अवश्य स्थान होता है रात्रि को बासके लिये दो हाथ पृथ्वी अवश्य चाहिये बनेहुए शाह साहब बोले कि साधू तो सदैव बेनाम और निशान के होते हैं इन बेचारों को स्थान कहां प्राप्त होता है परन्तु नाम के लिये बग़दाद में मेरी कुटी है तब शाहज़ादे ने पूछा आपका नाम क्या है? उसने कहा कि मुझे लोग शादानीकलन्दर कहते हैं परन्तु मैं सौदाई कलन्दर हूं तब तो शाहज़ादा साधू की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि शाहसाहब! आप चलकर कुछ दिन मेरे स्थानपर रहिये यह देश भी देखने के योग्य है साधू ने कहा बहुत अच्छा साधू को क्या जहां चित्त लगजावे वहीं रहजाता है तब पूछा कि बाबा! तू ने तो मेरा नाम निशान पूछलिया अपना भी बतलाइये उसने कहा कि मेरा नाम महमन है सलासलशाह का पुत्र हूं उसीकी कृपा से यह सब है तब तो साधू ने कहा कि बाबा! तू सैर और शिकार करआ मैं चल कर क़िलेके दरवाज़े पर बैठूंगा और तेरा आसरा करूंगा महमन तो उसी जगह से उस साधू को लेकर पलटा और क़िले में आकर अपने दीवानख़ाने में साधू का आसन लगवाया और बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर कहा कि आप बैठिये मैं एक कार्य को जाता हूं अभी थोड़े समय में आता हूं आपको हुक़्क़ा पानी की आवश्यकता हो तो मेरे नौकर आपके पास रहेंगे इनसे मांग लीजियेगा साधू ने कहा बहुत अच्छा आप जाइये परन्तु आने में अधिक काल न व्यतीत कीजियेगा और ऐसा कौनसा कार्य है कि साधू से भी नहीं बतलाने के योग्य है जो कुछ संदेह न हो तो बतलाइये कि मैं भी उसे जानूं महमन ने कहा कि मैं इससमय दोचार गिलास शराब के पीता हूं और आप जानते हैं कि अमल एक शत्रु है परन्तु आपके सम्मुख पीना अनुचित है इसलिये जाता हूं और अतिशीघ्रही पीकर आताहूं तब उस बनेहुए साधू ने कहा कि बाबा! यही

मँगवाइये मैं भी दोचार गिलास लेऊँगा और अपने चित्त को प्रसन्न करूंगा और साधूके लिये तो दूध है कभी २ उसको पीलेते हैं तब उसने शराब मँगवाकर दो एक गिलास उस साधू को दिये और शेष उसने पिये साधू जो पीकर मज़े में आया तो अपने दुतारे को झोली से निकालकर गाने और बजाने लगा और सबको लोभाने लगा और प्रसिद्ध है कि अमरू का गाना मुरदे को जिला देता था सबलोग अतिप्रसन्न हुए और हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे संयोग से मनूसूर सरदार दो सिपाहियों समेत उसी रास्ते से आनिकला शाहज़ादे को सलाम करके पूछा कि ऐ साधु! कहां से आते हो और कौन हो और किस देशसे आये हो? बहमन ने सब हाल बयान किया तब पूछा कि इनका नाम क्या है और यहां क्यों ठहरे हैं बहमन ने कहा कि शयदानी कलन्दर इनका नाम है साधू हैं जहां जी चाहता है वहां रहते हैं मनूसूर दौड़कर उससे लपटगया और अपने सिपाहियों से कहा कि मुशकें इसकी बांध लो और इसको अपने आधीन करके हमारे साथ ले चलो और उन सिपाहियों ने अपने स्वामी की आज्ञा मानकर उसको बांधलिया साधुजाली ने बहमन से कहा क्यों बाबा साधुको घरमें टिकाकर ऐसेही मेहमानी की जाती है वाह बड़ी कृपा आपने की इसीका नाम इन्साफ़ है तब शाहज़ादे ने क्रोध करके मनूसूर से कहा कि इस साधु ने तेरा क्या बिगाड़ा है जो इसको पकड़कर यह दुःख देरहा है मनूसूर ने कहा कि नहीं जानते यह वह साधू है कि जिसने सैकड़ों अमीरों को फ़क़ीर करदिया है आपने सुना होगा अमरू मक्कार यही है नौशेरवां बादशाह का नाक में दम है आख़िरकार बादशाह सलासल के पास ले जाकर कहा कि अमरू मक्कार हाज़िर है जो आज्ञा हो वह किया जावे सलासल ने कहा उसको मेरे पास लेआओ जब अमरू आया तो सलासल शाह ने कहा कि ऐ अमरू! मैं तेरे गाने की बड़ी प्रशंसा सुनताहूं बहुत दिनों से तेरा गाना सुनने की इच्छा रखता था आज तो सुना अमरू ने कहा कि मेरे हाथ तो बँधे हैं क्योंकर दुतारा बजाऊंगा बादशाह ने हाथ खुलवा दिये तब अमरू ने दुतारा बजाकर ऐसा गाया कि सब मोहित हो गये तब बादशाह ने मनूसूर को आज्ञा दी कि इसको अपने पास रक्खो कुछ हाथ बांधने की ज़रूरत नहीं और इसको दुःख न देना कल जब हम इसको बुलावें तो लेआना मनूसूर ने अमरू को लेजाकर एक कोठरी में बन्द किया तब अमरू अपने चित्त में विचारने लगा कि हमारी तो यह गति है क़िले में सेना की नहीं मालूम क्या गति होगी इसी विचार में था कि आधी रात्रि को मनूसूर ने दरवाज़ा खोलकर अमरू को निकाला और उसके पैरोंपर गिरपड़ा कि क्षमा कीजियेगा मैं आपको पहचानता न था परन्तु जिस दिन से इबराहीम ने मुझे मुसलमान किया है और आज्ञा दी है कि अमरू यहां आवेगा और तू उसके देखने से बड़ा सुख पावेगा इस लिये तू उसकी सहायता करना तभी से आपकी तलाश में रहता था और जो यह दुःख आपको दिया है केवल इसीलिये कि अच्छीतरह से जानलूं कि अमरू

गा और कोई तत्पश्चात् उसकी आज्ञानुसार करूं अब आपका सेवक हूं जैसी आज्ञा दीजिये वह करूं तब अमरू ने उसको छाती से लगाकर कहा कि किसी युक्ति से यह क़िला लेना चाहिये कि सेना मुसल्मानी यहां आकर थोड़े दिन आराम से रहे तब मनूसूर ने कहा कि उठिये अभी चलकर बादशाह को पकड़कर क़िले को अपने आधीन कर लीजिये अमरू मक्कारी लिबास पहिनकर मनूसूर के साथ होकर सलासलशाह के सोने के स्थान पर गया और उसको बेहोश करके मनूसूर को सौंपा और आज्ञा दी कि ख़बरदार इसको अपने पास रख भागने न पावे यह सोनेका पक्षी है और आप उसका रूप धारणकरके छपरखटपर सोरहा मानों ख़ुद बादशाह बनगया जब प्रातःकाल हुआ तब पहले महसन से कहा ऐ पुत्र! आज रात्रिको हज़रत इब्राहीम ने मुझको मुसल्मान किया है तू भी मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा परन्तु उसने न माना तब अमरू ने उसको शूली दिया तत्पश्चात् सलासलशाह को एकान्त में बुलाकर कहा कि तू मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा तब वह बड़े आश्चर्य में हुआ कि मेरी सूरत का मनुष्य गद्दी पर बैठा है और मुझको बेधर्म करता है शायद मेरी राजधानी लेने की इच्छा रखता है अमरू से कहनेलगा कि तू कौन है? अपना वृत्तान्त बतला और मेरी गद्दी पर क्यों बैठाहै किसने तुझे यहां आनेदिया है अमरू ने कहा और तो मैं कुछ नहीं जानताहूं परन्तु अब तू मुसल्मान होकर अपना प्राण बचा तब तो वह बुरी बुरी बातें कहनेलगा तब अमरू ने उसको भी उसी समय शूली दी और मनूसूर को अपना नायब बनाकर गद्दीपर बैठाला और छोटे बड़ों से नज़रें दिलवाकर आज्ञा दी कि जो कोई मनूसूरशाह की आज्ञा में न रहेगा वह मारा जायगा तब सब मनूसूर के बश होगये और अमरू ने सब राजधानी मनूसूर को देकर आज्ञा दी कि तुम चारों तरफ़ से गल्ला मोल लेकर क़िले में इकट्ठा करो मैं जाकर मलका मेहरनिगार को सेना समेत लेकर आता हूं अमरू तो अपने क़िले की तरफ़ गया मनूसूर ने अमरू की आज्ञानुसार गल्ला मोल लेकर क़िले में रक्खा अमरू ने क़िले में आकर सब सरदारों से क़िले लेने की ख़ुशख़बरी सुनकर मलका आदिक को सवारियों में सवार कराकर आधीरात्रि गये सब सेना समेत क़िलेसे निकलकर क़िले सलासल हिसार की राह ली पांच दिन की राह दो दिन रात्रि में जाकर पहुँचे और क़िले में दाख़िल होकर क़िले को बन्द करके आराम से बैठे तीसरे दिन हरमर के सिपाहियों ने हाल दिया कि अमरू मलका को सेना समेत क़िले सलासल हिसार में दाख़िल हुआ और इस क़िले को छोड़ दिया हरमर ने इस हाल को सुनकर बड़ा दुःख किया और मुन्शी को बुलाकर अपना सब हाल और अमरू का क़िले सलासल हिसार में जाने का लिखवाकर एक सिपाही के हाथ बादशाह नौशेरवां के पास भेजा और अतिशीघ्रही जाने की आज्ञा दी॥

अमीर का आना परदेक़ाफ़ से दुनिया में॥

पहले इस क़दर बयान होचुका है कि अमीर ने ख़रपाल और ख़रचाल के मारने

के पीछे बादशाह की विनय से लाचारी दरजे छः महीने और रहना क़बूल किया था एक दिन रात्रि को आसमानपरी के साथ महल में पलँग पर सोरहे थे स्वप्न में देखा कि मलका मेहरनिगार सूखकर कांटा होगई है और सब स्वरूप जाता रहा है और उसके आंशू से नदी बहरही है रोरोकर अमीर से कहती है कि क्यों साहब! मैंने कौनसा अपराध किया था जो आप मुझे दुनिया में छोड़कर परदेक़ाफ़ पर जाकर परियों के साथ मज़ा उठाते हो अफ़सोस कहां पृथ्वी कहां आसमान जो पर होते तो मैंभी उड़जाती और इस दुःख से आराम पाती अमीर उचककर जाग उठे और कहनेलगे देखो कहां परदेक़ाफ़ और कहां दुनिया और मैं मेहरनिगार यह कहकर ज़ोर से चिल्ला चिल्लाकर रोनेलगे और प्राण को देनेलगे आसमानपरी भी अमीर का रोना सुनकर चौंककर जाग उठी और अमीर से पूछने लगी कि क्या हुआ है? जो इस तरह से रोतेहो और दुःख उठातेहो अमीर ने कहा मैं अपना हाल क्या कहूं ऐसा दिल चाहता है कि अपना गला काटकर प्राण को त्याग करदूं तब उसने कहा कुछ तो बतलाइये क्या दुःख आपको है? अमीर ने कहा ऐ आसमानपरी! ईश्वर के लिये अतिशीघ्र मुझे परदेदुनिया को भेजदे जिस सूरत से हो मुझे वहां पहुँचादे इस समय मैंने मेहरनिगार को अतिव्याकुल पाया है और मेरी जुदाई से उसे बड़ा दुःख है आसमानपरी ने पूछा कि मेहरनिगार कौन है उसका हाल तो मुझे बताओ अमीर ने कहा कि नौशेरवां बादशाह की बेटी और मेरी प्राणप्यारी है जो स्वरूप और नम्रता में संसार में एक है और मेरे ऊपर मोहित है तब तो आसमानपरी ने कहा यह बात है किसी और से भी आप फँसे हैं तब क्यों न जाना जाना पुकारिये और उसके लिये क्यों न प्राण दीजियेगा सुनो तो अमीर सत्य कहना क्या मेहरनिगार मुझसे भी अधिक स्वरूपवान् और सुन्दर है तुम मेरे होते उसकी इच्छा करतेहो और हरप्रकार से उसपर मोहित हो अमीर के मुख से निकलगया कि उसकी तो सहेलियां तुमसे अधिक स्वरूपवान् हैं और महासुन्दर हैं तब तो आसमानपरी क्रोधित होकर कहनेलगी क्या तू मुझे मेहरनिगार की सहेली से भी निकृष्ट जानता है भला तू यहां से जायगा तो जानूंगी अब तू किसी तरह से मुझसे छूटकर जाने पाता है तब अमीर ने कहा जो तू मुझे रोकेगी तो तुझको मारकर किसी न किसी तरह से मैं वहां जाऊंगा आसमानपरी ने कहा कि यह घमण्ड आप न कीजिये कि मैं इब्राहीम पैग़म्बर की औलाद हूं मैं भी हज़रत सुलेमान की औलाद में से हूं तुम से किसी प्रकार से कम नहीं हूं जब तुम मुझे मारनेकी इच्छा करोगे तो मैं भी तुमको मारूंगी अमीर को इस बात के सुनने से बड़ा क्रोध हुआ तलवार खींचकर आसमानपरी पर दौड़े वह भी तमंचा खींचकर अमीर के ऊपर आई और मारने को हाथ उठाया सहेलियों ने बीचबराव करके दोनों को हटा दिया यह हाल बादशाहको पहुँचा बादशाह व्याकुल होकर दौड़कर आये और अपनी बेटी पर क्रोधितहुए कि तू उसकी बराबरी करती है ईश्वर से भी

या और कोई तत्पश्चात् उसकी आज्ञानुसार करूं अब आपका सेवक हूं जैसी आज्ञा दीजिये वह करूं तब अमरू ने उसको छाती से लगाकर कहा कि किसी युक्ति से यह क़िला लेना चाहिये कि सेना मुसल्मानी यहां आकर थोड़े दिन आराम से रहे तब मनूसूर ने कहा कि उठिये अभी चलकर बादशाह को पकड़कर क़िले को अपने आधीन कर लीजिये अमरू मक्कारी लिबास पहिनकर मनूसूर के साथ होकर सलासलशाह के सोने के स्थान पर गया और उसको बेहोश करके मनूसूर को सौंपा और आज्ञा दी कि ख़बरदार इसको अपने पास रख भागने न पावे यह सोनेका पक्षी है और आप उसका रूप धारणकरके छपरखटपर सोरहा मानों खुद बादशाह बनगया जब प्रातःकाल हुआ तब पहले महसन से कहा ऐ पुत्र ! आज रात्रिको हज़रत इब्राहीम ने मुझको मुसल्मान किया है तू भी मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा परन्तु उसने न माना तब अमरू ने उसको शूली दिया तत्पश्चात् सलासलशाह को एकान्त में बुलाकर कहा कि तू मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा तब वह बड़े आश्चर्य में हुआ कि मेरी सूरत का मनुष्य गद्दी पर बैठा है और मुझको बेधर्म करता है शायद मेरी राजधानी लेने की इच्छा रखता है अमरू से कहनेलगा कि तू कौन है ? अपना वृत्तान्त बतला और मेरी गद्दी पर क्यों बैठाहै किसने तुझे यहां आनेदिया है अमरू ने कहा और तो मैं कुछ नहीं जानताहूं परन्तु अब तू मुसल्मान होकर अपना प्राण बचा तब तो वह बुरी बुरी बातें कहनेलगा तब अमरू ने उसको भी उसी समय शूली दी और मनूसूर को अपना नायब बनाकर गद्दीपर बैठाला और छोटे बड़ों से नज़रें दिलवाकर आज्ञा दी कि जो कोई मनूसूरशाह की आज्ञा में न रहेगा वह मारा जायगा तब सब मनूसूर के बश होगये और अमरू ने सब राजधानी मनूसूर को देकर आज्ञा दी कि तुम चारों तरफ़ से गल्ला मोल लेकर क़िले में इकट्ठा करो मैं जाकर मलका मेहरनिगार को सेना समेत लेकर आता हूं अमरू तो अपने क़िले की तरफ़ गया मनूसूर ने अमरू की आज्ञानुसार गल्ला मोल लेकर क़िले में रक्खा अमरू ने क़िले में आकर सब सरदारों से क़िले लेने की खुशख़बरी सुनकर मलका आदिक को सवारियों में सवार कराकर आधीरात्रि गये सब सेना समेत क़िलेसे निकलकर क़िले सलासल हिसार की राह ली पांच दिन की राह दो दिन रात्रि में जाकर पहुँचे और क़िले में दाख़िल होकर क़िले को बन्द करके आराम से बैठे तीसरे दिन हरमर के सिपाहियों ने हाल दिया कि अमरू मलका को सेना समेत क़िले सलासल हिसार में दाख़िल हुआ और इस क़िले को छोड़ दिया हरमर ने इस हाल को सुनकर बड़ा दुःख किया और मुन्शी को बुलाकर अपना सब हाल और अमरू का क़िले सलासल हिसार में जाने का लिखवाकर एक सिपाही के हाथ बादशाह नौशेरवां के पास भेजा और अतिशीघ्रही जाने की आज्ञा दी ॥

अमीर का आना परदेक़ाफ़ से दुनिया में ॥

पहले इस क़दर बयान होचुका है कि अमीर ने ख़रपाल और ख़रचाल के मारने

के पीछे बादशाह की बिनय से लाचारी दरजे छः महीने और रहना क़बूल किया था एक दिन रात्रि को आसमानपरी के साथ महल में पलँग पर सोरहे थे स्वप्न में देखा कि मलका मेहरनिगार सूखकर कांटा होगई है और सब स्वरूप जाता रहा है और उसके आंशू से नदी बहरही है रोरोकर अमीर से कहती है कि क्यों साहब ! मैंने कौनसा अपराध किया था जो आप मुझे दुनिया में छोड़कर परदेक़ाफ़ पर जाकर परियों के साथ मज़ा उठाते हो अफ़्सोस कहां पृथ्वी कहां आसमान जो पर होते तो मैंभी उड़जाती और इस दुःख से आराम पाती अमीर उचककर जाग उठे और कहनेलगे देखो कहां परदेक़ाफ़ और कहां दुनिया और मैं मेहरनिगार यह कहकर ज़ोर से चिल्ला चिल्लाकर रोनेलगे और प्राण को देनेलगे आसमानपरी भी अमीर का रोना सुनकर चौंककर जाग उठी और अमीर से पूछने लगी कि क्या हुआ है ? जो इस तरह से रोतेहो और दुःख उठातेहो अमीर ने कहा मैं अपना हाल क्या कहूं ऐसा दिल चाहता है कि अपना गला काटकर प्राण को त्याग करदूं तब उसने कहा कुछ तो बतलाइये क्या दुःख आपको है ? अमीर ने कहा ऐ आसमानपरी ! ईश्वर के लिये अतिशीघ्र मुझे परदेदुनिया को भेजदे जिस सूरत से हो मुझे वहां पहुँचादे इस समय मैंने मेहरनिगार को अतिव्याकुल पाया है और मेरी जुदाई से उसे बड़ा दुःख है आसमानपरी ने पूछा कि मेहरनिगार कौन है उसका हाल तो मुझे बताओ अमीर ने कहा कि नौशेरवां बादशाह की बेटी और मेरी प्राणप्यारी है जो स्वरूप और नम्रता में संसार में एक है और मेरे ऊपर मोहित है तब तो आसमानपरी ने कहा यह बात है किसी और से भी आप फँसे हैं तब क्यों न जाना जाना पुकारिये और उसके लिये क्यों न प्राण दीजियेगा सुनो तो अमीर सत्य कहना क्या मेहरनिगार मुझसे भी अधिक स्वरूपवान् और सुन्दर है तुम मेरे होते उसकी इच्छा करतेहो और हरप्रकार से उसपर मोहित हो अमीर के मुख से निकलगया कि उसकी तो सहेलियां तुमसे अधिक स्वरूपवान् हैं और महासुन्दर हैं तब तो आसमानपरी क्रोधित होकर कहनेलगी क्या तू मुझे मेहरनिगार की सहेली से भी निकृष्ट जानता है भला तू यहां से जायगा तो जानूंगी अब तू किसी तरह से मुझसे छूटकर जाने पाता है तब अमीर ने कहा जो तू मुझे रोकेगी तो तुझको मारकर किसी न किसी तरह से मैं वहां जाऊंगा आसमानपरी ने कहा कि यह घमण्ड आप न कीजिये कि मैं इब्राहीम पैग़म्बर की औलाद हूं मैं भी हज़रत सुलेमान की औलाद में से हूं तुम से किसी प्रकार से कम नहीं हूं जब तुम मुझे मारनेकी इच्छा करोगे तो मैं भी तुमको मारूंगी अमीर को इस बात के सुनने से बड़ा क्रोध हुआ तलवार खींचकर आसमानपरी पर दौड़े वह भी तमंचा खींचकर अमीर के ऊपर आई और मारने को हाथ उठाया सहेलियों ने बीचबचाव करके दोनों को हटा दिया यह हाल बादशाहको पहुँचा बादशाह व्याकुल होकर दौड़कर आये और अपनी बेटी पर क्रोधितहुए कि तू उसकी बराबरी करती है ईश्वर से भी

नहीं डरती है और न मेराही डर है सामने से दूर हो बेटी को डाटकर अमीर को अपने महल में लेगये और कहा कि आपको सवेरे दुनिया को भेजदूंगा जब प्रातः-काल हुआ बादशाह ने सब सामान मार्ग का देकर अमीर को तख़्तपर बैठालकर चार देव अतिशीघ्र उड़नेवालों को बुलाकर आज्ञा दी कि अतिशीघ्र अमीर को परदे दुनिया में लेजाकर पहुँचाओ यह हाल आसमानपरी को पहुँचा कि बादशाह ने अमीर को परदे दुनिया में जाने की आज्ञा दी है और सब सामान समेत यह अभी आता है तब वह बेटी को गोद में लेकरआई देखा कि अमीर तख़्तपर सवार है रो रोकर कहनेलगी कि ऐ अमीर! आपको मेरा मोह नहीं है तो इस बेटीका भी मोह नहीं लगता ईश्वर के लिये मेरा अपराध क्षमाकरो अब ऐसा कभी न होगा अमीरने कहा मैं तुमसे भी नाराज़ नहीं और बेटीसे भी मोहब्बत है परन्तु मुझे दुनिया में जाना बहुत अवश्य है कि मैं केवल अठारह दिनका वादा करके आयाथा और यहां इतने वर्ष व्यतीत होगये और इसी कारण मैं किसीको साथ भी नहीं लेआया सब लोग बड़े सन्देह में होंगे कि अमीर मरगये या जीते हैं और फिर जब तुम बुलवा-ओगी तब आवेंगे और तुम तो आपही मेरे पास आसक्ती हो जब दिलचाहे तभी मेरे पास चलीआना और अपने साथ बेटीको भी लेतीआना यह कहकर सबको सलाम करके रवाना हुआ आसमानपरी मकान पर आकर रोने पीटने लगी संयोग से उसी समय सलासल परीज़ाद उसके पास आया और आसमानपरी को व्याकुल देखकर पूछने लगा कि क्यों तूने ऐसी सूरत बनाई है उसने रोकर कहा कि आज बादशाह ने हमज़ा को परदे दुनिया को भेजदिया है जो तुम जाकर देवोंसे धमका-कर कहदेओ कि अमीर को लेजाके वियाबानहैरत में छोड़देवें और दुनिया को न लेजावें तो मैं बहुत खुश हूंगी और जो मेरी आज्ञा न मानोगे तो खाना पीना छोड़ूंगी और जो हमज़ा तुम्हारे आनेका कारण पूछे तो कहना कि आप से बिदा होने आयाहूं आपकी कृपा ने खींच लिया है सलासल ने वैसाही किया देवों को स-मझा दिया और देवों ने आपस में सलाह की कि जो आसमानपरी की आज्ञा न मानोगे तो परदेक़ाफ़ में रहना कठिन होगा और इसकी आज्ञा न मानने से लोग लज्जित करेंगे रात्रि होते वियावानहैरत के पास तख़्त को उतारकर सबने आराम किया अमीर ने पूछा यहां क्यों तख़्त उतारा है देवोंने कहा कि भूखे प्यासे हैं कुछ खापीलें तो चलें अमीर ने कहा अच्छा तुम कुछ खापीलो और हमभी निमाज़ पढ़ लेवें कि ईश्वर के कामों से छुट्टी पावें अमीर हाथ मुँह धोकर निमाज़ पढ़कर तख़्तपर बैठकर देवों का आसरा देखने लगे कि आवें और तख़्त को उठाकर ले चलें परन्तु देवों का पता न मिला रात्रिभर बैठे देखा किये जब प्रातःकाल हुआ निमाज़ पढ़कर फिर बैठकर देवों का आसरा देखनेलगा जब पहर दिन आया तब अमीर ने विचारकिया निश्चय है कि आसमानपरी के डरसे मुझे यहां छोड़कर भाग गये अब नसीव में पैदलही चलना बदा है किसीप्रकार से दुनिया में पहुँचना

चाहिये जैसे एक मसला है कि (जैसी पड़े व्यवस्था वैसी सहै शरीर) यह कहकर वहाँसे चले और उस वन से बाहर आये तो दोपहर के समय ऐसे मैदान में आये कि जहाँ न तो वृक्ष थे न जल मिल सक्ता था और मनुष्य तो क्या पक्षी आदि का उस समय जाना दुर्लभ था बालू से हर स्थानपर लौरें निकल रहीथीं और लूक इस प्रकार से चल रही थी कि उसका हाल लिखूं तो ज़बान और क़लम में फफोले पड़जावें और किताब के सफ़े जलजावें और सूर्य की तपन से वह मैदान जल रहाथा कि सब हथियार अमीर के ऐसे गरम होगये थे कि छूने से हाथमें छाले पड़ते थे और नाम लेने से जीभ जलती थी अमीर ने सब हथियारों को फेंकदिया और उस भार से अपने को बचाया और प्यास इस प्रकार से लगी कि प्राण ओठों पर था और निकट था कि प्राण निकल जावें और वैकुण्ठ में जाकर वासकरें कि बालू का गढ़ा खोदकर उसीपर पेट रखकर लेटगया तो कुछ तरी पाकर चित्त ठिकाने हुआ जब वह भी गरम हुआ इच्छाकी कि और खोदकर बैठरहें कि फसफसाकर बैठगया और अमीर के हाथ पाँव उसी में दबगये निकल न सका संयोग से एक दिन बादशाह ने अब्दुलरहमान से पूछा कि विचारो तो अमीर परदेदुनियामें पहुँचकर सब लोगों से मिले होंगे और देखकर प्रसन्न हुए होंगे अब्दुलरहमानने बादशाहके सामने तख़्त रखकर विचारा तो मालूम किया कि अमीर बालू में दबे पड़े हैं इसके सुनने से बड़े दुःख में हुआ और अफ़सोस करके कहनेलगा कि हमज़ा की जवानी वृथा गई बादशाह से कहा कि अब कोई आपका इतवार न करेगा और काहे को आज्ञा मानेगा कि हमज़ा ऐसे मनुष्य को जिसने आप के शत्रुओं को मारकर फिर से बादशाह बनाया आपने बेसबब ऐसी बुराई की कि इस फल को प्राप्तहुआ बादशाह ने जिन देवों पर तख़्त रखवाकर भेजा था उनको बुलवाया और उनसे क्रोध करके पूछा कि तुम हमज़ा को कहाँ छोड़ आये उन्हों ने कहा कि आसमानपरीकी आज्ञा से बियाबान हैरतमें छोड़आये हैं और जो दुनियामें पहुँचाते तो शाहज़ादी की आज्ञा से सब जन बच्चों से मारेजाते या निकाल दियेजाते इस बात के सुननेसे बादशाह बड़े क्रोधमें हुए और आसमानपरी की तरफ़ देखकर कहा कि बड़ी दुष्टिन है उसने कहा कि मुझे हमज़ा का दुनिया में भेजना मंजूर नहीं है उसकी जुदाई में मुझसे दमभर भी नहीं रहाजाता है और मैं अभी आप जाकर हमज़ाको ढूंढ़लाती हूं बादशाह ने कहा तू अपना शिर ढूंढ़लावेगी तू कहाँ पावेगी यह कहकर बादशाह खुद जाने को तैयार हुए और सवार होकर बियाबान हैरत में जा पहुँचे देव जिन और परियों को आज्ञा दी कि उसमें ढूंढ़ो जिस स्थानपर वह फँसा है उसको वहाँसे छुड़ाना चाहिये जो कोई ढूंढ़लावेगा उसको जवाहिर के पर दूंगा और उसका ओहदा बढ़ाऊंगा सब ढूंढ़ते २ हमज़ा के हथियार इधर उधर पड़ेपाये वह लेकर बादशाह को दिये बादशाह ने देखकर बड़ा शोच किया और फिर उनलोगों को ढूंढ़ने के लिये भेजा जिस समय सब लोग ढूंढ़कर हारगये और कहीं पता नहीं लगा तो

आसमानपरी रोनेलगी और मोतीसे आंशू बहानेलगी संयोगसे एक परीज़ाद उस गढ़े के पास जानिकला जिसके नीचे अमीर दबेहुए पड़े थे और ईश्वर की कृपा से वायु से उस समय वहांकी बालू उड़कर और तरफ़ होगई थी मानो अमीर के निकलने की राह बनाईथी परीज़ादने अमीर को चमक की तरह देखलिया उस ढेरके तले दबे हैं तब उसने बालू को हटाकर देखा तो अमीर बेहोश आंखों को बन्द किये पड़े हैं और उठने की शक्ति नहीं है कि उठें तब उसने पुकारकर कहा कि ऐ बादशाह क़ाफ़ ! यह मुसाफ़िर यहां बालूमें दबापड़ाहै उसका शब्द जो शहपालने सुना तुरन्त ही नङ्गे पांव दौड़कर उस स्थानपर आया और अमीर को गढ़ेसे निकालकर हाथों हाथ ले जाकर अपने तख़्तपर लेटाया और सुगन्धित बस्तु अमीर के चारोंतरफ़ रखवाया और हरप्रकार की सुगन्ध सुंघाई थोड़ी देर के बाद होश में आया तो अमीर ने बड़ा आश्चर्य किया देखा कि तख़्तपर लेटाहूं और बादशाह मेरे सामने बैठा है और बहुत उदास है ज़ुरंत करके उठा और बादशाह से कहा कि ऐ बादशाह ! मैंने आपके साथ कौन बुरा काम कियाथा जो आपने मुझे यह दण्ड दिया है शहपाल ने कहा ऐ साहबकिरां ! मुझको आपके प्राण और हज़रत सुलेमानकी सौगन्द है मैंने इसमें कुछ भी सहारा दिया हो आपके दुःख देने से क्या मिलेगा आपने तो बड़ी नेकियां मेरे साथ की हैं मैं आपका सेवक हूं यह सब आसमानपरी ने किया है यह उसीका पागलपन है कि आपको यह दुःख पहुँचा आसमानपरी दौड़कर अमीर के पैरोंपर गिरी और कईबार फिरकर परिक्रमाकिया और हाथ जोड़कर कहा कि सत्य है मुझसे बड़ा अपराध हुआ अबकी और मेरा अपराध क्षमा करो मुझसे अपना दिल साफ़ करो और सहरिस्तान ज़र्री में चलकर कुछदिन आराम करो क्योंकि आपको बड़ा दुःख पड़ा छःमहीने के पीछे आपको अवश्य परदे दुनिया को भेजदूंगी इस कहने को पूरा करूंगी अमीर ने कहा तेरे कहने का कुछ बिश्वास नहीं है तू अपनी बात कभी नहीं रक्खेगी आसमानपरीने हज़रतसुलेमान अलेहुस्सलामकी सौगन्द खाई और छः महीनेके वास्ते सहरिस्तानज़र्री में लेआई शहपालकी सेना वहीं पड़ीरही अमीर का शरीर हृष्टपुष्ट हुआ और जब छः महीने व्यतीत होगये और जाने की रुख़्सत न पाई तो फिर एकदिन रात्रि को वैसाही स्वप्न में मेहरनिगार को देखा कि ब्याकुल है और रोरोकर कहती है कि ऐ साहबकिरां ! अठारह दिन का आप वादा करके गये थे अब अठारह वर्ष व्यतीत होगये अब इससे अधिक मुझसे नहीं रहाजाता आप अति शीघ्रही आइये नहीं तो मुझ को जीता न पाइयेगा पीछेको पछिताइयेगा अमीर यह स्वप्न देखकर चौंके तो देखा न तो मेहरनिगार है न वह मकान है परदेक़ाफ़ में बैठाहूं और दूसरे के बशमें हूं रोकर ठंढीसांस भरनेलगा आसमानपरी की जो आंखें खुलीं तो देखा कि अमीर रो रहे हैं उठकर रूमाल से अमीर के आंशू पोंछनेलगी और पूछा कि क्या हुआ क्यों इस प्रकार से दुःखित हो अमीर ने कहा कुछ नहीं सब अच्छा है आसमानपरी ने

हरएक भाँति से पूछा परन्तु अमीर ने कुछ जवाब न दिया एकबारगी चुप होरहा और प्रातःकाल तक रोया किया और वह रूमाल से आँशू पोंछा किया और जब बादशाह महल से आकर बैठके में बैठे तो अमीर ने जाकर सलाम करके कहा कि यह वादा भी आपका पूरा होगया अब तो सेवक को जानेकी आज्ञा दीजिये बादशाह ने उसी समय अमीर को तख़्तपर बैठाकर चार देवों को बुलाकर आज्ञा दी कि अमीर को परदे दुनिया में पहुँचाकर मोहरी रसीद अमीर की लेआओ और इनको अच्छीतरह से पहुँचाना तब वे तख़्त को लेकर उड़े और आसमान-परी ने फिर अपना हाल वैसाही किया और सलासल परीज़ाद को बुलाकर आज्ञा दी कि किसी युक्ति से जाकर देवों को मेरी आज्ञा सुनाओ कि वे अमीर को रास्ते में छोड़कर चले आवें इसी में उनके लिये अच्छा होगा कि तीन दिनतक अमीर उसी वन से इधर उधर घूमा करें नहीं तो मैं उन देवों को बाल बच्चों से मार डालूंगी सलासल उड़कर अमीर के पास पहुँचा और सलाम किया ज़ाहिरमें बहुत दुःखित हुआ अमीर ने पूछा कि तुम यहाँ क्यों आये हो तुम्हारा आना अच्छा नहीं हमारे पास न आओ अपना मुख हमको न दिखाओ उसने कहा मैं तो आप को विदा करने के लिये आयाहूं अब ईश्वर जाने कब आपसे फिर मुलाक़ात होगी तब अमीर ने कहा अच्छा अब मुलाक़ात हो चुकी आप जाइये दुःख न उठाइये सलासल ने फिरती समय उन देवों को शाहज़ादी की आज्ञा सुनाई और उन देवों ने छोड़ने का इक़रार किया सब दिन देव उड़ेचलेगये जब सायंकाल हुआ तो एक स्थान पर तख़्त को उतारा शाहज़ादीकी आज्ञानुसार किया अमीर ने कहा कि इस वन में तख़्त को क्यों उतारा उन देवों ने कहा कि रात्रि अँधियारी है इस समय चलने के योग्य नहीं है और कुछ भोजन पान भी करेंगे इस रात्रि को आराम से सोइये दिनको फिर चलेंगे अमीर ने कहा कि आगे के देवों की तरह न करना कि तुम हमको छोड़कर चलेजाओ और हम ख़राब हों उन्होंने कहा नहीं साहब ऐसी नमकहरामी हमलोगों से न होगी अमीर चुप होरहे देवों ने तख़्त वहाँ रखदिया और आप शिकार के हीले से गुलिस्तान अरम की तरफ़ चलेगये और अमीर रात्रिभर तख़्तपर बैठे रहे सबेरे मालूम हुआ कि वे भी दग़ा देकर अपने देशको चले गये अमीर ने अपने दिलमें बिचारा कि बादशाह क़ाफ़ मुझको इसी तरहसे घुमाया करेगा और परदे दुनिया में न जानेदेगा अब तू चल जो ईश्वर की कृपा होगी तो गिरता पड़ता दुनियामें पहुँच जायगा यह बिचार कर वहाँसे चला जब थकजावे तो थोड़ी समय वृक्ष के तले बैठकर सुस्ता लेवे और फिर उठकर चलता था और बाद-शाह क़ाफ़ की दग़ाबाज़ी और अपनी नेकी पर अफ़सोस करता था इसी प्रकार से दिन भर चलाकिये परन्तु रात्रि को फिर उसी स्थानपर पहुँच गये जहाँ देवोंने छोड़ा था अमीर बड़े संदेह में होकर आश्चर्य करनेलगे कि मैंने तमाम दिन क्लेश उठाया चलने से थकगया परन्तु जहाँ से सबेरे चला था वहीं शामको फिर पहुँचा यह बात

क्या है? आख़िरकार लाचार होकर उस रात्रिको भी वहींरहे और दूसरे दिन दूसरी तरफ़ को चले परन्तु उस दिन भी वैसाही हुआ इसी तरह से तीन दिन तक ख़राब रहे चौथे दिन दोपहरतक चलकर थकगया और धूपने सताया एक ओर दो चार वृक्ष देखे चाहा कि जाकर उनके नीचे बैठकर आराम करें जाकर देखा तो एक संग-मरमर का आठ कोने का चबूतरा बना है और वायु भी ठंढी आती है जो दमभर वहां ठहरता है उसका चित्त प्रसन्न होजाता है अमीर उस चबूतरे पर तकिया लगा-कर जाकर बैठे कि थोड़ी समय के बाद बन में शोरगुल होनेलगा इतने में एक बड़े भयानक रूपका मनुष्य उस बन से तलवार लियेहुए निकला और अमीर से कहने लगा कि किस बवण्डल में तू उड़कर यहां आया है और कौन लेआया है अब तू भला मुझ से बचकर जाने पावेगा यह कहकर एक वार तलवार की चलाई अमीरने भी अक़रब सुलेमानी उठाकर एक वार उसपर मारा परन्तु उसके न लगा तब वह देव भागा और थोड़ी समय के पश्चात् एक अजगर हाथ में लेकर आया और एकवारगी ललकारकर कहा कि ख़बरदार होजा मैं वार चलाता हूं यह कहकर अजगर उठाकर अमीर को मारा अमीर ने उसको भी एक तलवारसे मारकर दो भाग करदिये और उसकी कमरपर मारा परन्तु उसके यह वार भी न लगा और तलवार उसके बदन से ऐसी उछलती थी जैसे खलियान में मुगरी उछलती है तब वह देव फिर भागगया तीसरे बार फिर वह देव आया तो अमीर ने अपनी शक्ति भर तलवार उठाकर मारी परन्तु उसके कुछ न मालूम हुआ तब अमीर ने लाचार होकर ईश्वर का स्मरण किया इतने में हज़रतख़िज़र एक तरफ़ से आकर प्राप्तहुए और उस देवको मारकर जिस तरफ़ से आये थे उसी तरफ़को चलेगये अमीर उस देवके मारेजाने से अति प्रसन्न होकर बैठे और सब संदेह दूर होकर नदी के तीर लहरें देखने लगे एकबारगी जो ठंढी वायुआई तो अमीर उसी चबूतरेपर सोगये उस आराम से सबदुःख भूलगये तब अमीर ने स्वप्न में देखा कि मेहरनिगार खड़ी रोरही है अमीर चिल्लाकर जागउठे आहमारके रोनेलगे तो देखा कि उसी बन में बैठे हैं तब नदी की लहरें देखकर अपने दिल में कहनेलगे कि देखें क्योंकर ईश्वर दुनिया में पहुँचाता है और मेहरनिगार को दिखाता है तत्पश्चात् अमीर ने अपने चित्त में विचार किया कि अब किसी युक्ति से इस बन से निकलने की युक्ति करनी चाहिये यह विचार कर वृक्षों की लकड़ियां तोड़कर एक ठाट बनाया और उसीपर सवार होकर नदी में चला जब आधी दूरतक गया तो लहर से धक्का खाकर फिर किनारे पर लौट आया उसी प्रकार से लिखनेवाला लिखता है कि एक सप्ताह में ७२ बहत्तर वार वह ठाट छोड़ा और पलटआया तब अमीर ने नदी के तीर उतर और निमाज़ पढ़कर ईश्वर का स्मरण किया और बड़ी देर तक ध्यान करके ईश्वर से प्रार्थना की कि हे ईश्वर! मुझको किसी प्रकार से इस बला से बचा संयोग से उसी समय अमीर को निद्रा आगई तो स्वप्न में देखा कि एक वृद्ध हरे वस्त्र पहिने

हुए आकर कहते हैं कि बेटे मैं नूह पैग़म्बर हूं और इस नदी में मेरा नेजा है इस लिये वह अपने ऊपरसे जाने नहीं देता जो बस्तु इसमें जाती है उसे रोंकलेताहै तू आधी नदी में जाकर इस मन्त्रको पढ़ वह नेजा तुझको प्राप्तहोगा और इस मन्त्र से तू इस के पार उतर जायगा अमीर अतिप्रसन्नहुए और उसीसमय में हज़रत-नूह के पैरोंपर गिरे और जिससमय जागे तो दिल अतिप्रसन्न होगयाथा सुगन्धित स्थानपर सोने से उठकर उसी ठाटपर सवार होकर चले और उस मन्त्रको पढ़ने लगे जब आधी नदी में पहुँचे तो जल उठा मानो लहरें बढ़ीं तत्पश्चात् एक सन्दूक़ नीचे से निकलकर ठाट के समीप बहकर आया लहर ने उसको अति समीप करदिया अमीर ने सन्दूक़ को उठाकर निस्सन्देह रखकर खोला तो देखा कि एक नेजा लपेटा हुआ उसमें रक्खाहै फिर अमीर ने उसको अच्छीतरह से बिचार कर के देखकर सन्दूक़ में से निकालकर उसके बन्द काटकर सीधा किया तब तो बहुत बड़ा होगया अमीर अति प्रसन्न होकर उसी नेजे से खेतेहुए चले और जब क्षुधा लगती तो उसी कालीचेमें से जो हज़रत इब्राहीम देगयेथे निकालकर खातेथे और जब निमाज़का समय आवे तो तीरपर ठहरकर निमाज़ पढ़तेथे और फिर उसीपर सवार होकर चलते थे परन्तु न लेटते थे न सोते थे पर इसीभांति से बीसदिन बराबर चलेगये इक्कीसवें दिन एक अति शोभायमान बन में जाकर पृथ्वी पाई तब ठाट से उतरकर पैदल चले दो तीनकोस न गयेथे कि सात भेड़िये दिखाई पड़े जो कि अतिबलवान् और भयानक रूपके थे और उनमें से एक भेड़िया सफ़ेद रङ्गका और सबसे बड़ा था और पशमें उसकी पृथ्वीतक लटकीथीं लोग कहते हैं कि वे सातों भेड़िये सुलेमानी कहलाते थे और जो कुछ उस बनमें मिलता था वही खाते थे उन सातों भेड़ियों को हज़रत सुलेमान ने पालकर छोड़ा था और उसी बन में रहनेकी आज्ञा दी थी भेड़ियों ने जो अमीर को देखा तो चारोंतरफ़से दौड़कर अमीर को घेरलिया अमीर ने एक बृक्षकी आड़ में होकर अक़रब सुलेमानी मियान से खींचकर जो सामने आया उसको दो भाग करदिया इसी प्रकार से सातों को मारकर उनकी खाल खंजर से निकाल कर मृगछाला की तरह गले में डाललिया और अपने चित्त में बिचारा कि अब सफ़रक़ाफ़का है इसमें यह बड़ा गुण करेगा यह बिचार करके वहां से खालों को लेकर चले रात्रि को एक पहाड़ की खोह में लेटकर सोरहे जब प्रातःकाल हुआ उठकर निमाज़ पढ़ी और वहांसे चले गरमीके दिन थे दोपहर के समय सूर्य की तपन से ब्याकुल होकर छाया ढूंढ़नेलगे संयोग से एकबाग़ की दीवार दिखाई पड़ी अमीर दौड़कर उसके पास पहुँचा परन्तु उसका दरवाज़ा बन्द पाया तब चारोंतरफ़ रास्ता उसमें जानेकी ढूंढ़ने लगे जब कहीं न पाया तो ताला खंजर से तोड़कर उसके अन्दर गये तो देखा कि बाग़ अति शोभायमान है हरप्रकार के मेवे और फूल के बृक्ष लगेहुए हैं और दोचार स्थान भी रहने के लिये बने हैं और सब सजेहुए हैं अमीर एक स्थान में गया देखा कि संग

मरमर के तख़्तपर गद्दी लगी है और मसनद तकिया रक्खीहुई है अमीर उसपर जाकर बैठा मानो उनहीं के वास्ते बिछाथा ईश्वर ने उन्हीं को भेजाथा अमीर अपने मनमें कहरहेथे कि यह मकान हज़रतसुलेमान के बनायेहुए हैं जबसे वे यहां से चलेगये तबसे जिसका दिल चाहा वह इसमें आकर रहा इतनेमें बाहर से शब्द आया अमीर व्याकुल होकर बाहर आया कि देखूं कैसा शब्द होरहा है तो देखा कि एकदेव लोगों को सतारहा है जिसने मेरे बाग़ का दरवाज़ा खोलाहै उसे पाऊं तो जीता खाजाऊं अमीर ने ललकारकर कहा इधर आ तू नहीं जानता कि मैंने अफ़रेत और उसके माता पिता को मारकर सब देवों का नाश कर दिया है तू कब मेरेसामने आसक्ताहै उसराद दोशिरनामे देवने कहा कि ऐ मनुष्य ! तू क़ाफ़ के बाग़ और देवों को बिगाड़कर मेरे बाग़ में आया है मैंने सुनाहै कि तूने हज़ारों देवों को मारकर यमपुरी को भेजा है अब देखे जो तू लाख पावँ भी रखता होगा तो इस स्थान से तेरा प्राण न बचेगा यह कहकर एक तलवार फ़ोलादी जो उसके हाथ में थी अमीर के शिरपर मारी अमीरने वह उसराद दोशिर के हाथसे छीनली और ऐसी दिलावरी और बल दिखाया कि वह अमीर के आगे से भागा और युद्ध करनेकी शक्ति न रही अमीर दौड़कर उसके पास पहुँचे तब उसने विचारा कि यह मनुष्य बलवान् भी है दौड़ता भी अधिक है राह में एक कुआँथा उसी में कूदपड़ा और उस समय उसे कुछ न सूझा तब अमीर भी उस कूप की जगतपर बैठगये कि कभी तो इसमें से निकलेगा तीन पहरतक बैठेरहे तब तो उनका चित्त न लगा इतने में अलसाकर सोगये तो अमरू ने स्वप्न में आकर कहा कि ऐ हमज़ा ! इस तरह जो तू उमर भर बैठा रहेगा तो वह न निकलेगा मैं एक उपाय बताता हूं कि यह जो तालाब है इसका जल काटकर कूप को भरदे तब वह व्याकुल होकर निकलकर भागेगा यह स्वप्न देखकर अमीर की आंखें खुलगईं ख़ंजर से एक नाली खोदकर कूप को तालाब के जल से भरा तब वह घबरा कर निकला और चाहा कि अमीर के आगे से भागजावे कि प्राण बचें परन्तु अमीर ने दौड़कर एक तलवार ऐसी मारी कि कटकर दो टुकड़े होगया एक सायत न बीती थी कि एक देवज़ाद बुढ़िया रोतीहुई आई और अमीर से कहनेलगी कि तूने मेरे पुत्रको जिसकी उमर कुल तीन सौ वर्ष की थी और अभी दूध के दांत भी न उखड़े थे तूने मारडाला बड़ा ग़ज़ब किया तूने यह न बिचारा कि इसका और कोई वारिसहै अब तेरा प्राण भी मुझसे न बचकर जावेगा यह कहकर जादू करनेलगी अमीरने जो मन्त्र पढ़ा तो वह अपनी जादू भूलगई अमीर ने क़दम बढ़ाकर उसके भी दोभाग करके यमपुरी को भेजा और स्नान करके निमाज़ दोबार पढ़ी जो ईश्वर ने ऐसे पापियों के हाथ से उसका प्राण बचाया और दिल में विचारा कि सफ़र बहुत दूर काहै आज इसी स्थानपर ठहरकर आराम करें उस रात्रि को वहीं रहे प्रातःकाल वहां से चले तो चलते २ तेरहवें दिन अमीर के पांव में छाले पड़गये तब छालों

के दुःख से चल न सके एक बृक्ष के नीचे बैठगये और मन में विचार करनेलगे कि अभी दिल्ली दूर है और हम थकगये इतने में एक गरद सामने दिखाई दी जब वह गरद बन्द होगई तो देखा कि एकघोड़ा दौड़ा चलाआताहै और अमीरके समीप आकर खड़ा होगया तब अमीर ने यह विचारा कि यह सवारी ईश्वरने मेरे वास्ते भेजी है यह कहकर ईश्वर का धन्यबाद किया और उठकर ज्योंहीं घोड़ेपर सवारहुए त्योंहीं वह बायु के समान लेकर उड़गया कितनाही अमीर ने रोका प्र-रन्तु वह न रुका तीन दिन रात्रि बराबर चलागया कहीं एक सायत दम न लिया चौथेदिन अमीर को एक बाग़ की दीवार दिखाई पड़ी तब तो कुछ अमीर का चित्त ठिकाने हुआ वह घोड़ा उसके अन्दर गया तो वहां वैसे बहुतसे घोड़े चररहे थे वह भी उन्हीं के साथ चरनेलगा अमीर इस हाल को देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ फिर जो देखा तो एक स्त्री चौदहबर्ष की अतिस्वरूपवान् घोड़ेपर सवार फिररही है और जवाहिर लगीहुई छड़ी हाथ में लिये घोड़ों को चरारही है और कभी हँसती है और कभी रोती है हरसमय एक नवीन भेष धारण करती है अमीर को देख कहने लगी कि क्या तू बहुत थका था जो इस घोड़े पर सवार होकर चलाआया उसने कहा कि मैं इस तरह से थका था कि उठभी नहीं सकता था इसको मैंने जाना कि ईश्वर ने मेरे ऊपर कृपा करके भेजा है तो सवार हुआ परन्तु यह घोड़ा मुझे ऐसा लेकर उड़ा कि यहां लाकर डाल दिया तब अमीर ने पूछा अब तुम तो बताओ कि तुम कौनहो और यह किसका बाग़ है उसने कहा कि यह सुलेमान का जादूघर है इसमें केवल जादूहै जिसके देखने से तुमको आश्चर्य मालूम होता है और आज तक यहां आकर कोई जीता नहीं बचकर गया जो आया वह मारागया इतना कहने पाईथी कि घोड़ा लेकर दूसरी तरफ़ चलागया और ग़ायब होगई कि फिर दिखाई न परी दहिनी तरफ़ फिरकर जो देखा हज़रत ख़िज़र खड़े हुए हैं तब तो सलाम किया हज़रत ख़िज़र ने भी सलाम का उत्तर दिया और कहा कि ऐ अमीर! जिस घोड़ेपर तुम सवार थे उसके गले में एक तख़्ती बँधी है उसको तुम खोलकर अपने पास रक्खो और उसी को देखकर सब काम करना ख़बरदार भूलना नहीं यह जादूघर है जब इसमें मनुष्य फँसजाता है तो कभी नहीं छूटकर जानेपाता हज़रत ख़िज़र यह कहकर चलेगये अमीर ने घोड़े के गले से तख़्ती खोलकर देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ मुसाफ़िर! ईश्वर ने बड़ी कृपा तुम्हारे ऊपर की कि यह जादू की तख़्ती तेरे हाथ आई तूने अपूर्व वस्तु पाई है यह स्त्री जो कभी हँसती और कभी रोती है जिससमय हँसने लगे उसी समय एकतीर मन्त्र पढ़कर मार देखना कैसी अपूर्व वस्तु दिखाई देती है अमीर ने जब वह हँसनेलगी तो मन्त्रपढ़कर तीर ले मारा तीर तो निकलकर पार होगया और उसके शरीर से एक लौ निकलनेलगी और घोड़ों के अयाल और पूंछों में आग लगादी तो सब घूमकर गिरकर जलगये और सब नाश होगये केवल वही घोड़ा जिसपर अमीर सवार

होकर आये थे रहगया तब अमीर ने देखा तो न वह बाग़ है न घोड़े हैं चारों तरफ़ से शब्द सुनाई देताहै जिसके सुनने से बड़ा आश्चर्य मालूम होताहै और एक वन बड़ाभारी देखाई पड़ा जिसका कहीं वार संभार नहीं मिलता तब वह घोड़ा अमीर को लेकर निकला थोड़ी दूर आगे गया कि एक बाग़ की दीवार दिखाई पड़ी जोकि पहले से भी उत्तमथी अमीर जो उसके अन्दर गये तो देखकर अतिप्रसन्न हुए और इसप्रकार से मेवेआदिक के बृक्ष थे मानो बैकुण्ठ ही है और उसके मध्य में एक ऐसा बृक्ष जादूका मोटा था कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर रङ्ग २ के पक्षी बैठेहुए अपनी बोली बोलरहे थे और अपनी भाषा से लोगों को मोहितकर रहे थे और मध्य में एक पक्षी गले में हार डालेहुए बैठाथा जब उसने अमीर को देखा तो सब पक्षियों को लेकर पांचसौ गज़ ऊंचा उड़कर चारों तरफ़ से अमीरको घेरलिया और रोरोकर शब्द करने लगा कि मनुष्य क्या जो पत्थर हो उसको भी अवश्य दया आजाती थी अमीर उनका रोना सुनकर आप भी रोनेलगे और उन के दुःखपर बड़ा रंज किया परन्तु मसला है कि दूधका जला माठा फूंक २ पिये अपने चित्त में विचारा कि शायद ये पक्षीभी जादू के हों और मुझको किसी दुःखमें डालें तख़्ती को निकाल देखा तो उसमें लिखाथा कि ख़बरदार २ इस बृक्ष के नीचे खड़ा न होना नहीं तो फँसजाओगे ये पक्षी जादू के बने हैं फ़िर यहां से कभी न छूटने पावेगा इस मन्त्र को पढ़कर तीर से जादू की हुमा को मारडालो अमीर ने मन्त्र पढ़कर तीर को कमान से लगाकर ज्योंहीं मारना चाहा त्योंहीं जादूकी हुमा बृक्ष से उड़कर जाया चाहती थी कि अमीर ने मन्त्र पढ़कर तीर मारा कि उसके सीने में लगा वह तड़पकर गिरपड़ी और उसके बदन से लपट निकली और वह बाग़ सब पक्षियों समेत जलगया तब तो सब सन्देह अमीर का दूर होगया और शोर गुल के पश्चात् अमीर एक दूसरे बाग़ में पहुँचे तो वहां भी अपूर्व तरह के तमाशे दिखाई दिये कि एक सेना सोने की बरछी लिये हुए खड़ीहै और उनका रूप देवों की तरह अपूर्व तरह का था अमीर को देखकर कहनेलगे कि ओ मनुष्य, देश घूमनेवाला! तू यहां क्यों आया और कौन लेआया? यह कहकर सब बरछी लेकर दौड़े अमीर ने रोककर एक तलवार ऐसी लगाई कि सब एकबारगी मारेगये प्रत्येक के दो २ भाग होगये परन्तु जो पृथ्वीपर गिरा तो एक के दो होगये पहले से दूने होकर अमीरपर दौड़े और चारोंतरफ़ से घेरलिया इसीप्रकार से दोपहर में देवों से बाग़ पूर्ण होगया तब तो अमीर बड़े सन्देह में हुए परन्तु ईश्वर की कृपासे किसी का वार अमीर के न लगताथा और एक बड़ाआश्चर्य यह मालूमहुआ कि हरएक अपना भेष बदल २ कर आवे कि शिर तो पेट में और दोनों हाथ दोसींगकी तरह ऊपर को उठे हैं पश्चात् अमीर के चित्तमें आया कि तख़्ती में देखें तो क्याहै जब देखा तो उसमें लिखाथा कि यह सेना तलवार से न मरेगी गोल सपेद के मस्तक में एक खाल लालहै वह जादूहै तीर के लगने से दूर होजायगी और तू इससे बच

कर चलाजायगा अमीर ने देखा तो उनमें एक गोल सपेद था और उसके मस्तक पर एक खाल लालरङ्ग की थी अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर एक तीर उस के खालपर मारा तो चारों तरफ़ से शोर गुल होनेलगा और आकाश से पत्थर गिरने लगे और बादल गरजने लगा थोड़ीसमय के पश्चात् वह सब फ़िसाद दूर होगया फिर देखा तो एक स्थान अपूर्व दिखाई दिया तब अमीर उसके भीतर गये तो एक बाग़ अतिशोभायमान दिखाईपड़ा और उसके मध्यमें एक हौज़ जल से भरा मिला और उसमें लहरें उछलरही हैं और उसके किनारे पर एक तख़्त बिछा है उसपर एकदेव तकियालगाये बैठाहुआहै और उसके आगे एक स्त्री बँधीहुई पड़ी है उसके ऊपर एक जिन ख़ञ्जर लिये बैठाहै और उसको बड़े ज़ोरसे दबायेहै वह स्त्री अमीर को देखकर बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर रोरो कहनेलगी कि ऐ जगत्के घूमनेवाले ! मुझे इस के हाथसे बचा तबतो जिन ने उस स्त्री का शिर काटकर देवके गोद में फेंक दिया और उसने जल में डालदिया उस बेचारी को इसतरह से दुःख दिया इतने में वह शिर हौज़से निकलकर फिर उस स्त्री के धड़ में जुड़गया और वह स्त्री फिर वैसेही कहनेलगी जिन ने फिर शिर काटकर देव की गोदमें डालदिया देव ने उठकर हौज़ में डालदिया तब वह शिर फिर उड़कर उस स्त्री के धड़ में लगगया और वह स्त्री उसीतरह से फिर अमीर से रोरोकर कहनेलगी अमीर ने इसको देखकर बड़ा आश्चर्य किया और कहनेलगे कि बड़ा तमाशाहै तब तख़्ती को निकालकर पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि जिससमय वह जिन स्त्री का शिर काटकर देव की गोद में दे उसीसमय उस देवके गले में तीर मार इस मन्त्र से सब जादू दूर होजायगी अमीर ने वैसाही किया झट एक तीर उस देव के गले में मारा तो उसी समय एक बड़ा शोरगुल होनेलगा उसके पश्चात् अमीर ने देखा कि एक बन है जिसकी हद्द का कहीं पता नहीं है अमीर उसतरफ़ चले थोड़ी दूर गये तो एक क़िला स्याहपत्थर का दिखाई दिया और एक नवीन प्रकार से बनाहुआ है अमीर जब दरवाज़े पर गये तो दरवाज़ा क़िले का खुला पाया और कोई दरबान भी न था परन्तु बोलचाल मनुष्यों की सुनाई पड़ी तब अमीर क़िलेके अन्दर गये तो देखा कि बराबर से दूकान लगी हुई हैं और सब लोग बैठे हैं परन्तु न कोई हिलसक्ता है न बोलसक्ता है बहुत प्रकार से अमीर ने पुकारा परन्तु कोई भी न बोला तब बाज़ार की सैर करते हुए नगारख़ाने की तरफ़ गये तो वहांभी बहुतसे लोग बैठे पाये परन्तु वही हाल उनका भी था आगे जो गये तो स्थान बने हुए पाये और उसमें पहरेवाले चोबदार ख़िदमतगार आदि दरवाज़े पर बैठे हैं और सबको चुपचाप पाया जिससे अमीर ने पूछा कि यह क़िला किसका है ? उसने जवाब न दिया और न कुछ बोला थोड़ीदूर आगे गये तो दीवान मिला उस में एक मकान जड़ाऊ बनाथा उसके भीतर जो गये तो देखा कि एक तख़्त जड़ाऊ बिछा है उसपर बादशाह लिबासशाही पहिने हुए बैठाथा और सबओर सरदारलोग बराबर से बैठे थे अमीर ने बादशाह के

समीप जाकर सलाम किया और जब जवाब न पाया और कोई न बोला तो अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि क्या तुम्हारे यहांकी यही चाल है कि जो कोई आवे उससे न बोलें और सलाम का जवाबभी न देवें यह कहकर अमीर बाहर चलेआये तो जिधर से गयेथे वह रास्ता ही भूलगये लाचार होकर फिर बादशाह के पास आये कि उससे रास्ता पूछा तो आकर बादशाह के हाथमें एक पत्र था उसको हाथ बढ़ाकर लेलिया बादशाह तबभी कुछ न बोले अमीरने उस पत्र को पढ़ा तो लिखा था कि ऐ मुसाफिर ! यह सुलेमानी की सभा की नक़ल है और वैसेही सब बना हुआ है जो लोग दरबार में हाज़िर थे उनकी सूरतें बनीहुई हैं और जो जिस स्थान पर बैठता था उसीतरह से बैठा हुआ है और जो सूरतें तूने देखी हैं ये लोग इसी क़िलेमें रहतेथे इस कारण पुतलियां क्योंकर बोलसक्ती हैं अमीर इसमें बड़े संदेह में पड़ेथे कि हज़रत सुलेमान के तख़्त के बराबर एक और तख़्त दिखाई दिया उस पर एक युवा स्त्री चौदहबर्ष की सब ज़ेवर पहिनेहुए बैठी है और स्वरूप में परियों से हज़ारगुना स्वरूपवान् है और चार सौ सहेली उसके तख़्त के पीछे हाथ बांधे खड़ी हैं जिनके हाथों और गलों में सोने की ज़ंजीरें पड़ी थीं अमीर ने उसके बराबर आकर सलाम किया उसने सलाम का ज़वाब देकर कि ऐ प्यारे ! तू इसस्थान में क्योंकर आया ? कि कोई मनुष्य इस में नहीं आसक्ता है अमीर ने कहा मेरा वृत्तान्त अधिक है क्योंकर सुनाऊं जिसका पूरा बयान न हो सके वह क्या कहूं परन्तु तुम अपना हाल बताओ कि कौनहो और क्योंकर यहां आईहो ? उसने कहा ऐ प्यारे ! मैंभी हज़रत सुलेमान की जोरू हूं मेरा नाम शलीमशरां है मुझको जिस समय हज़रत सुलेमान ने इस दुनिया को छोड़ा और शहपाल ने सब देवों को अपने आधीन किया उसने परदेज़ुल्मात की राजधानी दी है और मैंने उनकी आज्ञानुसार किया परन्तु थोड़े दिनों के बाद जब अफ़रेतपुत्र अहरमन ने युद्ध किया और क़ाफ़ के देशों को शहपाल से छीन लिया और सब राजधानी लेलिया तब धीरे २ ज़ुल्मात पर भी दख़ल किया और संदेशा दिया कि तू मेरे साथ ब्याह कर नहीं तो तुझे भी मारडालूंगा तब मैंने बिचारा कि जब शहपालशाह इससे बिजय न पासका तो मैं कब पाऊंगी ? क्योंकि उसके पास बड़ी सेना है और आप भी अतिबलवान् है वृथा अपनी हुरमत खोनाहै तब मैं बिचार करके वहां से भाग कर यहां आईहूं और इस जादू में अपने को क़ैद किया है इस बिचार से कि यहां वह न आसकेगा और इस स्थानपर केवल हज़रतसुलेमान की सूरत देखकर दिन काटतीहूं और दिनरात्रि ईश्वर का ध्यान किया करतीहूं और ये चारसौ मेरी सहेलियां हैं इनको मैं अपने साथ लेआई थी अब आप अपना हाल बताइये कि कौन हैं और कहांसे आये हैं और क्योंकर इसमें आयेहो ? अमीर ने कहा कि मैं सहायक बादशाहक़ाफ़ शहपालपुत्र इब्राहीम पैग़म्बरका हूं और हमज़ा मेरा नाम है और परदेदुनिया में मैं रहताहूं शहपाल ने अपनी सहायता के लिये बुलाया था उनकी

ख़ातिर से मैं आया और सवदेवों अफ़रेत और उसके माता पिता समेत सेनाको मार कर सवदेश ईश्वरकी कृपा और अपने वलसे दिलाकर फिरसे वादशाह वनाकर सव जादूके कारख़ाने बिगाड़ करके आताहूं अब तुम ख़ुशीसे जाकर राजकरो और वहां की मलका वनो उसने कहा कि इसमें तो मैं अपनी इच्छा से आई थी परन्तु निकल नहीं सक्तीहूं क्योंकि जो यहां आता है वह निकल नहीं सक्ता है अमीर ने कहा कि मैं इसको तोड़कर निकालदूंगा इतनी पुण्य करूंगा परन्तु एक वात जो मेरी मानो उसनें कहा क्या वातहै कहो जो करनेके योग्य होगी तो क्यों न मानूंगी पहले सुनलूं तो इक़रारकरूं अमीर ने कहा कि यहां से छुटनेके पश्चात् परदेदुनिया में मुझे पहुँचादे मेरा देश मुझे दिखादे उसने कहा कि शिर और आंखोंपर मैं ख़ुद ले चलकर पहुँचाआऊंगी इतना आपका कार्य अवश्य करूंगी अमीरने तख़्ती को निकालकर देखा तो उसमें कुछभी न लिखाथा तव तो बड़े आचर्श्य में हुए कि इसमें से निकलना अव दुर्लभ हुआ तव तो तख़्तीको रखकर हाथ मुख धोकर निमाज़ पढ़कर ईश्वर का ध्यान करनेलगे तव एक स्वप्न की तरह देखा कि हज़रत सुलेमान मेरा शिर छाती से लगाकर कहते हैं कि ऐ वेटे ! दुःखित न हो वदिल मालिक नामे तेरा पुत्र इस जादूघरको तोड़ेगा इसकी पराजय उसीके हाथसेहै और जो तुम निकलने की इच्छा करतेहो तो इस मन्त्र को पढ़तेहुए दरवाज़े की तरफ़ जाओ दरवाज़ा तुमको मिल जायगा और जब दरवाज़े के वाहर जाना तोभी इस मन्त्र को पढ़ते रहना और एक हरिन तेरे सामने से आकर भागेगा तुम भी उसी के पीछे मन्त्र पढ़तेहुए भागे चलेजाना और जब वह हरिन दिखाई न देवे तो जानना कि जादूसे ईश्वर ने निकालदिया अमीर ने जब ध्यान से नेत्रों को खोला तब सवहाल मलिका से कहकर ईश्वर का धन्यवाद करनेलगे और मलिकाने कहा कि जब हम यहां से निकलें तूभी मेरे पीछे दौड़ीचलीआ मेरी आज्ञा मान अमीर वही मन्त्र पढ़तेहुए दरवाज़े की तरफ़ गये देखा तो दरवाज़ा खुलाहुआ है और जब दरवाज़े से वाहर निकले तो देखा कि एक हरिन कूदता फांदता अमीर के आगे से अच्छी तरह से सजाहुआ निकलकर मैदान की तरफ़ भागा अमीर भी वही मन्त्र पढ़तेहुए उसी हरिन के पीछे २ दौड़ते हुए चलेगये और विचारा कि यह वही हरिन है जिसका हाल स्वप्न में हज़रत सुलेमान ने मुझ से बयान कियाथा और यह मन्त्र सिखलाया था मलिका भी अपने सहेलियों समेत पीछे २ अमीर के दौड़ी इतने में क़िले में एक वड़ा शोरगुल होनेलगा कि क़ैदी भागेजाते हैं अव मिल नहीं सकेंगे परन्तु कौन सुनता है किसी ने फिरकर भी न देखा गिरते पड़ते उस क़ैद से सब वाहर आकर ईश्वरका धन्यवाद किया आगे जाकर दोपहाड़ मिले हरिन उसपहाड़ में जाकर अमीर के आगेसे गुप्त होगया और फिर उसको किसीने न देखा तब अमीर ने जाना कि ईश्वर की कृपासे जादू से बाहर आये उस पहाड़ से निकलकर दूसरे पहाड़पर उतरकर डेरा डाला और उस दौड़धूपके दुःखसे आराम लिया और

मलिका भी उसी स्थान पर ठहरी अमीर के साथ वह भी निस्सन्देह होगई और चारसौ परियों से सब सामान मँगवाकर अमीर की मेहमानी की और सब तरहसे अमीर की सेवाकी सातदिनतक उसीस्थान पर अमीर नाच रङ्ग देखाकिये और परियोंके कटाक्ष लोभानेके देखकर प्रसन्नहुए आठवें दिन मलिकाने अपनी सहेलियों से सलाह पूछी कि हमज़ा आसमानपरी के साथ ब्याहा है इस कारण कोई इसको दुनिया में नहीं पहुँचाताहै उसके डरसे इनको कोई नहीं लेजाता है और मैं हमज़ा से इक़रार करचुकीहूं कि तुमको दुनिया में पहुँचादूंगी पस तुम लोगोंकी इसमें क्या सलाह है कौनसी युक्ति करनी उचित है ? इन्होंने कहा कि यह समझलो कदाचित् आकाशपरी को मालूम होगा कि किसीने हमारे पतिको पृथ्वीपर पहुँचादियाहै तो वह तुमको जीता न छोड़ेगी वह अपने माता पितासे तो डरती नहीं तुम किस गणनामें हो तुम इसके बृत्तान्तको भलेप्रकार जानतीहो ऐसा करनेसे वह तुमको बहुत तङ्गकरेगी और बहुत दण्डदेगी इससे उत्तम यहहै कि इस मनुष्यको चारसौ परियोंके साथ इसी स्थानपर छोड़कर चलेजावें और आकाशपरीकी आज्ञाके विरुद्ध न करो यहसम्मति वहांके बुद्धिमानोंके पसन्द आई और इसने भी अपना बचाव इसीमें जाना अमीर को सोताछोड़कर कुछ परियोंको साथलेकर उड़के जुल्मातको चलीगई और अमीर से प्रतिज्ञा तोड़दी प्रातःकाल जब अमीर सोके उठा तो देखा कि सलीसायराव का कहीं पता नहीं है बिचारकिया कि आसमानपरी के डरसे इसने भी मुझको पृथ्वीपर नहीं पहुँचाया अमीरने कहा कि जो ईश्वर कृपाकरेंगे तो दुनियामें पहुँचना कुछ कठिन नहीं है यह कहकर पहाड़ के नीचे २ ईश्वरका ध्यान करतेचले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर नव रात्रिदिन चलतारहा और जब भूखलगती तो ख़िजरकेदिये हुए कलीचेको खाते और बलीहोकर फिर चलते तत्पश्चात् पृथ्वी या पहाड़ या नदी जहां कहीं कलीचा फेंकदेते फिर उन्हीं के पास आजाता और उसको खाकर फिर अपना काम करते दशवें दिन शमशादबृक्ष के नीचे पहुँचकर भेड़ियोंका चमड़ा बिछाकर सोरहे प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म कर जङ्गल से निकल मैदान की राह ली थोड़ी दूर जाकर क्या देखतेहैं कि पहाड़ के निकट से एक ज्वाला रह रहकर उठतीहै परन्तु उसका कुछ बृत्तान्त नहीं बिदित होता जब अमीर ने निकट जाकर देखा तो वह एक अपूर्व पहाड़ है वहांकी अपूर्व वस्तुओं को देखकर अत्यन्त बिस्मित हुआ कि झिरनों से पानी झररहा है और मैदान में जो हरी घास है वह मानो मखमल पर मोतियों की फ़रश सी सुशोभित होतीथी और वह मैदान बहुत हराभरा है और फलिया पहाड़ में सोने चांदीकी ईंटों और जवाहिरातसे बनीहुई एक चहार दीवारी है जिसके देखनेसे नेत्र प्रकाशित होते हैं और जगह २ उत्तम२ जानवर फिर रहे हैं और उस पहाड़के नीचे एकखोह ऐसीहै कि जिसकी गहराई अप्रमाण है उसके मुखपर एक देव बैठाहुआ अरने ऊंट और हाथी का क़बाब बना बनाकर खारहा है और जो धुआं निकलता था वह सीधा आकाश को जाताथा और इस देवने अपने

तईं ईश्वर करके काफ़ की राहमें प्रसिद्ध कियाथा और उस खोह और अलावों को अपना दोज़ख बनाये था और उसमें चारसौ देव रक्षा करते थे इसको देखकर अमीरने इच्छाकी कि जाकर पूछें कि यह क्या बातहै ? जो कुछ समझमें नहीं आती है देखने से आश्चर्य मालूम होता है संयोग से एक देव की दृष्टि अमीर पर पड़ी देखकर कहने लगा कि मेरे पास क़बाब नहीं था सो ईश्वर ने कृपा करके इस को मेरे पास भेजा है यह कहकर वहां से उठकर अमीर को चुपके से यह कहकर बुलाने लगा कि ओ मनुष्य ! धीरे २ चला आ नहीं तो कोई दूसरा देव तुझको देखकर खालेगा और तू मेरे हाथ से निकल जावेगा अमीर उसकी बातों पर हँसने पर हँसनेलगे अमीर का हँसना जो बुरा मालूम हुआ तो वह अमीर की तरफ़ दौड़ा कि पकड़कर खाजावें अमीर ने अक़रब सुलेमानी मियान से निकालकर जो मारी तो वह दोभाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा उसको मरते देखकर सब देव अमीर के ऊपर हथियार ले २ कर दौड़े तब अमीर अक़रब सुलेमानी से सबदेवों को मारने लगे तो बहुत से तो मारेगये और थोड़े से डरकर भागगये उस स्थान से देवों का नाश करदिया जब अमीर ने देखा कि अब कोई देव यहां नहीं रहा है पहाड़पर जाकर स्वर्गपुरी को देखने लगा तो देखकर अतिप्रसन्न हुआ और उसमें एक ज़मुर्रदतख़्त अतिउत्तम बिछा है अमीर उसपर बैठगये और इच्छा की कि थोड़े समय इसपर बैठकर आराम करें फिर दिल में बिचारा कि ऐसा न होवे कि हम सोजावें और वे देव जो भागकर गये हैं अपने स्वामी को बुलाकर लावें और मुझको दुःख देवें इससे सोना उत्तम नहीं यह बुद्धि नहीं है उनदेवों ने जाकर अपने स्वामी से कहा तो उसनें पूछा कि अब वह कहां है ? देवों ने कहा कि स्वर्ग में निःसन्देह जाकर फिररहा है आरनातीस सुनकर आग होगया और कहनेलगा कि वह कहां से आया है और मेरे रक्षकों को मारडालाहै मैंभी चलकर उसीकी अच्छीगति बनाता हूं यह कहकर कईसहस्र देवों समेत वहां से उड़कर आपहुँचा और क़िले को घेर कर कहनेलगा कि जाकर तुम सब उसको पकड़लाओ देवोंने कहा कि हमलोगोंसे तो वह न पकड़ा जावेगा आप जो जावें तो पकड़ा जावेगा और आज आपकी भी बहादुरी देखेंगे यह सुनकर आरनातीस क्रोधित होकर अमीर के पास जाकर कहने लगा कि आ पापी ! तूने बड़ा ग़ज़ब किया कि हमारे रक्षकोंको मारडाला अब तूभी बचकर न जाने पावेगा तू मुझको न डरा यह कहकर हथियार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने कूदकर उसका हथियार छीनकर उसको पकड़कर पृथ्वीपर दे मारा तो उसने इच्छा की कि भाग जावें इतने में अमीर कूदकर उसकी छातीपर खड़े होगये और ख़ंजर निकालकर उसके मारनेकी इच्छाकी तो वह रोकर कहने लगा कि ऐ काफ़ की जादू तोड़नेवाले ! तू मेरा प्राण छोड़दे तो मैं बड़ी नेकी करूंगा अमीरने कहा जो तू मुसल्मान हो तो मैं छोड़दूं और अपना सबवृत्तान्त मुझ से कहकर मेरे आज्ञाधीन हो तब उसने मुसल्मान होकर कहा कि मैं सुलेमान के

समय में लैसदारों में बड़ा मोतबिर था और अनेक प्रकार से मुझपर कृपा करते थे जब उनका बैकुण्ठबास हुआ तो सबलोगोंने जहां पाया अपना अमल करलिया उसीप्रकार से मैंने भी इस क़िलेको लेकर अपने को यहां का स्वामी बनाया था अब आपने आकर मुसल्मान करके अपनी कृपासे मेरा प्राण छोड़दिया अब आप का सेवक हूं और जो आज्ञा दीजियेगा वही करूंगा यह कहकर मकान से बाहर आया और अपनी सेना से कहा कि मैं अब मुसल्मान हुआ तुममें से जिसको मुसल्मान होना होवे वह रहे नहीं अपने घरकी राह लेवे मैं उनसे नाराजहूं क्योंकि मैं ईमान्दार हूं और तुम बेईमानहो बहुतों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया और बहुतों ने अपने घरकी राह ली और आरनातीस फिर अमीर के समीप आया और कहनेलगा कि जिन देवों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया उनको तो मैंने अपने पास रहनेदिया और जिन्होंनें स्वीकार नहीं किया उनको मैंने दूर किया अमीर ने सुनकर कहा कि बहुतअच्छा किया परन्तु बड़ी नेकी यह है कि मुझको दुनिया में पहुँचादे क्योंकि मैं बहुतदिनों से तुम्हारे देश में फिररहाहूं उसने कहा कि दुनिया में पहुँचना आपका दुर्लभ नहीं है परन्तु आसमानपरी के डर से आपको कोई पहुँचा नहीं सक्ता सब उससे डरते हैं परन्तु मैं आपके लिये उसकी आज्ञा से बिरुद्ध होकर दुनिया में पहुँचादूंगा जो आप मेरा कार्य पूर्ण करदेवें अमीर ने पूछा कि वह क्या है? उसने कहा कि मैं जिस क़िले में रहताहूं अकीकनिगार उस क़िले का नाम है उसके समान संसार में और कोई क़िला नहीं है उसके समीप एक ज़मुर्रदहिसारनामे क़िला है उसका बादशाह लाहूतशाह अतिनीतिमान् है उसकी बेटी लानिसानामे है उसके ऊपर मैं मोहितहूं जो आप कृपा करके उसको मुझसे मिला देवें तो मैं आसमानपरी से बिरुद्ध होकर आपको दुनिया में पहुँचादूंगा अमीर ने कहा कि यह कौनसी बड़ी बात है तुम हमको वहांतक पहुँचादेओ आरनातीस ने कहा कि आइये मेरी पीठपर सवार होकर चलिये तब अमीर उसकी पीठपर सवार होकर चले॥

दूसरा भाग सम्पूर्ण हुआ॥

तीसराभाग

हमज़ा का बृत्तान्त॥

बिदित होकि जब आरनातीसदेव अमीर को ज़मुर्रदहिसार की तरफ़ लेचला तो सायङ्काल के समय एक स्थानपर जाकर उतरा अमीर ने पूछा कि यहां क्यों उतरा उसने कहा कि अब रात्रि होगई है रात्रिभर यहांपर बासकरके प्रातःकाल उठकर आपको लेकर चलेंगे तब अमीर ने कहा कि यह तो अति उत्तम है परन्तु हज़रत खिज़र ने आज्ञा दी है कि परदेकाफ़के देवों का बिश्वास न करना सो हम तुमको

एक वृक्ष में बांधकर सोवेंगे. उसने कहा कि मैं तो आपके साथ घात न करूंगा परन्तु आपकी इच्छाहो तो मुझको बांधकर सोइये तब अमीर उसको एक वृक्ष में बांधकर आप चर्म बिछाकर सोरहे तब रात्रि को आरनातीस ने विचार किया कि जिसके लिये हमने सब वस्तु छोड़कर इसका साथ किया सो यह मेरा विश्वास भी नहीं करता तो और क्या करेगा इसप्रकार से विचार करके वृक्षसमेत वहां से उड़कर भागा प्रातःकाल को जब अमीर जागे तो न कहीं वह देव है न वृक्ष देखकर अतिव्याकुल हुए कि पहलेहीकासा फिर हुआ या वृक्ष में बांधने से क्रोधित होकर चलागया होगा पीछे निमाज़ पढ़कर एक ओर को चले और दोपहरको जब गरमी से व्याकुल हुए तो एक स्थानपर थोड़े से वृक्ष देखकर उसकी तरफ़ जो गये तो चित्त अतिप्रसन्न हुआ चर्म बिछाकर लेटगये तो थोड़े समय के पश्चात् वन से एक देव अमीर के सम्मुख आकर कहनेलगा कि तू मुझ को नहीं डरा कि यहां पर बैठकर आराम करनेलगा अमीर ने कहा कि मैं यहां के देवों से नहीं डरता हूं तब उस ने एक पत्थर उठाकर अमीर के शिरपर देमारा अमीर ने उसको रोककर उस देव के दो भाग कर दिये और जब गरमी कम हुई तो वहां से उठकर चले तो थोड़ीही दूरपर जाकर देखा कि आरनातीस को चारसौ जिन मारते हुए लिये आते हैं अमीर को देखकर दोहाई देनेलगा अमीर ने जाकर उसको छुड़ाकर पूछा कि तू ने क्यों मुझ को वहां पर छोड़ दिया था? उस ने कहा कि यह उसी के बदले में दण्ड मिला अब चलिये आपको लेचलूं तब अमीर फिर उसकी पीठपर सवार होकर चले और रात्रि को एक स्थान पर उतर कर एक वृक्ष में बांधकर सोरहे तो वह फिर वृक्ष समेत उड़कर चलागया प्रातःकाल को अमीर ने जो उसको न पाया तो अपने चित्त में विचारा कि देवों का स्वभाव ऐसाही होता है ये किसी के साथ नेकी नहीं करते हैं यह कहकर निमाज़ पढ़कर एक तरफ़ को चले और सात दिन तक बराबर चले गये आठवें दिन एक क़िले के समीप जाकर पहुँचे तो देखा कि बहुत से देव उस क़िले को घेरे हैं और दो देव कोठेपर बैठे ईश्वर २ कररहे हैं और एक देव क़िले का दरवाज़ा तोड़ रहा है अमीर ने जाकर उसको ललकारा कि ओ पापी! प्रथम मुझ से लड़ले तो फ़िर जाकर तोड़ यह सुनकर अमीर के तरफ़ दौड़ा और कहने लगा कि तू तो हमारा भोजनहै तू क्या है? जो लड़ेगा अमीर ने कहा कि तू क्या बकताहै मैं ही अफ़रेत आदि देवों का नाशकर्ता हूं तब उस ने कहा कि तब हीं तेरी मृत्यु मेरे पास लेआई है आज तू बचकर न जाने पावेगा यह कहकर अमीर के मारने को दौड़ा अमीर ने रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि वह दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसीप्रकार से थोड़ीही देर में सब देवों को मारकर भगादिया तब लाहूतशाह क़िले से निकलकर अमीर के पैरों पर गिरकर अपने क़िले में लेजाकर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हुआ अमीर ने पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? उस ने कहा, कि लाहूतशाह मेरा नाम है और इस क़िले का स्वामी हूं अमीर ने तब

उससे कहा कि मेरा एक प्रयोजन आप से है तब उसने कहा कि मैं जो आज्ञा हो करने को आरूढ़ हूं अमीर ने कहा कि तुम अपनी बेटी लानिसा का ब्याह आरनातीस के साथ करदेओ मैं उससे क़ौल हारगया हूं तब उसने ऊपरी मनसे कहा कि मुझे स्वीकार है परन्तु चित्त से अतिक्रोधित हो अमीर से अतिप्रसन्नता से कहने लगा कि उठकर चलकर गद्दीपर आसन कीजिये और तख़्त को एक कूप के ऊपर बिछवा दिया था अमीर उठकर जब गये और उस तख़्तपर बैठने लगे तो उलटे शिर कुयें में चलेगये तब उसने एक पत्थर ऊपर से रखवाकर दोसौ जिन्नों को रक्षा के लिये मुक़र्रर किया यह ख़बर लानिसा को पहुँची तो वह अतिक्रोधित होकर बादशाह के पास आकर कहने लगी कि तू बड़ा पापी है कि उसने तेरे साथ नेकी की है तू ने उस के बध करने की युक्ति की उसने कहा कि वह कहता है कि अपनी बेटी का ब्याह आरनातीस के साथ मेरी आज्ञानुसार करो इसी से मैंने उस को क़ैद किया है तब उस समय लानिसा चुप होरही कुछ उत्तर न दिया रात्रि को लिबास मरदाना पहिनकर हथियार बदन पर लगा के कूप के समीप अमीर के निकालने की युक्तिमें आई और पत्थर हटाकर कुयेंमें निस्सन्देह उतरकर गई अमीर ने देखा कि एक स्त्री चौदहबर्ष की मरदाना रूप धरेहुए मेरे शिरपर खड़ी है अमीर ने पूछा कि तू कौन है ? वह बोली कि लानिसा मेरा नाम है आपके छुड़ाने के लिये आई हूं आप कुछ सन्देह न करिये आपको छोड़ाने के लिये आई हूं अमीर ने ईश्वर का धन्यबाद दिया और कमन्द पकड़कर कुयें से बाहर आये और उसकी बड़ी प्रशंसा करनेलगे परन्तु पहरेवाले बहुत क्रोधित हुए तो लानिसा तलवार लेकर उन को मारनेलगी तो बहुत से तो मारेगये और बहुतेरे भागकर बादशाह लाहूतके पास गये और इस वृत्तान्त को जाकर बादशाह से बयान किया लाहूतशाह सुनकर सुन्न होगया और लानिसापर बहुत क्रोधित हुआ यहां अमीर लानिसा से रुख़सत होने लगे तब उसने कहा कि मैं आपकी लौंडी सेंतकी हूं अब आपको छोड़कर कहां रहूं ? जहां आप जाइयेगा साथ चलूंगी अब आपको न छोडूंगी अमीर ने बहुत प्रकार से उपदेश किया परन्तु उसने न माना अपने बिचार में अमीर के साथ रहना उत्तम जाना तब अमीर के साथ चली और कई मंज़िल तक पैदल चली आख़िर को थकगई चलने की शक्ति न रहगई तब तो अमीर बड़े सन्देहमें हुए और उसके साथ होने से बड़ा दुःख पानेलगे और मंज़िल को चार २ पांच २ दिनों में तै करने लगे कई दिनों के बाद एक पहाड़ बहुत साफ़ दिखाई पड़ा और उसकी तराई में सैकड़ों कोसतक हरियाली दिखाई पड़ी और उसके मध्य में एक नहर है कि जिसका जल मोती से भी अतिस्वच्छ है और चारों तरफ़ से ठंढी २ बायु आती है जिसके कारण चित्त अतिप्रसन्न होता है तब तो वहां अमीर बैठकर उसके तीर पै सैर करने लगे कि इतने में एक हरिन सामने से आते हुए दिखाई पड़ा और सीधा अमीर के समीप निस्सन्देह चलाआया परन्तु जब अमीर पकड़ने लगे तब जङ्गल की तरफ़

भागा अमीर ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और लानिसा से कहा कि ले ईश्वर ने तेरी सवारी के लिये इसको भेजा है ईश्वर को तेरे दुःख से दया लगी पस जिस समय वहां से चलने लगे लानिसा को उसपर सवार कराकर नाथ में रस्सी लगाकर उसके हाथ में दिया दुःख से आराम हुआ परन्तु थोड़ीदूर जाने पर हरिन लेकर जङ्गल की तरफ़ भागा उसने रोका परन्तु न रुका और एक सायत में हवा होगया और उसका कहीं पता न मिला अमीर बड़े दुःख को प्राप्त हुए और जिस तरफ़ को वह हरिन भागा उसी तरफ़ को अमीर भी चले परन्तु कहीं भी पता न मिला दोपहर के पश्चात् एक पहाड़ की तराई में पहुँचे तो एक बाग़ अतिशोभायमान देखा और उस में एक गुम्मज बना था जिस में कि बराबर से जवाहिर जड़े थे और चारों तरफ़ जड़ाऊ शामियाने गड़े थे अमीर जो उस के दरवाज़े पर गये तो दरवाज़ा भीतर से बन्द पाया और भीतर जाने की कोई रास्ता दिखाई न पड़ी इतने में भीतर से शब्द सुनाई पड़ा कि एक मनुष्य विनयकरता है कि मुझे क़बूलकर दूसरा कहता है कि विष्ठा खाना अङ्गीकार है परन्तु तेरे साथ व्याह करना अङ्गीकार नहीं है अमीर ने पुकारकर कहा कि अन्दर कौनहै दरवाज़ा खोलदे मैं तेरे पास आनेकी इच्छा करताहूं जब किसी ने न सुना तो अमीर ने एक लात मारकर दरवाज़ा तोड़डाला और भीतर चलेगये तो देखा कि लानिसा तख़्तपर बैठी है और आरनातीस हाथ जोड़े सामने खड़ा है और प्रार्थना कररहा है आरनातीस ने जब अमीरको देखा तो अमीर के पैरोंपर गिरकर कहनेलगा कि देखिये साहब ! मैं इस के पैरोंपर गिरपड़ा परन्तु यह मेरे साथ व्याह नहीं करती आप इसको समझाइये कि मेरे साथ व्याह करे तो आपकी सेवकाई से जीते जी मुँह न फेरूंगा और जहां आप कहियेगा वहां आपको पहुँचाऊंगा अमीर ने कहा कि तूने दोबार मुझे वनमें छोड़दिया है अब तेरी बातका कुछ विश्वास नहीं है उसने कहा कि आप मुझे बांधकर सोरहे तो मैं भागगया अब मेरा अपराध क्षमा कीजिये अब सदैव आपके चरणों की सेवा में रहूंगा अमीर को उसके रोनेपर दया लगी लानिसा से कहा कि अब आरनातीस मुझे दुनियां में पहुँचानेका वादा करता है मेरे कहने से तुम इसके साथ व्याह करलेओ यह तुम्हारे मोहमें मरता है लानिसा ने हाथ जोड़कर अमीरसे कहा कि यह तो देवहै आप जो मुझे गधेके साथ व्याह करने को आज्ञा देवें तो मैं करलूं आपकी आज्ञासे मैं विरुद्ध नहीं होसक्ती हूं परन्तु मैं भी इससे यह इक़रार करती हूं कि यह आपको दुनिया में अवश्य पहुँचादेवे फिर अपनी बेईमानी से दग़ा न देवे उसने हरप्रकार से सौगन्दें खाकर इक़रार किया अमीर ने व्याह करने के पश्चात् लानिसा का हाथ आरनातीस के हाथ में पकड़ा दिया आरनातीस ने सलाम करके कहा कि अब आज्ञा हो तो इसको साथ लेजाकर क़िले निगार में व्याह करूं और अपना हौसिला मिटाऊं किसी तरह से मेरा और उसका हौसिला बाक़ी न रहजावे क्योंकि जब मैं आपको दुनिया में पहुँचाकर फिर यहां आऊंगा तो आसमानपरी

अवश्य मुझे मारडालेगी और ऐसा नहीं कि जो वह न जाने इसकारण सब मनका हौसिला मिटाकर तीसरे दिन आपके पास आकर पहुँचूंगा और आपकी आज्ञा मानूंगा अमीर ने उसको जानेकी आज्ञा देकर कहा कि तीनदिनतक तुम्हारा आसरा देखेंगे और जो तीसरे दिन न आओगे तो अपने किये हुए का फल पाओगे और पीछे को पछिताओगे तब आरनातीस लानिसा को गरदन पर सवार करके क़िले निगार की तरफ़ गया आधी दूरगया था कि एक मैदान दिखाई प्रड़ा जहां तालाब और दो चार स्थान भी अपूर्व प्रकार के बनेथे वह स्थान उसे प्रसन्न आया उसी तालाव के तीर लानिसा को गरदन से उतारकर बैठादिया और उससे कहा कि तू इसी तालाव पर बैठीरह मैं जाकर कोई सवारी तेरे लिये लेआऊं पैदल लेचलना उचित नहीं है यह कहकर क़िले निगारकी तरफ़ चला और लानिसा को जो गरमी मालूम हुई तो कपड़े उतारकर तालाब में स्नान करने लगी कि गरमी मिटजावे मन को प्रसन्नता प्राप्तहोवे एक सायत न व्यतीत हुईथी कि एक घोड़ा अरने भैंसे की तरह मोटा आकर तालाब के किनारे खड़ाहुआ तब लानिसाने उस घोड़े को देखकर तालाब से निकलकर चाहा कि कपड़े पहिने कि वह लानिसा की तरफ़ दौड़ा और लानिसा डर से पत्थर पर गिरपड़ी तब तो उस घोड़ेने अच्छीतरह से उसके साथ भोग करके अपने दिलका हौसिला मिटाया ईश्वर की अपूर्व रचना से उसीदिन उसके गर्भ रहगया और पीछेसे उसके घोड़ा उत्पन्नहोगा और बड़ातेज़ होगा और उसका नाम अशकर देवज़ाद रक्खा जायगा और वह बहुत दिनों तक अमीर की सवारी में रहेगा और जो उसे देखेगा वह उसकी बड़ी तारीफ़ करेगा पस जब वह देव अपने मनका हौसिला मिटाकर भोग करचुका तो पृथ्वीपर लोटकर अपना रूपधारण करलिया तब लानिसा ने कहा कि यह तूने क्याकिया क्या उसरूप के धारण करने में अधिक सुख मिला आरनातीस ने कहा कि ऐ लानिसा! कल नहीं मालूम क्या हो हमने आजही अपना हौसिला मिटालिया संसारमें एक सायतका कुछठिकाना नहीं है हर मनुष्य को प्रत्येक दिन एक कार्य लज्जाका करना पड़ता है अपने मन को तेरे साथ भोग करने से प्रसन्न किया यह कहकर उसको अपने कन्धेपर सवार करके चला और क़िले निगारमें लेजाकर नाच रङ्ग जैसा उचित था सामान करके करवानेलगा दिन को तो नाच रङ्ग में रहता रात्रि को लानिसा को बग़ल में लेकर सोता और उसके साथ भोग करता अब इसका वृत्तान्त छोड़कर थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन प्रातःकाल सुर्ख़ पोशाक पहिनकर नेत्रों में काजल देकर तख़्तपर मोहिनीरूप बनाकर बैठी और सब मुसाहिबों को बुलाया और सब के आने को लिये बड़ी ताकीद की आकर जिस ने उसका रूप देखा वहीं दङ्ग होगया और हरएक मुसाहब डरनेलगे कि कहीं हम लोगों पर मोहित न होजावे बैठे २ अब्दुलरहमान की तरफ़ सम्मुखहोकर कहने लगी कि हमने अमीर को बियाबान सरगरदां में छोड़वा दिया था देखो तो अब ज़िन्दा है या मरगया

और किस युक्ति में है अब्दुलरहमान ने हाथ बांधकर विनय किया कि मलिका साहबा रमल के विचार से तो यह मालूम होता है कि अमीर आजतक उसी में इधर उधर घूमरहे हैं परन्तु आरनातीस देव ने इक़रार किया था कि आप लानिसा से मेरा ब्याह करवादीजिये तो मैं आप को दुनियां में पहुँचा दूंगा सो अमीर ने लानिसा का ब्याह आरनातीस के साथ करवादिया है वह अब क़िले निगार में सुख से भोग कररहा है आज के दूसरे दिन अमीर को दुनिया में लेकर जावेगा जो उसने इक़रार किया है उसे पूरा करेगा आसमानपरी यह सुन क्रोध में जलने लगी और कहने लगी कि आरनातीस का भी यह मुँह हुआ कि मेरे पति को मुझ से अलग करने की शक्ति रखता है और मुझे नहीं डरता इसके बदले में उसे कैसा दण्ड देती हूं यह कहकर बड़े क्रोध से कई सहस्र देवोंको साथ लेकर तख़्तोंपर सवार होकर क़िले अक़ीक़ निगार की तरफ़ चली और क्रोधसे जलतीहुई वहां जाकर पहुँची तब दूतों ने ख़बर दी कि इस समय आरनातीस लानिसा को लियेहुए पलंग पर सोरहा है इसीसमय में उसको बांधकर देवों के वश कीजिये आसमानपरी ने जाकर दोनों की मुश्कें बांध लीं और गुलिस्तान अरममें लेआई और अपने दिलका संदेह दूरकिया और उनको लेआकर कारागार सुलेमानी में जहां कि जहान के क़ैदी आकर रक्खेजाते थे और कभी न छूटते थे उनको खूब मार पीटकर उसी में बन्द किया और नगर में ढिंढोरा पिटवादिया कि जो कोई हमज़ा को विना हमारी आज्ञा लेजाने की इच्छा करेगा उसको इसीप्रकार से दण्डमिलेगा बल्कि इससे भी अधिक अब अमीर का वृत्तान्त सुनिये कि जब तीन दिन व्यतीत होगये और आरनातीस न आया तो अमीर अपने दिल में कहने लगे कि कोई देव हमज़ा तुमको दुनिया में न पहुँचावेगा ये सब दुष्ट हैं और जो कोई वादा करता है वह अपना प्रयोजन करने के पश्चात् धोखा देकर चलाजाता है अब पहुँचावेगा तो ईश्वरही पहुँचावेगा नहीं तो कोई न पहुँचावेगा यह कहकर मेहरनिगार को शोचकर रोनेलगे कि इतने में एकतरफ़ से शब्द सलाम का सुनाई दिया अमीर ने फिर के जो देखा तो हज़रत ख़िज़र हैं उठकर खड़ेहुए और कहनेलगे कि हे ईश्वर! क्या मैं अब इसी में रहूंगा कबतक इस बन में दुःख उठाऊंगा कि जो कोई मुझ पहुँचाने का वादा करता है वह पूरा नहीं करता देखिये कि आरनातीस देव ने किस २ प्रकार से सौगन्दें खाईथीं परन्तु पूरा नहीं करता तब हज़रतने कहा कि यह सायत का फल है घबरा नहीं ईश्वर तुमको दुनिया में पहुँचादेगा और तुम सब से जाकर मिलोगे परन्तु थोड़े दिन और दुःख उठाओगे बहुत गई थोड़ी रही यह मसला सत्य है और आरनातीस देव का अपराध कुछ नहीं है वह अपने कहनेपर तैयार था और उसकी इच्छा थी कि आपको दुनिया में पहुँचादेवे परन्तु आसमानपरी ने अब्दुलरहमान से पूछकर उसको क़िले अक़ीक़निगार से पकड़कर दोनों को गुलिस्तान अरम में लेजाकर दण्डदेकर सुलेमानी कारागार में डालदिया है इस बातपर आसमानपरी

ने उस बेचारे को बड़ादुःखदिया है यह कहकर हज़रत ख़िजर जिधर से आये थे उधरी को चलेगये अमीर इस बात के सुनने से ऐसे व्याकुल हुए कि उनको मालूम भी न हुआ कि किधर गये अमीर वहां से आगे को चले सत्रह दिनतक बराबर चलेगये अठारहवें दिन एक पहाड़के नीचे पहुँचे तो उसकी चोटीपर एकमण्डप बिल्लौरी पत्थर का दिखाई पड़ा गिरते पड़ते वहांतकगये तो उसके ऊपर जो कलश रक्खा था वह इस प्रकार से चमकता था कि जो सूर्य आंख मिलावें तो चकचौंधी लगे तबतो अमीर ने अपने दिलमें बिचारा कि इसके समीप से जाकर देखें तब पहाड़पर चढ़गये तो एक बाग़ देखा जिसके चारोंतरफ़ दीवार उठी थी परन्तु दरवाज़ा उसका बाहर से बन्द था और कोई वहां दिखाई न पड़ता था अमीर निडर होकर उस ताले को तोड़कर भीतर चलेगये तो देखकर कहनेलगा कि जिस दिन से मैं काफ़में आया हूं अबतक ऐसा स्थान कहीं नहीं देखा और फिर जो कलश को दृष्टि करके देखा तो एक मोती का शबचिराग़ रक्खा है और उसपर एक लाल जड़ा है अमीर ने हाथ लपकाकर कलश से गौहर शबचिराग़को अपने से जो मिलाया तो एकरत्तीका भी फ़रक़ न पड़ा अमीर अतिप्रसन्न हुए कि यह भी सौगात काफ़की है संसार में काहेको ऐसे किसी बादशाह या शाहनशाह ने देखे होंगे किसी ने स्वप्न में भी न देखा होगा तत्पश्चात् मण्डप के भीतर जो गये तो देखा कि एक तख़्त जड़ाऊ बिछाहै और जिधरही नेत्र उठाकर देखा उधरी हरप्रकार की वस्तु अपने स्थानपर अपूर्व प्रकार की दिखाई दीं तब इच्छा की कि उसपर थोड़ी समय ठहरकर आराम लेवें परन्तु फिर बिचारा कि ऐसा न हो कि कोई आकर कहे किसकी आज्ञा से तू इसके भीतर आया है इस कारण यहां ठहरना अनुचित है और इस स्थान से निकल चलना उचित है इस बिचार से मण्डप से निकलकर रविशपर रूमाल बिछा-कर बैठगये और आतेही तकिया लगाली तब थोड़ेही समय के पश्चात् एक आंधी ऐसी आई कि मालूम होताथा कि सबबृक्ष गिरना चाहते हैं तत्पश्चात् एक सफ़ेददेव जो लम्बाई में पांचसौ गज़काथा क्रोधसे भराहुआ अमीर के सामने आकर पुकारा कि ओ चोर! कहां है? जिसने गौहर शबचिराग़ कलश में से निकाल के कुरूप करदियाहै और बड़ा शोरगुल करनेलगा अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर सामने आ-कर ललकारा कि ओ मोटेदेव! तू क्या बकता है किसको ढूंढ़ता है मुझको भी जानता है या नहीं? मैं देवोंका मारनेवाला और जादूका नाश करनेवाला हूं और जो न जानताहो तो सामनेआ बतलादूं मैं सहायक बादशाह काफ़ नाशकर्त्ता अफ़रेत और बधकर्त्ता अहिरमनहूं उसने कहा कि आज मालूम हुआ कि काफ़ के बाग़को आपही ने बरबाद किया है देख उसका बदला मैं अब तुझसे लेताहूं और जो हज़ार प्राण भी तेरेहोंगे एक भी मेरे सामने से लेकर न जानेपावेगा अमीर ने कहा कि बकता क्यों है जो मरेहुए देवों का मित्र है और उनके पास जानेकी इच्छा रखताहै तो आ तुझको भी उन्हीं के समीप भेजदूं कि जाकर मिल मेरे सम्मुख आ और अपनी

बहादुरी दिखा तब उसने अपनी तलवार लेकर अमीर के शीशपर मारी जिसमें कि कई टुकड़े पत्थर के लगे थे और जाना कि इसी वारसे अमीर समाप्तहोजायँगे तब अमीर ने अकरब सुलेमानी से उसके दोभाग करदिये और कमरबन्द पकड़कर देव को पृथ्वी पर देमारा और छाती पर सवार होकर खंजर रुस्तमी उसके गले पर रखदी तब तो वह देव रोनेलगा और कहा कि आप मेरा प्राण छोड़दीजिये तो सदैव आपकी आज्ञामें रहूंगा अमीर ने कहा कि जो मुसल्मान होजा तो मैं छोड़ दूं और तुझको न मारूं नहीं तो अभी इसी खंजर से तेरा प्राण लेताहूं तब उस देव ने कहा कि इस पहाड़की तराई में मेरे शत्रु हैं जो तू उनको मारडाले तो मैं मुसल्मान होता हूं अमीर ने पूछा वे कौन हैं उनका तो हाल मुझ से बतला देव ने कहा कि इस पहाड़ के नीचे हज़रत सुलेमान की सैरगाह है वहां बैठकर चित्त को प्रसन्न करते थे अब उसी स्थानपर सात देव सुलेमानी रहते हैं और वे ऐसे बलवान् हैं कि सब लोग उनसे डरते हैं और उनकी सेवा करते हैं जो उनको मारिये तो मैं बड़ा गुण मानूंगा और आपकी आज्ञानुसार होकर रहूंगा अमीरने कहा कि तू मुझको वहां लेचल तब वह देव अमीर को पहाड़पर लेगया और उनका स्थान दिखादिया अमीर ने देखा कि कोसोंतक अपूर्व प्रकार का मैदान है और मध्यमें एक नहर दोसौ गज़ चौड़ी और लम्बाईका कुछ हद नहीं और उसका जल ऐसा स्वच्छहै कि जिस की प्रशंसा करनी शक्ति से बाहर है और हौज़के बीचमें एक बिल्लौरका चबूतरा पचास गज़का ऊंचा और पचासही गज़ लम्बा चौड़ा और उस में पुखराज के कड़े उसके चारोंओर लगे थे कड़ोंमें भी जवाहिर जड़ेथे और उसके मध्य में एकतख़्त सजाहुआ बिछाहै और सुन्दरता में अद्वितीय है अमीर कूदकर उसके ऊपर गये और चारोंतरफ़ देखकर सफ़ेद देवसे पूछा कि तुम्हारे शत्रु कहाहैं? उसने कहा कि इसीमें हैं आप पुकारें वे बोलेंगे और आपके समीप आवेंगे अमीरने पुकारकर कहा कि ऐ नेस्तान? तुम कहां हो और क्या खातेहो? तुम्हारी मुलाक़ात के लिये आया हूं आकर बाहर अपना रूप दिखलाओ वहांसे शब्द आया कि हमलोग ज़ाफ़रान अर्थात् केसर खाते हैं बैठो अभी हम आते हैं तत्पश्चात् सातों निस्तान आकर अमीर के सम्मुख बराबर से हथियार लेकर खड़ेहुए अमीरने जो देखा तो धड़ तो मनुष्य की तरह और दांत ऐसे नेजेसे तेज़ कि जो मक्खी बैठे तो दांत की नोक घुसजावे और दांतों की नोकें तलवार की धारसे भी अधिक तीक्ष्ण थीं तब अमीरने अकरब सुलेमानी को हाथ में लिया और उनके बीच में जाकर सातों को मारडाला और तलवार ने उनके रुधिर से अपना पेटभरा तब अमीर ने सफ़ेददेवसे पूछा कि अब तो तुम्हारे शत्रुओंका नाश होगया अब तुमको कुछ संदेह नहीं रहगया तबतो वह देव मारे खुशीके चूतड़ पीट २ कर कूदनेलगा और अमीर से कहा कि तूने तो मेरे शत्रुओं को मारा परन्तु मैं तेरा शत्रु अभी मौजूद हूं और यह हमलोगों को उचित है कि भलाईके बदले में बुराईकरें उसके पापसे न डरें यह कहकर एक पत्थरका टुकड़ा

उठाकर अमीरके ऊपर फेंका अमीरने उसको रोकलिया और तलवार खींचकरदौड़ा परन्तु वह ऐसा भागा कि फिर उसका पता न मिला हरचन्द अमीरने बुलाया परन्तु वह न ठहरा और कहनेलगा कि ऐसा पागल नहींहूं कि तेरे समीप आकर अपना प्राण दूं जब कभी तुझे ग़ाफ़िल पाऊंगा उससमय तुझको मारडालूंगा यह कहकर आकाश को उड़गया अमीर ने दिलमें बिचारा कि अब यहां रहना अनुचितहै क्योंकि सफ़ेद देव अब मेरा शत्रु है नहीं मालूम कब आवे और मुझको मारडाले यह बिचार कर वहांसे चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर सात दिन रात्रि बराबर सफ़ेद देवके डरसे चलेगये कहीं एक सायत सुस्तानेको भी नहीं ठहरे आठवें दिन एक नगर दिखाई पड़ा उसका भी अपूर्व वृत्तान्तहै कि वहां के मनुष्य केवल आधे धड़के थे जब दो मनुष्य खड़ेहों तो एक सम्पूर्ण मनुष्य बने और उनका नाम नीमतन था और वे सदैव इसीप्रकार से रहते थे और वहां के बादशाह का फतूह नीमतन नाम था परन्तु बड़ा प्रतापी और दयावान् था जिससमय उसने अमीर के आनेकी ख़बर सुनी उसीसमय आकर अगवानी मिलकर अमीर को अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानी की और सब तरह से प्रसन्न किया तब अमीर ने उस बादशाह से कहा कि आप मुझको दुनिया में पहुँचा सक्ते हैं उसने कहा कि हम आधे मनुष्य हैं हम अपनी सरहद से बाहर किसी तरह से नहीं जासक्ते तब अमीर उससे आज्ञा लेकर आगे को चले लिखनेवाला लिखता है कि अमीर ने उस मैदान को दसदिन में बड़े श्रमसे तै किया ग्यारहवें दिन एक नदी के किनारे पर पहुँचे तो देखा कि वह नदी बढ़ी हुई है और वहां न कोई नाव है न और कोई वस्तु कि जिससे उतरकर पार जावें और नावका उसमें उतरना दुर्लभ था लाचारहोकर उसी स्थानपर नींद आगई और स्वप्न में रो रोकर मलिका को समझानेलगे और कहनेलगे कि अब हम दुनिया में न पहुँच सकेंगे सफ़ेददेव तो अपनी घात में लगाही था अमीर को सोतेही में पत्थर समेत उठाकर उड़गया दोकोस उंचाई पर गयाथा कि अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि सफ़ेददेव उड़ाये लिये जाता है अमीरने कहा हे देव! मैंने तेरे साथ नेकी की तू मेरे साथ बदी करताहै ईश्वरसे भी नहीं डरता उसने कहा कि मैंने तुझसे पहलेही कहदिया है कि हमलोग नेकी के बदले में बदी करते हैं यही हमलोगों का स्वभाव है और सदैव यही करतेरहे अब यह बताओ कि तुमको पहाड़पर फेंकूं या नदी में अमीरने बिचारा कि देवलोग उलटी मति करते हैं जो कहूंगा उसके बिरुद्ध करेगा अमीर ने कहा कि जो तू बदलालेता है तो मुझे पहाड़पर फेंकदे इसीप्रकार से अपना बदला ले सफ़ेददेवने कहा कि नहीं मैं तुझको नदी में फेंकूंगा कि तू डूबकर मरजाय फ़िर मेरे साथ दुष्टता न कर यह कहकर उसे पत्थर समेत नदी में फेंककर उड़गया तब हज़रतआलियास ख़िज़र ने ईश्वर की आज्ञा पाकर हाथोंहाथ अमीर को उठाकर नदी के पार रखदिया अमीर ने दोनों पैग़म्बरों को सलाम किया और रोकर कहा कि ऐ हज़रत! आसमानपरी

ने मुझको बड़ा दुःख दिया कि मुझको दुनिया में नहीं जानेदेती कि इस दुःख से छूटूं हज़रतख़िज़र ने कहा कि व्याकुल न हूजिये आबदाने के आधीन है जब आब दाना यहां से उठेगा तब तुम जाओगे और अपने जन्मस्थान में जाकर सुख पाओगे थोड़े दिन और दुःख पाओगे फिर तुम्हारे दिन अच्छे आवेंगे ईश्वरपर भरोसा करके बैठेरहो अब थोड़ासा वृत्तान्त शहपाल और आसमानपरी का सुनाता हूं कि एक दिन शहपाल दरवार में तख़्तपर बैठा था कि आसमानपरी सुर्ख़ पोशाक पहिने हुए दरबारमें आई और अपने तख़्तपर बैठकर अब्दुलरहमान से पूछनेलगी कि देखो तो आजकल अमीर कहां हैं ज़िन्दा हैं या मरगये और उस समय अठारह लाख सरदार दरबार में बैठे थे सब इस सज को देखकर कांपने लगे और मारे डरके हर देव ने अपना मुख ढांक लिया कि आज आसमानपरी सजी है और क्रोध में भरी है देखें कौन अपने प्राण से जाता है इतने में अब्दुलरहमान विचार कर रोनेलगे और शहपाल से कहा कि आपके साथ हमज़ा ने क्या बुराई की है? जो आप उसको यह दुःख देरहे हैं तब बादशाह ने व्याकुल होकर पूछा कि क्या हुआ कुशल तो है किस दुःख में अमीर पड़े हैं मुझसे अतिशीघ्रही बताओ कहा कि जहां दया न हो वहां कुशल कौन पूछता है? तुम बे परवाह हो तुमको उनकी क्या ख़बरहै सफ़ेददेव ने अमीर को अख़जर नदी में फेंकदिया है अब देखें जीते निकलते हैं या नहीं जो इस नदी में डालदिया जाताहै उसके जीनेका कुछ भरोसा नहीं रहता बादशाह यह हाल सुनकर व्याकुल होगये और आसमानपरी भी बाल अपने शिरके नोचकर रोने पीटनेलगी तब उसी समय बादशाह छोटे बड़ों समेत तख़्तोंपर सवार होकर नदी की तरफ़ चले एक सायत में उस नदीपर पहुँचे तो उस समय अमीर ख़्वाजे अख़ज़र और महतर अलियास के साथ निमाज़ पढ़चुके थे कि बादशाह आसमानपरी को साथ लिये पहुँचे अमीरने दाहिनी तरफ़ जो मुख किया तो शहपाल को खड़ापाया मुँह फेरकर बाईं तरफ़ किया तो आसमानपरी खड़ी थी तब अमीर ने उसकी तरफ़ से भी मुख फेरलिया दोनों की तरफ़ न देखा तब बादशाह और आसमानपरी हज़रत अख़ज़र के पैरों पर गिरपड़े और कहने लगे कि अब हम आपसे सौगन्द खाते हैं और यह इक़रार करते हैं कि छः महीने के पश्चात् अमीर को दुनिया में पहुँचा देयेंगे और जो न पहुँचावें तो आपके और ईश्वर के गुनहगार होवें और जिस प्रकार से ईश्वर चाहे दण्ड देवे अबकी बार मेरा अपराध क्षमा कराइये मेरे ऊपर कृपा कीजिये तब हज़रत ख़िज़र ने अमीर को समझाया कि जहां नौबर्ष व्यतीत हुए उसी प्रकार से छः महीने इनके कहनेपर और रहो और जो ईश्वर ने भाग में लिख दियाहै उसको सहो आसमानपरी और शहपाल सौगन्दें खाते हैं अबकी यह भी देखलो जो कोई इक़रार और सौगन्द करता है उसे मानना उचित है अमीर ने शिर झुकाकर कहा कि आप पैग़म्बर हैं आपकी आज्ञा मुझे माननी हर प्रकार से उचित है जो आप कहते हैं तो छःमहीने

और रहेंगे तब आसमानपरी और शहपालशाह दोनों अमीर के पैरोंपर गिरपड़े और अपने अपराधोंपर लज्जित हुए और क्षमा कराने को सौगन्द दी अमीर लाचार होकर हज़रत ख़िज़र और अलियास से आज्ञा लेकर शहपालशाह और आसमानपरी के साथ तख़्तपर बैठकर गुलिस्तान अरम की तरफ़ चलेगये॥

बृत्तान्त ख़ुसरो हिन्द लन्धौर पुत्र सादान का क़िले सरन्द्वीप में पहुँचना और पराजय देना महलील संगसार, मलिक अहबूक और बहराम बादशाह ख़ाकान चीनको और चीन में जाकर राजगद्दी पर बैठना॥

लिखनेवाला लिखता है कि महलील संगसार और मलिक अहबूक बहुत दिनों से क़िले सरनद्वीप को घेरे पड़े थे और कईबार क़िले से युद्ध किया एक दिन तबल-जंग बजवाकर क़िलेपर धावा करनेकी आज्ञा दी तब सेना मुसल्मानी ईश्वर का नाम लेले रोनेलगी कि इतने में एकबारगी जङ्गलकी तरफ़ से गरद उठी और जब वह गरद बन्द होगई तो अलम और निशान आदिक दिखाई दिये और नवीन २ मनुष्य भी दिखाई पड़े तब क़िलेवालोंने दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि ख़ुसरोहिन्द अपनी सेनासमेत आते हैं और बहरामबादशाह ख़ाकानचीन घोड़ेपर सवार अपने देशकी तरफ़ चलागया और लन्धौर अपनी सेनासमेत इधरको आया तब तो क़िले में ख़ुशीके डङ्के बजनेलगे मलिक अहबूक और महलीकसंगसार डङ्के का शब्द सुनकर बड़े आश्चर्य में हुए कि ऐसे दुःखमें डङ्का ख़ुशी का बजवारहे हैं और हमारी सेना का और हमारा कुछ डर नहीं करते कि इतने में ख़ुसरो लन्धौर संगसारों की सेनापर आगिरा और मारनेलगा और जैपूर ने जो देखा कि ख़ुसरो हिन्द युद्धकर रहाहै क़िलेका दरवाज़ा खोलकर अपनी सेना भीतर लेजाकर मिला और उनके साथ हो युद्ध करनेलगा मालिक अहबूकने अपना हाथी बढ़ाकर ख़ुसरो के हाथी के बराबर लाकर खड़ा किया और एक तलवार ख़ुसरो पर मारी उसने रोकली परन्तु हाथीके लगी और वह घायल होगया तब ख़ुसरो कूदकर अलग खड़ा हुआ तब फिर अहबूक ने एकवार चलाई ख़ुसरो ने रोककर उसके हाथी की सूंड़ पकड़कर ऐसा दबाया कि वह चिल्लाया और रुधिर की नदी बहनेलगी और मलिक अहबूक हाथी से उतरकर ख़ुसरोके सम्मुख खड़ाहुआ तब ख़ुसरोने उसका कमर बन्द पकड़कर उठालिया और पृथ्वीपर देमारा तो उसकी छठी का दूध तक भी गिरपड़ा और पीछे दोनों टांग पकड़कर चीरकर फेंक दिया उसी समय में ऐसा बादल और बिजली चमकी कि मालूम हुआ पृथ्वी और आकाश फटगया और इसके बन्द होनेके पश्चात् आकाश से एक छोटासा बच्चा आया और ख़ुसरो को लेकर उड़गया यह देखकर संगसारों ने एकबारगी धावा करदिया तब सेना हिन्दने भागकर अपना क़िला बन्द करलिया और संगसार की सेनाने चारोंतरफ़से घेरकर डेरा डालदिया अब इस बृत्तान्त को छोड़कर थोड़ासा हाल मलिक लन्धौर का सुनाता हूं कि जो बच्चा लन्धौर को उठालेगया था वह राशदजिन्नी बादशाह अबेजा

परदेकाफ़की बेटी थी उसने खुसरो का बल और बहादुरी देखी तो विचारा कि इस को लेजाकर सफ़ेददेव को मरवाना चाहिये कि उसने रशदपरी पर मोहित होकर विवाह करनेकी इच्छाकी थी जिस समय उसने क़बूल न किया और कहा न माना और उसके बदले में दो चार गालियां भी दीं उसको पकड़कर एक खोह में उसके स्थान के समीपथा क़ैदकिया और राशदहपरी के पकड़नेकी घातमें हुआ कि उसको भी पकड़कर अपने बशमें करके अपना हौसिला मिटावे राशदहपरी यह हाल सुन कर गुलिस्तानअरमकी तरफ़गई कि आसमानपरी से सलाहकरके इस सफ़ेददेवको मरवावें वहां जानेपर मालूमहुआ कि आसमानपरी किसी देशको गई है तब वहां से पलटकर दुनियाकी तरफ़ सैर करनेको चलीआई घूमते २ सरन्द्वीपमें लन्धौरका बलदेखकर उठालेगई और उसको अतिप्रसन्नता से अपनेबाग़ में उतारा और आप सजकर खुसरो के सामने आई तो लन्धौर देखते ही उसपर मोहित होगया और उसका रूप देखकर व्याकुल होगया और पूछा कि मुझे इस बाग़ में कौन लेआया और यह कौन देश है? राशदहपरी ने कहा यह देश परियों का है और मैंहीं आप को लेआई हूं कि एक देवने मेरे पिता को क़ैद किया है और मेरे साथ व्याह करने की इच्छा करता है परन्तु मैं नहीं मानती हूं और हमारे बादशाह ने भी एकमनुष्य परदे दुनिया से बुलवाकर हज़ारों देवों का नाश करवाकर अपना देश फिर से अपने आधीन किया है और उसकी सहायता से अपने शत्रुओं से अच्छा बदला लिया है और अपनी बेटी से जोकि अतिस्वरूपवान् है उसके साथ व्याह कर दिया है सो मैं अपनी सहायता के लिये आपको लेआई हूं जो आप उस देव को मारकर मेरा दुःख छुड़ादीजिये तो मैं भी आपके साथ व्याह करके सदैव आपकी आज्ञा-नुसार करूं रशदपरी ने खुसरो को सफ़ेददेव के स्थानपर भेजवा दिया जिस समय खुसरो वहां पहुँचा तो पहरेवालों ने अपने सरदार से जिसका नाम सुक्रराय ब्राह्मन था जाकर कहा कि एक मनुष्य आया और नहीं मालूम कि किस प्रकार से आया है सुक्ररायब्राह्मन खुसरो को देखकर दौड़ा कि इसको पकड़कर सफ़ेददेव के पास लेजाऊं कि उसको देखाकर पारितोषिक लेऊं लन्धौर के पकड़ने को हाथ बढ़ाया तो उसने हाथ पकड़कर ऐसा देमारा कि उसका हाथ टूटकर अलग होगया तो इससे वह डरकर भागा और शेषदेव लन्धौर के ऊपर तलवार लेकर दौड़े बहुतों को लन्धौर ने तलवार से मारडाला और किसी की तलवार उसपर न लगी तब सब देव भागगये और लन्धौर राशदजिन्नी को लेकर क़ैसराफ़ैज़ में चला गया उस स्थानपर ले आने से राशदजिन्नी खुसरो से अतिप्रसन्न हुआ और कई दिनोंतक नाचरङ्ग करवाने की आज्ञादी खुसरो ने उसी नाचरङ्ग के समय ख़्वाजे अब्दुल-रहीम से कहा कि अपने बादशाह से कहो कि मैं उसकी बेटीपर मोहित हूं उसका व्याह मेरे साथ करवेवें और मुझ से जिस प्रकार से चाहे वैसा इक़रार करालेवे ख़्वाजे ने बादशाह से खुसरो का सन्देशा कहा तब बादशाह ने वज़ीर से कहा कि

तुम मेरी तरफ़ से खुसरो से कहो कि मुझे अपनी बेटी का ब्याह करने से बड़ी प्रसन्नता है परन्तु पहले सफ़ेददेव को मारकर क़िले के मरमर को उससे छीन कर मेरे आधीन कर देवें फिर मेरी बेटी के साथ ब्याह करके प्रसन्नता के साथ बासकरें लन्धौर ने अङ्गीकार किया और रात्रि को तो सोरहा प्रातःकाल उठकर सफ़ेददेव के मारने के लिये गया अब सफ़ेददेव का हाल सुनिये कि देवपलगसर ने जाकर सफ़ेददेव से कहा कि आज एक मनुष्य ने आकर तुम्हारे पहरेवालों को मारकर राशदजिन्नी को छुड़ाकर वायु के समान लेकर उड़गया और तुमको भी ढूंढ़ता था वह पापी सुनतेही आग होगया और कहनेलगा कि यह दूसरा मनुष्य कहां से आया एक मनुष्य जो आया था उसको तो मैंने अखजर नदी में फेंक दिया था वह मर गया होगा घर में आकर देखा कि एक मनुष्य राशदपरी को गोद में लिये बोसे लेरहा है और हर प्रकार से प्यार कररहा है सफ़ेददेव यह हाल देखकर तलवार लेकर लन्धौर पर दौड़ा लन्धौर ने रोककर तलवार छीनली और एक घूंसा ऐसा मारा कि वह पृथ्वी पर लोटगया तब खुसरो ने उसकी मुसकें बांधकर अपने बश करलिया और उसका हौसिला तोड़दिया और सब देवों को मकान से निकालदिया और मकान अपने क़ब्ज़े में करलिया एक को भी वहां न रहने दिया तत्पश्चात् सफ़ेददेव को लाकर राशदजिन्नी के हवाले किया राशदजिन्नी ने खुसरो को गले से मिलाया और बहुतसी अशरफ़ी और रुपया न्यवछावर किया और सफ़ेददेव को एक खोह में जो दो पहाड़ों के मध्य में था क़ैद करके कई हज़ार देवों का उसपर पहरा किया और आज्ञा दी कि खूब ख़बरदारी से रखना यह भागने न पावे और ब्याह का सामान करके लन्धौर के साथ अपनी बेटी का ब्याह करदिया और कई दिनोंतक मेहमानदारी और नाचरङ्ग हुआकिया तत्पश्चात् लन्धौर ने देवोंको क़ैसर मरमर से निकाल दिया और उसको अपने क़ब्ज़े में करलिया और राशदपरी के साथ दिन रात्रि सुख करने लगे और उसीपर मोहित होगये एक दिन गरमी के दिनों में संगमरमर के चबूतरे पर वृक्षों की छाया में सोरहा था कि इतने में देव पलगसर ने जो सदैव घात लगाये रहता था संयोग पाकर सफ़ेददेव को खोह से निकाल कर कहा कि इस समय खुसरो निःसन्देह सोरहा है उसको पकड़ना उचित है सफ़ेददेव लन्धौर को अतिशीघ्रता से उठाकर अपने घर लेगया तौक़ और ज़ंजीर पहिनाकर कारागार में डालदिया इस उपाय से उसको क़ैद करलिया तत्पश्चात् राशदपरी के पकड़ने के लिये गया कि उसको भी पकड़ कर अपना बदला लेवें परन्तु वह इसी के डर से जादू अबलीचिमाल में जो सेहच समीदेव ने बनाया था जाकर छिपी सफ़ेददेव ने यह हाल सुनकर इच्छा की कि जाकर उसको भी पकड़ लावें और अपने आधीन करें परन्तु देव ने निषेध किया कि आप उसमें न जाइये क्योंकि उसमें जाकर कोई जीता नहीं निकला तब सफ़ेददेव सरदारों को साथ लेकर जादूको घेरकर पड़ारहा और उसका हाल देखाकिया और सुन २ कर डरनेलगा

अब थोड़ा सा हाल सङ्गसारों का बयान कर उनका बृत्तान्त तुम को सुनाते हैं कि जिस समय वह बच्चा लन्धौर को उठा लेगया और सेना ने क़िला बन्द कर लिया तब बहुत दिनों तक क़िलेवालों को बड़ा दुःख दिया जैपुर ने लाचार होकर महलील सङ्गसार से एक मास की छुट्टी मांगी और एक पत्र बहराम बादशाह ख़ाक़ानचीन को लिखा कि हम बड़े दुःख में हैं हमारी सहायता करनी आपको उचित है नहीं तो हमलोग बरबाद होते हैं वह पत्र देखतेही बादशाहचीन सेनासमेत सरनद्वीपकी तरफ़ रवाना हुआ और जिससमय बङ्गाले में पहुँचा तो वहां दो भाई जादख़ां और समन्दख़ां जो आतशबाज़ी की विद्या में पूर्ण थे बहराम से मुलाक़ात हुई तब कहा कि जो मुझे साथ चलने की आज्ञा होवे तो चलकर संगसारों को एकबारगी फूंकदेवें और ऐसा जलावें कि सब का नाशहोजावे मनुष्य तो क्या कोई स्थान न रहजावेगा ख़ाक़ान इस बातके सुनने से अतिप्रसन्नहुए और उनको खिलअत देकर अपने सेनामें क़रलिया और बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होते थे और इक़रार किया कि बिजय होने के पश्चात् तुमलोगों के साथ अच्छेप्रकार से सम्मुख होंगे संगसारोंका बृत्तान्त सुनिये कि जब वादा पूरा होगया तो फिर मुसल्मानी सेना को दुःख देनेलगे तब मुसल्मानी सेना ईश्वरका स्मरण करके कहनेलगी कि हे ईश्वर! इन दुष्टोंके हाथों से हमलोगों का प्राणबचा अब तूही हमलोगोंका रक्षकहै इतनेमें शत्रुकी सेना न आईथी कि बहरामकी सेना आ पहुँची ईश्वर ने उनकी सहायताके लिये भेजदिया और युद्ध होनेलगा तब जादख़ां और समन्दख़ां ने ऐसी आतशबाज़ी की बृष्टिकी कि संगसार अड़ न सके और बहुत से जलभुनकर राख होगये और जो बचे वे ऐसी शीघ्रता के साथभगे जिस प्रकार से बे नकेलका ऊंट भागे और आतशबाज़ी से ऐसा डरे कि जब कभी लूक टूटते देखते तो यही जानते कि आतशबाज़ी को बरसारहा है और डरके भागते इसी प्रकार से उनका हियाव छूटगया और सब भागगये और बहराम अतिप्रसन्नता के साथ क़िले सरन्द्वीप और क़िलेवालों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ परन्तु लन्धौर के न होने से बड़े संदेह में हुआ और चारों तरफ़ लन्धौर के ढूंढ़ने के लिये सिपाहियों को भेजा कि उसको ढूंढ़कर लेआवें कि बहराम उसके देखने से प्रसन्न होवे अब थोड़ा सा बृत्तान्त राशदपरीका सुनिये कि जब वह सफ़ेददेव के डर से जादू अबिलि चाल में गईथी तब उसके गर्भ था नौमहीने के पश्चात् एक पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम आरशिव परीज़ाद रक्खा और उसके उत्पन्न होनेका बृत्तान्त नाम समेत लिखकर जादूके बाहर फेंकदिया कि पिता मेरे पुत्र होनेका हाल जानलेवे संयोग से एक परीज़ाद ने उस पत्र को पाया और लेजाकर राशदजिन्नी को दिया राशदजिन्नी ने उस परीज़ाद से कहा कि इस पत्र को सरन्द्वीप में लेजा-कर जो आशिवो परीज़ादों में से बड़ा हो उसको देना अतिशीघ्रही इसपत्र को वहां पहुँचा परीज़ाद ने सरन्द्वीप में जाकर बहराम के गोद में डालदिया तब बह-राम ने पत्रको खोलकर चाहा कि उस पत्रको कोई पढ़कर सुनावे परन्तु वह जिन्नी-

भाषामें था उसको कोई न पढ़सका लाचार होकर उसपत्र को अपने पास रखलिया कि कभी तो कोई इसका पढ़नेवाला मिलेगा एक दिन खुल जावेगा अब आरशिव परीज़ादे का हाल सुनिये कि जब वह आठवर्षका हुआ तो अपनी माता से पूछने लगा कि तुम दुःखी क्यों रहती हो तुम अपना हाल मुझसे कहो तब उसने सब हाल कहा और कहा कि ऐ पुत्र! मैं अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिये यहां आई हूं इस यत्नसे मैंने अपनेको निकालाथा परन्तु अब जीतेजी इससे निकलना बहुत कठिन है इस दुःखसे मैं अत्यन्त व्याकुल हूं और तेरा बापभी सफ़ेददेवके बन्धन में है कदाचित् वह छूटा होता तो किसी यत्नसे इस जादूगृह को तोड़कर हमको छुड़ाता आरशिव ने कहा कि इसजादू के छुड़ाने का यत्नभी किसी के पास होगा उसका पता लगाना चाहिये तब राशदा ने एक पत्र यन्त्र के ढूंढ़ने के लिये तीर में बांधकर जादूके बाहर अपने बापके नाम फेंकदिया तो राशदाजिन्नी के रक्षक जिन्नों ने उस पत्र को लेकर अपने स्वामी के पास पहुँचा दिया राशदजिन्नी ने अपने बलके अनुसार यन्त्र को तलाश किया जब कहीं पता न लगा तो एक ख़त राशदापरी के नाम लिखकर एक परी को दिया कि इसको उस जादूघर के भीतर जहां से इस को लाया था फेंक आ तथाच उसने इसकी आज्ञा का पालन किया कि उस ख़त को राशदा के पास पहुँचा दिया तब उसने पत्रको पढ़कर आरशिव से कहा कि तुम्हारे बापने लिखाहै कि मैंने यन्त्र को बहुत ढुंढ़वाया परन्तु कहीं पता न लगा वह यन्त्र इसी जादूघर के भीतर है शायद ढूंढ़ने से मिलजावे आरशिव अपने और माता के दुःख को देखकर रोनेलगा संयोग से उसी समय में सो गया तो स्वप्न में देखा कि एक बृद्ध मनुष्य कहता है कि तू क्यों दुःखित होताहै तेरे मकान के सामने जो मण्डप है उसी में एक देव बन्द है उसी के गले में एक तख़्ती याकूत की मोटे हरफ़ों में लिखी है तू उस पत्र के अनुसार कर जो कोई भयानक रूप भी दिखाई देवे तो न डरना वह देव अपने हाथ से देदेवेगा और आप चला जायगा और तेरी इच्छा पूर्ण होगी और ईश्वर की कृपा से इस जादू को तू तोड़ेगा आरशिव ने जागकर सब स्वप्न का हाल अपनी माता से कहा और मण्डप का दरवाज़ा जाकर खोला तो देखा कि एक देवहै और उसके गलेमें याकूत की एक तख़्ती बंधीहुई है और जो २ बातें स्वप्न में देखी थीं वही सब देखाई पड़ीं आरशिव ने तख़्ती को जो देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ जादू के नाशक! इस मन्त्र को पढ़ तो यह देव तुझको तख़्ती देकर चलाजावे और इससे तेरा मनोरथ सिद्ध होगा परन्तु जिस समय वह फिरे तो तख़्ती उसके शिरपर मार तो वह मरजावेगा इससे तू छुट्टी पाजायगा परन्तु दो हाथी मस्त तेरे सामने लड़ते हुए आवेंगे और तुझको खूब डरवावेंगे परन्तु तख़्ती को दोनों के बीच में डालदेना वे दोनों आपस में खूब अड़कर युद्ध करेंगे दांतों में से दोनों के अग्नि निकलेगी जलकर मरजावेंगे और तुझपर किसी प्रकार से क़ाबू न पावेंगे आरशिव पत्र के आज्ञानुसार करके बाहर निकला

तो देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है कि जिसके देखने से मनुष्य घबराजाता है और एक वृक्ष देवसार का था उसके पत्तोंपर ऐसी सुन्दरता थी कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर हुटरगला बैठा है जो डीलडौल में हाथी के समान है इस रूप का पक्षी संसार में हमने दूसरा नहीं देखा और चोंच साखू के लट्ठे के बराबर है और थैली की ख़्वाजे अमरूकी जंबील समझना चाहिये आरशिवने पत्रको देख कर मन्त्र पढ़कर ऐसा तीर मारा कि तीर के लगतेही पृथ्वीपर गिरपड़ा तो उसके गिरतेही एक बड़ा शोरगुल एकबारगी होनेलगा और ऐसी आंधी उठी कि रात्रि होगई दूसरा कौन देखसक्ता था और शब्द आता था कि इसका प्राण बचकर न जाने पावे जादूदेव को इसने मारडाला है देखें तुममें से कौन इसको मारता है तत्पश्चात् आरशिव आगे जो बढ़ा तो एक तालाब पाया उसमें संगमरमर की सीढ़ियां थीं और उसके ऊपर बहुतसी स्त्रियां युवा अतिस्वरूपवान् हाथों में शराब के गिलास सुराहियां लिये बराबर से खड़ी हैं आरशिव ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि इतने में हज़ारों स्त्रियां गिलास ले २ दौड़ीं और मोह मोहकर बातें करने लगीं तब तो आरशिव औरही संदेह में हुआ कि किसकी शराब लें और किसकी न लें इसी विचार में था कि तख़्ती को देखनेलगा तो उसमें लिखा था कि ख़बरदार किसी स्त्री को न छूना यह सब जादू है केवल उस स्त्री को जो घाटपर स्याह पोशाक पहिने बैठी है वही जादू की सरदारिनी है उसका सबहाजादू नाम है उस के हाथ से शराब का गिलास लेकर इस मन्त्र को पढ़कर शराब का गिलास उस के शिरपर मारकर देखो तो कैसा अपूर्व तमाशा दिखाई पड़ता है परन्तु इसका विचार रखना कि शराब की छीट तेरे ऊपर न पड़ने पावे नहीं तो तेरा भी वही हाल होगा तब आरशिव ने जाकर प्याला उसके हाथ से लेकर उसी मन्त्र को पढ़ कर उसको मारकर आप पचास क़दम कूदकर अलग होरहा तो ज्योंही उसके मुखपर शराब पड़ी त्योंही उसके शरीर से लोवें निकलने लगीं और इधर उधर ऐसी घूमी जितनी स्त्रियां उस तालाब पर थीं सब जलने लगीं और रो पीटकर दो घड़ी में सब जल कर राख होगई इस बात पर उसने ईश्वर का धन्यवाद किया और फिर तख़्ती को देखा तो उसमें लिखा था कि ऐ नाशकर्ता जादू ! अब तेरे सामने से बहुत से परीज़ादे गाते बजाते आवेंगे और उनके साथ एक वृद्ध मनुष्य होगा वह तेरे साथ सलाम करके मीठी २ बातें करेगा परन्तु ख़बरदार तू उससे कुछ न बोलना तख़्ती को आईने की तरह देखा करना इसे न भूलना तख़्ती को देखकर वे सब भाग जावेंगे और तेरा कार्य पूर्ण होजायगा आरशिव ने इसी प्रकार से जादू का नाश किया तब तो उसकी माता अतिप्रसन्न हुई और आरशिव को गले से लगाकर जादू से बाहर निकली तो सबलोग देखकर अतिप्रसन्न हुए और परीज़ादे जो राशदजिन्नी की तरफ़से पहरा देतेथे राशदपरी को देखकर बड़े आश्चर्य में हुए कि यह इस जादू से क्योंकर निकली और दौड़कर बादशाह को उसके आने की ख़बर

दी राशदजिन्नी ने उसीसमय तख़्त मँगवाकर और सवार होकर जाकर दोनों मा बेटों को गले से लगाकर रुपया अशरफ़ी लुटाता हुआ अपने तख़्त पर सवार कराके कैसराबेज में लेआया और ईश्वर का धन्यवाद करके आरशिव ने अपने नाना से पूछा कि सफ़ेददेव ने मेरे पिता को किस स्थान में क़ैद कररक्खा है कृपा करके मुझे उस स्थान को दिखा दीजिये तब राशदजिन्नी ने आरशिव को अपने साथ ले जाकर सफ़ेददेव का स्थान दिखाकर सब वृत्तान्त सुनाया अब थोड़ासा वृत्तान्त लन्धौरपुत्र सादान का सुनिये कि उस दिन अपनी भाग्यपर वहुत रोया तो उसी समय में एक तरफ़ सलाम का शब्द सुनाई दिया तो उसने जवाब देकर देखा तो हज़रत ख़िजर खड़े हैं तब लन्धौर ने रोरोकर कहा कि ऐ हज़रत ! मैं कबतक इस दुःख में रहूंगा हज़रत ने कहा कि मैं ईश्वर की आज्ञा से तुझे छुड़ानेके लिये आया हूं यह कहकर सब बन्द खोलकर अन्तर्धान होगये तब मलिक लन्धौर ने खोह से निकलकर बाहर देखा तो राशदजिन्नी और राशदपरी तख़्तपर सवार खड़े हैं और लन्धौर की तरफ़ देखरहे हैं और राशदपरी के गोद में एक लड़का बैठा है लन्धौर जाकर राशदजिन्नी के पैरोंपर गिरा और राशदपरी से मिलकर पूछा कि यह पुत्र किसका है यह वृत्तान्त तो मुझसे बताओ राशदपरी ने सब हाल कहकर अपने पुत्रको खुसरो के पैरोंपर गिराया खुसरोने उसको प्यार किया और राशदजिन्नी को साथ लेकर कैसराबेज की तरफ़ चलागया ॥

जाना ख़्वाजे अमरू का क़िले क़ायाम से क़िले देवदों में साथ मलिका मेहरनिगार मुसल्मानी सेना के ॥

लेखकलोग लिखते हैं एक वर्ष के पीछे सरदारों ने अमरू से कहा कि अब भोजन हमलोगों के लिये नहीं रहा है सबलोग क्षुधा से व्याकुल हैं ख़्वाजेने सय्याद से पूछा कि कोई और क़िला इसके समीपहै कि वहां जाकर अपनी सेनाको आराम देवें उसने कहा कि यहांसे दो मंज़िलपर एक क़िला जमशैद का बनवायाहुआ देवदोनाम है जो कि ऐसा पुष्ट बनाहै कि उसपर कोई क़ाबू नहीं पासक्ता और चार पहाड़ उसके चारोंतरफ़ हैं जिसमें जमशैद ने लोहेकी ज़ंजीरों से कलाबी बराबरसे बँधवा दिया और ऊपर से लोहे के तख़्तों से पटादियाहै और चार हाथकी दूरी पर लोहे की दीवार बनवाकर बालू उसमें भरादिया और क़िला इस क़दर चौड़ा है कि उसमें खेती भी ऐसी होती है कि वहां के रहनेवाले भोजनके लिये मोल नहीं लेते और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु दरवाज़ा उस क़िले में एकही है और वह भी ऐसा है कि केवल एक मनुष्य जासक्ताहै यह नहींहै कि दो मनुष्य बराबर साथ चलेजावें अमरू क़िले का वृत्तान्त सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और सरदारों को बुलाकर कहा कि तुम इसकी ख़बरदारी करो मैं दूसरे क़िले की तलाश में जाता हूं और तुमलोगों के सुख के लिये युक्ति करता हूं यह कहकर पोशाक़ शाही उतार कर लिबास मक्कारी पहिनकर क़िले के बाहर निकला और कूदता

फांदता क़िले देवदो में पहुँचा तो क़िले को देखकर आश्चर्य करनेलगा और अपने दिल में कहने लगा कि मैंने ऐसा क़िला अबतक कहीं नहीं देखा यह कहकर दो तीन बार क़िले के चारों तरफ़ घूमा परन्तु कोई रास्ता भीतर जानेका न दिखाई दिया तब लाचार होकर एक टिकुरे पर बैठकर युक्ति सोचनेलगा कि किसी युक्ति से इसके भीतर जाना चाहिये इतने में एक सूराख़ से देखा कि एक मनुष्य कुयें में से जल भररहा है तब अमरू ने बिचारा कि इससे और कोई युक्ति न मिलेगी उस मनुष्य से छिपकर कुयें में कूदपड़े और जाकर उसीके डोल में बैठगये जब वह मनुष्य डोल खींचने लगा तो उसे बहुत भारी मालूम हुआ तब उसने झांक कर देखा तो मालूम हुआ कि एक मनुष्य डोल में बैठा है उसने समझा कि यह जलमनुष्य है ईश्वर ने मेरे ऊपर कृपा करके इसको भेजा है अब मुझको बहुतसा ख़ज़ाना प्राप्त होगा यह विचार कर धीरे २ डोलको खींचनेलगा कि ऐसा न हो कि गिरपड़े जब डोल चरख़ी तक पहुँचा तो उसने पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया कि उसको डोलसे निकाललेवें इतने में अमरू कूदकर ऊपर आया और उसका हाथ पकड़कर जल में फेंकदिया तब वह दो एक बार डूब उतराकर मरगया और उसका भेष धारण करके पानी भरने लगा परन्तु जब मशक भरचुका तो बिचारने लगा कि नहीं मालूम कहां २ वह पानी भरता था मशक रखकर उसी कुयेंपर लेटगया और जब और भिश्ती जल भरनेको आये तो उनसे पूछनेलगा कि मियां फ़त्तू क्या हुआ अमरू ने कहा कि भाई! तप चढ़ाहुआहै कृपा करके मेरे घरमें कहदेना कि मुझे उठा लेचलें एक भिश्ती ने जाकर उसके घर में कहा कि फ़त्तू क़िले की दीवार पर तप में पड़ा काँपरहाहै दौड़कर उसे उठा लेआओ उसके लड़केबाले सुनतेही दौड़ कर उठा लेआये और सब उसका हाल देखकर दुःखित हुए परन्तु अमरू आराम से सोनेलगा आधीरात्रि को फ़त्तूकी स्त्री ने जगाकर कहा कि कुछ खाओगे थोड़ासा कुछ खालो अमरू ने कहा कि भूख नहीं है तब फिर उसने कहा कि गोलेंथिया ब-नाई हैं थोड़ासा खालो अमरू ने कहा अच्छा तेरी खुशी है तो ला थोड़ासा खिला दे उसने लाकर खिलाया और हाथ धुलाकर हुक़्क़ा भरदिया जब अमरू हुक़्क़ा पीने लगा कि इतने में बाहर से एक मनुष्य ने पुकारा कि मियां फ़त्तू जागतेहो या सोते हो यहां तो आओ तुमसे कुछ कहना है अतिशीघ्रही आओ तब तो अमरू बहुत डरा कि नहीं मालूम कौन है ईश्वरही इससे बचावे फ़त्तूने जोरूसे कहा कि पूछ तो इस समय रात्रि को क्या काम है और कौन है? उस स्त्रीने पूछा कि साहब आप कौन हैं और येतो बहुत बीमार हैं बाहर नहीं निकलसक्ते क्या आपका कुछ प्रयो-जन है उसने कहा कि मैं बादशाह के सिपाहियों का सरदारहूं मुझे कुछ बात कहनी है अमरू मक्कार का नाम सुनकर बड़े संदेह में हुआ कि इसने तो आकर घेरलिया उस स्त्री से पूछा कि यह और कभी आयाथा तूने कभी इसको पहिले भी देखा था उसने कहा कभी नहीं तब तो अमरू के और भी होश उड़ गये कि

पहिले मक्कारहीसे मुलाक़ात हुई यह तो अच्छी बात न हुई तब लाचार होकर उठकर बाहर चला और कहनेलगा कि हे ईश्वर तूही रक्षक है यह कहकर बाहर निकला तब सरदार ने देखकर कहा कि शाहअय्यारां अलेकुमस्सलाम तब अमरू ने कहा कि साहब यह घर तो फ़त्तू भिश्ती का है शाह अय्यार का घर आगे होगा तब उसने कहा कि ऐ ख़्वाजे मुझसे क्यों छिपते हो मैंभी मुसलमानहूं और आपसे मिलने को आया हूं दो महीने से आपके आने का आसरा देख रहा था यह कहकर अमरू के पैरों पर गिरपड़ा अमरू ने उठाकर छाती से लगाया और हरप्रकार की प्यारी २ बातें करनेलगा हमादेवदूई ने कहा कि चलिये बादशाहको पकड़ लीजिये जिस कार्यकेलिये आप यहां आये हैं उसको सिद्ध कीजिये फिर देखा जावेगा और जो कुछ होगा उसमें मैंभी हूं तब वे दोनों उसी अँधियारी रात्रि में पहरे वालों से छिपते छिपते बादशाह के स्थान में कमन्द लगाकर पहुँचे वहां जाकर देखा तो बादशाह अतलश के शामियाने के नीचे दुशाला ताने हुए पलँग पर सोरहे थे और सब ख़िदमतगार आदि भी बेख़बर सोरहे थे अमरूने एकाएक जाकर बादशाहके मुखपर से दुशाला उठाया बादशाह ने अमरूका हाथ पकड़ लिया तब अमरू भिड़क कर अलग खड़ा हुआ और अमरू के हाथ का भाला बादशाह के हाथ में रह गया तब अमरू ने चाहा कि भागकर अपनी राह लें इतने में बादशाहने कहा कि ऐ ख़्वाजे मुझसे न भाग एक बात सुनले तो जा कि इब्राहीम ने इसी समय मुझे मुसल्मान करके तेरे आने की ख़बर दी और आज्ञा दी कि अमरूकी सहायता करो और नहीं तो हम क्योंकर तुमको पहिंचानते अमरू यह सुनकर खड़ा होगया बादशाह ने उठकर अमरू से मिलकर बैठाया और हरप्रकार की बातें करके कहा कि सबेरे तुम जाकर मलिकामेहरनिगार को सेनासमेत लाकर इसी क़िले में आरामसे रहो और यह क़िला आपही का है जो जमशैद भी उठकर आवें तो इसमें नहीं आसक्ते हैं अमरू उसी समय बादशाह से आज्ञा लेके अपने क़िले में आया और सब सरदारों से क़िले के पाने की ख़ुशख़बरी सुनाकर दिन भर तो आराम में बैठे रहे दोपहर रात्रि बीते मलिका को महाफ़े में सवार कराकर सेना समेत क़िले देवदो की तरफ़ रवाना किया और आप काग़ज़की मूरतें बनाकर क़िले में पहरे पर रखकर पीछे से गया दो दिनके पश्चात् क़िले देवदो में जाकर आराम से निस्संदेह हुए बादशाह ने पहलेही से सब को मुसल्मान करके द्वारपालकों को आज्ञा दी थी कि जिस समय अमरू आवे क़िले के दरवाज़ेको खोलकर आने देना जब अमरू आया तो दरवाज़ा खुला पाया और निःसंदेह सेनासमेत भीतर चलाआया और अपना प्रबन्ध क़िलेमें करके आराम से बैठा और सब अपने साथियों को आज्ञा दी कि जाके अपने आसन पर आराम करो अब हरमर की सेनाका वृत्तान्त सुनिये कि तीसरे दिन एक सिपाही ने जाकर हरमर से ख़बर दी कि क़िला ख़ाली मालूम होता है वह उसी समय सवार होकर क़िले में गया तो देखा कि वही गधा और कुत्ते बँधे हैं और दीवारों पर

काग़ज़ की मूरतें खड़ी हैं बख़्तियारक से कहा कि और कोई क़िला इसके समीप है उसने कहा कि क़िला देवदो है उसी में अमरू गया है और वह क़िला बड़ा पुष्ट है पलटकर शाहज़ादों ने बादशाह नौशेरवां के नाम बिनयपत्रिका लिखी कि अमरू इस क़िले से निकलकर क़िले देवदो में गया है और यह कार्य बे आपके आये न पूर्ण होगा और जो कोई कहे कि हम इसको बिजय करलेवेंगे तो दुर्लभ है बे आपके यहां तक आये हमलोगों को बड़ा दुःख है और इससे प्राण बचने का कुछ भरोसा नहीं है यह लिखकर बादशाहके पास करगससानी के हाथ भेजा और आप सेना समेत चल करके क़िले देवदो की तरफ़ चला तीन दिन के पीछे पहुँचकर क़िले के पास डेरा गाड़कर पड़ा बादशाह नौशेरवां ने जब उस पत्र को पढ़ा तो आग की तरह जलकर कहने लगा कि देखो बड़ा दुष्ट है कि हमारे लड़कों को ऐसा दुःख देरहा है और हाथ नहीं आता है यह कहकर बख़्तियारक की तरफ़ सम्मुख होकर कहने लगा कि अब अवश्य उसको दण्ड देना चाहिये उसने कहा कि आप खुद चलकर उस पापी को जो वृथा इस प्रकार से शाहज़ादों को दुःख देरहा है चलके मारकर मलिका को पकड़ लेआइये और आपका चलना अनुचित नहीं है तब बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर से पूछा कि आप क्या सलाह देते हैं उसने कहा कि जो पहले कहा था वही अब भी कहूंगा कि जो आप वहां गये और उसने अपनी दुष्टता से कोई ऐसा उपाय किया कि आपको उठा लेगया तो अति लज्जा हम लोगों को होगी आगे आपकी बुद्धि सब से बड़ी है जो आप आज्ञा दीजिये वही हमलोग करेंगे नौशेरवां को जो अमरू की दुष्टता याद आई तो कांपने लगे और बख़्तियारक से कहा कि तू बड़ा दुष्ट है सदैव मुझको धोखा दिया करता है और आप भी लज्जित होता है संयोग से उसी समय दूतों ने आकर बादशाह से कहा कि बेचीनकामरां जोपीन का भाई दो लाख सेना समेत आपसे मुलाक़ात करने को आताहै नौशेरवां यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कई सरदारों को उसकी अगवानी के लिये भेजा कि जाकर उसे मेरे पास लेआओ जब उसने आकर तख़्त को चूमकर बादशाह को सलाम किया तब बादशाह ने अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर खिलअत देकर नाच रङ्ग करवाने की आज्ञा दी और उसकी मेहमानदारी यथाउचित की तत्पश्चात् उसने बादशाह से पूछा कि हुज़ूर आज कल ज़ोपीन जहांदार जहांगीर कहां हैं उनका बृत्तान्त तो मुझसे बतलाइये नौशेरवां ने आह करके कहा कि क्या बताऊं वे तीनों भाई हरमर के साथमें अमरूपर जाकर हमज़ा के पकड़ने की घात में हैं और नव बर्ष से वे लोग उसीके पीछे पड़े हैं परन्तु किसी के हाथ नहीं आता आज इस क़िले में तो कल दूसरे में इसी प्रकार से घूमा करताहै और सबको दुःख दिया करता है उसने कहा कि जो आज्ञा हो तो जिस क़िले में वह हो आपकी कृपा से ईंट से ईंट बजाकर अमरू को मलिकासमेत खड़ी खड़ी पकड़ कर लेआऊं और ऐसा दुःख देऊं कि सब अपनी मक्कारी भूलजावे

बादशाह इसके सुनने से अतिही प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि तुम ऐसेही हो बादशाह ने ख़िलअ़त देकर जानेकी आज्ञा दी बीजनकामरां ने दोलाख सेनासमेत क़िले देवदो की तरफ़ कूच किया और थोड़े दिनों के पश्चात् क़िले देवदोके समीप पहुँचे तब हरमरने आने की खबर सुनकर जहांदार और जहांगीर को उसकी अगवानी के लिये भेजा कि उसका चित्त प्रसन्न होवे और जिस समय हरमर की सेना में आकर पहुँचे तो हरमर ने बड़ी तैयारी के साथ मेहमानदारी की और जो कुछ उसने कहा उसे किया बीजन ने ज़ोपीनसे सभा में बैठेहुए कहा कि क्यों ज़ोपीन तुम तो दावा करते हो कि हम बादशाह के दामाद हैं परन्तु एक सिपाही को न पकड़ सके ज़ोपीन ने कहा कि भाई साहब आप सत्य कहते हैं परन्तु आप उस सिपाही का हाल नहीं जानते हैं अब आप भी आये हैं जान जावेंगे कि वह केवल अकेला लाख सिपाहियों से युद्ध करता है और किसीसे कुछ बन नहीं पड़ती वह ऐसा सिपाही है बीजन ने कहा कि यह भी कहीं होसक्ता है कि वह अकेला लाख सवारों का सामना करे और बिजय पावे अब मेरे नाम से तबलजङ्ग बज़-वाया जावे और सब सेना युद्ध करने को तैयार होवे हरमर ने तबलजङ्ग बजवाने की आज्ञा दी और सबको युद्धपर आरूढ़ किया जब तबलजङ्ग का शब्द क़िले में सुनाईपड़ा उसी समय अमरू ने भी आज्ञा दी कि तबल सिकन्दरी पर चोब दीजावे इसी प्रकार से रात्रिभर दोनों सेनाओं में डङ्के बजाकिये सामान युद्ध का हुआ किया प्रातःकाल होतेही हरमरजाफ़रामर्ज़ तख़्तपर सवार हुए सब सरदार अपनी २ सेना लेकर शाहज़ादों के साथ चले और युद्धके खेत में आकर परेट जमाया और बीजनकामरां भी अपनी दो लाख सेना लेकर एक तरफ़ से युद्ध करने को आरूढ़ हुआ और सेना में शोर गुल होनेलगा और हरमर की सेना अमरूका हाल जानती थी किसीने आगे क़दम न बढ़ाया कि ऐसा न हो कि अमरू अग्नि की बृष्टि करे परन्तु बीजनकामरां की सेना आगे को बढ़ी और क़िलेके समीप जाकर पहुँचगई तब तो क़िलेपर से अग्नि की बृष्टिहोने लगी और हरएक ब्याकुल होकर भागे किसीका पैर न जमा बीजनने सेना का ढंग देखकर ज़ोपीन से कहा कि इस सेना से विजय न प्राप्त होगी येतो अग्निके डर से भागते हैं चलो हम तुम क़िलेका दरवाज़ा तोड़ कर क़िलेमें चलकर सबको मारें ज़ोपीनने कहा कि चलिये इसमें मुझे इनकार नहीं तबतो दोनों भाई अपने २ घोड़ों को कुदाकर खन्दक के पार किया और क़िले के दरवाज़े के समीप पहुँचगये और क़िलेमें आतशबाज़ी के धुयेंसे ऐसा अंधियारा होरहा कि किसीको अपना हाथभी न दिखाई देताथा जब क़िलेवालों ने हाथ रोक लिया तो थोड़ीसमय के पश्चात् उजियाला हुआ तो देखा कि ज़ोपीन और बीजन दोनों भाई क़िले के पास खंदकमें घोड़ों पर सवार खड़े हैं और दरवाज़ा तोड़रहे हैं अमरू उनके मारने की युक्ति में था कि नक़ाबदार चालीस सहस्र सवार समेत आ पहुँचा और उन दोनोंके बराबर आकर कहा कि तुम कौन हो जो मुसलमानी सेना

से युद्ध करने को आये हो क्यों अपने हाथसे अपना प्राण देते हो वे बोले कि तू कौन है जो हमारे और क़िले वाले के बीच में दख़ल देता है और हमारे शत्रु की सहायता करता है नक़ाबदार ने कहा कि मैं तुम्हारे प्राण का गाहक हूं और निश्चय करके जानो कि मैं तुम सबको यमपुरी में पहुँचाऊंगा नक़ाबदार की ऐसी बातें सुन कर दोनों भाई तलवार लेकर नक़ाबदार को मारने के लिये दौड़े उसने तलवार तो छीनली और दोनों का कमरबन्द पकड़कर अपने शिर के बराबर उठालिया और पूछने लगा कि अब पृथ्वी पर फेंकूं या नदी में हरमर ने यह हाल देखकर सेना समेत दौड़कर धावा करादिया और नक़ाबदार के चालीस सहस्र सवारों ने भी तलवारें खींचलीं और ख़ूब मरदूमी से युद्ध किया और अमरू भी क़िले से अपनी सेना लेकर मारनेलगा इस धावे में दोनों भाइयों के कमरबन्द टूटगये और घोड़ों के नीचे गिरकर भागगये और ऐसा युद्ध हुआ कि उसी दिन अस्सीसहस्र सेना हरमरकी मारीगई और बहुत से बलवान् सरदारभी काम आये और नक़ाबदार और अमरू की सेनाका एक सिपाही भी न मारागया और बहुतसा माल और रुपया मुसल्मानी सेनाके हाथ आया तब अमरू दौड़कर नक़ाबदार के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि आज तो आपने वह काम किया है जो रुस्तमसे भी न होसका होगा और ऐसी बहादुरी का तो नामभी किसीने न सुनाहोगा यह कहकर कहा कृपा करके आप अपना नाम बतला दीजिये और सेहरा उठाकर अपना स्वरूप दिखलाइये नक़ाबदार ने कहा कि ऐ अमरू आजतक कोई कार्य ऐसा मैंने नहीं किया है कि अपना नाम बतलाऊं और स्वरूप दिखाऊं जब अमीर कुशल से आवेंगे तो नामभी मेरा सुनलेना और स्वरूप भी देखलेना अब अपने क़िलेमें सब लोग आराम से वास कीजिये और मुझे हरसमय अपना सहायक और सेवक समझिये यह कहकर अमरू को तो क़िले में भेजदिया और आप जिधर से आया था उसी तरफ़ चलागया परन्तु किसीने न देखा कि वह कहां गया और अब हरमर जाफ़रांमर्ज़ने एक बिनयपत्रमें सब वृत्तान्त लिखकर बादशाह के समीप रवाना किया और उसमें यह लिखदिया कि अतिशीघ्र ख़ेमा और ख़ज़ाना भेजिये नहीं तो दिन को धूप और रात्रिको ओसमें रहने से बीमार होजावेंगे और ख़ज़ानेके आनेमें जो देरी होगी तो उपास करते २ मर जावेंगे और आपही विचार कीजिये कि जब अन्न न मिलेगा तो क्या खायँगे जब हरमर और जाफ़रांमर्ज़ का बिनयपत्र बादशाह के पास पहुँचा और बादशाह ने यह सब वृत्तान्त सुना तो बख़्तक से कहा कि तू जो सदैव कहा करता है कि आप जो चलें तो मैं अमरूको उसके सहायकों समेत पकड़ लूं सो तेरा पुत्र बख़्तियारक जो नौवर्ष से शाहज़ादोंके साथ है उस दुष्टने क्या बना लिया और तू क्या बनावेगा तूभी उसके हाथ से धोखा उठावेगा तेरे कहने से मैंने बृथा अपनेको बरबाद और लज्जित किया और शत्रुओंका हौसिला बढ़ाया ख़बरदार आजसे मेरे दरबार में आकर अपना स्वरूप मुझे न दिखलाना नहीं तो दण्ड पावेगा

बख़्तक रोता पीटता अपने स्थानपर आया और एक पत्र अपने पुत्रके नाम लिखा कि ऐ दुष्ट! तू नौवर्षसे शाहज़ादों के साथ है और आजतक तेरी कोई युक्ति न चली कि अमरू को मारता और इसी कार्य के लिये तू भेजागयाहै तूने सब बड़ोंका नाम धराया और मुझको दोनों लोक से खोया और तेरेही कारण बादशाह की सभासे मैं निकालागया मैंने इस काम में बड़ा दुःख उठाया उत्तम यही है कि तू इस कार्य को पूरा कर नहीं तो मैं आज से तुझे अपना लड़का न समझूंगा और तुझे अपने सम्मुख कदापि न आनेदूंगा परन्तु तेरा कुछ भरोसा नहीं है कि तू इस कार्य को पूरा करेगा मालूम होताहै कि तू मेरे वीर्यसे नहीं उत्पन्न हुआ मैं जानता हूं कि तू क़िसी साहूकार के वीर्य से उत्पन्न हुआ है बख़्तियारक पत्र को पढ़कर बड़े संदेहको प्राप्त हुआ कि ऐसी कौन युक्ति करें कि पिताके निकट प्रतिष्ठित हों दिनभरतो बड़े शोच विचार में रहा सन्ध्या को एक उत्तम यत्न शोच सिपाहाना वस्त्र पहिनकर क़िलेके चारोंओर कईवार फिरा परन्तु कार्य न सिद्ध होनेसे बड़ा पश्चात्ताप किया संयोग से अन्तरदेव दूई का बेटा अर्वाब एक बुर्जपर बैठा मदिरा पीरहा है और सब चौकीदार निश्चिन्त सोरहे हैं उसने बख़्तियारक की आहट पाकर ललकारा कौन है किस वास्ते यहां आया है उसने उत्तर दिया कि मैं बख़्तियारक हूं आप से कुछ प्रार्थना करने आया हूं उसने नशे की तरंग में निस्संदेह कमन्द के द्वारा क़िले पर चढ़ालिया उसने एक जाली ख़त देकर कहा कि यह ख़त नौशेरवां ने तुमको दिया है अर्वाब ने लिफ़ाफ़े पर नौशेरवां की मुहर देखकर निश्चय किया कि यह उसीका लिखा है उसमें लिखा था कि अगर तू इस क़िले को थोड़े दिन के लिये मेरे आदमियों के सुपुर्द करदे और अमरू को पकड़कर मेरे निकट भेजदे तो अग्नि देवता की सौगन्द खाकर कहता हूं कि यह क़िला भी तुझे देदूंगा और और भी तेरे साथ मित्रता करूंगा और तेरी प्रार्थना स्वीकार करके अपने संग रक्खूंगा अर्वाब ख़त के हाल से प्रसन्न हुआ और बादशाह को आशीर्वाद देनेलगा और बख़्तियारक से कहा कि अपनी भी साक्षी इसप्रकार दे जो कोई देखे इसपर विश्वास करे बख़्तियारक ने कहा मेरी साक्षी क्या चलिये शाहज़ादों की गवाही करवादूं निदान उसको बहकाकर शाहज़ादों के पास लेआया उनके सम्मुख कहा कि यह पत्र जो बादशाह ने भेजा है इसपर आपलोग भी अपनी २ मुहरें करदें शाहज़ादों ने जाना कि बख़्तियारक कोई होशियारी कररहा है कहा कि इसपर मोहर करके एक और दूसरा ख़त अपनी ओर से लिखे देते हैं और इसके सिवाय जो कुछ तुम कहोगे मंज़ूर करादेंगे अन्त को शाहज़ादों ने उसपर अपनी मुहर करदी और बहुतसी फ़रेब की इधर उधरकी बातें कीं तब ख़्वाजह अर्वाबने कहा कि आपके डेरेके भीतर एक सुरङ्ग का दरवाज़ा है और दूसरा दरवाज़ा मेरे मकानमें है इसको आप खुदवाइये उसको जाके मैं खुदवाता हूं कि इतनी रात्रि और सब दिनमें गरमी भी उसकी निकलजावे और वायु भी स्वच्छ आजावे आप कल रात्रि को सुरङ्गकी राहसे

आकर किले में वास कीजिये और मेहमानदारी भी खाइये और दोपहर रात्रि व्यतीत होनेपर मुसल्मानों को मारकर अमरू और मलिका को पकड़ लीजिये परन्तु पहलवान अच्छे २ साथ लेआइयेगा कि वे बहादुरी के साथ मारें तब शाहज़ादों ने ख़्वाजेअबीब को खिलअत देकर जानेकी आज्ञा दी और अपनी सेनाको इन कार्यों के लिये आज्ञा दी वह जिस प्रकार क़िले से आया था उसी प्रकार से चलागया और वेलदारों को बुलाकर सुरङ्ग का दरवाज़ा खोलने की आज्ञा दी तब वेलदारों ने प्रातःकाल होते २ सुरङ्ग का दरवाज़ा खोलदिया और आप शाहज़ादों की मेहमानदारीके लिये भोजन आदि तैयार कराने में संयुक्त हुआ और अपने सरदार को भी आज्ञा दी संयोग से दिलावर नाम उसकी बेटीने पूछा कि आज यह कैसी धूमधाम होरही है मुझको भी वतलाइये तब अबीब ने उसको अपनी वेटी जानकर सब वृत्तान्त रात्रि का उससे कहा और यह भी कह दिया ख़बरदार किसीसे यह बात न कहना परन्तु दिलावर ने इस विचार से कि वृथा इतने मुसल्मानों का पाप इस दुष्ट के शिरपर होगा एक पत्र अमरू के नाम लिखकर अपनी दाई को दिया कि तुम इस पत्र को अमरूके पास लेजाओ वह तुझे बहुत कुछ देगा परन्तु इस पत्र को कोई देखने न पावे उस दाई ने जाकर अमरू को पत्र देकर कुछ ज़बानी भी कहा तब अमरू ने दाई को बहुत कुछ इनाम दिया और दिलावर की बड़ी प्रशंसा करने लगा उसके जाने के पश्चात् आप तख़्त पर बैठा और सब सरदारों को दरबार में आने की आज्ञा दी जब सब आकर बैठे तो पहले आदीने सरदार से कहा कि आज एक स्थानपर नेवता है तुम सबको साथ ले जाकर बहुत अच्छी तरह से भोजन करवादूंगा परन्तु श्रम भी करना पड़ेगा और जो न कर सकेगा तो तेरे पेटसे एक २ दाना चीरकर निकाल लूंगा और बड़ा दण्ड दूंगा आदी ने कहा कि हम तो आपके सेवक हैं जो आज्ञा दीजियेगा वही करेंगे देखिये जब से अमीर गये हैं केवल इक्कीसमन आटा चावल दोनों जून में मिलता है और मैं एकही जून में चखजाता हूं तिसपर भी क्षुधा से तृप्ति नहीं होती परन्तु किसीसे आपके डर से कुछ कहता नहीं जबतक अमीर न आवेंगे तबतक इसी प्रकार से गुज़र करूंगा और आप मुझे पेटभर भोजन करा दीजिये तो देखिये कैसी जवांमरदी करताहूं कि आपभी देखकर प्रसन्न होजावें अमरू चार घड़ी दिन रहे से सरदारों समेत ख़्वाजे अबीबके स्थानकी तरफ़ चला जब ख़्वाजेने सुना कि अमरू की सवारी आती है तब तो अति व्याकुल होगया और कुछ बोल न सका इतनेमें अमरू की सवारी आपहुँची तब ख़्वाजे अबीब ने घर से निकलकर अमरू को सलाम किया और अनेक प्रकार की बातें करने लगा परन्तु दिलसे कांप रहा था कि अब मेरा प्राण न बचेगा अमरू ने पूछा कि मैंने सुना है कि आज आप मुसल्मानों की मेहमानदारी करेंगे हज़रत इब्राहीम की पूजा है तो निश्चय है कि हमलोगोंको भी आज अच्छा २ भोजन मिलेगा ख़्वाजे अबीब इसके सुनने से और भी डरा

रन्तु क्या करे सब सामान होही रहाथा इनकार कर नहीं सका था लाचार होकर हा कि आप तो वली हैं सब जानतेही हैं सत्य है मैं प्रातःकाल से भोजन की तैयारी कररहा था इसी कारण आपके पास नहीं आसका अब आपको कहला भेजता रन्तु बहुत अच्छा हुआ कि बेबुलाये आपही आये यह कहकर उसी स्थान में जिस शाहजादों के लिये तख्त बिछवाकर सजवाया था अमरू को तख्तपर बैठाला और सब सरदारों के लिये कुरसी आदिक बैठने को दियाथा उचित सबको बैठाया तब अमरू ने भोजन मँगवाकर पहले आदीको अच्छी तरहसे खिलवाया तत्पश्चात् और सब सरदारों को खिलवाया तब सायंकाल के समय जब अंधियारा होगया सरदारों को आज्ञा दी कि ख़्वाजे अर्बाब की मुश्कें बांधलो उन लोगोंने आज्ञानुसार बांधलिया तब ख़्वाजे अर्बाब ने अमरू से कहा कि कौनसा अपराध मैंने ऐसा किया है कि जो आपने मेरी मुश्कें बँधवालीं अमरू ने कहा कि नेकीका बदला बदी परन्तु अपनी समझ में मैंने अच्छा किया है तब उसको तो एक कोठरी में बन्द करने की आज्ञा दी और आप सरदारों समेत सुरंगका दरवाज़ा ढूंढ़नेलगा और आदी ने कहा कि वह समय आपहुँचा ऐसा न हो कि सुस्ती करो और कार्य सिद्ध न हो आदी ने कहा कि आप बतला दीजिये तो मैं अपने श्रम का तमाशा आपको दिखलाऊं अमरू ने ढूंढ़कर सुरंग के दरवाज़े पर बैठा दिया और आज्ञा दी कि जो कोई इसमेंसे शिर बाहर निकाले उसका गला पकड़कर दबाकर बाहर निकाललेना और शेष सरदार यहीं खड़े रहेंगे वेभी उसी प्रकार से गला दबाकर कारागारतक पहुँचावेंगे ख़बरदार कोई छूटकर जाने न पावे नहीं तो जैसा खाया है वैसेही बकरी की तरह पेट फाड़कर निकाला जावेगा आदी नानबाइयोंकी तरह पलथी मारकर सुरङ्ग के दरवाज़ेपर बैठगया कि जो कोई शिर निकाले उसे पकड़कर खींचलूं जैसी अमरू ने आज्ञा दी है वैसेही करूं अब थोड़ासा वृत्तान्त शाहज़ादों का सुनिये कि दो घड़ी दिनरहे दशसहस्र सवार और चारसौ पहलवान लेकर सुरङ्ग में धँसे जिस प्रकारसे कोई किसी के यहां बुलाने से मेहमानदारी खाने जाता है निःसंदेह होकर चले और अमरूकी चालाकी सब भूलगये जब समीप आये आदीने अमरू से कहा कि मनुष्यों का शब्द सुनाई देता है और कटक भी विदितहोता है अमरू ने कहा ख़बरदार कोई न छूटनेपावे इतने में एक मनुष्य ने सुरङ्ग के बाहर शिर निकाला आदी ने उसका गला पकड़कर ऊपर खींच लिया और दूसरे सरदार को सौंपदिया उसने उसी प्रकारसे कारागारतक पहुँचाया दूसरेने शिर निकाला उसकी भी वही गति हुई इसी प्रकार से चारसौ पहलवान एक सायत में आदी ने पकड़कर अपने सरदारों को सौंपा और वे उसी प्रकार से कारागार में लेगये और बेड़ियां डलवाकर सिपाहियों को पहरा देने की आज्ञा दी और सबको सुरङ्ग में आनेका फल दिया जोपीन पीछे था उसने विचारा कि कुछ कारण हुआ होगा नहीं तो चारसौ पहलवान अन्दर गयेहैं कोई तो आता इस विचार से थोड़ा सा शिर सुरङ्गसे निकालकर देखनेलगा आदी ने उसका

शिर पकड़ा परन्तु उसने गरदन न निकाली थी इस कारण न पकड़सका और शिर भी हाथ से छूटगया तब ज़ोपीन ने अपने दिलमें कहा कि यह ज़ियाफ़त नहीं है अदावत है तब वह सुरङ्ग की दीवार से पैर अड़ाकर एक एक का नाम लेकर पुकारने लगा कि भाई दौड़ो मेरा शिर पकड़कर कोई ऊपरको खींचताहै बीचनने दौड़कर ज़ोपीनके पैरों को पकड़कर इसज़ोर से खींचा कि उसका शिर आदी के हाथ से छूटगया परन्तु कान ज़ोपीनके आदी के हाथ में रहगये और वह छुटकर भागगया तब उसने सब मनुष्यों से इस भेद को कहा और सबको पलटने की आज्ञा दी आदी ने वे कान अमरू को दिये तब अमरू ने बिचारा कि अब सब जानगये हैं निश्चय है कि पलटजावेंगे तब तो सुरङ्ग में आतशबाज़ी लगवाकर फुंकवानेलगा दशसहस्र मनुष्य जो उसके भीतर धँसे थे सब जलकर रहगये केवल दोनों शाहज़ादे और थोड़े से सरदार बचकर भागगये प्रातःकाल अमरू ने चारसौ पहलवानों को ख़्वाजे अबीब समेत फांसीपर चढ़वाकर खिंचवालिया किसीको जीता न छोड़ा और सुरङ्ग का दरवाज़ा शीशे से बन्द करवाकर सब रास्ते बन्द करवादिये और हरमज़ और जाफ़रांमर्ज़ ने यह सब बृत्तान्त एक विनयपत्रिका में लिखकर साबद नमदपोश के हाथ बादशाह के पास भेजकर अपनी किताब में सब हाल लिखलिया॥ अब थोड़ासा बृत्तान्त अमीर का सुनिये कि आसमानपरी ने ख़्वाजे ख़िजर और मेहतर उलियास के सम्मुख सौगन्दें खाईं थीं कि छः महीने के पीछे मैं आपको परदे दुनिया को भेजदूंगी अब किसी प्रकार से उनकी बात बृथा न करूंगी जब छः मास व्यतीत हुए अमीर ने आसमानपरी से कहा कि अब तो छः महीने होगये हमको अब परदेदुनिया को भेजदो तब उसने कहा कि एक बर्ष और बास कीजिये तो मैं आपको पहुँचादूंगी इसके सुनने से अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि ऐ आसमान परी तुझे ईश्वर का भी कुछ डर है या नहीं कि तू ने दो पैग़म्बरों के सम्मुख वादा किया था कि आपको छः मास के पीछे दुनिया को भेजदूंगी और आज फिर कहती है कि एक बर्ष और बास कीजिये तिसपर भी तू कहती है कि मैं बड़ी सच्ची हूं आसमानपरी ने कहा कि जो मैं झूंठ बोलूंगी तो आपको क्या तब अमीर क्रोधित होकर बादशाह के पास गये और कहा कि ऐ शाहंशाह परदेकाफ़! मैंने कौनसी बुराई की है जो आप मुझे यह दुःख देरहे हैं कि मैं अठारह दिनका वादा करके आया था इतना काल व्यतीत होगया कि आजतक अपने बालबच्चों का कुछ हाल न पाया ईश्वर जाने कि वे किस दुःखमें पड़ेहोंगे कि नौशेरवां बादशाह मेरा शत्रु है वह भी अपनी घात पाकर दुःख देता होगा आप और आसमानपरी ने दो वलियोंके सम्मुख सौगन्दें खाईं थीं कि छः मास के पीछे अवश्य आपको परदेदुनिया में भेजदेंगे वह वादा भी आपका पूरा होगया परन्तु अब आसमानपरी कहती है कि एक बर्ष और बास करो तो मैं तुमको भेजदूंगी सो वही आपसे पूछता हूं कि मेरा प्राण छोड़ियेगा या नहीं बादशाह ने अमीर को समझाया और उसी समय चार

देवों को बुलाकर अमीर को तख़्तपर सवार कराके उनको आज्ञा दी कि तुम लोग अमीर को अच्छी तरह से दुनिया में पहुँचाओ और किसी प्रकार से दुःख न होने पावे यह हाल आसमानपरी को पहुँचा वह अपनी बेटी को भी लेकर अमीर के पास आई और कहनेलगी कि आपको अपनी बेटी की दया है कि इसने कुछ आप को दुःख नहीं दिया अमीर ने कहा कि जब तुम आना तब इसको भी साथ लेती आना और तुम्हारा आना जाना कुछ कठिन नहीं है जब जी चाहे तब चलीआना और जब मुझको बुलाओगी तो मैं भी आऊंगा इस समय मुझे जानेदे यह कहकर देवों से तख़्त उठवाकर चला आसमानपरी रोती हुई अपने स्थान पर गई और रुजबवान् परीज़ादे को बुलाकर कहा कि तू अमीर के पास बिदा करने के हीले से जाकर देवों से कहआ और मेरी आज्ञा सुना कि वे अमीर को दश्तअजायब में छोड़कर चले आवें नहीं तो बालबच्चों से मारे जायँगे वह अति शीघ्रता के साथ उड़कर अमीर के पास जापहुँचा अमीर ने उसको देखकर जाना कि आसमानपरी ने देवों से कुछ कहने के लिये इसे भेजा है देवों से कहा कि तख़्त पलटाकर फिर शहपाल के पास चलो देवों ने कुछ संदेह किया तब तो अमीर ने तलवार मियान से निकाल लिया कि जो न पलटाओगे तो इसी तलवार से तुम सबको मारडालूंगा तब वे लाचार होकर अमीर को बादशाह के पास ले आये बादशाह ने अमीर को देखकर कहा कि कुशल तो है क्यों आप पलट आये अमीर ने कहा कि ऐ बादशाह! मुझे दुनिया में पहुँचाना है या फिर किसी दुःख में डालने को भेजते हैं बादशाह सौगन्द खाने लगा कि मैं अति प्रसन्न हूं कि आप दुनिया में जाकर अपने बाल-बच्चों के देखने से प्रसन्न होवें अमीर ने फिर कहा कि जो आपको मुझे भेजने की इच्छा है तो देवों से हज़रत सुलेमान की सौगन्द लेकर मुझे दुनिया में पहुँचाने के लिये भेजिये बादशाह ने जो देवों से सौगन्दें खाने को कहा तो देवों ने इनकार किया कि हमलोगों को आसमानपरी की आज्ञा नहीं है कि अमीर को दुनिया में पहुँचावें और उसकी आज्ञा के बिरुद्ध हमलोग नहीं करसक्ते हैं बादशाह ने आस-मानपरी से पूछा कि क्यों तू सदैव अमीर को दुःख देती है उसने कहा आपको क्या मेरा पुरुष है मैं नहीं जाने देती अमीर ने तख़्त पर से उतर कर एक शब्द ऐसे ज़ोर से किया कि परदेकाफ़ हिलगया और कहा ऐ आसमानपरी तू ने वलियों के सामने सौगन्दें खाई थीं और अब फिर मुझे धोखा देती है यह अच्छी बात नहीं है ईश्वर तुझे अवश्य दण्ड देगा यह कहकर रोतेहुए सिड़ियों की तरह जङ्गल की तरफ़ चले शहपालशाह ने आसमानपरी से कहा कि तूने मुझे परदे काफ़ में झूठा करदिया अब मेरी बात को कोई न मानेगा आसमानपरी ने कहा कि आपका लज्जित और झूठा होना मुझे क़बूल है परन्तु अमीर की जुदाई नहीं यह कहकर ढिंढोरा पिटवा दिया कि अमीर नगर से बाहरगया है जो कोई उसे बास देगा या उसको देश में पहुँचाने की इच्छा करेगा तो उसको मैं दण्ड दूंगी अब अमीर का

हाल सुनिये कि गुलिस्तान अरम से निकलकर सात दिन जङ्गल में बराबर चलेगये आठवें दिन क्षुधा के कारण गिरकर बेहोश होगये दूसरे दिन होश में होकर उस कलीचे में से जो हज़रत खिज़र ने दिया था निकालकर भोजनकरके मैदानकी तरफ़ देखनेलगे तो थोड़ी समय के पश्चात् देखा कि एकदेव अपूर्वरूप का चलाआता है जिसके डर से पृथ्वी कांप रही है अमीर के समीप आकर सलामकिया अमीर ने पूछा कि ऐ देव! यहां से दुनिया कितनी दूर है मुझे बता उसने कहा ऐ अमीर! जो मनुष्य पैदल जानेकी इच्छा करे तो पांचसौ वर्ष में पहुँचेगा और देव छः महीने में और देवपैकर चालीस दिन में और मुझ ऐसा देव सातदिन में लेजासक्ता है अमीर ने कहा जो तू मुझको मेरे घरपहुँचावे तो बड़ागुण मानूंगा उसने कहा कि जो मुझे फिर इस देश में न आनाहो तो अपने स्वामी की आज्ञा से बिरुद्धकरूं क्योंकि आसमानपरी ने ढिंढोरा पिटवाया है कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुँचावेगा उसके बालबच्चोंतक न छोड़ूंगी अमीर ने उसको अपने समीप बुलाकर सब बृत्तान्त सुनाया देवने कहा कि मैं ऐसा पागल नहीं हूं कि जो आपके पास आऊं और आप मेरे ऊपर सवार हो बैठें और कहैं कि मुझे दुनिया की तरफ़ लेचल तो उस समय मैं क्या उत्तर आपको दूंगा परन्तु लाचार हूं यह कह सलाम करके उड़गया अमीर निराश होकर मन में कहनेलगे कि हमज़ा तुझको कोई दुनिया में न ले जायगा अब तू पैदल चल ईश्वर तुझको पहुँचादेवेगा यह कहकर जङ्गल की राह लेकर कभी हँसते कभी रोते चले पन्द्रहवें दिन एक क़िला दिखाई पड़ा जिसपर जिन्न शिरखोले ईश्वर का ध्यान कररहे हैं और एक देव क़िले को चारों तरफ़से घेरे है अमीर को क़िलेवालों पर दया आई उस देव को ललकार कर कहा कि ओ पापी! क़िलेवालों को क्या घेरे है ख़बरदार हो मैं तेरे प्राण का गाहक पहुँचगया उसने जो देखा तो जाना कि सहायक और नाशकर्त्ता जादू आ पहुँचा तलवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने आतेही अकरब सुलेमानी से उसके दो भाग करदिये और सेना में घुसकर मारनेलगा आधे से अधिक सेनाको मारा शेष भाग गई बादशाह क़िले से निकलकर अमीर से मिले और हाथ पकड़कर क़िले में जाकर तख़्तपर बैठाकर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुखहुए और कहा कि मैं वही जिन्नी सब्ज़क़बा शहपाल का भाई हूं कि जिसको आपने शतरंज सुलेमानी जादू से छोड़ाया था और मेरा प्राण बचा था यह कहकर क़िले सब्ज़निगार में लेजाकर सब छोटे बड़ों से मुलाक़ात करवाई और जो न जानते थे उनसे अमीर क... ...ानये कि वे बयान किया और नाच रङ्ग करवाकर अमीर की मेहमानदारी की ...हाड़ की खोह कि मुझे आपसे भी डर है क्योंकि आप भी तो शहपालशाह के ...तने में अब्दुल- वैसेही आपभी होंगे उसने कहा कि आप क्या कहते हैं? मैं अ... ...ने भी देखा तख़्त मेरा जो आपके काम आवे तो देदूं अमीर ने कहा कि ईश्व... ...ती से लगाया और मित्रों से ऐसे कार्य सिद्ध होते हैं यह कहकर कहा कि प्राण ...तब उसने सब बृत्तान्त

कीजिये कि मुझे मेरे देश को पहुँचा दीजिये तो आपका जबतक जीऊंगा तबतक गुण मानूंगा बादशाह ने शोचकर ख़्वाजेरूफ़ को बुलाकर कहा कि तुम अमीर से कहो कि हमारी बेटी प्राणप्यारी जो तुम पर मोहित है उसके साथ विवाह करो तो मैं आज के नवें दिन आपको परदे दुनिया को भेजदूं इसका मैं वादा करता हूं अमीर ने पहले तो न माना परन्तु पीछे को बादशाह से पहुँचाने का इक़रार करवा कर क़बूल किया तब बादशाह ने बड़ी धूमधाम से तैयारी करके दोनों का विवाह किया और उसको अपना दामाद बनाया रात्रिको जब रैहानपरी और अमीर एक पलंगपर लेटे तो अमीर बीच में तलवार रखकर दूसरी ओर को मुख करके सोरहे और किसी तरह का काम न किया रैहान परी ने जाना कि अमीर के देश में पहले दिन ऐसाही होता होगा संयोग से उस दिन अमीर स्वप्न में मेहर-निगारको देख चौंककर जागउठा और जङ्गल की राह ली प्रातःकालको दादानपरी रैहानपरी की माता जो आई उसने देखा कि बेटी अकेली पलंगपर सोरही है जगा कर उससे पूछा कि अमीर कहां गयें उसने कहा मैं नहीं जानती हूं रात्रिको तलवार बीच में रखकर सोयेथे फिर मैं नहीं जानती कि वे कहां गये मैं भी सोरहीथी उसने क्रोधित होकर बादशाह से जाकर सब हाल कहा तो वह भी क्रोधित हुआ और कहने लगा कि उसे यही करना था तो ब्याह क्यों किया कि मुझको काफ़भर में लज्जित किया कि अमीर सब्ज़क़बा की बेटी के साथ ब्याह करके एक दिन के पश्चात् छोड़कर चलेगये कुछ ऐब होगा नहीं कोई एक दिन की ब्याही दुलहिन छोड़ कर जाता है उसी समय देवों को बुलाकर आज्ञा दी कि तुमलोग जाकर अमीर को ढूंढ़कर लेआओ उनके लेआने में देर न करना अब थोड़ा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन सुर्ख़ पोशाक पहिनकर बादशाह के दरबार में गई और अब्दुलरहमान से पूछनेलगी कि देखो तो आजकल अमीर कहां हैं उसने रमल से बिचारकर और कुछ तो न कहा केवल यही कहा कि जङ्गल २ घूमकर दुःख उठा रहेहैं तुम्हारी कृपा से परन्तु वहभी समीप बैठीथी और रमल जानती थी देखकर कहनेलगी कि हे ईश्वर! जिन्नी सब्ज़क़बाने मेरा कुछ डर न माना और अपनी बेटी का ब्याह मेरे पति के साथ करके अपनी बेटी को मेरी सौत बनाया अच्छा इसका बदला मैं उसको जाकर देती हूं जो मैंने सबको मारकर उसके देश का नाश न करादिया तो आसमानपरी मेरा नाम न रखना यह कहकर सेना को साथ ले सब्ज़निगार की तरफ़ तख़्तपर सवार होकर चली ॥

हे ईश्वर तुझे

की तरफ़ चले आसमानपरी का सेनासमेत क़िले सब्ज़निगार को और नगर लूटकर पराजय

झूठा करदिया अबरकड़लाना बादशाह सब्ज़क़बा उसकी बेटी रैहानपरी समेत और

लज्जित और झूठा हो॰ क़ैदकरना कारागृह सुलेमानी में ॥

ढिंढोरा पिटवा दिया कि॰ है कि जिस समय आसमानपरी क़िले सब्ज़निगार के स-

उसको देश में पहुँचाने की कुछ सौगात लेकर उसकी अगवानी के लिये गया और

बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर अपने क़िले में लेआया तब आसमानपरी ने क़िले में पहुँचकर अपने सरदारों को आज्ञा दी कि सब्ज़क़बा और रैहानपरी की मुश्कैं बांधलो लोगों ने उसकी आज्ञा मानकर बांधलिया आसमानपरी नगर को लूटती हुई गुलिस्तान अरम में उन दोनों को लेकर पहुँची और कई दिनों तक हज़ार २ कोड़े दोनों के लगवाकर कारागार सुलेमानी में क़ैद किया यह हाल बादशाह शहपाल को पहुँचा कि आसमानपरी ने इस प्रकार से सब्ज़क़बा की हुरमत ली है तब तो बादशाह रोता हुआ दौड़ा और जाकर उसको छुड़ा लाया और उस समय आसमानपरी अपने स्थानपर चलीगई थी बादशाह ने उसको अनेक प्रकार से समझाया कि इसने आपको नहीं दण्ड दिया परन्तु मुझको दिया हरप्रकार से शहपाल ने समझाया परन्तु उसके दिल से क्रोध न मिटा क़िले के बाहर आकर पागल की तरह पुकार २ के कहनेलगा कि हे ईश्वर ! जिस प्रकार से आसमानपरी ने मुझको वृथा दुःख दिया है ऐसाही मेरे बदले में तू उसको दे यह कहता हुआ रोते हुए अपने क़िले में आया ॥

अब आसमानपरी दुष्टा का हाल सुनिये कि क़ाफ़ के सात देशों में एक रदशतिरनामें जो हज़रत सुलेमान के पैकरों में था और वह बड़ा बहादुर और लड़का था और हज़रत सुलेमान के जो सात नदियों का देश प्रसिद्ध है उसीमें जिस समय कि हज़रत सुलेमान ने प्राण त्याग किया उस समय से जाकर वहां रहने लगा और वहां दो क़िले बनवाये एक का नाम तो स्याहबूम रक्खा दूसरे का सफ़ेद बूम और कुछ जादू का भी कारख़ाना बनवाया सो अब उसको यह ख़बर पहुँची कि शहपालशाह ने दुनिया से एक मनुष्य बुलवा कर अफ़रेत देव को उसकी माता समेत और बहुत से देवों को मरवाकर जादूके कारख़ाने तोड़वाकर सब देश बसालिया है और गुलिस्तानकाफ़ को भी बरबाद करवादिया इसके सुनतेही आग हो गया और हज़रत सुलेमान का जाल जो किसी युक्ति से उसको मिलगया था लेकर क़िले स्याहबूम से उड़कर गुलिस्तान अरम में आकर सबको बांध लिया और अपने साथियों से उनको दुःख देने के लिये आज्ञा दी परन्तु केवल अब्दुलरहमान अपने स्थानपर चलागया था इस कारण से बचगया और जितने थे कोई उस बला से न बचा यह हाल अब्दुलरहमान को पहुँचा तब तो वह बड़े संदेह में हुआ और रमल से विचारा तो विदित हुआ कि अमीर क़िले के उत्तर दिशा पर हैं उसी तरफ़ तख़्तपर सवार होकर अमीर को ढूंढ़ने के लिये गया अमीर का हाल सुनिये कि वे जब क़िले सब्ज़निगार से निकले तो कई दिन जङ्गल घूमते २ एक पहाड़ की खोह में जो अब्दुलरहमान के स्थान के समीप था आकर बैठे थे कि इतने में अब्दुलरहमान को तख़्तपर सवार आतेहुए देखा और अब्दुलरहमान ने भी देखा तख़्त से उतरकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उठाकर छाती से लगाया और पूछनेलगा कि अब बादशाह ने तुमको क्यों जुदा किया है तब उसने सब वृत्तान्त

शहपालशाह आसमानपरी उकरेशा और सब सरदारों के क़िले सफ़ेदबूम में क़ैद होने का सुनाया तब अमीर ने कहा कि यह झूठ सौगन्द और मेरे दुःख देने का बदला शहपालशाह और आसमानपरी को ईश्वर ने दिया अब्दुलरहमान ने हाथ जोड़कर कहा कि आप सत्य कहते हैं यह उनको ईश्वर ने झूठ सौगन्द खाने का बदला दिया है परन्तु आसमानपरी आपकी स्त्री है इसमें आपही की बदनामी है और जो अपराध किया है वह आसमानपरी ने किया है परन्तु उसकी नेवछावर में सबको छोड़ाइये कि ये बेचारे इस दुःख से प्राण बचाकर आवें प्रथम तो अमीर ने इनकार किया परन्तु पीछे को अब्दुलरहमान की बिनय से कहा कि अच्छा वह क़िला कहां है और वहांतक मैं क्योंकर जासक्ताहूं कि उस क़िले पर जाकर छोड़ाऊं अब्दुलरहमान ने कहा कि वह सात नदियों के पार है और वहां शाह सीमुर्ग़ के सिवाय और कोई पार नहीं जासक्ता वह ऐसा स्थान है अमीर ने पूछा कि वह कहां है अब्दुलरहमान ने कहा कि शाह सीमुर्ग़ के स्थानतक मैं आपको पहुँचा दूंगा और उसका पता भी आपको अच्छी तरह से बतलादूंगा इस प्रकार से अमीर को समझाकर प्रसन्न किया और अपने तख़्तपर सवार कराकर क़िले में लेगया और अनेक प्रकार से मेहमानदारी करके प्रसन्न किया अमीर ने उस क़िले को देखकर कहा कि एक बार और हम इस क़िले में आये थे और उन दिनों में यह क़िला लाऊसशाहलानिसा के पिता के पास था अब्दुलरहमान ने कहा कि सत्य है वह मेरा नायब था और बड़ा बुद्धिमान् था तत्पश्चात् अब्दुलरहमान ने अमीर को तख़्त पर सवार कराकर चार देवों को आज्ञा दी कि अति शीघ्रता के साथ अमीर को शाह सीमुर्ग़ के स्थानपर पहुँचाओ तब उन चारों देवों ने तख़्त उठाया और केवल जल ही में सात दिन रात्रि बराबर उड़ाकर आठवें दिन चार घड़ी दिन चढ़े नदी के पार ले जाकर तख़्त को उतारा और जो चलते २ थकगये थे आराम करनेलगे अमीर ने नदी को जो देखा तो उसकी लहरें आकाश तक ऊंची उठती हैं और मनुष्य तो क्या पक्षी भी देखकर व्याकुल होजाते हैं और नदी के तीर ऐसे बड़े २ वृक्ष थे कि जिनकी डालियां आकाशतक पहुँची थीं और उनकी छाया पांच योजनतक पहुँची थी और वृक्षों के ऊपर एक क़िला बनाथा और वह क़िला अच्छीतरह से सजा था अमीर ने उन जिन्नों से पूछा कि इस क़िले को किसने बनवाया है जो गुलिस्तान अरम से भी उत्तम है उन जिन्नों ने कहा कि यह क़िला नहींहै यह उसी सीमुर्ग़का स्थान है अमीर इस बात के सुनने से बड़े संदेह में हुए तख़्त के लानेवाले जिन्न तो अपने स्थान को चलेगये और अमीर एक वृक्ष के नीचे बैठकर जङ्गल का तमाशा देखनेलगे कि थोड़ी समय के पश्चात् एक वृक्षपर शोरगुल होनेलगा अमीर उस वृक्ष के नीचे जाकर देखने लगे तो बिदित हुआ कि सीमुर्ग़ के बच्चे शोरगुल कररहे हैं सीमुर्ग़ के बच्चों को जो देखा तो उनका धड़ हाथी के तुल्य है परन्तु सब इकट्ठे हो कर चिल्लारहे थे तब अमीर बड़े संदेह में हुआ कि किस वस्तु को यह देखकर डरते हैं

देखते २ जो देखा तो एक अजगर उसी बृक्षपर चढ़ाजाता था अमीर ने उसको तीर से मारकर बरछी की नोक से छेद २ उसके मांसको बच्चोंको खिलाया और उनका प्राण उस अजगर से बचाया उन बच्चोंका जो पेट भरगया तो जाकर सोगये क्षुधा से तृप्त होगये दो घड़ी के पश्चात् सीमुर्ग़ जोड़े समेत अपने बच्चों को भोजन लिये हुए आये तो उस समय बच्चोंको न देखा तो बिचारा कि आज बच्चों को कोई खा गया और सदैव जब वे आने की आहट पाते थे तो झोंझसे बाहर मुख निकालकर देखनेलगते थे अमीर को बृक्ष के नीचे सोते हुए देखकर दोनों आपस में कहनेलगे कि विदित होता है कि यही मनुष्य हमारे बच्चों को खाजाता है और हमको दुःख देता है और आज भी यही खागया नहीं तो बोलते इसको मारडालना उचित है यह एक बच्चे ने सुना और व्याकुल होकर बाहर आकर अपनी भाषा में सब बृत्तान्त सीमुर्ग़ से कहा और उस अजगर के मारेजाने की उसे ख़बर दी तब तो सीमुर्ग़ अमीर से अतिप्रसन्न हुआ और अमीर के ऊपर जो धूप आगई थी एक परसे धूप की आड़ की और दूसरे से वायु करनेलगा अमीर को जो आराम मिला तो नेत्र खुलगये तो अमीर ने उनके मारने के लिये तीर और कमान लेकर सम्हला तब उसने कहा कि ऐ अमीर! अभी तो आपने मेरे बच्चों का प्राण बचाकर मेरे ऊपर अपना यह सलूक किया और अब आप मुझे मारने की इच्छा करते हैं अमीर ने पूछा कि तू कौन है और तूने मेरा नाम क्योंकर जाना? उसने कहा कि मैंने सुलेमान से सुनाथा कि एक मनुष्य परदे दुनिया से किसी समय में आवेगा वह अज़गर को मारकर सीमुर्ग़ के बच्चों की रक्षा करेगा और आदिलकाफ़ उसका नाम होगा और सब देवों का नाश करेगा और जो कोई काफ़ में उससे युद्ध करेगा वही मारा जायगा तब पीछे लोग उसे ज़ुलज़ुलालकाफ़ कहेंगे और उसकी बहादुरी से आश्चर्य करेंगे अमीर ये बातें सुनकर अतिप्रसन्न हुआ अमीर ने पूछा कि यह कौनसा स्थान है? उसने कहा कि इस स्थान का नाम क़ज़ाक़दर है और यह परदेकाफ़ की सरहद से बाहर है और यहां परियोंकी राजधानी नहीं है अमीर ने कहा कि मुझे तुझसे बड़ा कार्य है इसी कारण मैं तेरे पास ऐसा दुःख उठाकर आयाहूं उसने कहा कि मैं सेवक हूं जो आज्ञा दीजिये वही करूं और आपकी कृपा प्राप्त करूंगा अमीर ने कहा कि रदशतिर देवने शहपाल और आसमानपरी को सेनापतियों समेत लेआकर क़िले सफ़ेदबूम में क़ैद किया है इस कारण से तू मुझको वहां लेकर पहुँचादे उसने कहा परदेकाफ़ के देव मेरे शत्रु होजायँगे परन्तु मैं आपको अवश्य वहां पहुँचा दूंगा इतना कार्य आपका मैं करूंगा परन्तु आप सात दिनके लिये भोजन और जल मेरी पीठपर रखलीजिये कि जिस समय भूख लगे तो एक घूंट जल और भोजन मेरे मुख में छोड़ दीजियेगा तब अमीर ने जंगल में जाकर सात नीलगाय का शिकार किया और उनकी खाल खींचकर मशक बनाई और उसमें मिष्टजल भरकरके नीलगाय समेत सीमुर्ग़ की पीठपर रखकर सफ़ेदबूम की तरफ़ चला तब सीमुर्ग़ ने

अमीर से कहा कि आप कोई लोहे का शस्त्र अपने पास न रखियेगा नहीं तो मार्ग में चुम्बक पहाड़ मिलता है वह लोहे के कारण हमको खींचलेगा अमीर ने कहा कि फिर मैं इनको क्या करूं ? उसने कहा कि यहीं छोड़चलिये और एक छोटासा शस्त्र जो मोजे में समासके रख लीजिये तब अमीर ने केवल तमंचा सोहराबका रखकर शेष सीमुर्ग़ को सौंप दिया उसने अपने परों में छिपालिया और अमीर को लेकर आकाश की तरफ़ उड़ा अमीर ने ऊपर से जो देखा तो पृथ्वी एक मुँदरी के तुल्य दिखाई पड़ी और सर्वत्र जलही जल दिखाई पड़ता था तब अमीरने सीमुर्ग़ से पूछा कि इस नदी का क्या नाम है ? उसने कहा सात नदियों में यह पहली नदी है और अभी छः शेष हैं और अतिशीघ्रता के साथ उसके तै करने में श्रम करताथा जब आधी नदी में पहुँचा तब उसको क्षुधा लगी अमीर से कहा कि ऐ अमीर ! अतिशीघ्रही मेरे मुख में भोजन छोड़ो मेरा ज़ोर घटा जाता है क्षुधा दबाये आती है तब अमीर ने एक नीलगाय और एक मशक मिष्ट जलकी उसके मुख में छोड़दी उसने खाकर एक दिन में उस नदी को पार किया दूसरे दिन दूसरी नदीपर पहुँचा अमीर ने सीमुर्ग़ से उसमें अँधियारा देखकर पूछा कि इसमें अँधियारा क्यों है ? उसने कहा कि यह नदी खाककी है और जब आधीनदी में पहुँचा तो फिर उसी प्रकार से भोजन मांगा अमीर ने वही एक नीलगाय और एक मशक जलकी उसके मुखमें छोड़दी और जिस समय उस नदी से पार गया उसी प्रकार से खाते हुए तीसरी और चौथी नदी को पार किया जोकि रुधिर और सीमाबके नाम से प्रसिद्ध थी इसी प्रकार से जब चुम्बकनदी पर पहुँचा तो वह सीमुर्ग़ को अपने तरफ़ खींचने लगा तब तो सीमुर्ग़ ने अमीर से कहा कि आप अतिशीघ्र उस तमंचे को जो आपके मोजे में है फेंक दीजिये उसी के कारण चुम्बक मुझे खींचे जाताहै तब अमीरने लाचार होकर उस तमंचे को फेंकदिया और सीमुर्ग़ उससे पार होकर सातवीं नदी जो अग्निकी थी पहुँचा तब आधीनदी में जाकर अमीर से अन्न जल मांगा अमीरने वही नीलगाय और एक मशक जलकी उसके मुख में छोड़ी परन्तु अग्नि की लपक से हाथको अतिशीघ्रही हटालिया और वह सीमुर्ग़ के मुख में न गया नदी में गिरकर जलगया तत्पश्चात् उसने फिर मांगा तब अमीर ने कहा कि अभी तो मैं तुमको खिलाचुका अब मेरे पास कहां है अब तो सब समाप्त होगये तब उसनें कहा कि मेरे पेट में तो नहीं गया और यही समय श्रम करने का है जो न खाऊंगा तो थोड़ेकाल में गिरपडूंगा अमीर ने देखा कि जो इसको नहीं कुछ खिलाते तो यह हमको लेकर अभी अग्नि की नदी में गिरपड़ेगा अपना कालिचा निकालकर उस के मुख में छोड़कर उसको क्षुधासे तृप्त किया तब वह उड़कर उस नदी से पृथ्वीपर पहुँचा और उतरकर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीर को अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई परन्तु शस्त्रों के फेंकदेने से दुःखित हुए कि इतने में दाहिने तरफ़ से हज़रत ख़िज़र ने आकर सलाम करके सब शस्त्र जो सीमुर्ग़ के स्थानपर छोड़ आये थे और

उस तमंचे समेत जो चुम्बक नदी में फेंकदिया लाकर सामने रखदिया तब तो अमीर अतिप्रसन्न होकर हज़रत के पैरोंपर गिरपड़े और शस्त्रों को उठाकर धारण किया तब तो हज़रत उसी समय चलेगये और अमीर ने मैदान की तरफ़ जो देखा तो दो पहाड़ अपूर्वप्रकार के दिखाईदिये अमीर ने सीमुर्ग़ से पूछा कि ये पहाड़ कैसे दिखाई पड़ते हैं उसने कहा कि ये पहाड़ नहीं हैं ये वही दोनों क़िले हैं एक जो प्रातःकाल की तरह सफ़ेद विदित होता है वह सफ़ेदबूम है और दूसरा जो रात्रि की तरह विदित होता है वह स्याहबूम है तब अमीर ने सीमुर्ग़से कहा अब तुम जाओ ईश्वर मालिक है तब सीमुर्ग़ने तीन पर देकर कहा कि एक पर तो आप दुनिया में पहुँचके अपने घोड़े में लगाइयेगा और दूसरा अमरू मक्कार को मेरी तरफ़ से दीजियेगा और तीसरा जो आपको मेरे बुलानेकी आवश्यकता पड़े तो इसको अग्नि में डालदीजियेगा तो मैं आपके पास आकर पहुँचजाऊंगा जो मैं कहताहूँ यही कीजियेगा यह कहकर सीमुर्ग़ तो अपने स्थान की तरफ़ उड़गया और अमीर उन क़िलों की तरफ़ चले थोड़ी दूर जानेपर एक व्याघ्र अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने अक़रब सुलेमानी से उसके दो टुकड़े करदिया और उसकी खाल इस विचार से खींचकर गले में डालली कि दुनिया में पहुँचकर इसका लबादा बनावेंगे क्योंकि कहीं सुना था कि रुस्तम के गले में व्याघ्र की खाल थी उसको देखकर लोग डरते थे इसी प्रकार से जब अमीर क़िले स्याहबूम के दरवाज़ेपर पहुँचे तो वहां देखा तो न कोई रक्षक दिखाई पड़ता है न और कोई केवल चारसौ देव दरवाज़ेपर बैठे हैं कि कोई नवीन मनुष्य न आने पावे संयोग से उन देवों के सरदार ने अमीर को देखलिया और एकबारगी चिल्ला २ कर कहनेलगा कि बड़ा ग़ज़ब हुआ कि ज़ुलज़ुलालक़ाफ़ यहां भी पहुँचा हमलोगों का प्राण न छोड़ेगा यह कहकर एक तलवार लेकर अमीर के ऊपर ऐसी मारी कि पृथ्वी हिलगई परन्तु अमीर ने उसको रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि उसके दो भाग होगये देवों ने जब अपने सरदार को कुत्ते की मौतकी तरह मरते देखा तो सब अपना प्राण लेकर भागगये और उससमय रदशातिर शिकार खेलने को गयाथा उसी तरफ़ को सब भागे कि उसको जाकर ख़बर देवें और अमीर दरवाज़े पर खड़े होकर विचारनेलगा कि यह नहीं विदित होता कि शहपालशाह और आसमानपरी स्याहबूम में हैं या सफ़ेदबूम में इतने में आकाशवाणी हुई कि शहपालशाह और आसमानपरी सफ़ेदबूम में क़ैद हैं अमीर उस क़िले की तरफ़ चले जब दरवाज़े पर आये तो देखा कि उस क़िले में सौ बुर्ज हैं और बुर्ज़पर कोई देव तो व्याघ्रका शिर कोई घोड़े का कोई सांप आदिक का शिर किये हुए रक्षा कररहे हैं और दरवाज़े पर एक अजगर है जिसके मुख से ऐसी लौ निकलती है कि जङ्गल का जङ्गल जलजाता है और उसका मुख इतना बड़ा है कि उसी के कारण दरवाज़े का रास्ता बन्द है अमीर व्याकुल हुए कि इस के भीतर क्योंकर जावें इतने में आकाशवाणी हुई कि ऐ हमज़ा! इस जादू का

नाशकर्ता तू नहीं है तेरा एकपोता रुस्तम दूसरा उत्पन्न होगा वही इसका नाश करेगा तब अमीर अतिव्याकुल हुए कि अभी तो मैं खुदही लड़का हूं जब मेरे पुत्र होगा और उसके फिर पुत्र होगा तबतक ये बेचारे इस क़ैदही में पड़ेरहेंगे क्योंकर दुःख सहसकेंगे इतने में फ़िर आकाशबाणी हुई कि तू क़ैदियों को छोड़ासक्ता है परन्तु ज़ादू का नाश नहीं करसक्ता है इस मन्त्र को पढ़कर अजगर के मुख में चला जा तू पार होजायगा अमीर ने जो उस मन्त्र को पढ़ा तो अजगर दरवाज़े पर से हटगया और अमीर दरवाज़े से होकर क़िले में गये तो वहां देखा कि एकबाग़ है उसी में शहपालशाह सरदारों समेत बैठे रोरहे हैं अमीर को देखकर लज्जित होकर शिर नीचे करलिया अमीर ने सबको क़ैद से छोड़ाकर आराम दिया और शहपाल शाह से पूछा कि आसमानपरी कहां है ? उसने कहा कि सामने के बुर्ज में क़ैद है अमीर उसका दरवाज़ा तोड़कर भीतर गये तो देखा कि आसमानपरी नीचे को शिर ऊपर को पैर किये हुए लटकाई है और थोड़ासा प्राण रहगया है और उसकी बेटी अपनी माता के सम्मुख खड़ी रोरही है तब अमीर ने उसके भी क़ैद के बन्द काटदिये और सबको लाकर बादशाह के पास इकट्ठा किया तब तो आसमानपरी अतिलज्जित होकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ी और कहनेलगी कि हे अमीर ! अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो अब छःमास व्यतीत होनेपर अवश्य आपको दुनिया को भेजदूंगी अमीर ने कुछ उत्तर न दिया और उसके कहने पर कुछ भरोसा न किया सबको साथ लेकर क़िले से बाहर निकला तो देखा कि रदशतिर कई सहस्र देव साथ लियेहुए गर्जता चलाआता है कि जिसके डर से पृथ्वी हिलरही है अमीर के सम्मुख आकर कहनेलगा कि ऐ मनुष्य ! तूने सब काफ़ के बाग़ों का नाश करदिया और यहां भी आकर मेरे क़ैदियों को छोड़ाये जाता है अब तेरा प्राण न बचेगा अब मेरे हाथ से क्योंकर बचकर जासक्ता है यह कहकर एक पत्थर उठाकर अमीर को मारा अमीर ने उसको रोककर ऐसा एक घूंसा मारा कि वह उसी स्थानपर रहगया तब उसके साथ के देवोंने लाश लेजाकर देवसमुन्द कि जिस के सहस्रकर थे दिया अमीर सबको साथ लेकर गुलिस्तान अरम को चलेआये और सब तरह आराम से रहनेलगे और जब छःमहीने व्यतीत होगये तो एक दिन फिर रात्रि को स्वप्न में मेहरनिगार को देखकर चौंकउठे और रोनेलगे आसमानपरी भी रोना सुनकर जागउठी और अमीर से पूछनेलगी कि क्या है कुशल तो है ? अमीर ने कहा कि अब तू मुझको दुनिया में भेजदे उसने कहा कि एक बर्ष और बास कीजिये अब की अवश्य भेजदूंगी अमीर यह सुनकर क्रोधित हुए और उठकर बादशाह के पास आये और सब अपना हाल कहा बादशाह ने उसी समय अमीर को तख़्तपर बैठाकर चार देवों को आज्ञा दी कि अमीर को लेजाकर परदे दुनिया में पहुँचाआओ हमारी आज्ञा को पूर्ण करो जब अमीर तख़्तपर सवार होकर दुनिया की तरफ़ चले उसी समय आसमानपरी ने एक परीज़ादे से कहा कि तुम अमीर

के समीप अतिशीघ्रही जाकर देवों से कहआओ कि ख़बरदार अमीर को लेजाकर सैरगाह सुलेमानी में छोड़आओ और जो दुनिया में पहुँचाओगे तो दण्ड पाओगे जब मार्ग में अमीर के पास वह देव पहुँचा तो अमीर ने जाना कि इसको आसमानपरी ने देवों से कुछ कहने के लिये भेजा है तब अमीर भी तख़्त पलटाकर शहपालशाहके पास चलाआया और आसमानपरी की बुराई करनेलगा उस समय आसमानपरी भी वहीं थी बादशाह ने क्रोधित होकर कहा कि तू लज्जित तो नहीं होती और बारबार वही बात कियेजाती है आसमानपरी ने कहा कि आप मेरे बीच में पड़कर दुःख न दीजिये मैं आपके कहने से बसा बसाया घर उजाडूं ? अमीर यह सुनकर उठ खड़ेहुए और आसमानपरी को शाप देतेहुए जंगल की तरफ़ चलेगये और बहुत से लोग लिखते हैं कि अमीर ने उसीदिन से आसमानपरी को शाप देकर छोड़दियाथा और बहुतेरे नहीं मानते और लिखनेवाला लिखता है कि अमीर के जानेके पीछे शहपाल भी साधू बनकर पहाड़ में जाकर बैठे थे और आसमानपरी राजगद्दीपर बैठकर राज्यकाज करनेलगी और काफ़ के नगरभर में ढिंढोरा पिटवादियाथा कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुँचाने की इच्छा करेगा उसको मैं बड़ा दण्ड दूंगी तत्पश्चात् अब्दुलरहमान से पूछा कि देखो तो वह स्त्री जिसपर हमजा मोहित है अधिक स्वरूपवान् है उसने विचार कर बतलाया कि वह स्त्री ऐसी स्वरूपवान् है कि उसकी सहेलियां भी आपसे कहीं स्वरूपवान् हैं और वह आजकल क़िले देवदो में है आसमानपरी ने उस क़िलेकी तसवीर खिंचवाकर कई एक देवों को देकर आज्ञा दी कि इस रूप के क़िले में जाकर जहां मेहरनिगार है उसको उठा लेआओ परीज़ादे आज्ञा पातेही क़िले की तसवीर लेकर दुनिया की तरफ़ रवाना हुए अब जबतक वे मेहरनिगार को आसमानपरी के समीप ले आवें तबतक थोड़ा वृत्तान्त मलिकलन्धौर पुत्र सादान का लिखताहूं विदित हो कि जब मलिकलन्धौर क़ैदसे छूटकर आया तब नाच रङ्ग होनेलगा उसी समय में एक देवने देव सफ़ेद के आने की ख़बर दी लन्धौर ने सभा से उठकर सफ़ेददेवके पास जाकर उसको मारडाला लिखनेवाला लिखता है कि उसी युद्ध में लन्धौर ने ऐसा शब्द किया था कि वह शब्द अमीर के कानतक पहुँचा था और सब पहाड़ आदिक कांप उठे थे और अमीर ने भी उसी समय देवशातिर के युद्ध में शब्द किया था जो लन्धौर के कानों तक पहुँचा था परन्तु दोनों व्याकुल थे लन्धौर कहता था कि यहां अमीर कहां ? और अमीर कहता था कि यहां लन्धौर कहां ? जब लन्धौर सफ़ेद देव को मारचुका तब बादशाह से कहा कि अब मुझे मेरे देशको भिजवादीजिये अब तो आपका वादा पूर्ण हुआ बादशाह ने उसी समय लन्धौर को एक तख़्तपर सवार कराकर आराशिव परीज़ाद समेत दुनिया की तरफ़ भेजदिया और देवों को दुनिया में पहुँचाने की आज्ञा दी बहराम ख़ाक़ान शाहचीन का हाल सुनिये कि संगसारों से विजय पाकर दिन रात्रि इसी विचार में रहते थे कि लन्धौर को कौन

लेगया यह दाग़ हमलोगों को लगागया उसदिन भी यही बातचीत होरही थी कि बड़े आश्चर्य की बात है कि लन्धौर का अबतक पता न मिला उनको कहां ढूंढ़ें कि इतने में खुसरो हिन्द का तख़्त आकाश से आकर क़िले में उतरा बहराम दौड़कर लिपटगया और सब मनुष्य आकर लन्धौर के पैरोंपर गिरे और क़िले में ख़ुशीका बाज़ा बजनेलगा और नगारे बादल के समान गर्जने लगे और नाच रङ्ग होनेलगा बहराम ने उसी समय में लन्धौर से कहा कि एक पत्र आकाश से कोई फेंक गया है परन्तु वह किसीसे पढ़ा नहीं जाता तब लन्धौर ने कहा कि लाओ देखें तो जो हमसे पढ़ाजावे तो पढ़ें बहराम ने पत्र मँगवाकर खुसरो को दिया परन्तु उससे भी न पढ़ागया तब आरशिव ने लेकर पढ़ा और कहा कि पत्र मेरी माता ने लिखकर जादू से तुम्हारे पास फेंकदिया था बहराम आरशिव को छाती से लगाकर अति प्रसन्न हुआ और जितने लोग उससमय बैठे थे बहुत प्रसन्न हुए और सब उसकी प्रशंसा करनेलगे और कहनेलगे कि मानों सरंद्वीप आज फिरसे बसाया गया ॥

लोप होना ज़हरमिश्रीका क़ैसरक़िले से और पहुँचना आसमानपरी के पास परदेक़ाफ़पर ॥

अब थोड़ा सा बृत्तान्त अतिदुःखी मलीन बिरहसंयुक्त मलिका मेहरनिगार हमज़ा की स्त्री का सुनिये कि दिन रात्रि अमीर की जुदाई से रोती पीटती थी और न कुछ खाती न पीती और मैले कुचैले छपरखट पर सोती थी और जब ज़हर-मिश्री या और कोई सहेली मुँह हाथ धोने को कहती थी तब रो २ कर धोती थी और जब कोई शृङ्गार करने को कहे तो उसके बदले में रोती थी और महाबिलाप करती थी सरदारों ने देखा कि ऐसा न हो कि इसी प्रकार से यह पागल होजावे उस के दिल बहलाने का उपाय करनेलगे और यही कहते थे कि ऐ मलिका ! बहुत गई थोड़ी रही अब ईश्वर की कृपा से आकर तुम्हारे दुःखको छुड़ाते हैं पोशाक बदल कर भोजन करके चित्त को आनन्दित कीजिये जो आपने प्राण त्याग दिया तो कौन बड़ी बात की अमीर आकर किसको देखेंगे और कौन अमीर को देखेगा? कृपा करके कोठे पर चलिये ठण्डी २ वायु से चित्त को प्रसन्न कीजिये ईश्वर के लिये हमलोगों को दुःख न दीजिये इस प्रकार से कह सुनकर कोठेपर लेगये और हरि-याली खेतों की दिखलानेलगे और इधर उधर की बातचीत करनेलगे कि मलिका का चित्त प्रसन्न होवे इतने में थोड़ा समय ब्यतीत हुआ था कि एक आंधी आई और बादल गर्जनेलगा तत्पश्चात् एक बच्चा आकाश से उतरकर ज़हरमिश्री को जो म-लिका के सामने खड़ी थी उठालेगया कोई तो भागकर सीढ़ियों पर मुख के बल गिरपड़ा और कोई आंख मूंदकर पृथ्वीपर बैठगया सब ब्याकुल होगये किसी को किसीकी ख़बर न रही जब सब आंधी पानी बन्द होगया और लोग चैतन्य हुए तो देखा कि ज़हरमिश्री नहीं है तबतो सब औरही दुःखित हुए अब थोड़ासा बृत्तान्त ज़हरमिश्री का सुनिये कि जब उसने देखा कि मैं तख़्तपर बैठीहूं और तख़्त आस-मानपर उड़ाजाता है और सर्वत्र वस्तु मुझको काली दिखाई पड़ती है तब उसने

देवों से पूछा कि तुम कौन हो और कहां मुझको लियेजातेहो ? उन लोगों ने कहा कि आसमानपरी हमज़ा की स्त्रीने हमलोगों को आज्ञा देकर भेजा है कि तुमलोग जाकर मलिकामेहरनिगार नौशेरवां की बेटी को हमारे पास लेआओ सो हमलोग तुमको उसकी आज्ञानुसार लियेजाते हैं तब तो ज़हरमिश्री ने विचारा कि विदित होताहै कि हमज़ा ने परदेकाफ़ में दूसरा ब्याह करलिया है सो उस स्त्रीने मलिका को मारने के लिये मँगवाया है परन्तु ये उसे पहिंचानते न थे मुझीको मेहरनिगार जानकर उठालाये हैं अच्छी बात हुई कि ईश्वर ने उसको बचादिया मैंहीं उस के बदले में मारी जाऊंगी इसी प्रकार से ज़हरमिश्री जब गुलिस्तान में पहुँची तो सुरमा सुलेमानी उसकी आंखों में आसमानपरी ने लगवादिया तब वह सब को देखने लगी जिस समय उसको आसमानपरी के सम्मुख लेगये तब आसमान परी उसके स्वरूपको देखकर ब्याकुल होगई और कहनेलगी कि तब क्यों न ह- मज़ा इसकी जुदाई के दुःखसे ब्याकुल हो और फिर ज़हरमिश्री की तरफ़ सम्मुख होकर पूछनेलगी कि मेहरनिगार नौशेरवां की बेटी तूही है ? जो सुन्दरता में प्रसिद्ध है और जवानोंको मोहित करलेती है ज़हरमिश्री ने अदब के साथ सलाम करके कहा कि नहीं मैं तो अब्दुलवज़ीर बादशाह मिश्री की बेटी और मक़बूल वफ़ादार पैकर हमज़ा की स्त्री हूं मैं कब मेहरनिगार की बराबरी करसक्ती हूं और मेरा नाम ज़हरमिश्री है और मुझ ऐसी चारसौ सहेलियां उसके साथमें हैं आसमानपरी ज़हर- मिश्री की बातों से अति प्रसन्न हुई और पूछने लगी कि सत्य कहना ज़हरमिश्री तुझे हमज़ा के शिरकी सौगन्द है मैं स्वरूपवान् हूं या मेहरनिगार तेरे समीप दोनों में से कौन अधिक स्वरूपवान् है ज़हरमिश्री ने हाथ बांधकर कहा कि अपराध होता है नहीं तो आपकी सुन्दरता मेहरनिगार की सहेलियों की बराबर भी नहीं है कहां सूर्य कहां एक तारा आसमानपरी उसकी बातों पर अति क्रोधित हुई और जल्लादों को बुलाकर आज्ञा दी कि इसको लेजाकर फांसी दो यह बड़ी बेअदब सभा के योग्य नहीं है संयोग से करीशा जो उन दिनों में सातवर्षकी थी परन्तु सुन्दरता और बुद्धिमानी में प्रसिद्ध थी उस तरफ़ से आनिकली आदमियों का जमाव देख कर हाथ में तमंचा लिये ज़हरमिश्री के पास गई जल्लादों से पूछा कि यह कौन है और कौनसा अपराध किया है ? जो पहरा देते हो उन लोगों ने कहा कि हम कुछ नहीं जानते कि यह कौन है और कौनसा अपराध किया है परन्तु शहपरियों ने आज्ञा दी है करीशाने ज़हरमिश्री से पूछा कि तू कौन है ? उसने सब अपना वृत्तान्त ब्योरेवार सुनाया तब तो वह क्रोधित होकर झुंझुलागई और ज़हरमिश्री को साथ लेकर आसमानपरी के पास आई और उससे क्रोधित होकर पूछनेलगी कि इसने कौनसा अपराध किया है जो परदे दुनिया से इसको मँगवाकर बध कराती है विदित होता है कि जो मलिका मेहरनिगार आती तो उसको भी बध कराती न अमीर से डरती न ईश्वरसे वह भी एक प्रसिद्ध मनुष्य है और तुमसे लाखगुना प्रतिष्ठा और

बल आदिक में बढ़ा है और वह अमीर की प्रथम स्त्री है सब बातों में तुमसे उत्तम होगी क्या करूं ईश्वर से डरती हूं कि तू मेरी माता है नहीं तो एक तमंचा मारकर दो टुकड़े करदेती और कभी किसीसे न डरती आसमानपरी करीशाको क्रोधित देखकर डरगई कुछ न बोली यहांतक कि करीशा ने उसी सायत ज़हरमिश्री को तख़्तपर सवार कराकर उन्हीं देवों को जो लेआयेथे आज्ञा दी कि जहां से लेआये हो वहीं इसको लेजाकर पहुँचाआओ मेरी आज्ञा मानो तब वे तख़्तको उठाकर रवाना हुए संयोग से उसी समय में देव समुन्द जो उसके मार्ग में पड़ता था अपने सरदारों समेत बैठाहुआ शराब पीरहा था उसकी दृष्टि तख़्तपर पड़ी तो अपने सिपाहियों से आज्ञा दी कि दौड़कर उस तख़्त को अतिशीघ्र हमारे समीप लेआओ कौन हैं इस को कहां लियेजाते हैं जब तख़्त को उसके समीप लेआये तब ज़हरमिश्री से पूछा कि तू कौन है और कहां जाती है और तेरा इतना बड़ा मक़दूर कि देवों से तख़्त उठवाती है तब उसने सब अपना वृत्तान्त कहा तब देवसमुंद ने परीज़ादों को तो मारडाला और ज़हरमिश्री को आज्ञा दी कि तू हमारे पुत्रका पलना भुलाया कर और उसको किसी प्रकारसे दुःख न होनेपावे लाचार होकर वह पलना भुलानेलगी और अपनी भाग्यपर रोनेलगी अब ख़्वाजे अमरू का हाल सुनिये कि जब शोर गुल होने लगा महल में गया तो विदित हुआ कि एक बच्चा आकाश से आया और ज़हर-मिश्री को उठालेगया क्रोधित होकर मलिका मेहरनिगार के पास गया और कहने लगा कि हज़ार बार मैंने आपको समझाया कि कोई कार्य्य बे मेरे पूछे न करना परन्तु तुम नहीं मानती हो जो तुमहीं को उठालेजाता तब तो हमारी बारह वर्षकी मेहनत वृथा जाती और लोगों से भी लज्जित होते यह कहकर तीन कोड़े मलिका की पीठमें ऐसे मारे कि वह बेताब होके पृथ्वीपर लोटनेलगी और अमरू से बहुत नाराज़ हुई और अपने चित्त में विचार करनेलगी कि जो हमज़ा से मित्रता न क-रती तो अमरू मुझे क्यों मारता कि इससे बड़े २ मेरे पिता के यहां पैकर हैं यह विचार करके उस समय तो कुछ न बोली परन्तु आधीरात्रि को कमन्द लगाकर क़िले से बाहर उतरी और कुछ दूर अपने भाई के ख़ेमेकी तरफ़ गई परन्तु फिर अपने चित्त में बिचारा कि भाइयों के पास जाना उचित नहीं है एक घोड़ा हरमज़ का सजाहुआ बंधाथा और साईस सोरहा था मरदाना रूप धारण करके मुखपर सेहरा डालकर घोड़ेपर सवार होकर जङ्गल की तरफ़ चली और प्रातःकाल होते पचास कोस निकलगई अमरू का हाल सुनिये कि कोड़े मारकर महल में अपने स्थानपर चलेआये और बिचारा कि सबेरे जाकर मलिकासे अपना अपराध क्षमा करवाकर उसे प्रसन्न करलेंगे परन्तु उसी रात्रि को अमीरने स्वप्न में कहा कि ऐ अ-मरू! तूने मलिकाको ऐसा दुःख दिया कि तेरे कारण क्रोधित होकर जङ्गलकी तरफ़ चलीगई अमरू यह स्वप्न देखकर चौंक उठा और मलिकाके महलमें गया तो देखा कि पलँग ख़ाली बिछाहै और मलिका उसपर नहीं है तब तो इधर उधर ढूंढ़नेलगा

परन्तु कहीं पता न लगा तब तो अतिव्याकुल होकर क़िलेकी दीवारपर जो गया तो देखा कि एकतरफ़ को कमन्द लगी है तबतो अमरूको विदित हुआ कि मलिका इस तरफ़से उतरकर गई है परन्तु यह विदित न हुआ कि किधरको गई अमरूभी कमन्द से उतरकर नीचे गया और मलिका के पैरोंके चिह्न से हरमज़ के खेमेतक गया और वहां जाकर देखा तो कुछ पता न लगा परन्तु एक सवार हाथ में बागडोर पकड़े सोरहा था तब अमरू ने जाना कि मलिका यहांतक आई और यहां से इसी घोड़े पर सवार होकर कहीं चलीगई तब अमरू ने उस साईस से जगाकर पूछा कि घोड़ा तेरा क्या हुआ तब वह उठकर इधर उधर ढूंढ़ने लगा परन्तु कहीं पता न लगा तब उसी घोड़े के सुम के चिह्न से चला कि इसको कहीं ढूंढ़ना चाहिये मेहरनिगार का वृत्तान्त सुनिये कि वह प्रातःकाल होते पचास कोस चलीगई एकाएक बादशाह एलयासतर सलातपूज़क हाथ पर बाज लियेहुए आ निकला मलिका एक वृक्ष की आड़ में होगई परन्तु उसने देखलिया कि एक सवार सेहरा मुँहपर डाले आता है हमको देखकर वृक्ष के आड़ में होगया समीप जाकर पूछा कि ऐ मनुष्य ! तू कौन है कहांसे आताहै और इस जङ्गल में किस प्रयोजन के लिये आया है और तेरा नाम क्याहै ? मेहरनिगार ने कहा कि मुसाफ़िर हूं भाग्य से यहां भी आगया हूं बादशाह ने कहा कि हमारी नौकरी करेगा उसने कहा कि मुझे नौकरी करने की कुछ आवश्यकता नहीं है बादशाह ने बोली से विदित किया कि यह स्त्री है हाथ बढ़ाकर सेहरा मुख पर से हटाकर देखा तो वह ऐसी स्वरूपवान् स्त्री थी कि जो एकबार सूर्य भी दृष्टिसे देखने की इच्छा करे तो चकचौंधी लगे तब बादशाह ने उसी समय घोड़े पर से उतरकर एक महाफ़े में सवार कराया और अनेकप्रकार से फुसिलातेहुए अपने स्थान में लेजाकर एक अति स्वच्छ और बिमल स्थान में उतारा और सब तरह आराम का सामान इकट्ठा करवाकर उसके चित्त को अतिप्रसन्न किया और जिस समय उसके समीप जाकर इच्छा की कि मेहरनिगार के शरीर को छुयें मेहर-निगार ने कहा कि ख़बरदार जो और किसी बात की इच्छा करेगा तो मुझसे बड़ा दुःख पावेगा तब बादशाह लाचार होकर चलाआया और अफ़सोस करनेलगा कि ऐसी स्वरूपवान् परी हाथ भी लगी सो मेरे हाथसे जाया चाहती है संयोग से उसी दिन ख़्वाजानिहाल सौदागर जो पहले बादशाह नौशेरवां के पास नौकर था और उसने मलिका मेहरनिगार को गोदमें लेकर खिलाया था और उससे बड़ा लाभ हुआ था बादशाह के समीप सौगात लेकर आया उसने बादशाह को दुःखित देख-कर पूछा कि आप दुःखित क्यों हैं ? बादशाह ने सब अपना वृत्तान्त कहा कि एक परी मुझे जङ्गल में मिली है परन्तु वह मुझसे राज़ी नहीं होती परन्तु मैं उसके मोह में फँसकर मरताहूं ख़्वाजे निहाल ने कहा कि जो मैं उसे देखूं तो एक मन्त्र पढ़कर आपसे राज़ी करादूं तब बादशाह ने प्रसन्न होकर उसी समय ख़्वाजे को अपने साथ लेजाकर उस स्थान को देखाकर कहा कि इसी स्थान में वह स्त्री है ख़्वाजे

निहालने दरवाज़ेके दरसे देखकर पहिंचान लिया कि मलिका मेहरनिगार है और एकबारगी नाम लेकर पुकारा तब मलिका ने भी पहिंचानकर दरवाज़ा खोलदिया और भीतर आनेकी आज्ञा दी ख़्वाजे भीतर मलिका के पास गया और सर्ववृत्तान्त बिदित करके चुपके से मलिका से कहा कि अब आप दुःखित न हूजिये हम किसी युक्ति से आपको निकाल लेचलेंगे कि इस पापी के हाथ से आपका प्राण बचे मलिका को इस प्रकार से समझाकर आप बादशाह के समीप आया और उससे कहा कि आप अपने रक्षकों को आज्ञा देदीजिये कि मुझे रात्रि दिन इस स्त्री के पास जानेसे निषेध न करें आपकी कृपा से आज के तीसरे दिन आपसे राज़ी करादूंगा बादशाह ने अति प्रसन्न होकर ख़्वाजे निहाल को खिलअ़त देकर अतिप्रसन्न किया ख़्वाजे वहांसे आकर बाज़ार में आकर सौदागरों की दुकानोंमें घोड़े तलाश करने लगे पश्चात् दो घोड़े अतिशीघ्र दौड़नेवाले लेकर उस स्थान पर जिसमें मलिका रहती थी दरवाज़े पर लेगया और उसी रात्रि को एकपर मलिका को सवार कराया और एकपर आप सवार होकर नगर से बाहर निकलकर रात्रिभर चलागया प्रातःकाल बादशाह ने ख़्वाजेनिहाल को बुलवाया तो वह न मिला और उसी समय में सिपाहियों ने आकर ख़बर दी कि वह स्त्री जो आप लेआये थे वह आज नहीं दिखाई पड़ती मकान ख़ाली पड़ा है तब तो बादशाह ने बिचारा कि निश्चय करके ख़्वाजेनिहाल उसको लेभागा उसी समय सेना साथ लेकर उसके पीछे रवाना हुआ दोपहर होते मलिका ने गरद गुबार देखकर ख़्वाजे निहाल से कहा कि ऐ ख़्वाजे! बादशाह आ पहुँचा घोड़े को बढ़ा ख़्वाजा तो उसी गरद गुबार को देखता रहगया परन्तु मलिका जङ्गल में जाकर छिपगई कि इतने में बादशाह की सवारी ख़्वाजे निहाल के समीप आपहुँची ख़्वाजे निहाल जिस प्रकार से खड़ा था वैसेही हक्काबक्का होरहा तब बादशाह ने आकर ख़्वाजे को तो मारकर अपना बदला लिया और मलिका को इधर उधर ढूंढ़कर जब न पता लगा तो लाचार होकर पलटगया और मलिका दूसरे दिन तक बहुत दूर चलीगई परन्तु क्षुधा से अतिब्याकुल होगई जाते२ एक साधू की कुटी पर पहुँची तब तो चित्त ठिकाने हुआ उससे एक तरबूज़ मांगा उसने लाकर कई तरबूज़ दिये और जब मलिका ने सब खालिया और चित्त प्रसन्न हुआ तब उसने कहा कि ऐ प्यारी! जो तू मेरे पास रहे तो मैं तुझको अच्छी तरह से रक्खूंगा और जो तू मांगेगी वही दूंगा मेहरनिगार ब्याकुल हुई कि यह पागल क्या बकताहै इसको क्या सूझी है? उससे पूछा कि तेरे और कोई है उसने कहा कि मेरे दश बेटे ग्यारह बेटी और एक स्त्री है तब मेहरनिगारने कहा कि तेरी स्त्री है तो मैं तेरे पास क्योंकर रहसक्ती हूं? तब उसने कहा मैं स्त्री को छोड़दूंगा तब मेहरनिगार ने कहा कि अच्छा तुम जाकर उसे छोड़आओ मैं यहीं बैठीहूं जब वह अपनी स्त्री को छोड़नेके लिये अपने घरको गया इधर मेहरनिगार सरदे के दाम उसकी कुटीपर रख आप घोड़े पर सवार होकर चलीगई जब वह अपनी स्त्री को

छोड़कर आया और उस परीको न पाया तो चिल्ला चिल्लाकर कहनेलगा कि हाय परी २ तू मुझको छोड़कर चलीगई स्त्री उसकी ज़मींदार को लेकर आई कि उसको चलकर समझावे यहां आकर देखा कि वह हाय हाय करके एक स्त्री के लिये रोरहा है सब लोगों ने जाना कि इसपर कोई पिशाच या भूत चढ़ा है उसकी स्त्री और लड़कों से कहा कि इसकी औषध करो नहीं तो यह सिड़ी होजायगा मेहरनिगार जो वहां से चली तो उसको एक जङ्गल में रात्रि हुई उसमें बहुत से व्याघ्र लंगूर बन्दर आदिक थे जोकि मनुष्य को देखतेही चखजाते थे तब मलिका ने घोड़े को तो एक वृक्ष में बांधदिया और आप एक वृक्ष पर चढ़गई प्रातःकाल एक व्याघ्र आया और मेहरनिगार के घोड़े को मारकर उठा लेगया तब मेहरनिगार ने वृक्ष से उतरकर ज़ीन तो वृक्ष में बांधदी और आप पैदल चली और सायङ्काल को एक नगरी में पहुँची उससे बाहर निकलकर एक बड़ा भारी तालाव था उसके समीप एक वृक्ष था मलिका उसी वृक्ष पर चढ़कर रात्रि भर बैठीरही प्रातःकाल को उस नगरी के चौधरी ने अपनी टहलुई को तालाव से जल स्नान करने के लिये लेआने को भेजा तब उसने जलमें मेहरनिगार के स्वरूप की परछाहीं देखकर जाना कि मेरीही परछाहीं है घमण्ड से घड़ा लेकर पलटगई कि मैं ऐसी स्वरूपवान् होकर पानी भरूंगी जब चौधरी ने पूछा कि जल ले आई तब उसने कहा कि वाह साहब! मैं आपके स्नान करने के लिये ऐसी स्वरूपवान् होकर तालाब से जल लेआऊंगी चौधरी ने फिर उसको धमकाकर भेजा कि अतिशीघ्रही जाकर जल लेआ मुझे स्नान करने के लिये बिलम्ब होती है वह फिर तालाव पर गई मेहरनिगार की परछाहीं देखकर फिर लौट आई और पहलेही की तरह फिर कहनेलगी तीसरी बार फिर चौधरी ने धमकाकर भेजा और फिर पलट आई तब मेहरनिगार ने शोचा कि यहां से अब चलदेना उचित है नहीं तो अब की अवश्य कुछ फ़साद यह बरपा करेगी वृक्ष पर से उतरकर एक तरफ़ को राह ली और उसने फ़िर जाकर वही कहा तब चौधरी ने उसको एक आईना दिया कि इसमें तो अपना स्वरूप देख जब उसने आईने में देखा तो उसे काला स्वरूप दिखाई पड़ा तब चौधरी ने कहा कि इसी स्वरूप पर कहती है कि मैं स्वरूपवान् हूं उसने कहा कि तालाव में तो चलकर देखिये तब वहां से चौधरीजी और दो चार मनुष्य समेत उसके पीछे २ तालाव पर आये तब उसने अपना स्वरूप वैसाही देखा जैसा कि आईने में देखा था बेहयाई से यह कहती गई कि मैं इस प्रकार से स्वरूपवान् होकर ऐसा निकृष्ट कार्य करूंगी तब लोगों ने कहा कि इसको कहीं भूत लगगया है इसकी औषध करनी चाहिये और मेहरनिगार जो वृक्ष से उतर कर चली तो दूसरे दिन एक साधू की कुटी पर जा पहुँची और वह साधू चार सौ ज़मात का स्वामी था मलिका को देखकर पूछनेलगा कि तू कौन है? मेहरनिगार ने कहा कि जुलाहे की बेटी हूं मेरे पिता ने वृद्धअवस्था में ब्याह किया है सो मेरी

ता ने मुझे निकालदिया है वह साधू बड़ा दयावन्त था मेहरनिगार का सुनकर अति दुःखित हुआ और कहा कि मैंने तुझको अपनी बेटी बनाया तू साधुओं को भोजन का भाग लगाकर दिया कर और प्रसन्नता के साथ मेरे स्थान पर बास कर यह कहकर उसको अपने भण्डारे का स्वामी बनाया मेहरनिगार ईश्वर का धन्यबाद करके वहां रहनेलगी अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि मेहरनिगार के ढूंढ़ने को जो चला तो कई दिनके बाद उस बादशाह के नगर में पहुँचा जो मलिका को जङ्गल से लेगया था वहांभी ढूंढ़ ढाढ़कर उस साधू के खेत में आया तो वहां हाय परी २ जो उसके मुख से सुना तो जाना कि यहां भी मलिका आई थी वहां से उस जङ्गल में पहुँचा जहां घोड़े को व्याघ्र ने मारडाला था और ज़ीन को वृक्ष में बांधकर मलिका चलीआई थी अमरू ने ज़ीन को उठाकर ज़ंबील में रक्खा वहां से चलकर उस चौधरी के नगर में आया और वहां से चलकर साधू की कुटी पर आया फिरते २ पीछे को अपने कार्य को सिद्ध किया दूर से जाकर देखा कि मेहरनिगार साधुओं को छांदा बांट रही है आपभी अमरू उनहीं के साथ जाकर बैठगया जब मेहरनिगार उसको भी छांदा देनेलगी तब अमरू ने रोकर कहा कि मैं साधू नहीं हूं मैं आपका पैकर अमरू हूं और अपने अपराध करने के कारण इतना दुःख उठाचुका देश २ की राख उड़ाता आता हूं कि इस जीने से मरना उत्तम है मलिका ने जो अमरू को देखा तो लिपटकर रोनेलगी साधू ने दौड़कर कहा कि बेटी ! ऐसी क्यों रोती हो कुशल तो है उसने कहा कुछ नहीं मेरा पिता यही है तब तो साधू उसे समझाने लगा कि ऐ मनुष्य ! पुत्री को कोई इस प्रकार से रखता है अमरू ने कहा क्या करूं इतना सामान कहां पाऊं कि इसका ब्याह करूं साधू ने पांचसौ रुपया देकर कहा कि अति शीघ्रही जाकर इसका ब्याह करदे कि इससे तू उऋण होजावे अमरू रुपये और मेहरनिगार को वहां से लेकर चला मार्ग में पहुँचकर रुपये को ज़ंबील में रखकर मेहरनिगार को बेहोश करके एक गठरी में बांध कर अपने शिरपर रखकर चला कि इसको क़िले में पहुँचाकर आराम से बैठें परन्तु शाहज़ादों ने भी सिपाहियों से खबर पाई थी कि रात्रि को मेहरनिगार क़िले से निकलकर हमारे खेमेतक आकर मरदाना भेष धारण करके चौकी के घोड़े को ले सवार होकर चलीगई परन्तु यह नहीं विदित होता कि किधर गई और अमरू भी उसके ढूंढ़ने के लिये गया है तब तो सब लोगों ने सलाह की कि इस पहाड़ के रास्ते के सिवा और कोई मार्ग इस दिशा को आनेके लिये नहीं है इसलिये चारसौ सेना उस पहाड़ में जाकर छिपरहें और बराबर से डाक दूतों की बैठादीजावे कि जिस समय अमरू मलिका को लेकर आवे मलिका को छीनलेवें और अमरू को मारडालें और जो जीता पकड़ ले आवे तो अतिही उत्तम होवे और हमलोगों को उसी समय खबर देवे तो हम भी सेना लेकर पहुँचें और सहायता देवें कि उनको खटका न होवे और जिन लोगों को साथ लेजानेके लिये सुना था उनको आज्ञा दी कि सदैव कमर

बांधे तैयार रहें और घोड़ों की बदली हुआ करे तथाच अमरू जब गठरी बांधेहुए पहाड़के समीप पहुँचा तो उसी पहाड़से चारसौ सिपाहियों ने निकलकर चारों तरफ़ से घेरलिया और अमरू को दुःख देनेलगे तब अमरू ने भी तलवार निकाली कि इतने में शाहज़ादों ने जो अमरू के घेरे जानेकी ख़बर सुनी तो उसीसमय सेनासमेत दौड़ धाये अमरू ने जब शाहज़ादों को सेनासमेत आते देखा तब तो व्याकुल हुआ कि एक तो मैं अकेला दूसरे बोझ लिये हूं इससे लाचार हूं यह कहकर ईश्वर २ करने लगा कि इतनेमें नक़ाबदार चालीस सहस्र सेनासमेत आपहुँचा और जहांदार और जहांगीरकाबुली और ज़ोपीन को मारकर हरमज़ व जाफ़रांमज़ की सेनाको व्याकुल करदिया और बहुत से मारेगये और बहुत से भागगये तब शाहज़ादे जहांदार और जहांगीर की लोथको लेकर रोते पीटते अपने स्थानपर चलेगये और नक़ाबदार अमरू को क़िलेतक पहुँचाकर अपने स्थान को जिधर से आया था उधरही चला गया अमरू क़िले में जाकर मलिका को महल में करके अपना अपराध क्षमा करवा कर आराम से बैठा अब इनका वृत्तान्त छोड़कर अमीर का हाल सुनाते हैं कि जब अमीर गुलिस्तान से निकले तो चालीस दिनतक विक्षिप्त की भांति जङ्गल २ फिरा किये इकतालीसवें दिन सावधान होकर एक क़िले के निकट पहुँचे लेकिन क़िले का दरवाज़ा बन्द था और उसके चारों ओर देव घेरेहुए खड़े थे अमीर ने जाकर ऐसे ज़ोरसे शब्द किया कि क़िला हिलनेलगा और सुननेवाले बधिर होगये और जो सम्मुख खड़े थे भागगये और देवोंके सेनापति ने अमीर को देखकर पहिंचाना और सम्मुख आके कहनेलगा कि हे बलबुद्धिनिधान ! आप परदेकाफ़ के बाग़ों को उजाड़कर और देवों का नाश करके यहांभी आपहुँचे मैं तुमको अच्छे प्रकार जानताहूं परन्तु आज तुम मेरे बश में आये हो अब जीते न जाने पाओगे यह कहकर एक खड्ग अमीर के शिरपर मारा पर अमीर ने उसको रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि उस देव का एक हाथ व शिर अर्द्धकटि तक कटिके पृथ्वीपर गिरपड़ा और शेष सेना उसको देख डरकर भागगई और उस क़िले में गावपात्रों की जाति के लोग रहते थे जिनके बादशाह का नाम तुलू था क़िले से बाहर निकलकर अमीर को बड़ी प्रतिष्ठा से सम्मुख होकर अपने स्थान में लेगया और बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की अमीर ने मेहमानदारी के पश्चात् उससे पूछा कि तू मुझको मेरे स्थानपर पहुँचासक्ता है उसने कहा कि पहुँचा क्यों नहीं सक्ता परन्तु आसमानपरी ने यह ढिंढोरा फिरवाया है कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुँचावेगा उसको मैं बड़ा दण्ड दूंगी लेकिन मेरी कन्या के साथ आप अपना ब्याह करें तो यह भी स्वीकार है उसने कहा कि मुझे यहां के लोगों का कुछ बिश्वास नहीं है इसवास्ते मैं ब्याह नहीं करूंगा तब बादशाह ने कहा अगर ब्याह नहीं करते तो मेरे शत्रुरुख़पक्षी को मारकर मुझे आनन्दित कीजिये इन दोनों बातों में से एक पर भी आप आरूढ़ हों तो मैं आपको पृथ्वी पर पहुँचाकर आसमानपरी की बदनामी अपने ऊपर

सकता हूं अमीर ने उत्तर दिया कि दूसरी बात मुझे मंजूर है चलके उसका स्थान मुझे दिखा तुलू ने अपने आदमियों को अमीर के साथ करके आज्ञा दी कि इनके साथ जाकर दूसरे रुख़ का स्थान दिखाओ अमीर ने जाकर एक सफ़ेद कूचा देखकर पूछा कि यह कूचा कैसा है ? उन लोगों ने कहा कि यह उसी पक्षी का अण्डा है जो तुलू बादशाह का शत्रु है और उसीके डरसे बादशाह व्याकुल रहता है विदित हुआ कि इस समय वह कहीं चरने को गया है तब अमीर उसके अण्डे के समीप जाकर बैठरहे कि जब आवे तो पकड़ने की कोई युक्ति करें जब वह पक्षी आकर अपने अण्डेपर बैठा और उसके ऊपर पर फैला लिया तब अमीर ने अपने चित्त में विचार किया कि यह बड़ा बलवान् है इसका वश में आना दुर्लभ है और निश्चय है कि यह दुनिया में भी जाता होगा इससे यही अच्छा है कि इसके पैर में लिपटकर ज़ोर से शब्द करें तब यह व्याकुल होकर दुनिया की तरफ़ उड़कर जावेगा इसीके साथ हमभी दुनिया में पहुँच जावेंगे यह विचारकर अमीर उसके पैर में लिपटगये और वह बहुत ज़ोर से उड़ा परन्तु जब अख़ज़र समुद्र के मध्यमें पहुँचा तो अमीर के हाथ में इस ज़ोर से चोंच मारी कि अमीर का हाथ उसकी टांग से छूटगया और दुनिया के पहुँचने की इच्छा रहगई और अमीर का नीचे पहुँचना था कि ख़्वाजे अख़ज़र और ख़्वाजे आलियास ने ईश्वर की आज्ञा से हाथों हाथ लेकर पृथ्वी पर लेटादिया कि आराम पावे किसी प्रकार से दुःख न उठावे परन्तु अमीर उसके दुःख से बेहोश होगये अब थोड़ा सा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन उसने अब्दुलरहमान से पूछा कि देखो तो अमीर दुनिया में पहुँचगये या हमारे देश में हैं अगर दुनिया में पहुँचे तो किस प्रकार से अब्दुलरहमान ने रमल से विचारकर कहा अमीर गावपायों के क़िले तक गया था तो देखा कि तुलूबादशाह को देवों ने चारों तरफ़ से घेरलिया था अमीर ने सबको मारकर हटादिया तब बादशाहतुलूने क़िले से बाहर निकलकर अमीर की बड़ी प्रशंसा की और हाथ पकड़कर अपने क़िले में लेजाकर कई दिनतक मेहमानदारी की तत्पश्चात् एक दिन अमीर ने कहा कि तू मुझको दुनिया में पहुँचासक्ता है तब उसने आपकी आज्ञानुसार कर कहा कि मैं आसमानपरी की आज्ञा के विरुद्ध नहीं करसक्ता हूं परन्तु जो आप मेरी बेटी के साथ व्याह करें लेकिन अमीर ने स्वीकार न किया तब उसने फिर कहा कि जो आप मेरी बेटी के साथ व्याह करना स्वीकार नहीं करते तो मेरा एक शत्रु रुख़नाम पक्षी है उसीको मारडालिये तो मैं आपको दुनिया में पहुँचादूंगा अमीरने दूसरी बात स्वीकार की और कहा कि तुम हमको उसका स्थान चलकर दिखलादेओ तथाच उसने अमीर को उसके स्थानतक पहुँचादिया परन्तु अमीर ने वहां जाकर विचारा कि यह दुनिया की तरफ़ भी अवश्य जाता होगा इससे इसीके पैर को पकड़कर दुनिया की तरफ़ उड़कर चलेजावें जब वह आया तो अमीर ने उसका पैर पकड़कर ऐसे ज़ोर से शब्द किया कि वह व्याकुल होकर उड़ा

और जब समुद्र अख़ज़र में पहुँचा तो ऐसे ज़ोर से अमीर के हाथ में चोंच मारी कि उसका पैर अमीर के हाथसे छूटगया और अमीर समुद्र में गिरपड़े यह सुनकर आसमानपरी बहुत रोई और उसी समय करीशह को आज्ञा दी कि तू सेना लेकर गावपावों को जाकर मारडाल और तुलू बादशाह को पकड़ला और आप अख़ज़र समुद्र की तरफ़ चली परन्तु हज़रत अख़ज़र और अलियासके सामने लज्जित होकर अमीर के समीप गई जब अमीर सावधान हुए तो हज़रत अख़ज़र से आसमानपरी का बड़ा गिल्ला किया तब उन्होंने कहा कि अमीर बहुत गई थोड़ी रही अब न घबराइये अभी आसमानपरी आई थी परन्तु हमलोगों को देखकर लज्जित होकर पलट गई तब अमीर ने कहा कि आपलोग मुझको कृपा करके क़िले गावपाव में पहुँचादेओ उन्होंने अमीर की आज्ञानुसार वैसाही किया जब अमीर वहां गये तो देखा कि सब नगर वीरान पड़ा है एक पक्षी भी नहीं दिखाईपड़ता तब अमीर ने हज़रत से पूछा कि हज़रत! इस क़िले के सब मनुष्य कहां गये जो दिखाई नहीं पड़ते इसके देखने से तो चित्त व्याकुल होता है ख़्वाजे ख़िजर ने कहा कि यह सब दुःख जो तुम पर पड़ा है यह सब अब्दुलरहमान ने आसमानपरी से कहा है सो उसी ने करीशहको भेजकर इस नगर को फुंकवादिया और जितने मनुष्य मिले सबको ढूंढ़कर मरवा डाला है यह कहकर हज़रत ख़िजर तो वहीं से अन्तर्धान होगये और अमीर तीन दिनतक अकेले उस नगर में रहकर चौथे दिन एक जङ्गल की तरफ़ चले और सात दिन तक बराबर चलेगये आठवें दिन एक नगर के क़िले में पहुँचे समीप जाकर देखा तो विदित हुआ कि मदायन का क़िला है और उसी प्रकार से सब स्थान बने हुए हैं परन्तु मनुष्य कोई नहीं दिखाईदेता तब तो बड़े आश्चर्यमें हुए कि मनुष्य यहां से कहां चलेगये वहां से निकलकर मेहरनिगार के स्थानपर गये तो अपने हाथ के दोहे तक लिखेहुए दीवारोंपर देखे परन्तु कोई मनुष्य न दिखाई पड़ा वहां से चलकर जब बाग़ में आया तो देखा कि एक देव बड़ा भारी खड़ा है अमीर को देख हँसकर कहनेलगा कि ओ मनुष्य! मुझको इस क़िले में मनुष्यों के बसाने की इच्छा है और रात्रि दिन इसी विचार में रहताहूं कि इस क़िले को मदायन एक क़िला जो दुनिया में है उसी तरह से बनवाया है और मनुष्यों से आबाद करूंगा और दो मनुष्य मैं दुनिया से लायाहूं परन्तु तू आपही आया इस कारण तुझको इस क़िले का बादशाह करूंगा और सब देश तुझको दूंगा अमीर ने पूछा कि यह कौन देश है उसने कहा कि क़ाफ़ तब अमीर ने कहा कि तू मुझको भी जानता है कि मेरा नाम क्या है? उसने कहा कि मैंने केवल आजही तुझको देखा है किस तरह से पहँचानसक्ता हूं अमीर ने कहा कि ज़ुलज़ुलालक़ाफ़ मेराही नाम है और मेरा बल जगत् में प्रसिद्ध है तब उसने पूछा कि अफ़रेत और उसके माता पिता को तूही ने मारा है अमीर ने कहा कि अफ़रेत क्या सब देवों का नाश किया है तो उसने कहा कि तो तू इस क़िले का भी नाश करेगा इससे मैं तुझको मारकर क़ाफ़

के देवों का बदला लेताहूं यह कहकर एक पत्थर लेकर अमीर के ऊपर देमारा तब अमीर ने उसको रोककर एक हाथ ऐसा मारा कि वह समाप्त होगया वहां से चल कर एक दालान में गया तो वहां देखा कि दो लड़के अति स्वरूपवान् बैठे हैं अमीर ने पूछा कि तुम कौन हो उन्होंने कहा कि हम एक सौदागर के पुत्र हैं पिता हमारा मरगया है यह देव जिसका यह स्थान है हमको उठालेआया है और इस दुःख में डालदिया है अब आप बतलाइये कि आप कौन हैं? अमीर ने कहा कि मेरा नाम हमज़ा है परन्तु लोग ज़ुलज़ुलालकाफ़कोचक सुलेमान कहते हैं और वलवीरता में प्रसिद्ध हूं दुनिया से आकर मैंने सब परदेकाफ़ के देवों का नाश करदिया है और इस देव को जो तुमको उठालाया है अभी मारकर आते हैं अब तुमलोग निःसं-देह रहो तुमको हम दुनिया में पहुँचा देवेंगे इतना तुम्हारा भी कार्य करेंगे तब तो वे लड़के अति प्रसन्न होकर अमीर के पैरों पर गिरपड़े अमीर ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? एकने कहा कि मेरा नाम ख़्वाजे आसोच है दूसरे ने कहा कि मेरा नाम ख़्वाज़े बहलोल है अमीर ने कहा कि ईश्वर की कृपा से दुनिया में पहुँचकर एकको वज़ीर बनाऊंगा दूसरे को बख़्शी करूंगा उन्हों ने कहा कि जब दुनिया में पहुँच जावेंगे तब वज़ीर और बख़्शी कहलावेंगे पहले तो हमलोगों का दुनिया में पहुँचना दुर्लभ है इसी दुःख में मरजावेंगे अमीर ने उनको समझाकर कहा कि ईश्वर की कृपा से अतिशीघ्रही तुमको लेकर दुनिया में चलेंगे इस दुःख से छोड़ा-वेंगे यह कहकर उनको साथ लेकर चला और क़िले से बाहर निकल एक वृक्ष के नीचे बैठकर उन लड़कों को भी भोजन दिया और आपभी खाया तब तो वे लड़के अतिप्रसन्न हुए और दो घड़ीतक बैठेरहे कि इतने में एक देव तलवार हाथ में लिये हुए अमीर के सम्मुख आकर कहनेलगा कि ऐ मनुष्य! तू बड़ा दुष्ट है कि मेरे रक्षक को मारकर इन दोनों लड़कों को लेकर चलाजाता है और मुझको न डरा तू मेरा नाम नहीं जानता कि मुमारदेव है मुझसे अधिक बलवान् देव काफ़ में नहीं है अ-मीर ने पूछा कि यह क़िला मदायन के तुल्य तूने बनवाया है उसने कहा यह क्या जितने स्थान हज़रत सुलेमान के परदेकाफ़ में है वह सब मेरेही हाथ के बनवाये हुए हैं और ये कारख़ाने सब मैंने बनाये हैं अब तू बतला कि तेरा क्या नाम है और यहां क्यों आया? अमीर ने कहा कि आसमानपरी जो परीज़ादों के बादशाह की बेटी है उसका मैं पति हूं और ज़ुलज़ुलालकोचक सुलेमान मेरा नाम है और मेरी प्रबलता और बहादुरी तुम्हारे जगत् में प्रसिद्ध है तब उसने कहा कि काफ़ के बाग़ों का आपही ने नाश किया है परन्तु आपकी मृत्यु हमारे हाथसे थी वही आपको खींच ले आई है यह कहकर एक तलवार अमीर के शिरपर मारी अमीर ने रोककर एक हाथ अक़रब सुलेमानी का ऐसा मारा कि उसके दो भाग होगये लड़कों ने जो अ-मीर की बहादुरी देखी तो प्रसन्न होकर कहनेलगे कि वाह साहब! आप तो बड़े बलवान् हैं अब हमलोग आपहीके साथ रहेंगे जहां चलोगे वहीं चलेंगे और आपही

की आज्ञा में रहेंगे विदित होता है कि आप अपने नामों के प्रताप से ऐसे २ देवों को मारसक्के हैं नहीं तो मनुष्य को इतनी शक्ति कहां होसक्ती है कि देवों से जीतसके हम अपना भी यही नाम रक्खेंगे इसी प्रकार से बातें हँसने की करतेहुए लड़कों समेत चले वे लड़के भी अमीर से अतिप्रसन्न हुए तब अमीर ने उस व्याघ्र की खाल जिसको क़िले स्याहवूम में मारा था दो भाग करके दोनों को देकर एक का जहांदार क़लन्दर दूसरे का जहांगीर क़लन्दर नाम रखकर दोनों की प्रतिष्ठा समान रक्खी जब अर्ध भूगोल पर पहुँचे तो अमीर व्याघ्रछाला बिछाकर लेट गये और ठण्ढी २ वायु में निद्रा आगई थोड़ी समय में सोगये तब वे लड़के एक नदीपर जो उसी वृक्ष के समीप थी जाकर स्नान करने और खेलनेलगे अचानक एक देव जङ्गल से निकला तो उन लड़कों ने कहा कि वह मन्त्र याद है चलो इस देव को मारें नदी से निकलकर ललकारकर कहा कि ओ देव! कहां आता है अभी तेरा नाश करदेताहूं तू जीता न जानेपावेगा हम ईश्वर के सेवक हैं तुमलोगों को अच्छीतरह से जानते हैं यह कहतेहुए उसकी तरफ़ चले और जब देखा कि यह देव कुछ हमारी बातों को सुनकर डरता नहीं और बराबर चलाआता है तब तो डरगये और दौड़कर अमीर को जगादिया और सब हाल कहा अमीर ने देखा कि एक बड़ा भारी देव चलाआता है जब अमीर के समीप आया तब अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर उसको देमारा और छातीपर चढ़कर एक खंजर मारकर दो टुकड़े करदिये और उसको उठाकर फेंकदिया और लड़कों से कहा कि ख़बरदार फिर कभी ऐसा साहस न करना नहीं तो वृथा तुम्हारा प्राण जायगा इन देवों के हाथ से किसी प्रकार से न बचोगे यह कहकर सब दिशाको चले पांचवें दिन नदी के तीर एक नाव माल से पूर्ण देखकर उसके समीप जाकर मल्लाहोंसे पूछा कि यह नाव किसकी है और कहां जायगी? उन्होंने कहा कि यह नाव समीद सौदागर की है दुनिया की तरफ़ जाती है अमीर ने कहा कि हम तीन मनुष्य भी दुनिया को चलेंगे नाव पर सवार कराओ जो किराया मांगो वह हम देवें उनलोगोंने कहा कि आप लोगों को चढ़ाकर दुनिया में पहुँचाना यह मेरे अधीन नहीं हमारा स्वामी बैठा है उससे जाकर यह बातचीत कीजिये वह आपलोगों को नावपर सवार करालेवेगा तब अमीर ने आकर ख़्वाजेसमीद से वही बातें कहीं ख़्वाजे ने कहा कि किराया क्या है? आप मेरी बेटी के साथ व्याह करलो हम आपको दुनिया में पहुँचादेवें और किसी प्रकार से दुःख आपको न होनेपावेगा अमीर ने कानोंपर हाथ रखकर कहा कि यह मुझसे न होगा तबतो सौदागर उसकी बातें सुन प्रसन्न हुआ और अमीर भी उठकर चलेआये परन्तु उन दोनों लड़कों ने सौदागरसे कहा कि जो तुम हमलोगों का भी व्याह करदो तो हम अमीर का व्याह तुम्हारी बेटी के साथ करवादें सौदागर ने कहा कि मुझे यह भी स्वीकार है तब लड़कों ने आकर अमीर से कहा कि आप व्याह क्यों नहीं करते कि एक स्त्री भी पाते हो और अंत में दुनिया

में पहुँचते हो वहां पहुँचकर कैसे २ मज़े पाओगे अमीर ने कहा कि हम ब्याह न करेंगे उन लड़कों ने कहा कि आपको ब्याह करना पड़ेगा अमीर ने कहा क्या तुम्हारी ज़ोरावरी से ब्याह करनापड़ेगा अमीर उनकी बातें सुनकर हँसनेलगे और कहा कि अच्छा जो तुमलोगों को दुःख न होवे तवतो वे लड़के अतिप्रसन्नता के साथ उस सौदागर के समीप दौड़े गये और उससे कहा कि आप सब सामान ब्याह का इकट्ठा कीजिये अमीर को आपकी बेटी के साथ ब्याह करना स्वीकार है तो सौदागर ने उसी समय सब सामान करके अमीर का ब्याह अपनी बेटी के साथ और उन दोनों लड़कों का ब्याह एक दूसरे की लड़कियों के साथ करदिया तीनों मनुष्य अपनी २ स्त्री के साथ रात्रिको सोये प्रातःकाल उठकर देखा तो आसमान-परी अमीर के बग़ल में सोरही है और वह सौदागर जो था वह अब्दुलरहमान है अमीर इसको देखकर बड़े आश्चर्य में हुए और पहले एक वेर अमीर ने आसमान-परी को तलाक़ देकर छोड़दिया था इस कारण अब्दुलरहमान ने फिरसे आसमान-परी का ब्याह अमीर के साथ करादिया तब आसमानपरी अमीर के पैरोंपर गिरकर रोनेलगी कि मेरा अपराध क्षमा करो और अब्दुलरहमान भी अमीर के पैरोंपर गिर पड़ा और कहनेलगा कि अबतक जो अपराध हुआ वह क्षमा कीजिये अब जो अप-राध हो तो दण्ड दीजियेगा और आसमानपरी कहनेलगी कि अब आपको अवश्य दुनिया को भेजदूंगी इसीप्रकार से प्रार्थना करके अमीर को लड़कों समेत गुलि-स्तानअरम में फिर लौटालेआये और छः महीनेतक आसमानपरी के साथ सुख उठाया तत्पश्चात् एक दिन अमीर ने आसमानपरी से कहा कि अब मुझको तू दु-निया में भेजदे यहां बड़ा दुःख होता है वहां जाकर अपने लड़के वालों को देखकर चित्त को प्रसन्न करूं आसमानपरी ने कहा कि ईश्वर की कृपा से कल प्रातःकाल आपको रुख़सत करूंगी और यह तो बतलाइये कि फिर कभी यहां आकर अपना स्वरूप मुझको देखलाओगे या नहीं अमीर ने कहा कि हे मलिकाक़ाफ़ ! जिस प्र-कार से यहां से मेहरनिगार के देखने की इच्छा होती है उसी प्रकार से वहां से तुम्हारे देखने की इच्छा होगी आसमानपरी अमीर की बातोंसे अतिप्रसन्न हुई और प्रातःकाल तख़्तपर बैठाकर उन्हीं चारों देवों को जो सदैव अमीर को लेजाया करते थे बुलाकर पारितोषिक देकर आज्ञा दी कि अमीर को लेजाकर दुनिया में पहुँचा आओ और इनको किसी प्रकार से दुःख न होने पावे यह आज्ञा देकर सब उत्तम २ वस्तु तख़्त पर रखवाकर अमीर ने इच्छा की कि तख़्त पर सवार होकर चलें कि इतने में चारसौ देव और जिन जो शहपालशाह के पाले थे रोते पीटते आकाश से आकर उतरे आसमानपरी यह हाल देखकर व्याकुल होगई और पूछनेलगी कि कुशल तो है उन देवों ने कहा कि शहपालशाह का स्वर्गवास होगया हमलोग आप के पास चलेआये यह सुनकर आसमानपरी तख़्त परसे नीचे गिरपड़ी और सब क़ाफ़के वासी स्याहपोश होगये और शोर गुल होनेलगा रोते २ सब बेहोश

होगये आसमानपरी ने हाथ जोड़कर अमीर से कहा कि जिसप्रकार से आप सत्रह बर्ष यहां रहे उसी तरह से चालीस दिन और रहिये जब मैं शहपालकी क्रियाकर्म से छुट्टी पाऊंगी तो आपको चालीस दिन के पश्चात् आकर बिदा करूंगी अमीर ने कहा कि अच्छा तुम जाओ मैं यहां रहूंगा जो तुम कहती हो वही करूंगा आसमान-परीने कहा कि ऐसा न हो कि तुम दुःखित होकर कहीं चलेजाओ और मुझको फिर दुःख उठानापड़े सलासलपरी को आपके पास छोड़ेजाती हूं जो चित्त न लगे तो इससे कुंजियां लेकर सुलेमान के अजायबखाने में जाकर चित्त बहलाना यह कहकर शहपालशाह की लोथ लेकर सेहरिस्ताननज़री की तरफ़ रवाना हुई वहां पहुँचकर सब छोटे बड़े जाकर इकट्ठा हुए और चालीस दिनतक मातमपुरसी करके काले बस्त्र पहिनेरहे अमीर का हाल सुनिये कि दो तीन दिन तो रहे चौथे दिन घबराकर बाहर जाने की इच्छा की तब सलासलपरी ने अमीर से कहा कि जबतक आसमान-परी न आवे तबतक आप अजायबखाने सुलेमानी में जाकर दिल बहलाइये यह कहकर एक कुंजी अमीरको दी और कहा कि आप अजायबखाने सुलेमानी में जा कर सैर कीजिये अमीर ताला खोलकर अन्दर गये तो अन्दर जातेही दरवाज़ा अँ-धियारे से बन्द होगया एक सायत के पश्चात् अँधियारा दूर होगया तो एक बड़ा भारी मैदान दिखाई पड़ा तब उस मैदान की तरफ़ जो गया तो एक तख़्त जड़ाऊ दिखाई पड़ा और उसपर एक गुलदस्ता आधा लाल और आधा सुर्ख़ रक्खा था अमीर ने उठाकर जो सूंघा तो बेहोश होगया और तख़्तपर गिरपड़ा स्वप्न में देखा कि एक बड़ाभारी क़िला है और उसमें बड़े २ स्थान बने हैं क़िले में जो गये तो देखा कि एक बन अतिउत्तम है और उसमें एक स्त्री युवा अतिस्वरूपवान् है लि-बास पहिनेहुए तख़्तपर बैठी है अमीर उसको देखकर अति मोहित होगये तब उस ने चारसौ परियों को नाचने गाने की आज्ञा देकर हरएक प्रकार से अमीर के दिल को प्रसन्न किया इतने में उसके पिता की आमद हुई तब उसने अमीर से कहा कि अब मैं कहां जाकर छिपूं अमीर ने कहा कि क्यों डरती है जिस प्रकार से बैठी है उसी प्रकार से बैठीरह पिता तेरा आताहै तो आनेदे कुछ संदेह न कर इतने में पिता उसका आया और अपनी बेटी को अमीर के पास बैठेहुए देखकर अमीर के क़दमों पर गिरकर सलाम किया अमीर ने उसको छाती से लगाकर पूछा कि आपने मुझको क्योंकर पहिंचाना है उसने कहा कि मैंने बृद्धों से सुना था कि जल-जलालकाफ़ किसी समय में यहां आकर सुलेमानी अजायबखाने की सैर करेगा और बहुतसे देवों का नाश करेगा और मनुष्य को कहां शक्तिहै कि यहां आवे और देवों का नाश करे अमीर उससे अतिप्रसन्न हुए और उसकी बेटी के साथ अपना ब्याह किया और सात बर्ष तक अमीर वहां रहे इसी में दो पुत्र भी हुए एक दिन अ-मीर अपनी स्त्री समेत उस नहर के तीरपर बैठे ठंढी २ हवा ले रहेथे कि उसने अमीर से कहा कि हे अमीर! इसमें मेरी हवेल गिरी है तुम जाकर निकाल

लेआओ तो बड़ी कृपा करो अमीर उसमें डुब्बी मारकर जो निकले तो वही कोठरी है और सलासलपरी सामने खड़ी है अमीर ने ब्याकुल होकर कहा कि मैं फिर उसी कोठरी में जाऊंगा वहां मेरे दो पुत्र हैं उन्हीं में मेरा प्राण लगा है और सात बर्षतक वहां रहा न नहर में डुब्बी मारता न यहां आता सलासलपरी ने कहा कि किसके लड़के किसकी लड़कियां वह सुलेमानी अजायबात है और केवल एक पहर आपको गये हुआ चलिये सायंकाल हुआ अब भोजन कीजिये वह सब जादू थी उसमें ऐसी २ बातें दिखाई पड़ती हैं उन सबको अपने चित्तसे दूर करदीजिये कल दूसरी कोठरी में जाकर देखिये इस प्रकार से अमीर को समझाकर महलसराय में लेआई और भोजन कराकर चित्त को प्रसन्न किया प्रातःकाल उठकर अमीर अपने नित्यनियम से छुट्टी पाकर एक दूसरी कोठरी में गये थोड़ी दूर जाकर मैदान में एक तख़्त पड़ाहुआ देखा और उसपर एक मूर्ति रक्खी हुई थी उसको उठाकर देखनेलगे कि इतने में बेहोश होकर पृथ्वी पर गिरपड़े सुध बुध सब जाती रही उसी बेहोशी में देखा कि एक बाग़ है और उसमें बहुत सी स्त्रियां जमा हैं और वही स्त्री जिसकी तसवीर देखकर बेहोश होगये थे नाच रही है और स्त्रियां गा बजारही हैं और बहुतसी स्त्रियां एक तरफ़ जुदा खड़ी हैं अमीर को देखकर बरछी लेले दौड़ीं और अमीर भी अक़रबसुलेमानी लेकर दौड़े तब वे सब ब्याकुल होकर भागीं इतने में अमीर के नेत्र खुल गये तो न कहीं स्त्रियां न नाच न राग न वह बाग़ है सलासलपरी केवल सामने खड़ीहै अमीर उसे देखकर बड़े आश्चर्य में हुए और महलसराय की तरफ़ देखने लगे कि इतने में सलासलपरी भी उस कोठरी को बन्द करके सामने आकर खड़ीहुई अमीर ने भोजन मँगवाकर खाया और रात्रि को आराम से सोरहे तीसरे दिन तीसरी कोठरी की सैर को गये तो थोड़ी दूर जाकर राह भूलकर एक रेगिस्तान में जापड़े और सूर्य की गरमी से ब्याकुल होगये और सात दिन तक उसी में हैरान रहे आठवें दिन नई तरह का एक देव दिखाईपड़ा जिसने अमीर को उड़ाकर कहसाके बराबर लेजाकर पृथ्वी पर छोड़दिया इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि न कहीं रेगिस्तान है न देव है वही स्थान और सलासलपरी सामने खड़ी है तब अमीर ने सलासलपरी से सब हाल कहा तब उसने कहा कि इन कोठरियों में इसी प्रकार की अपूर्व बस्तु विदित होती है कि मनुष्य देखकर ब्याकुल होजाताहै परन्तु किसी प्रकार से दुःख नहीं पाता इसी प्रकार से अमीर ने उन्तालीस दिन में उन्तालीस कोठरियों की सैर करके अपूर्व २ बस्तु देखकर चित्त को प्रसन्न किया चालीसवें दिन अमीर ने सलासलपरी से कहा कि चालीसवीं कोठरी को भी खोल दे कि इसके भी तमाशे को देखकर चित्त को आनन्द करूं उसने कहा कि इसकी कुंजी मेरे पास नहीं है इसको मैं नहीं खोलसक्ती हूं कि यह ज़िन्दान सुलेमानी है अमीर ने धमकाया तब उसने फिर कहा कि इसकी कुंजी मेरे पास नहीं है परन्तु अमीर ने सहज़ोरी से उसके

हाथ से सब कुंजियों को छीनकर उसको खोलकर भीतर गये और सलासलपरी
आसमानपरी के पास दौड़ीगई और कहा कि अमीर ने सहज़ोरी से हमसे कुंजी
छीनकर चालीसवीं कोठी में गये हैं मेरा कहना नहीं माना रावी लिखताहै कि जिस
समय अमीर चालीसवीं कोठरीमें गये तो देखा कि हज़ारहों देव और परीज़ाद क़ैद
हैं सबों ने आकर अमीर से सलाम करके कहा कि जुलज़लालकाफ़ आप कृपा
करके हमलोगों को इस कारागार से छुड़ाइये अमीर ने पूछा कि क्योंकर तुमलोगों ने
हमको पहिंचाना कि हमीं जुलज़लालकाफ़ हैं उन लोगों ने कहा कि इसमें बहुत से
हज़रत सुलेमान के क़ैदी हैं और यहां का क़ैदी कभी नहीं जीता छूटता है परन्तु
एक दिन हज़रत सुलेमान ने अपने मुखारविन्द से कहा था कि किसी समय में
जुलज़लालकाफ़ दुनिया से आकर हमारे क़ैदियों को छुड़ावेगा इस कारण हमलोगों
ने जाना कि आपही हैं सो कृपा करके ईश्वर के लिये हमलोगों को इस कारागार
से छुड़ाकर पुण्य लीजिये अमीर को उन सबपर दया आई तो एक तरफ़ से सब
की बेड़ियां काट २ कर छोड़दिया तब हरएक अमीर के क़दमों पर गिर २ कर
अपने २ स्थान को चलेगये उसके बाद अकस्मात् अमीर के कान में एक घोड़ेकी
टाप का शब्द पहुँचा तो अमीर उस तरफ़ गये तब देखा कि एक बछेड़ा अतिशोभा-
यमान चितकबरे रङ्ग का चररहा है अमीर को देखकर कूदने फांदनेलगा अमीर
उसको देखकर अतिप्रसन्न हुए वह घोड़ा पीछेको कूदते २ अमीर को एक लात मार-
कर भगा तब अमीर बेताब होगये फिर क्रोधित होकर उसके पीछे दौड़े वह
भागके एक मकान में घुसगया अमीर भी उसीके पीछे चलेगये परन्तु उस स्थान में
अँधियारा था तिसपर भी शजरचिराग़ हाथ में लेकर चले थोड़ी दूर के जानेपर एक
शब्द आया कि हे स्वामी ! अब बड़ा दुःख हुआ अब आकर हमको इससे छुड़ाओ
तब अमीर जो उसकी तरफ़ गये तो देखा कि आरनातीस और लानिसा बैठे हुए
रोरहे हैं अमीर ने कहा कि तुम ठहरेरहो अभी हम आकर तुमको क़ैद से छुड़ाते
हैं इस बछेड़े ने हमको लात मारी है इसको मारकर अभी आते हैं तब लानिसा
और आरनातीस ने कहा कि यह आपको जानता नहीं था यह मेरा पुत्र है आप
इसका अपराध क्षमा करें तब तो अमीर संदेह में होकर कहनेलगे कि तुम देव और
तुम्हारी स्त्री परी घोड़ा क्योंकर तुम्हारा पुत्र है इसका वृत्तान्त मुझको सुनाओ तब
उन्होंने सब वृत्तान्त सुनाकर कहा कि इसका नाम हमने असकर रक्खा है फिर
आरनातीस ने उसको बुलाकर अमीरके क़दमोंपर गिराकर अपराध क्षमा करवाया
फिर अमीर ने उनको क़ैद से छुड़ाकर आज्ञा दी कि तुम यहीं बैठे रहो हम आगे
सैर करके आते हैं यह कहकर आगे जो गये तो देखा कि एक मकान में दो
ज़ादे उलटे टँगे हैं अमीर उनको भी छोड़कर आगे जो बढ़े तो देखा कि रहिया
परी और कमरचेहरा जिसके साथ अमीर ने ब्याह किया था वह भी उसी
में क़ैद है और दुःख के मारे व्याकुल है अमीर भी देखकर रोनेलगे तब उनको

ने छुड़ाकर लानिसा और आरनातीसको भी साथ लेकर कोठरीसे बाहर आये और उस रात्रि को आसमानपरी के बिस्तरे पर उन दोनों को साथ लेकर सोये ईश्वर की कृपा से दोनों उसी रात्रि को गर्भिणी होगईं रावी लिखता है कि रहियानपरीसे जो पुत्र उत्पन्न होगा उसका नाम दुरदुरपोश होगा और कमरचेहरे के पुत्र का कमरज़ादा नाम रक्खाजावेगा और उसका बयान आगे लिखाजावेगा फिर अमीरने उन दोनों परीज़ादों को रुख़सत किया और वे अपने स्थान को गये अमीर ने आरनातीस से पूछा कि अब तो मुझे दुनिया में पहुँचादो उसने कहा कि हम तैयार हैं इसलिये तब अमीर लड़कों को लेकर तख़्तपर बैठे और वे दोनों कंधेपर रखकर आकाश की तरफ़ उड़े और पहरदिन रहे जाकर एक नदी के तीर उतरे तो वहां अमीर ने एक स्थान अतिउत्तम बनाहुआ देखकर अतिप्रसन्न होकर उसमें जाकर वास किया फिर मालूम हुआ कि यह हज़रत सुलेमान का शीशमहल है और संसार में प्रसिद्ध है और इसमें रात्रि को दीपक की कुछ आवश्यकता नहीं पड़ती इसी भांति की बातचीत करते २ चार घड़ी रात्रि रहे सब लोग सोगये लेकिन असकर वनकी तरफ़ चरने को चलागया उसको वहां रहना न प्रसन्न किया अब थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि जब आसमानपरी ने चालीस दिनके पश्चात् शहपाल शाह की क्रियाकर्म से छुट्टी पाकर सब छोटे बड़ोंको यथाउचित पारितोषिक और ख़िलअत दे रुख़सत करके गुलिस्तान अरम को आती थी मार्ग में सलासलपरी ने सलाम करके विनय किया कि अमीर ने सुलेमानी कारागार में जाकर सब क़ैदियों को छोड़दिया और मेरा कहना नहीं माना तब आसमानपरी ने कहा कि अति उत्तम किया अब हज़रत सुलेमान की आज्ञानुसार होगया फिर उसने कहा कि आरनातीस और लानिसा को भी छोड़दिया तब भी आसमानपरी ने कहा कि अच्छा हुआ तब फिर सलासलपरी ने कहा कि रहियानपरी और कमरचेहरे को भी छोड़ दिया इसपर आसमानपरी ने कहा कि यह बुरा किया मेरे शत्रुओं को न छोड़ता तो अच्छा करता फिर पूछा कि क्या हुआ सलासलपरी ने कहा कि मेरे सामने तो इतनीही बातें हुई थीं और ईश्वर जाने क्या हुआ होगा ? इतने में दूसरी परी ने आकर ख़बर दी कि आपके पलंगपर अमीर रहियानपरी और कमरचेहरे को साथ लेकर सोये और रात्रिको ख़ूब मज़ा उठाया और उनको रुख़सत करके आप लानिसा और आरनातीस से तख़्त उठवाकर दुनिया की तरफ़ गये यह सुनकर आसमानपरी क्रोध के मारे जलनेलगी और कहनेलगे कि मैंने तो ख़ुद इच्छा की थी कि अब अमीर को दुनिया में भेजदूं परन्तु उसने न माना और मेरी सेजपर मेरी सवतियों को लेकर सोया तो अब मैं भी उनको अच्छी तरह से दुःख दूंगी जैसा वे मुझे जलारहे हैं यह कहकर सेनासमेत तख़्तों पर सवार होकर अमीर के ढूंढ़ने को चली जाते २ जब शीशमहल में पहुँची तो विदित हुआ कि अमीर इसीमें हैं लानिसा और आरनातीस की जो मौत आई थी तो आसमानपरीने पहले उसी स्थान

में जहां वे दोनों सोते थे जाकर दोनोंको मारकर अपने हौसिले को पूरा किया वह
से उसी तरह रुधिर से तलवार भरेहुए अमीर के पास आकर इच्छा की कि अमी
को भी इसी तलवार से मारे परन्तु करशप ने तलवार छीनलिया और क्रोधित ह
कर कहनेलगी कि तू मेरी माता है नहीं तो इस खंजर से तेरी आंतों का ढेर क
देती तेरा इतना बड़ा मुँह कि मेरे सामने मेरे पिता के शिरपर तलवार चलाये यह
सुन आसमानपरी चुप होरही और एक पत्र लिखकर अमीर के पलंगपर रखके
गुलिस्तान अरम को चलीआई और एक दिन भी वहां न ठहरी प्रातःकाल जब
असकर जङ्गल से चरकर आया तो अपने माता पिता को मराहुआ देखकर रोनेलगा
उनके दुःख में अपना प्राण देनेलगा इतने में अमीर भी जागउठे तो देखा कि ला-
निसा और आरनातीस के शिर कटेहुए अलग पड़े हैं तब बहुत प्रकार से असकर
को समझाकर कहा कि ईश्वर की रचना अपूर्व है उसमें किसीका कुछ वश नहीं है
ईश्वर की आज्ञा में किसीका चारा नहीं जो मुझको विदित होता कि किसने मारा
है तो मैं अभी जाकर उसको मारता तेरे माता पिता का अवश्य बदला लेता
अब तू अपना माता पिता मुझीको समझ मैं तुझको अपने पुत्र की तरह रक्खूंगा
किसीप्रकार से दुःख न होनेपावेगा तिसपीछे देखा कि एक पत्र पलंगपर रक्खाहुआ
है उसमें लिखाहै कि इसबार मैंने आपही इच्छा की थी कि तुमको दुनियाकी तरफ़
भेजदूं और अपनी बातको पूर्ण करूं परन्तु विदित होताहै कि अभी आपका आब
दाना क़ाफ़ से नहीं उठा न उठेगा और इन आपके दोनों कामोंने मुझको बड़े दुःख
दिये एक तो मेरे पलँगपर मेरी सवतोंको लेकर सोना दूसरे मुझसे छिपाकर दुनिया
की तरफ़ जाना सो पहले के बदले में मैंने इच्छा की थी कि आपको भी आरना-
तीस और लानिसाकी तरह एकबारगी मारडालूं परन्तु आपकी पुत्री करीशह से
मजबूर हुई कि आपके बदले में युद्ध करनेको आरूढ़ होकर मेरे हाथसे तलवार छीन
कर मेरे साथ बहुत बुरी तरह से सम्मुख हुई और दूसरे के बदलेमें मैंने आरनातीस
और लानिसा को मारकर अपना बदला किया और अब आपको देखती हूं कि दु-
नियाको क्योंकर जातेहो कौन पहुँचाता है अमीर पत्र को पढ़कर सुन्न होगये और
सातदिवसतक वहीं लानिसा और आरनातीस के दुःखमें ठहरेरहे और आठवें दिन
नेत्रों में आंसू भरकर कहनेलगे कि अब हम दुनियामें न जासकेंगे आसमानपरी के
हाथ से बचकर जाना दुर्लभ है विदित होताहै कि इसी क़ाफ़ में पड़ारहूंगा और
यहीं मेरी मृत्यु होगी असकरने सुनकर अमीर से कहा कि आप क्यों मलिन होते
हैं मैं आपको दुनिया में पहुँचादूंगा आसमानपरी से न डरूंगा आप मेरी पीठपर
सवार होकर चलिये अमीर ने कहा कि इन दोनों लड़कों को क्या करूं उसने कहा
कि इनको भी अपने साथ सवार करलीजिये अमीर ने दो छीके बनाकर उन दोनों
लड़कों को बैठाकर रकाब की तरह दोनों तरफ़ लटकाकर आप उसकी पीठपर स-
वार हुए असकर अमीर को लेकर दिन भर में हज़ार कोस लेजाता था और एक

यत में एक मंज़िल तै करजाता था इसी प्रकारसे नदीके पार होगया जब पृथ्वीपर
हुँचा तो अतिशीघ्रता से दौड़ा चलागया पहर दिन रहे नूरपहाड़पर पहुँचा तब वहां
मीर लड़कों को लेकर उतरपड़े तो देखा कि उसी खोह में से हज़रत खिज़र और
लियास इन्हीं की तरफ़ चलेआते हैं अमीर दौड़कर उनके क़दमों पर गिरपड़े
और अपना वृत्तान्त कहकर कहा कि ऐ हज़रत! मैं आसमानपरी से बहुत दुःखित
यहां अब मेरा चित्त नहीं लगता उन्होंने कहा कि हे अमीर! अब न घबराओ
अबकी अवश्य दुनिया में जाकर अपने बाल बच्चों को देखकर चित्तको प्रसन्न करोगे
वलो हमारी माता कि जिसका नाम बीबी आसफ़ाबासिफ़ है आपको बिदा करनेको
बुलाया है आपके ऊपर उन्होंने बड़ी कृपा की है तब अमीर दोनों लड़कों समेत
पहाड़पर गये तो देखा कि पहाड़पर एक मण्डपहै और उसमें रोशनी आपही आती
जाती है उसके भीतर जो गये तो देखा कि एक वृद्धा स्त्री हाथ में माला लियेहुए
बैठीहै और ईश्वर का भजन कररही है अमीर उसको देखकर बड़े संदेह में हुए
और नम्रता के साथ प्रणाम करके उसके समीप बैठे तब बीबी आसफ़ा ने शिर
छाती से लगाकर कहा कि ऐ पुत्र! मैं तेरे देखने की बड़ी इच्छा रखती थी बड़ी बात
हुई कि तू मेरे पास आया और अपना सब हाल सुनाया अब ईश्वर की कृपासे
अतिशीघ्रही दुनिया में पहुँचेगा यह कहकर एक सवागज़की कमन्द देकर कहा कि
यह कमन्द मेरी तरफ़से अमरू को देकर कहदेना कि यह कमन्द मेरे हाथ की
बनीहुई है इसको अच्छीतरह से अपने पास रखना इससे तुझको बड़ा सुख होगा
और अनेकप्रकार के तमाशे यह दिखलावेगी जब इच्छा करेगा तो इससे देवोंको
बांधलेगा यह हरप्रकारसे सहायक होगी और जब इसको मन्त्र पढ़कर फूंकेगा तो
हज़ार रङ्ग की होजावेगी यह कहकर फिर कहा कि आज तुम हमारे यहां रहकर
मेहमान्दारी खाओ अमीर ने अङ्गीकार किया प्रातःकाल जब अपने निमाज़ पढ़ने
से छुट्टी पाई तो ख़्वाजाख़िज़र ने कहा कि ऐ अमीर! इस घोड़े के पैरोंमें नाल अ-
वश्य चाहिये नहीं तो यह काफ़ के जङ्गलों को तै न करसकेगा यह कहकर असक़र
के दोनों पर काटकर उसकी नाल लगाकर कीलें जड़दिया अमीर ने कहा कि ऐ
हज़रत! यह परकी नाल कबतक रहेगी इससे क्या पुष्टता होगी ख़्वाजे ने कहा कि यह
आपकी ज़िन्दगी भर इसके पैरोंसे न छूटेगी और जब इसके चौथे पैरकी नाल गिरे
तो जानना कि अब हमारी अवस्था समाप्त हुई अब अवश्य हमारी मृत्यु होगी
और एक ज़ीन अमीर को देकर कहा कि यह ज़ीन इसके ऊपर कसो इसे सिकन्दर
बादशाह ने सात देशों का कर लगाकर बनवाया था तब अमीर ने लेकर उस ज़ीन
को असक़र पर कसकर चलने को आरूढ़ हुए और हज़रत की कृपा पर बहुत ईश्वर
का धन्यबाद किया अब थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनाताहूं जिस समय
आसमानपरी शीशमहल से गुलिस्तानअरम को पलटकर गई तो कई दिनों के बाद
सुर्ख़ पोशाक पहिनकर तख़्त पर बैठकर अब्दुलरहमान से पूछा कि कुछ हमज़ाका

हाल बताओ कि कहां है और क्या कररहा है ? उसने रमल म विचारकर कहा कि
अमीर जाते २ पहाड़नूरपर पहुँचे और वहां से बीवी आसफ़ा की इच्छा है कि
अमीर को दुनियापर भेजें यह सुनकर आसमानपरी क्रोध से लाल होगई और
कहनेलगी कि वह मेरी सवत होकर मेरे पुरुष को विना मेरी आज्ञा दुनियाको भेजने
की इच्छा रखती है यह कहकर तख़्त मँगवाकर सवार होकर हवाकी तरहसे जाकर
कोहनूरको घेरलिया और तलवार लेकर बीवी आसफ़ाके सम्मुख जाकर कहा कि
क्यों बीवी ! तुझे कुछ मेरा डर नहीं है कि तूने विना मेरी आज्ञा मेरे पुरुषको दु
निया की तरफ़ भेजने की इच्छा की तुम नहीं जानती हो कि मैं बड़ी क्रोधवन्त हूं कि
मैंने अपने वृद्धों को थोड़ीसी बातमें वे हुरमत करडाला है और तुमको तो मैं कुछ
समझतीही नहीं बीवी आसफ़ाने उसकी इस प्रकार की बातें सुनकर कहा कि ऐ
पगली क्या बकती है ? मैं तुझे क्या जानती हूं ? तू कुछ मेरा करसक्ती है जो तेरा
शरीर भस्म होजावेगा जो तू ईश्वर से नहीं डरती है और मुझसे ऐसी २ बातें
करती है बीवी आसफ़ा ने ज्योंहीं यह मुखसे कहा कि उसके शरीर से अग्निकी
लपकें निकलनेलगीं और वह चिल्लानेलगी अब्दुलरहमान ने दौड़कर करशिया से
कहा कि तू अतिशीघ्रही जाकर अमीर के पैरों पर गिरकर विनय कर कि वे आस
मानपरी का अपराध बीवी आसफ़ा से कहकर क्षमा करावें नहीं तो थोड़ेही काल
में आसमानपरी जलकर ख़ाक होजायगी तब वह जाकर अमीर के पैरोंपर गिरपड़ी
और कहनेलगी कि बाबा जान ! ईश्वर के लिये माता का अपराध क्षमा करो और
यह मेरा कहना करो अमीर ने जाकर आसफ़ा बीवी से उसका अपराध क्षमाकरने
के लिये प्रार्थना की तब उसने अमीर के कहने से अपने वज़ू का पानी आस
मानपरी के ऊपर छिड़का तब उसका प्राण जलने से बचा और व्याकुल होकर
पृथ्वीपर गिरपड़ी तब परियों ने उसको तख़्तपर लेटालिया और गुलिस्तान अरम
को उठालाईं फिर बीवी ने उस दिन भी अमीर को न जानेदिया और प्रातःकाल
होतेही हज़रतख़िज़र से कहा कि तुम जाकर हमज़ा को रुधिर की नदी से पार
करआओ इतनी मेरी आज्ञा मानो फिर अमीर ने बीवी से प्रणाम करके लड़कों
को छीकों में लटकाकर आप अशकरपर सवार होकर हज़रतख़िज़र के साथ रवाना
हुए और चौदह पन्द्रह कोसतक चलेगये तब नदी दिखाई पड़ी कि उसका दूसरा
किनारा किसीको न दिखाई पड़ता था और देखने से लोग व्याकुल होजाते
थे हज़रतख़िज़र ने अमीर से कहा कि रुधिर की नदी जो तुम सुनते थे वह यही
है तुमलोग अपने नेत्रों को मूंदलो इस तरफ़ न देखो तब अमीर ने लड़कों समेत
अपनी २ आंखों को बन्द करलिया हज़रतख़िज़र ने सात पैग जाकर कहा कि अब
आंख खोलदो तब अमीर ने नेत्रों को खोलकर देखा तो विदित हुआ कि नदी से
पार उतर आये और हज़रतख़िज़र नहीं हैं लिखनेवाला लिखता है कि अमीर
चालीस दिन तक बराबर कूच करते चलेगये एकतालीसवें दिन अख़ज़र नदीपर

हुँचे तो देखा कि एक अपूर्वप्रकार की नदी है कि कोई दूसरा किनारा नहीं विदित होता और डरके मारे कोई वहां एक सायत नहीं ठहरता तब तो अमीर किनारे २ दशदिन तक चलेगये तब एक क़िला दिखाई पड़ा तो वहां ठहरकर उस क़िले को देखनेलगे विदित हुआ कि यह गवसा का क़िला है इतने में एक मनुष्य ने अमीर को देखकर पहिंचाना और जाकर अपने बादशाह से अमीर के आने की ख़बर की तब वह बादशाह जिसका समरात नाम था क़िले से बाहर निकल आया और अमीर के क़दमोंपर गिरकर अमीर को अपने क़िले में लेजाकर कई दिनों तक मेहमानदारी की तत्पश्चात् अमीर ने एक दिन उससे कहा कि तुम हमको इस नदी के पार उतारसक्केहो? उसने कहा कि हम क्यों नहीं उतारसक्के परन्तु जो आप मेरी बेटी आरदाना के साथ ब्याह करें तो आपको मैं इस नदी से पार उतारदूं अमीर ने इन्कार किया परन्तु उन दोनों लड़कों ने समरातशाह से कहा कि तुम ब्याह का सामान करो हम अमीर को राज़ी करलेवेंगे बादशाहने अपने सरदारों को ब्याह के सामान इकट्ठा करने की आज्ञा दी और लड़कों ने अमीर को समझाकर उसके साथ ब्याह करवादिया और रात्रि को जब वह अमीर के साथ पलँगपर सोई तो उसने चाहा कि अमीर के गलेमें हाथ डालकर बोसा लेवें कि अमीर ने एक ऐसा घूंसा मारा कि उसके अगले दांत टूटगये तब वह रोतीहुई अपनी माता के पास जाकर सब बृत्तान्त कहा तब बादशाह उन दोनों लड़कों को बुलाकर कहने लगा कि यह अमीर ने क्या किया कि बृथा मेरी बेटी का दांत तोड़डाला उन लड़कों ने कहा कि आप नहीं जानते हमारे देश में यही रस्म है कि पहली रात्रिको जब स्त्री पुरुष साथ सोते हैं तब दो दांत तोड़कर दूसरे दिन आधी नदी में जाकर उसके साथ भोग करते हैं कि सदैव यादगारी रहे तब उन देवोंने जाना कि सत्य होगा इनके देश में ऐसाही होता होगा उसी समय एक नाव मँगवाकर सब सामान रखवाकर अपनी लड़की को सवार करवाकर लड़कों से कहा कि तुम जाकर अमीर से कहो कि वेभी सवार होवें तब वे दोनों लड़के अति प्रसन्न होकर अमीर के पास आकर यह सब बृत्तान्त उनसे कहकर कहा कि चलिये नावपर सवार हूजिये अमीर लड़कों की बातें सुनकर हँसनेलगे और साथ जाकर सवार हुए जब नाव आधीनदी में पहुँची तब आरदाना ने अमीर के साथ सोनेकी इच्छा की तब अमीर ने उसके हाथ बांधकर नदी में डालदिया और वह नदी में डूबगई और मल्लाहों से कहा कि अतिशीघ्र ही नाव को पार करो नहीं तो तुम सबको मारडालूंगा मल्लाहों ने डर के मारे अति शीघ्रही चार पांच पालें मसालपर उड़ाकर अमीर की आज्ञानुसार पार किया अमीर लड़कों समेत पृथ्वी पर उतरकर बाघ की खाल पर बैठकर कलिया खिज़र का निकालकर दोनों लड़कों को भी दिया और आपभी खाके सावधान होकर वहां से आगेको चले जो क्षुधा लगी तो कहा कि आज तो कोई चटपटी चीज़ भोजन करने की इच्छा होती है इससे तो अब मन भरगया है यह कहतेही थे कि

सामने से एक हिरन निकला अमीर ने उसको मारकर क़बाब बनाकर आप खाय और लड़कों को भी खिलाकर उसी स्थान पर रात्रि को सोरहे प्रातःकाल उठक सवार होकर रवाना हुए॥

वृत्तान्त ख़्वाजे अमरू का॥

लेखकलोग योंलिखते हैं कि जब अमरू को डेढ़ बर्ष क़िले देवदो में ब्यतीत हु तो एक दिन अन्तरदेवदूं बादशाह किलेसे पूछा कि यहांसे समीप और कोई क़िल है कि जहां चलकर थोड़े दिन आराम से रहें उसने कहा कि यहां से बीस कोसप एक क़िला तलवाबहर नामे पहाड़पर है तीन तरफ़ उस क़िले के नदी है और केवल एक दिशा को मार्ग है और वह भी ऐसा छोटाहै कि किसी प्रकारसे दो मनुष्य बरा बर नहीं जासक्के हैं और सिवाय इसके जो एक मनुष्य ऊपर से पत्थर ठेलदेवे तं हज़ारों मनुष्य दबकर मरजावें और जो बादशाह नौशेरवां आपही जाकर उस क़िले को लिया चाहे तो केवल लज्जित होनेके और कुछ न पावे लज्जित होकर पलट आवे तब अमरू ने कहा कि उस क़िले का लेना कुछ दुर्लभ नहीं परन्तु यहांसे जान दुर्लभहै और हम अकेले भी नहीं जासक्के हैं तब अन्तरदेवदूं ने कहा कि इस क़िले में एक सुरंग है उसीमें होकर निकलजाइये तब अमरू ने मलिका आदि को स वारियों पर सवार कराके सेना समेत उसी सुरंग से निकलकर क़िले तलवाबहर की राह लेकर सबको प्रसन्न किया और दूसरे दिन पहररात्रि ब्यतीत हुए क़िले के स मीप पहुँचा फिर अमरू क़िलेके भीतर चलागया परन्तु कोई युक्ति न करपाई कि क़िले में अपना वस पावे और विचारा कि युद्ध करने से भी हाथ न आवेगा तब तो लज्जित होकर कहनेलगा कि अमरू तूने बड़ी नादानी की कि विना क़िले के लिये जो तू सब छोटे बड़ों को इस क़िले के समीप लेआया जो अभी हरमज़ व जाफ़रां मर्ज़ सेना लेकर आवें तो बृथा सबको मारकर मलिका को पकड़लेजावें इससे कोई युक्ति बिचारना उचित है कि इस क़िलेको अपने अधीन करूं विचारते २ यह वि चार में आया कि चारसौ पहलवानों को संदूक़ों में भरकर आप सौदागर बनकर क़िले के सामने ऊंटों में लादकर जाकर उतरे तब क़िलेवालों ने दीवार पर से पूछा कि तुम कौन हो कहां से आये हो और कौन बस्तु लेआये हो? अमरू ने कहा कि मैं सौदागर हूं नौशेरवां ने ज़ुलमात की तरफ़ असबाब ख़रीदने को भेजा था वहीं मैं लेकर आयाहूं और मेरे पास नवीन २ प्रकार की बस्तु हैं कि आजतक किसी ने न देखा है न देखेंगे यह सब हाल सिपाहियों ने जाकर बादशाह से कहा तब उसने हामाननामी अपने वज़ीर को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखो कौन है और कहां से आता है और क्या २ बस्तु लाया है? उसने अमरू के ख़ेमे के पास आकर कहा कि जाकर अपने स्वामी से कहो कि बादशाह का वज़ीर आपकी भेंट को आया है और बादशाह ने तुमको बुलाया है तब अमरू ने सुनकर कहा कि कहदेव इस समय आराम में हैं आने की फ़ुरसत नहीं है वज़ीर बेचारा दो घड़ी तक खड़ारहा

छे को कहा कि अच्छा भाई कहदेना कि इससमय मैं जाता हूं फिर आकर मुला- कात करूंगा जो बादशाह कहेगा वह आकर कहूंगा जब अमरू ने सुना कि अब जाता है तब कहला भेजा कि कहदेव अब जागे हैं आप ठहरिये थोड़े समय के पीछे अमरू ने अपने खेमे में बुलाकर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर अपने पास बैठाया उसने देखा कि वृद्ध मनुष्य मसनद लगाये हुए अपने सरदारों समेत बैठाहै और मोम की बत्ती जलरही है उसने जाकर सलाम किया परन्तु अमरूने पहलेही से उसका हाल जानलिया था सलाम का उत्तर देकर पूछा कि आप कौन हैं और आपका नाम क्या है? हामान ने कहा मैं जमशैदशाह का वज़ीर हूं और हामान मेरा नाम है अमरू ने पूछा कि क्या तू रहिमानका बेटा है उसने कहा जी हां! फिर पूछा कि वह कहां है? उसने कहा कि मेरे तो माता पिता दोनों का बैकुण्ठबास होगया यह सुनकर अमरू रोनेलगा और हाय २ करके कहने लगा जब भाई मरगये तो अब मैं जीकर क्या करूंगा यह कह खंजर लेकर पेट मारनेको आरूढ़ हुआ तब उसने हाथ से खंजर छीनकर पूछा आपका नाम क्या है? अमरू ने कहा कि ख्वाजे शहपालपुत्र करबल मेरा नाम है और तेरा जन्म उन्हीं दिनों में हुआथा जिससमयमें नौशेरवांने मुझको जुलमात को असबाब खरीदने के लिये भेजा था और अब जो आया तो यह तूने सुनाई कि भाई का बैकुण्ठ- बास हुआ उसने कहा कि ईश्वर की महिमा अपूर्व है उसमें किसी की कुछ शक्ति नहीं जो होना था वह होगया अब सब्र कीजिये इस दुःख को अपने शिरपर रखिये और क़िले में चलकर आराम कीजिये तब अमरू ने सब असबाब आदमियों से उठवाकर उसके साथ क़िले में चला राह में वज़ीर ने अमरू से पूछा कि कौन २ उत्तम वस्तु आप लेआये हैं अमरू ने कहा कि सब वहां की उत्तम वस्तु हैं परन्तु दो स्त्रियां ऐसी स्वरूपवती लेआया हूं कि लोग देखतेही मोहित होजाते हैं हामान ने कहा कि हमारा बादशाह भी आशिक़मिज़ाज है जो स्त्रियों को उसके समीप भेजदीजिये तो अति प्रसन्न होगा बहुत कुछ आपको देवेगा अमरू ने क़िले में जा- कर दोनों यार बच्चों को सौगात समेत डोलियों में बैठाकर हामान के पास भेज दिया तो वहां अतिप्रसन्नता के साथ अपने बादशाह के समीप लेगया बादशाहभी देखकर अतिप्रसन्न हुआ और शराब मँगवाकर उन्हीं के हाथों से लेलेकर पीनेलगा जब दो तीन गिलास पीचुका तब उन्हों ने दारूबेहोशी मिलाकर दी तब वह बेहोश होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा और इधर अमरू ने पहलवानों को संदूक़ से निकालकर पहले तो हामान को पकड़कर बांधलिया तत्पश्चात् सब क़िलेवालों को मारनेलगा और जिसने अपने प्राणकी रक्षा चाही उसे मुसल्मान करके छोड़दिया और जब बाद- शाह भी होश में आया तो उसने भी अपने प्राण की रक्षाके लिये मुसल्मान होना अङ्गीकार किया तत्पश्चात् हामान ने भी देखा कि अब तो बादशाह भी मुसल्मान और जो मुसल्मान नहीं होते तो प्राण नहीं बचता लाचार होकर मुसल्मान

हुआ और प्रातःकाल होतेही अमरू ने क़िलेपर सब प्रकार से अपना प्रबन्ध करके अपनी आज्ञानुसार क़िले को सजाकर शामियाना खड़ा करके आप शाहानारूप धारण करके आराम के साथ बैठा अमरू के आनेके पश्चात् शाहज़ादों को ख़बर मिली कि अमरू क़िले देवदूं को छोड़कर तलवावहर में जाकर सब क़िलेवालों को मुसल्मान करके अपना प्रबन्ध करके क़िलाबन्द है यह सब हाल बादशाह नौशेरवाँ को लिखकर भेजकर आप सेनासमेत जाके क़िले तलवावहरके समीप ख़ेमा गाड़कर पड़ा अब थोड़ासा वृत्तान्त बादशाह नौशेरवाँ का लिखते हैं दरबार में बैठा था कि हरमर और जाफ़रासर्ज की बिनयपत्री पहुँची और समाचार सुनकर कहनेलगा कि यारो! कोई युक्ति ऐसी करो कि अमरू पकड़ाजावे या माराजावे कि हम सबों को उस पापी से आराम मिले बख़्तक ने कहा कि आप तो मेरा कहना नहीं मानते बुज़ुरुच्च-मेहर के कहने पर चलते हैं इसी कारण वह कार्य सिद्ध नहीं होता और वह मज़हब के बिचार से आपको ख़राब कररहा है कि हमज़ा काफ़ में कब मरगया है परन्तु बुज़ुरुच्चमेहर के कहने से जीता है अच्छा आप मेरी और बुज़ुरुच्चमेहर की परीक्षा लीजिये देखिये कौन सत्यवक्ता है बादशाह ने कहा कि यह तुमने अच्छी बात कही उसी समय दोनों से रमल में बिचरवाकर कहा कि अपने २ बिचार को लिखकर सुनाओ संयोग से जिस समय वहां बिचाराजाता [illegible] मय में अमीर को दोसौ कोस की उँचाई से रुखपक्षी ने अख़ [illegible] फेंकदिया था बख़्तक ने बिचार में यही लिखा कि अमीर को [illegible] दोसौ कोस की उँ-चाई से एक नदी में फेंकदिया है वह उसी [illegible] गा और बुज़ुरुच्चमेहर ने लिखा कि अमीर कुशल से थोड़े दि[illegible] आकर संसार में सब से मिलते हैं पहले बख़्तक का बिचार [illegible] बादशाह ने ख़्वाजे से पूछा तो उसने कहा कि सत्य है अमीर को रु[illegible] अख़ज़र नदी में फेंकदिया परन्तु हज़रत ख़िजर और आलियास ने हाथों [illegible] उठाकर पृथ्वीपर रखदिया है जब ख़्वाजे का बिचार सुनाया गया तो बादश[illegible] बख़्तक की तरफ़ देखा उसने कहा कि हमज़ा है कहां जो दुनिया में आवेगा [illegible] आपही अपनी बुद्धि से बिचार कीजिये कि दोसौ कोस से गिरकर मनुष्य [illegible] बचसक्ता है और काफ़ तो दूर है आप एक गाभिन गऊ मँगवावें हम दोन[illegible] मी बिचार कर बतलावें कि किस रङ्ग का बच्चा उसके पेट में है फिर आप उस[illegible] फड़वाकर देखें परन्तु उसमें यह शर्त है कि जो बुज़ुरुच्चमेहर का बिचार स[illegible] तो आप हमको उनके हवाले करदेवें जो उनका जी चाहे वह करें और ज[illegible] सत्य होवे तो जो हमारा जी चाहे वह हम करें बादशाह ने ख़्वाजे से पूछा [illegible] क्या कहता है उसने कहा कि अच्छा तो कहता है परीक्षा देने से कब मैं [illegible] हूं तब उसी समय एक गाभिन गऊ मँग-वाई गई बख़्तक ने बिचार कर [illegible] कि इसके बच्चे का स्याह रङ्ग और सफ़ेदहै बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि रङ्ग तो [illegible] है परन्तु माथा भी काला ही है और चारों पैर

सफ़ेद हैं गाय का पेट फाड़कर बच्चा निकाला गया तो संयोग से झिल्ली उसके माथे पर आगई थी इससे माथा सफ़ेद विदित हुआ और सबलोग कहनेलगे कि बख़्तक बाज़ी जीता और बुज़ुरुचमेहर हारा अब वह इसको मारडालेगा तब बख़्तक ने बुज़ुरुचमेहर को अपने स्थानपर लेजाकर इच्छा की कि इसको मारडालें परन्तु उसकी स्त्री ने मना किया तब उसका प्राण बचा परन्तु उस पापी ने एक प्रकार की सलाई उसके नेत्रों में फेरकर अन्धा करादिया संयोग से उसी दिन सादजरी और आसादजरी तुर्कनौशेरवां की मुलाक़ातको आये उस गाय के बच्चे को देखकर पूछा कि यह क्या है और यह किसका बच्चा है? तब बादशाह ने सब वृत्तान्त उससे कहा तब सादजरी ने खंजर की नोक से उसके मस्तक की झिल्ली छीलडाली तब सबों ने देखा कि मस्तक भी काला है सफ़ेदी का कहीं एक दाग़ भी नहीं है बुज़ुरुचमेहर का कहना सत्य है बादशाह ने उसी समय बख़्तक को बुलाकर कहा कि तू बाज़ी हारगया और बुज़ुरुचमेहर जीता अब उसको हमारे सम्मुख लेआओ उस ने कहा कि मैंने तो अपनी बाज़ी जीती जानकर उसको अन्धा करादिया है बादशाह ने हाथ पटककर कहा कि हे पापी! तूने बड़ा बुरा काम किया कि ऐसे मनुष्य को अन्धा करादिया तब उसको खम्भे में बँधवाकर इतने जूते लगवाये कि उसका शरीर घूमउठा उठने बैठने की शक्ति न रही और आप बादशाह सवार होकर बख़्तक के घरपर जाकर बुज़ुरुचमेहर को प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर कहा कि ख़्वाजे तुमने बाज़ी जीती थी परन्तु होनहार से धोखा पड़गया अब जो कहिये वह दण्ड बख़्तक को दूं ख़्वाजे ने कहा कि उसे दण्ड देने की कुछ आवश्यकता नहीं है मेरी भाग्य में जो लिखा था सो हुआ ईश्वर की होनहार में किसीका चारा नहीं हमज़ा जब आवेगा तो दो पत्ते वहां से लेते आवेगा उसीसे हमारे नेत्र फिर अच्छे होजावेंगे और मैं फिर उसी तरह से देखने लगूंगा अब मुझको आप आज्ञा देवें तो जबतक हमज़ा न आवे तबतक बसरा में जाकर रहूं और आपसे कहेजाता हूं कि सत्रह बर्षतक आपको सब प्रकार की बुराइयों से बचाया अब देखियेगा क्या होता है निश्चय करके जानिये कि आप अब अमरू के हाथ से बड़ा दुःख उठावेंगे और संसार में बदनाम होंगे और जिस दिन हमज़ा आवेगा तो सीधा आपही के पास चला आवेगा और एक घोड़ा उसी दिन धावा मारेगा और दूसरे दिन अमीर आप को पराजय करके बड़ा दुःख देवेगा इतना कहकर ख़्वाजा चलेगये और वहां से बसरा की ओर गया और बख़्तक जो जूतियों की मार से बेहोश होगया था बादशाह ने उसको मकान से बाहर फेंकवादिया और जब उसको होश हुआ अपने स्थान को चलागया और बहुत दिनतक अपनी औषध करतारहा और जब अच्छा हुआ तो फिर दरबार में गया नौशेरवां ने कहा इसको सभा में आने की आज्ञा किसने दी हमारे सम्मुख यह क्यों आया? जब सभासदलोग उसकी सई करने लगे तब बादशाह ने सभा में रहने की आज्ञा दी तब वह कुछ दिन तो चुपचाप रहा पश्चात्

फिर बादशाह को अमरू से लड़ने की सम्मति देनेलगा निदान धीरे २ बादशाह के भी चित्त में यह बात आई कि बख़्तक सत्य कहता है बिना मेरे गये यह कार्य सिद्ध न होगा इसी प्रकार अमरू सबको दुःख दिया करेगा यह बिचार कर एक लाख सवार और पैदल लेकर तलवावहर के क़िलेकी ओर यात्रा की जब उसके निकट बादशाह पहुँचा तो हरमज़ व जाफ़रांमर्ज़ व ज़ोपीन आदिक राजकुमारों ने अगवानी मिलकर बादशाहको लेजाकर ख़ेमेमें उतारा और सब बहुत प्रसन्नहुए रात्रि को सभा में बादशाह ने कहा कि इतने दिनों से तुम सब यहां हो परन्तु एक मनुष्य को जीत न सके अब देखो मैं उसका और उसके साथियों का क्या २ हाल करता हूं तब सभासद लोग एकमुख होकर कहनेलगे कि आप और हममें बड़ा अन्तर है आपके सम्मुख हमारी क्या गणना है यह सुन रात्रिको तो बादशाह सोरहा प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म कर सेना को साथ ले युद्ध करने को आरूढ़ हुआ और आप अकेला जाकर क़िले के चारों ओर शिस्त लगाकर देखनेलगा तो उस समय अमरू शामियाने के नीचे जवाहिरकी कुरसीपर बैठा था और सब सरदारलोग बराबर से खड़े थे जिनके हथियारों में जवाहिर जड़े थे और मुरचोंपर हरएक मनुष्य अपने २ कार्यपर आरूढ़ थे अमरू ने तीर बादशाह की तरफ़ घुमाकर कहा कि हे अग्निपूजक! तू या तो अभी भाग जा नहीं तो तेरी क्या गति करताहूं तेरी भी कैसी गति बनाता हूं और जो मैं अमरू कि तेरी छठी का दूध निकालकर तुझे इसका मज़ा चखाऊं बादशाह अमरू की बातें सुनकर कांपनेलगा और बख़्तक से कहा कि सुनता है अमरू क्या कहता है? उसने कहा कि दूरसे जो चाहे वह कहे ज़बान उसकी उसके मुखमें है लेकिन कर कुछ नहीं सक्ता है बृथा बकरहा है सेनाको आज्ञा दीजिये कि युद्ध करने को आरूढ़ होवे और एकबारगी धावा करके क़िला अमरू से छीनलेवे तब बादशाह की आज्ञानुसार सेना बढ़ी और क़िलेतक जो पहुँची तब क़िलेपर से आतशबाज़ी छूटनेलगी और थोड़ेही कालमें हज़ारों पहलवान मारेगये और शेष युद्धके खेतसे भाग खड़ेहुए किसीने किसीका साथ न दिया तब लाचार होकर बादशाह भी सेनाके पीछे२ भागकर ख़ेमे में आकर लाचार होकर बैठे तो बख़्तक कहनेलगा कि कहीं इस प्रकार से भी क़िला हाथ आता है बृथा हज़ारों सिपाही भी मरवाये और लज्जित होकर पराजय पाई तब नौशेरवांने कहा कि ऐ पापी! तूहीने तो कहा कि अब सेना को आज्ञा दीजिये कि क़िलेपर धावा करके इसी युक्ति से लेलेवें और तूही अब यह भी कहता है तब उसने कहा कि हां मैं भूलगया जो हुआ सो अच्छा हुआ अमरू को यह तो विदित हुआ कि बादशाह बड़ी सेना लेकर मुझसे युद्ध करने को आये हैं हज़ार पहलवान मारेगये तो अच्छा हुआ बादशाह ने कहा कि तू बड़ा दुष्ट है कि एक बात पर स्थिर नहीं रहता है कभी कुछ कहता है कभी कुछ अब थोड़ासा अमरू का बृत्तान्त सुनिये कि अपने क़िलेवालों से कहा कि तुमलोग ख़बरदारी से रहना हम बादशाह नौशेरवां को भी अपनी मक्कारी का मज़ा चखा आवें यह कहकर लिबास

शाहाना उतारकर मक्कारी की पोशाक पहिनकर एक नट का भेष धारण करके दो अपने शिष्योंको जो मक्कारी में बड़े बुद्धिमान् थे स्त्री का भेष धारण कराकर साथ ले क़िलेसे बाहर निकला और अपने गले में एक फूटा ढोल डालकर बजाता हुआ जाकर बादशाह नौशेरवां के खेमे के समीप एक कमरी तानकर आप ढोल बजाकर उन दोनों को नचाने गवाने लगा थोड़ेही समय में बहुत से मनुष्य आकर देखने लगे और उसी समय में ज़ोपीन और बेचीनसवार चले आतेथे भीड़ देखकर वेभी उसी तरफ़ गये जाकर देखा तो एक अपूर्व तमाशा होरहा है उन दोनों की आंखें जो इनसे मिलीं तो अपने करफनसे लोभाने लगा यहांतक कि दोनों भाई मोहित होगये एकने स्याहपोश को प्रसन्न किया दूसरे ने सब्ज़पोश को और दोनों आपस में सलाह करके बादशाह के समीप जाकर उनके गाने बजाने और सुन्दरताकी बड़ी प्रशंसा की तो बादशाह भी मोहित होगये और उनके बुलानेकी आज्ञा दी और जब वे आये तो अमरू ने ऐसा ढोल बजाया और यार बच्चों ने गाया कि जितने लोग थे सब मोहित होगये और नौशेरवां ने मोहित होकर उन्हींको शराब पिलाने की आज्ञा दी तब सबने उन्हीं के हाथ से गिलास में लेकर शराब पी तो थोड़ेही समय के पश्चात् सब लोग बेहोश होकर गिरनेलगे और इकबारगी सबलोग बोल उठे कि चलो यारो नदी में गोता लगावें यह कहकर सब इकबारगी बेहोश होकर चुप होगये और अमरू ने बाहर आकर शागिर्दपेशों को भी बेहोश किया और खेमे में आकर सब असबाब उठाकर ज़म्बीलमें रखकर अपनी चालाकी करनेलगा कि नौशेरवां की दाढ़ी मोछ उस्तुरे से मूँड़कर हाथ पांवोंको तो नील से रंगा और मुख कालाकरके चून के टीके देदिये और बख़्तक व बख़्तियारक की दाढ़ी मूछ मूँड़कर सात सात बाल शिरपर रहनेदिये और बख़्तियारक के शिर में सेंदूर भरकर टांगें उसकी बख़्तक के कमर से बांधदीं और बख़्तियारक की गुदा में एकमेख ठोंककर फ़ैली करदी और ज़ोपीन व बेचीनके साथभी यही मामिला किया और इसी प्रकार से सबलोगों की गति बनाई और शाहज़ादों को भी नङ्गा करके सात रङ्ग के टीके दिये और इसी प्रकार से जितने सरदार थे सबकी गति बनाई और पीछे को एक पत्र में लिखकर कि ऐ जवान! महीने २ दाढ़ी मोछका कर मेरे पास भेजदियाकर नहीं तो एक बाल भी न रहने पावेगा और इसी प्रकार से लज्जित हुआकरेगा और यहभी विदित हो कि इस बार तो इस विचारसे कि अमीरहमज़ा के आप ससुरे हैं प्राण छोड़कर केवल यह गति बनाई है लिखकर नौशेरवां के गले में बांधदिया और आप दोनों मक्कारों समेत अपने क़िलेमें चलाआया और जब प्रातःकाल हुआ तो सब सावधान हुए बख़्तकको जो मज़ा मिला तो स्त्री जानके धक्के देनेलगा और नेत्रों के बन्द रहने से कुछ मालूम न हुआ और बख़्तियारक को जो दुःख मालूम हुआ तो चिल्लाकर कहनेलगा कि पिताजी! यह क्या काम मेरे साथ कररहे हो लोग यह सुनकर चारों तरफ़से दौड़कर आये तो देखा कि बाप बेटेमें यह मामिला

होरहा है तो सब एक दूसरे का रूप देखकर हँसने लगे और अपने रूप का कुछ विचार न रक्खा कि हमारा रूप कैसा है नौशेरवांने प्रातःकाल जो उठकर आईनेमें अपना स्वरूप देखा तो अतिलज्जित हुआ और इसी प्रकारसे सबका हाल देखकर बड़े आश्चर्यमें हुआ इतने में गले का पत्र देखकर पढ़ा तो विदित हुआ कि अमरू ने यह सबकी गति बनाई है तत्पश्चात् स्नान करके पोशाक बदलकर गद्दीपर बैठ कर बख़्तकको बुलवाकर सभामें उसकी मुश्कें बँधवाकर ऐसी जूतियां लगवाई कि बेहोश होगया और जब सब सभासद्लोग सई करनेलगे तो बादशाहनें उत्तरदिया कि इसके बारे में अब हम किसीकी सई न मानेंगे क्योंकि यह सब गति इसीने करवाई और इसीकी बातपर मैं यहां आया अफ़्सोस कि मैंने बुज़ुरुचमेहर की सलाहपर कार्य न किया जो उसकी बातपर स्थित रहता तो क्यों ऐसी गति सबलोगों की अमरू बनाता लोगोंके कहने से पीछे उसको कारागार में डालदिया और एक पत्र हामानके पास एक सिपाही के हाथ इस समाचार का लिखकर भेजा कि अमरू बड़ादुष्ट है इससे ख़बरदार रहना और अपने किसी सरदारको क़िला सौंपकर हमारे पास आप शीघ्रही चलेआओ और इसी समाचार का एकपत्र कारवां बादशाह शेर-शाह के समीप भेजा तो पहले सवार नमदपोश हामानशाहके पास पहुँचकर अति शीघ्रही उत्तर लेकर बादशाह के पास पहुँचा तो उसने लिखा था कि अमरू तो क्या देवभी हमारे क़िले में बस नहीं पासक्ता और मैं भी अतिशीघ्रही आपके पास सेना सहित पहुँचताहूं आप किसी प्रकार से संदेह न कीजिये समावा जब पत्र शेरशाह के समीप लेकर पहुँचा तो उसने भी इसी प्रकार से उत्तर लिखकर उससे कहा कि एकबात मैं अपनी तुम्से कहताहूं परन्तु किसी से कहना नहीं और उ-सकी युक्ति करो उसने स्वीकार किया तब बादशाह ने कहा कि बहुत काल व्यतीत हुआ होगा कि मैंने मेहरनिगार की तसवीर देखी थी उसी समय से मैं मोहित होगयाहूं और सदैव उसके देखने की इच्छा रखता हूं जो तू किसी युक्ति से मेहर-निगार को मेरे समीप लादे तो मैं आधा राज्य दूंगा उसने कहा कि मैं केवल मुखके कहने से नहीं मानता आप ईश्वर को गवाह करके मुझे लिखदीजिये तो मैं जाऊं चाहे मरूं या जीऊं तब शेरशाह ने उसीसमय एक इक़रारनामा लिखकर उसको दिया और सब प्रकार से कहदिया तब समावा वहां से चलकर क़िले के पास जाकर भीतर जाने का उपाय ढूंढ़नेलगा तो पृथ्वी की मार्ग से तो जाने का रास्ता न पाया परन्तु एक नावपर सवार होकर पहाड़तक पहुँचा तो वहां से देखा कि सब सिपाही ख़बरदारी से रक्षा कररहे हैं जाते २ केवल एक बुर्ज में सन्नाटा मालूम हुआ तब उसने एक ढेला उसके ऊपर फेंका तो किसी ने उत्तर न दिया तब मालूम हुआ कि इसपर या तो कोई है नहीं या सब सोते होंगे कमन्द डालकर बुर्ज में गया और उसीकी सीढ़ियों से नीचे उतरा तो रात्रिभर तो एक कोने में बैठारहा और प्रातः-काल होते इधर उधर रहने के लिये स्थान ढूंढ़नेलगा पीछे को जब कहीं ठिकाना न

पाया तो स्नान के स्थानपर गया और एक कोने में बैठकर स्नान करनेलगा संयोग से उसी समय में बुलबुलखलीफ़ा उसी स्थानपर पहुँचा जोकि मेहरनिगार का अतिशुभचिन्तक और दिलसे शत्रु था कि सदैव उसी स्थानपर जाकर अग्निपूजा करता था उस दिन भी स्नान करके पूजा करनेलगा कि इतने में समारानी ने सम्मुख आकर प्रणाम किया तब तो खलीफ़ा बुलबुल बहुत डरे कि जो यह सब मेरा हाल असरू से कहदेवेगा तो असरू मेरा प्राण न छोड़ेगा यह विचार करके उससे मित्रता करनेलगा तब समावाने पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है और किस ओहदे पर यहां हो ? उसने कहा कि मैं मेहरनिगार का शुभचिन्तक हूं भाई ईश्वर के लिये मेरा हाल किसीसे न कहना उसने कहा कि आप संदेह न करें मैं यहां नहीं रहता हूं मैं तो बादशाह नौशेरवां के सिपाहियों का सरदार हूं और मेहरनिगार के लेजाने के लिये और बहुतसी उत्तम २ वस्तु लेआया हूं आप कृपा करके इस कार्य में सहायता करें तो सिद्ध होजावेगा और मुझको अतिप्रसन्नता प्राप्त होगी खलीफ़ा बुलबुल ने कहा कि मैं तो आपही सदैव इसी उपाय में रहता हूं कि किसी प्रकार से मेहरनिगार को नौशेरवां के पास पहुँचाऊं सो ईश्वर ने आपही को यहांतक भेज दिया आप मेरे साथ चलकर बावर्चीखाने में ठहरिये तब तो उसने प्रसन्नता से उसके साथ होकर बावर्चीखाने में जाकर भोजन में दारू बेहोशी मिलाई और जब वह भोजन सब लोगों ने खाया तो सब थोड़ेही समय के पश्चात् बेहोश होगये परन्तु असरू ने उस दिन भोजन न किया और न महल में गया जब सब बेहोश होगये तब सादानी ने मेहरनिगार को एक गठरी में बांधकर अपने ऊपर लादकर खलीफ़ा बुलबुल समेत उसी बुर्ज से जिधर से आया था निकला और जब सादानी क़िले से निकलकर बन की तरफ़ चला तो खलीफ़ा ने पूछा कि बन में क्यों जाताहै वहां तेरा क्या प्रयोजन है उसने कहा कि शेरशाह ने मेहरनिगार को मांगा है सो मैं उनके पास लियेजाता हूं तब खलीफ़ा बुलबुल ने कहा कि यह तो अभी न होगा तूने कहा था कि मैं नौशेरवां के समीप लेजाऊंगा और अब दूसरे के पास लिये जाता है अब तो तेरी बातों पर मुझको क्रोध लगता है दोनों में युद्ध होनेलगा तब सादानी ने एक खंजर खलीफ़ा को ऐसा मारा कि उसका प्राण निकलगया और सादानी सलिका को लेकर उसी तरफ़ चला अब थोड़ा सा हाल असरू का सुनिये कि वहीं बेखबर पड़ा सोरहा था कि सुपने में अमीर ने आकर कहा कि वाह तुम तो खूब रक्षा करते हो बताओ मेहरनिगार कहां है ? तुमको नहीं विदित होता कि वह किस दुःख में पड़ी है इतना देखकर असरू चौंककर उठा और मेहरनिगार के महल में जो गया तो देखा कि पलंग खाली है इधर उधर ढूंढ़कर क़िले की दीवार पर गया तो विदित हुआ कि कोई कमन्द लगाकर निकाल लेगया तबतो अतिशीघ्रता के साथ मक्कारी पोशाक पहिनकर उसी कमन्द की राह से उतरकर क़दमपर क़दम रखतेहुए चला जब थोड़ी दूर गया तो देखा कि खलीफ़ा बुलबुल माराहुआ पड़ा है

तब तो जाना कि शत्रु से मलिका को छीनकर चलागया राह छोड़कर दूसरी ओर से आगे जाकर एक साधू का रूप धर करके एक घड़ा में दारू बेहोशी रखकर बैठा कि इतने में समावा मेहरनिगार को एक गठरी में बांधेहुए जाकर पहुँचा और अमरू से कहा कि बाबा प्यास बड़ी लगी है तब अमरू ने कहा कि घड़े में जल रक्खा है निकालकर पीलो जब वह घड़े के पास गया और उसने देखा तो विदित हुआ कि इसमें दारू बेहोशी मिली है कूदकर अलग खड़ाहुआ और कहनेलगा कि तू मुझसे जाल करने चला है तेरी जाल मुझसे न चलेगी यह कहकर अमरू के आगे से भागा अमरू खंजर निकालकर उसके पीछे दौड़ा और एकबारगी कूदकर उसके आगे होरहा तब वह भी गठरी को पृथ्वी पर रखकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तब अमरू ने कमन्द कमर से निकालकर ललकारा कि देखते क्या हो दौड़ कर मारलो तब उसने जाना कि इसके सिपाही भी आपहुँचे पीछे फिरकर देखने लगा इतने में अमरू ने कमन्द उसके गले में डालकर खींचलिया और वह औंधे मुख पृथ्वीपर गिरपड़ा तो अमरू ने गठरी को तो कन्धेपर रखलिया और उसकी मुश्कें बांधकर अतिशीघ्रही चलकर क़िले में आकर पहुँचा तो समावा को तो कारागार में भेजदिया और मेहरनिगार को सावधान किया मलिका ने देखा कि मैं बँधी हूं अमरू से पूछा कि बाबा मुझे क्यों बांधा है तब अमरू ने सब हाल कहकर छोड़ दिया और बाहर आकर समावा को मरवाडाला नौशेरवां ने जब सुना तब उसने अमरू की बड़ी प्रशंसा की और चित्तसे अतिप्रसन्न हुआ और जब शेरशाह ने सुना तो सभा में कहने लगा कि अमरू बड़ा भाग्यवान् है उसे कोई विजय न कर सकेगा तबहीं इतने दिनों से नौशेरवां से बराबर विजय पाता चलाआता है और जो उससे युद्ध करने की इच्छा करता है वही लज्जित होकर पलट आता है और मेरा चित्त चाहता है कि अमरू से जाकर मुलाक़ात करूं इतने में पिरान नाम सेनापति ने कहा कि अमरू को मैं आज पकडूंगा मैं उसका बीड़ा उठाता हूं और देखियेगा कैसी सुन्दरता के साथ विजय पाताहूं आप मेरे नाम से बादशाह नौशेरवां को लिख दीजिये कि मेरे नाम से तबलजंग बजवावे जाकर खड़ी सवारी क़िले को लेलेताहूं या नहीं बादशाह ने उसीसमय एक विनयपत्रिका में बादशाह नौशेरवां को लिखकर सब वृत्तान्त मग़रबी सिपाही के हाथ भेजा ॥

पहुँचना अमीर का देवसमुन्द के स्थानपर और छोड़ाना ज़हरमिश्री का कारागार से ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर हिरन का क़बाब खाकर अख़ज़र नदी से जब चले तो दशवें दिन एक क़िलेकेसमीप पहुँचे तो ख़्वाजे आशोब से कहा कि तुम जाकर देखआओ कि इस क़िलेमें आबादी है या वीरान और स्वामी मुसल्मान है या काफ़िर ख़्वाजे आशोब तमंचा हाथ में लेकर क़िलेके भीतर जो गया तो देखा कि बराबरसे दूक़ानें लगी हैं और लोग फिररहे हैं ख़्वाजेने एक दूकानदार से पूछा कि इस क़िले का स्वामी कौन है और कैसाहै ? उसने कुछ उत्तर न दिया

फिर पूछा तौभी कुछ न बोला तब ख़्वाजे ने कहा कि क्या तू बहरा है या गूंगा तौ भी वह न बोला चौथी बार तमंचा लेकर उसको मारडाला तब तो सब दौड़े और ख़्वाजे को चारों ओर से घेरलिया तब ख़्वाजे आशोबने अमीर को पुकारा कि दौड़िये मेरी सहायता कीजिये अमीर उसका शब्द सुनकर क़िले में आये और उन लोगों से युद्ध करनेलगे करते २ क़िलेके दरवाज़ेतक पहुँचे लेकिन वे तीनों उसी भीड़में खोगये तब अमीर उस क़िलेके भीतर गये परन्तु युद्ध करनेवाले भीतर न गये बाहर से चिल्लाया किये अमीर जब क़िलेमें जाकर तख़्तपर बैठे तो एक ओर से शब्द आया कि अफ़सोस हमारी तो यह गति हुई नहीं मालूम अमीर की क्या गति हुई होगी यह सुनकर अमीर जो उस तरफ़ गया तो देखा कि वे तीनों उसी में क़ैद हैं और एक मनुष्य और भी उन्हींके साथ शाहानी पोशाक पहिने क़ैद है अमीर ने पूछा कि तू कौन है उसने कहा कि मैं इसी क़िले का बादशाह हूं खलखाल देवने मुझे क़ैद करके क़िला छीनलिया है अमीर ने उसको क़ैद से छोड़ाकर तख़्तपर बैठाया और हरप्रकार से उसकी सहायता की जिन्नों ने जब अमीर को देखा कि हमारे बादशाह के साथ बड़ी नेकी कररहा है तब तो सब चुप होकर अमीर के क़दमों पर गिरने लगे और वह देव उस समय शिकार को बाहर गयाथा जब उस ने यह सब हाल सुना तो क्रोध के मारे जलने लगा और अमीर के सामने आकर ललकार कर मारने को दौड़ा अमीर ने उसकी वार रोंककर एक हाथ अक़रबसुलेमानी का लगाकर दो भाग करादिये तब तो उसके साथी अमीर के बल को देखकर भागगये और बादशाह ने सात दिनतक नाच रङ्ग करवाया और हर प्रकार से अमीर को प्रसन्न किया आठवें दिन अमीर वहांसे चले तो इक्कीसदिनतक बराबर चलेगये तो एक चारदीवारी अपूर्व प्रकार की दिखाई पड़ी परन्तु दरवाज़े में ताला लगा था तब अमीर ने बलक्षी से तोड़डाला और उस के भीतर जो गये तो देखा कि एक बड़ा भारी सूनसान मैदान है और चारदीवारी संगमरमर की है उसके भीतर जो गये तो एक अतिउत्तम बाग़ दिखाई पड़ा कि जिसके देखने से बड़ा आनन्द हुआ और ऐसा बाग़ काफ़भर में कहीं न देखाथा तब अमीर तो एक बृक्ष के नीचे व्याघ्रचर्म बिछाकर बैठगये परन्तु लड़के इधर उधर घूमते २ एक बारहदरी में पहुँचे तो वहां देखा कि एक देव तीनसौ गज़का लम्बा सोरहाहै और एक स्त्री अतिस्वरूपवती पंखे की डोरी खींचरही है लड़कों को देखकर कहनेलगी कि ऐ लड़को ! तुम यहां कहां आये जल्द यहां से भागजाओ नहीं तो यह अभी जागेगा तो तुमलोगों को खाजावेगा क्षुधा के मारे रोते २ अभी सोगया है लड़कों ने कहा कि हम हैबत शाह साहबकिरां के साथ हैं हम इसको क्या इसके बापको भी नहीं डरते हैं ज़हरमिश्री ने अपने चित्त में बिचारा कि शायद जिसके कि ये लड़के हैं हैबत शाह कहते हैं वही साहबकिरां हों उन लड़कों से क़हा कि तुमलोग जाकर उस मनुष्य से जो तुम्हारे साथ है क़हदो कि ज़हरमिश्री यहां क़ैद है तब ख़्वाजे आशोब

और बहलोल ने अमीर से आकर कहा कि इस बाग़ में एक बारहदरी है उस में हमलोग जो गये तो देखा कि एक देव तीनसौ गज़ का लम्बा पड़ा सोरहाहै और एक स्त्री अतिस्वरूपवती पंखे की डोरी बैठी खींचरही है हमको देखकर बड़ी नम्रता और मुहब्बत से कहनेलगी कि तुम यहां से भागजाओ नहीं तो अभी यह जागेगा तो तुमको खायगा इसके दया न आवेगी तब हमने कहा कि हमारे साथ मियां हैवतअल्लाह हैं हम इससे क्या इसके बापसेभी नहीं डरते तब उस स्त्री ने कहा कि तुम जाकर उस मनुष्य से जिसके साथ तुम हो कहदेना कि ज़हरमिश्री यहां क़ैद है अमीर ज़हरमिश्री का नाम सुनते ही व्याकुल होकर दौड़े कि ज़हर-मिश्री का तो यह हाल हुआ मेहरनिगार की नहीं जानते कि क्या गति हुई होगी बारहदरी के भीतर जो गया तो देखा कि ज़हरमिश्री बैठी है उसको देखकर रोने लगी अमीर ने सब हाल पूछा तो उसने सब अपना हाल सुनाकर कहा अब इस देव की क़ैद में हूं जो दुःख पड़ता है उसका बयान मुझसे नहीं होसक्ता जो अमीर आते तो मेरा प्राण बचता नहीं तो मेरा प्राण न बचेगा जिस दिन इसका पिता क्षुधावान् होगा उसी दिन खालेगा इस दुःख में मैं आपही मरजाऊंगी अमीर ने कहा कि तुम साहबकिरां को पहिचानती हो उसने कहा कि क्यों नहीं पहिचानती मैं तो उनकी दासी ही हूं उन्होंने मेरी पालना की है तब अमीर ने मुखसे सेहरा हटादिया तो देखतेही ज़हरमिश्री रोकर अमीरके पैरों पर गिरपड़ी देवबच्चा रोने का शब्द सुनकर जागउठा तो देखा कि कई मनुष्य खड़े हैं क्षुधाके मारे झुलझुला कर अमीर को पकड़ने को दौड़ा कि लेकर खाजाऊं अमीर ने पकड़कर उसे बांस के समान चीरडाला और बाग़की क्यारीपर बैठकर ज़हरमिश्री से कहने लगा कि तूने मुझको नहीं पहिचाना उसने कहा कि तब आप जवान थे और अब आपकी डाढ़ी के बाल सफ़ेद होगये हैं फ़क़ीरी बेष विदित होता है दासी क्योंकर पहिचान सके अमीर उससे बातें करही रहे थे कि इतने में देव समुन्द सहस्रकर आंधी की तरह से उड़ता हुआ अमीर के शिरपर चला आपहुँचा और दरवाज़ा खुला देखकर क्रोधित तो हुआही था जब अपने पुत्रको भी मारा देखा तब तो जलकर अग्नि होगया और अमीर से कहने लगा कि ओ पापी, मनुष्य ! तू किस आंधी से यहां उड़कर आया तुझको यहां कौन लेआया ? अमीर ने कहा कि मैं तो किसी आंधी से उड़कर नहीं आया हूं अपनी खुशी से तेरे मारनेको आयाहूं यमपुरीसे नेवता लेआया हूं और मैं ही अफ़रेत और अहरमन आदि देवों का नाश करके तुझे मारने आया हूं और थोड़े समय में तुझको उन्हींके पास भेजताहूं यह सुनकर देव समुन्द ने सहस्रकरों से सहस्र पत्थर उठाकर अमीर के ऊपर दैमारे तो अमीर अक़रबसुलेमानी लेकर कूदकर उसके शिरपर जाकर एक तलवार ऐसी लगाई कि एक तरफ़ का अङ्ग पांचसौ करों समेत कटकर अलग होगया तब सब हाथों को बटोर कर भागा और थोड़े समय के पीछे सब करसंयुक्त होकर फिर आकर अमीर से युद्ध

करने को आरूढ़ हुआ तो अमीर ने फिर पांचसौ कर एक ओर के काट डाले इसी प्रकार से दो तीन वार अमीर ने उसके कर काटे और वह फिर जोड़कर अमीर के पास आकर युद्ध करनेको आरूढ़ होता तब बड़े आश्चर्य में होकर ईश्वर का ध्यान करनेलगे कि इतने में एक ओरसे हज़रत ख़िजरने आकर सलाम किया तो अमीर ने उत्तर देकर कहा कि हज़रत ! इस देव ने तो बड़ा दुःख दिया कि मैं मारडालता हूं और वह फिर जीकर आता है और युद्ध करने को आरूढ़ होताहै हज़रत ख़िजर ने कहा कि इस बाग़ में एक चश्मा है कि ईश्वर ने उस में ऐसी शक्ति दी है कि जिस घावपर उसका जल पड़े वह भर आता है और किसी प्रकार से दुःख नहीं होता चलो हम तुमको दिखाकर उसका लोप करदेवें कि वह देव तुम्हारे हाथ से माराजावे कि फिर आकर दुःख तुमको न देवे अमीर हज़रत ख़िजर के साथ जो गये तो देखा कि उसका जल मोती से भी स्वच्छ है और देखनेसे सब जल लज्जित होतेहैं हज़रत ख़िजरने पैर रखकर उस तालाब का लोप करदिया और दो पत्ते एक वृक्ष के अति स्वच्छ तोड़कर दिये कि इसको ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर को देना कि जो बख़्तक ने उसको अन्धा करदिया है इन पत्तों का अर्क नेत्रों में डाल लेवे तो फिर उसी तरह से देखने लगेगा अमीर ने उन पत्तों को रखकर कहा कि अब कृपा करके मुझे उसी स्थान पर पहुँचा दीजिये तब हज़रत अमीर को उसी बाग़ में पहुँचा दिया और वहीं से अन्तर्धान होगये अबकी बार जो देव समुन्द उस तालाब पर गया और उसका पता न पाया तो शिर पटक २ कर मरगया तब अमीर ने उस बाग़ की कोठरियों को खोलकर देखा तो उनमें अनेक २ प्रकार के जवाहिरात दिखाई पड़े उससे उनको बड़ा आनन्द हुआ लड़कों ने कहा कि थोड़ासा जवाहिर यहां से लेते चलना चाहिये वहां ये कहां मिलेंगे अमीरने हँसकर कहा कि जो तुम दुनिया में लेजाकर लोगों को देखाओगे तो अमरूनामे एक मेरा भाई है वह सब तुमसे छीनलेवेगा और एक भी न देगा इसी प्रकारसे दो दिन वहां रहे और तीसरे दिन लड़कों को छीके में लटकाकर जहरमिश्री की पीठपर सवार कराके आप सईसों की तरह चले ग्यारहवें दिन सुहीद नदी के निकट पहुँचे संदेह में थे कि किसप्रकार इसके पार उतरें इसी बिचार में थे कि हज़रत ख़िजरने आकर पार उतारदिया दूसरे दिन उस लोहे की चारदीवारी के निकट पहुँचे कि जहां बड़े साहस और वीरतासे राहतदेवको मारा था उसका दरवाज़ा खुला देखकर जाना कि आज जुम्मा है क्योंकि उसका दरवाज़ा बृहस्पति के दिन के सिवाय और दिन नहीं खुलता तब सालिम की समाधिपर जाकर मतके अनुसार मन्त्र पढ़कर प्रसन्न किया और वहां से यात्रा करके कहनेलगे कि ईश्वर की दया से काफ़ की सीमा पूर्ण हुई श्रीकरुणानिधान ने आराम के दिन दिखाये यही बिचार करते हुए पर्वत के नीचे २ प्रसन्नचित्त छाया में चलेजातेथे और मेवे तोड़ २ के लड़कों और जहरमिश्री को खिलाते थे संध्या को उसी पहाड़ के किनारे खड़े होकर रहनेकी जगह ढूंढ़ते थे इसी अन्तर

में एक वृक्षसे सलाम का शब्द सुनाई दिया इधर उधर देखा तो किसी का पता न लगा सम्मुख देखा तो एक वृक्ष दृष्टि पड़ा उसमें मनुष्य की सूरत के फल लगे हैं और उसी वृक्ष से आवाज़ आती है और ईश्वर की रचना का तमाशा दिखाती है और अमीर ने इस ईश्वर की रचना पर धन्यबाद करके नमस्कार का जवाब दिया उसी वृक्ष से फिर आवाज़ आई कि मेरा नाम दाक है एक रात्रिको सिकन्दरशाह ने भी मेरी छायामें बास किया था इसी स्थान पर आप भी सुखपूर्वक बास कीजिये और यहांके तमाशे से अपने चित्त को आनन्द दीजिये इस बार्ता के पश्चात् उसी वृक्ष से एक उत्तम फल अमीर की गोद में गिरा अमीर ने उसको काटकर आप खाया और बाक़ी ज़हरमिश्री और दोनों लड़कों को दिया उस फलके खानेमें ऐसा स्वाद पाया कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता फिर उसी वृक्ष के नीचे हर्ष से बास किया और सम्पूर्ण रात्रि वह वृक्ष अमीर से बार्तालाप करतारहा अपनी मिष्टबाणी से अमीर को प्रसन्न करता रहा और कहा कि जिस स्थान में आप बैठे हैं इसी जगह सिकन्दर भी ठहरा था और मुझसे यह भी पूछा था कि मेरी मृत्यु कब होगी तब मैंने उसको यह उत्तर दिया कि जब लोहे की ज़मीन और सोने का आकाश होगा तब तुम इस संसार को छोड़ोगे उसके दो तीन दिनके पश्चात् हफ़्तगर्दिश सुलेमानी के जंगल में जो यहांसे थोड़ीही दूर है कि उसमें बृक्ष का नाम भी नहीं है पहुँचा तो वहां सूर्य की गरमी से अत्यन्त व्याकुल होनेलगा तो उसके साथियों ने लोहे के ज़िरहें बिछाकर ढाल की छाया की लेकिन उसी समय में उसका बैकुण्ठवास होगया अमीरने पूछा कि हे वृक्ष! मुझको तो बतला कि मैं कब मरूंगा उसने उत्तर दिया कि जब अशक़रके किसी पैर में नाल न रहजाय तब तुम जानना कि अब मेरी अवस्था सम्पूर्ण होगई है अब कुछ दिन में बैकुण्ठबास होगा परन्तु अभी बहुत दिन शेष रहे हैं इसी प्रकार से रात्रि भर वह वृक्ष अमीर से बातें करता रहा और प्रातःकाल होतेही वहां से उठकर रवाना हुए और दोपहर के समय जब रेगिस्तान में पहुँचे तो वह सूर्य की तपिश से जलने लगा तब तो सब गरमी से व्याकुल होनेलगे परन्तु अमीर के पास हज़रतख़िज़र की दीहुई मशक थी उसी में से आप भी जल पीते थे और लड़कों को भी पिलातेजाते और रात्रिको उसीमें पड़रहते थे इसी प्रकार से सातदिन कठिनता से काटे आठवें दिन एक नगर में पहुँचे वहां की अधिपति एक स्त्री अतिदयाल और सुशील शीरीं नाम थी अमीर को अगवानी लेकर अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी की अमीर ने देखा कि स्त्रियों के सिवा यहां पुरुष का कहीं नाम नहीं है उस स्त्री से पूछा कि यह क्या कारण है कि यहां पुरुष कहीं नहीं दिखाई पड़ते उसने कहा कि इस नगर में स्त्रियों के सिवा पुरुष नहीं उत्पन्न होते अमीर ने पूछा कि फिर गर्भ क्योंकर रहता है उसने कहा कि इस नगर के बाहर एक वृक्ष है उसमें न फल लगता है न फूल जब स्त्री युवा होती है तो उसी वृक्ष में जाकर लिपट जाती है और थोड़े समय के

पश्चात् चीख मारकर गिरकर बेहोश होजाती है फिर होश में आकर चलीआती है तभी उसके गर्भ रहजाता है और लड़की ही उत्पन्न होती है अमीर ने स्त्रियों का स्वरूप और उनका यह हाल देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया लड़कों ने अमीर से कहा कि यहां की स्त्रियां अतिस्वरूपवती हैं इनको लेचलना चाहिये शीरीं ने कहा कि यहां की स्त्रियां कहीं जा नहीं सक्तीं और जो कोई लेजाता है तो एक चौकीदार ईश्वर ने यहां करदिया है वह फिर उठा ले आता है तब लड़कों ने कहा कि तू हमारे साथ करदे देखें कौन हमसे छीनले आता है आख़िरकार लाचार होकर पचास स्त्री उसने साथ करदीं जब वहां से चले और रात्रिको एक स्थानपर सोये तो वहां से पचीस स्त्रियों को कोई उठा लेगया जब प्रातःकाल देखा तो बड़े संदेह में हुए कि बृथा हम लेआये दूसरी रात्रि को जब सोनेलगे तो दोनों लड़कों ने सब स्त्रियों के कमर में रस्सी लगाकर अपने पैरों में बांधली तो रात्रि को सीमुर्ग़ की स्त्री जो वहां की रक्षक थी रात्रिको आई और सब स्त्रियों को लड़कों समेत उड़ाकर भागी कि इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि कोई सब स्त्रियों को उड़ाये लिये जाता है और नीचे लड़के भी लटके जाते हैं अमीर ने अपने दिल में बिचारा कि शायद कोई देव है इस बिचार से एक तीर ऐसा मारा कि सीमुर्ग़ की जोरू घायल होगई और स्त्रियों समेत उतरपड़ी और अमीर से आकर कहा कि ऐ साहबक़िरां! मैंने आपका क्या अपराध किया था कि आपने मुझे तीर मारा और मेरे पुरुष ने जो आपके साथ नेकी की थी यह उसका बदलाहै मैं तो यहां इन्हीं स्त्रियों की रक्षा के लिये ईश्वर से आज्ञा पाकर रहती हूं कि कोई इन स्त्रियों को बाहर न लेजाने पावे अमीर सीमुर्ग़ की जोरू को देखकर अतिलज्जित हुआ और कहनेलगा कि मैं ने तुझको नहीं पहिंचाना था सौगन्द खाता हूं कि मैंने तुझको नहीं जाना ईश्वर के लिये अपने पुरुष से यह न कहना अबकी बार मेरा अपराध क्षमा करना क्योंकि उसने मेरे साथ बड़ी नेकी की है तब अमीरने ईश्वर का स्मरण करके उसके घाव को अच्छा करदिया तब वह स्त्रियों समेत अमीर की आज्ञा लेकर रवाना हुई॥

वृत्तान्त अमरू अमीर ज़मीरी के पुत्र का॥

नौशेरवां जो क़ैरवानपश्चिमी के लिखने से पीरान मग़रबी के नाम से तबलजंग बजवाकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तो इतने में सामने से गर्द उठी और जब गर्द बन्द होगई तो दोसौ झण्डे दिखाई पड़े तो अमरू को बिदित हुआ कि दो लाख सवारों की सेना आ रही है जब समीप क़िले के आ पहुँची तो बिदित हुआ कि क़ैरवां मग़रबी अपने सेनापति पीरान मग़रबी को साथ लेकर अपनी सेना समेत आता है तब नौशेरवां ने जोपीन और बेचन को अगवानी के लिये भेजा तो उसने आकर बादशाह के तख़्त पर बोसा देकर हर प्रकार से बादशाह को समझाया और पीरान मग़रबी को क़िले पर धावा करने की आज्ञा दी और कहा कि जिस तरह से होसके क़िले को अमरू से छीन लेना जिस समय पीरान मग़रबी

अपने दो लाख सवार लेकर क़िले की तरफ़ आरूढ़ हुआ तो अमरू अपनी सेना थोड़ी देखकर डरा और ईश्वर का ध्यान करने लगा तो इतने में जङ्गल की ओर गर्द उठी तो नक़ाबदार नारंजीपोश अपने चालीस सहस्र सवार लेकर आखड़ा हुआ तो अमरू अति आनन्द हुआ बख़्तियारक ने उसको देखकर नौशेरवां से कहा कि यही नक़ाबदार सदैव मुसल्मानी सेना की सहायता को आता है और इसीकी सहायता से मुसल्मानी सेना का विजय होता है इतने में नक़ाबदार ने पीरान मग़रबी के सामने आकर ऐसी डाट लगाई कि उसका घोड़ा पीछे को हटगया तब उसने क्रोध करके नक़ाबदार के शिरपर एक तलवार मारी नक़ाबदार ने घोड़े का आसन दबाकर तलवार कूदकर छीनली और एक हाथ से उसकी कमर पकड़कर ऊपर को उछाला और जब नीचे को आनेलगा तो एक तलवार ऐसी मारी कि दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो उसकी सेना ने नक़ाबदार को आकर घेर लिया और नौशेरवां की सेना ने भी सहायता की परन्तु नक़ाबदार अपने चालीस सहस्र सवारों से मारता हुआ जङ्गलकी तरफ़ चलागया और अमरू क़िले में विजय का डङ्का बजवाने लगा तब बादशाह नौशेरवां पराजय पाकर अपनी सेना समेत ख़ेमे में जाकर कैरवां मग़रबी को मातमपुरसी की ख़िलअत देकर हरप्रकार से समझाया इतने में उसी दिन मिस्कालशाह बादशाह क़िले तेग़ मग़रबी का नौशेरवां के समीप आया तो बादशाह से समझाकर कहा कि कल मैं इस क़िले को छीनलेता हूं और इन लोगोंसे अपना बदला लेता हूं परन्तु आज रात्रि को मेरी मेहमानदारी स्वीकार कीजिये तब बादशाह ने कहा कि अच्छा तब वह नौशेरवां के ख़ेमे के समीप ख़ेमा गाड़कर उतरा और मेहमानदारी की तैयारी करनेलगा और जिससमय अमरू ने सुना कि मिस्कालशाह नौशेरवां की मेहमानदारी के लिये उत्तम २ भोजन बनवा रहा है तो सब अपने सरदारोंको बुलवाकर कहा कि आज जो तुमलोग थोड़ा श्रम करो तो मैं तुमको चलकर उत्तम २ भोजन खिलाऊं मिस्कालशाह ने नौशेरवां की मेह-मानदारी के लिये भोजन बनवाया है रात्रि को क़िले से निकलकर लन्धौर और अमीर और बहराम का नाम लेकर उसकी सेनापर धावा करो तो सबने उसकी आज्ञा स्वीकार की तब अमरू ने सिपाहियों से कहा कि तुमलोग दिनभर में पांच सौ देव काग़ज़ के चारसौ गज़के लम्बे तैयार करो पहिये उनके पैर में लगाओ और जिससमय मेरे सफ़ेद मोहरे का शब्द तुम्हारे कानों में पहुँचे तो तुम उस समय उनको लेकर आना तब सिपाहियों ने अमरू की आज्ञानुसार दिनभर में देवों को बनाया और जब रात्रि को नौशेरवां मिस्कालशाह की सेना में गया सं-योग से वह रात्रि शुक्लपक्ष की थी और चारोंतरफ़ रोशनी भी होरही थी " ९ ' नाच देखनेलगे जब पहररात्रि व्यतीत हुई तो अमरू ने मुक़बिल को स्याहक़ैतास पर सवार कराके कहा कि अमीर का नाम लेना और आदी से कहा कि तू को लन्धौर कहना और सुल्तान बख़्तक मग़रबी से कहा कि तू बहराम के नाम

शोरगुल करना इसी प्रकार से सेना को समझाकर क़िले से बाहर निकला और मिस्कालशाह और नौशेरवां की सेनापर जागिरा तब मुक़बिल ने तो कहा कि मैं हमज़ा हूं और आदी ने कहा कि मैं लन्धौर पुत्र सादान हूं और सुल्तानबख़्त मग़रबी ने चिल्लाकर कहा कि मैं बादशाह ख़ाकान चीन का बहरामनामी हूं इसके पश्चात् तीनों सेना में तलवार चलने लगी तब अमरू ने बिचारा कि यह तो युद्ध करने लगे परन्तु सेना मेरी थोड़ी है कहीं ऐसा न हो कि पराजय पाकर लज्जित होऊं सफ़ेदमोहरा बजाके शत्रु की सेना को ललकारा कि साहबकिरां आज्ञा देते हैं कि काफ़ के देवों को अति शीघ्रही दौड़ आकर शत्रुओं को खाजाओ सिपाही अमरू का शब्द सुनकर देवों को लेकर आये और उनके मुख से आतशबाज़ी छोड़नेलगे तो शत्रु की सेना ने जाना कि देवों की सेना अमीर के साथ आई है वह अब लोगों को पराजय देगी इस बिचार से डरकर भाग खड़ेहुए हरचन्द बख़्तक ने कहा कि यह सब अमरू का जाल है परन्तु किसीने न सुना सब शिरपर पांव रखकर जो भागे तो बारह कोस तक चलेगये और कहीं एक सायत भी न ठहरे बादशाहों ने देखा कि जो हम बिना सेना के यहां रहे तो अवश्य शत्रु के हाथ से क़ैद होंगे वह भी अपनी सेना के पीछे भागे तब अमरू ने सब असबाब दोनों बादशाहों का उठाकर ज़म्बील में रक्खा मानों अपना असबाब है और सेना को पेट भरकर भोजन करवाया तब मुक़बिल से कहा कि तुम क़िले में जाकर स्त्रियों को सवार करके सब असबाब ऊंटोंपर लादकर अतिशीघ्रही आओ कोई बस्तु वहां रहने न पावे कि यहां से सब बस्तु लेकर क़िले तंजमग़रब को चलें तब वह आज्ञा पातेही जाकर सब माल स्त्रियों समेत क़िले से निकालकर बाहर आया वहां कोई बस्तु न रहनेपाई तब अमरू सेनासमेत क़िले तंजमग़रब की तरफ़ चला और जिस समय क़िलेपर पहुँचा तो मिस्कालशाह का जालीपत्र सेनापति को दिखलाकर क़िले में निस्संदेह जाकर बैठा तब काफ़िरों को मारनेलगा और जो मुसल्मान हुए उनका प्राण छोड़कर शेष को मारडाला और क़िले को अपने तौरपर करके दरवाज़े पर अतलस का शामियाना खड़ा करके कुरसी जड़ाऊ बिछाकर आराम से बैठा और क़िले का दरवाज़ा बन्द करलिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि उसने प्रातःकाल होतेही अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखआओ कि क़ाफ़के देवों की सेना कहां है यहां अमरू काग़ज़ के देवों को पहाड़ के नीचे बराबर से खड़ा करगया था सिपाहियों ने दूर से देखकर बादशाह से कहा कि देवों की सेना पहाड़ के नीचे खड़ी है बख़्तक ने कहा कि बिष्ठा खाते हैं जो झूंठ बोलते हैं यह सब अमरू का जाल है इतने में सिपाहियों ने आकर ख़बर दी कि अमरू क़िले तंग मग़रिब में जाकर दाख़िल हुआ और सब सामान बादशाही भी उठाकर लेगया यह हाल सुनकर बादशाह अतिव्याकुल हुआ और पीछे को सेनासमेत जाकर क़िले तंगमग़रिब को घेरकर पड़ा अब अमरू का हाल सुनिये कि अपने सरदारों

को इकट्ठा करके कहा कि अब हमज़ा को अठारह वर्ष से अधिक व्यतीत होगये और अबतक न आये सो अब हम सब को केवल आधी खूराक देवेंगे जिसकी खुशी हो वह रहे नहीं अपने घरकी राह लेवे तब सबों ने तो स्वीकार किया परन्तु आदी ने कहा कि मुझसे तो न रहाजायगा क्रोधित होकर वहां से निकला और बादशाह नौशेरवां से आकर प्रार्थना की कि आप मुझको नौकर रखलेवें उसने सब वृत्तान्त पूछकर रखलिया और आज्ञा दी कि तुम दरवाज़ेपर बैठेरहो कोई भीतर न आने पावे तब वह जाकर दरवाज़ेपर बैठा तो रात्रि को एक स्त्री आई उसके हाथ पकड़ कर ऐसे प्रकार से भोग किया कि वह मरगई तब वहां से डरकर नौशेरवां के घोड़े पर सवार होकर भागा और मार्ग में जाकर क्षुधा के मारे उसको भी मारकर खा-लिया तब फिर वहां से चलकर एक साधू की जमाअत में पहुँचा वहां से भी नि-काला गया तो जाकर नगर में भिक्षा मांगते एक नानबाई की दूकानपर पहुँचा उस ने दो रोटियां दीं आदी और मांगनेलगा तो उसने कहा कि मियां अच्छे तो बनेहो मेहनत करके नहीं खाते तब फिर आदी ने कहा कि तुमहीं नौकर रखलो उसने लकड़ी चीरनेपर रखलिया और कहा कि पेटभर तुमको भोजन दूंगा जब आदी उस की लकड़ी चीरचुका तो उसने उसे पांच रोटियां दीं तब आदी ने कहा कि इस प्रकार से मेरा पेट न भरेगा तुम उठकर अलग बैठो हम खालेवेंगे जब उसने स्वी-कार न किया तो उसकी गर्दन पकड़कर नीचे करदिया और सब रोटियां खालीं इसीतरह से कई नानबाई की रोटी खागया पीछे को इसकी ख़बर बादशाह को पहुँची तो प्रथम कोतवाल आया परन्तु उसके सिपाहियों के कहने से आदी ने न माना आख़िर को बादशाह आपही आया और आदी से बुलाकर कहा कि जो तुम मुसल्मानों से युद्ध करना स्वीकार करो तो हम तुमको नौकर रखकर अपनी बेटी के साथ ब्याह करदेंगे और बड़ी प्रतिष्ठा से रक्खेंगे परन्तु हमारे यहां की यह रीति है कि जब स्त्री पुरुष में से एककी मृत्यु होजावे तो दोनों गाड़े जाते हैं आदी ने सब स्वीकार किया तब बादशाह ने ले जाकर अपनी बेटी के साथ ब्याह कर दिया तो जब रात्रि को आदी ने उसके साथ भोग किया तो वह मरगई प्रातःकाल बादशाह ने देखकर आदी से कहा कि स्त्री अब मरगई चलो अब तुम भी गाड़े जाओगे पीछे को जब सब लोगों ने स्त्री को गोरमें धरके आदी को भी उसीके साथ गाड़ने की युक्ति कररहे थे कि इतने में उसी समय अमीर परदेकाफ़ से आकर उसी नगर में उतरे उस स्थान पर भीड़ भाड़ देखकर ख़्वाजे बहलोल से कहा कि देखो तो यह क्या होरहा है लड़कों ने जाकर जो देखा तो एक मनुष्य को जीता लोग गोर में गाड़ने को ठेलते हैं और वह नहीं जाता आकर यही हाल अमीर से कहा तो अमीर भी गये तो देखा कि आदी है उससे पूछा कि तू कौन है और यह क्या होरहा है ? उसने कहा कि मैं हमज़ा अरबी की सेनामें नौकर था सो वह अमरू को स्वामी सेनाका बनाकर परदेकाफ़ को चलागयाहै सो अठारहवर्षतक तो अमरू

आधा पेट भोजन दिया करता था वही खाकर रहता था अब उसने चौथाई पेट करदिया है तब वहां से चलकर भिक्षा भवन करता हुआ यहां पहुँचा यहां के बादशाह ने अपनी बेटी के साथ मेरा व्याह करदिया सो वह मृत्यु से मरगई तो अब मुझको भी उसीके साथ गाड़ने की इच्छा करते हैं अमीर ने पूछा कि तू अमीर को पहिचानता है उसने कहा क्यों नहीं तब अमीर ने मुखपर से मुकुट हटादिया देखतेही आदी दौड़कर अमीर के क़दमोंपर गिरपड़ा अमीरने आदी को छाती से लगाकर कहा कि अब तू न डर कोई अब तुझको न पासकेगा यह कहकर एक बड़े ज़ोरसे शब्द किया तो बादशाह शबीदशाह ने सेना समेत आकर अमीर को घेर लिया अमीर ने सबको मारडाला पीछे को शबीदशाह के सेनापतियों ने मुसल्मान होकर अमीरके साथ सुलह करके अपने स्थानपर लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी करके अमीर को रुख़सत किया वहां से सब लोगों समेत चलकर दोपहर के समय एक नदी के निकट पर पहुँचकर उतरे आदी गरमी से जाकर नदी में कूद कर स्नान करनेलगा तो एक संदूक़ बहताहुआ निकला आदी ने संदूक़ को पकड़ कर खोला तो उसमें एक देव बन्द था उठकर आदी से लपटगया तो आदी चिल्ला कर अमीर को पुकारनेलगा अमीर ने जाकर देवको संदूक़ में बन्द करके आदीको सौंपदिया आदीने इस विचार से कि असरू ने मुझको यह दुःख दिया है मैं भी उसको चलकर दुःख दूंगा संदूक़ को अपने पास रखलिया तब अमीर ने आदी से कहा कि तुम सबको साथ लेकर आओ मैं पहले से चलकर क़िले का हाल देखूं कि अमरू उसी क़िले में है या और कहीं गया और आदी से यह पहलेही विदित हो चुका है कि क़िले तंगमग़रिब में अमरू मेहरनिगार समेत है वहां से अशकर पर सवार होकर अमीर जब चले तो थोड़े ही समय में आकर क़िले के समीप पहुँचे तो देखा कि क़िला अति पुष्ट बना है किसी प्रकार भीतर जानेकी गली नहीं है तब उसी क़िले के निकट चर्म बिछाकर बैठगये और अशकर को बनमें चरने के लिये छोड़कर भेज दिया और आप फ़क़ीरों की तरह दीवाल के सहारे से बैठगये अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उस दिन अठारह वर्ष पूर्ण होने पर भी अमीर के न आने से सबलोग अतिव्याकुल थे उससमय अमरू मलिका मेहरनिगार को समझाकर कोठेपर लेगया था संयोग से तीन पक्षी बराबर से उड़ते दिखाई पड़े मेहरनिगार ने अपने चित्त में यह विचार करके कि जो अमीर आज आते हों तो बीच के पक्षी के तीर लगे संयोग से उसीके लगा और वह पक्षी और तीर आकर अमीर के आगे गिरा अमीर ने तीरको उठाकर चूमकर रखलिया तब अमरू ने दूरसे देख कर कहा कि तू कौन है? जो यहां आकर बैठा है और मलिका के तीर को क्यों उठाकर रखलिया ला तीर हमको दे अमीरने कहा कि मैं साधू हूं परदेकाफ़से आता हूं परदेकाफ़ का नाम सुनकर अमरू समीप आकर पूछने लगा कि तूने हमज़ा को भी देखा है अमीर ने कहा कि मैं उसीके पास से आताहूं और उसने मुझसे कहा

था कि जब मक्केकी तरफ़ जाना तो हमारे पितासे प्रणाम कहदेना और कुछ संदेशा मेहरनिगार से भी कहने को कहा है सो हम उसीके कान में कहेंगे तब अमरू ने अनेक प्रकार से अमीर को लोभ दिखलाकर कहा कि तू मुझे बतलादे तो बहुत कुछ दूंगा परन्तु अमीर ने सदैव यही उत्तर दिया कि हम उसी के कान में कहेंगे पीछेको लाचार होकर मलिका के पास जो गया तो वहां सब प्रकार से प्रसन्नता हो रही है मेहरनिगार ने कहा कि आज मैंने सगुन उठाकर देखा सो निश्चय है कि आज अमीर आवेंगे हमारा तीर दीवार के नीचे गिरा है तुम जाकर लेआओ अमरू ने कहा कि आज एक साधू आकर क़िले के नीचे बैठाहै उसीके पास तीर है और कहताहै कि मैं परदेकाफ़ से आताहूं हमज़ा ने कुछ संदेशा कहाहै वह भी मैं मेहरनिगारके कानमें कहूंगा सो अनेक प्रकारसे मैंने उसको लोभ देकर कहा परन्तु न वह तीर देता है न संदेशा कहता है और कहता है कि मैंने हमज़ा के प्रताप से हज़ारों रुपये अशरफ़ी मंगनों को बांटदिये हैं मुझको अब कुछ रुपये अशरफ़ी की आवश्यकता नहीं है ज्यों २ दिन व्यतीत होता जाता है त्यों २ अधिक दुःख होता है मेहरनिगार ने आज्ञा दी कि अतिशीघ्रही जाकर उसको लाओ अमरू ने फिर आकर कहा कि सहस्र अशरफ़ी मैं तुझको दूंगा बतादे अमीर ने कहा जो पहले मैंने कहाहै वही अब भी कहता हूं तब बहुतही लाचार होकर अमरू ने अमीर से कहा अच्छा आओ तब अमीर ने पक्षी तो अमरू को देदिया और तीर और चर्म अपने हाथमें लेकर चला जब क़िलेके भीतर गया तो अमरूने कहा कि मेहरनिगार इसी परदे के आड़में बैठी है अब जो कहना हो कहो अमीरने कहा कि मैं तो कान ही में कहूंगा जो सुनना हो तो आवे नहीं मैं जाताहूं लाचार होकर फितनाको लाकर अमीर के सम्मुख बैठाल दिया तब अमीर ने जो मुख खोलकर देखा तो कहा कि यह मेहरनिगार नहीं है यह तो फितना है अमीरने मुझे सबकी तसवीरें दिखाई हैं जो सुनना हो तो मेहरनिगार आवे नहीं मैं जाता हूं तब अमरू ने क्रोधित होकर मुक़बिल को बुलाकर आज्ञा दी कि जब यह क़िले से बाहर जानेलगे तो इसका शिर काटकर फेंकदो यह बड़ा दुष्ट है इतने में मेहरनिगार ने आकर संदेशा सुनने के लिये कान झुका दिया और अमीर ने चुपके से कहा कि मैं साधू नहीं हूं मैं हमज़ा हूं यह कहकर दोनों चिल्लाकर बेहोश होगये अमरूने जो विचार करके देखा तो पहिचाना कि हमज़ा है दौड़कर क़दमों पर गिरपड़ा और गुलाब आदि छिड़ककर दोनों को सावधान करके नाच रङ्ग किया और मंगनोंको रुपया पैसा अशरफ़ी लुटाने लगे यहांतक कि उस दिन अमरू ने भी दो पैसे पुण्य किया और नक़्क़ारख़ाने में ज़ाहिर नौबत बजने की आज्ञा दी तत्पश्चात् अमीर महल से निकलकर बाहर आये और सब छोटे बड़ों से मिलकर यथाउचित सबको ख़िलअत दे प्रसन्न करके महल में आकर मेहरनिगार के पास बैठे और मलिका भी करके पोशाक बदलकर बैठी लिखनेवाला लिखता है कि जब नौशेरवां के कान

नौबत आदि बाजों के बाजने का शब्द पहुँचा तो उसने अपने सिपाहियोंको बुलाकर पूछा कि यह क्या होरहा है सिपाहियों ने कहा कि क़िले में नौबत बजरही है शब्द सुनाई पड़ता है सुनते हैं कि हमज़ा क़ाफ़से ईश्वरकी कृपासे कुशलानन्द से आया बख़्तक ने कहा कि अमरूको फिर कोई जाल सूझा होगा तब बादशाह ने बुज़ुरुच-मेहर से पूछा कि आपके विचार में क्या आता है उन्हों ने कहा कि हिसाब से तो विदित होता है कि हमज़ा आया होगा और इसी विचार से मैंभी बसरे से आया हूं कि चलकर अमीरहमज़ा से मुलाक़ात करके क़ाफ़ का सब वृत्तान्त उनसे सुनूं अब अशक़र देवके पुत्र का हाल सुनिये कि जिससमय वह बनमें चरने को गया तो वहां नौशेरवां के घोड़े भी चररहे थे तो अशक़र ने क्रोधित होकर बहुत से घोड़ों को टापों से मारडाला और शेष जो बचरहे वे सायंकाल को अपनी सेना की तरफ़ भागे तो अशकर भी उनके पीछे दौड़ा जो व्याकुल होकर गये तो तोड़ते फांदते अपने थानपर पहुँचे तब लोग अशकर के तरफ़ पकड़ने को दौड़े तो जोही उसके सामने आता था उसीको पकड़कर मारडाला इसीप्रकार से हज़ारहों काफ़िरों को अशकर ने मारा नौशेरवां की सेनाने जाना कि मुसल्मानों ने छापा मारा है आरूढ़ होकर अपनीही सेनाको शत्रु की सेना जानकर प्रातःकालतक युद्ध कियाकिये जब प्रातःकाल हुआ तो देखा कि सब आपही मरेहुये पड़े हैं शत्रुका कहीं नाम नहीं नौशेरवां अशक़र को देखकर मोहित होगया और आज्ञा दी कि किसी युक्ति से इस घोड़े को पकड़ो तब जो उसके पकड़ने के लिये जाता तो वह घाव लेकर पलट आता किसीने क़ाबू न पाया अमीर ने अमरू से कहा कि रात्रि से अबतक नौशे-रवां की सेना में शोर गुल होरहा है जाकर देखो तो क्या कारण है क्यों शोर गुल होरहा है इतने में एक सिपाही ने आकर सब हाल अमीर से कहा तब अमीर ने अमरू से कहा कि वह घोड़ा मेरा है तुम जाकर उससे कहो कि ऐ पुत्र! आरनाइस अलानिसा तुझको साहबक़िरां ने बुलाया है मैं तेरे बुलानेके लिये आयाहूं तो वह उसी दम तुम्हारे साथ चला आवेगा तुम निस्संदेह होकर उसको यहां लेआना अमरू ने अमीर की आज्ञानुसार जाकर घोड़े से अमीर का संदेशा कहा तब वह अमरू के साथ हुआ तब अमीर क़िले से नीचे आकर अशक़र को गले से लगाकर क़िले में लेआकर अमरू का सब हाल उसे सुनाकर कहा कि यही तुम्हारी सेवा किया करेगा किसी प्रकार से तुमको दुःख न होने पावेगा और अमरू को आज्ञा दी कि अशकर को सब घोड़ों के आगे बांधना और खाने पीने की ख़बरदारी रखना उसके दूसरे दिन आदी ज़हरमिश्री बहलोल व ख़्वाजे आशोब समेत आया ज़हरमिश्री को तो अमीर ने मेहरनिगार के पास महल में भिजवा दिया और आज्ञा दी कि सदैव मलिका के पास रहे और ख़्वाजे आशोब बहलोल को अपने साथ रहने की आज्ञा दी आदी ने चुपके से अमरू को बुलाकर कहा कि इस संदूक़ में बहुतसा जवाहिर है इसको तुम लेजाओ अपने पास रक्खो तब तो अमरू अति प्रसन्नता के

साथ उस संदूक़ को लेकर एक कोठरी में जाकर ज्योंहीं संदूक़ खोला तो उसमें से एक देव निकला और अमरू के ऊपर मारनेको दौड़ा तव अमरू डरकर भागा और एक कोने में खड़ा होकर ज़हरमोहरा बजाने लगा जब अमीर ने ज़हरमोहरे का शब्द सुना तो उस समय में मेहरनिगार के साथ लेटा था सुनतेही उठकर दौड़ा कि अमरू पर क्या आफ़त आई कि वह सफ़ेद मोहरा बजारहा है मेहरनिगारको साथ लेकर सहनमें आकर खड़ाहुआ मुक़बिलभी ज़हरमिश्री के साथ लेटा था अमीर का आहट पाकर निकल आया तो वहभी अतिव्याकुल हुआ अमीर ने जो कान लगाकर सुना तो विदित हुआ कि फ़लानी कोठरी से ज़हरमोहरे का शब्द आरहा है अमीर उस कोठरी के तरफ़ जो गये तो दरवाज़ा भीतर से वन्द पाया एक लात मारकर दरवाज़ा तोड़ भीतर जो गये तो देखा कि वही देव जिसको अमीर ने क़ैदकरके आदी को दिया था तलवार लिये अमरू के मारने को आरूढ़ है और अमरू एक कोने में खड़ा ज़हरमोहरा वजारहा है जाकर उस देव को कमंद से बांध कर पृथ्वीपर गिरादिया और वाहर लाकर मेहरनिगारके सामने पकड़कर चीरडाला तव सवलोग अमीर के वलकी प्रशंसा करनेलगे और मलिका ने वहुतसी अशरफ़ी रुपया पुण्य किया और अमरू जो उसके डर से बेहोश होगया था जव लोगोंने गुलाव छिड़ककर सावधान किया तव आदी से अमरू ने कहा कि यह तूने मेरे साथ क्या किया कि मुझको इतना दुःख मिला अच्छा मैं भी इसका वदला लूंगा आदी ने हँसकर कहा कि ख़्वाजे में तुम्हारे कहने से ज़िन्दा गोर में गाड़ागया था मैं कुछ उसका वदला लूं या नहीं फिर सुलह कराके अमीरने दोनों को मिलवादिया अमरू अति प्रसन्न हुआ और अमीर को आशीर्वाद देनेलगा अमीर ने कहा कि अमरू तू न डर आसमानपरी तेरे लिये वहुतसी वस्तु लावेगी ॥

इति तीसरा भाग सम्पूर्णम् ॥

चौथाभाग ॥

साहवाकिरां अर्थात् हमज़ा का वृत्तान्त ॥

लेखकलोग अति तेज़ लेखनी से स्वच्छ काग़ज़ पर यों लिखते हैं कि जब नौशेरवां और बख़्तक आदिको अमीर का आना विदित हुआ तो बख़्तक ने वादशाह से कहा कि हमज़ा अठारह वर्षके पश्चात् परदेकाफ़ से आया परन्तु आपके समीप न आया तो इससे विदित होताहै कि वादशाह ससदेशी की वेटीको वलात्कार से लेने की इच्छा रखताहै ऐसे में तवलजङ्ग वजवाकर उससे युद्ध करने को आरूढ़ हूजिये कि वह थकामांदा है और आपकी सेना युद्ध करने को आरूढ़ है आसानीसे उसको मारकर मलिका को छीनलेवेंगे नौशेरवां भी उसके जाल में आगया और तवलजङ्ग बजवानेकी आज्ञा देकर युद्ध पर आरूढ़ हुआ जब यह ख़बर अमीर को पहुँची

उसने भी तबलजङ्ग बजवाने की आज्ञा दी तब वह चीनी व क़लावंचीनी ने अठारह मनकी चोब उठाकर तबल सिकन्दरीपर देमारा तो उसके शब्द से नौशेरवां के सिपाहियों के कानके परदे फटगये और रुधिर बहनेलगा और बहुत से सिपाही बहिरे होगये इसीप्रकार से रात्रिभर दोनों सेनाओं में युद्धका डङ्का बजाकिया और प्रातःकाल होतेही जो पहलवान कि सदैव युद्ध करने के लिये आरूढ़ होते थे अपना सब सामान करके शस्त्रआदिक लेकर घोड़ों को दोहरी तङ्ग से कसकर और सबसे मिलकर ईश्वर का ध्यान करने लगे और बहुत से मनुष्य ताना देनेलगे कि देखें कल किसका शिर घोड़े के नीचे आता है और किसकी तलवार बहादुरी दिखाती है और इसीके लिये सालों से बैठे खाते थे अब वह दिन आपहुँचा और जो लोग सदैव घरमें बैठे ढोल और सितार बजाया करते थे युद्ध के डङ्के का शब्द सुनकर ब्याकुल होगये और अपने साईसों से कहा कि रात्रि को घोड़ों को कसकर तैयार रखना हम तो अपने घर की राह लेवेंगे हमसे तो यह न होगा कि वृथा प्राण देवें आजही से तैयारी होती है कल तो लाखों मारेजावेंगे साईसों ने कहा कि ऐसा क्या है जिसकी मृत्यु होती है वही माराजाता है और जो ऐसा चित्त है तो सिपाहियों में नौकरी क्यों की थी? बेश्या के पीछे तबला बजाया करते या घरमें बैठे मलारें गाते तब तो उसने झुलझुलाकर कहा कि ओ उल्लू तू बड़ा बुद्धिमान् है जो नसीहत कररहा है हमने अपनी खुशी से सिपाहियों में चेहरा नहीं लिखवाया है ईश्वर ईमानराय बेलवाले चीनी का नाश करे कि उसने ख़रची बटोरकर एक घोड़ा मोल लेकर मुझको इस बला में बख़्शी को सेंत में मरवाकर मेरा नाम सवारों में लिखवादिया है नहीं तो हम कब इस बला में पड़ते थे कि हम रुधिर देखने से ब्याकुल होजाते हैं कि एक दिन पिता ने फ़स्त अपनी खुलवाई थी तो हम रुधिर देखकर पहर भरतक बेहोश पड़ेरहे और कहीं एक कांटा भी गड़जावे तो एकपैसे की भांग खिलाकर निकालतेथे नहीं तो ऐसे रोते कि निकटवासीलोग रात्रिभर न सोनेपाते और जबसे इस सेना में नौकर हुए हैं सदैव भागने में आगे और मारने में पीछे रहे हैं हमने कभी युद्ध नहीं किया तू अभी थोड़े दिनों का नौकर है तू हमारा हाल क्या जाने आज सुनते हैं कि बादशाह ससदेशी सबकी युद्ध में परीक्षा लेवेगा इस लिये हम पहलेही से अपना प्राण लेकर भागते हैं यही न कि पन्द्रहदिन की तनख़्वाह काट लेवेंगे या नौकरी से छुड़ा देवेंगे तो बलासे अपना दियासलाई बेंचकर खावेंगे युद्ध करने न जायँगे परन्तु नौशेरवां का चित्त उस दिन ऐसा बढ़ा था कि दो घड़ी रात्रि रहे मसाल बराबर से जलवाकर सब सरदारों और सेना समेत युद्धके खेत में आकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ अमीरने भी यह हाल सुनकर मुक़ाबिल से संदूक़ मँगवा कर ज़िरह पहिनकर सब शस्त्र धारण करके अशकर पर सवार होकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ तो सब सेनापति अपनी २ सेना लेकर अमीर के साथ नौशेरवां की सेनाके साथ युद्ध करने को आरूढ़ हुए और कई सहस्र पंशाखे और

महताबियाँ अमीर के घोड़े के आगे २ जलाये हुए और क़दम २ पर महताबी छुड़ाते थे और अमरू चारसौ सिपाहियों समेत अर्धमुकुट शिरपर रक्खे और सीमुर्गका पर ऊपरसे खोंसे अमीर के घोड़ेकी बाग पकड़ेहुए आगे २ चलाजाताथा और सरदारों ने इस प्रकार से अमीर को बीच में करलियाथा जिसतरह से अमीर मानो दूलह थे और सब सरदारलोग बराती विदित होते थे देखकर लोग अतिप्रसन्न होते थे इसी प्रकार से बड़ी धूमधाम से जाकर युद्ध के खेत में पहुँचे तो हरएक सरदारों ने अपनी सेनाको युद्ध करनेपर आरूढ़ किया तब मज़दूरों ने झाल झांखर काटा और बेलदारों ने फरुहे से पृथ्वी को बराबर किया तब भिश्तियों ने मशक लेकर पानी से पृथ्वी को स्वच्छ किया तो यमराज ने आकर खेत में डेरा किया तो हरएक के डरके मारे प्राण निकलनेलगे और मङ्गलग्रह हरएक के मस्तक पर चमकने लगा और झण्डे-बरदार बड़े ज़ोर से पुकारनेलगे कि जिसको आज बहादुरी दिखाना हो वह आकर युद्ध पर आरूढ़ होवे और मैदान में अपनी बहादुरी दिखावे दोनों सेना के सिपाही व्याकुल होगये मृत्यु का बाज़ार प्रचण्ड हुआ और सबने एकबारगी सन्नाटा मार लिया इतने में नौशेरवां की ओर से एक पहलवान सासानी कोहपैकर नाम अपनी सेना से घोड़ा कुदाकर निकला और बादशाह के तख़्त को बोसा देकर आज्ञा मांगी तब नौशेरवां ने अतिप्रसन्नता के साथ एक गिलास शराब देकर पीठ ठोंककर आज्ञा दी मानो वह गिलास आख़िरी था पीकर मैदान में आकर ललकार २ कर कहने लगा कि ऐ मुसल्मानो ! तुममें जिसको यमपुरी में मेरे हाथ से जाने की इच्छा होवे वह आकर मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखावे साहबकिरां ने मन्त्र पढ़कर अशकर को उसके घोड़े के बराबर लाकर एक डाट ऐसी मारी कि उसका घोड़ा डरकर पीछे हटगया और डरके मारे उसका रङ्ग बदलगया तो अमीरसे कहनेलगा कि हमज़ा ! तू ऐसा बुद्धिमान् और बहादुर होकर बादशाह से शत्रुता रखता है उचित है कि चलकर बादशाह के पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा करा अमीर ने कहा कि युद्ध करने आया है या सुलह करानें युद्ध करने के लिये आया हो तो सीधे युद्ध कर नहीं तो अपनी सेना की राह ले मैं ऐसा पागल नहीं हूं कि तेरी बातों में आऊं तब तो उस सिपाही ने बलछी लेकर घोड़े को फेरा और अमीर ने भी बलछी लेकर अशकर को चुचकारके उसके सम्मुख किया तो उसने एक बलछी अमीर के ऊपर चलाई अमीर ने उसको रोंकलिया और दो २ हाथ चले थे कि अमीर ने घोड़े को फेरकर दाहिनी तरफ़ करके बलछी मारने की इच्छा की परन्तु वह भी सिपाहगरी की विद्यामें निपुण था अपने घोड़ेको बाईंतरफ़ फेरकर अमीर के ऊपर एक बलछी चलाई तो अमीर कूदकर अशकरकी काठी से पीछे होरहे और उसके वार को रोंक-कर फिर ज़ीनपर होकर घोड़े को फेरकर जो मारा तो उसकी बलछी टूटकर आधी पृथ्वीपर गिरपड़ी और आधी उसके हाथ में रहगई अमीर की इस फ़र को देख मित्र या शत्रु सबने प्रशंसा की अमरू ने जवाहिर लगेहुए उस नेजे में देख

कर उठालिया और चूमकर अपने झोरे में रखकर कोहपैकरसे कहनेलगा कि वह टुकड़ा भी मुझको देदे तू क्या करेगा मेरे काम आवेगा उसने जवाहिर की लालच से कहा कि हे पापी! एक तो तूने लेलिया और दूसरा भी मांगता है अमरू ने कहा कि तू नहीं जानता कि गिरे पड़े का मैं स्वामी हूं तू खुशी से देदेगा तो अच्छाही है नहीं तो मैं छीनकर तुझको लज्जित करूंगा तब वह क्रोधित होकर कहने लगा कि देखेंगे किसतरह से तू लेता है यह कहकर उसी टुकड़े से चाहा कि अमरू को मारें इतने में अमरू ने ढेलवांसमें एक पत्थर रखकर घुमाकर उसके हाथमें इस ज़ोर से मारा कि उसका हाथ सुन्न होगया और वह टुकड़ा पृथ्वीपर गिरपड़ा अमरू ने दौड़ कर उसको उठालिया और अपने झोरे में रखकर कहनेलगा कि देख इस प्रकारसे अहमक्रों को धोखा देकर लेते हैं यह कहकर अपनी सेना में जाकर खड़ा हुआ तब उसने लज्जित होकर अमीर से कहा कि मैं तेरे साथ बल्छी से विजय न पासकूंगा इसमें तो धोखे की बात होजाती है अब हमारी तुम्हारी तलवार से युद्ध हो और इसमें अपनी २ बहादुरी दिखावें तब अमीर ने कहा कि इस से क्या उत्तम है यह तो मैं चाहताही था कि तेरी तलवार की भी बहादुरी देखूं इतने में उसने तलवार मियान से निकालकर चलाया तब अमीर ने उसको अपनी ढालपर रोंककर अपनी तलवार खींचकर ललकारा कि ख़बरदार हो अब मैं भी वार करताहूं यह न कहना कि मुझ को धोखा देकर मारा देख तलवार और वार इसको कहते हैं यह कहकर एक तलवार उसके ऊपर चलाई हरचन्द उसने भी बहादुरीसे रोंका परन्तु वह ऐसी तलवार न थी कि वार ख़ाली जावे ढालको काटती हुई शिरसे घोड़े को काटकर पार होगई उसका पृथ्वीपर गिरना कि नौशेरवां ने एक आह मारकर सेना से कहा कि ख़बरदार यह जाने न पावे जिस तरहसे बनपड़े मारडालो सेना आज्ञा पातेही टीड़ी के समान अमीर के ऊपर आगिरी तो मुसल्मानी सेना भी ढाल तलवार और बल्छी और तीर आदिक लेकर ईश्वर का नाम लेकर टूटपड़ी और तलवार चलनेलगी तो एक सायत में चालीस सहस्र सवार नौशेरवां के मारेगये शेष भाग खड़ेहुए कोई मुसल्मानी सेना का सामना न करसका अमीर ने उसी दिन चारकोस का पीछा किया था और कभी किसी सेना का पीछा न किया था और पलटती समय विजय का डङ्का बजवाते हुए बहुत से शत्रुओं के सिपाहियों को पकड़े हुए चले और उस दिन इतना माल और असबाब पाया कि सब लोग धनवान् होगये अमीर विजय पाकर अपने सरदारों समेत पलटकर अपने क़िलेमें दाख़िल होकर नाच रङ्ग करवाने लगे तत्पश्चात् अमीर ने पूछा कि हमारे पीछे तुम पर क्या २ दुःख पड़ाहै तब अमरू ने सब बृत्तान्त अमीर से कहा इतने में ख़्वाजे आशोब और बहलोल से अमीर ने बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है तुम किस कार्य को पसन्द करते हो? उन्होंने कहा कि हमलोगों को सौदागरी करने की इच्छा है तब अमीरने कई सहस्र अशरफ़ी देकर राहदारी का परवाना लिखकर जाने की आज्ञा दी तत्पश्चात् अमीर

ने अमरू से पूछा कि हमारे पीछे कभी लन्धौर और बहराम भी आये थे या नहीं अमरू ने कहा कि मैंने कई पत्र उनको लिखा था परन्तु न उत्तरही लिखा न कभी मेरी सहायता के लिये आये परन्तु जब कोई शत्रु मुझपर सेना लेकर आता था तो एक नक़ाबदार नारंजीपोश आकर मेरी सहायता करता था और उससे हज़ारहों मनुष्य मारेजाते थे और अनेक प्रकारसे मैंने उससे पूछा कि तू कौन है ? परन्तु सदैव उसने यही उत्तर दिया कि अभीतक हमसे कोई ऐसा कार्य नहीं हुआ कि अपना मुख किसीको दिखलावें और जब मैंने अधिक हठ किया तो उसने कहा कि जब ईश्वर हमज़ा को लावेगा तो मेरा हाल उससमय तुमको बिदित होगा तब अमीर ने क्रोधित होकर आज्ञा दी कि आजसे जो कोई लन्धौर और बहरामका नाम लेगा उसकी ज़बान निकलवा डाली जावेगी और उसको अतिलज्जित करूंगा और जब अमीर के आनेकी ख़बर सब बादशाहोंको पहुँची तो सब सौगात लेकर अमीर के पास आकर हाज़िर हुए और अशरफ़ी रुपये नेवछावर करके मंगनोंको बांटदिया और जो न आसके उन्होंने रुपये अशरफ़ी सौगातसमेत भेजकर अमीर को अतिप्रसन्न किया लन्धौर और बहराम भी सुनकर अतिप्रसन्न हुए लन्धौर ने बहराम से कहा कि हमको तुमको बीस बाइस बर्ष रहते व्यतीत होगये और अबतक इस देश के शत्रुओं से निर्भय न हुए और अमरू के ऊपर बड़े २ शत्रुओंने इस कालमें चढ़ाई की होगी परन्तु हम में से कोई उसकी सहायता को न गया इससे निश्चय है कि साहबकिरां सुनकर अतिक्रोधित हुए होंगे इससे उचितहै कि अब अमीर के क़दमों पैर चलकर गिरैं और अपना अपराध क्षमा कराकर प्रसन्नता प्राप्त करें नहीं तो लोग नमकहराम कहेंगे संसारमें लज्जित होंगे तब बहराम ने कहा कि यह तो अतिउत्तम है तुम आगे चलो मैं भी आताहूं और अमीरके चित्तको प्रसन्न करके आनन्द प्राप्त करता हूं यह कहकर बहराम तो चीनकी तरफ़ चलेगये और लन्धौर अपनी सेना को क़िलेपर स्थित करके अमीर के समीप जाकर हाज़िर हुआ तो अमीर ने बुला कर अतिलज्जित किया तब लन्धौर ने अनेकप्रकार से अपने वृत्तान्त को बर्णन करके अपना अपराध क्षमा कराके बहराम की भी सिफ़ारिश की पीछे को अमीर ने उसका अपराध क्षमाकरके अपने समीप बैठाकर सेनापति का उपनाम देकर अतिप्रसन्न किया अमरूसे पूछा कि कुछ बिदित हुआ कि नौशेरवां किस दिशा को गया है तब अमरू ने कहा कि पूर्वकी तरफ़ गया है वहां के अधिपति ने पांचलक्ष सेनासमेत एक सेनापति को नौशेरवां की सहायता के लिये भेजा है सो वह आकर आपके समीप पहुँचगया है थोड़ीसी सेना तमसा नदी के उस पार है और कुछ इस पार उतर आई है यह सुनकर अमीर ने भी आज्ञा दी कि हमारी सेना भी चलकर नदी के समीप युद्ध पर आरूढ़ होकर पड़े और नाच रङ्ग का सामान इकट्ठा कियाजावे यह आज्ञा पातेही सब सेनापति अपनी २ सेना लेकर युद्ध करने को आरूढ़ होकर अमीर के साथ होकर बड़ी धूमधाम से जाकर नदी के किनारे उतरे और नाच रङ्ग होने लगा

इतने में सिपाहियों ने आकर ख़बर दी कि मुक़बिल वफ़ादार हरमुज़ ताजदार और बख़्तक को बांधकर लिये आता है यह सुनकर अमीर अतिप्रसन्न हुए विदित हो कि जिस दिन युद्ध अतितीक्ष्ण हुआ था उसी दिन हरमुज़ ताजदार और बख़्तक क़िले को ख़ाली जानकर पांचसहस्र सवारसमेत मलिकामेहरनिगार के लाने के लिये गये थे तो वहां मुक़बिल चालीससहस्र सवारसमेत क़िले में बैठा था उसने पांच सहस्र सवारों को मारकर उन दोनों के हाथों को बांधकर अमीर के समीप पहुँचाया तो अमीर अतिप्रसन्न हुए साहबकिरां ने हरमुज़ से कहा कि जो आप मुसल्मान होवें तो यह राज्य आपही के लिये है प्रसन्नता के साथ मुसल्मान होकर गद्दीपर बैठ कर राजधानी कीजिये बख़्तक ने बिचारा कि हरमुज़ तो बचभी जावेगा परन्तु मेरा प्राण न बचेगा इस बिचार से हरमुज़ को स्वीकार करने की सम्मति दी जिससमय हरमुज़ और बख़्तक प्राणकी रक्षाके लिये ईर्षा चित्त में रखकर मुसल्मान हुए तब साहबकिरां ने हरमुज़ को राजगद्दी पर बैठाकर बख़्तक को सेनापति बनाकर अति प्रसन्न होकर प्रसन्नता के डङ्के बजवाने लगे और नाच रङ्ग की सभा बन्द हुई तीन दिवसके पश्चात् चारघड़ी दिन रहे अमीर अतिप्रसन्नताके साथ बनकी हरियाली देख रहे थे कि आकाश से तीन मोर आकर उसी बनमें उतरे अमीर ने देखकर मुक़- बिल वफ़ादार और अमरू यारको उनके देखनेके लिये भेजा परन्तु वे जातेही लोप होगये तो देखनेवाले इस हालको देखकर बड़े संदेह में हुए लिखनेवाला लिखता है कि वे मोर न थे परन्तु आसमानपरी थी जोकि परदेकाफ़ से सेना समेत आकर दो कोसकी दूरीपर उतरकर हरियाली देखकर चित्त प्रसन्न करने को मोरका भेष धारण करके आई थी उसीने अब्दुलरहमान आदि को अमीर के पता लेने को भेजा था थोड़े समय के बाद आकर अमीर ने प्रसन्न होकर अपने समीप कुरसीपर बैठालकर अतिप्रसन्न करके सर्व बृत्तान्त आसमानपरी के आने का पूछा और हरमुज़ ताजदार आदि सेनापतियों से आसमानपरीके आनेका सर्व बृत्तान्त कहकर अमरू से कहा अब प्रसन्न हो आसमानपरी तुम्हारेलिये बहुत सामान परदेकाफ़ से ले आई होगी अमरू यह हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और रात्रिभर नाच रङ्ग हुआ किया प्रातःकाल होतेही अमीर तैयार होकर आसमानपरी के पास जानेको आरूढ़ हुए सब सेना के सरदारोंसमेत अब्दुलरहमान ने पहलेही से सलासल परीज़ाद को आसमानपरीके पास भेजदिया था उसने जाकर आसमानपरी से कहा कि अमीर बड़ी धूमधाम से आपकी मुलाक़ात को आते हैं तब उसने अतिप्रसन्न होकर अपने डेरे से क़िलेतक बाग़ आराम बनाकर रचदिया जिस समय अमीर बारगाह सुले- मानीपर पहुँचे तो सबको बाहर छोड़कर आप ख़ेमेके भीतर गये तो आसमानपरी करीशा को साथ लेकर सरदारों समेत अमीर की अगवानी को उठकर आई और हँसकर अमीर से कहा कि आप तो मुझको छोड़कर चलेआये थे परन्तु मैं आपही आई और मेहरनिगार के ब्याह का सामान भी साथ लेआई हूं तब अमीर ने पूछा

कि क्या २ लाई हो ? हमको दिखलाओ आसमानपरी ने कहा कि बारगाह सुलेमानी नक़्क़ारख़ाना सुलेमानी चार बाज़ार आदि और २ प्रकार के जवाहिर अमीर ने अतिप्रसन्न होकर करीशा को छाती से लगाकर आसमानपरी को भी प्यार करके सब सरदारों से कुशलआनन्द पूछकर अतिप्रसन्न किया तब आसमानपरी अति प्रसन्न हुई और एक कुरसीपर बैठकर बातें करनेलगे तब हमज़ा ने आसमानपरी से कहा कि अमरू जिसकी प्रशंसा हम आपसे कियाकरते थे वह भी आपके समीप आनेकी इच्छा रखता है आसमानपरी ने कहा कि अच्छा बुलवालेओ अमरू जब ख़ेमे के अन्दर गया तो सिवा अमीर के और किसीको न देखा तो बड़े संदेह में हुआ कि ऐसा ख़ेमाहै परन्तु सिवा अमीर के और कोई दिखाई नहीं पड़ता तब अमीर से पूछनेलगा कि कृपा करके मुझेभी मलिका का स्वरूप दिखलाइये कि जिसके स्नेह से आप अठारह वर्ष परदेकाफ़ में पड़े रहे तब अमीर ने कहा कि तू सलाम क्यों नहीं करता आसमानपरी तख़्तपर बैठी है अमरू ने कहा कि मुझको तो दिखाईही नहीं पड़ती क्या मैं कुरसियों और तख़्त को सलाम करूं ? मेरा ऐसा सलाम नहीं है तब आसमानपरी ने उसके दाहिने नेत्र में सुलेमानी सुरमा लगा दिया विदित हो कि दाहिने नेत्र में सुरमा लगाने से देव दिखाई पड़ते हैं और बायें नेत्र के लगाने से परी दिखाई पड़ती हैं अमरू की दाहिनी आंख में सुरमा सुलेमानी जो लगाया तो अमरू को देवों का स्वरूप दिखाई पड़ने लगा तब अमरू ने अमीरसे पूछा कि इसमें आपकी स्त्री कौन है ? कृपा करके दिखला दीजिये अमीर अमरू की बातोंपर हँसने लगा और मलिका भी हँसते हँसते तख़्तपर लोट गई और आज्ञा दी कि इसके बायें नेत्र में भी सुरमा लगादेओ अब इसको मेरा स्वरूप दिखादो तब बायें नेत्र में सुरमा लगादेनेसे परियों को देखनेलगा तो देखा कि एक तख़्तपर एक स्त्री अतिस्वरूपवती बैठी है और एक युवा लड़की अमीर के स्वरूप की उसकी गोद में है जिसके स्वरूप के देखने से लोग बड़े संदेह में होते थे चित्त में विचार किया कि विदित होता है कि यह लड़की अमीर की है तख़्त के समीप जाकर मलिका को सलाम किया और साहबकिरांसे कहनेलगा कि हे अमीर ! आसमानपरी यही है जिसके लिये अठारह वर्षतक आप दुःख में पड़ेरहे मैं तो ऐसी स्त्री से जाज़रूरका लोटाभी न रखवाता न इसके छुये बर्तन में भोजन करता यह सुनकर मलिका अति दुःखित हुई तब अमीर ने जिन्नीभाषा में कहा कि तुम दुःखी न हो यह तो इसकी एक छोटीसी हँसी है अभी जो आप इसको कुछ देवें तो देखिये कि कैसी २ बातें आपको सुनाता है और मैंने काफ़ में इसका सब हाल पहलेही कहा था यह बड़ा दुष्ट है कि जिसकी बातों से लोग बड़े संदेह में होते हैं तब आसमानपरी ने आंसू पोंछकर एक सुनहली ख़िलअ़त और बहुतसा द्रव्य समेत अमरू को दिया उसने ख़िलअ़त को पहिनकर सलाम किया और [illegible] बजा बजाकर इस शेरको अपने मसख़रापन से गानेलगा ॥

शेर ॥

क्या तेरे हुसनकी तसवीर है अल्लाह । नूरहनूर की तरकसीरहै अल्लाह ॥

और अमीर की तरफ़ देखकर कहने लगा कि ऐ साहबकिरां! मैं पहलेही से जानता था कि कोई अप्सरा आपको मिलगई है कि जिसको छोड़कर आप नहीं आसक्के थे पहले मैं जानता था कि मेहरनिगारही केवल संसार में स्वरूपवती है परन्तु इस मलिका के सामने उसकी सुन्दरता कुछ नहीं है फिर क्यों न हो कहां मनुष्य और कहां परीज़ाद आसमानपरी अमरू की बातोंपर हँसनेलगी और बहुतसा जवाहिर और उत्तम २ वस्तु काफ़की अमरू को देकर निहाल करदिया ततपश्चात् आसमानपरी ने अमीर के सेनाके सरदारों को बहुतसी उत्तम २ वस्तु देकर अति प्रसन्न किया और अमीर से कहा कि मेहरनिगार के ब्याहका सामान अति शीघ्रही इकट्ठा करो यद्यपि मैं परदेकाफ़ से सब सामान लेकर ब्याहके लिये आई हूं परन्तु इस देश की रीतिके सामान अवश्य होना उचित है और मेरी इच्छा है कि ब्याह विधिपूर्बक होवे मुझको हरप्रकार स्वीकार है तब तीन दिन बसके पश्चात् चौथे दिन अमीर अपनी सेना में आये चार दिन तक आसमानपरी से न छूटने पाये तब मेहरनिगार से जाकर सब हाल कहा उसने शिर झुकालिया और कुछ उत्तर न दिया तब अमीर ने बाहर आकर हरमुज़ ताजदार से सब हाल कहकर डङ्का ब्याह का बजनेकी आज्ञा देकर सामान इकट्ठा करवानेलगे और एक विनयपत्र इस समाचार का बादशाह नौशेरवां को लिखकर भेजा कि आप तो मेहरनिगार को मुझ को देचुकेथे परन्तु आजतक ऐसे उपद्रव रहे कि ब्याह करनेकी विधि न होसकी सो अबतक जो हुआ सो हुआ परन्तु अब मैं ब्याहका सामान करता हूं उचितहै कि आपभी आकर सेवकके स्थान को अपने पदों से पवित्र करें अमरू पत्र लेकर बादशाह के समीप गया जब बादशाह ने पत्र को पढ़ा तो अमरू से पूछा कि मैंने सुनाहै कि आसमानपरी परदेकाफ़ से मेहरनिगार के ब्याह के लिये सामान लेआई है उसने कहा कि सत्य है इतनेमें एक पत्रिका हरमुज़ और बख़्तक की पहुँची के आप ब्याह करनेकी आज्ञा अवश्य देदीजियेगा कि आपकी बात भी रहजावे और अमीर भी प्रसन्न होजावेगा और जो आप न आज्ञा देवेंगे तौ भी वह ब्याह करेगा और आपकी बात बृथा जावेगी तब बादशाह ने सब सरदारों को बुलाकर हरमुज़ की पत्रिका पढ़कर सुनाई तो सबने उसकी सम्मति को पसन्द किया नौशेरवां ने क़लमदान मँगवाकर अमीर की पत्रिका के उत्तर में ब्याह करने की आज्ञा दी परन्तु जानेसे इन्कार किया उस समय में अकसर सेनापतियों ने कहा कि हमने तो ऐसा ब्याह फ़क़ीरोंका भी नहीं देखा न कि अमीर का विदित होता है कि बड़े २ लोग अपने आपही ब्याह करलिया करते हैं तब बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि जो आप लोग जावेंगे तो अमीर प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर तमाशा दिखावेंगे दो चार दिन तमाशा देखकर चलेआइयेगा बहुत दिन तक वहां न बासकीजिये और नौशेरवांसे

कहा कि जो आप तमाशा देखनेकी इच्छा रखते हो तो अमरू को कुछ इनाम दीजिये कि वह आपको अपने स्थान में बैठालकर तमाशा दिखावेगा बादशाह ने इस को स्वीकार करके अमरू से कहा कि हम साधू का भेष धारण करके आवेंगे तब अमरू ने स्वीकार किया पीछे बादशाहने अमरू को खिलअत देकर बिदा किया और बुज़ुरुच्चमेहर भी अमरू के साथ होकर गया लिखनेवाला लिखता है कि अमीर अपने पत्र का उत्तर विधिपूर्वक पाकर अतिप्रसन्न हुआ और हरएक मनुष्य को पत्र दिखलाकर बुज़ुरुच्चमेहरसे मिलकर उन दोनों पत्तों का रस जो हज़रत ख़िज़र ने दिये थे अपने हाथ से नेत्रों में टपकाकर नेत्रों को तारागण के समान रोशन करदिया तब बुज़ुरुच्चमेहर अमीर की अतिप्रशंसा करनेलगा और नौबत ब्याहकी बराबरसे बजने लगी और देव और परीज़ादों ने मलिका आसमानपरी की आज्ञा से बारगाह सुलेमानी को एक बड़े टीलेपर स्थित करके सब सामान ब्याह का इकट्ठा किया और अपने स्थानपर जवाहिरादिक चुनकर अति अपूर्व स्थान बनादिया और नक़्क़ारख़ाने सुलेमानी में नौबत ब्याह की बजने लगी तब मलिका आसमानपरी ने मलिकामेहरनिगार को एकान्त में लेजाकर दुलहिन बनाकर सब ब्याहकी सामग्री विधिपूर्वक मँगवाकर इकट्ठा किया तत्पश्चात् बरात के दिन अमीर खिलअत शाहाना पहिनकर अशकर देवज़ादे पर सवार हुए और सब सेनापति आदि साथ बराबरसे जवाहिर लुटातेहुए घोड़ेके चारों तरफ़ जुटकर चले और बारह सहस्र जिन्न पनशाखे और लालटेन आदि रोशन कियेहुए घोड़े के आगे चलेजाते थे और चालीस सहस्र जिन्न क़ाफ़की आतशबाज़ी छुड़ाते हुए और बीस सहस्र तख़्त उड़नेवाले जिसपर परियां गाती बजाती थीं उड़े चलेजाते थे और ऊंटोंपर नौबत सुलेमानी बजती थी इसी प्रकार से ऐसी धूमधाम थी कि न किसीने कभी पहले देखी होगी न देखेगा और अमरू चार सहस्र चारसौ चवालिस मक्कार साथ लिये सुनहली पोशाक पहिने सवारी का प्रबन्ध करते चलेजाते थे और घोड़े इसप्रकार से कूदते जाते थे कि लोग देखकर अतिअचम्भित होते थे अशकर देवज़ादा उससमय इसप्रकार से कूदता फांदता चारों तरफ़ से चलता था कि कोई मुरछल हांकता है लोग देखकर बड़ी प्रशंसा करते थे पश्चात् को जब इस प्रकार से बरात बड़े धूमधाम से सुलेमानी बारगाह में पहुँची तो अमीर घोड़ेपर से उतर कर हुरमुज़ ताजदार के तख़्तपर बैठकर परियों का नाच देखनेलगा मलिका आसमानपरी और करीशा अपने मुसाहिबों समेत मेहरनिगार के समीप जाकर उसको ज़र और जवाहिर क़ाफ़ के जिसको शाहनशाह क़ाफ़ के सिवा और किसी ने न देखा था मेहरनिगार को पहिनाकर नेवछावर किया उस शोभा को देखकर आसमानपरी ने मेहरनिगार का हाथ चूमकर दुलहिन बनाकर बहुतसा जवाहिर नेवछावर करके बहुतसी जवाहिर की डालियां रखदिया उस समय की सुन्दरता को आसमानपरी देखकर अति मोहित होकर ब्याह के कारोबार में प्रवेशित हुई अब

नौशेरवां का वृत्तान्त सुनिये कि सात मनुष्यों समेत साधूका भेष धारण करके ब्याह का तमाशा देखने के लिये गया तब अमरू ने नौशेरवां को पहिंचानकर कहा कि आप चलकर सभा में बैठिये और तमाशा देखिये नौशेरवां ने मंजूर न किया अमरू ने कहा कि मैं आपको ऐसे स्थान पर बैठालूंगा कि आप सबको देखें और आपको कोई न देखसके इस बात को बादशाह ने मानलिया और अतिआनन्द के साथ बादशाह अमरू के साथ होकर बारगाह सुलेमानी में आया तो अमरू ने जवाहिर की कुरसियोंपर बड़ी प्रतिष्ठा के साथ बैठाया और साक़ी अर्थात् शराब पिलानेवालों को मदिरा बांटने की आज्ञा दी कि सबको अच्छीतरह से पिलाओ नौशेरवां चार घड़ी के पश्चात् उठ खड़ाहुआ और अमीर को आशीर्वाद देकर कहने लगा कि बाबा हम साधू हैं सैर करने को आये थे अब बिदा होते हैं कृपा करके प्रसन्नता के साथ बिदा कीजिये तब अमीर ने अय्यारी भाषा में अमरू से कहा कि इनको चारताक के ऊपर लेजाकर बैठाओ और ऐसी युक्ति करो कि प्रसन्नता से बादशाह तमाशा देखें अमरू ने नौशेरवां को चारताक के ऊपर बैठालकर जो सामान कि उचित थे रखकर उनके चित्तको अतिप्रसन्न किया तत्पश्चात् चारघड़ी रात्रि रहे ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने अमीर का ब्याह मेहरनिगार के साथ मतानुसार करदिया प्रातःकाल होतेही महल में दुलहे की पुकार हुई तो अमीर जो महल के पहले दरवाज़े पर पहुँचे तो आसमानपरी ने दरवाज़ा बन्द करलिया और कहा कि दरवाज़ा उसी समय खुलेगा जिससमय मेहरनिगार की न्यवछावर देलेओगे तब अमीर ने मुक़बिल वफ़ादार के चालीस हज़ार सवार जरीकम समेत मेहरनिगार के बदले में दिया तब आसमानपरी ने दरवाज़ा खोला फिर दूसरा दरवाज़ा बन्दकिया इसी प्रकार से सात दरवाज़ोंपर सात बस्तु आसमानपरी ने मेहरनिगार के लिये लीं और अमीर ने निस्संदेह दीं तब आगे जाने पाये और अमीर मेहरनिगार को दुलहिन बनकर मसनदपर बैठे देख अतिप्रसन्न हुए ईश्वर का धन्यवाद देने लगे तत्पश्चात् मेहरनिगार का हाथ पकड़कर छपरखट पर लेगये और गोदमें बैठाकर स्नेह की बातें करनेलगे एक घड़ी के पीछे दोनों मेंहाथ पैयां होनेलगी तब अमीर ने दम दिलासा देकर अपनी इच्छा पूर्ण की और ईश्वर की कृपा से उसी रात्रि को गर्भ रहगया प्रातःकाल स्नान करवस्त्र धारण करके बारगाह सुलेमानी में आकर बैठे और दिनभर आनन्दरूपी तमाशा देखतेरहे रात्रि को मलिका आसमानपरी के साथ भोग करने को गये और उसके दूसरे दिन मलिका रैहानपरी के साथ भोग किया तीसरे दिन समनसीमापरी के साथ भोग किया इसी प्रकार से हरदिन सब स्त्रियों के साथ भोग करने से आनन्द पातेरहे चालीसदिनतक नाच रङ्ग के सिवा और कुछ कार्य न हुआ एकदिन अमीर चारताक की सैर को सवार होकर अरदली समेत बाहर गये थे कि संयोगवश आकाश से एक देव रदशातिर का भाई जिसको अमीर ने मारा था आकर अमीर को अकेला देखकर मारने को दौड़ा अमीर ने वार

रोककर उसको पकड़कर दो भाग करके फेंकदिया इस बल को देखकर सबलोग बड़े आश्चर्य में हुए नौशेरवां बेहोश होकर बड़ी देरतक पड़ा रहा अमीर ने गुलाबआदि छिड़ककर चैतन्य किया अमीर के पास बिदा होने के लिये साधू का भेष धारण करके गया तब अमीर ने नौशेरवां से कहा कि अग्निका पूजन छोड़कर ईश्वरभक्त हो हम तुम्हारी बड़ी सेवा करेंगे तब बादशाह ने कहा कि हमारे यहां ऐसी बात नहीं है कि अपना धर्म छोड़कर दूसरे का धर्म स्वीकार करें पीछे को अमरूने बहुत सी सौगात बादशाह को सरदारों समेत देकर बिदा किया तब बादशाह ने अपनी सेना को इकट्ठा करके दूसरे दिन मदायन की यात्रा की तत्पश्चात् मलिका आसमानपरी ने भी सब सौगात काफ़की अमीर को देकर बिदा मांगी तब अमीर ने गले से मिलकर कहा कि जिसप्रकार कि हम तुमसे दुःखित थे वैसेही अब प्रसन्न हुए अब जिससमय तुम हमको बुलाओगी उसी समय जो किसी युद्ध में न होंगे तो चलेआवेंगे और तुम्हारा तो घरही है जब चित्त चाहे तभी चली आना और करीशा के सुखको चूमकर जो वस्तु उसके देने के योग्य थी देकर बिदा किया और रैहानपरी और समनसीमापरी भी अमीर से बिदा होकर मलिका के साथ हुई साहबकिरां सब देश पूर्वी शाहतेगमग़रबी को देकर उस देश का उसको स्वामी बनाया परन्तु वह अपना कारिन्दा देश में छोड़कर अमीर के साथ हुआ अमीर दूसरे दिन अगवानी खेमा भेजकर मक्केकी तरफ़ रवाना हुआ और अमरू बिनहमज़ा नामे अपने पुत्रको जोकि मलिकानाहिद मरहीम के तनसे उत्पन्न हुआ था अपने स्थानापन्न करके सब कारोबार छोड़कर मेहरनिगारके साथ भोगविलास करनेलगे एकदिन असरू बिनहमज़ा सभामें बैठा शराब पीरहाथा अकस्मात् आदी अकरबने नेत्र उठा कर लन्धौर से कहा कि तुझको भी इतनी सामर्थ्य हुई कि मेरी कुरसीपर बैठनेलगा तब लन्धौर ने कहा कि तू चारही प्याले में घबड़ागया और मुझसे क्रोधित होकर बातें करता है और मेरी मुक्कि से नहीं डरता है और मैं तो कुरसीपर अमीर की आज्ञा से बैठाहूं आदी ने फिर तड़ककर कहा कि नहीं अमीर ने तुझको मेरी कुरसी पर बैठने की आज्ञा नहीं दी है तू झूठ कहताहै तब लन्धौर ने कहा कि आदी तू दो तीन गिलास शराब पीने से पागल होगया इतना सुनतेही आदी ने उठकर एक घूंसा लन्धौर के शिरपर मारा तब लन्धौर ने हँसकर कहा कि आदी क्यों दुष्टपना करता है होश में आ भूल न जा अमरू के पुत्र हमज़ा ने इस बृत्तान्त को देख कर आदी को ललकारकर कहा क्यों दुष्टपना करताहै आदी ने नशे के कारण चिल्लाकर कहा तुमको इससे क्या प्रयोजन है मैं और लन्धौर समझलूंगा आप चुप रहिये यह सुनकर अमीरज़ादे ने उठकर एक घूंसा ऐसे ज़ोर से लगाया कि पृथ्वी में लोटगया तब आदी अपना शिर पीटकर कहने लगा कि जब अमीरज़ादा इस प्रकारसे बेहुरमती चाहेगा तब हम इस राजसभा में किसप्रकार रहिसकेंगे जो कि यह बात सबको पसन्द आई तब सभा में शोर करने लगे तब अमीर ब्याकुल हो

र बाहर चले आये और अतिदुःखी होकर अपने बेटे से कहने लगे कि ख़बरदार ऐसी बात कभी न करना वे दोनों आपस में समझलेते अमीरज़ादे ने क्रोधित हो कर कहा जो फिर कदाचित् आदी ऐसा काम करेगा तब फिर कान काटके नगर से निकलवादेऊंगा अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि गाल न मार नहीं तौ मैं मार डालूंगा अमीरज़ादे की भी युवाअवस्था थी पिता की बातोंपर क्रोधित होकर कहने लगा कि किसको सामर्थ्य है कि मुझे मारे तब तौ अमीर अग्नि के समान जलउठे और अमरू का हाथ पकड़कर युद्ध के मैदान में बाप बेटे दोनों घोड़े पर सवार हो युद्ध करने को आरूढ़ हुए और सबलोग बाप बेटों का युद्ध देखनेलगे तब अमीरने अमरू को आगे बुलाया उसने इच्छा की कि चलकर युद्ध करें परन्तु उसका घोड़ा आगे न बढ़सका तब अमीर ने कहा कि हे नादान! घोड़े से अदब सीख तब तो वह घोड़े पर से उतरपड़ा और अमीर भी उतरपड़े कुश्ती लड़ने पर आरूढ़ हुए अमरू ने अमीर के कमरबन्द को पकड़कर यथाशक्ति घुमाया परन्तु अमीर का पैर न उठसका तब लाचारहोकर छोड़दिया परन्तु अमीर ने अमरू के कमर में हाथ डालकर शिरतक उठाकर धीरे से पृथ्वी पर रखदिया और उसके मुख का बोसा लिया तब अमरू ने भी अमीर के पैरों पर शिर झुकाकर अपना अपराध क्षमा कराया अमीर ने उसको छाती से लगाकर कहा कि हे पुत्र! इनहीं सरदारोंही से मेरा नाम है इनकी आज्ञा माननी उचितहै और इनको अनेक प्रकार से प्रसन्न रखना उचित है तब अमीरज़ादा शरमिन्दा होकर फिर सभा में बैठा लिखनेवाले लिखते हैं कि नवें मास अमीर और अमीरज़ादे के स्त्रियों के तनसे पुत्र उत्पन्न हुए इस हाल को सुनकर अमीर अतिप्रसन्न हुए पोते का नाम तो सादान रक्खा परन्तु पुत्र का नाम न रक्खा और अमरूसे कहा कि तुम नौशेरवांसे जाकर ख़बर देओ और उस से कहो कि नाम भी आपही रक्खें अमरू थोड़े दिनोंके पश्चात् मदायन में पहुँचा और नौशेरवां से सलाम करके कहा कि नाती को ईश्वर कृपा करके और अमीर ने विनय करके कहा है कि आपही नाम भी रक्खें बादशाह इस वृत्तान्त को सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और अमरू को ख़िलअत देकर चालीस दिन का जलसा होने की आज्ञा दी और सामान सभा का सब इकट्ठा किया और उसका नाम क़बाद रक्खा गया और मेहरंगेज़बानू ने इस वृत्तान्त को सुनकर अमरू को अपने समीप बुला कर अमीर और मेहरनिगार की कुशल और अपने नाती के स्वरूप को पूछकर अ- मरू को ख़िलअत देकर बिदा किया तब अमरू ने अतिप्रसन्नता के साथ वहां से चलकर अमीरके समीप आकर सब वृत्तान्त आदिसे कहा जब सादान और क़बाद चार २ वर्षके हुए तो अमीर ने उनदोनों लड़कों को अमरू को सौंपकर आज्ञा दी कि इनदोनों को अच्छी तरह से अदब तमीज़ सिखाओ और जिससमय पांच वर्ष के हुए तो देखनेवाले देखकर कहते थे ऐसे सुन्दर और तमीज़दार लड़के कभी दे- खनेमें नहीं आये कि अभी से इनकी बहादुरी प्रसिद्ध होतीजातीहै प्रातःकाल और

सायंकाल को लेकर खिलाते थे लिखनेवाला लिखता है कि जिस समय ज़ोपीन ने क़बादके उत्पन्न होनेका वृत्तान्त सुना तो उसने नौशेरवांको एक विनयपत्र लिखा कि हमज़ा ने जो अबतक आपकी गद्दी नहीं ली तो कोई पुत्र उसके न था अब जो आपकी पुत्री से पुत्र हुआ है तो अवश्य है कि हमज़ा आपकी गद्दी छीनकर अपने पुत्र को बैठावेगा इससे उचित है कि आप बहमन के समीप जाकर उसको साथ लेकर हमज़ा को परास्त करिये आगे आपकी बुद्धि प्रबल है जैसा उचित होवे सो कीजिये नौशेरवां ने ज़ोपीन के पत्र को पढ़कर कहा कि हमज़ा मुझसे ऐसा कभी न करेगा बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि सत्य है ऐसाही होगा परन्तु बख़्तक ने जाने की सम्मति दी पीछे को नौशेरवां ने युद्ध का सामान इकट्ठा करके बहमन के समीप जाने की यात्रा की जब वहां पहुँचे तो बहमन ने अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हो कर सर्व वृत्तान्त नौशेरवां से पूछा तो उसने सब कहकर अन्त को कहा कि किसी युक्ति से अति शीघ्रही युद्ध का सामान इकट्ठा करके चलो तब बहमन ने स्वीकार करके अमीर को लिखा कि तू बहादुरी लोगों की देखता फिरताहै सो आकर मुझको भी अपनी बहादुरी दिखा अमीर पत्रको देखकर जलउठा और कहनेलगा कि अब तक तो यह इच्छा न थी परन्तु अब किसी प्रकार से न छोड़ूंगा तब अमीर ने शुभ सायत पूछकर क़बाद को गद्दी पर बैठाकर सब सेनापतियों और देशवासियों से नज़रें दिलवाकर बहुतसा जवाहिर अशरफ़ियां भिक्षुक आदि को देकर चालीस दिवसके नाच रङ्ग के सभा कराने के पश्चात् बहमन के तरफ़ यात्रा की और पहाड़ के समीप जाकर डेरा खड़ाकरके पड़े बहमन ने पहलेही से हूमान नाम अपने पुत्र को बहुत सी सेनासमेत पहाड़ की रक्षा करने के लिये भेजा था सो जब आदी अ-क़रबने पहुँचकर इच्छा की कि पहाड़ पर चढ़जावें कि इतने में हूमान पहाड़ पर से पत्थर मारने लगा इस कारण आदी अकरब का पैर आगे न बढ़सका कि इतने में असरू पुत्र हमज़ा मलिक लन्धौर सेनापति समेत आकर पहुँच गये और देखा कि पहाड़ पर से पत्थर गिररहे हैं और आदी चुपचाप नीचे खड़ा है तब वे तीनों मिलकर बड़ी बहादुरी से ढाल से रोकते हुए जाकर पहाड़ पर पहुँचे सहस्रों सेना को मारकर हूमान को उठाकर पृथ्वी पर देमारकर छाती पर ख़ंजर रखकर कहनेलगा कि अब मुसल्मान हो नहीं मारडालता हूं तब उसने कहा कि कृपा करके इससमय मुझको छोड़दीजिये जब मेरा पिता मुसल्मान होगा तो मैं भी हूंगा असरू पुत्र हमज़ा ने उसको छोड़दिया तो उसने जाकर सब हाल बहमन से कहा बहमनने क्रोधित होकर कहा कि विदित होता है कि तू मेरे वीर्य से नहीं है जो तल-वार से डरता है और लज्जित होकर चुप नहीं रहता फिर आकर सम्मुख होकर मुख दिखाता है कि इतने में सामने से एक सेना की गर्द उड़ती हुई दिखाई पड़ी तत्प-श्चात् विदित हुआ कि साहबक़िरां अपनी सेना लेकर आते हैं और सहस्रों झंडे दिखाई पड़े तब बहमन ने कहा कि हे बख़्तक! मैंने अमीर का नाम तो सुना है

परन्तु स्वरूप आजतक नहीं देखा सो तू किसीप्रकार से हमको दिखादे तब उसने कहा कि आप सवार होकर मार्ग में खड़े हूजिये मैं अमीर को दिखलादूंगा तब दोनों सवार होकर मार्ग में जाकर खड़ेहुए तो इतने में पहले झंडे के छापा में जिस म सर्प की मूर्ति बनी थी आदी अकरब अपनी सेना समेत आकर निकला तो वहमन ने पूछा कि हमज़ा यही है तब वख़्तक ने कहा कि नहीं यह तो अमीर की सेना का सेनापति है इसीप्रकार जितने सरदार निकले सबको वख़्तक ने वहमन से बतलाया सब सेनापतियों के पीछे अमरू की सवारी निकली तब वख़्तक ने कहा कि जो अमरू का नाम आपने सुनाहोगा वह यही है जिससे बादशाह सप्तदेशी भी डरते हैं तत्पश्चात् शाहज़ादा क़बाद का तख़्त सूर्य के सदृश पृथ्वी पर आकर निकला तो वख़्तक ने वहमन से कहा कि क़बाद पुत्र हमज़ा का यही है तत्पश्चात् अमीर अश्कर देवज़ादे पर सवार बड़ी धूमधाम से आकर निकला तो वख़्तक ने वहमन से कहा कि अमीर यही है वहमन यह सुनकर बड़े संदेह में हुआ कि किसप्रकार से इसने इसी स्वरूप से परदेकाफ़ के बड़े २ देवों और बलवानों को मारा है तब वख़्तक ने कहा कि युद्धके समय आपही विदित होजावेगा तब उसने कहा कि आज तो वह थका मांदा आया है कल हम हैं या अमीर ऐसा लज्जित करूं कि वह भी जाने अमीर ने दूसरे दिन एक पत्र में सब वृत्तान्त लिखकर लिखा कि हम तुम्हारे बुलाने से आये हैं सो तुम अतिशीघ्रही नौशेरवां वख़्तक और ज़ोपीन को बांधकर हमारे पास भेजकर तुम भी कर लेकर हमारे समीप आकर हाज़िर होकर मुसल्मानी स्वीकार करके सेवकाई करो नहीं तो आकर दण्ड दूंगा परन्तु इस पत्र को अमरू के हाथ इस कारण से न भेजा कि वह जाकर वहमन को अतिलज्जित करेगा इस विचार से अपने पुत्र अमरू के साथ एक बुद्धिमान् पुरुष को पत्र लेकर भेजा वह जब पत्र लेकर थोड़ी दूर गया तो मार्ग में देखा कि एक मनुष्य अमीर की दोहाई देरहा है उससे पूछा तू कौन है ? तो उसने कहा कि आपके घोड़ों का रक्षक हूं सो घोड़ों को यहां चरारहा था वहमन के सिपाही घोड़ों को लिये जाते हैं अमरू ने पूछा कि कहां जाते हैं तब उसने बतलादिया तब वह घोड़ों के टाप के पते से दौड़ा समीप जाकर एक ऐसी डाट लगाई कि सब डरकर भागगये परन्तु केवल हूमान अमरू को अकेले देखकर खड़ा होकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुआ और जब अमरू समीप पहुँचा तो पूछनेलगा कि तू कौन है और कहां से आता है ? अमरू ने कहा कि हमज़ा का पुत्र और तेरे प्राण का गाहक हूं हूमान यह सुनकर तलवार लेकर अमरू के ऊपर दौड़ा अमरू ने रोंककर उसको पकड़कर पृथ्वीपर देमारा और खंजर पेटपर रखकर कहनेलगा कि या तो मुसल्मान हो नहीं तो मार डालूंगा हूमान जंगी २ करके कहनेलगा कि हे अमीर के पुत्र ! इससमय तू मेरा प्राण छोड़दे जिस समय मेरा पिता मुसल्मान होगा उसी समय मैं भी धर्म स्वीकार करके आपकी सेवकाई में रहूंगा आपकी आज्ञा से विरुद्ध कभी न हूंगा तब अमरू

पुत्र हमज़ा उसकी छातीपर से उठकर खड़ा होगया उसने सलाम करके पूछा कि आप कहां को जाते हैं और कहां से आते हैं ? उसने कहा कि अमीर का संदेशा लेकर तेरे पिता के पास जाताहूं हूमान ने कहा कि इस समय के युद्ध को किसीसे प्रसिद्ध न करना तब उसने स्वीकार किया तब हूमान अपने पिता के पास चलागया और अमीरका पुत्र अपने घोड़ों के रक्षक को सौंपकर बहमन के पास चला गया तो उस समय बहमन अपनी सभा में नौशेरवां ज़ोपीन बख़्तक बुज़ुरुचमेहर समेत बैठा हुआ था अमरू पुत्र हमज़ाने बुज़ुरुचमेहर से सलाम करके पत्रको फेंकदिया परन्तु उससे कुछ वार्त्ता न किया तब बहमन पत्र को फाड़कर क्रोधित हुआ तब अमीर का पुत्र अमरू क्रोधित होकर कहनेलगा कि अफ़सोस है कि पिता ने युद्ध करने को मनाकिया है नहीं तो पत्र की तरह से तुमको भी फाड़कर फेंकदेते तब तो बहमन ने क्रोधित होकर अपने पुत्रको आज्ञा दी कि इसको दण्ड देव वह तलवार लेकर अमीर के पुत्रपर दौड़ा उसने तलवार छीनकर ऐसा चरख़की तरह घुमाकर फेंका कि वह व्याकुल होगया इतने में छोटा भाई दौड़ा उसकी भी यही गति की तब तो बहमन ने प्रसन्न होकर कहा कि वाह शेरके शेरही होते हैं यह कहकर खिलअत देकर उसको विदा किया अमरू ने अमीर के पास आकर सब वृत्तान्त कहा तब अमीर ने अतिप्रसन्न होकर बहुत सा जवाहिर लुटाकर प्रसन्न किया दूसरे दिन बहमन सेना लेकर युद्ध के खेत में आया और अमीर भी सेना लेकर गये तो अमरू पुत्र अमीर तख़्त को चूमकर घोड़े को बढ़ाकर युद्ध करने को आरूढ़ हुए और उधर से हूमान भी वादा लेकर आये अमरूने हूमान की कमर पकड़कर दो तीन वार घुमाकर पृथ्वी पर देमारा और मुश्कें बांधकर अमीर के पास लेगया अमीर ने अमरू अय्यार को सौंपदिया बहमनने अपने दूसरे पुत्रको भेजा तो उसकी भी यही गति हुई अन्त को डङ्का बजवाकर लौटगया और अमीर भी अतिप्रसन्नता के साथ डङ्का बजवाते हुए अपनी सेनासमेत डेरेपर चलेआये सब लोगों ने जीतकी भेंट दी और प्रातःकाल होते सभा में बैठकर बहमन के बेटोंको बुलाकर आज्ञा दी कि मुसल्मानीधर्म स्वीकार करके अग्नि का पूजन छोड़ देव लड़कोंने कहा कि हे अमीर ! जिससमय मेरा पिता मुसल्मान होगा उसीसमय हमलोग भी होंगे अभी कृपा करके क्षमा कीजिये तब अमीर ने उनको छोड़दिया तब उन लड़कों ने बहमन से सब वृत्तान्त वर्णन किया बहमनसे अमीर की बड़ी प्रशंसा की और दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों सेना मैदान में युद्ध पर आरूढ़ होकर आईं और एकतरफ से बहमन और दूसरी तरफ़ से हमज़ा का पुत्र अमरू सेना से निकलकर युद्ध करनेलगे परन्तु सब दिन युद्ध होतारहा दोनों में से कोई न हटा सायङ्काल को दोनों अपनी सेना में चलेगये तब अमीर ने अपने पुत्र परसे बहुतसा रुपया अशरफ़ी न्योछावर करके पूछा कि बहमन कैसा पहलवानहै उसने कहा कि आपके बाद वही एक पहलवानहै दूसरे दिन डङ्का बजवाकर दोनों सेना मैदान में आईं और बहमन और लन्धौर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुए तो

बहमन ने लन्धौर से पूछा कि तू कौन है ? उसने कहा कि मेरा नाम लन्धौर है मैंने बड़े २ बहादुरों को मारा है इतना कहकर लन्धौरने ऐसा शब्द किया कि सेना डर से कांपगई तब तो बहमन ने कहा कि सत्य है जैसा हम नाम सुनते थे वैसाही तू है तब दोनों से शामतक युद्ध हुआ किया और कोई न हटसका सायङ्काल को डङ्का बजवाकर चलेगये तब अमीर ने पूछा कि कहो लन्धौर बहमन कैसा पहलवान है उसने कहा कि आपके पुत्रकी बाक्य सत्य है दूसरे दिन जब सेना मैदान में आई तो आदी अकरब बहमनके सम्मुख होकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुआ तो बहमन ने पूछा कि तू कौन है ? आदी ने कहा कि मेरा आदीअकरब नाम है तब बहमन ने कहा कि तेरा पेट खाली हो तो चलकर मेरे साथ भोजन कर पहलवान से युद्ध न होसकेगा तब आदी ने कहा कि हे बहमन ! कहांहै तेरा चित्त क्या बकता है (दृष्टान्त) (जो दे गये हैं वह आपही प्रसिद्ध होजावेगा) देख अमीर कैसा दण्ड देता हूं जो तेरा प्राण बचगया तो अपने प्राणकी मेहमानी करलेना और बहुतसा दान करना इसके पश्चात् दोनों में गदा से युद्ध होनेलगा तब बहमन ने कमरबन्द पकड़कर आदीको उठालिया परन्तु आदीने घूंसे उसके शिरपर मारे कि उसने छोड़दिया और डङ्का बजाकर पलटगये दूसरे दिन बहमन छःभाई आदी के पकड़लेगया तब अमीर अतिदुःखित हुआ तो अमरू ने कहा कि जो आज्ञा हो तो मैं जाकर सबको छोड़ाआऊं तब अमीर ने कहा कि इससे क्या उत्तम है तब अमरू मक्कारी पोशाक पहिनकर बहमन की सभामें गया उस रात्रिको बहमन ने सबसे पूछा कि तुमलोगों की क्या सम्मति है ? इन सरदारों को मारडालें या छोड़दें तब नौशेरवां ने कहा कि इनसब को मारडालो कि जिससे हमज़ा की सेना के सरदार कम होजावें और बख़्तक ने कहा कि इनको शूली देना उचित है इसी प्रकार से हरएक ने मारने की सम्मति दी पीछेको अपने बेटों से पूछा तो उन्होंने कहा कि इनको मारकर क़िलेकी दीवारपर लटकादो कि अमीरकी सेनाके लोग देखकर डरें तब बहमन ने कहा कि तुमलोगों को कहते लज्जा नहीं मालूम होती कि अमीरने तुमको छोड़दिया और तुम उसके सरदार के मारनेकी सम्मति देतेहो इतना कहकर सब सरदारों को बुलाकर छोड़कर अमीर के समीप भेजदिया तब अमरूने प्रसिद्ध होकर कहा कि वाह बहमन! पहलवानों को ऐसाही उचित है और जो तू न छोड़ता तो मैं अवश्य छोड़ालेजाता और बख़्तक के सम्मुख होकर कहनेलगा कि तू मुझे नहीं डरा और अमीर के सरदारों के मारने की सम्मति देता था अब देखना मैं भी तेरी कैसी गति बनाता हूं तब तो बख़्तक हाथ जोड़कर कहनेलगा कि मैंने तो केवल बहमन के खुश होने के लिये कहा था परन्तु चित्तसेमैं ऐसा नहीं चाहता था और अब जो बहमन ने किया है इससे मुझे अति आनन्द हुआ परन्तु अमरू ने कुछ उसका कहना न माना और चलते समय उसके शिर का मुकुट लेकर एक चपत शिरमें मारकर चलागया और कहा कि खबरदार अपनी दाढ़ीका बाल भेजदेना नहीं तो मैं तुमको अति

लज्जित करूंगा और वृथा मुझे तेरे खेमे में न आना पड़े ततपश्चात् अमीर के समीप आकर सब वृत्तान्त वर्णन किया तव अमीर ने कहा कि अच्छा वह मुसलमान हो जावे क्योंकि वह बड़ा पहलवान है प्रातःकाल दोनों सेना फिर मैदान में आकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुई तो वहमन ने अमीर से कहा कि हमज़ा! तू क्यों नहीं आकर युद्ध करता तव तो अमीर अशकर देवज़ादेपर सवार होकर वहमन के सम्मुख आ कर खड़ाहुआ तो वहमन ने कहा कि लाओ वार चलाओ तव अमीर ने कहा कि पहले हमलोगों का यह धर्म नहीं है कि किसी कार्य में शीघ्रता करें तव वहमन ने कहा कि युद्ध करना उचित नहीं है केवल लङ्गर उठाना उचित है जो हारे वह वलवान् की आधीनता में रहे तव वहमन ने अमीर का लङ्गर पकड़कर उठाया परन्तु हिल न सका तव अमीर ने पकड़कर सातवार घुमाकर पृथ्वीपर रखकर मुश्कें वहमन की बांधकर अमरू के हवाले करके डङ्का वजवाकर पलटगया और सेना में जाकर वहमन को बुलाकर जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर कहा कि तुम अब मुसलमान होकर हमारी आज्ञा में होरहो उसने कहा कि मुझे सब आपकी आज्ञा माननी हरप्रकार से उचितहै परन्तु नौशेरवां और ज़ोपीन आदिका भी अपराध क्षमा कीजिये तव अमीर ने कहा कि जो वेलोग मुसलमान होवें तो हम उनका अपराध क्षमा करते नहीं उनको अपने हाथ से हम वध करेंगे तव वहमन ने कहा कि जो आज्ञा होवे तो हम जाकर उन सब लोगों को समझाकर आपके समीप लाकर अपराध क्षमा करावें तव अमीर ने खिलअत देकर वहमनको विदा करके उनके लाने को भेजा वहमन ने जाकर नौशेरवां ज़ोपीन और वख़्तक आदी से कहा कि अव तुमलोग मिलकर अमीर से मिलो अव जो हम न विजय हमज़ा से पासके तो निश्चय है कि कोई संसार में न जीत सकेगा इससे सवलोग चलकर उसके साथ मिलकर रहें तव सवलोग एकचित्त होकर अमीर के समीप आये अमीर ने यथा उचित सबको बैठालकर अति प्रसन्न किया और ख़ुशीका वाजा वजनेलगा इसके पश्चात् सात दिनतक नाच रङ्ग होनेकी आज्ञा दी ॥

अमीर का मक्केकी ओर जाना और पराजय देकर पकड़कर लावान अमरू हवशी का मुसलमान करना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि सभाके पश्चात् अमरू और आदी अकरवने अमीर से कहा कि अव यहां जीव जन्तुओं को भोजनके लिये अतिदुःख होता है इससे और कहीं चलकर वास कीजिये अमीर ने स्वीकार करके कहा कि अतिउत्तम है काविस हिसार की ओर अगवानी खेमा भेजाजावे उसी समयमें नौशेरवांने अमीर से कहा कि अव हमारी यह इच्छा होती है कि क़वाद को गद्दीपर बैठालकर हम ईश्वर का भजन एकान्त में बैठकर करें अमीर ने कहा कि हम इसमें कुछ नहीं उत्तर देसक्ते जैसी आपकी इच्छा हो वही कीजिये तव नौशेरवां ने क़वाद को अपना स्थानापन्न करके वुज़ुरुचमेहर समेत मदायन की तरफ़ यात्रा की और अमीर

काविस हिसार में जाकर दिनको तो शिकार करते थे और रात्रि को हरप्रकार की वस्तुओं से चित्तको प्रसन्न करतेरहे एकदिन एक दूतने आकर मक्केसे अमीर के पिता का एक पत्र दिया अमीरने पत्रको लेकर पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि ऐ पुत्र! जिस दिनसे तूने होश सम्हाला है तब से किसीने हमारे ऊपर चढ़ाई नहीं की थी परन्तु अब सादान अमरू हबशी ने हमारे नगर को भी लूटलिया है और मक्के को भी नाश करने की इच्छा रखताहै इससे उचित है कि अतिशीघ्रही आकर उसकी कोई युक्ति करो नहीं तो कोई मुसल्मान न बचेगा अमीर ने उस पत्र को सब सरदारों को दिखलाकर बहमन से कहा कि जबतक हम न आवें तबतक तुम हमारे स्थानापन्न होकर राजगद्दी करो और हमारे मित्रों को मित्र और पुत्रों को पुत्र जानकर रक्खो और मैं ईश्वर की कृपा होगी तो अतिशीघ्रही पराजय करके मक्के से आता हूं तब बहमनने हाथ बांधकर कहा कि मैं आपके स्थानापन्न होकर नहीं बैठसक्ता मेरा इतना बड़ा मुँह कि आपकी गद्दीपर बैठूं परन्तु अमीर ने समझाकर सब कारोबार उसके हवाले करके आप मक्के की ओर अमरू को साथ लेकर चले तो जब मक्केके समीप पहुँचे तो अमीर ने अमरू से पूछा कि अब क्या सामान किया चाहिये? अमरूने कहा कि आप अशकर देवज़ादे को इसी वनमें चरने के लिये छोड़ दीजिये और पैदल मेरे साथ होकर चलिये अमीर ने अशकर देवज़ादेको जिन्नीभाषा में समझादिया कि तुम निस्संदेह होकर इसी बन में चरो जब हम शब्द करें तो सुनकर हमारे पास चलेआना और आप अमरू को साथ लेकर पैदल चले जिससमय सेना के समीप पहुँचे संयोग से अमरू से एक बाज़ीगर से मुलाक़ात होगई यहां तक कि दोनों साथ होकर सादानके समीप जाकर कलाबाज़ी करके सादान को इस प्रकार से प्रसन्न किया कि उसने पारितोषिक देनेकी आज्ञा दी परन्तु अमरू ने न लिया और सम्मुख जाकर प्रार्थना की कि मुझको द्रव्य लेने की इच्छा नहीं परन्तु आप इतनी कृपा कीजिये कि मेरे चचा का एक किंकर है सो वह टहलुई छोड़कर पहलवान होगया रात्रि दिन मुझको दुःख दियाकरता है सो आप उसको डाट देवें तो मेरा दुःख छूटजावे सादान ने कहा कि अच्छा उसको बुलाओ तब अमरूने पुकारा कि फ़ौलाद पहलवान इधर आओ अमीर आये परन्तु जो सादान से दण्डवत् न की तो उसने क्रोधित होकर कहा कि क्योंरे किङ्कर! तू अपने मालिक को क्यों दुःख देताहै? अमीर ने कहा कि मैं तो किङ्कर नहीं हूं तूही होगा तब अमरू ने सादान से कहा कि आप इसकी दुष्टता देखते हैं यह आपसे भी नहीं डरता तब तो सादान ने क्रोधित होकर एक पहलवान को अमीर के शिर काटने की आज्ञा दी परन्तु जब वह समीप आया तो अमीर ने ऐसा घूंसा मारा कि वह पृथ्वीपर बैठगया तब सादान ने दूसरे को भेजा उसका भी वही हाल किया इसी प्रकार से चालीस पहलवानों को मारा पीछे को सादान जब शस्त्र लेकर उठा तो अमीरने उठकर पृथ्वीपर देमारा और छातीपर सवार होकर कहा कि तू नहीं जानता कि हम अमीरहमज़ा

हैं तब तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि अब आप मेरा अपराध क्षमाकरें मैं केवल नौशेरवां के बुलाने से आयाथा अब कभी न आऊंगा तब अमीर ने कहा कि अब तो हम तुमको बेमुसल्मान किये न छोड़ेंगे लाचार होकर वह मुसल्मान हुआ तब अमीर ने उसके ऊपर से उतरकर गले लगाया और अमीर ने जो शब्द सादानके उठाती समयकिया तो उसको सुनकर मक्केके सबलोग आकर हाज़िरहुए तब अमीर ने जाकर अपने पिताका पैर छुआ उन्होंने छातीसे लगाया पीछे को सबलोग अमीर को साथ लेकर मक्के को आये तो अमीर ने सादान को ख़िलअत देकर सब मक्कावासियों को यथाउचित ख़िलअत देकर प्रसन्नकिया और अमरूभी अपने पिता के समीप जाकर स्थित होकर रहा लिखनेवाला लिखता है कि नाचरङ्ग होने के पश्चात् सादान ने अमीर से कहा कि जो आज्ञा हो तो जाकर अपने देश से बाल बच्चों को माल असबाब समेत लेकर आऊं तब अमीर ने अति प्रसन्नता से ख़िलअत देकर विदा किया जब सादान मदायनके समीप पहुँचा तो उसने अपने चित्त में विचारा कि नौशेरवां ने हमको बड़ा दुःख दियाहै अब इसको भी कुछ दण्डदेना उचित है दरवाज़ेपर जाकर द्वारपालकों से कहा कि बादशाह से ख़बर करो कि सादान अपने देश को जाताहै बिदाहोने आया है नौशेरवांने सुनकर बुलवालिया तब उसने जाकर दण्डवत् करके बादशाह से कहा कि आपने तो मेरी खूब इज़्ज़त ली इतना कहकर बादशाह का कमरबन्द पकड़कर उठालिया और कहनेलगा कि जो कोई मेरे समीप आवेगा तो मैं बादशाहको ऊपरसे छोड़कर मारडालूंगा सब राज्य तुम्हारा नष्ट होजावेगा इस डरसे कोई समीप न जासका और सादान ने बादशाह को अपने नगर में लेजाकर पैरों में ज़ंजीरें डलवाकर चौराहे पर लटका दिया और एक ज्वार की रोटी और जल उसके भोजन के लिये देने लगा इस प्रकार से दुःख देनेलगा तो नौशेरवां ने एक दिन सादान से पूछा कि तूने क्यों मुझे ऐसे दुःखमें डाल रक्खा है मैंने तेरे साथ कौनसी बुराई की है कि तू ईश्वर से भी नहीं डरता सादान ने कहा कि जो तू मुझको बुलाकर मक्के के बरबाद करने के लिये न भेजता तो मेरी यह गति क्यों होती नौशेरवां ने कहा कि मैं इसे क्या जानूं बख़्तक ने बुलाकर भेजा होगा सादान ने कहा कि जो बख़्तक ने भेजा हो तो उसी को लाकर हमको देओ हम तुमको छोड़देवें उसीको इसमें क़ैद करूं बादशाह इस बात को सुनकर चुप होरहे अब थोड़ासा हाल अमीर का सुनिये कि थोड़े दिनके पश्चात् अपने पिता से विदा होने की इच्छा की तब ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलब ने कहा कि ऐ पुत्र! बहुत दिनों के पश्चात् जो देखा है इससे अभी चित्त नहीं चाहता कि जाने देवें एक वर्ष और रहो अमीरने स्वीकार किया यह वृत्तान्त जब बख़्तक को पहुँचा कि अमीर अभी एक वर्ष मक्के में अपने पिता के समीप रहेंगे विचारा कि मैदान ख़ाली है किसी युक्ति से अमीर को लज्जित किया चाहिये इसप्रकार से विचार कर नौशेरवां की ओर से एक जालीपत्र जोपीन और हुरमुज़ के नाम लिखकर एक दूत

के हाथ भेजा कि हमने सादानको भेजकर मक्केके मुसल्मानों का नाश करवाडाला और उसने हमज़ा और अमरू को भी लेजाकर अपने देशमें शूली दी है सो तुम हमज़ा की मुसल्मानी सेना को मारकर मेहरनिगार को बहमन को देदो संयोग से उस समय ज़ोपीन बनमें शिकार खेलने को जाता था मार्ग में दूतसे मुलाक़ात हुई उसने पत्र देकर सब हाल ज़बानी भी सुनाया जिस प्रकार से कि बख़्तक ने समझा दिया था ज़ोपीन पत्र को पढ़कर सीधा बहमन के समीप आकर उस पत्र को देकर सब वृत्तान्त सुनाया बहमन ने पत्र को पढ़कर ज़ोपीन से कहा कि यह तेरा फ़रेब है मैं तेरी बात कब मानताहूं पीछे को जब ज़ोपीन सौगन्दें खानेलगा तो बहमन को भी निश्चय हुआ कि ज़ोपीन सत्य कहता है और उस दूत को जब बुलाकर पूछा तो उसने भी उसी तरह से वर्णनकिया तब तो बहमन अतिदुःखित होकर कहनेलगा कि अच्छा जो हुआ सो हुआ उसके लड़कों को उसके स्थानप्रति करके इन्हीं की आज्ञानुसार करेंगे इतना कहकर दूत से पूछनेलगा कि सत्य बता क्या हुआ ? दूत ने सौगंदें खाकर कहा कि मैं सत्य कहता हूं मेरे सामने दोनों शूली पर चढ़ाकर मारेगये हैं तब बख़्तक ने बहमन से कहा कि हमज़ा की आज्ञा में होकर रहना तो उचित भी था परन्तु ऐसा पहलवान होकर छोकड़ों के आधीन होकर रहना उचित नहीं है तब उसने कहा कि आप भी बादशाह के दामाद हैं यह सुनकर बहमन का भी चित्त बहका और बख़्तक से भी कहने लगा कि जो तुम्हारी भी यही सम्मति है तो हम ने स्वीकार किया परन्तु क्योंकर यह होसकेगा तब बख़्तक ने कहा कि अभी इसबात को किसीसे न कहो मैं शीघ्रही इस कार्य को करूंगा ज़ोपीन ने कहा कि मैं आज सभा में जाकर शाहज़ादों से कहूंगा कि मेरे पिता का कार्य है जो आपलोग चलें तो मेरी बड़ी प्रतिष्ठा है बख़्तक ने कहा कि यह तो अच्छा यत्न है ज़ोपीन जब रात्रिको सभा में गया तो हुरमुज़ और क़वाद आदि शाहज़ादों से कहा कि आपलोग कृपा करके मेरी मेहमानी स्वीकार करें तो मेरी बड़ी प्रतिष्ठा होती है सबने स्वीकार किया और दूसरे दिन सब शाहज़ादे पहलवानों समेत गये और जब भोजन करनेके पश्चात् शराब पिलानेलगा तो ज़ोपीन ने क़वाद और शहरयार से प्रार्थना की कि आपलोग तो आये परन्तु मलिका जो आती तो मेरी अतिप्रतिष्ठा होती शाहज़ादों ने स्वीकार करके मलिका को भी सवारी भेजकर बुलवाया और जब मलिका आकर तख़्तपर बैठी तो इतनेमें किसी के मुखसे बात निकलगई कि अभी तो आकर तख़्तपर बैठी है परन्तु यह नहीं जानती कि कौनसी गति होगी यह बात मलिका के कानतक पहुँचगई तो उसी समय क़वाद को बुलाकर उससे कहा उसने अतिशीघ्रही बाहर से सवारी मँगाई और मलिका को सवार कराके अपने क़िले में चला पीछे को जब बहमन और ज़ोपीन ने सुना कि मलिका आ और चलीगई तो हाथ मलकर कहनेलगे कि बड़े लज्जा की बात हुई कि हाथ में आकर निकलगई बख़्तक ने आकर जो बहमन और ज़ोपीन को दुःखी देखा तो

कहनेलगा कि दुःखित क्यों होतेहो कहां जायगी एकदिन तो हाथ आवेगी तब वह-मन और बख़्तक दोनों कहने लगे कि अफ़सोस है कि हुरमुज़ गद्दीपर न बैठे और क़बाद लड़की का पुत्रहोकर गद्दीपर बैठे अमीरहमज़ा ने वहमन से कहा कि तेरा क्या नुक़सान है वहमन ने कहा कि सत्य मैं कहताहूं कि क़बाद गद्दीपर बैठाने के योग्य नहीं है मलिकलन्धौर ने ऐसी बातें उसकी सुनीं तो क्रोधित होकर कहनेलगा कि अफ़सोस है कि अमीर ने तुझको अपनी कुरसीपर बैठाला नहीं तो तू ऐसी बातें क्यों करता तबतो वहमनने क्रोधित होकर एकतलवार लन्धौर को मारी लन्धौरने रोककर एकगदा वहमनपर ऐसी लगाई कि वहमन बेहोश होगया और दोनों के सिपाहियों से तलवार चलनेलगी बहुत से लोग दोनों तरफ़ के घायल हुए पीछेको वहमन के लोग लेकर भागगये संयोग से यह ख़बर नूरबानो वहमन की बहिन को जो अमरूपुत्र हमज़ा पर मोहित थी पहुँची कि मुसलमानों को काफ़िरोंने बड़ादुःख दियाहै और घरसे निकलकर इस प्रकार से लड़ी कि बहुतसे पहाड़ी मारेगये और अरबी पह-लवानों को साथ लेकर क़िले में आई और ख़न्दक को पनियासोत कराकर क़िलेके दरवाज़े को बन्दकरके बैठरही और जब पहलवानों का धावा अच्छा हुआ तो क़िले की दीवारोंपर चढ़कर मारनेलगे तो पहाड़ी क़िले से हटकर पड़े परन्तु फिर एक दिन क़िलेपर चढ़ाई की तो क़बाद ने अपनी माता से कहा कि अब आज्ञा देओ तो हम जाकर इन पापियों को मारकर भगादेवें मेहरनिगार ने कहा कि अभी तुम लड़के हो युद्ध करने के योग्य नहीं परन्तु क़बादने न माना और कहा कि जो न जाने देओगी तो हम पेट मारकर मरजावेंगे हमारे पिता तो हमसे भी छोटे थे तभी से युद्ध करने के लिये जाते थे तब नूरबानो ने कहा कि आप जाने दीजिये मैं साथ जाकर सहायता करूंगी लाचार होकर मेहरनिगार ने क़बाद को जाने की आज्ञा दी क़बाद हथियार लेकर पहाड़ियों के सम्मुख जाकर ललकारा कि ऐ पापियो! तुममें से जिसको मारने की इच्छा हो वह आकर सामने युद्धकरे मुझको अपनी बहादुरी दिखावे वहमन क़बाद को देखकर अतिप्रसन्न हुआ कि अब हम क़बाद को पकड़कर अपने पास रक्खेंगे तो अवश्य है कि मेहरनिगार अपने पुत्र के लिये मेरे पास आवेगी यह विचारकर क़बाद के समीप गया और कहने लगा कि ला वार चला क़बाद ने कहा कि मेरा पिता कोई कार्य पहले नहीं करता था सो वैसाही मैंभी करता हूं पहले तू वार चला जो मैं तेरे वार से बचजाऊंगा तो मेरा तमाशा देखना तब वहमन ने पहले वार मारी क़बाद ने ढालपर रोककर ऐसे ज़ोर से एक तलवार मारी कि वहमन घायल होकर भागा और चार कोसतक क़बाद पीछाकिये चलागया और जब देखा कि सेना उसको वायु के समान उड़ा लेगई तो लाचार होकर पलटआया और अपनी माता के समीप जाकर सब वृत्तान्त वर्णन किया तब मेहरनिगार ने बहुतसा रुपया अशरफ़ी अपने पुत्र पर से उतारकर कंगालों को दिया कुछ काल व्यतीत होने के पश्चात् अमरूपुत्र हमज़ा और लन्धौर ने जाकर

मलिका के समीप कहा कि बिदित होता है कि इसमें बहमन का अपराध कुछ नहीं है परन्तु बख़्तक और ज़ोपीन ने उसको भी अपने साथ मिलालिया है तब अमीर के पुत्र ने कहा कि फिर क्या करें? पहाड़ी लोग क़िले को घेरे हैं हमारे सब पहलवान घायल हैं इससे हम डरते हैं क़वाद ने कहा कि क़िलेका दरवाज़ा खोल कर बाहर चलकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हो इतनी आज्ञा देतेही युद्ध का डङ्का बजने लगा सब सेना क़िले से निकलकर मैदान में खड़ीहुई तो उस समय बहमन ने पुकारकर कहा कि हे अरबबासियो! तुमलोग क्यों बृथा प्राण देते हो? हमज़ा को मरे बहुत दिन होगया अब उत्तम इसी में है कि मलिका को हमको देदो और तुमलोग अपनी राह लो नहीं तो अबकी किसी का प्राण न बचेगा लन्धौर बह-मन की सब बातें सुनकर अमरू पुत्र हमज़ा से विदा होकर उसके सामने आकर खड़ाहुआ तो दोनों में गदा चलनेलगी और सायंकाल तक बराबर युद्ध करते रहे शाम को दोनों सेना पलटकर अपने स्थानोंपर चलीगईं दूसरेदिन प्रातःकाल होतेही दोनों सेना मैदान में जाकर खड़ीहुईं कि इतने में एकतरफ़ से गर्द उड़तीहुई दि-खाई पड़ी दोनों सेनाओं के दूतों ने जाकर देखा तो बिदित हुआ कि फ़रहाद ज़ो-पीन की सहायता के लिये आता है अमीर के पुत्र ने सुनकर कहा कि हमारी ईश्वर सहायता करेगा और ज़ोपीन अगवानी मिलकर अपनी सेना में लेआया और सब बृत्तान्त उससे बर्णन किया इतने में फ़रहादपुत्र लन्धौर को अमीर के पुत्र की आज्ञा लेकर फ़रहाद के साथ युद्ध करनेके लिये आकर खड़ाहुआ तो उसने पूछा कि तू कौन है? फ़रहाद ने कहा कि हम पुत्र खुसरो मलिक लन्धौर पुत्र सादान बादशाह हिन्द के पुत्र हैं जिसको संसार जानता है उसने पूछा कि तेरा बाप कहां है? फ़रहाद ने कहा सेना में है फ़रहाद ने कहा कि बिदित होता है कि उसने अपना प्राण बचाया और तुझको मरने के लिये भेजा है तब फ़रहाद ने कहा कि ओ पापी! क्या बकता है? उसका कोई सामना भी करसक्ता है ला तू वार चला तबतो उसने सातसौ मन की गदा उठाकर फ़रहाद के शिरपर देमारी फ़रहाद ने ढाल से रोककर कहा कि दो वार अपनी और करले फिर मेरी वार रोकना फ़रहाद ने दोवार फिर उसी तल-वार से किये परन्तु फ़रहाद ने उसी स्थान से रोककर कहा कि देख ख़बरदार हो अब मैं भी वार चलाता हूं यह कहकर ऐसे ज़ोर से गदा चलाई कि अग्नि निकल आई तबतो बड़ी प्रशंसा करने लगा और उसीप्रकार से सायंकाल तक दोनों से युद्ध होतारहा और शाम को पलटकर अपने २ स्थानपर चलेगये अब इन दोनों को लड़ने दो थोड़ा सा हाल अमीर का सुनो कि एकदिन रात्रि को अमीर ने स्वप्न में देखा कि पहाड़ियों ने हमारी सेना पर छापा मारा है और बहुत से पहलवान घायल हैं उठकर अमरू से स्वप्न का हाल सुनाया अमरू ने कहा कि आपका स्वप्न झूंठा नहीं होता आप यहां रहिये मैं जाकर देखआऊं तब अमीर ने अमरू को समझाया अब फिर थोड़ासा बृत्तान्त युद्ध का सुनिये कि फ़रहाद और इस्तफ़तानोश से युद्ध

होरहा था कि अमरू आकर पहुँचा अमरू को देखकर मुसल्मानों में अतिप्रसन्नताहुई और बहमन ने देखकर बख़्तक से पूछा कि तूने तो कहा था कि अमरू और हमज़ा मरगया अब यह कहांसे आया ? बख़्तक ने कहा कि मैं क्या जानूं ? मैंने नौशेरवां के लिखने से जाना था तबतो बहमन ने क्रोधित होकर बख़्तक को उठाकर जोपीन के शिरपर देमारा परन्तु उन दोनों की मृत्यु न थी इससे बचगये बहमन इसपर अतिलज्जित हुआ अमरू सब हाल जानकर क़बाद आदि को समझाकर घायलों के घावोंपर नोशदारू रखकर रात्रि दिन चलकर अमीर के पास जाकर पहुँचा तो सब हाल अमीर सुनकर उसीसमय अपने पिता से आज्ञा लेकर बहुतसे लोगों को साथ लेकर अश्कर देवज़ादे पर सवार होकर अमरू को लेकर काविस के तरफ़ चले अब थोड़ा हाल युद्धस्थान का सुनिये कि दोनों सेना मैदान में खड़ी थीं कि सामने से गर्द दिखाईपड़ी दोनों सेनाके दूतोंने जाकर देखा तो विदित हुआ कि सरकोबतुक नामे नौशेरवां की सहायता के लिये आता है और सेना अधिक साथ लाता है जोपीन अगवानी मिलकर उसको अपनी सेना में लेआया तो उसने भी अपना ख़ेमा उन्हीं के साथ खड़ाकरके जोपीन से पूछा कि भला हमज़ा को तो हम को देखादो उसने कहा कि हमज़ा तो नहीं है परन्तु उसके दोपुत्र लड़रहे हैं तबतो उसने प्रसन्न होकर कहा कि आज तो सेना हमारी थकी है प्रातःकाल हम उनकी बहादुरी उनको दिखावेंगे इतने में फ़रहाद घोड़ा लेकर मैदान में निकलकर खड़ाहुआ और दूसरीतरफ़से सादानपोता हमज़ा का अपने पिता से आज्ञा लेकर आया तो उसको देखकर सब हँसनेलगे कि यह तो बच्चा है पहलवानों से यह क्या लड़ेगा सरकोब ने बहमन से पूछा कि यह किसका पुत्र है ? जो लड़ने को आयाहै उसने कहा कि यह हमज़ा का पोता है सरकोब ने कहा कि भला यह फ़रहाद से क्योंकर लड़ेगा ? बहमन ने कहा कि देखिये क्या होता है यह बातें होहीरही थीं कि इतने में उसने ललकारा कि ओ पापियो ! तुममें से जिसको मरनेकी इच्छा हो वह आकर मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखावे तब फ़रहाद ने घोड़ेको बढ़ाकर एकगदा मारकर कहा कि देखा वह मारा सादान ने पृथ्वी से उठकर कहा कि पापी ! क्यों झूठबकता है? किसको तूने मारा मैं तो तेरे प्राण का गाहक बैठाहूं यह कहकर एक तलवार ऐसी मारी कि फ़रहाद का एक हाथ कटकर गिरपड़ा और ज्योंही उसने भागने की इच्छा की दौड़कर दूसरा भी हाथ काटलिया और सिपाहियों ने दौड़कर शिर काटलिया इस प्रकार से उसको मारडाला तब अमीर की सेना में तो बिजय का डङ्का बजनेलगा और काफ़िरों की सेना में ग़मी पड़गई और सबका हँसना बन्द होगया और सब बड़े संदेह हुए कि छोटे से बच्चे ने ऐसे बड़े पहलवान को मारडाला और उसके एक भी घाव न लगा सरकोबने बहमन से कहा कि बड़ी भाग्य है इसके माता जिसके घर में ऐसा बहादुर पुत्र उत्पन्न हुआ क्यों न उसका पिता उसका करे यह कहकर दोनों सेना अपने २ स्थानपर चलीगईं हुरमुज़ ने पहलवानों

सरदारों को साथ लेकर भोजन किया तत्पश्चात् शराब और कबाब खाने पीनेलगे और जब शराब प्रमाण से अधिक होगई तो सरकोब ने बहमन को हुरमुज़ के बगल में बैठे देखकर कहा कि ओ पहाड़ी ! तेरा इतना बड़ा मुँह कि मुझ से बढ़कर बैठा है बहमन ने कहा कि ऐ सरकोब ! सिड़ी होगया है मुझसे निडर होकर ऐसी बातें क्रोधित होकर करता है सरकोब ने उठकर घूंसा मारा तब तो उसने मन में क्रोधित होकर सरकोब को उठाकर पृथ्वीपर देमारा परन्तु हुरमुज़ने दौड़कर दोनों को हटादिया और सभा समाप्त करके चलेगये फिर प्रातःकाल दोनों सेना आकर मैदान में खड़ीहुई तो एक ओर से बनकी तरफ़ गर्द उड़ती दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर देखा तो बिदित हुआ कि हमज़ा बहुतसी सेना लेकर अमरू समेत आताहै इतना सुनकर मुसल्मान लोग अतिप्रसन्न हुए और प्रसन्नता के डङ्के बजानेलगे और हरएक सरदार और पहलवान जाकर अमीर के पैरोंपर गिरे और अमीर ने सबको छाती से लगाकर सबकी कुशल पूछी तत्पश्चात् अशकर देवज़ादे पर सवार होकर मैदान में आकर बहमनसे पुकारकर कहा कि ओ पहाड़ी ! मैंने कौनसा दुःख तुझे दिया था ? जिसके बदले में तूने यह किया है अब बहादुर हो तो आकर मेरे साथ मैदान में लड़ इतना सुनकर बहमन ने हुरमुज़ से कहा किमैं तो हमज़ा के सामने मुँह न दिखाऊंगा तुम जो चाहो वह करो उसने कहा मैं क्या जानूं ? वक़्तक जाने पीछे सरकोब ने आकर अमीर के शिरपर गदा चलाई अमीर ने रोककर कहा कि दोबार और करले सरकोब ने दूसरी बार चलाई अमीरने उसको भी रोकलिया तब तीसरीबार ऐसे ज़ोर से मारी कि गदा से लौ निकली कि जिसके धुयें से दोनों सेना में अँधियारी छागई और सरकोब ने चिल्लाकर कहा कि देखो मारलिया और कहने लगा कि यह तो मनुष्य था जो पहाड़ होता तो वह भी जलजाता इतने में अमीर ने सामने से निकलकर कहा कि क्या बकता है ? किसको तूने मारा मैं तो तेरे प्राण का घातक जीताहूं और कहा कि देख वार इसको कहतेहैं कि जो बच भी जावे तो भी छठीके दूधतक तो निकल आवेगा यह कहकर गदा जो उसके शिरपर मारी तो वह ज़ीन परसे घोड़े की पीठपर चलागया केवल घोड़ा मारागया तब सरकोब ने चाहा कि अमीर के घोड़े को भी मारे कि इतने में अमीर कूदकर उसके सामने खड़े हुए और दोनों से गदा और तलवार चला की परन्तु कोई न हारा तब अमीर ने कहा कि जो जिसका पैर उठालेवे वह दूसरेको अधीन करके रक्खे सरकोब स्वीकार करके अमीर का पैर उठाने लगा परन्तु न उठा तब अमीर ने उठालिया और सातबार घुमाकर अमरू के हवाले किया सायंकाल होनेके कारण दोनों सेना अपने २ स्थानों पर जाकर उतरीं मुसल्मानी सेनामें तो शराब और कबाब की सभा हुई और पहाड़ी अतिदुःखित होकर पड़े रहे तत्पश्चात् अमीरने सरकोब को बुलाकर अपने समीप बैठाकर पूछा कि देखो हमने किस प्रकारसे तुमको पराजित किया है सरकोब ने कहा कि आपका कोई सामना नहीं करसका ईश्वर ने आधाबल आप

का दिया है और आधा संसार में बाँटा है अब कृपा करके मुझे मुसल्मान कीजिये तब अमीर ने कलमा पढ़कर उसको मुसल्मान किया और खिलअत देकर सोने की कुरसी पर बैठाकर तीन दिनतक नाचरङ्ग होनेकी आज्ञा दी तत्पश्चात् चौथे दिन डङ्का बजवाकर अपनी सेना को साथ लेकर चौदह परेट बांधकर खड़े हुए और पहाड़ी सेना भी आकर इस प्रकार से खड़ी हुई कि मानो सिकन्दर और दारा का सामना है तब अमीर ने ललकार कर बहमन से कहा कि ब्रहमन! जो बहादुर है तो आकर सामना कर परन्तु बहमन न आया और हुरमुज़ से कहा कि अब सेना को एकवारगी लेकर धावा करदेव इतना सुनतेही सब सेना दौड़पड़ी और अमीर अकेला खड़ा होकर यहां तक लड़ा कि रुधिर की नदी बहने लगी तब बहमन ने ज़ोपीन से कहा कि अमीर इस समय व्याकुल होगये हैं तुम किसी यत्न से अमरू को हटादो तो आसानी में हम अमीर को मारलेते हैं ज़ोपीनने सातसौ हाथी लेकर एक तरफ़ से जाकर अमीर के शिरपर एक तलवार ऐसी मारी कि चार अंगुल का घाव होगया और चिल्लाकर कहने लगा कि देखो हमज़ा को मारलिया यह सुनकर अमीर की सेना अतिदुःखित हुई तब तो अमीर ने अशकर से जिन्नी भाषा में कहा कि हमको सेना से बाहर निकालकर लेचलो तब लेकर भागा और जो कोई पास आता था आगे मुँह से काटता और पीछे लातों से मारता हुआ सेना से निकलकर जङ्गल की तरफ़ चला कई कोस निकलकर एक नदी के समीप पहुँचा तो जाकर जब जल पीनेलगा तो अमीर नदी में गिरपड़ा जल रुधिर से लाल होगया परन्तु अशकर ने दौड़कर अमीर को नदी से ऊपर निकाल लिया डूबने से बचा लिया संयोग से सेशीरनामे गड़रिया अपनी बकरियों को पानी पीने के लिये लाया था उसने देखा कि नदी का जल लाल होरहा है और एक मनुष्य घायल नदी के तीर पड़ा है और एक घोड़ा दांतों से ऊपर खींचता है गड़रिये को देखकर दया आई और यह भी अपने चित्त में विचारा कि यह कहीं का बादशाह लड़ाई में घायल हुआहै घोड़ा लेकर भाग आयाहै मैं जो इसकी सेवा करूंगा तो ईश्वर चाहेगा तो कुछ प्राप्त होगा यह अपने चित्त में बिचारकर उसके समीप गया और अमीर को उठाकर अशकर की पीठपर रस्सीसे बांधकर अपने स्थानपर लाया और अपनी माता से सब हाल कहकर अमीर की औषध करने लगा परन्तु अशकर बराबर अमीर के समीप रात्रि दिन खड़ारहता था और जब कभी वह बाहर लेजाने की इच्छा करता तो अशकर नेत्रों से डाट देता तब वह डरकर भागजाता इसीप्रकार से सात दिवस व्यतीत होने के पश्चात् अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि अशकर देवज़ादा और एक मनुष्य समीप खड़े हैं और हम चारपाई पर किसी के घर में लेटे हैं इतना देखकर उस मनुष्य से पूछा कि तू कौन है और यह किसका स्थान है? उसने कहा कि मैं गड़रिया हूं आप नदी के तीर पड़े थे इसी घोड़े पर सवार कराकर ले आयाहूं अब ईश्वर आपको अच्छा करे तो मेरे भी कुछ दिन

अच्छे होवें तब अमीर ने उससे कहा कि घोड़े की पीठ पर से ज़ीन उतार लो और उसको चरने के लिये छोड़ दो और जो तुमने मेरे साथ नेकी की है इसका फल मेरे अच्छे होनेपर मिलेगा और कहा कि एक बकरी अपने गल्ले में से ला मैं उसको हलाल करदूं तो तू उसकी क़बाब और शुरुआ बनाकर मुझको खिला इसी तरह से तीन दिनतक उसको मार २ खिलाया चौथे दिन उसने अपनी माता से पूछा कि इसी तरह से यह सब बकरियों को समाप्त करदेगा अब हलाल करने देवें तब उसने जाकर अमीर से पूछा कि तू कौन है ? अमीर ने कहा कि हमज़ा का चचेरा भाई हूं सादसामी मेरा नाम है तू मेरी सेवाकर मैं तेरी बड़ी सेवा करूंगा एक बकरी के बदले दश बकरी दूंगा और इसके सिवाय और बहुत कुछ दूंगा और अच्छे होने तक एक बकरी मारकर रोज़ खिलाया कर अमीर का नाम सुन कर वह स्त्री अति प्रसन्न हुई और कहने लगी कि मैं सब बकरियां तुमको खिला दूंगी यह कहकर रोज़ एक बकरी मारकर खिलाने लगी अब अमीर की सेना का हाल सुनिये कि जब अमरू ने अमीर को सेना में न देखा तो सब मुरदों में ढूंढ़कर सेना से बाहर निकलकर अति व्याकुल होकर ढूंढ़ता हुआ चला मार्ग में जो रुधिर शिरसे गिरता गया उसी के पते से नदी के तीरतक पहुँचा तो देखा कि जल नदी का लाल है तो जाना कि अशकर देवज़ादा यहांतक लेआयाहै वहां से ढूंढ़तेहुए अशकर देवज़ादे के समीप पहुँचा तब वह अमीर के पास लेगया अमरू जाकर अमीरके पैरोंपर गिरा और सब बृत्तान्त कहकर अमीर से कहा कि आप अब चलिये तब अमीर ने कहा कि तुम जाकर सबको यहां लेआओ तो हम चलेंगे उसीसमय सेना में आकर अमीर के कुशल का हाल सबसे कहकर सबको साथ लेकर अति शीघ्रही मलिका समेत अमीर के पास पहुँचा मेहरनिगार ने जब जाकर देखा कि अमीर का घाव बहुत बड़ा है तब तो लपटकर रोनेलगी और इसी प्रकार से सब पहलवान और सरदार आकर अमीर से मिले अमीर ने सबको छाती से लगाया तत्पश्चात् अमीर ने अपना सब हाल कहकर सब सरदारों और पहलवानों से कहा कि इस गड़रिये ने हमारी बड़ी सेवा की है जिससे जो होसके वह इसको दे तब सबलोगों ने इतना रुपया और माल असबाब दिया कि उसके घरमें न आसका और मलिका मेहरनिगार ने भी बहुतसा ज़र जवाहिर देकर उसको धनवान् कर दिया तब वहां से कूच करके फिर मैदान में आकर युद्ध करने पर आरूढ़ हुए अमीर ने आज्ञा दी कि अब इनको चारों ओर से घेरकर मारलो कोई बचकर जाने न पावे अमीर की आज्ञा पातेही सब सेना इसप्रकार से पहाड़ी सेनापर टूट पड़ी जिस तरह व्याघ्र बकरी के लिये दौड़ता है चारों तरफ़से घेरकर ऐसा मारा कि बहुत थोड़ेही बचकर जानें पाये और जो भागे उनको मंज़िलों तक खेदकर मारा एक तरफ़ से बहमन निकला संयोग से अमरूपुत्र हमज़ा उसी तरफ़ खड़ा था उसने पीछा किया जब थोड़ी दूर चलागया तो इस विचार से कि यह अकेला है पलटकर

खड़ा होगया दोनों से लड़ाई हुई आखिर को बहमन मारागया और शिर काटकर अपने पिता के समीप चलाआया और अपनी बहादुरी का हाल कहकर शिर अमीर के समीप रख दिया तब अमीर बहमन के शिर को देखकर कहने लगा कि ऐसे पहलवान और ऐसी २ वस्तु कहां मिलती हैं तत्पश्चात् जितने सरदार थे सबों ने लाकर पहाड़ी सेना के सरदारों के शिरों को अमीर के पैरोंपर रखदिया इसप्रकार से अमीर विजय पाकर डङ्का बजवातेहुए सेना को साथ लेकर अपने स्थानपर आये और जिस समय अमीर घायल होकर बहमन के हाथ से बनकी ओर जाते थे उसी समय में एक परी आईथी उसने जाकर परदेकाफ़ में आसमानपरी से यह सब हाल कहा आसमान परी अतिव्याकुल होकर उसी समय करीशा और अब्दुलरहमान को बुलाकर सब हाल कहकर बहुतसे परीज़ादों को साथ लेकर दुनियाके तरफ़ चली जब आकर पहुँचगई दो कोस के फ़ासले से अब्दुलरहमान को अमीर के हाल लेने को भेजा उसने आकर जो देखा तो अमीर बैठे हैं अमीर देखकर बड़े संदेह में हुए तो उसने सब हाल पूछकर आसमानपरी और करीशा के आने की खबरदी तब अमीर अतिप्रसन्नता के साथ सरदारों समेत आसमानपरी की अगवानी के लिये गये पहुँचकर आसमानपरी से मिलकर करीशा का मुख चूमकर अपने गोद में बैठाकर बहुत प्यार किया परियां अमीर की सवारी की शोभा देखकर सब भूलगईं और कहनेलगीं कि तब क्यों न अमीर परदेकाफ़ से दुनिया में आनेकी इच्छा करें और अमीर से प्रार्थना करने लगीं कि आपके सरदारों और सेनाकी शोभा तो देखी परन्तु मलिकामेहरनिगार के देखने की और इच्छा है तब अमीर ने कहा कि जिस प्रकारसे तुम्हारी इच्छा है उसीप्रकार से हमारे सरदारों की इच्छा तुम्हारे देखनेकी है सो तुम परदा हटाकर उनके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी लगादेओ कि वे तुमको देखकर प्रसन्नहोवें परियों ने कहा कि ऐसा न हो कि मोहित होकर हमको दुःख देवें अमीर ने कहा नहीं किसका मुँह है कि तुमसे बोल सके तब परियों ने परदा हटाकर अपना मुख सरदारों को दिखलाया पहलवानों ने जो देखा तो हर एक व्याकुल होगया और जब होश में हुए तो अमीर को धन्यबाद देनेलगे कि आप की कृपा से हमने इनको भी देखा नहीं कहां देखते तत्पश्चात् अमीर सबको साथ लेकर मलिका मेहरनिगार के महल में आकर चित्त को प्रसन्नकिया तो पहले मेहरनिगार मलिकासे मिली तब करीशा को चूमकर लेकर गोद में बैठाल लिया तत्पश्चात् सब परियों से यथाउचित मिलकर प्रसन्न किया और तीन दिनरात तक मलिका सब सहेली और सरदारों समेत नाचरङ्ग देखती रही और सब कार्य बन्दरहा चौथेदिन जो सौगात आदि उत्तमबस्तु परदेकाफ़ से लेकर आई थी मेहरनिगार को देकर बिदाहुई मलिका आसमानपरी के जाने के पश्चात् अमीर ने अपने सरदारों से पूछा कि मालूम नहीं होता कि पहाड़ीलोग किसतरफ़ को गये हैं अमरू ने कहा कि सुना है कि क़श्मीर की तरफ़ जाकर जफ़रनामे स्वामी कश्मीर से सहायता

मांगी है उसने उनको भरोसा दियाहै इसबात को सुनकर अमरूपुत्र हमज़ा ने कहा कि आज्ञा हो तो मैं जाकर उसका नाशकरडालूं एक को भी जीता न छोडूं अमीर ने कहा कि इससे उत्तम क्या है ? तब वह सात पहलवानों को उनकी सेना समेत लेकर कश्मीर की ओर चला अमरू आदी अकरब फ़रहाद पुत्र लन्धौर इसतफ़तानीस आदि सरदार साथ थे सबको लेकर जब कश्मीर के समीप पहुँचा तो पहाड़ी सेना डरकर क़िले में जाकर बन्दकरके बैठरही तब मुसल्मानी सेना भी चारों तरफ़से क़िले को घेरकर उतर पड़ी और कई दिनोंतक घेरे पड़ीरही एक दिन रात्रि को व्याघ्र पहाड़ से निकलकर सेना में आया और बहुत से सिपाहियों को घायल करके चलागया यह हाल जब अमीर के पुत्र को पहुँचा तो वह हथियार लेकर उसके पीछे पहाड़तक पीछा किये चलागया परन्तु पहाड़पर जाकर व्याघ्र लोप होगया तब वह कई दिनों तक उसीकी तलाश में पड़ारहा परन्तु कहीं पता न मिला आख़िर को पहाड़ से उतरकर जब अपनी सेना की तरफ़ चला तो मार्ग में एक अपूर्व नगर देखकर अतिप्रसन्न हुआ और लोगों से पूछा कि यह किसका नगर है? तब लोगों ने बतलाया कि इस नगर का नाम फ़रख़ार है यहां की स्वामिनी गुलचेहरानाम ज़ोपीन की बहिन है संयोग से उसी समय में वह झरोखे की राहसे अमरूके स्वरूप को देखकर मोहित होगई और एक ख़्वाजे को भेजा कि जाकर उस मनुष्य को किसी प्रकार से मेरे पास लेआओ उसने जाकर अमरू से कहा कि मेरी स्त्री आपको बुलाती है तब अमरूने न माना दूसरी बार कहने सुनने से उसके साथ गया जब उस स्त्री के पास पहुँचा तो उसने अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर अपने साथ भोजन कराकर शराब पिलाई तत्पश्चात् उसके साथ भोग करने की इच्छाकी तब अमरू ने कहा कि अभी मैं तेरे साथ भोग न करूंगा क्योंकि तेरी एक बहिन मेरे पास है हम अपने सरदारों से पूछ लेवें जैसा वे कहेंगे तब वैसा हम करेंगे इतना सुनकर उसने उस समय दूत भेजकर अमरू के सरदारों को बुलवा लिया और उनसे अपना प्रयोजन कहा उसी समय में एक मनुष्य उसी नगर में रहता था उसने जब सुना कि अमीर का पुत्र ज़ोपीन की बहिन के पास बैठा है अपने दो पुत्रों को बुलाकर कहा कि तुम जाकर उसको पकड़लाओ वे दोनों लट्ठ बांधकर अमरू के पास आये और अमरू के मारने के लिये लाठी चलाई उसने दोनों की लाठी छीनकर ऐसा घूंसा मारा कि वे दोनों बेहोश होकर थोड़ी देरतक पड़ेरहे फिर उठकर अपने पिता के पास आकर सब हाल सुनाया तब फ़रख़ारसरशम ने कहा कि मुझसे तो हमज़ा से प्रयोजन है इससे क्या करना है परन्तु हमज़ा का मैं कुछ कर न सकूंगा तत्पश्चात् दूसरेदिन सब सरदार अमरू के पास आये तब उस स्त्री गुलचेहरा ने सबकी मेहमानी करके अतिप्रसन्न किया तब अपना मोहित होना अमरूपर सब सरदारों से कहा आदी ने अमरू से कहा कि तुम क्यों इसको बेमौतके मारतेहो इसके मनोरथ को पूराकरो अमीरज़ादे ने कहा कि किस

तरह हम शास्त्र के बिरुद्ध करसक्ते हैं तब आदी ने कहा कि करना और न करना तो तुम्हारे अधीन है परन्तु मुझे इसके कहनेपर दया आती है इस कारण तुमसे कहते हैं जब रात्रिहुई तो दोनों नशे में भूलकर एकही पलँगपर सोगये तब गुलचेहरा ने काम के कारण असरू से लपटकर भोग करने की इच्छा की असरू ने जागकर उसको एक चपत मारकर हटादिया तब तो उसने अतिदुःखित होकर अपने चित्त से विचारकिया कि यह मेरी बहिनपर मोहित है और मुझसे भोग करने की इच्छा नहीं करता इससे इसको मारडालना उचितहै एक बारगी तलवार लेकर असरू का शिर काटकर चिल्लानेलगी कि देखो यारो कोई बैरी अमीर के पुत्र को मारगया यारों ने जब जाकर देखा कि असरू मरापड़ा है सब देखकर रोनेलगे तब आदी ने कहा कि यहां इसी पापिनी ने अपने इच्छापूर्बक न होने के कारण मारडालाहै इस बातको सबोंने स्वीकार करके उसे बांधकर जो पूछा तो उसने कहा कि नशे में मैंने मारडाला अब जो चाहो सो करो तब सब पहलवान बड़े सन्देह में हुए कि स्त्री को मारना उचित नहीं इसी समय में अमीर ने स्वप्न में देखा कि असरू रुधिर में पड़ाहै उसी समय अमरू मक्कार को बुलाकर कश्मीर को भेजा जब अमरू कश्मीर में पहुँचा तो मालूमहुआ कि अमरू पुत्र हमज़ाफ़रख़ार नगरमें ज़ोपीनकी बहिन के महल में है तब वहां से चलकर उस महल में जब पहुँचा तो सरदारों ने उसके पैरोंपर गिरकर सब हाल सुनाया अमरू सुनकर रोता पीटता अमीर के पास आया और कहा कि आपका पुत्र फ़रख़ार ज़ोपीन के घरमें घायल पड़ाहै और आपको अति शीघ्रही बुलाया है मैं आपको लेने आया हूं अमीर उसी समय अशकर देवज़ादे पर सवार होकर अमरू समेत फ़रख़ार में जापहुँचे तब अमरू ने इस बिचारसे कि एकबारगी जो अमीर को पुत्र का मरना बिदित होजावेगा तो अतिदुःख होगा इन्हें कुछ खिलालेवें इस प्रकार से बिचारकर अमीरसे कहा कि किसीबाग़ में चलकर कुछ भोजन करलेवें तो उसके स्थानपर चलें अमीर स्वीकार करके एक बाटिका में जाकर उतरे संयोग से उसमें बकरियां चरतीथीं एक बकरी को मारकर क़बाब बनाया रक्षक ने बाग़में धुआं देखा जब बाग़ में आया तो देखा कि दो मनुष्य एक बकरी मार कर क़बाब बनारहे हैं यह देखकर अतिब्याकुल होकर सरशवां से जो बकरियों और बाग़ का स्वामी था जाकर ख़बरदी फ़रख़ार सरशवां यह सुनतेही वहां से दौड़कर दोनों लड़कों समेत जब बाग़ में आया तो देखताहै कि दोनों क़बाब भून २ खारहे हैं और किसी को डरते नहीं अपने लड़कों से कहा कि ज़ाकर इन दोनों को पकड़ लाओ वे उन दोनों को जाकर पहुँचते ही अमीर के ऊपर लट्ठ चलाया अमीरने बैठे ही लट्ठ छीनकर दोनों को पृथ्वीपर देमारा यह देखकर फ़रख़ार जलकर आग होगया तुरन्तही सातसौ मनकी गदा लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा और कहनेलगा कि बिदित होताहै कि तुम दोनों की मृत्यु यहां लाई है तब तो यमराज की बकरी मारकर खाई है यह कहकर अमीर के ऊपर गदा मारी तब अमीर ने बैठेहुए गदा

पकड़कर खींचली कितनाही उसने ज़ोर किया परन्तु न छोड़ा तब उसने गदा छोड़कर अमीर की कमर से हाथ लगाया तब अमीरने उठाकर पृथ्वीपर देमारा फिर वह उठ न सका तब पूछा कि ऐ जवान! तेरा क्या नामहै? अमीर ने कहा कि अब्दुलमुत्तलब का पुत्र हमज़ा लोग मुझे कहते हैं सबलोग मुझसे डरते हैं फ़रखार ने कहा कि हमज़ा के सिवाय और किसी को ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरी पीठ लगादेवे तब अमीर ने उसको मुसल्मान किया और अनेक प्रकार से प्रसन्न करके अपने साथ रहने की आज्ञा दी तब उसने चाहा कि अमरू के मरने की खबर सुनाऊं पर अमरू मक्कार ने नेत्रों के द्वारा निषेध किया अमीर वहां से उठकर सब को साथ लेकर आगे चले जब नगर में पहुँचे यारों ने अमीर को देखकर शोरगुल मचाया तब अमीर ने पूछा कि कुशल तो है इस प्रकार से दुःखी क्यों हो तब यारों ने कहा कि अमीरज़ादा ज़ोपीन की बहिन के हाथसे मारागया तब अमीरने आज्ञा की उसको उसी की माता के पास लेजाओ और उस स्त्रीको भी साथ लेजाओ उस से कहना कि किसी ने तुम्हारे पुत्र को मारा है अमरू ने गुलचेहरा को बांधके मलिका के हवाले किया और कहा कि इसी ने आपके पुत्र को माराहै वह इसे सुनते ही पुत्र २ कहकर मरगई तब अमीर को दूना दुःखहुआ चालीस दिनतक पुत्र के मरने की ग़मी मानी और अमरू की लोथ गुलचेहरा समेत क़ाबिसाहिसार में सादानके पास भेजदी उसने अपनी बहिन को अपने हाथसे मारा इसप्रकारसे बदला लिया तत्पश्चात् अमीरने कहा कि इस अशुभ स्थानको नाशकरके उजाड़ देना उचित है कि यहां मेरा पुत्र मारागया है यह कहकर गदासे दरवाज़ों को टुकड़े २ करडाला और क़िले में धसकर सबको मारडाला हरमुज़ केवल चोरदरवाज़े से निकलकर चलागया और सब उसके साथी अमीर के हाथसे मारेगये और बहुतसे मुसल्मान हुए जब कश्मीरवासियों को मारनेलगे तब वहांके स्वामीने अमीर से सहायता चाही अमीर ने उसको मुसल्मान करके छोड़दिया और आप कूचकरके क़ाबिसहिसार को चलेआये॥

मदायन में पहुँचकर हरमुज़ और नौशेरवां का पतालगाना और अमीरहमज़ा का नौशेरवां के छुड़ाने के लिये जाना॥

लिखनेवाला लिखताहै कि जिससमय हरमुज़ क़िले कश्मीर से भागकर क़िले मदायन में गया तब उसको विदित हुआ कि नौशेरवां को शद्दाद पकड़कर लेगया है और बांधकर दण्ड देरहाहै बुज़ुरुच्चमेहर से जाकर छोड़ानेकी यत्न पूछी तो उसने कहा कि बिना हमज़ा के गये वह नहीं छूटसकेगा सो तुम जाकर अपनी माता से एकपत्र हमज़ा के पास भेजवादो वह जाकर छुड़ालेआवेगा तब उसने जाकर अपनी माता से एकपत्र इस समाचार का लिखवाके भेजा कि बड़े लज्जाकी बात है कि तुम्हारे होते बादशाह को दूसरा दुःखदेवे शद्दाद पकड़कर लेगया है तुम ख़बर नहीं लेते अमीर ने पत्रको पढ़कर कहा कि हरचन्द नौशेरवां मेरे साथ बदीकरता है

परन्तु मैं उसके साथ नेकीही करूंगा इसबार अवश्य छोड़ाऊंगा अमरूने मनाकिया और मुक़बिल को साथ लेकर हबशकी तरफ़ चला और वहां पहुँचकर एक बाग़ में उतरकर घोड़ेको चरने के लिये छोड़कर नौशेरवांके निकालने की युक्ति करनेलगा रात्रि को मुक़बिल से कहा कि यारबनकर शद्दाद की सभा में जाकर नौशेरवां को छुड़ालेआओ उसने कहा कि जैसी आपकी इच्छाहोवे तब अमीर ख़िजरकी कमन्द लेकर शस्त्रधारण करके कमन्द के द्वारा दीवारपर चढ़कर शद्दाद के पास पहुँचे तो देखा कि शद्दाद सोरहा और उसके समीप नौशेरवां एक लोहेके पिंजड़े में बन्द है और बहुतसा मेवाआदि शद्दाद के पलँगके नीचे रक्खा है अमीर मेवा शराब पीकर पहरेवालों को मारकर नौशेरवां को पिंजड़े समेत उठाकर मुक़बिल के समीप लेआया और आतेसमय एक परचे में लिखा कि मैं आया और तेरे क़ैदी को छोड़ालेजाता हूं नौशेरवां को मुक़बिल के पास रखकर उससे कहा कि तुम इसकी रक्षाकरो मैं कोई घोड़ा ढूंढ़कर उनके लिये लेआताहूं अमीर तो घोड़ा ढूंढ़नेगये उधर शद्दादजगा तो देखे कि नौशेरवां पिंजड़े समेत नहीं और रक्षक सब मरे पड़ेहैं बड़े सन्देहमें था कि उस परचेपर दृष्टिपड़ी उसको पढ़कर क्रोधके मारे जलनेलगा और उसी समय चार सहस्र सवार साथ लेकर अमीर की खोज में चला फिरते २ बाग़ में जो गया तो देखा कि नौशेरवां का पिंजड़ा रक्खा है पूछा कि हमज़ा कहां है उसने कहा कि मैं नहीं जानता कि कहां गया परन्तु कहीं घोड़े की खोजमेंगयाहै शद्दाद नौशेरवां को क़ैद से छुड़ाकर अमीर की खोज में चला थोड़ीदूर जाकर देखा कि मुक़बिल घोड़ा लिये आताहै हमज़ा जानकर उसको पकड़कर बांधा तब उसने कहा कि मेरा नाम हमज़ा नहीं है मैं मुक़बिलहूं तब तो शद्दाद को निश्चय हुआ कि अमीर बालू में तृषाके मारे फँसकर कहीं मरगया होगा यह बिचारकरके नौशेरवां को साथ लेकर काबिसहिसार को चला कि वहां चलकर अमीरके लड़कों को मारकर मेहर-निगार को छीनलेवे और ज़ोपीन और हरमुज़ को भी लिखा कि हमज़ा मरगया नौशेरवां को हम साथ लेकर आते हैं तुमभी आओ कि मुसल्मानी सेना को मार-कर मेहरनिगार को छीनलेवें वे सुनतेही सेनाको लेकर दौड़धाये और अमीर का वही हाल हुआ जिसतरह शद्दाद के दिल में आयाथा अमरू ने रात्रि को स्वप्न में देखा कि अमीर बालू के मैदान में प्यास के मारे बेताब पड़े हैं यह हाल सब से कहकर वहां से अमीर की खोज में चले मार्ग में जब आये तो देखा कि शद्दाद अपनी सेनालिये मलिका के लेने के लियेजाता है और सुना कि अमीर बालू के मैदान में प्यास के मारे मरगये तबतो और भी व्याकुलहुआ अतिशीघ्रही जाकर पहुँचे सातदिनतक इधर उधर ढूंढ़ाकिये कहीं पता न मिला आठवेंदिन अमीर के हथियार मिले तबतो चित्त कुछ ठिकाने हुआ और ज़ोर से हमज़ा का नाम लेकर पुकारने लगे तो हमज़ा सुनता था परन्तु बोल न सक्ताथा आख़िरकार अमीर के पास पहुँचा देखा बहुत रोया और अतिशीघ्रही एक गिलास मिष्ट पानी का भरे

से निकालकर अमीर को पिलाया तब नेत्र खुलगये और कुछ होश आया एक गि-लास शरबत और पीकर हथियार लेकर होश में आये देखा कि मुक़बिल और अशकर बँधे हैं अशकरने देखतेही बन्द तोड़डाले अमीर अशकरपर सवार होकर और मुक़बिल को साथ लेकर नगर में जानेकी इच्छा की तब रक्षकों ने जाकर शद्दाद के पुत्र से खबर की वह सहस्र सवार लेकर अमीर के सामने युद्ध करने को आया तब अमीर ने कहा कि पापी एक बार तेरा पिता हारगया है अब तू क्यों दुष्टपना करता है परन्तु उसने न माना और तलवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने छीनकर पृथ्वीपर देमारा तब वह मुसल्मान हुआ और तीन दिनतक अमीर की मेहमानी करके चौथेदिन बिदाकिया अब शद्दाद का हाल सुनिये कि इधर से यह पहुँचा और उधर से ज़ोपीन और हरमुज़ इसके लिखनेपर आकर नौशेरवां से मिलकर उन्हीं के साथ सेना समेत उतरे तब उसी दिन शद्दाद ने डङ्का युद्ध का बजवाकर उस घोड़ेपर जिसके पैर में एकसौ बीस मन की नाल बँधती थी सवार होकर शत्रुके सामने खड़ा होकर कहने लगा कि ऐ अरबवासियो! मैं अमीर को मारकर नौशेरवां की आज्ञा से मेहरनिगार के लेने के लिये आया हूं मेरा नाम शद्दाद है इससे उत्तम है कि तुमलोग छोड़कर अपने घर की राह लेओ नहीं तो आकर हमसे लड़ो तब लन्धौर उसके सामने आया उसने एक गदा ऐसे ज़ोर से मारी कि लन्धौर डरकर भागजावे परन्तु लन्धौर ने रोककर एक हाथ ऐसा मारा कि उसका घोड़ा पृथ्वी में दलदल के समान धसगया शद्दाद घोड़ेपर से उतरकर पैदल होकर लड़नेलगा, जब गदा से जीत न सका तब तलवार से लन्धौर को घायल कर दिया परन्तु लन्धौर घायल होने पर भी बराबर शामतक लड़ता रहा शामको शद्दाद डङ्का बजवाकर चलागया और दूसरे दिन फिर फ़रहाद पुत्र लन्धौर ने आकर सामना किया वह भी घायल हुआ इसीतरह से उस दिन कई पहलवान घायल हुए तब शद्दाद मारे ख़ुशी के फूलगया फ़रख़ार ने देखा कि शद्दाद को बड़ा घमण्ड होगया किसी को अपने सामने नहीं समझता अपने घोड़े को मैदान में लड़ने के लिये निकाला तब शद्दाद ने पूछा कि ऐ मनुष्य! तू कौन है तेरा क्या नाम है फ़र-ख़ार बोला कि मेरा नाम फ़रख़ार ख़ार सरशवां है संसार में मेरा कोई सामना नहीं करसक्ता लाचार चला शद्दाद ने गदा से मारा उसने रोककर सात सौ मनकी गदा इस ज़ोरसे मारी कि दोनों सेना चौंक उठीं और सब बड़ी प्रशंसा करनेलगे और जो शद्दाद ख़ाली न देता तो हड्डियां भी न उसकी मिलतीं शामतक युद्ध हुआ किया परन्तु कोई जीत न सका तब दोनों सेना लौटगई दूसरे दिन फिर उन्हीं दोनों का सामनाहुआ दो तीन दिन युद्ध होने पर एक दिन फ़रख़ार ने शद्दाद का एकहाथ काटलिया उसी दिन से युद्ध का होना बन्द होगया संयोग से एक सिपाही गईमनामे ने एकदिन नौशेरवां से कहा कि जो आज्ञा हो तो मैं जाकर सब अरब के सिपाहियों का शिर काटलाऊं नौशेरवां ने कहा कि इससे क्या उत्तम है? उसी

दिन अर्धरात्रि को वह सिपाही अरबियों की सेनामें गया देखा कि दो सिपाही क़वाद के खेमे के पास टहलरहे हैं उनसे नेत्र छिपाकर एक तरफ़ का परदा काट-कर खेमे में जाकर क़वाद का शिर काटकर निकलकर चल दिया तब अमरू के सिपाहियों ने जो पहरा फिरते थे पकड़ा उसके हाथ में क़वाद का शिर देखकर सब चिल्लाने लगे सेना के सरदारों ने जब उस खेमे में जाकर देखा तो क़वाद बे शिर का पलँगपर पड़ा है सब देखकर शिर पीट २ कर रोनेलगे मेहरनिगार ने सुनकर ऐसा दुःख उठाया कि और किसी माता ने पुत्रके लिये न किया होगा प्रातः-काल गईम के टुकड़े २ किये गये नौशेरवां ने जब सुना कि क़वाद मारागया तो उसके भी बड़ा दुःख हुआ और चालीस दिनतक दोनों सेनाओं में ग़मी पड़ी रही चालीस दिन के पश्चात् दोनों सेना आकर मैदान में खड़ीहुई और उसदिन भी फ़रख़ार और शद्दाद का सामना था कि उसीसमय में बनकी तरफ़ से गरद दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर देखा तो मालूम हुआ कि अमीर अमरू के साथ बड़े धूमधाम से आते हैं फ़रख़ार तो लड़ाई में से बहुत से सरदारों को साथ लेकर अमीर से अगवानी मिलने के लिये गया और शद्दाद अमीर का नाम सुनतेही सेनामें से भागगया अमीर ने सबसे मिलमिलाकर पूछा कि शद्दाद कहां है आज क्यों नहीं पुकारता फ़रख़ार ने कहा कि मैंतो मैदान में छोड़ आया हूं तब अमीर ने चारों तरफ़ देखा परन्तु कहीं दिखाई न पड़ा तो अमीर ने जाना कि वह भाग गया अशकरपर सवार होकर थोड़ी दूरगये जब पता न मिला तो जिन्नी भाषा में उससे कहा कि बेटे जल्द शद्दाद के पासपहुँचाओ अशकर जो उड़ा तो थोड़ीही देर में पहुँचादिया उसने देखा कि हमज़ा आकर पहुँच गया अब किसीतरह से प्राण नहीं बचसकेगा नेत्रों में अँधियारी छागई चाहताथा कि भागकर निकल जावे कि इतने में अमीर ने कमन्द डालकर पकड़लिया कि इतने में लन्धौर भी आपहुँचा अमीर ने कमन्द उसके हाथ में देकर कहा कि खुसरो इसको खींच लन्धौर ने कमन्द पकड़के खींचा तो शद्दाद का प्राण निकलगया तब उसके अपूर्व घोड़े को लन्धौर को दिया उसने कहा कि यह घोड़ा आपही के योग्य है इतनेही में अमरू भी आपहुँचा उसने शद्दादका शिर काटकर एक बरछीपर टांगदिया तत्पश्चात् अमीर अपने मित्रों के साथ बातें करतेहुए धीरे २ इस बिचार से अपने स्थानकी तरफ़ चले कि ऐसा न हो कि कोई आकर फिर युद्ध करनेको आरूढ़हो उधर जो ज़ोपीन ने देखा कि क़िला खाली है चलकर मेहरनिगार को लेआवें इस बिचार से मुसल्मानी सेना में गया और बहुत से द्वारपालकों को मारता हुआ मलिका मेहरनिगार के समीप पहुँचा तब मेहरनिगार ने उसको देखकर एक तीर उसके पेट में ऐसा मारा कि वह घा-यल होकर गिरपड़ा तब ज़ोपीन ने जाना कि मुझसे यह राज़ी नहीं है तब उठकर उसके शरीर में मारा कि वह बेहोश होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी फिर वह चाहता था कि दूसरी तलवार चलावे कि इतने में अमीर आपहुँचा तब जो ज़ोपीन ने भागने

की क़ाबू न पाई तब अमीर पर वार लगाई अमीरने रोककर भागते हुए एक तल-वार ऐसी मारी कि ज़ोपीन दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा वहां से अमीर जब महल में आये तो देखा कि मलिका बेहोश पड़ीहै उसको देखकर बेताब होकर सेना में जाकर अमरू को ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर के बुलाने के लिये भेजा इधर मेहरनिगार का प्राण निकलगया तब अमीर एक आह मारकर बेहोश होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा थोड़ी समयपर जब होशहुआ तो बौरहे की तरह से कभी हँसते और रोते थे अमरू ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर को लेकर आया तो मलिका को मरी पाया और अमीर को दीवाना देखकर व्याकुल होगया और बुज़ुरुचमेहर से कहने लगा कि ऐ ख़्वाजे! किसीयुक्ति से अमीर को अच्छा करो ख़्वाजे ने कहा कि आज के इक्कीसवें दिन अमीर आपही अच्छे होजावेंगे तब अमीर तीन ताबूत बनवाकर सब सखासमेत मक्के की तरफ़ चले समीप पहुँचकर एक पवित्र स्थानपर उतरकर वहीं तीनों की क़बर खोदवाकर ताबूतों को रखकर उस रात्रि को वहीं पर ठहरे रहे लिखनेवाला लिखता है कि इक्कीस दिन के पश्चात् बाईसवीं रात्रि को अमीर ने स्वप्न में देखा कि हज़रतख़िज़र आये हैं और एक गिलास शराब देकर कहनेलगे कि ओ हमज़ा! एक स्त्री के लिये तू क्यों ऐसा दुःख सहता है तू है तो बहुत ऐसी स्त्री मिलजावेंगी इतना देखकर नेत्र जो खुलगये तो घबराकर अमरू से पूछनेलगा कि सत्य बता अमरू मेरा क्या हाल था अमरू ने सब हाल अमीरसे कहा तब अमीरने अपने स्वप्न देखने का हाल सबसे कहा सब सुनकर अतिप्रसन्न हुए और कहनेलगे कि आप तो उनके पुत्रहैं सिवाय उनके और कौन आपको समझासक्ताहै बिना उनके समझाये और किसी का कहना भी आप नहीं मानतेहैं परन्तु अमीर ने न माना कहनेलगा कि कुछ हो परन्तु मैं मेहरनिगारसे वादा करचुकाहूं उसी की क़बर पर मरूंगा तुम सबलोग अपने २ घर की राहलो ईश्वर के लिये अब मुझे दुःख न दो अमरू ने अनेक प्रकार से समझाया परन्तु किसी का कहना न माना अमरू के पुत्र सादानको गद्दीपर बैठाकर मिश्रकी तरफ़ रवानाकिया तब अमरू ने कहा कि ऐ अमीर! मुझको तो अपने पास रहने दे मुझे क्यों अपने पास से जुदा करता है अमीर ने कहा कि मेरे पास मुक़बिल के सिवाय और किसी का काम नहीं है जब सब चलेगये तब अमरू ने कहा ऐ अमीर! मुझको तो अपने पास रहने दे मुझे अपने पाससे पृथक् न कर अमीर ने कहा कि मुक़बिल तो रहसक्ता है परन्तु और कोई मेरे पास नहीं रहसक्ता मुझे दूसरे मनुष्यकी कुछ आवश्यकता नहीं है आख़िरकार अमरू भी चला-गया तत्पश्चात् अमीरने शिर मुड़ाकर साधूका वेष धारण किया और एक लंगोट बांधकर मेहरनिगारकी क़ब्रपर रहनेलगे जब नींदआती तो उसी क़ब्रपर सोरहते॥

फ़ारूनपुत्र फ़रहादप्रक और कयात पुत्र गईम सिपाही का अमीर के पास पहुँचना और अमीर और मुक़बिल को बांधकर लेजाना॥

लेखकलोग मोतीरूपी काग़ज़पर अपनी तेज़ लेखनी से यों लिखते हैं कि मलिका

मेहरनिगार की क़ब्रपर अमीर के रहने की ख़बर देशभर में फैलगई तब हर एक शत्रु चारोंतरफ़ से अमीर के मारने की युक्ति में हुए जिसमें से क़ारूनपुत्र फ़रहाद जो अपने सामने दूसरे को बलवान् न समझता था मनुष्य तो क्या देवों से भी नहीं डरताथा बहुतसी सेना साथ लेकर अमीर के मारने के लिये स्थान से निकल कर चला तो मार्ग में कयातपुत्र गईम से जिसने क़बाद को मारा था मुलाक़ात हुई तो उससे पूछा कि तू कहां जाताहै क्यों दुःख उठाताहै उसने कहा कि मेरे पिता को हमज़ा के सरदारों ने मारडाला था सो आजकल सुनाहै कि हमज़ा मेहरनिगार की क़ब्रपर है सो उसी के मारने के लिये जाते हैं तब क़ारून ने कहा कि मैंभी वहीं जाताहूं इससे उत्तम होगा कि हम तुम साथही चलें उसने स्वीकार किया तब दोनों सेना साथ होकर कई दिनों के बाद मक्के के समीप जाकर पहुँचकर एक स्थान पर उतरीं तब कयात ने क़ारून से कहा कि तुम यहींरहो मैं जाकर अमीर के पकड़ने की युक्तिकरूं जो तुमको इसी भीड़भाड़ से देखेगा तो वह भी ख़बरदार होजायगा तब क़ारून वहीं रहगया कयात साधु बनकर अमीर के पास गया अमीर को सलाम करके बैठगया अमीर ने पूछा कि तू कौन है ? उसने कहा कि साधू हूं अब आपही के समीप रहकर दिनकाटूंगा अमीर ने कहा कि मेरी सेवा के लिये तो मुक़बिल है उसने कहा कि अब तो मैं कहीं जाता नहीं तब अमीर चुप होरहे थोड़ी देरमें जब मुक़बिल भोजन लेआया तब अमीर ने उसको भी साथ बैठाकर भोजन करवाया जब अमीर ने जल मांगा तो कयात ने उठकर दारू बेहोशी मिलाकर अमीर और मुक़बिल को पिलाकर दोनों को अपनी चालाकी से बेहोश करदिया और आप पेशाब के बहाने से वहां से उठकर चलाआया और क़ारून से कहा कि मैं दोनों को बेहोश करआया हूं अतिशीघ्र ही सवार होकर मेरे साथ चलिये तब क़ारून ने कयात के साथ होकर मेहरनिगारकी क़ब्रपर जाकर अमीरके मारने के लिये तलवार निकाली तो मुक़बिल देखकर क़ारून के मारने को दौड़ा परन्तु नशाके कारण पृथ्वीपर गिरपड़ा अमीर का भी यही हालहुआ आख़िर को दोनों को बांधकर क़ारून ने अपनी सेना में लाकर दोनों को चैतन्य करके क़ैद में करके पूछा कि ऐअरबवासियो ! तुम्हारा इतना बड़ा मक़दूर कि मेरे बाप को तूने मारडाला और नौशेरवां का दामाद बनकर आपही बादशाह बनकर राज्य करताहै अब बता क्योंकर तेरा प्राण बचेगा अमीर ने कहा कि सत्य है जो मुझसे लड़ा और हारकर मुसलमान होने से इन्कार किया है उसको मैंने माराहै परन्तु मेरा मरना ईश्वर के हाथ है तूतो मेरा कुछ नहीं करसक्ता विदित होता है कि तू बड़ा अज्ञान है इसपर क़ारून अति क्रोधित होकर अमीर को कोड़े मारने लगा अमीर ने कहा कि इतने कोड़े तू मुझ को मारता है तुझे कोई मारे तो क्या हो उसने कहा कि मुझको कौन मारसक्ताहै यह कहकर अमीर को नंगा करके कोड़ोंसे मारनेलगा और ऊंट की खाल खिंचवाकर नमक छिड़क के उसमें अमीर को लपेटकर एक बड़े ऊंचे खम्भे में

लटकादिया इसी प्रकार से सदैव सायंकाल को उसी खंभे में लटकादेता और सवेरे उतारकर कोड़े मारता इस प्रकार से अपने पुरुषों का बदला लेतारहा तत्पश्चात् नौशेरवां को इस हालकी खबरदी उसने सुनकर अपने हमराहियों से पूछा कि अमीर को मरवाडालें या छोड़ादेवें उन्होंने कहा कि अब तो मेहरनिगार भी नहीं है कि उसकी मुहब्बत है अब मारही डालना उचित है आखिरकार नौशेरवां ने अपने सरदारों की बातें स्वीकार कीं और वहां जाकर अपने सामने अमीर को दण्ड दिलानेलगा संयोग से यह खबर अमरू को पहुँची तब अमरू सबको इकट्ठा बटोरकर नौशेरवां पर चढ़ाई करके गया कि जाकर नौशेरवां को विजयकरके अमीर को छोड़ा लेआवें परन्तु वहां बहुत दिनोंतक रहे कोई ऐसी युक्ति न लगी कि जिसमें अमीर को छोड़ाले पीछे को क़िलेके अन्दर जाकर कपड़े की दूकान रखकर दूकानदारी करने लगा अमीर का हाल सुनिये कि उसी प्रकार से सदैव दण्डपाता था कि एकदिन क़ारून की बहिन फ़राज़बानों ने स्वप्न में देखा कि हज़रत खिज़र ने आकर उसको मुसल्मान किया और कहा कि तुम अतिशीघ्रही जाकर अमीरको इस दुःख से छोड़ाकर अपने पास लाकर उसके साथ भोग करो तुम्हारे उससे पुत्र पैदा होगा वह यह सुनतेही अमीर के पास दौड़आई और बहुतसा माल असबाब रक्षकों को देकर अमीर को छोड़ा लेजाकर अपने स्थान में रखकर भोगबिलास करनेलगी अमीर के लोप होजाने की खबर क़ारून को पहुँची उसने अपने वज़ीर से पूछा कि रमल से बिचारो कि हमज़ा कहां गया है उसने विचारकर बतलाया कि आपकी बहिन के पास है तब उसने एक मनुष्य उसके पास भेजा कि जाकर देखआओ कि हमज़ा वहां है या नहीं उसने जब फ़राज़बानों के स्थानपर जाकर पूछा तो वह जलकर आग होगई और कहनेलगी कि वज़ीर ऐसा प्रबल होगया कि मुझको झूठमूठ चोरी लगाताहै क़ारून ने जब सुना कि यह झूठही कहताहै उसी समय वज़ीरको मारडाला और अमीर की खोज में लोगों को इधर उधर भेजा तब अमीर ने फ़रहाद से कहकर एक सहेली को अमरू की सूरत का सब पता बतलाकर भेजा कि तुम जाकर इस रूप का मनुष्य देखो तो लेआओ वह जब बाज़ार में गई तो अमरूको कपड़ा बेचते देखा उससे जाकर कहा कि हमारी बेगमसाहबा ने कुछ कपड़ा मांगा है सो लेचलो अमरू सुनतेही कपड़ों का गट्ठर बांधकर शिरपर रखकर उसके साथ होकर गया और कपड़ा खोल २ कर दिखलानेलगा अमीर अमरू का शब्द सुनकर बाहर निकल आया अमरू दौड़कर अमीर के पैरोंपर गिरा अमीरने उठाकर छाती से लगाकर सब हाल पूछा उसने कहा कि सेना सब तैयार है आपही का आसरा देखरही है तब अमीर ने कहा कि यहां से निकलने की भी कोई युक्ति है अमरू ने कहा कि हमारी दूकानपर चलकर बैठिये वहां से किसी प्रकार से निकल चलेंगे अमीर ने कहा नहीं वहां क्या करेंगे ? किसी लोहार की दूकानपर चलो कि वहां कोई शस्त्र भी मिलेगा तब दोनों एक लोहार की दूकानपर गये अमीर बैठकर भट्ठी

जलारहे थे कि इतने में बख़्तक और क़ारून ने आकर कहा कि अब बतला हः :ज
क्योंकर वचकर जायगा यह कहकर क़ारून ने अमीर के ऊपर तलवार चलाई अ
मीर ने उसी हथौड़े से मारकर तलवार छीनकर क़ारून को पकड़कर अमरू को सौंप-
कर एक शब्द ऐसा किया कि जिससे नगरवासी व्याकुल होगये और अमीर की
सेना सुनकर दौड़कर क़िले में दाखिलहुई उधर बख़्तक ने जब नौशेरवां से अमीर
के छूटने का हाल कहा तो वह चोरदरवाजे से भाग खड़ा हुआ सेना ने पहुँचकर
लूटना मारना शुरूअ किया और उस दिन मुसल्मानी सेना के हाथ इतना माल
असवाब लगा कि किसी को रखने की जगह नहीं मिली और बहुतों को जो मुस-
ल्मान हुए उनको नहीं मारा तत्पश्चात् गद्दीपर बैठकर अमीर ने क़ारून को बुला
कर पूछा कि बता अब तेरी कौनसी गति कीजावे तब वह रोनेलगा आख़िर को
अमीर ने कहा कि हम तेरा सब अपराध क्षमा करते हैं तू मुसल्मान होकर हमारे
पास रह उसने उत्तरदिया कि यह तो मुझ से नहीं होगा इतना सुनतेही अमीर ने
आदी अकरब को सौंपदिया उसने कुत्ते की मौत मारकर जलादिया और शिर को
क़िले के दरवाजे पर लटका दिया सब मनोरथ ईश्वर ने पूर्ण किया अब अमरू का
वृत्तान्त सुनिये कि वहांसे भागा मदायन को चलाजाता था कि राह में दो पहलवान
जिनका नाम सिरवरहना तपशी और दीवानतपशी था जो नौशेरवांही की सहायता
के लिये आते थे मुलाक़ात हुई तो उनसे अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर सब
वृत्तान्त कहा फिर उन दोनों ने हाथ जोड़कर कहा कि हमज़ा तो क्या जो सातों
देशों के शत्रु आवें तो हम सबको मारडालेंगे बादशाह इसपर अतिप्रसन्न हुए और
बड़ी भारी ख़िलअत देकर अपने साथ शराब पिलाकर उत्तम २ पदार्थ मँगवाकर
अपने साथही भोजन करवानेलगे अब अमीर का हाल सुनिये कि फ़राज़वानों के
साथ एक अच्छी सायत में व्याह करके चालीस दिनतक भोग विलास में पड़ेरहे
इकतालीसवें दिन सभा में बैठकर पूछा कि नौशेरवां का भी कुछ हाल किसी को
मालूम है अमरू ने कहा कि दो शाहज़ादे तपशदेश के वासी बड़ी सेना लेकर मार्ग
में नौशेरवां से आकर मिले हैं आपका आसरा देखते हैं अमीर ने यह सुनकर उसी
समय आदीअकरबको आज्ञा दी कि यात्रा उस दिशा की करो और सेना को
आज्ञा दी कि युद्ध करनेपर आरूढ़ होवे आदी ने उसी समय आकर अमीर की
आज्ञानुसार प्रबन्ध किया दूसरे दिन अमीर वहां से चलकर तीसरे दिन जाकर उस
सेना से थोड़ी दूर उतरपड़े और डङ्का बजवाकर चौदह पलटनें मैदान में बराबर से
खड़ी कीं तब तपशवासियों ने भी अपनी पलटन जमाई और प्रथम सिरवरहना
तपशी ने घोड़ेको मैदान में कुदाया उसके पीछे लन्धौर भी आकर मैदान में खड़ा
हुआ तब उसने कहा कि ओ नपुंसक ! नाम बतलावेगा या बेनाम मारा जायगा
लन्धौर ने कहा कि ऐ पापी, जन्तु ! मेरानाम लन्धौर पुत्र सादान है संसार में मेरी
प्रबलता प्रसिद्ध है ला वारचला यह सुनकर उसने गदा चलाई लन्धौर ने उसको

रोककर सातसौ मनकी गदा ऐसे जोरसे मारी कि जो पहाड़पर लगती तो टूटजाता परन्तु उसका एकबालभी न टेढ़ा हुआ इसी तरह से शामतक दोनों लड़ाकिये साय-ङ्काल को डङ्का पलटने का बजवा दोनों सेना अपने स्थानपर गई अमीर ने लन्धौर से पूछा कि तुमने इस पहलवान को कैसा पाया ? उसने कहा कि यहां तो क्या परदे काफ़ में देवोंको भी मैंने ऐसा नहीं देखा अमीर ने हँसकर कहा कि इसका बदन फ़ौलाद का है इसपर हथियार नहीं लगेगा दूसरे दिन सिरबरहना और आदी अकरब का सामना हुआ तो जब आदी गदा मारता तो वह शिरपर रोकलेता यहांतक कि आदी मारते २ थकगया परन्तु उसके एक घाव भी न लगा इतने में बन की तरफ़ से गरद देखाई पड़ी दूतों ने जाकर जब देखा तो बिदित हुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये अलजोश बरबरी चालीस सहस्र सवार समेत आयाहै नौशेरवां ने कई बादशाहों को उसकी अगवानी के लिये भेजा जिस समय वह आया तो देखा कि नौगज़ का डीलहै देखने से डर मालूम होताहै नौशेरवां देखकर अति प्रसन्न हुआ और अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर अमीर और अमरू का हाल उसको सुनाकर डङ्का पलटने का बजवाकर उसको अपने खेमे में लाकर अपूर्व प्र-कार की शराब पिलाकर भोजन करवाया और नाचरङ्ग की सभा करवा के दूसरे दिन सिरबरहना तपशी ने मैदान में आकर ललकारा कि ओ हमज़ा ! तू क्यों प्राण ब-चाता है आकर सामनाकर पहलवानों को भेजकर दिन क्यों काटता है यह बातें होहीरही थीं कि बनकी तरफ़ से गरद दिखाई पड़ी और गरद मिटनेके बाद चालीस निशान नारंजीपोश दिखाईपड़े अमरू ने देखकर अमीर से कहा कि यह वही नक़ाबदार है जिसने मेरी कईबार सहायता की थी जब आप परदेकाफ़ को गयेथे इतने में नक़ाबदार ने आकर एक ओर अपनी सेना का परेट जमाया और शत्रु से पुकार कहा कि तुममें से जिसका जी चाहे वह पहले मुझ से लड़े तब मुसल्मानी सेना से लड़ने की इच्छाकरे तब अमीर ने कहा कि तुम जाकर नक़ाबदार से कहो कि वह हमको ललकार चुका है हमको जानेदेवे आप खड़े होकर तमाशा देखे और जाती समय हमसे बेमिले न जाना अमरू ने जाकर कहा तो उसने स्वीकार किया अमीर अशकर देवज़ादे पर सवार होकर आये और सिरबरहना से कहा कि तुम से युद्ध करना बृथा है तुम हमारी कमर पकड़कर उठाओ हम तुम्हारी जो उठालेवें वह दूसरे को आधीनकरके रक्खे उसने कहा कि बहुत अच्छा अमीर घोड़ेपर से उतरपड़े वह भी उतरा और अमीर का कमरबन्द उठाते २ उसके पैर पृथ्वी में धसगये परन्तु अमीर न हिले लाचार होकर छोड़दिया तब अमरू ने सेना से पुकारकर कहा कि यारो ख़बरदार होजाओ अमीर अभी ऐसा शब्द करेंगे कि हज़ा-रहों शत्रु मरजावेंगे अमरू की इस बात को सुनकर सब बड़े सन्देह में हुए कि यह क्या बकताहै ? हमज़ा शब्द चाहे करे कहीं पहलवान के शब्दसे लोग मरते हैं इतने में अमीर ने ऐसा शब्दकिया कि शत्रुकी सेनामें बहुतों के कान के परदे फ़टगये

आख़िरकार अमीर ने उसको उठाकर मुश्कें बांधकर अमरू के हवाले किया उसका दूसरा भाई यह हाल देखकर तलवार खींचकर दौड़ा अमीर ने यही गति उसकी भी की तब नौशेरवां ने दुःखित होकर डङ्का बजवाकर अपने स्थान की राहली तब अमीर भी सेनासमेत अपने ख़ेमे में आकर बैठे और नक़ाबदार ने भी अपनी सेना को अमीर की सेना के समीप बास करने की आज्ञादी और आप सीधा अमीर के ख़ेमे में जाकर दाख़िलहुआ तो अमीर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर बहुतसी बस्तु परदेकाफ़ की दिखलाकर अमरू की सहायता का धन्यबाद देनेलगे तब उसने कहा कि अब अधिक लज्जित न कीजिये कि इतने दिन आपको परदेकाफ़ से आये हुए हुआ और मैं न आसका और आपने बड़े २ दुःख सहे अमीर ने उसकी बात चीत से अपने चित्त में बिचारा कि यह स्त्री है हाथ पकड़कर दूसरे ख़ेमे में लेजाकर कहा कि अब काम ने बहुत दुःखदिया यह कहकर नक़ाब मुखपर से उतार लिया तो देखतेही बेहोश होकर गिरपड़ा अमरू की आंखों में भी चकचौंधी आगई परन्तु उसने सम्हलकर अमीर के मुखपर गुलाब आदिक छिड़ककर नक़ाबदार से कहा कि अपराध क्षमाकरके अमीर से मुख मिलाइये कि आपकी सुगन्ध से अमीर को होश होजावे नारंजीपोश ने जो बहुत दिनों से बिरह में मरती थी उसी समय अमीर के मुख से मुख मिलाकर उनके चित्तको आनन्द दिया अमीर ने नेत्र खोल दिये तब अमरू ने लाकर दो २ गिलास अति उत्तम शराब पिलाकर चैतन्य किया अमीर ने नारंजीपोश को बग़ल में बैठाकर सब हाल पूछा उसने कहा कि मेरा नारंजपरी नामहै बहुत दिनोंसे परदेकाफ़ को छोड़कर आपके बिरह में इधर उधर घूमती थी जिसदिन आप गुस्तहम से लड़तेथे मेरा तख़्त वायुपर उड़ता जाता था आपके सूर्यरूपी मुख को देखकर मैं बेहोश होगई थी तो मेरी वज़ीरज़ादी ने मुझको उत्तम स्थानपर ले जाकर चैतन्य किया था तब मैं फिर उसी स्थानपर आपके देखने के लिये आई थी और बहुत से लोग मेरे साथ थे अपने सेवकों को आपके ढूंढ़नेके लिये भेजा था तो मालूम हुआ कि आप अब्दुलरहमान के साथ परदेकाफ़ को चलेगये क्या कहूं ? कि जो इतने दिनों में मैंने दुःख सहे हैं परन्तु लाचार होकर रात्रिदिन आपके आनेके लिये ईश्वर से मनाती थी और जिससमय से मुझको बिदित हुआ कि आप अपनी स्त्री को अमरू को सौंपगयेहैं और नौशेरवां उसके लेजानेकी घातमें है उसीसमयसे मैंने परीज़ादों की डांक बैठाईथी कि जब कोई शत्रु आकर अमरूपर चढ़ाई करे तो हमको ख़बरकरो इसी प्रकार से जब कोई आताथा तो मैं चढ़दौड़ती थी और आपकी कृपासे बिजय पाती रही यह बातें सुनकर अमीर ने उसका मुख चूमलिया और उसी समय ब्याह करके सब रात्रि दोनों ने भोग बिलास करके एक ने दूसरे को आनन्द दिया प्रातःकाल होतेही अमीर ने उठकर स्नान किया और पोशाक पहिनकर सभा में बैठकर दोनों तपशियों से बुलवाकर पूछा कि हम ने किसतरह से तुमलोगों को पकड़ा उन्होंने कहा कि जिसप्रकार से पहलवान लोगों का धर्म है अब आप हमारे

स्वामी हुए और हम आपके सेवक तब अमीर ने दोनों को कलमा पढ़ाकर मुसल्मान करके बड़ी भारी ख़िलअ़त देकर अपने समीप जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर अतिप्रसन्न किया और अनेकप्रकार से उनको समझाकर आप महल में जाकर मलिका नारंजपरी के साथ भोगबिलास करनेलगे तत्पश्चात् एक दिन फिर शत्रु की सेना में डङ्का बजा अमीर ने शब्द सुनकर अपनी सेना में भी डङ्का बजने की आज्ञादी डङ्के का शब्द सुनतेही सब सेना हथियार बांधकर अमीर के पास आकर खड़ीहुई तब अमीर ने मैदान में जाकर शत्रु के सामने चौदह पलटनों का परेट बराबर से जमाया अलजोश शत्रुकी तरफ़ से खड़ाहुआ और अमीर की तरफ़ से सरकोब गया तो सामना होतेही अलजोश घोड़ेपर से कूदपड़ा और ऐसी दोलत्ती सरकोब के शिरपर मारी कि वह बेताब होकर गिरपड़ा और अलजोश फिर घोड़े की पीठपर होरहा फिर जब सरकोब उठा तो फिर यही गति की लोग देखकर हँसनेलगे और सरकोब बड़े आश्चर्य में हुआ कि कौनसी युक्ति इसके साथ करें कि इतने में बनकी तरफ़ से एक सेना दिखाई पड़ी दूतोंने जाकर देखा तो बिदितहुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये चारभाई धूमधाम से समूमादी, सिनादी, कबादआदी और मियादजरादी अलबुर्ज से आते हैं नौशेरवां ने कई सरदारों को उन की अगवानी के लिये भेजकर बुलवाया और अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर उनको बैठाकर सब कुशलक्षेम पूछरहे थे कि एकबारगी मुसल्मानी सेनामें चिल्लाहट मची कि एक गोरख़रने बन से आकर बहुतों को घायलकिया अमीर उसकी तरफ़ दौड़े आगे २ वह और पीछे २ अमीर अशकर देवज़ादे पर सवार शामतक पीछा किये जाकर दूसरे देश में पहुँचे तो वह लोप होगया अमीर लाचार होकर एक शिकार करके क़बाब बनवाकर खाकर उस रात्रि को वहीं एकबृक्ष के नीचे सोरहे प्रातःकाल होते फिर वह गोरख़र दिखाई पड़ा अमीर ने उठकर उसका पीछा किया वह भागते २ एक बाग़ में पहुँचा अमीर भी उसके पीछे २ बाग़ में गये और सर्वत्र बढ़कर भूख के मारे बेताब होकर बैठकर इधर उधर देखनेलगे तो एकतरफ़ बकरियां दिखाई पड़ीं तो अमीर उसमें से एकबकरी को मार भूनकर खारहे थे कि इतने में कन्दज़ जिसकी बकरियां थीं सातसौ मनकी गदा लेकर अमीर के शिरपर गिरा अमीर ने उसको उठाकर तालाब में फेंकदिया तब तो वह बड़े सन्देह में हुआ कि यह कौन है जिसने मुझे उठाकर फेंकदिया तालाब से निकलकर अमीर के सामने आकर पूछनेलगा कि आप कौन हैं अमीर ने कहा कि हम सादान अमीरहमज़ा के भाई हैं वह हमज़ा का नाम सुनतेही अमीर के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि अब मैं आपही के साथ रहूंगा आख़िरकार अमीर ने उसको मुसल्मान करके अपने साथ रहने की आज्ञा दी तब उसने कई दिनोंतक अमीर की मेहमानी की तत्पश्चात् अमीर ने उससे पूछा कि यह कौन देश है ? उसने कहा कि करनेसाका यह देश है और इसकी एक बेटी ऐसी स्वरूपवान् है किसीके साथ वह ब्याह नहीं

करती अमीर ने कहा कि अच्छा हमको उस नगर में लेचलो उसने कहा बहुत अच्छा चलिये मैं लेचलूंगा आखिरकार अमीर वहां से उठकर चले जब थोड़ी दूर गये तो उसने कहा कि हे अमीर! अब तो कुछ खा पी लीजिये तब चलिये अमीर उसी जगह उतरपड़े और दो बकरियों को भूनकर खाकर चले थोड़ीही दूर गये थे कि उसने कहा कि क्षुधा के मारे चला नहीं जाता तब तो अमीर हैरानहुए कि इस को यहां क्या खिलावें? जाते जाते एक सौदागर उतरा था उसी के समीप जाकर उतरे तो अमीर ने जाकर उस सौदागर से कहा कि थोड़ासा भोजन दीजिये उस सौदागर ने कहा कि आकर खाइये सब आपही का है अमीर ने लेजाकर उसको बैठाकर खूब खिलवाया तब अमीर ने सौदागर से पूछा कि आप कहां से आते हैं और कहां जाइयेगा कारवां ने कहा कि हमलोगों की इच्छा तो खमनजाने की थी परन्तु सुना है कि फ़ोलाद वज़ीर क़ैसर का डकैती करता है इससे वहांजाते डरते हैं अमीर ने कहा कि जब हमलोग तुम्हारे साथ हैं तो तुमको कुछ डर नहीं है उन्हों ने पूछा कि आप कौन हैं अमीर ने कहा कि अमीरहमज़ा के भाई हैं गोरख़र हम को उठा लेआया है तब तो सौदागर अतिप्रसन्न हुआ कि तुम अब्दुलमुत्तलब के बेटे हो वह मेरा मित्र है तो तुम मेरे भी पुत्र हो आख़िरकार वे सौदागर अमीर के साथ होकर चले मार्ग में फ़ोलाद डाकू से मुलाक़ात हुई अमीर ने उसको मार डाला और वहां से सीधे आकर ख़रमना की सराय में उतरे तो चलते समय सौदागरों ने अमीर से कहा था कि आप हमको वहां पहुँचादीजिये तो पांचवां हिस्सा अपने माल का आपको देंगे सो पहुँचने पर लाकर अमीर के आगे रखदिया परन्तु अमीर ने न लिया और उसी सराय में रहकर दानपुण्य करने लगा यहांतक कि बहुत से फ़क़ीर धनवान् होगये यह ख़बर उस स्त्री को पहुँची तो उसने अपनी एक सहेली को भेजा कि जाकर देखआओ कि वह मनुष्य कैसा है? उसने देखकर जाकर कहा कि यह तो वही मनुष्य मालूम होता है जिसकी तसवीर आपके पास है वही दानपुण्य कररहा है यह सुनकर वह मारे ख़ुशी के फूलगई और पण्डितों ने पहलेही विचारकर कहा था कि हमज़ा आपही इस नगर में आकर तेरे साथ ब्याह करेगा संयोग से नसाई नाम पुत्र शहफरग का बहुतसी सेना के साथ आकर नगर लूटने लगा अमीर ने शोरगुल सुनकर लोगों से पूछा कि यह क्यों चढ़कर आया है लोगों ने कहा कि बादशाह की बेटी एक है उसी के लिये आया है यह सुनकर अमीर ने अशक़र की पीठपर ज़ीन रक्खी और कन्दज़ को साथ लेकर फाटक पर पहुँचकर कोतवाल से कहा कि फाटक खोलदो कि हम बाहरजावें उसने न माना आख़िर को उसको मारकर फाटक तोड़डाला अमीर कन्दज़ पर नाराज़ हुए कि इस बिचारे को क्यों मारा? यह ख़बर बादशाह को पहुँची उसने आकर अमीर से कहा कि तू क्यों ऐसी मेहनत उठाता है अमीर ने कहा कि कुछ मेहनत नहीं आप जाकर तमाशा देखिये उसने कहा कि जो आप नहीं मानते तो

जो मेरी सेना है उसी को साथ लीजिये अमीर ने कहा कि सेना की कुछ आवश्यकता नहीं परन्तु जब शत्रु की सेना भागे तब लूटने के लिये सेना लेकर आना आखिरकार अमीर ने जाकर फ़िरंगियों की सेना चालीस पहलवानोंको मारकर भगा दी और चार कोसतक पीछा करके बहुतेरों को घायल किया बादशाह की लड़की को भी यह ख़बर मालूम हुई तब एक कोठेपर बैठकर बाल खोलकर ईश्वर से मनाने लगी कि यह दूसरे के लिये लड़ता है बचाओ और दूरबीन लगाकर अमीर की लड़ाई का तमाशा देखने लगी और बादशाह ने जब देखा कि दोनों मनुष्यों ने शत्रु को हल्ला करके भगादिया तब तो अतिप्रसन्न होकर अपने वज़ीरसे पूछनेलगे कि ये दोनों कौन हैं उसने कहा कि एक सौदागर सराय में टिका है ये दोनों भी उन्हीं के साथ हैं तब बादशाह ने उन सौदागरों को बुलाकर पूछा कि ये दोनों कौनहैं उन्होंने मार्ग का सब हाल कहकर कहा कि यह जो घोड़े पर सवार है यह तो अमीरहमज़ा का भाई है और शदसामी इसका नाम है दूसरा मनुष्य इन्हीं के साथ है और कुछ मैं नहीं जानता हूं बादशाह अफ़्सोस करने लगे कि इतने दिनों से यह मेरे नगर में है और मुझको न मालूम हुआ नहीं तो इनकी मेहमानदारी करते और कहने लगा कि निश्चय करके यह हमज़ा है दूसरे में ऐसी शक्ति नहीं है अच्छा अब देखलिया जावेगा तत्पश्चात् जब अमीर ने फ़िरंगियों को मारकर हटादिया तब बादशाह ने अमीरकी आज्ञानुसार सेना समेत जाकर सब माल असबाब शत्रु का लूट लिया और अपनी सेना में कहा कि इसमें से कोई न छूना यह सब माल शदसामी का है रावेपलासपोशने भी बहुत सा रुपया पैसा साधू और भँगनों को लुटाया यहां तक दान किया कि कोई उस नगर में दुःखी न रहगया जिससमय अमीर शत्रु को पराजितकर नगर की तरफ़ फिरे तो फ़तहनोश अमीर को साथ लेकर क़िले में आकर अतिप्रसन्नता के साथ बैठे तब फ़तहनोश ने बड़ी धूमधाम से अमीर की मेहमानदारी करके अपने साथ शराब क़बाब खिलाया कन्दज़ जो नशे में आया तो पलेपना नामे एक पहलवान से लड़ने लगा अमीर ने डाटकर मनाकरादिया और कई दिनके बिलास के पश्चात् बादशाह ने अपने वज़ीर से कहा जो रावपा मानती तो इसी के साथ ब्याह करदेते इससे उत्तम कोई न मिलेगा वज़ीर ने जब जाकर रावपासे पूछा तो उसने शिर झुका के कहा कि पिताजी की जैसी इच्छा हो मैं उनकी आज्ञा से बाहर नहीं हूं बादशाह ने यह सुनकर अमीर से अपनी दामादी स्वीकार करनेकी प्रार्थनाकी अमीर ने स्वीकार किया तब बादशाह एक शुभसायत पूछकर उसी दिन ब्याहका सामान इकट्ठा करनेलगा अमीर ने उस समय अपने चित्तमें बिचारा कि इस समय जो अमरू होता तो अति ही प्रसन्न होता अमरू का हाल सुनिये कि जिस दिन से अमीर गोरख़र के पीछे निकलेथे उसी दिनसे अमरू भी बराबर पता लेता हुआ वहां से चला तहांतक कि एक दिन अमीर के ब्याह के पहले अमरूनेबादशाहके फाटक पर पहुँचकर दरबानों

से कहा कि बादशाह से जाकर कहो कि शदसासीनामे मेरा गुलाम भागकर आया है उसको अभी हमारे पास लाकर हाज़िर करें नहीं तो अच्छा न होगा दरबान ने जाकर बादशाह से उसका सन्देशा कहा अमीर सुनकर अतिव्याकुल हुए कि कौन है दरबान से पूछा कि उसका डीलडौल कैसा है? उसने कहा कि तेरहगज़ का तो लम्बा है और पांचगज़ की टोपी लालबनात की दिये है और उसपर दो पर लगे हैं वे वायु से हिलते हैं और व्याघ्र के चर्म की क़बा गले में है और बहुत से तीर और काग़ज़ की ढाल शिरपर रक्खे है और अठारह मनका सोंटा हाथ में लियेहुए ऐसे डाट से अड़ा खड़ाहै कि देखनेसे डर मालूम होताहै अमीर इस हाल को सुनकर बाहर निकल आये सब लोग सुनकर बड़े आश्चर्य में हुए अमरू अमीर को देखतेही दौड़कर पैरोंपर गिरपड़ा अमीर ने उठाकर छाती से लगाया और हाथ पकड़कर लेजाकर अपने समीप बैठाकर सब वृत्तान्त उनकी चालाकी का सुना बादशाह ने कहा कि यह तो बतलाइये कि ये कौनहैं अमीर ने कहा कि नौशेरवां का मसख़रा है अमरूने कहा कि साहब मसख़रेतो बादशाह और अमीर होते हैं मुझ को यह कहां मक्स्सर है यह सुनकर सब सभा के लोग हँसने लगे तत्पश्चात् व्याह के समय अमीर ने अमरू से कहा कि जाकर तुम एक क़ाज़ी मुसल्मान को व्याह कराने के लिये लेआओ अमरू वहां से उठकर बाहर आया और क़ाज़ी का वेष धारण करके एक बड़ा आसा हाथ में लेकर लङ्ग मारता हुआ जाकर बादशाह के सामने खड़ाहुआ लोगों ने उठकर बैठाया और सब लोग कहने लगे कि आजतक हमने तो ऐसा वृद्ध मनुष्य कभी नहीं देखा था न मालूम हज़रत कहां से आये हैं अति प्रसन्न करके व्याह कराने की आज्ञा दी अमरू ने इस प्रकार से पढ़ा कि लोग सुनकर घबरागये बादशाह ने व्याह कराने के पश्चात् हज़ार अशरफ़ियां अमीर के आगे रखदीं तब अमरू ने कहा कि इसको मैं क्या करूंगा पांच हज़ार अशरफ़ी से कम मैं नहीं लेता कन्दज़ ने कहा कि मौलवीसाहब जो आप न लें तो इनको मुझे दे दीजिये तब अमरू ने उनको उठाकर झोरे में रखलिया और कन्दज़ को एक आसा ऐसा मारा कि वह पृथ्वीपर गिरकर लोटने लगा और अमरू ने अपनी राह ली कन्दज़ कहने लगा कि अच्छा क़ाज़ीजी कहीं तो मिलोगे तो मैं समझलूंगा बादशाह ने पूछा कि यह कहां से आया था अमीर ने कहा कि ईश्वर ने इसको भेज दिया था फिर कन्दज़ ने पूछा कि वह मसख़रा कहांगया ऐसे क़ाज़ी को लाया जिसने वे अपराध मुझे मारा है कि अबतक मेरे शरीर में पीड़ाहै जो वह क़ाज़ी न मिलेगा तो उसीसे समझूंगा उसे बड़ा दुःखदूंगा इतने में अमरू फिर दरबार में आया और कन्दज़के शिरपर शिर रखकर ऐसा नाचा कि लोग देखकर हँस २ कर लोट २ गये बादशाह भी अमरू की चालाकी से अतिप्रसन्न हुए और अपने वज़ीर से कहने लगे कि ऐसा मनुष्य तो हमने कभी नहीं देखा यह इसबात में अति प्रचण्ड है तत्पश्चात् शराब पीकर सब बदमस्त होगये और कूद २ नाचने लगे सब

दुःख सुख भूलगया तब बादशाहने बहुतसा इनआम अमरू को दिया और सबको यथाउचित प्रसन्न किया इसी प्रकार से सात दिन रात्रि नाच रङ्ग हुआ किया आठवें दिन अमीर ने अमरू से कहा कि तुम चलकर सेना को हमारा हाल सुनाओ हम कुछ दिन यहां की सैर करके आते हैं तब अमरू तो सेनाकी तरफ़ चला और अमीर महल में जाकर रावेपलासपोश के साथ भोग विलास रात्रि दिन करनेलगे थोड़े दिनों के बाद एक सहेली ने आकर ख़बरदी कि मलिकाके अवधानहै अमीर सुनकर अतिप्रसन्न हुए और कहनेलगे कि अब जबतक लड़का न होगा तबतक हम भी यहीं रहेंगे रावपा ने कहा कि यही मेरीभी इच्छा है कि मैंने आप के विरह में बहुतसा दुःख उठाया है अब तो कुछ दिन सुख दीजिये॥

अमीर का फ़तेहयार भाई फ़तेहनोश के देश में जाना और अज़दहे का मारना और अलमशेर रूमी का उत्पन्न होना॥

लेखकलोग लिखते हैं कि जब अमीर का ब्याह रावपा के साथ हुआ तो एक फ़तेहनोश के भाई फ़तेहयार नामे ने जिसका देश वहां से मिला था इसने इस बात को सुनकर कि फ़तेहनोश ने अपनी बेटी का ब्याह एक मुसाफ़िरके साथ करदिया है अपने भाई को लिखा कि मैंने सुनाहै कि रावपा का ब्याह किया है सो दामाद के देखने की मेरी भी इच्छा है कृपा करके भेजदीजिये फ़तेहनोश ने उस पत्र को अमीर के हाथ में देदिया अमीर ने पत्र पढ़कर कहा कि अच्छा हम जायँगे आख़िरकार दूसरे दिन अमीर गये जब समीप पहुँचे तो फ़तेहयार अगवानी मिलकर लेजाकर अपने स्थानपर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर बातें कररहे थे कि एकबारगी शोर गुल सुनाईपड़ा अमीर ने पूछा कि यह शोर क्यों होता है ? उसने कहा कि इस नगर के समीप एक अज़दहा है वह जब सांस लेताहै तो बहुतसे मनुष्य जीव जन्तु भस्म होजातेहैं उसी ने सांस लियाहै अमीरने कहा कि अफ़सोस है कि आजतक कभी इसका हाल फ़तेहनोशने मुझ से नहीं कहा नहीं तो अबतक कभी मारडालते अच्छा अब आप किसी को मेरे साथ करदीजिये कि वह दूर से उसके रहने का स्थान दिखादेवे फ़तेहयार ने कहा कि मैं आपही आपके साथ चलूंगा तब अमीर ने अशक़र को तैयार करवाया और सवार होकर क़न्दज़ को साथ लेकर जाने के लिये आरूढ़ हुए और फ़तेहयार भी अपनी सेना साथ लेकर अमीर के साथ हुए कि हरएक अपने चित्त में आश्चर्य करता था कि यह मनुष्य अज़दहे को किस तरह मारेगा आख़िरकार अमीर ने उसको मारकर दो भाग करदिये तब उसके मुख से ऐसा धुआं निकला कि कोसोंतक अँधियारा होगया जब धुआं बन्द होगया तब अमीरने फ़तेहयारको लेजाकर दिखलाया वह देखकर अतिप्रसन्न हुआ और जितनेलोग थे देखकर अमीर की सब प्रशंसा करनेलगे तत्पश्चात् थोड़े दिन तक वहां बास करके नगरखरशनामे में आये और इतने दिनों में गर्भ के दिन भी पूरेहुए और एक अच्छी सायत एक पुत्र पैदाहुआ तो अमीर ने उसका नाम अलम-

शेर रूमी रक्खा और फ़तेहनोश ने इतना पुण्य किया कि बहुत से लोग धनवान् होगये जिसने जो चाहा वह लिया जब अलमशेररूमी चालीस दिनका हुआ तब अमीर बादशाह और राबपापलासपोश से विदाहुए जाती समय कहा कि जिस समय यह लड़का युवा हो तो इसको हमज़ा की सेना में भेजदेना तब फ़तेहनोश ने अमीर से सौगन्द देकर पूछा कि सत्यबताओ तुम्हारा नाम शादसामी है या हमज़ा अमीर ने कहा कि हमज़ा मैंहीं हूं फ़तेहनोश अतिप्रसन्न हुआ और क़न्दज़ बग़ल बजा २ कर कहनेलगा कि मेरी बात तो रहगई कि आधीन हुआ तो केवल हमज़ा के हुआ दूसरा मुझसे न जीतसका राबपा ने भी सुनकर ईश्वर का धन्यवाद किया कि हमज़ा ऐसा पुरुष मिला जो संसार में प्रसिद्ध है तत्पश्चात् अमीर वहां से क़न्दज़ को साथ लेकर अपनी सेना में पहुँचे तो सब सरदारों ने दौड़कर सलामकिया अमीर ने सब को छाती से लगाकर सब हाल पूछकर क़न्दज़को अलजोश के साथ लड़नेको भेजा अलजोश ने सदैवकी तरह उसको भी लातों से मारा वह बड़े सन्देह में पड़ारहा कि किसतरह से इसको मारूं आख़िरकार शामतक दोनों से युद्ध हुआ दूसरे दिन उसने अमीर को ललकारा तो अमीर अशक़र देवज़ादे पर सवार होकर गये और अलजोश से वार चलाने को कहा उसने दोवार चलाकर तीसरीवार चाहा कि दोलत्ती मारे अमीरने उसके पैर पकड़कर घुमाकर देमारा और बांधकर अमरू के हवाले किया अमरू ने उससे कहा कि उठचल उसने कहा कि बल हो तो उठा लेचल अमरू ने दो तीन कोड़े मारे तबतो वह कूदता हुआ अमरूके आगे २ भागा लोग देखकर हँसनेलगे तत्पश्चात् अमीर डङ्काबजवा के चले आये रात्रि को अमीर ने अलजोश को बुलाकर पूछा कि अब क्या इच्छा है ? उसने कहा कि सेवक को क्या जैसी आज्ञा हो वही करूं जबतक प्राण हैं आपकी सेवकाई करूंगा तब अमीर ने उसको मुसल्मान करके अति प्रतिष्ठा से जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर सबसे अधिक प्रतिष्ठा दी तत्पश्चात् अमरू ने बाला गुलामी का उसके कान में डालकर नाचरङ्ग करानेकी तैयारी की लेखक लिखताहै कि अपनी सभामें महली ने आकर ख़बर दी कि नारंजपरी के पुत्र उत्पन्नहुआ अमीर ने सुनकर डङ्काबजाने की आज्ञा दी और सबको यथा उचित इनआम देकर एक मनकी सुवर्णकी हँसुली बनवाकर अमीरज़ादे के गले में पहिनाकर तौक़ज़रीं नाम रखकर रक्षाकरनेवाली को सौंपदिया और बहुतसे सिपाही उसकी रक्षाके लिये मुक़र्रर किये तत्पश्चात् आप सवार होकर मैदान में गये तो एक दिन सेनासे निकलकर अमीर को ललकारा तब इस्तफ़तेहनोश ने जाकर उसका सामना किया इतने में बनकी तरफ़ से एक सेना दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर ख़बर ली तो विदित हुआ कि शाहज़ादारूम दोनों सेनाओंसे युद्ध करने के लिये आता है इतने में आकर दोनों सेनाओंके बीच में परेट जमाकर शाहज़ादे नौशेरवां की सेनाकी तरफ़ घोड़ा लेजाकर ललकारा कि जिसको बहादुरीका घमण्ड हो वह आकर हमारे सामने दिखावे तब नौशेरवां की ओर से एकादी सामने

आकर गदा चलाने की इच्छाकी थी कि इतने में शाहज़ादेरूमने गदा छीनकर फेंकदी और एकादी को घोड़े समेत उठाकर पृथ्वीपर पटकदिया कि वह मरगया इसी प्रकार से थोड़ेही काल में बहुतसे नौशेरवां के सरदारों को मारकर सेनाका जी तोड़ दिया तब अमीर की सेनाके सरदारों को ललकारा तब फ़रहाद ने जाकर सामना किया तब उसने एक वार ऐसी मारी कि हाथी जिसपर फ़रहाद सवारथा गिरकर मरगया इसी प्रकार से कई पहलवानों के सामना करनेके पश्चात् शाहरूमने कहा कि हमज़ा क्यों नहीं आता आख़िरकार हमज़ा ने सामना करके कमर पकड़कर चाहताथा कि उठाकर पृथ्वीपर पटके कि इतने में आकाशबाणी हुई कि ख़बरदार हमज़ा! यह तेरा पुत्र है यह सुनकर अमीर ने धीरे से रखदिया तब वह उठकर अमीर के पैरपर गिरा अमीर ने उसको छाती से लगाया और हाथ पकड़कर सेना में लेआकर सब सरदारोंसे उसका अपराध क्षमा करवाया अमीर का पुत्र जानकर सबलोग अतिप्रसन्न हुए और सात दिनतक नाचरङ्ग हुआकिया आठवें दिन शत्रु की सेना से डङ्के का शब्द सुनाई दिया अमीर ने भी डङ्का बजवाया और मैदानमें जाकर अपनी सेना का परेट जमाकर खड़ेहुए तब नौशेरवां की सेना से एक पहलवान आदीनाम खड़ा होकर ललकारनेलगा रुस्तमपीलतन उसके सामने गया तो तीनबार रोककर एक तलवार ऐसी लगाई कि उसका प्राण निकल गया लिखने वाला लिखता है कि उस समय रुस्तमपीलतन ने पचास पहलवानों को मारकर नौशेरवां की सेना में जाकर बहुतेरे पहलवानों को मारकर सेना को भगा दिया अमीर नें देखा कि पुत्र अकेला है सेना लेकर दौड़कर उसी के साथ मारते २ चार कोसतक खेदकर छोड़ादिया और लौटकर इतना माल व असबाब पाया कि उसको इतना कभी न मिलाथा जिसे कोई आपसे उठाकर न लेजासका तत्पश्चात् रुस्तम आकर अमीर के क़दमों पर गिरा अमीर ने उठाकर छाती से लगाकर बहुत सा रुपया अशरफ़ी पुण्य किया तत्पश्चात् नाचरङ्ग कराने की आज्ञा दी और सब कारोबार बन्दरहा नौशेरवां ने बख़्तकसे कहा कि बड़ी पराजय हुई अब कोई सामान युद्ध का नहीं रहा सेना सब व्याकुल है अब कौन यत्न करना उचित है बख़्तक ने कहा कि यहां से निकट ख़ाबर नगर है वहां का स्वामी क़ैसाज़शाह ख़ावरी बड़ा बहादुर और स्वभाव का अति उत्तम है उसी के निकट चलकर शरण लीजिये ईश्वर चाहेंगे तो वह आपका नाम सुनकर अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होगा नौशेरवां उस नगर की तरफ़ चला और दूसरे दिन जाकर पहुँचा तो दूतोंने उसको जाकर ख़बरदी कि नौशेरवां सातदेशोंका बादशाह हमज़ासे हारकर आपके निकट सहायता के लिये आयाहै वह बड़े धूमधामसे सवार होकर नौशेरवां की अगवानी के लिये गया और अपने स्थानपर लाकर तख़्तपर बैठालकर सब हाल पूछनेके बाद उसको बड़ी आशादी कि जो हमज़ा यहां आवेगा तो अपने कियेहुएका फल पावेगा बख़्तकने कहा कि जो ऐसा न होता तो काहेको बादशाह आपके पास आते॥

अमीर का नौशेरवां का पीछा करके खावरनगर की तरफजाना और
क़ैमाज़ बादशाह खावर को मुसल्मान करना॥

लिखनेवाला लिखता है जिस समय अमीर सभा से उठे तो अमरूसे पूछा कि कुछ मालूम नहीं होता कि नौशेरवां किस दिशाको गया अमरू ने कहा कि सुनाहै कि क़ैमाज़शाह खावरी के पास जाकर शरणली है उसने शरण देकर वचन दिया है कि तुम यहां रहो अमीर जब आवेगा तो हम उसको आनेका फल दिखावेंगे अमीर ने हँसकर कहा कि हमारा खेमा खावर की तरफ़ रवाना हो उसकी आज्ञानुसार कियागया तब अमीर दूसरे दिन सेना समेत खावरकी तरफ़ चले जिस समय खावर के निकट पहुँचे क़ैमाज़शाह को एकपत्र इस समाचार का लिखकर अमरू के हाथ भेजा कि नौशेरवां और बख़्तक दो हमारे शत्रु तुम्हारे पासहैं उनको बांधकर हमारे पास भेजदो नहीं तो हम आकर बड़ा दण्डदेंगे अमरू ने पत्र लेकर दरबानों से कहा कि बादशाह से अतिशीघ्रही हमारी ख़बरकरो दरबानों ने जाकर कहा तब बादशाह ने अमरूको सभा में बुलाकर पत्र मांगा अमरू ने कहा कि सैंतमेंत मैं इस पत्रको न दूंगा तुम नहीं जानते कि यह पत्र बड़ेनामी मनुष्यका है आख़िरकार क़ैमाज़ ने बहुतसी अशरफ़ियां देकर उस पत्र को लेकर चूमकर खोलकर पढ़कर नोचडाला और कहनेलगा कि जो हमज़ा लिखताकि नौशेरवां और बख़्तक को मेरे पास बांधकर भेजदो नहीं तो तुम्हारे तख़्त के पटरों से ताबूत बनावेंगे तो क्या हम उसके नौकर हैं या उससे डरते हैं अमरू ने कहा कि लाचार हैं कि अमीर ने मना किया है नहीं तो जिस तरह से तूने पत्र फारडाला है उसी तरह से हम तेरे पेटको फाड़ते क़ैमाज़ ने क्रोधित होकर अपने गुलामों से जो हाथ बांधकर खड़े थे आज्ञा दी कि इसको पकड़लो जब वे दौड़े तब अमरू भी ख़ंजर निकालकर बहुतों को मारकर बादशाह के शिरपर एक चपत मारकर मुकुट लेकर चलदिया बहुतों ने पीछा किया परन्तु अमरू को क़ौन पाता है आख़िरकार अमरू ने आकर अमीर से सब वृत्तान्त कहा दूसरे दिन क़ैमाज़शाह डङ्का बजाकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुआ अमीर ने भी अपनी सेनाको परेट जमाया तो सबसे पहले खुरशेद खावरी बहिन क़ैमाज़शाहकी ने जो अपने सामने किसी को न समझती थी मैदानमें खड़ीहोकर ललकारा तब अमीर की सेनामें से शेरमारनामी ने जाकर सामना किया तो उसने एकही बरछी मारकर घोड़े को घायल किया इसी तरह से थोड़े ही काल में बहुतसे पहलवानों को घायल किया आख़िरकार रुस्तमपीलतन से न रहागया उसने भी जाके सामना किया तब उसने एकबार शाहज़ादे पर भी चलाई रुस्तमने बरछी पकड़कर खींचलिया कितनाही उसने बलकिया लेकिन बरछी न छूटी और थोड़ी देर में घोड़ेपर से कूदकर उसको घोड़े से गिराकर चाहा कि बांध लेवें लेकिन जब मालूम हुआ कि स्त्री है तो गोद में उठाकर अमीर के पास लाकर डालदिया अमीर ने उससे पूछा कि तू कौन है क्यों लड़ने आई ? उसने कहा कि मैं क़ैमाज़की बहिनहूं खुरशैदखावरी मेरा नाम

है तब अमीर ने आज्ञादी कि इसको रुस्तम की माता के पास लेजाओ आख़िरकार खुरशैद ख़ावरी तो उधर भेजीगई इधर क़ैमाज़शाह के भाई से रुस्तमपीलतन का सामना हुआ तो रुस्तम ने उसको भी बांधा और पुकार कर कहा कि स्त्री को लड़ाकर तमाशा देखतेहो जो मर्द हो तो खुदआकर लड़ो तब नीमतनपिता क़ैमाज़शाहख़ावरी ने आकर सामना किया रुस्तम ने उसको भी एकहीबार में बांधलिया तत्पश्चात् हुमानख़ावरी आया तो उसको आतेही बांधलिया इसी तरहसे थोड़ेकाल में बहुत से पहलवानों को बांधलिया आख़िरकार क़ैमाज़ डरकर पलटने का डङ्का बजवाकर भागगया तब अमीर भी अपनी सेना समेत अपने स्थानपर चलेआये रुस्तम ने आकर अमीर के क़दम छुये अमीर ने गले से लगाकर बहुतसा रुपया अशरफ़ी पुण्य करके रात्रि को सभा में बैठकर नीमतन और हुमान से बुलाकर पूछा कि तुम्हारी अब क्या इच्छा है? उन्होंने कहा कि जबतक क़ैमाज़ मुसल्मान न होवे तबतक हमलोगों को मुआफ़ रखिये अमीर ने स्वीकार करके आदी के हवाले किया और आप नाचरंग देखने लगे उसी समय में खुरशैदख़ावरी से पुछवाया कि तुझ को रुस्तम के साथ ब्याह करना स्वीकार है? उसने उत्तर दिया कि मेरी भाग्य में यह कहां है कि ऐसा पुरुष मुझे मिले तब अमीर ने एक अच्छी सायत पूछकर दोनों का ब्याह करदिया तब रुस्तम सातदिन रात्रि बराबर महल में रहकर भोग विलास करता रहा आठवें दिन डङ्के का शब्द सुनकर महल से बाहर आया और शस्त्र धारण करके अमीर के साथ होकर मैदान में जाकर सेना का परेट जमाकर खड़ा हुआ तब क़ैमाज़शाह ने घोड़े को मैदान में लाकर ललकारा कि ऐ शाहज़ादे! तू लड़ना नहीं जानता आ मैं सिखलादूं यह सुनकर रुस्तम घोड़े को लेकर उसके सामने गया तब उसने आठसौ मनकी गदा उठाकर रुस्तम के ऊपर मारी तो रुस्तम ने तो ढाल से रोकलिया लेकिन घोड़ा घायल होगया तब शाहज़ादे ने घोड़े पर से कूदकर एक तलवार ऐसी लगाई कि उसके घोड़े के चारोंपैर कटकर गिर पड़े फिर दोनों दूसरे घोड़ों पर सवार होकर लड़ने लगे रुस्तम ने हज़ार मनकी गदा इस ज़ोर से बहमन के शिरपर मारी कि जो पहाड़ होता तो वह भी सुरमा होजाता लेकिन क़ैमाज़ का एक बाल भी न टेढ़ाहुआ हँसकर कहने लगा कि हमज़ा के पुत्र! इसी बलपर मुझ से लड़ने आया है जा अपने पिता को भेजदे वह आकर मुझसे लड़े रुस्तम ने कहा कि तूने मेरा क्याकिया जो मेरे पिता को बुलाता है ऐसी बात मत बक आख़िरकार शामतक दोनों लड़ाकिये देखनेवाले बड़े आश्चर्य में हुए शाम को क़ैमाज़ डङ्का बाज़गश्त बजवाकर चलागया दूसरेदिन फिर दोनों सेना आकर परेटपर खड़ीहुई उस दिन शामतक लन्धौर और क़ैमाज़ का सामना रहा आख़िरकार सायंकाल को दोनों सेना अपने २ स्थानोंपर गईं तब अमीर ने लन्धौर और रुस्तम से पूछा कि यह कैसा पहलवान है? उन्हों ने कहा कि आप के बाद संसार में यही है दूसरे दिन दोनों सेना मैदान में आकर खड़ी हुई और कोई

सेना से न निकला था कि एक जवान चालीस गज़का लम्बा बनकी तरफ़ से आकर दोनों सेनाओं के वीच में खड़ा हुआ और नौशेरवां की सेना के तरफ़ मुख करके ललकारा नौशेरवां ने एक आदी को उससे सामना करनेको भेजा उसने एक घूंसा ऐसा मारा कि उसकी हड्डियां चूर २ होगईं उठने के योग्य न रहा तब दूसरे आदी ने आकर सामना किया उस का भी वही हाल किया तव तो सबका जी टूट गया कोई सामने न आसका थोड़ी देर रहकर मुसल्मानी सेना की ओर मुख करके ललकारा तो सरकोब ने पहले जाकर सामना किया फिर क़न्दज़ ने उन दोनों को उठा २ कर पृथ्वी पर छोड़कर कहा कि तुम जाओ दूसरे को भेजो जब ये दोनों हारकर आये तो अमीर ने क़न्दज़ से कहा कि यह तुम्हारा पुत्र हमको मालूम होता है क़न्दज़ ने कहा कि जो यह मेरा पुत्र होगा तो मैं बेमारे न छोड़ूंगा तत्पश्चात् रुस्तम नें जाकर सामना किया उसने चाहा कि इसको भी उठाकर फेंकें लेकिन रुस्तम ने भी उसकी कमर पकड़ी थोड़ी देरतक दोनों ज़ोर करतेरहे आख़िर रुस्तम ने एकबारगी उठाकर पृथ्वीपर धीरे से रखकर पूछा कि सत्यवता तू कौन है तेरा क्या नाम है ? उसने कहा कि मेरा शबानतायफ़ी नाम है और क़न्दज़ सरशबान का पुत्र हूं तब शाहज़ादे ने उसको अपने साथ अमीर के पास लाकर अमीर के क़दमों पर गिराया अमीर ने उठाकर गले से लगाकर सब वृत्तान्त पूछकर अपने समीप बैठाकर सब सरदारों से बड़ा अधिकार दिया तत्पश्चात् सात दिवसतक सभा की और यथोचित लोगों को पारितोषिक दिया आठवें दिन फिर दोनों सेना आकर मैदान में खड़ी हुईं तब शबानतायफ़ी क़ैमाज़शाह का सामना हुआ सब दिन लड़ाई हुआ की लेकिन जीत हार न सका सायंकाल को दोनों सेना अपने २ ख़ेमे में गईं दूसरे दिन प्रातःकाल मैदान में आकर क़ैमाज़ ने घोड़ा निकालकर ललकारा कि ऐ हमज़ा ! जो लड़ने आया हो तो तू आकर सामना कर लड़के को भेजकर दिन क्यों काटता है तुझको लज्जा नहीं आती तेरी सेना पराजित होजाती है इतना सुनकर अमीर अशक़र पर सवार होकर मैदान में खड़े हुए तो दोनों हथियार लेकर लड़ाकिये परन्तु किसी की जीत हार न हुई आख़िरकार अमीर ने क़न्दज़ से कहा कि हे बादशाह ! हमारी तुम्हारी हथियार की लड़ाई होचुकी अब पग उठाई हो जो हारे वह दूसरे की सेवा करे आख़िरकार दोनों की कमर पकरौवल हुई तो क़न्दज़शाह ने अमीर की कमर पकड़ कर उठाया लेकिन न उठासका तो हारकर छोड़ दिया तब अमीर ने कमर पकड़कर एकबारगी उठाकर पृथ्वी पर रखकर अमरू के हवाले किया और डङ्का ख़ुशी का बजवाते हुए ख़ेमे में आकर आज्ञादी कि ख़ाबरियों को लेआओ तो अमरू ने लाकर मौजूद किया तब अमीर ने क़ैमाज़शाह से कहा कि हम जीते तुम हारे अब हमारी सेवकाई करो उसने कहा कि मुसल्मान तो मैं नहीं हूंगा और सब करने को आरूढ़ हूं तब अमीर ने क्रोधित होकर आदी अकरब से आज्ञा दी कि इसको गदा

से मारडालो उसने लेजाकर मारने की आज्ञा दी परन्तु क़ैमाज़ के शरीर में कुछ दुःख भी न होता था यह देखकर अमीर कहने लगे कि बड़े अफ़सोस की बात है कि ऐसा पहलवान हाथ से निकला जाता है और मेरा कहना नहीं मानता आज्ञा दी कि इसको आदी के हवाले करो क़ैमाज़ ने कहा कबतक बांधरक्खोगे अमीर ने कहा ज़िन्दगी भर न छोड़ूंगा इतने में क़ैमाज़शाह ने अमरू से जलपीने को मांगा तब अमीर ने शरबत बनाकर मन्त्र पढ़कर फूंककर क़ैमाज़ को दिया उसने ज्योंही शरबत पिया त्योंहीं उसके चित्त में मुसल्मानी धर्म का स्मरण आ गया तब तो अमीर के पास आकर कहनेलगा कि अब मुझको सब स्वीकार है जो आपका चित्त चाहे वह कीजिये तब अमीर ने उसके भाई पुत्र पिता समेत मुसल्मान करके बड़ी भारी खिलअत देकर अपने समीप जड़ाऊ कुरसी पर बैठाकर बड़े धूम धाम की सभा नाचरङ्ग करवाई नौशेरवां ने बख़्तक से कहा कि अब तो यहां से भागना चाहिये नहीं थोड़ी देरमें बांधेजावेंगे बख़्तक ने कहा कि यहां से कयोमुर्स नगर अति निकट है वहां का स्वामी बड़ा बहादुर है उसके डरसे क़ैमाज़ पहाड़ में भाग जाता था आख़िरकार नौशेरवां बख़्तक समेत जाकर वहां पहुँचकर सहायता मांगी तो अगवानी लेकर अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर सब आदर भाव करके सब हाल नौशेरवां का सुनकर कहा कि आप यहां चैन से बास कीजिये वह हमारा क्या करसक्ता है नौशेरवां उसकी बातपर प्रसन्न हुए और उसके यहां रहकर आसरा देखने लगे अमीर का हाल सुनिये कि सभा में बैठे थे कि एकबारगी अमरू से पूछ उठे कि नौशेरवां किसके पास गया है अमरू ने कहा कि कयोमुर्स नेज़ेबाज़ी में अति प्रचण्ड है उसी ने रक्खा है और कहता है कि जो हमज़ा यहां आवे तो उस की मृत्यु आवे अमीर ने सुनकर हँसकर ख़ेमा अगवानी जाने की आज्ञा देकर दूसरे दिन कूच करके बड़ी धूमधाम से उसके नगर के समीप उतरकर कयोमुर्सशाह को अपने आने की ख़बर देकर अति प्रसन्नता से सभाबिलास करने लगे उधर कयोमुर्स युद्धपर आरूढ़ होकर मैदानमें खड़ा होकर डङ्का बजवाने लगा तब अमीर भी डङ्का बजवाकर युद्धकी तैयारी करके उसकी तरफ़ चला जब समीप पहुँचा तो कयोमुर्स बख़्तक के साथ देखने के लिये चलाआया तो जब अमीर की सेना निकली और बख़्तक कयोमुर्स से नाम लेकर बतलाने लगा तो अमीर की सेना का प्रमाण न करसका तब कयोमुर्स बख़्तकसे कहने लगा कि हमको यह नहीं मालूम था कि अमीर हमज़ाके साथ इतनी सिपाह और बड़े पहलवान हैं आख़िरकार दोनों से बड़ा युद्ध हुआ पहले तो कयोमुर्स ने अमीर के बहुत से पहलवानों को घायल किया लेकिन आख़िर को अमीरहमज़ा ने पछाड़कर बांधकर अमरू के हवाले करदिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि जब उसने देखा कि कयोमुर्स अमीर के कारागार में गया तो उसने बख़्तक से कहा कि अब तो कयोमुर्स पकड़ा गया अब यहां से निकल चलने की कोई यत्न करनी चाहिये नहीं तो क़ैद होंगे बख़्तकने कहा कि यहां से थोड़ीदूर

पर गैलान नगर है वहां का स्वामी बड़ा बहादुर है कि उससे कोई हथियार चलाने में सामना नहीं करसक्ता कि उसकी प्रशंसा जीभ से नहीं होसक्ती और हमज़ा उसके सम्मुख तिनके के समान है सो वहीं चलकर बास कीजिये तब नौशेरवां ने दूसरे दिन यात्रा करके गैलान के समीप पहुँचकर उतरकर बादशाह गैलान को अमीर के दुःख देने का हाल लिखकर भेजा उसने पत्र को पढ़कर नौशेरवां को अगवानी मिलकर अपने स्थानपर बैठाकर अतिप्रसन्न किया और बचन दिया कि हमज़ा यहां न आने पावेगा तब तो नौशेरवां निस्संदेह होकर अमीर का आसरा देखनेलगा उधर अमीर ने कयोमुर्स से पूछा कि अब तुम्हारी क्या इच्छा है उसने कहा कि अब सेवकाई आपकी मुसल्मान होकर करने की इच्छा है अमीर ने उसी सायत मुसल्माल करके खिलअत देकर कुर्सीपर बैठाकर अपने साथ भोजन कराकर प्रसन्न किया तत्पश्चात् एक दिन कयोमुर्स ने हाथ बांधकर अमीर से कहा कि अब तो कृपा करके नगर में चलकर बासकरते तो अतिउत्तम होता अमीर ने स्वीकार किया और दूसरे दिन उसके महल में जाकर अतिप्रसन्नता से तख़्त पर बैठे और कयोमुर्स रूमाल लेकर मक्खियां हटाने लगा अनेकप्रकार से अमीर और सरदारों की सेवा करने लगा॥

अमीर का गैलाननगर की ओर जाना और वहां के अधिपति गुनजालशाह को मुसल्मान करके उसकी बेटी गैलीसवार के साथ ब्याह करना॥

लेखक लिखता है कि उस नगर के समीप तराई बहुत थी अमीर दिनको शिकार खेलते और रात्रिको सभाविलास में चैनकरते बहुत दिनोंके पश्चात् एक दिन अमरू से पूछा कि कुछ मालूम नहीं होता कि बख़्तक नौशेरवां को कहां लेगया? अमरू ने कहा कि सुना है कि नौशेरवांने नगर गैलान के स्वामी शाहगुनजाल के समीप जाकर सहायता मांगी है सो उसने अतिप्रतिष्ठा के साथ बासदेकर इक़रार किया है कि अमीर हमज़ा यहां किसी प्रकार से न आवेगा अमीर ने अपना ख़ेमा उसी दिन भेजकर दूसरे दिन सेनासमेत उसी ओर का पयान किया दूसरे दिन चलकर कई दिनों के पश्चात् उस नगर के समीप ख़ेमा गाड़कर उतरपड़े तब जासूसों ने शाहगुनजाल से अमीर के आने की ख़बर दी तो नौशेरवां ने उसी दिन डङ्का बजवाया और शाहगुनजाल आदीकी सेना लेकर मैदानमें परेट जमाकर खड़ाहुआ अमीर ने भी अपनी सेनाको उसकी बराबर लेजाकर खड़ाकिया परन्तु कोई अभी सेनासे निकला न था कि बनकी तरफ़से एक सवार आया और दोनों सेनाके मध्य में खड़ा होकर मुसल्मानी सेना के तरफ मुख करके ललकारने लगा उसको देखकर सब डरे आख़िर को अमीरके दो तीन पहलवान से सामना हुआ सबको उसने उठा २ कर पृथ्वीपर रखकर कहा कि तुम जाओ दूसरे को भेजो इतने में शाम हो गई तब वह जिधर से आये थे उसी तरफ़ को गये अमीर उसके हाल पूछने के लिये कि कौन है अमरू को साथ लेकर उसके पीछे चले जब थोड़ी दूर गये तो उसने

देखा कि दो सवार आते हैं देखकर खड़ी होगई और जब अमीर समीप पहुँचे तो वह एक बाग़ में चलीगई अमीर भी उसके पीछे बाग़ में गया वहां जाकर देखा कि बहुतसी स्त्रियां हैं और वह सवार जाकर एक कोने में घोड़े परसे उतरकर खड़ा है अमरू ने देखकर अमीर से कहा कि विदित होता है कि यह सवार स्त्री है कि इतने में उसकी भी दृष्टि अमीर पर पड़ी अपने ख़्वाजेसराय को बुलाकर कहा कि जाकर पूछो कि ये दोनों सवार कहां से आते हैं किस प्रयोजन से आये हैं ? उसने जाकर अमीर से पूछा कि आपका क्या नाम है और किस प्रयोजन से आये हैं ? अमीर ने कहा कि हमज़ा मेरा नाम है और यह अमरू मेरा यार है इसकी चालाकी संसार में प्रसिद्ध है तब अमीर ने पूछा कि ऐ ख़्वाजे ! तू यह तो बता कि इस शाहज़ादी का क्या नाम है ? वह बोली कि मेरी शाहज़ादी का गैलीसवार नाम है यह कहकर शाहज़ादी के पास जाकर ख़बर दी तब उसने ज़ाकर लिबास मरदाना उतारा और स्त्री की पोशाक पहिनकर अमीर को अगवानी लेकर बारहदरी में लेजाकर मसनदपर बैठाकर अतिप्रसन्न करके अपने साथ भोजन करवाकर शराब मँगवाकर दोनों साथ बैठकर पीने लगे दो तीन गिलास पीने के पश्चात् शाहज़ादी नशे में कूदकर अमीर के गोद में बैठी सब लज्जा भूलगई तब अमीर ने उससे व्याह करने की इच्छा की उसका चित्त तो पहलेही से चाहता था सुनतेही स्वीकार करलिया अमरू ने उसी समय मन्त्र पढ़कर उसके साथ ब्याह करादिया तत्पश्चात् दोनों छपरखटपर जाकर भोग विलास करनेलगे गुनजालशाह को यह ख़बर पहुँची वह सुनतेही जलकर आग होगया और चार सहस्र सवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ आया और चारों तरफ़ से बाग़को घेरलिया तब शाहज़ादी ने अमीर से कहा कि आज्ञा हो तो जाकर बादशाह का शिर काटलाऊं अमीर ने कहा लाख हो पिता के ऊपर हाथ न चलसकेगा लेकिन मैं जाकर उसको पकड़लाता हूं आख़िरकार अमीर बाहर आये दोनों से सामना हुआ तब अमीर ने गुनजालशाह को पराजय देकर मुसल्मान करलिया वह अपनी बेटी के पास आया और अपने मुसल्मान होने का कारण उससे कहा तब यह ख़बर देश में प्रसिद्ध होगई एक दिन रात्रि को अमीर गैलीसवार को बग़ल में लिये लिपटे सोरहे थे कि इतने में ज़रंगेज़ नौशे-रवां की स्त्री जिसने अमीर को पहले भी लेजाकर ख़न्दक़ में तीन दिनतक बांध रक्खा था आकर अमीर के समीप पहुँचगई देखकर अपने चित्त में कहनेलगी कि इसने मुझे न स्वीकार किया और इसके साथ व्याह करके भोग विलास कररहा है इससे दोनों को मारडालना उचित है यही विचार रही थी कि शाहज़ादी के नेत्र खुलगये और उठकर हथियार लेकर उसको खेदलिया वह थोड़ी दूर जाकर फिर कर खड़ी होगई और कहनेलगी कि वहां से हमज़ा के डरसे भागी थी तुझसे क्या डर है ? यह कहकर एकतीर चलाया शाहज़ादी ने रोंककर एकतलवार ऐसी मारी कि वह दोभाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी अमीर ने पुकारकर कहा कि ऐ गैलीसवार !

तूने यह क्या किया ? नौशेरवां जानेगा कि हमज़ा ने मारा है वृथा लज्जित होगा उसने कहा कि अबतो जो होना था सो हुआ तब अमीर गैलीसवार को साथ लेकर बाग़ में आकर आराम करने लगे और उधर प्रातःकाल नौशेरवां को ख़बर हुई कि ज़रंगेज़ की लोथ मैदान में पड़ी है तब सेवकों से लोथ उठवा मँगवाई और अफ़्सोस करके कहनेलगा कि विदित होता है कि यह हमज़ा के पास गई थी उसने इसको मारा है अफ़्सोस हम ऐसे होगये कि हमारी बग़लसे स्त्री उठकर दूसरे के पास जावे अब हम लोगों को क्योंकर मुख दिखावेंगे इससे तो हमको बड़ी लज्जा हुई अपने सरदारों से कहा कि हमने गद्दी बहुत दिन की अब इच्छा होती है कि देश पर्यटन करें सरदारों ने हाथ जोड़कर कहा कि जैसी आज्ञा हो हमलोग आपही की इच्छा चाहते हैं आख़िरकार नौशेरवां आधी रात्रि को हज़ार सरदारों को साथ लेकर बहुतसा माल असबाब लेकर बाहर निकलकर बनको चला और जो कोई पूछता तो अपने को सौदागर बतलाता अपना नाम किसी से न कहता था उनके जाने के पश्चात् प्रातःकाल सेना में शोरहुआ कि नौशेरवां लोप होगया बहुतेरे कहने लगे कि अमीर ने मारडाला और बहुतेरे कहते थे कि अमरू मक्कारी करके उठा लेगया होगा लेकिन बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि अमीर मारडालते या अमरू उठालेजाता तो हज़ार जवान क्या होते बादशाह अपनी स्त्री ज़रंगेज़ की इस बात को देख लज्जित होकर कहीं चलेगये हैं पीछे को हुरमुज़ लोगों को बादशाह की खोज में भेजकर आप सबलोगों की सलाह से नौशेरवां की गद्दीपर बैठकर सब कारोबार करनेलगा नौशेरवां का हाल सुनिये कि अपने को सौदागर के नाम से प्रसिद्ध करताहुआ चलाजाता था जासूसों ने यह ख़बर बहराम नामे एक डाकू को पहुँचाई वह कई सहस्र डाकू लेकर नौशेरवां के समीप आकर सब माल लूटकर नौशेरवां समेत अपने स्थानपर लेकर चलागया वहां लेजाकर उससे पूछा कि तू सत्य बता कौन है नौशेरवां ने कहा मैं नौशेरवां क़बाद का पुत्रहूं लेकिन उसको यक़ीन न आया दो तीन बार पूछकर नौशेरवां को फ़क़ीर करके हटादिया तब नौशेरवां साधू बनकर वहां से चला और जो कोई पूछता था उससे अपना नाम बतलाता था लेकिन सुननेवाला झूठ जान हटा देता था जाते २ खतन नगरमें पहुँचा वहांभी जो पूछता था उससे अपना नाम बतलाता था आख़िर को यह ख़बर बादशाह को पहुँची कि एकसाधू आयाहै उससे जो कोई पूछताहै कि तू कौनहै वह कहता है कि मैं नौशेरवां बादशाह क़बाद का पुत्रहूं बादशाह ने भी बुलवाकर पूछा तो नौशेरवां ने अपना नाम बतलाया तब उसने झूठा जानकर अपने नगर से निकलवादिया आख़िर को फिरते २ आतिशकुन्दान मरूदपर पहुँचा वहां का यह प्रबन्ध था कि जो कोई नवीन मनुष्य आता था वह तीनदिन तक भोजन पाता था चौथे दिन बिदा कर दिया जाता था और जो सदैव रहने की इच्छा करता था उसे प्रतिदिन वन से लकड़ी लानी पड़ती थीं तब भोजन मिलता था इसकारण तीन दिनतक नौशेरवां को

भोजनमिला चौथे दिन लकड़ी लानेकी आज्ञा हुई तब बादशाह लाचार होकर रोज़ लकड़ी लानेलगा और जब लकड़ी कम लाताथा तो आधी रोटी पाता था और जब अधिक लेआता तो एक इसी प्रकार से वहां रहकर दिन काटनेलगा अब थोड़ा सा वृत्तान्त नौशेरवां की सेना का सुनिये कि एकदिन हुरमुज़ ने बुज़ुरुच्चमेहर से कहा कि मैंने लोगोंसे बहुत ढुँढ़वाया लेकिन कहीं पता बादशाह का नहीं मिलता अब तो विचारिये कि कहां हैं ख़्वाजे ने कहा कि हम पहलेही से विचार चुके हैं कि बादशाह आतिशकुन्दान मरूद में बड़े दुःख में पड़े हैं जो शीघ्रही कोई न जायगा तो उनका प्राण न बचेगा शाहज़ादे ने कहा कि फिर आपही जाकर लेआइये तब ख़्वाजे ने कहा कि वेहमज़ा के गये बादशाह न आवेंगे सो तुम जाकर अपनी माता से कहो कि वे अमीर को पत्र लिखें तो निश्चय है कि हमज़ा जाकर बादशाह को लेआवेगा तब हुरमुज़ ने आकर अपनी माता से सब हाल कहा उसने उसीसमय अमीरको पत्र लिखा कि ऐ पुत्र ! बादशाह बड़े दुःख में आतिशकुन्दान मरूद में पड़ा है सो वे तुम्हारे गये वह नहीं आसक्ता गोकि मेहरनिगार के मरने से सम्बन्ध टूटगया है और सदैव नौशेरवां बख़्तक ऐसे लोगों के कहनेसे तुमको दुःखही देतारहा लेकिन जो तुम लाओगे तो बड़ा नाम और पुण्यहोगा अमीर ने पत्र पढ़कर अमरू को ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर के पास भेजा कि पूछ आओ नौशेरवां कहां है उसने जब जाकर ख़्वाजे से पूछा तो उन्होंने कहा कि बादशाह आतिशकुन्दान मरूद में बड़े दुःख में पड़ा है जो अतिशीघ्रही जाओगे तो मिलेगा नहीं तो मरने चाहता है ॥

अमीर हमज़ा का आतिशकुन्दान मरूद की तरफ़ नौशेरवां के लाने को जाना और आनेपर नौशेरवां की दूसरी बेटी के साथ ब्याह करना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर साधू का वेष धारण करके आतिशकुन्दान मरूद की तरफ़ चले मार्ग में जब बहराम के स्थानके समीप आये तो मालूम हुआ कि इसी ने प्रथम नौशेरवां को लूटकर फ़क़ीर करदिया है उसके क़िले के समीप जाकर ऐसा शब्द किया कि वृक्ष पहाड़ सब हिलगये बहराम व्याकुल होकर क़िले से हज़ार जवान साथ लेकर बाहर आया तो उसने अमीर को देखा कि अकेला एक मनुष्य खड़ाहै दौड़कर एकबल्छी चलाई अमीर ने वही बल्छी छीनकर एक बल्छी ऐसी मारी कि वह घोड़ेपर से नीचे गिरपड़ा अमीर दौड़कर उसकी छाती पर चढ़बैठा और ख़ंजर निकालकर कहा कि या तो मुसल्मान हो नहीं तो इस से मारडालते हैं उसने कहा कि पहले आप अपना नाम बतलाइये फिर जो कहियेगा वही करूंगा अमीर ने कहा कि मेरा हमज़ा नाम है वह हमज़ा का नाम सुनतेही डर गया और कलमा पढ़कर मुसल्मान होकर कई दिन अमीरकी मेहमानी करके हज़ार अशर्फ़ी कमर में बांधकर साथ हुआ अमीर ढूंढ़ते २ कई दिनों के पश्चात् आतिशकुन्दानमरूद में जाकर पहुँचे तब साधुओं ने भोजन लाकर अमीर को दिया अमीर और बहराम दोनों ने भोजन किया और बैठकर नौशेरवां की खोज में हुए

आखिरकार शाम को जब सब लकड़ी लेकर आये तो पीछेको नौशेरवां भी थोड़ी सी लकड़ी लेकर आया अमीर देखकर रोनेलगा आखिरकार अमीर कई दिनतक वहां रहे फिर अपने को और प्रसिद्ध करके बहुतसी सेना साथलेकर वहां से नौशेरवां को साथ लेकर कूचकिया उसीदिन नौशेरवां ने अमीर से वादा किया जो तू हमज़ा को बांधकर मेरे पास लावेगा तो हम अपनी छोटी बेटी का ब्याह तेरे साथ कर देंगे अमीर ने कहा कि हम तुम अकेले सेना में चलें देखें कोई पहचानता है या नहीं तब वे दोनों जाकर सेना की बाज़ार में एक नानवाई की दूकान पर बैठकर रोटी मोल लेकर खाने लगे संयोग से मुक़बिल अशक़र देवज़ादे को पानी पिलाने के लिये जाता था अशक़र अमीर की सुगन्ध पाकर खड़ा होगया इतने में अमरू भी पहुँचा देखा कि अमीर और नौशेरवां एक नवीन मनुष्य के साथ भोजन कर रहा है अमरू ने सलाम करके कहा कि ऐ अमीर ! अच्छी सायत आये तब नौशेरवां ने उस समय अमीर को पहिंचाना और अपने चित्त में कहने लगा कि इतने दिनों से मैं अमीर के साथ रहा लेकिन मैंने इसको न पहिंचाना और सदैव हमज़ा की बुराई उससे की निश्चय है कि अमीर मुझसे नाराज़ होंगे यह विचारकर वहां से उठकर अपनी सेना में गया सरदार लोग देखकर अतिप्रसन्न होकर सब भेंट ले लेकर और तख़्तपर बैठाकर डङ्कावजने की आज्ञा दी अमीर भी अपनी सेनामें गये और सब सरदारों से मिलकर अपना सब हाल कहकर शादाद से कहा कि हमको बांधकर नौशेरवां के पास लेचलो अमरू ने सुनकर मनाकिया लेकिन अमीर ने न माना और शादाद से हाथ अपना बँधवाकर नौशेरवां के पासगया नौशेरवांने देख कर पूछा कि अमीर को क्यों तू ने बांधा है अमीर ने कहा कि मैंने तुम से वादा किया था कि हमज़ा को बांधकर तुमको सौंप देवेंगेसो मैंने अपना वादा पूराकिया अब आप अपना वादा पूराकरके अपनी बेटी का मेरे साथ ब्याह कर दीजिये बख़्तक ने उठकर नौशेरवां के कान में धीरे से कहा कि हमज़ा इस समय बेप्रयास मारा जासक्ता है आप इसको मार लीजिये तब बादशाह ने कुछ उत्तर न दिया लेकिन अमीर को विदित होगया कि नौशेरवां का चित्त मुझ से साफ़ नहीं है हाथ खोलकर शादाद से कहा कि बख़्तक पापी को पकड़कर खूब पीटो उसने तुरन्तही अमीर की आज्ञानुसार किया नौशेरवां बख़्तक का हाल देखकर महल में चलागया उसी समय जिसने बख़्तक की सहायता की वही अमीर के हाथ से मारागया आखिरकार वहां से अमीर अपनी सेना में चले आये और यहां से एक पत्र लिखकर अमरू के हाथ नौशेरवां के पास भेजा कि हमने अपनी बात पूरी की आपभी अपनी बात को पूर्ण कीजिये नौशेरवां ने लोगों से पूछा कि तुमलोगों की इसमें क्या सलाह है ? लोगों ने कहा कि हमारी बुद्धिमें तो उसके साथ ब्याह करना अनुचितहै लेकिन नौशेरवां ने न माना और सामान करके अपनी बेटी का ब्याह हमज़ा के साथ कर दिया तब हमज़ा तो लेकर अपने स्थानपर आकर उस के साथ भोग बिलास करने

लगा उधर बख्तक ने इधर उधर पत्र भेजा कि बड़े अफ़सोसकी बातहै कि तुमलोगों के होते हमज़ा ने नौशेरवां की दो बेटियों के साथ ब्याह करलिया और बादशाह का दामाद कहलाताहै लेकिन अब भी इतनी हिम्मतकरो कि आकर इस अरबबासी से मेहरअफ़रोज़ को छीन लो तौभी अच्छाहै और सब नगरबासियों ने इकट्ठे होकर हुरमुज़ से कहा कि बादशाह की बुद्धि तो अवस्था के साथ कम होगई है परन्तु जो तुम यत्नकरो तो हमज़ा आसानी से मारा जासक्राहै शाहज़ादे ने पूछा कि वह कौनसी युक्ति है सबों ने कहा कि जो बादशाह कोहअलबुर्ज़ में आदी के पास जाकर पनाह लेवे तो हमज़ा वहां के ज़ाने से अवश्य है कि माराजाय आख़िर बादशाह सबकी सलाह से कोह अलबुर्ज़ की तरफ़गये ॥

अमीर का कोह अलबुर्ज़ की तरफ़जाना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि जब अमीर को मालूम हुआ कि नौशेरवां ने पहाड़ अलबुर्ज़ में जाकर आदी से इस बिचार से पनाहली है कि यहां जो हमज़ा आवेगा तो जीता बचकर न जावेगा उसी समय लैनडोरी भेजकर दूसरे दिन कूचकर के कई दिनों के चलने के पीछे जाकर देखा कि नौशेरवां पहाड़ की खोह में सेना समेत पड़ा है और चारों तरफ़ से सेना आरही है यह तमाशा देख अमीर भी थोड़ी दूर पर उतर पड़े इसीतरह कई दिनतक दोनों सेना पड़ी रहीं जिस समय बहराम और आदी चालीस सहस्र सवार समेत आये उसी दिन नौशेरवां ने डङ्का बजवाकर सेना को लाकर परेट पर जमाया तब अमीर भी सेना लेकर सामने गये अभी दोनों सेनाओं में से कोई न निकला था कि बनकी तरफ़ से एक सवार आकर दोनों के बीच में खड़ा होकर नौशेरवां की सेना को ललकारा तो आदी ने आकर सामना किया तो उसने एकबारगी उठाकर ऐसा देमारा कि हड्डियां आदी की चूर होगईं बहराम चोब अपने भाई का हाल देखकर मैदान में आया तो उसका भी यही हाल किया तब तो नौशेरवां की सेना में से किसी ने शिर उसकी तरफ़ न उठाया वह थोड़ी देर खड़ारहा फिर मुसल्मानी सेना की तरफ़ मुख करके ललकारने लगा रुस्तम पीलतन ने आकर उसकी कमर पकड़ी उसने भी कमर पकड़ी दोनों ने ऐसा ज़ोर किया कि घोड़ों के पैर पृथ्वी में धस २ गये आख़िर को सवार ने रुस्तम को छोड़ कर कहा कि तुम जाओ किसी दूसरे को भेजो इसी प्रकार से सब बारी २ आये लेकिन कोई उससे जीत न सका तो आख़िर को अमीर जब आये तो उसने दौड़ कर अमीर की कमर पकड़ी तब अमीर ने कमर उसकी पकड़कर शब्द करके उठा कर कहा कि बता तू कौन है ? वह बोला कि क़ैसक़ैमाजख़ावरी मेरा नाम है क़ैमाज़-शाह का मैं पुत्र हूं तब तो अमीर ने उसको धीरे से पृथ्वीपर रखकर गले से लगाया और क़ैमाज़शाह से पुकार कर कहा कि ईश्वर आपका पुत्र मुबारककरे वह सुनकर अतिप्रसन्नहुआ अमीर डङ्का बजवाकर सेना में आये बड़ी धूमधाम से उसकी मेह-मानी की दूसरे दिन जब फिर दोनों सेना मैदान में आईं तो उस दिन आदी चोब

और सरश्वान दोनों का शामतक सामना रहा कोई किसी से जीत न सका रात्रि को दोनों सेना ने आराम किया प्रातःकाल फिर सामना हुआ तो उसदिन आदी चोब ने अमीर को ललकारा अमीर ने आकर दोनों भाइयों को बांधकर अमरू के हवाले करदिया और विजय का डङ्का बजवाकर अपने ख़ीमे में रात्रिको बैठकर दोनों को बुलवाकर पूछा कि अब क्या इच्छा है? उन्हों ने कहा कि सेवकाई के सिवाय और कुछ नहीं तब अमीर ने उनको कलमा पढ़ाकर मुसलमान किया और अमरू ने गुलामी का बाला उनके कानों में डालकर अपने साथ बैठाकर बड़ी प्रतिष्ठा की तत्पश्चात् उन दोनों ने अपनी सेना को लिखा कि तुमलोग शाह को छोड़कर हमारे पास चले आओ ॥

आग़ाज़े बदीउज़्ज़माँ में अय्यार का लड़की गुनजालशाह के पेट से पैदाहोना और बहादेना शाहज़ादे को संदूक़ में बन्द करके नदी में और हज़रतख़िज़र की आज्ञानुसार क़रीशा व आसमानपरी का लेजाकर रक्षाकरना ॥

लेखक लिखता है कि जब अमीर कोहअलबुर्ज़ की तरफ़ जाने लगे तो गैली सवार को जो उन दिनों में अवधान में थीं गुनजाल शाह के पास एक धरोहर के तौर पर रखगये थे उस पापी का हाल सुनिये कि जब उसके पुत्र पैदाहुआ तो उस ने अपने समीप मँगवाकर दाई से कहा कि इसको मारडालो उसको दया जो आई तो उसने कहा कि आज्ञा हो तो जीताही गाड़लूं उसने कहा कि अच्छा आखिर-कार उसने नदी के किनारे आकर एक संदूक़ में रखकर ईश्वर को सौंपकर बहादिया वह संदूक़ बहते २ उसी स्थानपर जहां आसमानपरी और क़रीशा स्नान करती थीं लगा क़रीशा ने संदूक़ पकड़वाकर खोला तो उसमें देखा कि एक लड़का अति स्वरूपवान् लेटा है इतने में हज़रतख़िज़र ने प्रकट होकर क़रीशा से कहा कि यह हमज़ा का पुत्र है इसको तुम लेजाकर रक्षाकरो जब बड़ा हो तो हमज़ा के पास इसको भेज देना और बदीउज़्ज़मानी इसका नाम रखना हज़रतख़िज़र यह कह कर अन्तर्धान होगये क़रीशा गोद में लेकर क़ाफ़ में आई और परियों का दूध पिलाकर बड़ी रक्षा करनेलगी और जब से सात वर्ष का हुआ तभी से सिपाहगरी सिखलाने लगी जहां कहीं युद्ध करने को जाती उसको अपने साथ लेजाती ग्यारहवें वर्ष एकदिन उसने क़रीशा से पूछा कि मेरे माता पिता कहां हैं? उसने कहा कि माता को तो मैं नहीं जानती लेकिन पिता हमारा तुम्हारा एकही है दुनिया में राज्यकर रहा है हमज़ा उसका नाम है उसने कहा कि फिर हमको कृपा करके पिता की सेना में भेजदो तब आसमानपरी और क़रीशा ने बहुतसी उत्तम २ वस्तु रखकर परियोंको बुलाकर आज्ञादी कि इसको लेजाकर कोहअलबुर्ज़पर मुसलमानी सेना में पहुँचा दो किसी प्रकार से मार्ग में दुःख न होने पावे और चलती समय उससे दो चार आदमियों का नाम बतलाकर कहा कि तुम पहले लड़ाई करके अपने को प्रसिद्ध करना सब तुम्हारे भाई लड़कर अमीर से आकर मिले हैं आखिरकार

वह आसमानपरी और क़रीशा से विदाहोकर चला परियोंने कई दिनके बाद लाकर अलबुर्ज़के समीप उतरकर दोनों सेनाओं का पता बतलाकर उसको सेनाकी तरफ़ भेजा आप छिपकर तमाशा देखने लगी बदीउज़्ज़माँ जाकर दोनों सेना के बीच में खड़ा होकर मुसल्मानी सेनाकी तरफ़ मुख करके पुकारने लगा कि तुम में से जिसको मरने की इच्छा हो वह आकर मेरा सामना करे सबलोग देखकर बड़े संदेह में हुए कि यह कहाँ से आया इतने में उसने फिर पुकारा कि जो मृत्युसे प्राण बचाना था तो ओढ़नी ओढ़कर घर में बैठे रहते मैदान में क्यों आयेहो ? यह सुन कर कयोमुर्सने आकर सामना किया उसने आतेही कयोमुर्स से वारमांगी कयोमुर्स ने कहा कि पहले तू वार करले तो फिर हम करेंगे तब तो उसने हाथपकड़कर घोड़े से उठाकर पृथ्वीपर रखकर कहा कि तुम जाओ दूसरेको भेजदो और दूसरा आया तो उसको भी उठाकर रक्खा तीसरे को बुलाया इसीप्रकार से सबको हराकर आ-ख़िर को जब साद आया तो उसको भी उठाकर पृथ्वी पर रख दिया और उससे कहा कि जाकर अब अमीर हमज़ा को भेज दो उसने आकर अमीर से कहा तब अमीर मैदान में आये तब बदीउज़्ज़माँ देखतेही बिजलीके समान घोड़ेको चमका कर अमीर के समीप लाकर कमरपकड़कर उठानेलगा तब अमीरने भी उसकी कमर पकड़ी और दोनों ने ऐसा ज़ोर किया कि घोड़े व्याकुल होगये लेखक लिखताहै कि जो घोड़ों परसे उतर न पड़ते तो घोड़ों की कमर टूटजाती और अमीर ने चाहा कि इसको शिरतक उठालेवें लेकिन वह हिलता भी न था तब तो बख़्तक नौशेरवां से कहने लगा कि आज हमज़ा इसके हाथ से माराजावे तो कुछ आश्चर्य नहीं है आख़िरकार जब अमीर पैर न उठासका तो क्रोधित होकर तलवार निकालकर खड़ा होगया कि इसको मारें इतने में क़रीशा ने आकर हाथ पकड़लिया और कहनेलगी कि यह आपका पुत्र मेरा भाई है अमीर बड़े आश्चर्य में हुए कि यह किसके पेट से पैदाहुआ है तब क़रीशा ने सब हाल अमीर से कहा अमीर सुनकर अतिप्रसन्न हुए और अमरू से पुकारकर कहा कि यह हमारा पुत्रहै ईश्वर ने हमारी सहायता के लिये भेजाहै यह कहकर उसको गले से लगाकर डङ्का बजवाते हुए ख़ीमे में आकर चालीस दिनतक नाचरङ्ग होनेकी आज्ञा दी लेखक लिखता है कि समुन्ददेव जिस ने अमीर के डर से परदेक़ाफ़ को छोड़कर कोहअलबुर्ज़ में आकर ठिकानापाया था जब उसने सुना कि हमज़ा यहां आया है तब वह अपने स्थान से रात्रि को निकल कर अमीर की सेना में आकर अमीर को ढूंढ़नेलगा यहांतक कि सादके ख़ीमे में पहुँचा उसको सोता देखकर बेहोश करके अपने स्थानपर को उठालेजाकर नदीपार क़ैदकिया प्रातःकालहोतेही सेना में गुलमचा कि सादको ख़ीमे से कोई उठा लेगया अमीर सुनकर अति दुःखीहुए और अमरू से बुलाकर कहा कि तुम जाकर बुज़ुरुच-मेहर से पूछो कि साद को कौन लेगया ख़्वाजे ने बिचार कर बतलाया कि देवसमुन्द ने लेजाकर अलबुर्ज़नदी के पार क़ैदकिया है जो अमीर अकेले जावेंगे तो उसको

पावेंगे अमीर अमरू से यह ख़बर सुनकर उसी समय यारों से बिदा होकर अशक़र को नदी पैराकर पार उतरे वहां जाकर अशक़र को तो चरने के लिये छोड़ दिया और एक जानवर भूनकर भोजन करके रात्रि को एक वृक्ष के नीचे सोरहे प्रातःकाल सवारहोकर बुज़ुरुच्चमेहर के बतानेकी पतासे चले जब क़िले के समीप पहुँचे तो समुन्ददेव अमीर का नाम सुनकर हज़ार देव लेकर क़िले से निकलआया तब अमीर ने देखकर कहा कि ओ पापी! अब तेरा प्राण क्योंकर बचेगा देखना तेरा कौन हाल होताहै? तब तो समुन्ददेव ने एकदेव को आज्ञादी कि इस पापी को पकड़ लाओ अमीरने आतेही उसको मारडाला इसप्रकार से सातदेवों को उसने वारी २ से भेजा और अमीर ने मारडाला आख़िर को समुन्ददेव ने क्रोधित होकर हज़ार मनका पत्थर अमीर के शिरपर फेंका अमीर ने तलवार पर रोंककर एकवार ऐसा मारा कि उसके सात हाथकटकर अलग गिरपड़े तब तो सब देव देखकर भाग गये और वह देव फिर थोड़ीदेरके बाद अच्छा होकर अमीरके साथ लड़नेको खड़ाहुआ यही हाल सबदिन रहा सायंकाल को देव अपने क़िले में चलेगये और अमीर एक वृक्ष के नीचे सोरहे तब स्वप्न में हज़रत ख़िजर ने आकर कहा कि क़िले के भीतर एक अमृत का कुण्ड है जबतक उसको न पाटोगे तबतक यह देव किसीतरह से न मारा जायेगा अमीर स्वप्न के देखतेही जाग उठे और क़िले के भीतर जाकर उस कुण्ड को कूड़े करकट से हज़रत ख़िजर की आज्ञानुसार पाटकर वृक्ष के नीचे आकर सोरहे प्रातःकाल को फिर समुन्ददेव अपनी सेना लेकर क़िले से बाहर आकर खड़ा हुआ और पहले दिनकी तरह एक पत्थर हज़ार मन का अमीर के ऊपर फेंका अमीर ने उसको रोंककर एक तलवार ऐसी मारी कि आधी गर्दन उसकी कटकर गिरपड़ी तब अमीर के आगे से भागा अमीर ने भी उसका पीछा किया तो वहां जाकर देखा कि जब उसने कुण्ड को न पाया तो शिर पटक २ अपने को मारडाला तब अमीर ने उसका शिर काटलिया और लोथ बनकी तरफ़ फेंक दी और वहां से ढूंढ़ते २ साद के पास पहुँचे देखा कि बेहोश एक पिंजड़े में परा है उसको चैतन्य करके साथ लेकर बाहर आकर क़बाब बनवाकर दोनों ने खाया तत्पश्चात् दोनों साथ होकर समुन्ददेव के शिर को लेकर नदी से उतरकर अपनी सेना में पहुँचकर देवके शिर को शत्रुकी सेना में फेंकदिया शत्रुकी सेना देखकर बड़े आश्चर्य में हुई कि जिसका शिर इतना बड़ा है उसका डील तो और ही बड़ा होगा जब हमज़ा ने इसको मारडाला तो कौन मनुष्य उससे जीतसक्ता है ये बातें होही रही थीं कि बनकी तरफ़ से एक सेना आती दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर देखा तो मालूम हुआ कि बख़िया शुतरबान और मलिकअशतर नौशेरवां की सहायता के लिये आते हैं तब तो हरमुज़ ने जाकर अगवानीली और अपनी सेना में लाकर अति प्रतिष्ठा से सम्मुख होकर टिकवाया॥

---*---

वृत्तान्त अजलपुत्र अब्दुलमुत्तलिब भाई हमज़ा का॥

लेखकलोग लिखते हैं कि अमीरहमज़ा के जाने के पश्चात् अब्दुलमुत्तलिब के एक पुत्र पैदाहुआ ख्वाजे ने उस का नाम अजल रक्खा बिधिपूर्वक उसकी रक्षा किया बारह बर्ष की अवस्था में जिस समय क़लमाक़शाह ने मक्के पर चढ़ाई की थी और नगरबासी डरके क़िलाबन्द होकर बैठे थे उस समय अजल ने जाकर अपने पितासे कहा कि जो आप एक घोड़ा और हथियार देवें तो मैं जाकर क़लमाक़शाह की पराजय करदूं ख्वाजे ने हँसकर कहा कि अभी तुम इससे युद्ध करने के योग्य नहीं हो और मेरे पुत्रों में केवल हमज़ाही को यह शक्ति है कि उससे कोई न जीतसके अजल ने कहा कि ईश्वर हमारा सहायक है आख़िर हम भी तो हमज़ा ही के भाई हैं जब उसने बहुत हठकिया तब लोगों ने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि आप क्यों नहीं इसको जाने देते विदित होता है कि यह बड़ा बहादुर और प्रतापी होगा आख़िरकार ख्वाजे ने एक घोड़ा और हथियार देकर ईश्वर के भरोसे पर छोड़कर भेजा अजल हथियार लेकर घोड़ेपर सवार होकर अपने यारों समेत क़िले से बाहर निकलकर क़लमाक़ शाह की सेना की तरफ़ चला क़लमाक़ शाह ने देखकर जाना कि सुलह के लिये आता है एक सवार को भेजा कि जाकर देखो यह सवार क्यों आता है उसने जाकर अजल से पूछा कि जो सुलह के लिये आया हो तो चल हम सुलहकरादेवें अजल ने तलवार निकालकर ललकारा दोनों का सामना हुआ सवार मारागया इसीप्रकार से क़लमाक़शाह ने चालीस सवार भेजे सबों को अजल ने मारा आख़िर को क़लमाक़शाह ने आकर सामना किया उसको भी अजल ने उठाकर पृथ्वीपर देमारा और छाती पर चढ़कर कहा कि मुसल्मान हो नहीं तो मारडालताहूं उसने कहा कि जो तू यह इक़रारकरे कि हम तुमको हमज़ा के पास भेज देवेंगे तो जो तू कहे वही करें उसने कहा कि यह तो होनाही है आख़िरकार वह मुसल्मान हुआ अजल ने उसको छोड़कर गले से लगाया और अपने पिता के पास लेगया अब्दुलमुत्तलिब ने दोनों की बड़ी प्रतिष्ठा की और बहुतसा रुपया अशरफ़ी निछावर करके मंगतों को दिया और क़लमाक़शाह की बड़ी मेहमानदारी की दूसरे दिन अजल ने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि अब हमारी इच्छा है कि भाई हमज़ा के पास जाकर अपना सब हाल उसको सुनावें ख्वाजे ने अति प्रसन्नता के साथ जाने की आज्ञादी तब वे दोनों सेना समेत वहां से चले मार्ग में आकर करबमादी पुत्र आदी कर्ब से मुलाक़ात हुई तो मालूम हुआ कि वह भी अमीर के पास जाता है तब अजल ने कहा कि हम भी वहीं चलते हैं इससे दोनों आदमी साथही चलें उसने कहा कि आप यहां ठहरिये मैं जाकर मक्के की यात्रा करआऊं तो चलें तब अजल तो उसी स्थानपर सेना समेत उतरपड़ा और करबमादी मक्के की तरफ़जाकर चौथेदिन वहां से आया तब दोनों साथ होकर अमीर के तरफ़ चले मार्ग में अजल ने करबमादी से कहा कि अमीर के सब लड़के जब

पहले अमीर के पास गये हैं तब लड़कर सेना में दाखिल हुए इससे हमलोगों को भी यही करना उचित है आखिर को पहले अजल जाकर दोनों सेना के बीच खड़ा होकर लड़कर अमीर की सेना में गया फिर करबमादीने भी ऐसा किया तत्पश्चात् क़लमाक़शाह सेना समेत जाकर अमीर से अतिनम्रता के साथ मिला तब अमीरने तीनों पहलवानों को साथ लेकर खीमे में लेजाकर बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की प्रातःकाल डङ्के का शब्द सुनकर मैदान में गया तो उसदिन बख़िया शुतरबान और शबानतायफ़ी का सामना हुआ शबानतायफ़ी घायल होगया इसीप्रकार से केवल बख़िया शुतरबान ने अमीर के कई सरदार पहलवानों को घायल किया तीसरे दिन बदीउज़्ज़मां ने जाकर सामना किया दोनों से लड़ाई हुई आखिर को बदीउज़्ज़मां ने उठाकर मुश्कें बांधकर अमरू के हवाले करदिया वह बांधकर अपने खीमे में लाया मलिकअश्तर ने जब अपने चचा की यह गति देखी तो नौशेरवां से कहनेलगा कि हमज़ा के पुत्र बड़े बहादुर और पहलवान् हैं देखो कि सब बहादुरी से मेरे चचाको क़ैदकिया नौशेरवां ने कहा कि हमज़ा के सब पुत्र ऐसेही हैं तब उसने कहा कि आज लड़ाई बन्दरहे कल मैं इससे सामना करूंगा कि लोग यह न कहें कि अमीरका पुत्र थकाथा इससे बांधागया नौशेरवां लौटने का डङ्का बजवाकर अपने खीमे में आया और अमीर भी अपने स्थानपर गये और बहुतसा रुपया अशरफ़ी लुटवाकर सभा में बैठाकर बख़िया को बुलाकर मुसल्मान होने के लिये कहा उसने कहा कि जबतक मलिकअश्तर न आवें तबतक मुसल्मान करने से क्षमा रखिये तब अमीर ने उसको मादीकरब के पहरे में करादिया इतने में एकयार ने आकर विनयकी कि एक दूत खरसना से पत्र लेकर आया है अमीर ने उसको बुलवाकर पत्र लेकर सब के सामने चिल्लाकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि फिरंगियों ने ऐसा हमको दुःखदिया है कि हम क़िलेबन्द हैं इसलिये यातो आप आइये या रुस्तमपीलतन को भेजिये नहीं तो धर्म भी छूटेगा और देशभी हाथसे जायगा अमीर ने पत्र सुनाके पश्चात् सरदारों से कहा कि तुम यहांकी ख़बरदारी करो हम जाकर उसको मारकर लाते हैं और हमारी जगह पर रुस्तमको जानना रुस्तम ने हाथ जोड़कर कहा कि मुझे आज्ञा हो तो मैं जाकर खरसना में उसका शिर काटलाऊं अमीर ने कहा कि अच्छा पचास सहस्र सेना साथ लेकरजाओ रुस्तम ने कहा कि सेनाकी कुछ आवश्यकता नहीं है आपके प्रताप से मैं अकेला जाकर उसका शिरकाटलाऊंगा कितनाही अमीर ने सेना साथ लेजानेको कहा लेकिन रुस्तमने न माना अकेला घोड़ेको दौड़ाकर उस नगरके समीप जाकर पहुँचा तो देखा कि फ़िरंगी सेना किलेको चारों तरफ से घेरे पड़ी है रुस्तम ने जातेही एकबारगी चिल्लाकर ललकारा मारनूक़शाह ने सानियानामी अपने बड़े पुत्र को रुस्तम के सामने भेजा रुस्तम ने पहुँचतेही दो तीनवार उससे लड़कर यकबारगी उठाकर पृथ्वीपर देमारकर मारडाला यह हाल देखकर मरनूक़शाह की सब सेना भागी रुस्तम ने पीछाकिया बराबर मारते चलेगये चारकोस पर फ़तेहमोरा

ने सेना समेत मुलाक़ात हुई उसने कहा कि अब आप पलट चलिये लेकिन रुस्तम ने न माना और कहा कि आप जाकर क़िलेकी ख़बरदारी कीजिये हम शत्रु को मारकर आते हैं रुस्तम तो शत्रु के पीछे गया फ़तेहनोश ने उसीस्थानपर से सब हाल लिखकर अमीरके पास भेजा आख़िरकार जब रुस्तमने मरज़ूक़शाहका पीछा न छोड़ा तो वह खड़ा होकर लड़नेलगा यहांतक लड़ा कि रुस्तमका घोड़ा मारा गया और आपभी घायलहोकर एक टीलेपरसे तीर मारनेलगा जब तीरभी समाप्त होगये तबतो ईश्वरका ध्यान करनेलगा इतनेमें अमीर पहलवानों समेत आपहुँचे रुस्तमको घायल देखकर शत्रुकी सेनापर जाकर व्याघ्र के समान टूटपड़े और चिल्लाकर कहनेलगे कि जिसने हमज़ाको न देखा हो वह आज आकर देखलेवे हमज़ा का नाम सुनतेही मरज़ूक़शाहकी सेना कांपगई किसीका पैर आगेको न बढ़ा और सब भागकर क़िले में चलेगये अमीर वहां से रुस्तम के पास आये उसके घावोंपर नोशदारू के फाहे लगाकर क़िले की तरफ़ चले मरज़ूक़शाह ने देखा कि अमीर क़िले में आकर सबको मारडालेंगे तौ वह आपही बालबच्चों को साथ लेकर अमीर के क़दमों पर गिरा अमीर ने कहा कि जो बालबच्चों समेत आकर मुसल्मान हुआ तो अपनी बेटी भी रुस्तमको दे तो हम तेरा अपराध क्षमाकरें उसने मानलिया आख़िर को रुस्तम का ब्याह उसकी बेटी के साथ हुआ और कुछदिन वहां रहकर सबको साथ लेकर अमीर कोहअलबुर्ज़ में आये सेनाके सरदार अमीर को देखकर दौड़कर अमीर के क़दमों पर गिरे अमीर ने सबको छाती से लगाया और अपना सब हाल सबसे सुनाया इतने में मलिकअश्तर ने अमीर को ललकारकर कहा कि हमज़ा तू मेरे डरसे भागगया था लेकिन तेरी मृत्यु फिर घसीट लाई तब अमीरने जाकर सामना किया ऐसी लड़ाईहुई कि कई हथियार टूटगये और कोई जीत न सका और जो हथियार टूटताथा उसे अमरू उठाकर अपने झोरे में रखलेता था आख़िरको अमीर ने कहा कि अब हमारी तुम्हारी हथियार की लड़ाई होगई अब पैर पकड़कर उठाओ जो जिसका पैर उठालेवे दूसरा उसकी आज्ञामें होकर रहे उसने कहा बहुतअच्छा तब दोनों कमरपकड़कर बलकरनेलगे आख़िर को अमीर ने उसकी कमर पकड़कर उठाकर पृथ्वीपर देमारकर अमरू को सौंपदिया अमरू ने झटपट बांधलिया मलिकने कहा आप मुझे क्यों बांधते हैं मैं आपकी आज्ञा में रहूंगा तब अमीरने उसको मुसल्मान करके गले से लगाया और अमरू ने उसी स्थानपर गुलामीबाला उसके कान में डालदिया तब अमीर डङ्का बजवातेहुए ख़ीमे में आकर साखिया को बुलाकर मुसल्मान किया और दोनों को अतिप्रतिष्ठाके साथ सम्मुख होकर ख़िलअत देकर अपने साथ बैठाकर भोजन करवाया और अनेक प्रकार से उसको प्रसन्न किया प्रातःकाल होतेही एक मनुष्य ने आकर ख़बर दी कि ज़ोपीन फ़ौलादी बड़ी सेना लेकर नौशेरवां की सहायताके लिये आया है अमीर सुनकर चुप होरहे इतने में एकने फिर आकर ख़बर दी कि एक मनुष्य दरवाज़ेपर

खड़ा है और कहता है कि अमीर से कहदो कि तुम्हारे पिता बुलाते हैं अमीर सुनकर बड़े संदेह में हुए क़न्दज़ ने कहा विदित होताहै कि वही सौदागर है किसी प्रयोजन से आया है अमीर ने कहा अच्छा जाकर देखो वह हो तो बुलालेआवो आख़िर को वह आकर बुलालेगया अमीर ने देखकर अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर पूछा कि आप यहां किसप्रयोजन से आयेहैं उसने एक तसवीर निकालकर अमीर को दिखलाई और कहा कि जिसकी यह तसवीर है वह हरदम की बेटी है वह कहता है जो कोई मुझ से जीते वह इसके साथ ब्याह करे सो मैं ने उसको एक झरोखेसे देखा है तभी से यह हाल हुआ अब आप जो सहायता करें तो वह मिल-सक्ती है अमीर ने उससे वादाकर भोजन कराके बिदा किया लिखनेवाला लिखता है कि सादपुत्र अमरू उस तसवीर को देखतेही मोहित होगया और दोपहररात्रि व्यतीत होनेपर सेना से उठकर घोड़ेपर सवार हो बड़ौदा की राहली और नगीम और गोरन पहरेपर फिरतेथे उन्होंने पूछा ऐ बादशाह! इस समय कहां जाते हो उसने कहा आनाहो तो आओ नहीं चुपके चले जाओ चलनेपर आप मालूम हो-जायगा तब दोनों भाई सादके साथ होकर चले थोड़े दिनकेबाद बड़ौदा के समीप पहुँचे तो एकबाग़ देखकर उसी में जाकर उतरपड़े एक तरफ़ उसीमें बकरियां चर रहींथीं पकड़कर दो तीन बकरियों को हलाल करके भून कर खाया जब इसकी ख़बर हरदम को हुई तो उसने आकर लड़कर दोनों सरदारों को मारकर सादको भी पछाड़कर छोड़कर कहा कि जा हमज़ा को भेज दे तब साद लज्जा के मारे अमीर के पास तो न गया लेकिन जाते २ हरदम के भानजे के बाग़ में पहुँचा वहां तकिया लगाकर बैठकर ठंढी बायु लेनेलगा संयोग से बाग़ की मालिकन अपनी सहेलियों समेत उस बाग़ में टहलरहीथी उसने आकर साद से पूछा कि ऐ जवान! तू कौनहै सादने उत्तर कुछ न दिया हथियार लेकर खड़ा होगया उसने उठते ही एकगदा साद के शिरपर मारी सादने उसीको छीनकर एक लकड़ी ऐसी मारी कि वह लोट पोट होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी सादने छातीपर बैठकर चाहा कि इसको बांध लेवें इतने में स्तनपर हाथ पड़गया तो वह उठकर अलग खड़ीहुई और मुख पर से बुरका उतारा उसका मुख देखते ही साद मोहित होगया आख़िर वह अपने स्थानपर लेगई साद ने उसके साथ ब्याह किया और चैन से भोगबिलास करने लगे अमीर का हाल सुनिये साद के लोप होने का हाल सुनकर अति ब्याकुल हुए जब कहीं पता न मिला तो लन्धौर ने कहा कि जिससमय सौदागरने उस स्त्री की तसवीर आप को दिखलाई थी साद को मैंने देखा था कि उसका मुख लाल होगया था क्या आश्चर्य है कि वहीं गया हो इतने में ख़बर मिली कि बरग और नारंग भी नहीं हैं तब तो अमीरके चित्तमें निश्चयहुआ कि वहीं गया रुस्तमको अपने स्थानपति करके अमरूको साथ लेकरजाकर उसीबाग़ में बकरियां भूनकर खाने लगा रखवारोंने आकर कहा कि ओ पापियो! तुमको क्याहुआहै? अभी कई दिनहुए

हमज़ा का पोता दो मनुष्योंसमेत आया था उसने भी तीन बकरियां मारकर खाई थीं हरदमने आकर दोनों मनुष्योंको मारकर उसको निकाल दिया था सो तुम्हारी भी आज वही गति होगी अमीरने उसको निकट बुलाकर पूछा कि हमज़ाका पोता किधर गया उसने कहा यह तो मैं नहीं जानता लेकिन हरदम ने मारा नहीं केवल निकाल दिया था अमीर ने ईश्वर का धन्यवाद करके कहा कि जाकर हरदम से कहदो कि हमज़ा आया है तुमको बुलाता है उसने जाकर हरदम से अमीर का संदेशा कहा वह हमज़ा का नाम सुनतेही हथियार बांधकर अमीर के पास आया अमीर भी उसको देखकर उठकर अशक़र पर सवार हुए हरदम हमज़ा को देख कर हँसकर कहनेलगा ऐ हमज़ा! जबसे मैंने तेरा नाम सुना तबसे सदैव मेरे चित्त में यही इच्छारही कि कब तुझसे मुलाक़ात हो और तेरी बहादुरी देखूं ला वार चला अमीर ने कहा कि पहले तू चला फिर हम उत्तरदेंगे हरदम ने गदा घुमाकर अमीर के शिरपर मारी अमीर ने उसको रोककर अपनी वार की इसी प्रकार से दोनों से ऐसा युद्ध हुआ कि हरदम की गदा टूटगई और उसने एक वृक्ष उखाड़कर अमीर के ऊपर मारा अमीर ने उसको भी रोका तब तो हरदम अमीर की बड़ी प्रशंसा करनेलगा कि जैसा मैं सुनता था वैसा ही तू है अब तू कृपा करके अपने मुख को दिखलादे अमीर ने नक़ाब हटाकर अपना मुख सूर्य के तुल्य उसको दिखला दिया वह देखकर अतिप्रसन्न हुआ और कहने लगा कि अब शाम होगई कल प्रातःकाल फिर आकर तेरा सामना करूंगा यह कहकर अपने स्थान को चला गया उसने अपने स्थानपर सब हाल अपनी बहिन से वर्णन करके कई बकरियां और शराब अमीर के भोजन के लिये भेजदिया और प्रातःकाल फिर आकर अमीर से युद्ध करने लगा आख़िर को अमीर ने उठाकर पृथ्वीपर देमारा तब उसने मुसल्मान होकर अमीर को अपने स्थानमें लेजाकर अपनी बहिनसे अमीर का ब्याह करादिया यह ख़बर साद को पहुँची वह सुनतेही हथियार बांधकर घोड़े पर सवार होकर हरदम के दरवाज़े पर जाकर चिल्लाया अमीर ने उस शब्द को सुनकर हरदम से कहा कि जाकर देखो कौन है हरदम अपनी गदा नौसौमनी लेकर बाहर आया साद ने देखतेही घोड़े पर से कूदकर हरदम को उठाकर पृथ्वी पर देमार कर छाती पर खड़ा होगया तब हरदम ने कहा कि ऐ पहलवान! तू अपना नाम तो बतला उसने कहा कि मेरा साद पुत्र अमरू नाम है हमज़ा का मैं पोताहूं हरदम ने कहा कि तू मुझ को छोड़दे तो मैं तुझे तेरे दादा के पास लेचलूं साद उसकी छाती से उतरकर उस के साथ होकर अमीर के समीप गया वह देखतेही पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उठा कर छाती से लगाया सब तरहसे प्यार करके बैठाया तत्पश्चात् अमीर हरदम और साद को साथ लेकर उससमय में अपनी सेना में पहुँचे जब ज़ोपीन फ़ौलादी और मरज़ूक़ से सामना था अमीर को देखकर सब सरदार दौड़कर अमीर के क़दमपर गिरे ज़ोपीन फ़ौलादी ने मरज़ूक़ को उठाकर पृथ्वी पर देमार कर कहा जा दूसरे

को भेजदे इसीप्रकारसे ज़ोपीन ने कई पहलवानों को हराया आख़िर को अमीर ने आकर उठाकर अमरू के हवाले कर दिया परन्तु ऐसा पहलवान था कि अमीरका भी बड़ी देरतक सामना किये अड़ा था बड़ी देर में अमीर का बल इस पर मिला है तत्पश्चात् अमीर तो अपने महल में डङ्का बजवाते चले गये यहां सरदारों ने अमरू से कहा कि इसने हमलोगों को बड़ा दुःख दिया है इसको मार डालें तब अमरू ने प्रथम तो न माना लेकिन जब सरदारों ने लोभ दिखाया तब तो अमरू ने स्वीकार करके कहा कि अच्छा मैं अमीर को समझालूंगा हरदम ने शीशा गरम करके ज़ोपीन को पिलादिया उसको समाप्त करादिया अमीर ने सभा में बैठकर ज़ोपीन को बुलाया लेकिन लोगों से विदित हुआ कि हरदम ने ज़ोपीन को शीशा पिलाकर मारडाला तब अमीर ने क्रोधित होकर हरदम को बुलाकर पूछा तुमने ज़ोपीन को क्यों मारडाला उसने उत्तर दिया कि मैंने अमरू की आज्ञानुसार मारा मैं विना किसी की आज्ञा के क्यों मारता तब अमीर ने अमरू को बुलाकर पूछा ऐ पापी ! तू ने क्यों ज़ोपीन को मारा उसने कहा कि वह इसी लायक़ था तब अमीर ने कहा कि क्या करूं तेरे समान और कोई दूसरा होता तो अभी तेरा शिर कटवा डालता लेकिन तिसपर भी सात कोड़े मारकर कहा कि अब फिर जो ऐसा करेगा तो मरवाडालूंगा तब अमरू ने कहा ऐ अमीर ! सात कोड़े के बदले सत्तर कोड़े मारूंगा यह कहकर नौशेरवां की सेना में जाकर अपना सब वृत्तान्त कहकर रहने लगा और सदैव अमीर के पकड़ने की युक्ति में लगा आख़िरकार एक दिन रात्रि को अमीर को उठालेजाकर वन में एक वृक्ष में बांध कर चैतन्यकरके एक लकड़ी तोड़कर सत्तर लकड़ी मारीं अमीर ने हँसकर कहा कि अच्छा अब जो तेरा प्राण बचगया तो मेरा नाम हमज़ा नहीं तो नहीं यह कहकर ज़ोरकरके कमन्द को तोड़ डाला तब अमरू जिसप्रकार से बेनाथ का ऊंट भागता है वैसेही अमीर के सामने से भागा अमीर ने तीर कमान लेकर उसका पीछा किया तब तो अमरू डरकर कि अमीर का तीर बेमारे रहताही नहीं दौड़कर अमीर के पास आया अमीर ने कहा अब मै तेरा प्राण लिये न छोड़ूंगा अमरू ने कहा जो यही इच्छा है तो मैं हाज़िर हूं जो इच्छा हो वह कीजिये तब तो अमीर ने केवल सौगन्द उतारने के लिये नस्तरदेकर रुधिर निकालकर अमरू को साथ लेकर सेना में आये ॥

मरज़क हकीम का बख़्तक के भेजने से आना और अमीर को सरदारोंसमेत अन्धा करना ॥

लिखनेवाला लिखताहै कि एकदिन मरज़क नाम हकीम जिससे बख़्तकसे बड़ी मित्रताथी उसने कहा कि जो नौशेरवां आज्ञादेवे तो हम जाकर हमज़ा को सेना समेत अन्धा करदेवें बादशाह ने सुनकर उसको बुलाकर ख़िलअत देकर जाने की आज्ञादी हकीमने अमीरकी सेनामें जाकर अमरू से मुलाक़ात करके कहा कि जो अमीर आज्ञादेते तो मैं सेनामें दवाकरता और सदैव सेवकाई में हाज़िर रहता अमरू ने जाकर अमीरसे सबहाल कहा तब अमीरने उसको बुलाकर अपनी सेनामें वैद्यक

करनेकी आज्ञा दी तत्पश्चात् एकदिन अमीर के नेत्रों में गर्दपड़ी उससे नेत्रों में दुःख होनेलगा तब उसने एकअञ्जन ऐसा दिया कि जिससे तुरन्तही अमीर के नेत्र अच्छे होगये यह देखकर सब लोगोंने अतिप्रसन्न होकर उसको इनआम दिया तत्पश्चात् उसने एकसुरमा ऐसादिया जिसके लगाने से सब अन्धे होगये और जाकर नौशेरवां से कहा कि मैं अमीर को सरदारों समेत अन्धा करआयाहूं डङ्का बजवाकर युद्धकी तैयारी करके सबको मारलीजिये नौशेरवां ने तवलजङ्ग बजवाया अमीर ने भी सुनकर डङ्का बजवाकर मुखधोने के लिये जल मँगवाया तबतो सबको यही मालूमहुआ कि हम सब अन्धे हैं बड़े अफ़्सोस में हुए और कहनेलगे कि जो सामने नहीं जाते तो शत्रुकी सेना आकर सब लूटपाट लेगी इससे चलकर लड़ो जैसी ईश्वर की कृपा होगी वही होगा लेजाकर सेना का परेट शत्रुके सामने जमाया नौशेरवां ने कहा कि जो अन्धे होते तो काहेको आते मरज़क़ने कहा कि किसीको लड़ने के लिये भेजिये आपही बिदित होजायगा तब नौशेरवां ने गाज़ीसवार को भेजा उसने जाकर अमीर की सेना के सामने जाकर ललकारा कि ऐ अरबबासियो! तुम सब अन्धे होगये इतनी देर से पुकारताहूं कोई सुनता नहीं तब तो हरदम क्रोध से जलउठा और आकर उसका सामना करके मारडाला तब नौशेरवां ने बरावर से पचास बीर भेजे सबोंको हरदम ने मारा आख़िरको नौशेरवां की सेना में घुसकर ऐसा मारा कि इतने डिठियारे में कभी नहीं मारा था तब तो नौशेरवां की सेना भाग खड़ी हुई और अतिप्रसन्न होकर क़िलेमें आकर मुरचोंपर सिपाहियोंको मुक़र्रर करके क़िले को बन्दकरके ईश्वर का भजन करनेलगे नौशेरवां ने पहले जाकर क़िले में युद्धका सामान किया लेकिन जब क़िलेवालों ने तीरसे बहुतही सेना को घायल किया तब क़िले से हटकर घेरकर उतरपड़ा॥

हाशम पुत्र हमज़ा और हारस पुत्र साद का अमीर के पास आना और अमीर के नेत्रों का हज़रतख़िज़र की सहायता से अच्छा होना॥

लेखक लिखता है कि हरदम की बहिन के पेट से जो पुत्र हुआथा उसने उसका नाम हाशम रक्खा और साद के पुत्र का नाम हारस रक्खा था जब वह दोनों नौ बर्ष के हुए तब दोनों में बड़ी मित्रताहुई ऐसी मित्रताथी कि साथही भोजन करते और बन में शिकार खेलनेभी साथही जाते थे आख़िर को जब उनको ख़बर मिली कि अमीर बदाऊं क़िले में क़ैद है तब दोनोंने आकर नौशेरवांकी सेनाको मारकर भगा दिया तब अमीर ने जानकर कि ईश्वर से सहायक आयाहै क़िलेका दरवाज़ा खोलकर उनको भीतर करालिया उनका हाल बिदित होनेपर अमीर ऐसे प्रसन्नहुए कि जिसका बर्णन नहीं होसक्ता दोनों को दोनों जांघोंपर बैठालकर प्यार करनेलगे तब हाशम ने कहा कि यहां पर हमारी सेना को बड़ा दुःखहै इससे बरोदा में चल कर बास कीजिये वहां बड़ा सुख मिलेगा अमीर ने उसीसमय डङ्का बजवाकर बरोदा की तरफ़ कूचकरके क़िले में जाकर उतरपड़े और शत्रुकी भी सेना पीछे २ जाकर क़िले को घेरकर उतरपड़ी अमीर दिन रात्रि ईश्वर का भजन कररहे थे कि

एक दिन हज़रत ख़िज़र ने आकर एकपत्ते का रस अमीर के नेत्रों में
अच्छा करादिया तब अमीर ने हज़रत ख़िज़र से सलाम करके कहा कि मैं तो अच्छा
हुआ लेकिन मेरे सरदारभी सब अन्धे हैं तब हज़रत ख़िज़र ने कई पत्ते देकर कहा
कि इसीका रङ्ग लेजाकर सबके नेत्रों में छोड़देना सब अच्छे होजायँगे आख़िरकार
जब सबको दिखाई पड़नेलगा तो अमरू ने अमीर से कहा कि यह सब बख़्तक ने
किया है आज्ञा हो तो उसको इसके बदले में दण्डदूं अमीर ने मनाकिया लेकिन
उसने न माना नौशेरवां की सेना में जाकर बावरची बनकर पहिले बख़्तक के पास
रहा फिर बादशाह के बावरचीख़ाने का दारोग़ा होगया तब एक दिन घात पाकर
बख़्तक को उठालाकर शिर काटकर गाड़लिया और शेष धड़का कबाब बनाकर
लेजाकर नौशेरवां के भोजन में दिया संयोग से एक उंगली जिसमें बख़्तक मुंदरी
पहिने था वह बादशाह के भोजन में निकल आई बादशाह ने अंगूठी से जाना कि
यह बख़्तक की उंगली है बावरची से पूछा कि यह उंगली किसकी है उसने कुछ
उत्तर न दिया तब बख़्तक की खोज कराई जब उसका पता न मिला तो बुज़ुरुच-
मेहर से बुलाकर कहा कि आइये भोजन आपके लिये रक्खा है ख़्वाजे ने कहा कि
मैं भोजन करके आयाहूं तब बादशाह ने कहा मैं जानता हूं कि जिस कारण तुम
भोजन नहीं करतेहो निश्चय है कि तूने रमल से विचारा होगा लेकिन हम से ख़-
बर नहीं की ख़्वाजे ने कहा कि हमलोग बेपूछी कोई बात किसीसे नहीं कहते हैं
इससे बादशाह ने क्रोधित होकर बुज़ुरुच्चमेहर को अन्धा करके निकाल दिया और
हरमुज़ को गद्दी पर बैठाकर आप मदायन को चलागया और बुज़ुरुच्चमेहर ने आ-
कर अमीर से सब अपना हाल कहा और वहांसे मक्के में जाकर फिर उसके नेत्र
अच्छे होगये अब हरमुज़ का हाल सुनिये कि बादशाह के जाने के बाद गद्दीपर
बैठकर स्यावासपुत्र बुज़ुरुच्चमेहर को तो सेनापति प्रधान बनाया और बख़्तियारक
को दूसरा वज़ीर बनाया परन्तु बख़्तियारक थोड़े दिनों के बाद ऐसा मुँहलगा हो-
गया कि वे उसके पूछे हरमुज़ कोई कार्य न करता एकदिन हरमुज़ ने कहा कि कोई
युक्ति ऐसी करनी चाहिये कि जिससे हमज़ा माराजावे बख़्तियारक ने कहा कि
गावलंगी बादशाह ख़ाम का बड़ा बहादुर है और वहांके लोग मनुष्य का भोजन
करते हैं जो उसको आप लिखें तो वह आकर हमज़ाको सेनासमेत नाशकरदेगा
आख़िरकार बख़्तक ने लिखकर बुलवाया जब उसने आकर अमीर की सेना का
सामना किया तो प्रथम तो चालीस ब्याघ्रसवार मारेगये तत्पश्चात् जब उसने
आकर अमीर का सामना किया तो अमीर ने ऐसी तलवार चलाई कि वह भागकर
अपनी सेना में खड़ाहुआ और हरमुज़ से कहने लगा कि हम हमज़ा से नहीं जीत
सक्ते हैं लेकिन जो तुम हमज़ा से बचा चाहतेहो तो कज़ावकदर में सरपाल पुत्र
सलसाल के पास चलो वह तुम्हारी सहायता करेगा हरमुज़ ने सबसे सलाह पूछी
सबोंने तो जानेकी सलाहदी लेकिन स्यावास ने कहा कि वहां जाकर बड़ा दुःखप्राप्त

होगा वहां न जाइये परन्तु उसने न माना आख़िरकार वहां जाकर ऐसी आपदा में पड़ा कि उसका बर्णन नहीं होसक्ता जब हमज़ा ने आकर मुसल्मान करके सहायता की तब वहां से छूटकर आनेपाये जब अमीर ने हरमुज़ को वहां से मदायन की तरफ़ भेजदिया तब तो सरपाल अतिक्रोधित होकर सेना लेकर क़िले से निकला अमीर ने जाकर सामना किया बड़ीभारी लड़ाई हुई आख़िर को अमीर के हाथसे बांधागया और मुसल्मानी धर्म स्वीकार करके अमीर के गुलामों में मिला और अमीर को अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी की तत्पश्चात् अमीर ने सरपाल से पूछा कि कोई और स्थान यहां देखने के योग्य है उसने कहा तीन मंज़िलपर तिलस्मातजमशैदी है वहां चलदेखिये अमीर ने कहा जो तूने उसको देखा हो तो पहले सब हाल बर्णनकर किसने बनवाया है उसने कहा कि जमशैद मरने से पहले नगरको उजाड़कर वहां सब तरह के मनुष्य जादू के बनारक्खे हैं और एक क़बर खुदाकर उसी में बैठकर सोरहा दूसरा यह है कि जङ्गल में एक दामीप अलसनाम जादू का बना है वह भी देखने योग्य है तीसरे एक देव सफ़ेद बड़ा दुष्ट है उससे सबलोग डरते हैं देवसफ़ेद का नाम सुन कर अमीर ने कहा कि विदित होता है कि वह वही देव है जो क़ाफ़ में था हमारे डरसे भागआया है आख़िरकार अमीर ने जाकर पहले तो जादू के तिलस्मातों को तोड़कर सरपाल और अमरू को उसका तमाशा दिखाया फिर कुयें में जाकर देवसफ़ेद को एकबारगी घेरकर शिरकाट कुयें से बाहर लाकर लोगों को दिखाया और देव जो उसके साथ थे उनमें से बहुतेरे मारेगये और बहुतेरे भागगये और बहुतों को अमीर ने मुसल्मान करके कहा कि तुम क़ाफ़ में जाकर करीशा के समीप रहो तत्पश्चात् सफ़ेददेव का शिर लेकर कुयें के बाहर आये और सरपाल को दिखाकर आखेटबन्द में लटका दिया और आप घोड़ेपर सवार होकर वहां से रवानाहुए थोड़ीदूर जाकर एक हरे मैदान में शिकार खेलनेलगे और सब सन्देह मनके दूर बहाने लगे॥

रुस्तम पीलतन का अहरन से मारा जाना॥

लिखनेवाले इस इतिहास को यों बर्णन करते हैं कि रुस्तम पीलतन ने देखा कि अमीर को गयेहुए देरहुई अबतक कुछ समाचार न मिला सो अब हम यहां बैठकर क्याकरें इससे यह अच्छी बात है कि जमशैद में जाकर तिलस्मात की सैर करें सरपाल के पुत्रों को लेकर कज़ाबक़दर से सेनासमेत चलकर कई दिनों के बाद तिलस्मात जमशैद में पहुँचा उसको टूटा देखकर मालूम किया कि अमीर इसको तोड़कर और कहीं गये तब वहांसे सेना लेकर नगर में गये तो वहां देखाकि जमशैद की लोथ एक तख़्तपर पड़ी है और ख़ज़ाने की कोठरी जो खोलकर देखी तो सर्प और बिच्छू दिखलाई पड़े तब सरपाल के बेटों से कहा कि अब बख़्तक को भी चलकर देखना चाहिये उन्होंने कहा कि अहरन शेरगरदां वहां का बादशाह है उसका एकसौ पच्चीस गज़ का डील है और सब सेना उसकी मनुष्य खाती है इस

से वहां जाना उचित नहीं वहां से किसी का प्राण नहीं बचता रुस्तम ने कहा कि मालूम होता है वह भी सरपाल के बराबर है उसने कहा कि वह सरपाल से कहीं बलवान् है जब वह हमारे देश में आता है हमारे पिता उसकी शङ्का में पहाड़ पर भागजाते हैं तब रुस्तम ने पूछा कि सुरजवां कहां है उन्होंने कहा कि वह भी वहीं है आख़िरकार रुस्तम ने जाकर अहरन से लड़ाई की और कई सरदारों समेत आप मारागया उसके मारेजाने के बाद अहरन को मालूमहुआ कि हमज़ा सेना में नहीं है तब तो अपने क़िले में चलागया और अमीर की सेना में रोना पीटना मचगया आख़िर को रुस्तम को गाड़कर अमीर का आसरा देखनेलगे अमीर का हाल सुनिये कि जब शिकार से छुट्टी पाकर जमशैद में आये तो सेना के उतरने का पता पाकर अमरू से कहा कि विदित होता है कि रुस्तम यहां तक आकर बख़्तक की तरफ़ गया ईश्वर ख़ैरकरे मेरा चित्त व्याकुल है यह कहकर बख़्तक की तरफ़ चले जब समीप पहुँचे तो जितने सरदार और पुत्र थे सब देखकर चिल्ला २ कर अमीर के क़दमोंपर गिरे अमीर भी देखकर घोड़े परसे पृथ्वीपर गिरपड़े और इधर उधर लोटनेलगे सरदारों ने देखा कि अमीर अतिव्याकुल है सब सरदारों ने अमीर से समझाकर कहा कि ईश्वर की रचना अपरम्पार है उसमें किसी का साझा नहीं इससे कुछदिन आप जङ्गल में चलकर चित्तको स्थिर कीजिये फिर जैसा ईश्वर करेगा वही होगा आख़िर समझाकर अमीर को जङ्गल की तरफ लेगये संयोग से उसी दिन सुरजवां अहरन से विदा होकर ख़ास को जाता था उसने मार्ग में सुना कि हमज़ा रुस्तम के दुःख से जंगल में चित्त बहलाने के लिये सबको साथ लेकर शिकार खेलने आया है उसने एक जादूगर को बुलवाकर घोड़ा ज़ीनसमेत तैयार कराकर उसी मार्ग में खड़ा करके आपलोगों समेत एक स्थानमें छिपकर बैठकर देखनेलगा इतने में साद उसी तरफ़ से घोड़ेपर सवार निकला उसने घोड़े को देख-कर अपने घोड़ेपर से कूदकर उसपर सवार होकर एक कोड़ा मारा तो वह घोड़ा वहां से वायु से अधिक भागा आख़िर को सादने तलवार निकालकर घोड़े को मार डाला तो घोड़ा साद समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा सुरजवां ने दौड़कर साद को बांधलिया और ख़ास की तरफ़चला जिस समय बगली के समीप पहुँचा सादको हाज़िर करके कहा कि देखिये यह हमज़ा का पोता और मुसल्मानी सेना का बादशाह है किस तौर से मैं बांधलाया हूं साद ने कहा ऐ बगली ! यह तो कहता है कि मैं बांध लाया हूं सो हमारा इसका सामना हो आपही झूठ सत्य विदित होजायगा आख़िर को दोनों से लड़ाई हुई सादने उठाकर सुरजवां को पृथ्वीपर देमारा तब सुरजवां ने फिर उठने की इच्छा की इतने में गावलंगी ने उठकर मारडाला और साद को गले से लगाकर अपनी बग़ल तख़्तपर बैठाया और कहा ऐ पुत्र ! किसी प्रकारसे संदेह न करो मैं तुझको विदा करदेता लेकिन इस कारण मैं तुझको यहां रक्खूंगा कि हमज़ा तेरेलिये यहां आवे तो मुझसे भी मुलाक़ात होजायगी साद गावलंगी की मुहब्बत

देखकर अतिप्रसन्नता से रहनेलगा, बदीउज़्ज़माँ ने जो सादके घोड़े को खाली और जादू के घोड़ेको मुआदेखा तो अतिब्याकुल होकर इधर उधर उठनेलगा जब कहीं न पता मिला तो कहा कि बिदित होता है कि सुरजवाँ ने यह दुष्टपना किया होगा आख़िरकार ढूंढ़ते २ मार्ग में गावलंगी के दो दामादों को मारताहुआ गावलंगी के नगर में पहुँचा तो उसको भी एक पत्र लिखा कि साद हमारा भतीजा तुम्हारे पास है जो अपना भला चाहतेहो तो उसको हमारे पास भेजदो हरदम ने पत्र लेजाकर देखा कि गावलंगी और साद एकही तख़्तपर बैठे हैं हरदम गावलंगी को देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ कि ईश्वरने ऐसा मनुष्यभी संसारमें पैदाकिया है गावलंगी ने हरदम को देखकर अतिनम्रता से कहा कि भाई अच्छे तो हो यह कहकर अति नम्रता से उससे कहा कि जैसे बदीउज़्ज़माँ ने मेरे दो दामादों को मारा है परन्तु मैं हमज़ा से वैसा बदला नहीं लेसक्ता हूं हरदम गावलंगी की बातें सुनकर अपने चित्त में अतिलज्जित हुआ कि यह तो ऐसी बातें करता है और पत्र में और तरह से लिखा है लेकिन लाचार होकर पत्र देकर सब संदेशा उससे कहा गावलंगी ने पत्र को पढ़कर संदेशा कहा कि मैंने आपको कौनसा दुःख दिया है जो आपके चचासाहब ने यह पत्र लिखा है सादने कहा कि उनको यह क्या मालूम किसतरह से आप मुझ से सम्मुख होते हैं गावलंगी ने कहा हां यहभी आप सत्य कहते हैं तब हरदम को ख़िलअतदेकर कहा कि तुम जाकर बदीउज़्ज़माँ से हमारा सलाम और हमारी तरफ़ से कहना कि सत्य है मुरजवाँ सादको दग़ादेकर पकड़लाया था सो हमने उस को मारकर साद को अमीर के आनेतक मेहमानरक्खा है सो आपभी उतरकर शिकार खेलिये और अमीर के आनेतक हमारे मेहमान रहिये और जो लड़ने की इच्छाकरोगे तो उसका फल अच्छा न होगा लेकिन बदीउज़्ज़माँने न माना युद्धका डङ्का बजवाकर सामना किया आख़िर को जब शिरबरहनातपशी दोनों भाई मारे गये तब गावलंगीने बड़ा अफ़सोस किया और दोनोंकी लोथ उठाकर बदीउज़्ज़माँ के आगे लाकर रखके कहा कि अब जो हुआ सो हुआ अब भी हमज़ा के आनेतक चुपचाप बैठेरहो नहीं जो मुझको मारने की इच्छाहो तो मैं हाज़िर हूं बदीउज़्ज़माँ ने कहा कि मैं जल्लाद तो हूं नहीं कि तुझे मारूं हथियार बांधकर आ हमारी तेरी लड़ाई हो तू भी मेरा बल देखे गावलंगी हथियार लेकर शाहज़ादे के सामने आया तब भी मनाकरतारहा लेकिन कौन मानता है आख़िर को गावलंगी ने तीन वार बराबर किये तीनों को अमीरज़ादे ने एक गदा ऐसी मारी कि गावलंगी की सवारी का बैल मरगया और गावलंगी भी ब्याकुल होगया तब तो गावलंगी बदीउज़्ज़माँ की बड़ी प्रशंसा करनेलगा और सायंकाल तक दोनोंमें गदा और तलवार चला की यह हाल अमीर को पहुँचा कि मुरजवाँ साद को उठालेगया है और बदीउज़्ज़माँ उसकी खोज में ख़ामतक पहुँचे यह सुनकर अमीर ने अमरू से बुलाकर कहा कि मैं तो वे अहमर के मारे यहांसे कहीं हट नहीं सक्ता तुम जाकर हाललाओ अमरू

वायु के समान वहां से उड़कर अतिशीघ्रही ख़ाम में पहुँचा देखा कि गावलंगी और बदीउज़्ज़मां से लड़ाई होरही है सेना के सरदार देखकर दौड़कर अमरू से मिले गावलंगी अमरू को देखकर लड़ाई से हटकर अमरू से बातें करनेलगा अमरू ने कहा कि ईश्वर की कृपा से आप छोटे बहुत हैं इससे बातें नहीं सुनाई देतीं समीप आओ तो आपकी बातों को सुनूं यह कहकर कूदकर उसकी छातीपर जाबैठा और कहा कि मैंने तेरा बड़ा नाम सुना है लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि अमीर के लड़कों से लड़ते हो उसने कहा कि मैंने कुछ नहीं किया मेरी बातों को सब अमीर की सेना गवाह है अब तुम आयेहो बदीउज़्ज़मां को ईश्वर के लिये समझादें कि वह अमीर के आनेतक चुपचाप रहे मुझको अमीर से लज्जित न करावे तब अमरू ने अमीरज़ादेको समझाकर मैदान से फेरदिया और आप गावलंगी के साथ उसके क़िले में गया वहां जाकर गावलंगी से लौटनेकी इच्छा की परन्तु उसने न माना और कहा कि आज हमारे यहां मेहमान रहिये और अपना कुछ तमाशा दिखाओ मैंने आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है यह कहकर साद और अमरू को साथ लेकर भोजन किया और शराब और क़बाब खा पीकर कहा कि तुममें सब अच्छा है केवल एक बुराई है कि तुम अपनी दाढ़ी क्यों मुड़ाते हो तुमको लोगों के सामने लज्जा नहीं आती है अमरू ने कहा कि सातसौ अशरफ़ी आपभी दाढ़ी की बनवाई भेज दीजिये नहींतो दाढ़ी आपके मुखपर न रहेगी गावलंगी ने कहा तब मैं तुझको मर्द जानूं जो तू मेरी दाढ़ी मूड़ले मैं किसी प्रकार से क्रोधित न हूंगा अमरू ने कहा कि आपकी दाढ़ी मूड़ना कुछ कठिन नहीं है बहुत अच्छा आज मैं रात्रि को आपकी दाढ़ी मूडूंगा ख़बरदार रहिये आख़िरकार रात्रि को अमरू ने आधी दाढ़ी मूड़कर जगाकर दूरसे सलाम करके कहा कि आईना लेकर मुख देखिये उसने जो देखा तो आधी दाढ़ी मुड़ी पाई अतिलज्जित होकर कहनेलगा कि कोई युक्ति ऐसी करो कि सब दाढ़ी बराबर होजावे तब अमरू ने वहभी आधी मूड़कर झोरेसे एक दाढ़ी निकालकर जमादी और कहा कि जबतक गर्मजल से दाढ़ी न धोओगे तबतक इसी प्रकार से रहेगी गावलंगी ने आईना लेकर देखा तो असल में वैसेही मालूम हुआ जब प्रातःकाल हुआ गावलंगी ने सातसौ अशरफ़ी ख़िलअ़तपर अधिककरके अमरू को देकर बिदाकिया अमरू ने वहां से आकर बदीउज़्ज़मां को अच्छीतरह से समझा दिया कि जबतक अमीर न आवें तबतक तुम गावलंगी से सामना न करना यह कहकर अमीर के पास रवानाहुआ कई दिनों के बाद पहुँचकर सब हाल अमीर से कहा अमीर ने दोनों पहलवानों के लिये बड़ी ग़मी मनाई प्रातःकाल को अहरन शेरगरदां डङ्का बजवाकर मैदान में आया और ललकारनेलगा तब अमीर ने भी जाकर मैदान में उसका सामनाकिया उसने अमीरपर एकवार चलाई अमीर ने उसको रोककर कहा कि दो वार और करले तब उसने झुलझुलाकर दो वार ऐसे कि अशक़र ब्याकुल होगया तब अमीर ने एकही वार में उसके घोड़ेको मारा औ

आप भी अशक़र पर से कूदकर उसके सामने गया थोड़ीदेरतक गदा चली जिससे पृथ्वी हिलगई फिर तलवार चलनेलगी इसीप्रकार से तीनदिनतक युद्धहुआ चौथे दिन अमीर ने शब्द करके शिरपर उठालिया और घुमाकर पृथ्वीपर देमारा और अमरूसे कहा कि इसको बांधलो अमरू बांधकर लेगया और अमीर तलवार लेकर उसकी सेनामें गया जो मुसल्मान हुए उनको छोड़कर बाक़ियोंको मारडाला लोगों ने अमरू से कहा कि अमीर इसको न मारेंगे तुम मारकर रुस्तम का बदलालेलो अमरू ने लोगोंके कहने से उसके कान में शीशा गर्म करके डाल दिया वह मर गया इसी प्रकार से सब तरह से वहां का नाश करके कई दिनोंके पश्चात् चलकर ख़ाम में पहुँचे गावलङ्गी ने अमीर के आने की ख़बर पाकर साद को ख़िलअत और बहुतसी सौगात देकर अमीर के पास भेज दिया अमीर ने सादको गलेसे लगाया और गावलङ्गीकी कृपा करने पर अति प्रसन्न हुए प्रातःकाल गावलङ्गी डङ्का बजवाकर मैदान में आकर खड़ाहुआ अमीर भी जाकर सामने खड़ेहुए लेखक लिखता है कि इक्कीस दिन रात्रि ऐसी लड़ाई दोनों से हुई कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता बाईसवें दिन अमीर ने गावलङ्गी से कहा कि सब प्रकार की लड़ाई होचुकी अब तुम हमारा पैर उठाओ हम तुम्हारा जो उठालेवे वह उसके आधीन होकर दूसरा रहे गावलङ्गी ने अति प्रसन्नता से स्वीकारकरके कहा कि हमज़ा इसमें तुम बहुत चूके अमीर ने कहा अच्छा देखा जायगा देखें कौन लज्जित होता है तब गावलङ्गी ने इसप्रकार से बल किया कि अँगुलियां टूटगईं और कानों और नेत्रों से रुधिर गिरने लगा आख़िर को छोड़कर कहा कि मुझमें इससे अधिक बल नहीं है तब अमीर ने कहा अच्छा ख़बरदार हो हम उठाते हैं यह कहकर एक शब्द ऐसा किया सोलह कोस तक के पहाड़ आदिक हिलगये और एक बारगी गावलङ्गी को उठाकर पृथ्वी पर रखकर अमरू से कहा बांध ले उसने कहा मैं तो आपही बँधाहूं तब अमीर ने उसको मुसल्मान करके छाती से लगाकर सेनामें लाकर सब सरदारों से अधिक प्रतिष्ठा की और सब सरदारों से मिलाकर अपने साथ बैठाकर भोजन कराया तब गावलङ्गी ने अमीर को पुत्रों और सरदारों समेत अपने क़िले में लेजाकर चालीस दिन तक मेहमानदारी की ॥

अमीर का बख़्तर को जाना और वहांके बादशाह कारबबख़्तर को मारना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर ने मेहमानदारी के बाद गावलङ्गी से पूछा कि यहांसे निकट कौन नगर है उसने कहा कि बख़्तर नगर अतिसुशोभित स्थान है लेकिन वहां का बादशाह कारबबख़्तर बड़ा पहलवान एकसौसाठ गज़का डील है और मनुष्यों का आहार करता है वह जब हमारे नगर में आता है हम उसके डर से पहाड़पर भागजाते हैं और वह जादूगर भी है अमीरने कहा मैं तो जादूगरों और मनुष्यभक्षी और अग्निपूजकों का शत्रु हूं अब वे इसके मारे मुझे चैन न होगी बुज़ुरुचमेहर की कहावत मेरा फ़राशधर्म उपनाम है यह कहकर गावलङ्गी से कहा

कि अच्छा अब हम जाते हैं गावलङ्गी ने कहा ऐ अमीर! जीतेजी अब आप अपने निकट से अलग न कीजिये अमीर ने कहा जो ऐसा हो तो मेरे साथ चलो तब गावलङ्गी अपने पुत्र रमलगावलङ्गीको अपना स्थानपति करके अमीर के साथहुआ थोड़े दिनों में बख़्तर के समीप पहुँचकर चारकोस के फ़ासले पर उतरकर बख़्तर को एक पत्र लिखा कि ऐ कारबबख़्तर! यहां आकर मुसल्मान होकर मेरे आधीन हो नहीं तो ऐसी ख़राबी से तुझको मारूंगा कि जीवजन्तु तेरेलिये दुःख पावेंगे जब अमरू पुत्र अम्बियाने पत्र लेजाकर दिया उसने थोड़ासा पढ़कर आज्ञादी कि यह जाने न पावे इसके लानेवालेको पकड़लो अमरूने टोपी झाड़कर शिरपर रक्खी और कारब के शिरपर एक थप्पड़ मारकर टोपी शिर से लेकर अमीरके पास आकर सब हाल वर्णनकिया अमीर ने रात्रिको शराब पीने में काटी प्रातःकाल कारबने जब आकर मैदान में डङ्का बजवाया तो अमीर ने भी जाकर सामना किया आख़िरको कारब मारागया तत्पश्चात् उसकी सेना को मारकर नगर को लूटकर आराश नगरमें आये तो वहां के बादशाह आराशने क़िलेसे निकलकर अमीर का सामना किया अमीर ने देखा तो १८० गज़का उसका क़द है और एक भयानक रूप है जिस समय उसने अमीरके ऊपर गदा चलाई अमीर कूदकर दूसरी तरफ़चले गये तो गदा उसकी पृथ्वीपर जितनी दूरमें गिरी उतनी पृथ्वी धसगई उसने झुककर चाहा कि गदा उठाकर फिर अमीरको मारे इतनेमें अमीरने एक तलवार ऐसी मारी कि वह दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना उसकी यह हाल देखकर क़िले में भागगई तब अमरूने सुरंग लगाकर उस क़िलेको भी उड़ा दिया जितने मनुष्यभक्षक थे सबको यमपुरी में पहुँचाया॥

अमीर का नेस्तान की तरफ जाना और वहां के बादशाह को मारना॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीरने आराश को नाशकरके गावलङ्गीसे पूछा कि अब इसके आगे कौन नगर है उसने कहा एक अतिसुशोभित नगर नेस्तान है और वहांके स्वामीका नाम सगंदाज़ख़ूँख़ार नेस्तान है उसका डील १६० गज़का है और उसकी सेनाभी अधिक है और बड़े २ बहादुर सरदार हैं और क़िला ऐसा पुष्ट बना है कि जिसमें मनुष्य तो क्या जीवजन्तुभी जानेका रास्ता नहीं पाते और पृथ्वीसे ऐसी लव निकलती है कि पहाड़ जलते हैं लेकिन अमीरने इन बातोंका कुछ विचार न किया नेस्तानकी तरफ़ कूचकरके चले जब उस स्थानपर पहुँचे तो अमीरकी सेना गरमीके मारे आगे न बढ़सकी बहुतसे लोग मरनेलगे उससमय अमीरने ख़्वाजे ख़िज़र की कमन्द निकालकर पृथ्वीपर फैलादी और कहा कि इसीको पकड़ कर सब लोग चलेआओ अब कुछ न डरो लिखनेवाला लिखता है कि सब सेना उस नदी में जलकर मरगई केवल एक सरदार ऊंट पर सवार और ३०० सिपाही कमन्द पकड़कर नदी से पार उतरे बड़े दुःख सहने के बाद नगर नेस्तान के समीप पहुँचे वहां का बादशाह अमीर का नाम सुनकर जातेही सेना लेकर सामने आया और अमीर

पर खड्ग मारनेलगा यहांतक कि बहुतसे जवान अमीर के मारेगये तब तो व्याकुल होकर दोनों हाथों में तलवार लेकर इस प्रकार से उसकी सेना में घुस मारने लगे कि जिस तरह व्याघ्र बकरियों के झुण्ड में घुसकर मारता है तक खूँख़ार मारेगये कि उनके रुधिर से एक नदी बही आख़िरकार नेस्तानसंग आकर अमीर के शिरपर एक तलवार मारी अमीर ने उसको रोका और जब गदा उठानेलगा तो अमीर ने कूदकर एक तलवार ऐसी मारी कि उसके चारोंपै कटकर अलग होगये तो एक तलवार दूसरी मारकर शिर को काटकर पूरा करदिय और जो क़िले में थे उनको सुरंग लगवाकर उड़वादिया और कहा कि मैंने बुज़ुरुच मेहर से सुनाथा कि ज़ुलमात से केवल ७० सिपाही बचकर आवेंगे और अब ७१ हैं नहीं मालूम कि कौन मरेगा यह कहकर अतिदुःखित हुए लिखनेवाला है कि अमीर ने गावलंगी से कहा कि हे मित्र! लाख सवार हमारे साथ थे उन से केवल ७१ हैं इनके मरने से मुझको बड़ा दुःख हुआ अब बताओ कि आगे कौन नगर है उसने कहा कि यहां से थोड़ी दूरपर आरोबेलनामे नगर है के स्वामी का नाम आरदपीलदन्दां और मुर्ज़बान पीलदन्दां और उसके आगे ज़रद हस्तजादू का तिलस्मात है वहां अपूर्व २ तरहकी वस्तु हैं तब अमीर वहां से चलकर आरदबेल में पहुँचे वहांके स्वामी को सेनासमेत मारकर चलकर ज़रदस्त जादूगर के तिलस्मातमें पहुँचे तो एक चारदीवारी दिखाई पड़ी और उसके भीतर एक गुम्मद दिखाईपड़ा तो उसमें से गाने बजानेका शब्द सुनाईपड़ा तब अमीरने गावलंगी से कहा कि इसमें मनुष्य मालूम होते हैं कि गाने बजाने का शब्द सुनाई देता है उसने कहा यहां मनुष्य नहीं हैं यहां सब जादू है तब अमीरने कहा कि तुम सबसे बड़े हो जाकर देखो तो क्या बात है गावलंगी ने जाकर जो दीवार से झुककर देखा तो एकबारगी चिल्लाकर दीवारके भीतर कूदपड़ा इसी तरहसे सब देख २ कर भीतर कूदगये तब अमीर अति दुःखित होकर सोगये तो देखा कि आकाशसे एक तख़्त उतरा उसपर एक बृद्ध मनुष्य बैठा था उसने आकर अमीर से कहा कि ऐ पुत्र! दुःखित क्यों होते हो इस गुम्बदपर एक सफ़ेदमुर्ग़ बैठा है उसको तीरसे मारो जादूका नाश होजावेगा यह कहकर तख़्त तो आकाश की तरफ़ उड़गया और अमीर के नेत्र जो खुलगये तो देखा कि गुम्बद पर एक सफ़ेद मुर्ग़ बैठा है अमीर ने तीरसे उसको मारा उसके गिरतेही तिलस्मात टूटगया लोग जो उसके भीतर थे सब आपही अमीर के क़दमों पर आकर गिरे अमीरने सबसे मिलकर ईश्वर का धन्यबाद किया उन लोगों से जो वहांका हाल पूछा तो उन्होंने कहा कि एक ऐसी स्वरूपवान् युवा स्त्री दिखाई पड़ी कि जिसके देखने में हमलोग व्याकुल होकर कूद पड़े थे अमीरने कहा कि गुम्बदका दरवाज़ा खोलकर देखो तो इसके भीतर क्याहै परन्तु उनमें कोई न खोलसका तब अमीरने जाकर दरवाज़े को तोड़ा और भीतर जाकर देखा तो गुम्बद में एकताबूत लटका था उसको उतारकर खोला तो ज़रदहस्त

जादू की लाश और एक किताब मिली अमीर ने उसको जल
पत्र अमरू ने चुरालिये थे वही जादू अबतक दुनिया में है तब र युद्ध
किताब समेत जलाकर तिलस्मात के किनारे आये तो यारों से क गीस
कोई पहरा दो बारी २ सोना यह कहकर आदी को पहले पहरेपर बैठ रंगी
से एक हिरन आया उसको मारकर खाने के लिये पकानेलगा इतने में
स्त्री आकर दांत चबानेलगी तब आदी ने कहा सत्य बता तू कौन है उस
मैं एक सौदागर की स्त्री हूं मेरे पुरुष को ब्याघ्र ने मारडाला है मैं तीन दिन
हूं थोड़ासा मांस मुझको भी दे उसको जो दया आई तो उठकर डेकचे से म
कालने के लिये झुका इतने में बुढ़ियाने उठकर एक थप्पड़ मारकर आदी को बे
करदिया और मांस खाकर चलीगई यही हाल अश्तर और लन्धौर का भी हु
आख़िरी पहरा जब अमीर का हुआ तो अमीरने भी हिरनका शिकारकरके पका
तब वही बुढ़िया आकर मांगने लगी तो अमीर ने उसके मुख से मांस की सुग
पाकर जाना कि यह चुड़ैल है उठकर एक हाथ में तलवार लेकर एक हाथसे म
उसके लिये निकालने लगे इतने में उसने चाहा कि मारकर बेहोश करे कि अम
ने दूसरे हाथसे एक तलवार मारकर दो टुकड़े करदिये पृथ्वीपर गिरते ही वह ए
तरफ़ को भागी अमीर ने उसका पीछा किया देखा कि वह शिर एक कुयें में गि
पड़ा अमीर उसी कुयेंपर खड़ेहोगये इतने में सब लोग भी पहुँचगये अमीर ने
मरू से कहा कि ढालमें कमन्द को बांधो हम इस कुयें में जावें अमरू ने कहा
आप जगतपर खड़े रहिये मैं जाकर हाल लेआताहूं यह कहकर अमरू कुयें में गए
वहां जाकर देखा कि वह शिर एक सुबर्ण के पात्र में एक अतिस्वरूपवान् स्त्री
सामने रक्खा है और वह स्त्री रोरो कहरही है कि मैंने मना किया था कि हमज़ा
पास न जा आख़िर तू ने अपना प्राणदिया और मुझको भी दुःख में डाला अमरू
ने यह सुनकर कमन्दको फेंककर उसको बांधलिया और अतिशीघ्र ही शिर समे
लाकर अमीर के पास रखकर सब हाल सुनाया अमीर ने पूछा कि तू कौन है औ
वह बुढ़िया कौन थी उसने कहा कि मैं जरदस्तकी बेटी हूं और वह माता थी तब
फिर अमीर ने पूछा कि तू अकेली क्यों है उसने कहा कि दो बहिन मेरी सेना स
मेत तिलस्मात में रहती हैं वे इसके मरने का हाल सुनकर आकर तुमसे यथाशक्ति
युद्ध करेंगी तब अमीर ने उसको अमरू को सौंपकर कहा कि इसको बड़ी ख़बर
दारी से रक्खो इससे ग़ाफ़िल न रहना वह रात्रि तो बीतगई प्रातःकाल होते उसी
कुयें से जादूगरों की सेना निकलकर मैदान में उतरी और उस सेनाके सरदार
ज़रदहस्त की दो बेटियां थीं एकका नाम गुलरुख़ था और दूसरी का फ़र्रुख़ था और
उनकी एक दाई जादू में प्रचण्ड थी उन्होंने उसीको जादू करने की आज्ञा दी एक
दिन अमीर ने उस लड़की से पूछा कि तेरी बाहिन मुझ से क्या लड़ेंगी
कि वह लड़ तो नहीं सक्ती लेकिन जादू से आपको ख़राबकरेंगी

प भ पर खड्ग मारनेके लेजाकर किसीप्रकार से पूछो कि जादू क्या चीज़ है और किस
री । व्याकुल होकर अमरू ने लेजाकर अनेक प्रकार से उससे पूछा लेकिन उसने न
न मारने लगे ...को मारडाला और अमीर से आकर कहा कि मैंने तो उसको मार
नरू तक खूँखार ...न जाकर किसीसे पूछ आता हूं यह कहकर जादूगरों की सेना की
कि आकर ...र्ग में जादूगर की सेना का एक सवार मिला उसको मारकर अपने
अ गदा ...तरफ़ की बनाकर सेनामें गया कि अपना कार्य सिद्धकरे जब रात्रिहुई तो
नरू कट ...लोगों के साथ फ़र्रुख़के पलँगकी चौकी देने गया संयोग से एक जादूगर
री ...ख़ से आकर कहा कि आज कईदिनों से दाई हमज़ा की सेनापर जादू कररही
प ...किन कुछ मालूम नहीं होता फ़र्रुख़ ने कहा कि कल शामतक जादू तैयार होगा
त ...तमाशा देखना हमज़ा की सेनामें एक मनुष्य भी न बचेगा यह सुनकर अमरू
र प्रातःकाल अमीर से आकर कहा अमीर ने कहा कि कोई ऐसी युक्ति करो कि
...रीकी सेनापर जादू पड़े आख़िरकार अमरू ने जाकर उस दाई को मारकर जादू-
...रोंकी सेनापर जादू फेंककर नाशकरदिया सब ख़ेमे और असबाब जला दिया कोई
...स्तु रहने न पाई तत्पश्चात् थोड़े दिनोंके बाद अमीर ने गावलंगी से पूछा कि अब
...ोई और स्थान बताओ उसने कहा कि अब सब पापी मारेगये अब थोड़े दिनों
...क चलकर ख़ास में आराम कीजिये आख़िरकार अमीर वहां से चलकर ख़ास में
...ये गावलंगी ने कई दिनों तक मेहमानदारी की उसके पश्चात् एकदिन अमीर
...ारोंसमेत शिकार खेलने गये तो एक हरिन बदीउज़्ज़माँ के आगे से भागा उसने
...ीछा किया भागते २ वह एक हौज़ में कूदपड़ा बदीउज़्ज़माँ भी कूदपड़ा उसके
...ीछे अमीर भी यारों समेत कूदे उसमें जाते अमीर ने देखा कि एक बड़ा भारी
...ैदान है और न कहीं हरिन है न बदीउज़्ज़माँ अमीर दुःखित होकर कहने लगे
...के ७१ मनुष्य थे जिसमें से एक और गया अब सत्तर हैं यारों ने कहा कि यह
...ईश्वर की रचना है इसमें सिवाय चुप रहने के कुछ चारा नहीं है ॥

अमीर का मक्के की तरफ़ जाना और हज़रत सालिम से मिलकर एक स्त्री के हाथ से अशकर समेत मारा जाना और वृत्तान्त का पूराहोना ॥

लेखकलोग इस अमृतरूपी वृत्तान्त को यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर का चित्त स्थिरहुआ तो गावलंगी ने कहा कि आपने कहाथा कि तुमको मक्के में लेचलकर पैग़म्बर अलेहुस्सालिम से मुलाक़ात करावेंगे सो अब चलिये तब अमीर सब को साथ लेकर मक्के की तरफ़ चले कजाबक़दर में जब पहुँचे तो सरपाल पुत्र दाला अमीर को यारों समेत अगुवानी मिलकर अपने नगर में लेजाकर कई दिनों तक मेहमानदारी की उसी समय में सरपाल के पिता का वैकुण्ठबास हुआ तब अमीर ने उसकी सब क्रियाकर्म करवाकर सरपाल को समझाकर तख़्तपर बैठाकर मक्के पर ... थोड़े दिनोंमें चलकर मक्के में पहुँचे गावलंगी और सब यार पैग़म्बर ...जाकर देखा तो गु... मुसल्मानहुए तत्पश्चात् एकदिन सब बैठे थे कि एक दूतने

आकर कहा कि मिश्र, रूम और शाम के बादशाह बड़ी सेना लेकर युद्ध
इच्छा से आये हैं तब हज़रत ने हमज़ा को सेना समेत कोहबुकबलीस
पश्चात् आप भी गये शत्रु ने सेना की परेट जमाई अमीर ने गावलंगी
सामने भेजा तब एक बड़े पहलवान ने आकर गावलंगी को ललकारा ग
उसको पृथ्वी से उठाकर घुमाकर देमारा तो वह मरगया इसीप्रकार से
वलंगी के हाथ से मारेगये तब शत्रुकी सेना ऐसी लज्जित हुई कि कोई ग
सामने न आया आखिर शहज़ाद हिन्द ने आकर गावलंगी का सामन
समाप्त किया अमीर उसके लिये दुःखित होकर आपही उसके सामने गय
गावलंगी के बदले में उसको भी मारा और उसकी सेना में व्याघ्रके समा
कर सेनाका नाश करदिया और जो बचे वे भागगये तब पैग़म्बर अमीर को
प्रसन्नता के साथ लेकर मक्के में आये लेखक लिखता है कि पुरहिन्दीकी माता
पुत्र का मरना सुनकर शाहनशाह हिन्दरूम, शाम, चीन, जबसजंगबार औ
किस्तान को बड़ीभारी सेना समेत मदायन में आकर हरमुज़ को साथ ले
में आई तब जनाब रिसालत पनाह सलीमने सुनकर कहा कि हमारा चे
इन सेनाओं के लिये अकेला बहुत है यह कहना जनाब अहदियत को बु
हुआ जब जाकर शत्रु के सामने खड़ेहुए तो हरमुज़ ने कहा कि इनसे ए
इनमें न जीतोगे एकबारगी घेरकर मारलो यह कहते हरमुज़ की सेना ए
मुसल्मानी सेनापर टूटपड़ी तो उसी में लन्धौर साद पोता हमज़ा आदी अ
आदि सरदार मारे गये और एकदांत जनाब रसालतपनाह का टूटगया यह
ख़बर अमरूने जाकर अमीरको दी अमीर सुनतेही घोड़ेपर सवारहुए और श
को मारते २ हरमुज़तक पहुँचे वह हमज़ा को देखकर तख़्तपर से भागा अमी
उसका पीछा किया मार्ग में हज़ारों को मारते हुए चार कोस तक चले गये
समय लौटे मक्के की तरफ़ आते थे मार्ग में हिन्दमारपुर ने जो छिपी बैठी
निकलकर एक तलवार अशकर के मारी कि चारों पैर कटगये अमीर अशकर स
पृथ्वीपर गिरे उसने फिर कर एक तलवार से अमीर का शिर अलगकरदिया
पेट फाड़कर कलेजा निकालकर खागई और लोथके सत्तर ७० भाग करदिये
श्चात् जब उसको होश आया कि करीशा हमज़ा की बेटी जब अपने पिताके म
की ख़बर सुनेगी तो वह सब देवों की सेना साथ लेकर आवेगी तो मैं क्या उ
उत्तर दूंगी यह विचारके हज़रत सालिम के समीप जाकर उनके पैरों पर गि
मुसल्मान होकर अपराध को क्षमा कराके हज़रत को अमीर की लाश के स्था
लाई हज़रत सालिम ने अमीर के शरीर के टुकड़ों को इकट्ठा करके सबपर पृथक्
निमाज़ पढ़ी और उस समय अंगूठों के बल हज़रत खड़े थे लोथ गाड़ने के प
लोगों ने हज़रत से पूछा कि आप निमाज़ पढ़ती समय अंगूठों के बल
उन्होंने कहा कि फ़रिश्तोंके [illegible] खड़े [illegible] की जगह न थी औ

पर खड्ग म..ड़े पर सत्तर वार निमाज़ पढ़कर लोगों के सामने अमीर की अतिप्रतिष्ठा
व्याकुल ह..बर को जब हमज़ा को गाड़कर हज़रत और हिंदा हज़रत सालिम के पास
मारने लगे उन्हों ने हिन्दा की तरफ़ से मुख फेरलिया तब उसने कहा कि आप
तक ज्यों पर तो देखिये हज़रत ने शिर उठाकर देखा तो अमीर तख़्तपर बहिश्त में
आकर जा.. और गुलाम सब हाथ जोड़े खड़े हैं तब तो हज़रत सालिम ने ईश्वर का
शनाग्री में ..द किया तत्पश्चात् करीशा सेना समेत हज़रत सालिम के पास आकर अपने
..तरफ़ के मारनेवाले को बुलाया हज़रत सालिम ने अमीर का तख़्त बहिश्त में दिख
, लोगों के साथ फ़र.. ..उन्होंने इसके हाथ से न मारेजाते तो शाह का इस प्रभुत्व
से आक..कहा कि आपके पिता जो ... शस्त्र न लो लेखक लिखता है कि
न कुछ मा.. होते इससे हमारे कहने से अब तुम वे..
..नाशा देख..भयमें १६ फ़रिश्तों ने आकर करीशा को समुझाया था आखिरकार हज़रत
..ःकाल अ.. की आज्ञानुसार करीशा अपने देश को सेना समेत पलट गई॥
..ो सेनापर ..ीर के शरीर के ७० भाग होने और हज़रत के दांत टूटने के दो कारण
.. सेनापर ..ते हैं॥
रहने न पाई तब कि हज़रत ने बेकलमा पढ़े कहाथा कि इस सेना के लिये मेरा च..
और स्थान ब..केला बहुत है॥
चलकर ख़ास..एक रात्रिको आशिपरजा अपने कपड़े सीरहीथी हज़रत उस तरफ़ निक..
.. गावलंगी ने उसकी सुई से तागा निकलगया हज़रत हँसपड़े उनके दांतों की चम..
..समेत शिक..शिपरजाने सुई में तागा डालदिया हज़रत ने कहा कि मेरे दांत ऐसे हैं
..ा किया भ.. चमक से तुमने सुईमें तागा डालदिया यह बात हज़रत को नापसन्द अ..
.. अमीर भ.. दांत उन हज़रत के टूटगये उसी लड़ाई में हज़रत अमीर के पैर में तीर ..
..ान है औ..हगयाथा अनेक प्रकार से जर्राहोंने निकाला लेकिन निकल नहीं सका ..
.. ७१ मनुष्य.. निमाज़ पढ़कर ध्यान करने लगे हज़रत सालिम ने पहलवानों से कहा
..वर की रच..रज़ा के पैर में से तीर निकाल लो पहलवानों ने जाकर निकाल लिया लो..
अमीर का म..त को कुछ मालूम न हुआ निमाज़ पढ़ने के बाद रुधिर देखकर पूछा कि
..कैसा है सेवकों ने सब हाल कहकर पूछा कि क्या आपको नहीं मालूम ..
लेखकलो..ने सौगन्द खाकर कहा कि मुझे सत्य नहीं मालूम कि यह तीर कब लगा
..चेत्त स्थिर..ईश्वर इस लेखक का प्रभुत्व संसार में बढ़ावे कभी किसी का आश्रित न
..कर पैग़म्बर.. अपनी अनुग्रह से सत्य असत्य का अपराध क्षमा करके अपनी सेवका
को साथ ले..कर रक्खे॥
अमीर को

इति चतुर्थभागः समाप्तः॥